[जैन-तीर्थ-गाइड,]

(उर्फ.)

(जैन-जियारत-गाह,)

(जिसको,)

जनाब-फेजमाअ-मञ्जनेइल्म-मोअले-उल-अल्काब जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजीने मुरत्तिब किया.

(और)

शेठ-हवसीलालजी-पानाचंदजी-साकीन बालापुर-जिले आकोला मुल्क वराडने फायदे आमके छपवाकर-जाहिर किया,

[आपलोग इसको बगौर देखे,]

(इसमे,)

कुल्ल जैनतीर्थोंके हालात मुफस्सिल तौरसे महेनत जाफिसानीके साथ मुतखिब मुकम्मिल करके इजाद कियाहै,

अहमदाबाद सीटी प्रिंटिंग प्रेसमें छापा गया,

नकल १०००,

[कीमत रुपये तीन,]

(संवत् १९६७)

[इत्तिला–जरुरी,]

जनाव–फेजमाव–मरजनेइल्म–मोअले–उल–अल्काव
जैनश्वेतांवर धर्मोपदेष्टा–विद्यासागर–न्यायरत्न–
महाराज–शांतिविजयजीके वनायेहुवे
ग्रंथोंके नाम,–

१–मानव धर्म संहिता,	२–०–०
२–रिसाला मजहव–ढुंढिये,	०–४–०
३–जैनसंस्कार विधि,	०–५–०
४–त्रिस्तुति परामर्श,	०–८–०
५–वयान पारसनाथपहाड,	मुफ्त,
६–जैनतीर्थगाइड–वडी,	३–०–०

(अलावा इसके और ग्रंथ छपना–वाकी है,–
जिनके नाम,

७–जैनतीर्थगाइड छोटी,
८–गुलदस्ता जैन और इशाइ,
९–अजायव हालात जैन और आर्यसमाज,
१०–जहुरे आलम, (उर्फ) शैर दुनिया,
११–खरतरगछमीमांसा, (अहलफिरकेखरतरगछ)
१२–हिदायत वुतपरस्ति जैन,
१३–पंचमकाल पताका,

[इब्तिदाये-दिबाचा,]

(नज्म)

क्याही सरशब्जहै-यह-जैन बगीचा देखो,
हरं सजर नुरका-दिखलाताहै जलवादेखो, १
जैनश्वेतांबरो बुलबुलकी तरहसे तुमभी,
जांफिदा करके जरा-इसका तमाशा देखो, २
एकसो आठ तीर्थोकी-जोलिखीहै तपसील,
शौखसे उसको पढो-याके सुनो यादेखो, ३
किसकदर इसके मुसन्निफको बनाया कामील,
आत्मारामजी महाराजकी किरपा देखो, ४

फाबिलेहम्द-वे- तीर्थंकर निरजन-व-निराकारहै जिनकाज्ञान कुलदुनियामें आशकारहै, अब-में-इसकिताबके मजमुनपर आताहुं, सायकीन-व-नाजरीनको खुशखबरी सुनाताहुं, मुद्दतोंका इरादा आज कामयाबहुवा, शुक्रहै आज यहकिताब छपकर- नाजरीनोंकी नजरोंके सामने आगइ, इसकिताबमें सूत्रआवश्यक-उत्तराध्ययन-कल्पसूत्र-विविधतीर्थकल्प-प्रबंधकोश-प्रभाविकचरित-परिशिष्टपर्व-प्रबंधचितामणि वगेरा जैनकिताबोंसें मजमुन अकजकरके लिखागयाहै, ओर कइ तवारिखोंसे पुरानीबातें इतिखाबकरके दर्जकिइहै, रेलवे गाइडोंसे टेशनोंका-हाल-और किराया बतलायागयाहै, मगर किराया कमीकभी कमीबेसीभी होजासकताहै, नाजरीन बरवक्त तलाशकरलेवेंकि-किरायारेलका यहांसें वहांतक क्यालगेगा, ?

अगर कोइश्रावक जैनतीर्थकी जियारत जानाचाहै इसकिताबको

१-दरख्त, २-ग्रंथकर्ता,

रखें–ताकि–वख्तन फवख्तनआगाही होतीरहेगी, औरइसबातकी
ग्मीयतहोसकेगीकि–फलां जैनतीर्थइसजगहपरहै,और इसकारास्ता-
है, पुरानेजैनतीर्थोका हाल सुनोतो जिसजिसतीर्थमें मंदिरमुर्तिपर
देवता निगाहवान बनारहताहै, वह बहुत अर्सेतक बनीरहती है,
: जिसमंदिरमुर्त्तिपर देवता निगाहवान नहीरहता वह थोडेअर्से-
रहकर बरबाद होजाती है, जैनमजहबमें १–शत्रुजय, २–अष्टापद,
समेतशिखर, ४–गिरनार, और–५–आबु–ये–पांच वडेजैनतीर्थ
गये है, जिसमें तीर्थशत्रुजय निहायतपुराना और मुत्तबरिकहै,
कर रिषभदेवमहाराज यहांकइदफे तशरीफ लायेथे,जमानेतीर्थकर
भदेवके राजाभरतचक्रवर्तीने पहाडअष्टापदपर वडेआलिशानजैनमं-
: तामीरकरवायेथे, जब तीर्थकर रिषभदेव महाराजने वहांपर मु-
पाइ, वहजैनतीर्थ कहलाया, करीब अढाइ हजारवर्स पेस्तर तीर्थ-
महावीरके वडेचेले गौतमगणधर इसतीर्थकी जियारतको गयेथे
आवश्यक अवल अध्ययनकी टीकामें इसका बयान दर्जहै,

जमाने सगरचक्रवर्तीके तीर्थअष्टापदकी इर्दगिर्द खाइ बनादिइ-
और समुंदरका पानी उसमे शरीककरदियागया जिससे आजकल
। कोइ–जा–नहीसकता, गौतमगणधर जो गयेथे अपनी तपोलब्धि
गयेथे, तीर्थअष्टापद–भारत मध्यखंडकी उत्तर और वैताढय पर्व-
ी दखनमें है ऐसा जानना, पहाड हिमालयको किसीसुरत अष्टा-
नहीकहसकते, पहाड समेतशिखरपर तीर्थकर अजितनाथ महारा-
र मुक्तिपाइ वह जैनतीर्थ कहलाया इसीतरह चौइसतीर्थकरोके
ल्याणिक जहांजहा हुवे–वे–सब जैनतीर्थ कहलातेगये, तीर्थउसको
मेहै जहांजाकर जीव संसारसमुद्रसे तीरे मगरशर्त यहहैकि–दिल-
: सफाइ होनाचाहिये–तीर्थ तीनतरहसे मानेगयेहै, १–तीर्थकरोकी

कल्याणिक भूमि, २–मुनिमहाराजोकी निर्वाण भूमि और ३–अतिशय युक्तक्षेत्र,

कइ जैनतीर्थ जमानेहालमें कमजोरहोगयेहै, उनकी मरम्मतहोना दरकारहै, कइपुराने जैनतीर्थोके नाम निशानभी नजर नहीआते, ज्ञानियोका फरमानाहैकि–किसीचीजकी हालत हमेशा एकसरखी नहीरहती तीर्थंकर रिषभदेवसे लगाकर महावीरस्वामी तकका इतिहास देखोतो कल्पसूत्र और त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरितमें मिलेगा, सूत्रआवश्यक–निर्युक्तिमे लिखाहैकि–पुरिमताल नगर जोकि–अयोध्याका शाखानगरथा, एक–वग्गुरनामके श्रावकने वहापर तीर्थंकर मल्लिनाथजीका मंदिर तामीर करवायाथा, जमाने अखीर तीर्थंकर महावीरस्वामीके राजा श्रेणिक राजगृहीके तख्तपर अमलदारी करताथा, वह पेस्तर जेननहीथा, मगरपीछे तीर्थंकर महावीरकी धर्मतालीमसे जैनमजहबपर पाबंदहुवाथा, श्रेणिकका बेटा जिसकानाम कौणिक–वा–अजातशत्रुथा, वह–जैनथा, ओर उसने अपनीराजधानी चंपानगरीमें कायम किइथी, कोणिकका बेटा उदायीहुवा, यहभी जैनमजहबपर साबितकदम था, ओर इसने अपनी राजधानी शहर पटनेमें कायम किइथी, उदायीके तख्तपर नंदनामका राजाहुवा उसकी राजधानीभी पटनाहीरही, बादउसके आठराजे नंदनामकेही पटनाके तख्तपर होतेरहे, सुपावली ग्रंथमें लिखाहैकि–नवनदोने–पटनेकेतख्तपर (१५५) वर्सतक राज्यकिया, नवमें नदको चद्रगुप्तने शिकस्त दिइ, ओर पटनेके तख्तपर अपना अमल दरामदकिया वह मौर्यवंशके खानदानका था, बंगालहातेके प्रांत उडीसामें करीब शहर कटकके उदयगिरिपर कईपुरानी गुफाहै, इनसबमें हाथीगुफानामकी एकबडीगुफाहै जिसमे सतरा पंक्तियोका एकबडा शिलालेख चैनवंशके कलिंगराजा खारवेलका मोजूदहै, इस गुफामें दुस-

राकोइ एसानिशान नहीपाया जाताकि-कोनसे मजहबवालोंकी यह गुफाहै. मगर दोतीनसबुत एसेमिलते है जिससे मालूमहोताहैकि-यहगुफा जैनोकीथी, उपरलिखेहुवे शिलालेखकी शुरुआतमें नमोअरिहंताणं एसापाठलिखाहै, और बारहमी पंक्तिमें नंदराजनितस् अगजिनस-एसा पाठभी मौजूदहै, इससे मालूम होताहै नंदराजाने लायाहुवा अग-या-अरनाथजिनका कुछहालहै, मगरअपसोसहैकि आगेका लेख टुटगया है, चौदहमी पंक्तिमे लिखाहैकि-कुमारी पर्वते अरहतोपनिवासे-निषिद्य-एसालिखाहै. इसमे अरहदउपनिवासका बयानहै, इनसबुतोंसे पायाजाताहैकि-यह गुफा पेस्तर जैनोकीथी, मौर्यराज्यके संवत् (१६९) मे यहलेख लिखागयाहै, इससे मालूम होताहैकि-खारवेलराजा इस्वीसनके (१५७) वर्स पेस्तर मौजूद था, अरहंतपसादानकलिंगानंसमनान-एसापाठहै, इससे मालूमहोता है, यहगुफा कलिंगमें रहनेवाले जैनश्रमणोके लिये बनाइ गइथी,-चंद्रगुप्तकाबेटा बिंदुसारहुवा, यहभी जैनथा, बिंदुसारका बेटा अशोक हुवा, यहबौधथा, राजाप्रियदर्शी अशोकके-शिलालेख-जो हिंदमें बौध धर्मकेबारेमें कइजगह देखतेहो, इसी अशोकके समजिये, अशोकका बेटा कुणालहुवा, और कुणालका बेटा राजासंप्रतिहुवा, तीर्थंकर महावीरस्वामीकेबाद (२९०) वर्स पीछे राजासंप्रति मौजूदथा, और उसकी राजधानी शहर उज्जेनमें कायमथी, और यह जैनमजहबपर पावंदथा, जैनाचार्य आर्यसुहस्ती महाराजकी धर्मतालीमसें इसको इसकदर दिलजमाइ होगइथीकि-दुनियामें आलादर्जेकी चीजधर्म है, इसने बहुतसे जैन मंदिर और जैनमूर्त्तिये तामीरकरवाइ, तीर्थशत्रुंजय गिरनारपर अबभी उसकेबनायेहुवे-जैनमंदिर-मौजूदहै, तीर्थंकरमहावीरके निर्वाणबाद (४७०) वर्स पीछे, उज्जेनके तख्तपर विक्रमादित्यहुवा, जिसका संवत् अबतक जारीहै, संवत् (१०८) में मुल्क

संवत् (१२९८) के अर्सेमें राजावीरधवलके दिवान वस्तुपाल तेजपालने तीर्थआबुपर बडे खूबसुरत जैनमंदिर तामीरकरवाये, जो अवतक मौजूदहै, ये दोनों भाइ–आसराजके बेटे और इनकी वाल्दाका नाम कुमारदेवीथा, वस्तुपाल तेजपालने अठरावर्स तक दिवानगिरि किइ, और तेरहदफे तीर्थयात्राके लिये सघ निकाले, इस किताबके पृष्ट (१२९) पर तवारिख आबुके बयानमें–जो–शकुनिका विहारका लेखछपगयाहै पढनेवाले महाशय इसकों आरासण तीर्थका लेख समजे, क्योंकि–शकुनिका विहारका आकार आबुपहाडपर तेजपालके बनायेहुवे मंदिरकी परकम्मामेंभी ह, और आरासणतीर्थके नेमनाथजीके मंदिरके गुढमडपमेंभी है, राजाओंके तामीर करवायेहुवे मंदिरोमें दिवारोंपर पेस्तर गजथर–या–अश्वथर जरुर लगाये जातेथे. देखो! आरासण तीर्थमें तीर्थंकर नेमिनाथजीके मंदिरमें गजथर लगाहुवाहै,—

अयोध्या–राजगृही–चंपा–हस्तिनागपुर वगेरा नगरीयें–जो–जैनशास्त्रोंमे लिखी है, जमाने हालमेंभी वही हैं, दुसरी नही, अलबत्ते! पेस्तर बडीथी, अवछोटी रहगइ, औरभी कइनगर ऐसे है–जो–पेस्तर बडेथे, अब छोटेरहगये, जो–लोग कहते है–ये उपरलिखी [illegible] दुसरीजगह होनाचाहिये, तो किसजगहपर है उसका सबुत [illegible] भाषातर राजतरंगिणी–जो–संवत् (१९५४)मे बंबइ गुज- [illegible] प्रेसमें [illegible] पृष्ठ (१८) पर फुटनोटकी जगह बत- [illegible] शोकके मुल्क काश्मिरकी राजधानी [illegible] थे, गंगासिंधुनदीकी लंबाइचौडाइ [illegible] अब [illegible] इसीतरह कइ बडेबडे शहर छोटे [illegible] बडी रवन्नकपरथी, आजकल– [illegible] लिखीहुइ बातभी समजना

कि–राजा–भीमदेवके दिवानथे, संवत् (१०८८) के अर्सेमें उनोने आवुपहाडपर वडे खूवसुरत जैनमंदिर वनवाये, संवत् (११८३) के अर्सेमें महाराज सिद्धराजजयसिहने शहरपाटन–मुल्कगुजरातमें तीर्थंकर रिषभदेवमहाराजका मंदिर निहायत उमदा वनवाया, और उसमें वडी आलिशान मूर्त्ति तीर्थंकर रिषभदेवजीकी तख्तनशीन किइ, जैनाचार्य–श्रीदेवसूरि महाराजकी हयातीमें नाहडमंत्रीने कोरंटक वगेरा नगरमें वहुतसें जैनमंदिर तामीर करवाये, गुर्जरदेशभूपावली ग्रंथके (४१) के श्लोकमें वयानहै कि–संवत् (११९९) में राजाकुमारपाल हुवा, जो जैनमजहवपर निहायत सावीतकदमथा, उसकी सलतनतका तख्त अणहिल्लपुरपट्टन मुल्कगुजरातमेंथा, गुरुहेमचंद्राचार्यकी धर्मतालीमसें उसके दिलकी तसल्ली होगइथी कि–मुकाविले धर्मके दुनियामें कोइचीज नही, इसीसवव जैनग्रंथोंमे परमार्हत कुमारपालभूपाल कहकर इसको लिखाहै, इसने शहर अणहिल्लपुरपटनमें त्रिभुवनविहार नामका मंदिर वडीलागतका तामीर करवायाथा. हेमचंद्राचार्य सवत् (१२२९) मे देहांतहुवे, और उनकी उमर (८४) वर्सकीथी, राजाकुमारपाल गुरु हेमचंद्राचार्यके फरमानपर इसकदर पावदथाकि–जो–कुछ–वे–कहतेथे मंजूर करताथा, सुनाचे! एकदफा राजाकुमारपालने तीर्थतारंगापर वहुत उंचा जैनमदिर वनवाना शुरु किया, कितनाक वनभी गयाथा, इत्तिफाकन ! गुरु हेमचंद्राचार्यभी–वहां–तशरीफलाये, और मंदिरकों देखकर कहनेलगेकि–वहुतऊंचे मंदिरकी उमर कमहोती है, मुनासिव है अव इसकों ज्यादहउंचा नही वनाना, राजाकुमारपालने उसीवख्त जितना वनायाथा उतनाही कायमरखा, और उसपर शिखर वनादिया, देखो गुरुके फरमानपर राजाकुमारपाल किसकदर पावंदथा ?

संवत् (१२९८) के अर्सेमे राजावीरधवलके दिवान वस्तुपाल तेजपालने तीर्थआवुपर वडे खूबसुरत जैनमंदिर तामीरकरवाये, जो अववक मौजूदहै, ये दोनों भाइ–आसराजके वेटे और इनकी वाल्दाका नाम कुमारदेवीथा, वस्तुपाल तेजपालने अठरावर्स तक दिवानगिरि किइ, और तेरहदफे तीर्थयात्राके लिये संघ निकाले, इस कितावके पृष्ट (१२५) पर तवारिख आवुके वयानमे–जो–शकुनिका विहारका लेखछपगयाहै पढनेवाले महाशय इसकों आरासण तीर्थका लेख समजे, क्योंकि–शकुनिका विहारका आकार आवुपहाडपर तेजपालके वनायेहुवे मदिरकी परक्रम्मामेभी है, और आरासणतीर्थके नेमनाथजीके मदिरके गुढमडपमेभी है, राजाओके तामीर करवायेहुवे मदिरोंमे दिवारोंपर पेस्तर गजथर–या–अश्वथर जरुर लगाये जातेथे. देखो ! आरासण तीर्थमे तीर्थकर नेमिनाथजीके मदिरमें गजथर लगाहुवाहै,—

अयोध्या–राजगृही–चपा–हस्तिनागपुर वगेरा नगरीये–जो–जैनशास्त्रोंमें लिखी है, जमाने हालमेभी वही है, दुसरी नही, अलवत्ते ! पेस्तर वडीथी, अवछोटी रहगइ, औरभी कइनगर ऐसे है–जो–पेस्तर वडेथे, अव छोटेरहगये, जो–लोगकहते है–ये उपरलिखी नगरीया दुसरीजगह होनाचाहिये, तो किसजगहपरहै उसका सवुत पेश करे, भाषातर राजतरगिणी–जो–सवत् (१०५४)मे वंबइ गुजराती प्रिंटिंग प्रेसमें छपाहै, पृष्ट (१८) पर फुटनोटकी जगह वतलाया है कि–पेस्तर जमाने अशोकके मुल्क काशिमरकी राजधानी श्रीनगरमे ७लाख मनुष्य आवादथे, गगासिंधुनदीकी लवाइचौडाइ पेस्तर ज्यादहथी अव कमरहगइ, इसीतरह कइ वडेवडे शहर छोटे होगये है, लंकानगरी जमाने रावनके वडी रवन्नकपरथी, आजकल–जो–रवन्नक नही रही, इसीतरह उपर लिखीहुइ वातभी समजना

कि-राजा-भीमदेवके दिवानथे, संवत् (१०८८) के अर्सेमें उनोने आबुपहाडपर वडे खूबसुरत जैनमंदिर वनवाये, संवत् (११८३) के अर्सेमें महाराज सिद्धराजजयसिंहने शहरपाटन-मुल्कगुजरातमें तीर्थंकर रिषभदेवमहाराजका मंदिर निहायत उमदा वनवाया, और उसमें वडी आलिशान मूर्त्ति तीर्थंकर रिषभदेवजीकी तख्तनशीन किइ, जैनाचार्य-श्रीदेवसूरि महाराजकी हयातीमें नाहडमंत्रीने कोरंटक वगेरा नगरमें वहुतसें जैनमंदिर तामीर करवाये, गुर्जरदेशभूपावली ग्रंथके (४१) के श्लोकमे वयानहै कि-संवत् (११९९) में राजाकुमारपाल हुवा, जो जैनमजहवपर निहायत साबीतकदमथा, उसकी सलतनतका तख्त अणहिल्लपुरपट्टन मुल्कगुजरातमेथा, गुरुहेमचंद्राचार्यकी धर्मतालीमसें उसके दिलकी तसल्ली होगइथी कि-मुकाविले धर्मके दुनियामें कोइचीज नही, इसीसवव जैनग्रंथोमे परमार्हत कुमारपालभूपाल कहकर इसको लिखाहै, इसने शहर अणहिल्लपुरपटनमे त्रिभुवनविहार नामका मंदिर वडीलागतका तामीर करवायाथा. हेमचंद्राचार्य संवत् (१२२९) मे देहांतहुवे, और उनकी उमर (८४) वर्सकीथी, राजाकुमारपाल गुरु हैमचंद्राचार्यके फरमानपर इसकदर पावंदथाकि-जो-कुछ-वे-कहतेथे मंजूर करताथा, चुनाचे! एकदफा राजाकुमारपालने तीर्थतारंगापर वहुत उंचा जैनमंदिर वनवाना शुरु किया, कितनाक वनभी गयाथा, इत्तिफाकन! गुरु हैमचंद्राचार्यभी-वहां-तशरीफलाये, और मंदिरकों देखकर कहनेलगेकि-वहुतऊंचे मंदिरकी उमर कमहोती है, मुनासिव है अव इसकों ज्यादहउंचा नही वनाना, राजाकुमारपालने उसीवख्त जितना वनायाथा उतनाही कायमरखा, और उसपर शिखर वनादिया, देखो गुरुके फरमानपर राजाकुमारपाल किसकदर पावंदथा?

संवत् (१२९८) के अर्सेमे राजावीरधवलके दिवान वस्तुपाल तेजपालने तीर्थआबुपर बडे खूबसुरत जैनमदिर तामीरकरवाये, जो अबवक्त मौजूदहै, ये दोनों भाइ—आसराजके बेटे और इनकी वाल्दाका नाम कुमारदेवीथा, वस्तुपाल तेजपालने अठरावर्स तक दिवानगिरि किइ, और तेरहदफे तीर्थयात्राके लिये सघ निकाले, इस किताबके पृष्ट (१२५) पर तवारिख आबुके बयानमे—जो—शकुनिका विहारका लेखछपगयाहै पढनेवाले महाशय इसको आरासण तीर्थका लेख समजे, क्योंकि—शकुनिका विहारका आकार आबुपहाडपर तेजपालके बनायेहुवे मदिरकी परकम्मामेभी है, और आरासणतीर्थके नेमनाथजीके मदिरके गुढमडपमेंभी है, राजाओके तामीर करवायेहुवे मदिरोमें दिवारोंपर पेस्तर गजथर—या—अश्वथर जरुर लगाये जातेथे. देखो ! आरासण तीर्थमे तीर्थकर नेमिनाथजीके मदिरमें गजथर लगाहुवाहै,—

अयोध्या—राजगृही—चंपा—हस्तिनागपुर वगेरा नगरीये—जो—जैनशास्त्रोंमें लिखी है, जमाने हालमेंभी वही है, दुसरी नही, अलबत्ते ! पेस्तर बडीथी, अबछोटी रहगइ, औरभी कइनगर ऐसे है—जो—पेस्तर बडेथे, अब छोटेरहगये, जो—लोगकहते है—ये उपरलिखी नगरीया दुसरीजगह होनाचाहिये, तो किसजगहपर है उसका सबुत पेश करे, भाषातर राजतरगिणी—जो—सवत् (१९५४)मे बबइ गुजराती प्रिंटिंग प्रेसमें छपाहै, पृष्ट (१८) पर फुटनोटकी जगह बतलाया है कि—पेस्तर जमाने अशोकके मुल्क काश्मिरकी राजधानी श्रीनगरमें छलाख मनुष्य आबादथे, गगासिंधुनदीकी लबाइचौडाइ पेस्तर ज्यादहथी अब कमरहगइ, इसीतरह कइ बडेबडे शहर छोटे होगये है, लकानगरी जमाने रावनके बडी रवनकपरथी, आजकल—जो—रवनक नही रही, इसीतरह उपर लिखीहुइ बातभी समजना

चाहिये, कोइ महाशय इससे ज्यादह खुलासा देवे-तो-उसको
करना चाहिये, क्योंकि-दुनियामें-एकसेएक ज्यादह अकलमंद
जूदहै, इस किताबके पढनेसे गोया! मुल्कोंकी सफर घरबेठे हा
होसकेगी, मुजे इसके लिये बहुत अर्सेतक सफर करनापडा,
बहुतसी किताबोंका मजमून अकजकरके इसमे लिखनेका इत्ति
हुवा है,—

श्रीयुत–श्रावक–हवसीलालजी–पानाचंदजी साकीन वाल
मुल्क बराडने इसकिताबको छपवाकर जाहिरकिइहै, और कुछ
उनोंनेदियाहै, उनकी तस्वीरभी इसकिताबमें डिगइहै, आलीहि
श्रावकहो–तो–ऐसेहो, जो–धर्मके काममें इसकदर खयाल रखें
नकशा हिंदुस्थानकाभी इसकिताबकी अखीरमें दर्जकरदियाहै, त
तमामशहर–व–शहर बखुबी माळुम होसकेंगे बाद चंदउमदा लां
जिसकानाम गुलदस्तेजराफत देखोगे, पढकर दिल खुशहोगा,
रागिनीके भेद और कुछ स्तवनभी अछेअछे कवियोंके बनाये
इसमे दर्जकियेहै अलहासिल ! ज्यादह लिखनेकी चंदाजरुरत ना
जब किताब नाजरीनोंकी पाकनजरोंसे गुजरेगी. उमीदहै जरुर
संददीदा होगी, जोजो महाशय इस किताबके अवलसे ग्राहक हु
उनके मुबारिक नामभी अखीरमें दर्ज करदियेहै,

मुल्कोंकी सफरकरनेसे आदमीकों तजराइ हासिल होती
तीर्थभमिमें जानेसे दिलीतकलीफ रफाहोकर धर्मपर एतकात ब
ताहै, जिसजगहपर तीर्थंकरोन और मुनिमहाराजोने ध्यान किया
वहांपर जानेसे धर्मपर दिल रजुहोताहै, न–माळुम–जींदगी किसरो
दगादेजायगी, और इस चोलेका गीरना किसजगह होगा, इसप
खयालकरतेहै–तो–दिलपर जरुरधर्मका असरहोताहै, कोइशख्श नय
मंदिर तामीर करवाताहै. कोइ–मुर्त्ति–बनवाताहै, में–जैनतीर्थोंब

तपसीलवार हकीकत लिखकर आमजैनोके सामने रखताहुं,–ताकि–हरेकश्रावककों तीर्थयात्राकेलिये ख्वाहेस पैदाहो, तीर्थोंमें तरहतरहके मंदिर–मुर्त्तियें–चरनपादुका–उचेउंचे शिखर—कारिगीरि–गुफा–नदी–और–पुराने शिलालेख देखकर दिलपर जरुरअसर–होगा, इरादा शुभहोगा, और शुभइरादेसे पुन्यानुबंधिपुन्य हासिलहोगा, यही सबबहै, इसकिताबके बनानेका, किताब–जैनतीर्थगाइडका लिखाण मैने अदाज आठवर्स पेस्तरसें तयारकियाथा, मगर मुल्कोंकी सफरमे कितनाक जातारहा, जिसकी वजहसें दुवारा तीर्थोंमें जाकर तलाश करनापडा, इसलिये इसकिताबके छपनेमें इतनीदेरी हुइहै, आमलोग इसकिताबकों पढकर फायदा हासिलकरे,—

☞ ब–कलम–विद्यासागर–न्यायरत्न–

मुनि—शांतिविजय—

[मुनिमहाराजोंकि तारीफपर.]

(सवैया,–)

धातनमेंकलधौतवडा–रत्नोंविच भापतहै वरहीरा,
कुंजरमाही कहे हरिकोंइभ–केशरीसिंहमहाबलवीरा,
फुलनमें अरविंदवडा–नगकंवलसें नही दिसतचीरा,
त्यूं सबसग्रविषे श्रुतचारित–धारमुनीश्वर शोभतधीरा,

(-अनुष्टुप्-वृत्तम्,)

स्वस्तुति परनिंदां वा-कर्त्तालोकः पदेपदे,
परस्तुति स्वनिंदां वा-कर्त्ता कोपि न दृश्यते, १
उत्तमस्य क्षणं क्रोधो-द्वियामं मध्यमस्य तु,
अधमस्य त्वहोरात्रं-चिरक्रोधोधमाधमः, २
उत्तमपत्तं साहू-मज्झिमपत्तं च सावया भणिया,
अविरय सम्मदिट्ठी-जहन्नपत्तं मुणेयव्वं, ३
मिथ्यादृष्टिसहस्रेषु-वरमेको ह्यणुव्रती,
अणुव्रति सहस्रेषु-वरमेको महाव्रती, ४
महाव्रतिसहस्रेषु-वरमेको हि तात्विकः,
तत्तात्त्विकसमं पात्रं-नभूतं न भविष्यति, ५
साधूनां दर्शनं पुण्यं-तीर्थभूता हि साधवः,
तीर्थं फलति कालेन-सद्यः साधुसमागमः ६
अन्न पानं च वस्त्रं च-आलयः शयनाशनं,
शुश्रूषा-वंदनं-तुष्टिः-पुण्यं नवविध स्मृतं, ७
पचैतानि पवित्राणि-सर्वेषां धर्मचारिणां,
अहिंसा सत्यमस्तेयं-त्यागो मैथुनवर्जनं, ८

☞ [फेहरिस्त-जैनतीर्थ गाइड,]

विषय,	पृष्ठ,
१ इबादत जिनस्तुति सवैया,	१
२ शुरुआत किताब.	२
३ हिदायत-उल-आम,	३
४ कानुन रैलवे,	१४
५ तालीम धर्मशास्त्र,	१७
६ बयान शकुनशास्त्र,	२२
७ दरबयान अष्टाग निमित्त,	२६
८ तवारिख शहर बबइ,	२७
९ बयान शहर सुरत,	३५
१० तवारिख अश्वावबोध और शकुनिका विहार,	३७
११ बयान शहर वडोदा,	४६
१२ दरबयान शहर खंभात,	४७
१३ बीच बयान शहर अहमदाबाद,	५१
१४ बयान विरमगांव-वढवाण-और-लीमडी,	५१
१५ तवारिख तीर्थशत्रुंजय,	५२
१६ बयान शिहोर-भावनगर और गोघा,	७७
१७ तवारिख तीर्थगिरनार,	८०
१८ बयान पोरबंदर और द्वारिका,	८९
१९ बयान राजकोट और जामनगर,	९३
२० बीचबयान भद्रेश्वर और घ्रतकल्लोल,	९४
२१ तवारिख तीर्थ शंखेश्वर,	९७
२२ तवारिख तीर्थ भोयणी,	९८

२३ तवारिख तीर्थ तारंगा १००

२४ तवारिख तीर्थ आरासण, १०६

२५ तवारिख तीर्थ आबु, ११७

२६ तवारिख तीर्थ थंभणवाड, १३३

२७ तवारिख पंचतीर्थी (वरकाणा–नाडोल–नाडलाइ–घाणे-राय–और–रानकपुर,) १३८

२८ दरबयान पाली और जोधपुर, १४७

२९ तवारिख ओशियानगरी, १४९

३० बयान शहर अजमेर और चितोडगढ, १५५

३१ बयान शहर उदयपुर, १५९

३२ तवारिख तीर्थ केशरिया, १६१

३३ तवारिख तीर्थ फलौदी (मेरटा,) १६६

३४ बयान शहर नागोर और बिकानेर, १७१

३५ दरबयान शहर जयपुर और अलवर, १७३

३६ बयान शहर देहली, १७६

३७ तवारिख तीर्थ हस्तिनापुर, १८०

३८ बयान शहर अंबाला, लुधिहाना और जालधर, १८५

३९ दरबयान शहर अमृतसर, १८७

४० तवारिख तीर्थ कांगडा, (किंगढ,) १८९

४१ बयान शहर लाहोर और गुजरानवाल, (मुलतान) १९०

४२ तवारिख तीर्थ वीतभयपत्तन. १९२

४३ बयान शहर जंबू और मुल्क काशिमर. १९४

४४ तवारिख तीर्थ कंपिलपुर, १९६

४५ तवारिख तीर्थ मथुरा, १९९

४६ बयान शहर आगरा, २०३

४७ तवारिख तीर्थ शौरीपुर, २०५
४८ दरमयान कानपुर, (लखनउ,) २०७
४९ तवारिख तीर्थ कौशाम्बी, २१०
५० दरमयान शहर इलाहाबाद और फैजाबाद, २१२
५१ तवारिख तीर्थ रत्नपुरी, २१५
५२ तवारिख तीर्थ अयोध्या, २१८
५३ तवारिख तीर्थ सावथ्थी, २२२
५४ बयान मुल्क नयपाल, और पहाड हिमालय, २२४
५५ तवारिख तीर्थ बनारस, २२६
५६ तवारिख तीर्थ सिंहपुरी, २२९
५७ तवारिख तीर्थ चंद्रावती, २३१
५८ तवारिख तीर्थ भद्दीलपुर, २३३
५९ तवारिख तीर्थ राजगृही, २३५
६० तवारिख तीर्थ कुंडलपुर और सुबेविहार, २४५
६१ तवारिख पावापुरी और गुणशिलवन उद्यान, २४७
६२ तवारिख तीर्थ पटना, २५९
६३ तवारिख तीर्थ मिथिला, २६२
६४ तवारिख तीर्थ काकंदी, २६४
६५ तवारिख तीर्थ क्षत्रीयकुंड गाव, २६७
६६ तवारिख तीर्थ चंपापुरी, २६९
६७ तवारिख तीर्थ समेतशिखर २७२
६८ तवारिख तीर्थ वर्द्धमान, २९४
६९ तवारिख शहर-कलकत्ता, २९५
७० तवारिख मुल्क आसाम और ढाका, २९९
७१ तवारिख शहर मुर्शिदाबाद, ३०१

७२ परिसह तीर्थंकर महावीरस्वामीके, ३०
७३ बयान शहर बिलासपुर, ३०
७४ बयान शहर रायपुर, ३०
७५ दरबयान शहर नागपुर, ३०
७६ बयान शहर उमरावती, ३१
७७ बयान आकोला और बालापुर, ३१
७८ तवारिख तीर्थ अंतरिक्षजी, मुकाम सीरपुर, मुल्क वराड, ३१
७९ बयान भुसावल–बुर्हानपुर और–खंडवा, ३११
८० तवारिख तीर्थ मांडवगढ, ३११
८१ बयान शहर इंदोर, ३१५
८२ तवारिख तीर्थ उज्जेन, ३१५
८३ तवारिख तीर्थ मकसीजी, ३२०
८४ बयान शहर रतलाम, ३२१
८५ बयान शहर मदसोर, ३२२
८६ बयान जलगांव–पांचोरा–और–मनमाड, ३२३
८७ बयान शहर औरंगाबाद और जालना, ३२४
८८ दरबयान शहर हैदराबाद, (दखन.) ३२६
८९ तवारिख तीर्थ कुलपाकजी, ३२७
९० बयान शहर बेजवाडा, ३३०
९१ दरबयान शहर मद्रास, ३३१
९२ बीचबयान शहर त्रिचिनापल्ली और मदुरा, ३३३
९३ तवारिख तुतीकोरीन, ३३५
९४ तवारिख लंका, ३३५
९५ बयान इरोड, ३३९
९६ दरबयान कोचीन, ३४०

३५ एक मालिक और नोकरका किस्सा, ३९५
३६ तकदीरका तकाजा, ३९६
३७ गुरुजीसे चेलेका सवाल, ३९७
३८ रास्तेकी तलाशीपर किसानकी हाजिर जवाबी, ३९८
३९ एक नजुमी पडितकी चालाकी, ३९८
४० एक मश्करेकी गुस्ताखी, ३९९
४१ बापकेशाथ बेटेकी बेअदबी, ४००
४२ एक वजीरकी उमदा तकरीर, ४००
४३ एक हकीम और मरीजका मजाक, ४०१
४४ मुताबिक धर्मशास्त्रके चारचिजोकी तलाश, ४०२
४५ दो मुसाफिरको एक किसानका माकुल जवाब, ४०२
४६ मौसिम कौनसा अच्छा, ४०३
४७ जैनधर्मकी चदबातें, ४०३
४८ दोस्तकेसाथ दोस्तकी चालाकी, ४०४
४९ सवाल बादशाह अखबरका दरबारी मुसाहिबोंसे, ४०६
५० एक अकलमंद मुन्शी, ४०६
५१ एक अनपढ राजेका जिक्र, ४०७
५२ एक जजसाहब और मुजरीम, ४०७
५३ एक हाजिर जवाब लडका, ४०८
५४ सस्क्रत इल्मकी तरकी, ४०८
५५ एक कंजुसका मजाक, ४१०
५६ एक जाहिल नोकरका लतिफा, ४१०
गर दामादोंका किस्सा, ४११
मालिक और गुस्ताख नोकर, ४११
सफर, ४१४

१० हिकायत एक गुरुजी और श्रावककी, ३७९
११ नवजवान और बुढेकी गप्प, ३८०
१२ एक हकीम और मरीजकी तकरीर, ३८१
१३ एक कजुंसका जवाब,, ३८१
१४ एक हकीम और मरीजका वयान, ३८२
१५ औरत मर्दका मलाइकेलिये झगडा, ३८२
१६ एक नोकरकी फिजहूल वडाइ, ३८३
१७ एक दिवानेका किस्सा, ३८३
१८ एक मुसाफिरका लतिफा, ३८३
१९ फुलकी वडाइ, ३८४
२० एक बुढेकी चालाकी, ३८५
२१ दोस्तोंकी वातचित, ३८५
२२ एक घोडेसवारका मजाक, ३८५
२३ दुनियाकी हिर्सका किस्सा, ३८५
२४ एक कंजुसका लतिफा, ३८७
२५ एक शेर और सुअरका मुकाविला, ३८७
२६ दोस्तोंकी वातचित, ३८८
२७ जरबुल अमसाल, ३८९
२८ अफीमचीका किस्सा, ३९०
२९ एक अकलमंद मुसाफिर और भालुका लतिफा, ३९१
३० एक वाबुसाहवकी मुलाकात, ३०२
३१ चौरीका नतीजा, ३०२
३२ एक चौरकी रहमदिली, ३०३
३३ हिदायत गुरुजीकी चेलेकों, ३०३
३४ एक वापवेटेपर दुनियाकी जवान, ३०४



This book is published by
Hausetaljee -Paradtandjee
Balapur-Dist Akola (Berar)

[सवाने-उमरी.]

The Life and Times of
Mooni Shantivijejee,—

जनाब फेजमाब-मग्जनेइल्म-जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजीकी सवाने उमरी-(यानी,) जीवन-चरित्र.)

महाराजका जन्म संवत् (१९१७) मे शहरभावनगर--जिले काठियावाड मुल्क गुजरातमें हुवा, उनकेवालिदका नाम मानकचंदजी-और वाल्दाकानाम रलियातकवरथा, दोनों जैनमजहबपर सावीतकदम और पके एतकातवालेथे. जब उनकेघर बेटा पैदाहुवा बडीखुशी हासिलहुइ, और नाम उनका हठीसिंहरखा, जब उनकी उमर करीब आठसालकी हुइ इनकेवालिदने इनकों इल्म हासिल करनेकेलिये मदर्सेको भेजे, और इनकी छोटीउमरमें अकल इतनी तेजथीकि-किसीशख्शसे एक मरतबा कोइ बात सुनलेतेथे फौरन याद होजातीथी. और लोग इनकीअकलकी तारीफकरतेथे. दश वर्षकी उमरमें इनकेवालिदका इतकालहोगया और इनकेचचासाहब शेठ मूलचंदजी इनकी परवरीश करनेलगे. हमेशा अपने भतीजेको जैनमजहबकी बहुतसी हिकायते और किस्से कहानी कहाकरतेथे, पस! इनको बहुतसीहिकायतें बडेबडे आलिम फाजिलमुनिओंकी मुहजबानी याद होगइ, और-ये-इसकदर छोटी उमरमेंभी देव-पूजन करतेथे,

जब इनकी उमर बारांसालकी हुइ वाल्दाका इंतकाल -हुवा. सीर्फ ! चचासाहव-और-चचीसाहिवा इनकीपरवरीशकेलिये मौजूदथे. और उनोने इनको दिलोजानसे परपरीशकिआ चौदहवर्षकी उमरमेंइनोने सातगुजराती कितावेंपढकर इल्मअंग्रेजीपढना शुरु किया. और दोसालमेंअंग्रेजीकी तीनकितावेंपढली. शहरभावनगरमे जो जैनमजहवीमदर्सा जारीथा वहांभी जाकरमजहवी इल्मपढतेथे. अछीअछी नजीरे अपनेमजहवकी जो-आलिमफाजिलोंकी वनाइ हुइथी-जवानी-याद करतेथे, जवकभी दोस्तोकेशाथ-हवाखोरीको या-खेलकरनेकोजातेथे यहीकहाकरतेथेकि-दुनिआमें धर्म एक-आलादर्जेकीचीजहै. और दुनयवीकारोवार उसकेपीछे है, एक सुखी एक दुखी-एक अमीर-और-एक गरीव-यहसव पूरवजनमके किये हुवे पुन्यपापका फल है. दोस्तलोग इसवातको सुनकरहसतेथे और कहतेथेकि-अगर-एसेहीधर्मपावंद वनतेहो-तो-हवाखोरीको-क्यौं आये ? साधु होजानावहेतरहै.-उनके जवावमे--यही-फरमातेथे-कव-वहदिन आवे, और-मे-साधु वनु.

अठाराहवर्षकी उमरमें पंचप्रतिक्रमण-पूजन-जिवविचार--नवतत्व-दंडक-कर्मग्रंथ-क्षेत्रसमास-और-स्वरोदयज्ञान वगेरा जवानी हासिल करलियेथे,-अकसर जव शहरभावनगरमें कइ जैनमुनिमहाराज आयाकरतेथे तव-ये-उनकी खिदमतमें मशगुलरहतेथे, और शहरकेआदमी इनकेलिये अकसर कहाकरतेथेकि-क्या ! आपभी साधु होजाओगे ?-एक वख्तका जिक्रहै जव महाराजश्री वृद्धिचंदजीसाहव-जो-वडे आलिमफाजिल जैनमुनिथे शहर भावनगरमें तशरीफ लाये और उनोने जवव्याख्यान धर्मशास्त्रका वाजकिया-येभी-उनके व्याख्यान सुननेकोंगये, और उनोनेजव यहव्याख्यान दियाकि-जो-शख्श-रातकेवख्त खानेपीनेसे परहेजकरेगे वहदुर्ग-

तिकी सफर-न-करेंगे, इनोने यहवात सुनकर उसीतारिखसें हमे-शाकेलिये अपना खानापीना रातकेवख्तका कतइ छोडदिया.

संवत् (१९३२) में जब महाराजश्री आत्मारामजी-आनद-विजयजी-जो-बडे आलिमफाजिल-और-जैनमजहबके बडेपावद थे-भावनगरमें-तशरीफलाये औरचारमहिने उनोनेअय्याम वारीश कयामकिया उसवख्त-येभी-वास्तेमजहबी वहेससुननेके जायाक-रतेथे, चारमहिनेतक हरहमेश व्याख्यानसुनतेरहे, और इनका एतकात धर्मपरबढा. और यहभीदिलमें मुसम्मीमइरादा करलिया-कि-दुनयवी-कारोबारछोडकर दीक्षालेना वहेत्तरहै, बादवारीशके जब महाराजश्री आत्मारामजी-आनदविजयजीसाहब-करीबएक हजारश्रावकलोगोकेशाथ तीर्थगिरनारकी जियारतको-पांवपैदल जानेपरआमादाहुवे इनके चचासाहब मूलचदजीने अपनेरिस्तेदारो-केशाथ इनकोंभी तीर्थगिरनारकी जियारतकेलिये भेजदिये, भाव-नगरसेरवानाहोकर शत्रुंजय-तलाजा-महुवा-दीव-वेरावलपटन-मागरोल-धोराजीहोतेहुवे तीर्थगिरनारकों पहुचे. औरवहाकी जि-यारतकिइ, बादचंदरोजके जबतीर्थ गिरनारसें रवानाहोकर शहर जामनगरकों गयेऔर वहाकीभी जियारतकिइ, वहासे महाराजश्री आत्मारामजी—आनदविजयजीसाहब-मुल्कपजावको जानेकेलिये तयारहुवे, और भावनगरके श्रावकलोग अपनेवतनकों लोटनेलगे. उसवख्त इनोने दोकोशपर एकधुवावनामकेगांवमें जाकरदीक्षा इख्तियारकिइ, दुसरेरोज रिस्तेदारोनेतलाशकिइ और इनकोंअप-नीसोवतमें नहीदेखे-तो-मालूमहुवाकि-इनोनेदीक्षा इख्तियारकर लिइहै, रिस्तेदारलोग इनकेपास आयेऔर इनकासाधुपनेका वेष अलगकरदिया, झोलीपात्रेखोसकर इनको वापिसजामनगरमेंलाये. और अपनेशाथ भावनगरकोलेचले, औरजब-ये-भावनगरमें आये

इनकेचचासाहब मूलचंदजी दसकोशतक सामनेगये, और इसअंदेशेसे अपनेभतीजेको कुछभी सख्तबातनही किइकि-इनकादिल नाराज-न-होजाय. मगरजब भावनगरमें आयेइनकी बहुतहांसी हुइ, ख्वाह-दोस्त-या-रिस्तेदारलोग-औरउनकी औरतेंभीइनसे तानाजनी करनेलगीकि-वाह ! वाह ! ! आपतो साधुहोगयेथे, अब क्यौं वापिस दुनियादारीकेकामोमें आये, ? महाराज बेशक ! उस वख्तबहुतशर्मींदेहुवे. मगर अमरलाचारी चचासाहब और दिगर रिस्तेदारोंके दो-सालतक-दुनियादारीकी हालतमेंरहे, और अपने मुसम्मीमइरादेकों नहीछोडा, इसअर्सेमें महाराजश्री आत्मारामजी-आनंदविजयजीसाहब-और-महाराजश्री लक्ष्मीविजयजीके खत इनकेपास आयाजायाकरतेथे और-येभी-उनको बराबर जवाबदेतेरहतेथे, जाहिरातमें तो ये-दुनियादारीकेकामोमे मशगुलथे-मगर अंदरुनी इरादाइनका उसीतर्फलगाहुवाथा. और अकसरलोगऐसा कहाकरतेथेकि-ये-फिरसाधुहोजायगें, और इनकोरातदिन यही ख्यालरहताथाकि-में-इनदुनियादारीके कामोसे छुटकरकब अपने असलीइरादेको पुराकरु, हमेशां देवपूजन--सामायिकप्रतिक्रमण-चौदहनियम-और-परमेष्टिमहामंत्रका जाप कियाकरतेथे. इनकों पापके कामोंसे अजहदपरहेजथा.

इनके चचासाहबने इनकीसादीकेलिये बहुतकोशिशकिइ-मगर ये-उनको-साफजवाबदेतेथेकि-में-सादी नहीकरनाचाहता. क्यौंकि-मेरारहना इसदुनियामे चंदरौजकाहै. इनके चचासाहबके कोइ लडका नहीथा इसलिये उनका स्नेह अपनेभतीजेपर ज्यादाहोना एकस्वाभाविकबातथी. हमारेचरितनायकको-स्वरोदयज्ञानसे वर्ताव करना लडकपनसेही स्वभावथा. चंद्रस्वरमेंपानी-दुध-वगेरापीतेथे. और सूर्यस्वरमे खानाखातेथे, और अक्सरअपने दोस्त

स्तेदारोंकेशाथ दुनियादारीकेकामोंमे मशगुलरहतेथे, मगर दिल इनका अपनेअसलीइरादेपरथा, जबकभी दोस्तलोगोकेशाथ मजहबीवातपर वहेसहोतीथी-ये-फौरन! उनको जवाबदेतेथे धर्मसच्चा है. और सुखदुखमिलना अपनेअपने कियेहुवे कर्मोंका फलहै, असलमें इनकीदलीले आलादर्जेकी तेजथी. कभीकभी ऐसामौकाभी आनपडताथाकि-रातकेवख्त-इनकेदोस्त किसीमकानमें अलायधा जमाहोतेथे-और-जब रात्रीभोजनकरने-न-करनेकेवारेमें वहेसहोतीथी-तब-ये-जवावदेतेथेकि-जैनशास्त्रोंमें रातकाखाना मनाहै, दोस्तलोग कहतेथे जिसचीजमे दिनमें जीवनहीहै-तो-रातको कहांसेआगये? जवाबमें फरमातेथे-किसीशख्शने समझो रातकेवख्त एकलोटेमें पानीभरकरपिया, उसलोटेमें सेंकडोचींटीयां वसववडकके फिररहीथी, पानीकेशाथ पीनेवालेशख्शकेपेटमें-वे-सेंकडोचींटीयां चलीगइ. वतलाना चाहिये रातकेवख्त खानपानकरनेसे अपनाऔर दुसरेजीवोंका विगाडहै-या-नही, ?-सवुतहुवा रातके वख्त खानपानकरना-खौफ-व-खतरसेभराहै. इसीलिये जैनशास्त्रोंमें रात्रीभोजन करना मनाफरमाया, जैसेमकानमें हमेशाचोरीका होनासंभव-नहीहोता, मगर-तोभी-हरेकशख्श अपनामकान वंद करके सोताहै इसीतरह-धर्मको चाहनेवालाशख्श रातकोखानापीना वंदरखे इसीमेउसकाभलाहै, ऐसीऐसीदलीले हमेशांहोतीरहतीथी, कभीकभी जब दौलतकेवारेमे वहेस होतीथीतवभी-यही जवावदेतेथेकि-दौलतभी मुकाबिले धर्मकेकोइ चीजनही,—

इसतरह इनोने दुनियादारीके काममें तीनवर्षगुजारे औरजव इनके चचासाहव-शहर-भावनगरसे-तीर्थ शत्रुंजयकी जियारतको गये इनोनेकिसीसे जाहिर-न-करके संवत् (१९३५) फाल्गुनसुदी पंचमीकेरोज मुल्कपंजावतर्फ जानेकेलिये घरसें रवानाहुवे, क्योंकि महाराजश्री आत्मारामजी-आनंदविजयजीसाहव-और महाराजश्री

लक्ष्मीविजयजीसाहब–उसवख्त मुल्कपंजाबकी सफरमेथे. जिनके पास इनोने पेस्तर दीक्षाइख्तियार किइथी, शहरभावनगरसें रवाना होकर शामकों गोघाबंदरपहुचे, जोकि–सातकोशके फासलेपर वाकेथा. दुसरेरोज वहांसे जहाजमें सवार होकर सुरतगये. सुरतसे ब–जरीये रैलके–बंबइ–और–बंबइसे भुसावल–खडवा–हरदा–जबलपुर–इलाहाबाद–गाजियाबाद–मेरट–अंबाला–लुधिहाना–होतेहुवे मुल्क पंजाबमें जालंधर टेशन पहुचे. और वहांसे (१८) कोशके फासलेपर जो होशियारपुरशहरथा–जहां महाराजश्री आत्मारामजी आनंदविजयजी–साहब ठहरेहुवेथे उनसेजाकर फाल्गुनसुदीतेरसकी शामकों मिले. और एकमहिना उनकी खिदमतमें रहे, जब–मलेरकोटके श्रावकोने गुरुजीकों अरिजा भेजाकि–आप–हमारे शहरमें तशरीफ लावे और इनकों चेलाबनावे, गुरुजीकेशाथ–ये–मलेरकोट गये और वहांकेलोगोने बडी शानसौकतसे इनका जलसा किया, *संवत् (१९३६) वैशाखसुदी (१०) गुरुवारकेरौज–दिनके दस बजे–मिथुनलग्नमें गुरुजीने इनकों दीक्षा दिइ, और इनका नाम–शांतिविजयजी–रखा, यह दीक्षा इनकी दोबारा समझीये,–

☞ [जैनमुनियोंके कायदे निचे बतलायेजाते है,]

किसी रुहकों कतल नहि करना–(यानी) चीटीसेलेकर हाथीतक किसीको मारनानही. जूठकभी बोलनानही, किसीकिसमकी चौरी नहिकरना. इश्कबाजी नहिकरना, किसीतरहका लालच नहि करना. रातको नहिखाना, शराब और गोस्तसे परहेजकरना. और किसीतरहका नसाभी नहीकरना, गांजा–भंग–अफीम–माजुम वगे-

---

*चैतसुदी एकमसे संवत्की शुरुआतमाननेसे सवत् (१९३६)मे महाराजने दीक्षा लिइ ऐसा जानना.

राभी खानापीना नहि. मुल्कोमे फिरकर धर्मकी वाजकरना. और एकजगह मुकीमहोकर नहीरहना. अगर कोइ अपनेको इजापहुचावे तो गुस्सेकी एवजमे रहमकरना. शिवाय परमेश्वरके दुसरेकी परवाह नहीरखना. किसीको गाली नही देना, तोहमत नहीलगाना. किसीको धोखा नहीदेना. चुगली नही खाना--और-किसीकेशाथ लडना-झघडना नही, मगर धर्मके अवर्णवाद वोलनेवालोकेशाथ वहेसकरते वख्त सख्त-वात कहनापडे तो उसकी मना नही है. हमेशा भिक्षामांगकर अपनी सीकमपरवरीश करना और वख्तपर जोकुछ मिलजाय उसपर सब्रकरना, सोनेचांदीके जेवर-वा-जवाहिरात वगेरा नहीपहनना, और हमेशां सिर खुला रखना,-

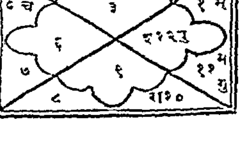
☞ (जैनमुनियोंके कायदे खतमहुवे,-)

दुनियाछोडकर दीक्षाइख्तियारकरना सहजवातनही है, जवानीमें एशआरामकोछोडना और धर्मपरपावदहोना वडेवहादूरशख्शोका कामहै-उमदापुशाक और उमदाखाना छोडकर साधुका वेशपहनना और घरघर भिक्षामागना-अगरधर्म प्यारा-न-हो तो ऐसाकोनकरसकताहै,? महाराजकी तकदीरहम आलादर्जेकी समझते है जिनोनेजवानीमें घरछोडकर जगलकीराहलिइ. ऐसेहक आलमंद और वहादूरशख्शकी सवानेउमरीलिखना यहभी एकअछीतकदीरके ताल्लुकहै, आपलोगोने अकसर कइजीवनचरित देखे होगे-मगर-जिसमे यथार्थवात दर्जकिइगइहो-वही-चरित लाइक तारीफके होताहै,-इसदुनियामे जोकुछफायदाधर्मका-गुरलोग-पहुचासकते है रिस्तेदारऔर कुटुवकेलोगनही पहुचासकते, इसीसवबसे हमने इससवानेउमरीको लिखनेकेलिये कलमउठाइहै. महाराजकी सवानेउमरी ऐसीहैकि—अगर इसकोवाचकर कोइ उसपर अमलकरेतो निहायतफायदा उठासकेगा, जवकोइखुशनशीव और

इकबालमंदशख्स दुनियामेंहोते है-तो अंदाजकियाजाताहैकि-इनके-ऐसेहोनेका सवब पूर्वजन्मका संस्कारहै, और-है-भी-ठीककि-विना पूर्वजन्मके संस्कारके ऐसाहोना दुसवारहै, उसदुनियामे एकसेएक-आलादर्जेके शख्स होगये और आगेकोभी होयगे. इसमेंकोइशक नही, जन्मलेनाभी उनहीकासफलहै-जिनकेशरीरसे-कुल-जाति-गांव-नगर-औरमुल्कको धर्मकाफायदा पहुचाहो, इनहीखुशनसीव और-इकवालमंद-महापुरुषोकी गिनतीमें हमारेचरितनायक-महा-राज-शांतिविजयजीभी है-दुनिया मोहरुपी जंजीरसे जडीहुइहै. जहांआराम वहांतकलीफलगी है, युवानी वुढापेसेघीरीहै, सुखदुख-काचक्र हरचीजपरचलरहाहै, दुनियामें उमदाचीजहै-तो-धर्म है, जिनको धर्मप्यारा होताहै-वेही-दुनियाको छोडकरदीक्षा इख्ति-यारकरते है,-

संवत् (१९३६)-शाके-(१८०१)-वसंतऋतु वैशाखसुदी-१० गुरुवारघटी-४२-५७-मघानक्षत्रघटी-१७-४७-ध्रुवयोगघटी ५०-३६-तैतलकर्ण-एव पचागशुद्धिः-दिनमानघटी-३३-४-दि-नार्द्ध-१६-३२-रात्रीमान-२६-५६-उभयघटी-६०-पूर्ण, सूर्यो-दयसें इष्टघटी-१०-४० (लग्नघटी) २-२३-९-२० सूर्यघटी ०-१८-२७-५२-महाराजकी दीक्षाका वख्तहै,—

॥ दीक्षा लग्नका चक्र ॥



महाराजके दीक्षालग्नमे लग्नकामालिक बुधकेंद्रमे पडाहै इसलिये ज्ञानदर्शन चारित्रका फायदा हासिल होतारहेगा, और धर्मके कामोंमें फतेहमद रहेंगे, आफतावका सितारा ग्यारहमें खानेमे पडाहै इसलिये किसी चीजकी कमी-न-रहेगी, अकल तेज रहेगी. और वडीवडी सभाओमे इज्जित पायगे. चमकताहुवा मगलका सितारा नवमेंखानेमे वेठाहै इसलिये यह वडा फायदेमद होगा, चद्रमानवमे खानेको अपनी माकुल नजरसे देखताहै, वृहस्पति उसी नवमेंखानेमे वेठाहै, और शुक्र-उस-नवमेंखानेको एक नजरसे देखताहै, इसलिये इनका धर्मभुवन वहुत सुधराहुवाहै, धर्मपर वहुत पुख्ता एतकात वनारहेगा, कइ ग्रथ धर्मकेवारेमें वनायगे. और इनकी लिखीहुइ वातको वहुतलोग पसंद करेंगे. बुध और शनिके सितारे केंद्रमे होनेसे और मगल-वृहस्पति त्रिकोणमेहोनेकी वजहसे हमेशा अपने साधुपनेमे खुश रहेंगें, वारहमेंखानेमें शुक्रका सितारा अपने घरका मालिकहोकर वेठाहै इसलिये धर्मके कामोमे और मजहवी वहेसमें हमेशा फतेह पातेरहेगे. और इनकेआगे एकनिशान वतौर धजापताकाके चलेगा, जिसशख्शके लग्नका मालिक भाग्यके मालिकको-और-भाग्यका मालिक लग्नकेमालिकको पुरीतौरसे देखताहो-उसको दीक्षा जरुर हासिलहो, महाराजके दीक्षालग्नमे यही योग पडाहै इसलिये दीक्षा हासिलहुइ. और हमेशा इनका दिल धर्मपरपायद रहेगा. मगर मगलका सितारा नवमेंखानेमे पडनेसे इनको अपने गुरुभाइयोसे नाइत्तिफाकी वनीरहेगी. जिस शख्शके लग्नमे नवमेंखानेका मालिक दसमेंखानेमेंपडाहो-और-दसमेखानेका मालिक नवमेंखानेमे पडाहो-उसको हमेशा राजयोग वनारहे. महाराजके दीक्षालग्नमें देखलो! वैसाही योग पडाहै, जिसकीवदौलत महाराज अपने साधुपनेमे वतौर राजर्षिके वनेरहेंगे, और-वडेवडे-

खिताव पायगें, तीसरे भुवनमें चंद्रमा मित्रक्षेत्री होकर पडाहै और धर्मभुवनकों पुरीतौरसे देखताहै इसलिये दिनपरदिन इनके पराक्रमकी तेजीरहेगी. और धर्मकों तरक्की देयगे, दुसरे भुवनमें केतुपडा है इसलिये हमेशां सफर करते रहेगे. एकजगह कयाम-न-करेगे. छठे भुवनका मालिक मंगल-नवमे भुवनमें वेठाहै इसलिये वीमारी और दुश्मनोसे मेहफुज रहेगे-यानी-वचेरहेगे. मिथुनलग्नमें दीक्षा लेनेवाला शख्श आलादर्जेका साधुमहात्मा होताहै, महाराजका दीक्षालग्न मिथुनसिरसोदयी होनेसे जोकाम अपनेदिलमे करनासोचेगे उसकों पुराकरकेछोडेगे. ख्वाह मुश्किलहो-या-आसानहो, राहुका सितारा आठवे खानेमेपडाहै इसलिये एक मरतवा महाराज वडे इकवालमंद होगे.-आठमेखानेका मालिक शनि-केंद्रमे वेठाहै, बुध सितारा आफतावका दोस्तहै, और आफताव-बुधका अजहद्दोस्त है इसलिये महाराजकी उमर लंवीहोगी,

(दीक्षा लग्नका वयान खतम हुवा.)

☞[अव हस्तरेखा-और--दिगरइशारे जिस्मके वतलायेजाते है.]

जिस शख्शकी अवाज पंचमस्वरमे हो-वह-हरजगह इज्जित पातारहे. महाराजकी अवाज पचमस्वरमें है, जोशख्श हिमतवहादूर हो-अकसर-वडानसीवेवाला होताहै, और वह शिवाय परमेश्वरके किसीकी परवाह नही करता, महाराजकी हिमत आलादर्जेकी है. जिसशख्शके हाथ इसकदर लंवेहोकि-जव-वह-खडाहो-तो-गोडेतक व-खूवी पहुचजाय, वह आलादर्जेका इकवालमंद और आलिमफाजिल होताहै. महाराजके हाथभी गोडेतक पहुचते है. जिस शख्शका निलाड उंचा-और-वडाहो-वह नसीवेवर होताहै, महा-

राजका निलाड उंचा और वडाहै, जिसशख्शके पुरेवत्तीस दांतहो-वह-खुशनसीवहोताहै, महाराजकेभी पुरे वत्तीसदांतहै. हरेक शख्शके हाथमें जो तीनरेखा होती है उनमें एकउमरकी-दुसरी दौलतकी-और तीसरीइज्जितकी होतीहै. अगर-ये-तीनोरेखा लंवी और पुरीहो-वह-उमरमे-दौलतमे-और-इज्जितमे पुरा कामयाव होताहै. महाराजकी-ये-तीनोरेखा-व-मुजव मजकुर तेहरीरके है, जिसशख्शके हाथमे धजाका निशानहो-वह-हमेशा इज्जितपातारहे, यही निशान महाराजके हाथमेंभी है,

जिसशख्शकेहाथमें धनुष्यका निशानहो-उसकी-मुलाकातके लिये वहुतलोग ख्वाहिसमंद वनेरहे, मगरमुलाकातहोना दुसवारहो, महाराजके दाहनेहाथमे धनुष्यका निशानसाफ मौजूदहै, जिसके हाथमें पदमकानिशानहो-वह-अकलमद-और-शतावधानकरनेवाला होताहै, महाराजके हाथमें पदमका निशानमौजूदहै, जिसके हाथमें त्रिशूलका निशानहो-उसकेआगे धर्मकीधजापताका चले, महाराजकेहाथमे यहभी निशानसाफहै, जिसकेदाहनेहाथकी तीसरीअगुलीपर चक्रहो-तो-वह-धर्मात्माशख्श होताहै. महाराजके दाहनेहाथकी तीसरीअगुलीपर हुवहुचक्रहै, जिसशख्शके दोनोहाथोंकी अगुली-और अगुठोंमे दाहनेमे दाहनीतर्फ झुकते-और-वायेंमवायीतर्फ झुकतेहुवे शखहो-वह-शख्श धर्मात्मा औरदुनियामें मशहूरहोताहै, महाराजकी अगुलीयोंमे शिवाय एकअगुलीके जो उपरवतलादिइ गइहैऐसेही शखकेनिशानहै. जिसकेहाथकी-उर्द्धरेखा-कलाइसेलेकर छोटीअगुलीतक चलीगइहो-वह-हिंम्मतवहादूर और मशहूरशख्शहोताहै, महाराजके हाथमेंवहीरेखा मौजूदहै. जिसकेदाहनेहाथके अगुठेमें जवकानिशानहो-मशहूर-और-अकलमंद

खिताव पायगें, तीसरे भुवनमें चंद्रमा मित्रक्षेत्री होकर पडाहै और धर्मभुवनकों पुरीतौरसे देखताहै इसलिये दिनपरदिन इनके पराक्रमकी तेजीरहेगी. और धर्मकों तरक्की देयगे, दुसरे भुवनमें केतुपडा है इसलिये हमेशां सफर करते रहेगे. एकजगह कयाम-न-करेंगे. छठे भुवनका मालिक मंगल-नवमे भुवनमे वेठाहै इसलिये वीमारी और दुश्मनोसे मेहफुज रहेंगे-यानी-वचेरहेगे. मिथुनलग्नमें दीक्षा लेनेवाला शख्श आलादर्जेका साधुमहात्मा होताहै, महाराजका दीक्षालग्न मिथुनसिरसोदयी होनेसे जोकाम अपनेदिलमे करनासोचेंगे उसको पुराकरकेछोडेगे. ख्वाह मुश्किलहो-या-आसानहो, राहुका सितारा आठवे खानेमेपडाहै इसलिये एक मरतवा महाराज वडे इकवालमंद होंगे.-आठमेखानेका मालिक शनि-केंद्रमे वेठाहै, वुध सितारा आफतावका दोस्तहै, और आफताव-वुधका अजहददोस्त है इसलिये महाराजकी उमर लंवीहोगी,

(दीक्षा लग्नका वयान खतम हुवा.)

☞[अब हस्तरेखा-और-दिगरइशारे जिस्मके वतलायेजाते है.]

जिस शख्शकी अवाज पंचमस्वरमे हो-वह-हरजगह इज्जित पातारहे. महाराजकी अवाज पचमस्वरमें है, जोशख्श हिमतवहादूर हो-अकसर-वडानसीवेवाला होताहै, और वह शिवाय परमेश्वरके किसीकी परवाह नही करता. महाराजकी हिमत आलादर्जेकी है. जिसशख्शके हाथ इसकदर लंवेहोकि-जव-वह-खडाहो-तो-गोडेतक व-खूवी पहुचजाय, वह आलादर्जेका इकवालमद और आलिमफाजिल होताहै. महाराजके हाथभी गोडेतक पहुचते है. जिस शख्शका निलाड उचा-और-वडाहो-वह नसीवेवर होताहै, महा-

लहसन मौजूदहै. जिसशख्शके दोनोंपेरोंमें किसीपेरपर तिल-या-लहसनहोव वहहमेशां मुल्कोंकीसफर करतारहे. महाराजके वायेपांवके उपरकेकिनारेपर लालरंगका लहसन मौजूदहै —

(हस्तरेखा और डिगरइशारे जिस्मके खतम हुवे,-)

दिक्षा इख्तियार करनेकेबाद महाराजने सिद्धांतचंद्रिका व्याकरण पढना शुरुकिया, और जेठमहिनेमें अपने गुरुजीकेशाथ मलेरकोटसे रवानाहोकर लुधिहाना-जालधर होतेहुवे-होशियारपुर-गये, और संवत् (१९३६) की वारीश मुकाममजकुरपर गुजारी. मोसमवारीशमें जैनमुनिकों सफर करना मनाहै. इनदिनोंमें शहर भावनगरसे महाराजके चचासाहबकेकइखतआये, उनमेंलिखाथाकि तुम-वगेरकहेसुने यहासे चलेगये-और साधु होगये-हमको वडारंज हुवाहै, वे-दिन-वहुतखुशीके जातेथे-जबकि-तुमको हम अपने घरमें देखतेथे, होनहारकेआगे किसीकाकुछवस नहीचलता, हमारी बुद्धिपर पर्दापडगयाकि-हम-तुमकों अकेले घर छोडकर चलेगये. जवहम घरआये तो-मालूम हुवा-हमारे घरके वहुमुल्यरत्न-हमारे नेत्रोके सितारे-और-हमारे दिल वहलानेके खिलौने-तुम-घरछोडकर चलेगये, तुमकों ऐसाकरना हर्गिज ! मुनासिबनहीथा. तुमारे चलेजानेकारंज हमारेदिलपर इसकदर जमगयाहैकि-जिसकावयान हमकुछ लिख नहीसकते, हमकों दुनिया सुनसान दिखाइदेती है, हमारादिल अजहद तकलीफपाताहै, हमको उमेदथीकि-थोडेरोजमें तुम घरकाकाम सभाललोगे. लेकिन ! हमारीउमेद खाखमेंमिलगइ, आदमीके इरादे कभी पुरे नहीहोते. जिसचीजको-न-चाहो वह पास आतीजाती है और जिस चीजकी चाहना करो वह दूर दूर चलीजाती है, असलमें इसवरत तरहतरहकी फिकर हमारेदिलपर

शख्शहोताहै, महाराजके दोनोंहाथोंके अंगुठेमें जवका निशान मौजूद है.

जिसशख्शकी ऊंचाइअपनी अंगुलीयोके नापसें (१०८) अंगुलीहो वहशख्श खुशनसीबहोताहै, महाराजकेशरीरकी ऊंचाइ (१०७) अगुलकी है, (यानी) पेस्तर एकरसीसे अपनेशरीरकों खडेहोकर नापे-और फिरवहीशख्श अपनेहाथकी अंगुलीयोके बीचकेमुकामसे-नापे-अगर (१०८) अंगुलकी ऊचाइ हो-तो-जानना दौलतमंद और खुशनसीब शख्शहोगा. अगर (९६) अगुलतक ऊंचाइहो-तोभी-उमदाहै. और अगर (८२) अंगुलतक ऊंचाइहोतो-मामुलीदर्जेका आदमीजानना. और इससे कमहो-तो-कमनसीब-जानना, जिसशख्शके दाहने-या-बायेपांवके तलवोमे नवअंगुललंबी उर्द्धरेखा होवे-वह-राजा-या-महात्माहोताहै, महाराजके दोनोंपहरोंके तलवोमें नवनवअंगुलकी उर्द्धरेखा मौजूद है, जिसकेपावके अंगुठेकेनीचे तलवेमें चक्रनिशानहो-वहशख्श हमेशां मुल्कोंकी सफरकरनेवालाहो-येभी-निशानमहाराजके दोनों-पेरकेतलवोमें मोजूदहै, जिसशख्शकी नाभि गहरी (यानी) उंडी हो वहशख्श हमेशां खानपानसे सुखीरहे, अगर गहरी-न-हो-और उसकाकुछहिस्सा बहारनिकलाहुवाहो-वह-खानपानसे मोहताजरहेगा, ख्वाह मर्दहो-या-औरतहो, महाराजकी नाभि बहुत गहरीहै, जिसशख्शके मस्तकपर तिलहो-वह-हमेशां इज्जतपातारहे, महाराजकेमस्तकपर तिलकानिशान मौजूदहै, जिसशख्शके दाहनेहाथपर तिलहोवे-वह-शख्शअपनेहाथकी कमाइ दौलतभोगे, और हमेशां फतेहमंदरहे, महाराजकेदाहने हाथपर उमदातिलहै, जिसशख्शके दाहनेहाथके पजेपर लहसन-या-तिलहो, तो-वह-शख्शवडासखीहोताहै, महाराजके दाहनेहाथकेपजेपर लालरंगका

[संवत् १९३७ का-चौमासा शहर अमृतसर,]

वादवारीशके होशियारपुरसे रवानाहोकर-जालधर-निकोदर जिरा-पट्टी-अमृतसर-नारोवाल--सनखतरा-गुजरानवाल-रामनगर-और-लाहोरकीसफर करतेहुवे वापिस अमृतसर आये, और संवत् (१९३७) की वारीश वहापरगुजारी, सिद्धातचंद्रिका व्याकरण जोगदसालमे पढना शुरुकियाथा-जिसमेकरीब तीनहजार श्लोकदर्ज है मुहजवानीयादकरके खतमकरलिया, औरफिर अमरकोशपढना शुरुकिया, सूत्रदशवैकालिक-और-उत्तराध्ययन-वाचे, कभीकभी लोगोकों तालीमधर्मकी देतेथेऔर आपसमे तकदीर तदवीरकेवारेमे वहेसभी होतीथी, महाराज फरमातेथे तकदीर और तदवीर दोनो अपनीअपनीजगहपर वेशक ! ठीकहै, मगर तदवीरसे तकदीर वडीचीजहै. तदवीरकभी खालीभी जातीहै, तकदीर खाली नहीजाती, अगर तकदीर उल्टीहोतो-तदवीर चाहेजितनीकरो कुछ-कारआमदनही होसकती, ख्याल करो ? अगर तकदीरके फेरनेका कोइउपायहोता-तो-रामचंद्रजी-और-पाचपाडव वनवासकों क्योंजाते ? आराम और तकलीफका होना वेशक ! अपनी तकदीरके ताल्लुकहै, जवतकदीर उल्टीआती है-तो-बुद्धिभी वैसीही होजाती है, जगलमे पडेहुवेकों अगर तकदीर अछीहो-तो-उसका कोइकुछनहीकरसकता. और अगर तकदीरवुरीहो-तो-महेलमेवेठे हुवेकोभी-तकलीफआनपडती है, एकशख्श फायदेकेलिये तदवीर करताहै-मगर-उसकों फायदा नहीमिलता, एकशख्श हलखेडता है और राज्यपानेकी कोइकोशिशनहीकरता, मगरउसकीतकदीर अछीहो-तो-उसको-किसीनकिसीमुफ्त राज्य मिलजाताहै, एक दफे दो-शख्श-एक वादशाहके पास नौकरीके लिये गये, उसमें एक कहताथा तकदीर वडी है, और एककहताथा तदवीर वडी है.

फैलगइहै, आरामकेपीछे तकलीफ और संपदाकेपिछे विपदा आपसे आप आकर सवार होजाती है. हमारे दिलकीवात दिलमे रहगइ, तुम दिनरात हमारी आंखोकेसामने फिरतेहो. हम अपने दिलकों वहुतेरा समझते है मगर किसीसुरत चैन नहीमिलता, अगर सो-चाजायतो धर्मकरना हमेशांकेलिये अछाहै, दुनिया छोडकर दिक्षा इख्तियारकरनेका वख्त हमाराथा, तुमारा नहीथा, हम इसवातपर खयाल करते हैकि-तुमसे दीक्षाकाभार कैसे उठसकेगा, हमकों अपनी जींदगीमे इतनाफिक्र कभी-नहीहुवाथा. जैसे तुमारे चले-जानेसे हुवाहै, रातकोनींद नहीआती, खानपान अछा नहीलगता और धंदेरोजगारमें दिल नही जमता. हम क्या! अपने रिस्तेदार लोग सवकहते हैकि-तुमकों ऐसाकरना विल्कुल मुनासिव नहीथा. महाराजने उनखतोको पढकर एकखत इस मजमूनका लिखाकि-वेशक! आपको रंजहुवाहोगा, मैं-आपको वगेर जाहिरकिये इस-लिये चलाआयाकि-सायत! आप मुजे आने-नहीदेते, मेराइरादा धर्मपरथा. इसलिये अवआप खुशहोकर लिखेकि-तेरी-दीक्षा फ-तेहमंदहो, उनोने महाराजकेखतको पढकर अपनेदिलको थांभलिया और-समझलियाकि-उनका दुनयवीकारोवारसे इतनाही संवंधथा, जोकुछ ज्ञानिदृष्टभाव होताहै, हर्गिज! गलत नहीहोता, ऐसासोच कर जवाव लिखाकि-हम-अव-और-क्या! कहे!! जोकुछहुवा अछा है, हमसे इस दुनियामे आकर कुछ धर्म नही वना, तुमारी दीक्षा फतेहमदहो-और-तुमारी अछीगति हो,-महाराजकों इल्म पढनेकी ख्वाहेस हरवख्त वनीरहतीथी, गुरुजीकी खिदमत करनेमें मुताविक अपनीताकातके कमी-नही-करतेथे, और-काम-क्रोध-लोभ-मत्सर अभिमान और दंभ इनसे हमेशां परहेज रखतेथे.

[संवत् १९३७ का-चौमासा शहर अमृतसर,]

बादबारीशके होशियारपुरसे रवानाहोकर-जालधर-निकोदर जिरा-पट्टी-अमृतसर-नारोवाल--सनखतरा-गुजरानवाल-राम- नगर-और-लाहोरकीसफर करतेहुवे वापिस अमृतसर आये, और सवत् (१९३७) की वारीश वहापरगुजारी, सिद्धातचंद्रिका व्या- करण जोगइसालमें पढना शुरुकियाथा-जिसमेकरीव तीनहजार श्लोककेदर्ज है मुहजवानीयादकरके खतमकरलिया, औरफिर अम- रकोशपढना शुरुकिया, सूत्रदशवैकालिक-और-उत्तराध्ययन-वाचे, कभीकभी लोगोकों तालीमधर्मकी देतेथेऔर आपसमे तकदीर त- दवीरकेवारेमे वहेसभी होतीथी, महाराज फरमातेथे तकदीर और तदवीर दोनो अपनीअपनीजगहपर वेशक ! ठीकहै, मगर तदवीरसे तकदीर वडीचीजहै. तदवीरकभी खालीभी जातीहै, तकदीर खा- ली नहीजाती, अगर तकदीर उल्टीहोतो-तदवीर चाहेजितनीकरो कुछ-कारआमदनही होसकती, ख्याल करो ? अगर तकदीरके फे- रनेका कोइउपावहोता-तो-रामचंद्रजी-और-पाचपाडव वनवासको क्योंजाते ? आराम और तकलीफका होना वेशक ! अपनी तक- दीरके ताल्लुकहै, जवतकदीर उल्टीआती है-तो-वुद्धिभी वैसीही होजाती है, जगलमे पडेहुवेको अगर तकदीर अछीहो-तो-उसका कोइकुछनहीकरसकता. और अगर तकदीरवुरीहो-तो-महेलमेवेठे हुवेकोभी-तकलीफआनपडती है, एकशख्श फायदेकेलिये तदवीर करताहै-मगर-उसको फायदा नहीमिलता, एकशख्श हलखेडता है और राज्यपानेकी कोइकोशिशनहीकरता, मगरउसकीतकदीर अछीहो-तो-उसको-किसीनकिसीसुरत राज्य मिलजाताहै, एक दफे दो-शख्श-एक वादशाहके पास नौकरीके लिये गये, उसमें एक कहताथा तकदीर वडी है, और एककहताथा तदवीर वडी है.

वादशाहने कहा तुमारेदोनोंका इम्तिहानलेकर नौकरीकी जगहदुंगा, आजरातकों तुम-दोनो एककोठरीमें वंदरहो, गरजकि-वादशाहने दोनोकों रातकेवख्त एककोठरीमें वंदरखे. जव आधीरात होगइ तदवीरको वडीकहनेवाला वोला देख ! में!! तदवीरकरताहु और कोठरीके तमामआलेमे हाथफेरताहुं अगर कोइचीज मिलगइतो अछाहै. तकदीरवडीकहनेवालावोला, खुशीकेशाथ अपनीतदवीर चला,मुजेइससेकोइनाराजीनही, वादशाहने-दो-लड्डु-जिसमे एकमेसोनामहोररखीहुइथी-एकखालीथा-अवलसे-एकआलेमें रखवादियेथे, तदवीर वालेने अंधेरेमें इधरउधर हाथफेरा-तो-उसको-एक आलेमेसे-दो लड्डु मिले, उनकोलेकर तकदीरवालेके पासआया और कहनेलगा देख ! मेने कोशिशकिइ तो मुजे दो-लड्डु-मिले है, ले ! एक तुजे देताहु. एक-में-खाताहुं, ऐसाकहकर एक उसकों दिया एक आप खाया, तकदीरवालेके-लड्डुमें-सोनामहोर निकली, तदवीरवालेके लड्डुमे-कुछ नहीनिकला, अखीरमें तदवीर वडीमाननेवाला वोला, तदवीर कैसी वडीचीजहे ? अगर तकदीरके भरुसे वेठेरहतेतो-लड्डु कहासे मिलते ?-जवावमे तकदीरवाला वोला. मैने-कौनसीतदवीर किइथी ? जो-मुजे-सोनामहोर-और-लड्डु-मिला ? इस वातको सुनकरतदवीरवाला चुपहोगया-और-अपनेदिलमें कहनेलगा वेशक तकदीर वडीचीजहै.-इसतरह एकएक वातपर वहेस हुवाकरतीथी,

[संवत् १९३८ का-चौमासा शहर लुधिहाना,]

वादवारीशके अमृतसरसे रवानाहोकर-पटी-जिरा-और फिरोजपुरकी सफरकरतेहुवे फरीदकोट गये. और वहांसे फिरदुवारा जिरा-आनकर निकोदर-जालधरकी सफर करतेहुवे शहर लुधिहाना आये-और-सवत (१९३८) की वारीश वहांपर गुजारी,

अमरकोश जोगये चौमासेमें पढना शुरुकियाथा, जिसकी (१५००) के करीब श्लोकसंख्याहै मुहजवानी याद करलिया, कुमारसभव-मेघदूत-और-काव्यदीपिका यहां मुहजवानी यादकिइ, और संस्कृतमें उमदा तौरसे वोलनेलगे,-कितनेक संस्कृत वाक्य यहांभी वतलाते है,

कुत्रवासः ? किमभिधानं श्रीमता, ?

कान्यक्षराणि अलकृतानि स्वनाम्ना ? यूयं परीक्षायां उत्तीर्णाः कि ?

काशका अत्र ? सएवायं कि न पश्यथ, ?
किमधीत शब्दशास्त्रे तर्कशास्त्रे वा ?
येन शब्दशास्त्र नाधीत सभातरे कि वक्ता सः ?
परिज्ञातं मया युष्मद्रहस्यं-अवगत वा श्रीमतां स्वांतं,
अनृतवादिना सत्यमपि मृषायते,

युष्मान् प्रति-मया प्रत्यनीक वचउक्तंचेत् मुहुःक्षंतव्य क्षमासागरा यूय

उद्योग कुर्वन्नपि फल-न-लभ्यते अतःकर्मणा एव प्राधान्यं,
पुन्यवलात् नानाविध सुख लभंते जनाः,
अहो महता महत्व-ये-विपत्तिकालेपि धर्म-न-त्यजति,
न-विनापरापवादेन-रमते दुर्जनः,
खलाना प्रतिक्रिया दूरात् पलायन,
पण्यवीथिकायां गतुकामा वय, कार्यचेत् वक्तव्य,
धर्मकर्मणि अनुत्साह एव प्रमादः,
शक्तौ सत्यां-या-उपेक्षा-सैव दुखमूला,
प्राणातेपि प्रेक्षावता धर्ममालिन्य-न-कार्यं,

येषां चेतसि मोहप्राचुर्यता भावमालिन्यं तत्र,

स्वबुद्धि कल्पना निर्मितं तत्वं-न-संमतं,

जिनबिंबकारिणे शिल्पकाराय-येन-अल्पमूल्यं दत्तं तेन परमार्थनीत्या भगवति अप्रीतिरुत्पादिता,

देवमंदिरे सायुधै-र्न-गंतव्यं,

धर्मविरहितानां पदेपदे दुखसंपदः-स्वप्नांतरेपि नास्तिकल्याणं,

शुभाशुभ कर्म कर्ता भोक्ताच आत्मैव,

कर्मक्षयेण आत्मनः स्वस्वरुपावस्थितिर्मोक्षः,

देवाः कतिरुपाणि विकुर्वंति, ?

कतिविधा वेदना नारकाणां, ?

कति द्वीपसमुद्राः किंसंस्थानाः ?

जंबूद्वीपः किंसंस्थानः-तत्र कतिनद्यः- ?

संसारसमापन्ना जीवाः कतिविधाः ?

अवसर्प्पिण्यां षष्टारकः किंदृग् दुखकृत् ? तत्रनराः किंदृशाः ?

तेषां किमायुः किंदेहमान, ?

जीवाः कथं गुरुत्वं लघुत्वं लभंते,

जीवः कस्मिन् समये अनाहारकः-आहरको वा,

कतिदेवलोकाः कतिनरकावासाः ?

दुर्जनवागुरासु पतितः कः सुखं प्रपन्नः,

सविस्मयं सभयंच निवेदितं तेन,

सचमत्कारं समंतात् अवलोक्य शनैः शनैरपससार

आकाशे कर्ण दत्वा देववाणी श्रुता.

नूपुराणा रवेण अनुमीयते योषिदागमनं,

तत्प्रतिरुपकं रुपं नार्य्यापि दृग्गोचरीभूतं,

जन्मजरामरण संकुलं संसारवासं संसरन् जीवो भवाद् भवांतरं उपैति,

अयमात्मा-अमाप्ताहर्द्धर्मः कष्ट परंपरां लेभे,

स्वकर्मदोषेण समीहितं-न-लभतेजीवः-र्हथैवदोपददात्यन्येभ्यः

आदित्याद्या ग्रहाः शुभाशुभस्य द्योतकाः-

नतु स्वयं कस्यापि अनीष्टं कुर्वंति.

विबुधजनसंकीर्णायां इदृग्विधाया सभायां किंचिद्वक्तुकामो ह-श्रूयता तावत्,

इह जगति लघुरपि जनः-महतासंसर्गेण-महिमान कलयति.

अज्ञातपारपर्ये वाक्य जने उपहासाय जायते.

प्रमदासु अतिप्रसंगो-न-कार्यः

जलेन अखिलदेहस्य यत्स्नानं-तद्वाह्यस्नान-परमार्थदशायां सैव स्नातकः-यः-पुन कर्मपंकन-न-लिप्यते,

यो मुक्तिं गत्वा पुनःससारमभ्युपैति स कथ मुक्तः,

धर्मद्वेषिणा मूढेनसह-यो-वादः सः शुष्कवादः अयं सर्वथा याज्यः

प्रसुप्तस्प पुरःशास्त्रार्थकथन हास्याय-न-बोधाय.

न-अज्ञानात्-परःशत्रुः

सस्नपितः पुमान् यदि स्वय पके निमज्जति कस्यदोषोत्र,

जीवो अनादिकर्मभाक्-यदनेन-पूर्वजन्मनि-प्रकृतिस्थिति र-प्रदेशैः-आश्रवदृत्त्या कर्म वद्धं-तदवधोदयदीरणासत्ताभिः प-रिभुनक्ति,

दीर्घायुरारोग्यंच पुन्येनैव संभवति,

गुप्तवृत्त्या कृतमपि पाप ज्ञानिनां प्रत्यक्षं,

शब्दरुपरसगध स्पर्शादि विषयैर्जीवो दुर्गतौ नीयते,

को-न-वांछति स्वकीयमभ्युदयं,

संज्वलन-प्रत्याख्यान-अप्रत्याख्यान-अनंतानुबंधिभिः क्रोधाहंकार छद्मलोभैर्जीवः संसारबंधनं प्राप्नोति.

जैनमते रागद्वेषादि दोषै र्विनिर्मुक्तो जिनेंद्रो देवः,
भो ! नेत्रे ! ! अधुना जिनेन्द्रदर्शने प्रमादो-न-विधेयः,
स्वर्गेभि र्निधानानि सुरांगनाश्च पुन्येनैव कर्मणा लब्धाः,
वन्हिजल भूमयो विधिनोपसेविता एव सौख्यावहाः,
भानौ-अभ्युदयेपि-उलूकानां-अप्रमोदो विभाव्यतां अत्र कस्य दोषः

सुरुपां प्रियवादिनां भार्यालब्ध्वा वृक्षमूलमपि गृहंमन्यंतेकामिनः
यत्र इभाअपि दृष्टिपथं नायांति मशकानां तु का कथा, ?
गर्दभा वाजिधुरं-न-वहंति,

श्रृणुत भो ! पौरा ! ! अयं शृंगारसुदरीघातकः-वधस्थंभं नीयतेतत् यदीदृशं कर्म-अन्योपि करिष्यति-एतादृशं-एव-दंडंलप्स्यते,
पण्यवीथिकायां जिगमिषा-अस्ति-किं, ?
पर्वतिथौ व्रतं गृन्हंति धार्मिकाः,
इह जगति ज्ञानं पर भूषण,
व्याख्यानं तदेव रम्यं यत्र श्रोतारो-न मुह्यंति,
एतत्तु-अस्माभिरपि स्वीक्रियते,
कपाटं पिधेहि-अतद्वारे शत्रेकेन निहितं, ? उपानहः कुत्रसंति,
पैतृकं द्रव्यं मया-न-लब्धं,
वयं-तु-अकिंचनाः स्म,
मम-अखिलं कार्यं संवृतमधुना,
येन जातेन वंशः समुन्नति-न-प्राप्तः तेन सूनुना किं, ?

श्रीमद् हेमचंद्रसूरेः प्रौढिं वाक्यरचनां दृष्ट्वा विस्मयस्मेराननाविबुधजनसमूहाः

तेषां महांतं उपकारभारं मेनिरे जनाः

स्वकुशलोदंतमयं पत्र लघु प्रेक्षणीय,

पत्रवाचनाविरतौ उद्गतरोमांचकंचुकोहं किं लिखामि युष्माकं कला कौशल्य,

युष्मासु दत्तसेवांजलिरहं किंचित् विज्ञपयामि,

जीवाना सुखं दुख-वा-मातुं कोपि-न-प्रभुः

श्रमणोपासकैः पंचदशकर्मादाननिवृत्तिः कार्या,

नहिस्वस्य वलविकलतामाकलय्य वलीयसः प्रभोः शरणाश्रयणं दोषपोषाय,

अहं तु विश्या कामये-न-योषित,

अंतर्पटे सति स्त्रीणा धर्मकर्मणि महानतरायः

ततः-ते-विबुधाः स्वकीयं स्वकीयं मंदिर जग्मुः

संजातभयः सः मत्पुरा वद्धांजलि विज्ञपयति,

अमूक सुतं सुलक्षण जानामि,

अमूका सुतां लक्ष्मीं जाने.

इछानुरुपो विभवः कस्यापि-न-संजातः-अतोमूर्छा त्यक्त्वा धर्मकर्मणि यत्नोविधेयः,

लुब्धोजनः सर्वत्र पराभव-प्राप्नोति,

गुणप्रकर्षादेव-जनाः पूज्यंते,

असत्यवादिनां यशो-न-जायते.

दुर्जन संसर्गात् पदेपदे मानहानिः

तीर्थानाअवलोकन-आश्चर्याणा निरीक्षण-देशाटनेनएवजायते.

अटन्-सन्-साधवः पूज्यते,

वाग्पारुष्यं महद् दुखाय जायते जनाना,

यत्र-अनिश-क्लेशोत्पत्तिस्तत्स्थान दूरतः परिवर्जयेत्,

सूर्योदयेपि निद्रामवलंवते चेत् महद्दारिद्रयं,
देहे आरोग्यं चेत्-महदैश्वर्यं,
यः कांतासु-कनकेषु-न-लुब्धस्तस्य-अखिलसिद्धयः,
सत्वावलंविनां नास्ति कातरत्वं,

[संवत् १९३९ का-चौमासा-शहर होशियारपुर.]

वादवारीशके लुधिहानेसे रवानाहोकर जीरा-मलेरकोट-जिग्रामा-फिल्लोर-फगवाडा-और-जालंधरकी सफर करतेहुवे शहर होशिआरपुर गये, और संवत् (१९३९)की वारीश वहां गुजारी, इसचौमासेमें न्यायमुक्तावली ग्रथ पढा, और उसमेंसे अनुमानखंड मुहजवानी यादकिया, इनदिनोंमें महाराज नयेनये काव्य संस्कृतमें बनानेलगे, चीठीपत्री लिखतेथे तो-नये श्लोक बनावनाकर लिखतेथे, जितने बडे पुरुषोके जीवनचरित लिखेजाते है उनसे ऐसीऐसी बातें सीखनेमे आती है-जो हरेकशख्शके जीवनभरमें कामआती है और उनका जीवनचरित दुसरोको इल्मकी तरक्की देताहै, पेस्तरके चालचलन-और रीतरवाजकों सिखलाताहै. स्मर्णशक्ति और धैर्यकों देताहै. और तरहतरहकेफायदेकों पहुचाताहै, जिनकाजीवन नहीलिखागया उनकों कोइ जानताभी नही होगाकि-क्या थे-और-क्या होगये. इसलिखनेका मतलव यह हैकि-इन्सान अपने थोडे जीवनकों ऐसेकाममें लगावे जिससे अपनेकों और दुसरोकों फायदा पहुचे,

[संवत् १९४० का-चौमासा शहर विकानेर,]

वादवारीशके होशियारपुरसेरवानाहोकर-जालंधर-लुधिहाना अंबाला-सरहिंद-चनोली-वगेराकी सफरकरते देहलीआये. और

कुछरौज ठहरकर गाजियाबाद-मेरट होते तीर्थ हस्तिनापुरकी जियारतकों गये. यह तीर्थ वडापुराना है वहांकी जियारत किइऔर फिर वहांसे देहली होतेहुवे मुल्क मारवाडकी सफरकों चले,-इन दिनोमें देहलीसे रवानाहोकर कुतुवमेहरोली फिरोजपुर-अलवर होतेहुवे शहर जयपुर आये, और एकमहिना वहापर कयामकिया, जयपुरसें रवानाहोकर तीर्थफलौदी पार्श्वनाथकी जियारतको गये और वहाकी जियारतकिइ. वहासे रवानाहोकर मेरटा-नागोरहोते शहर विकानेर जाते हुवे रास्तेमे-नोखेगानमें-जव रातको सोतेथे आधी रातकेवख्त एक सांपने आनकर महाराजके दाहने हाथके पंजेपर डखमारा, उसवख्त दो-मुनिमहाराज-औरभी शाथथे जो दीक्षामे और उमरमेवडेथे, जवजहरने ज्यादहजोरदिया महाराजकी आख खुली. और कहा मेरे दाहनेहाथमें वहुतदर्द होताहै,-न-मालूम क्याहुवा ? जिसश्रावकके मकानमें महाराज ठहरेथे-वह-और दोतीन शख्श और मिलकर लालटेनलेकर इधरउधर देखनेलगे-तो-मालूमहुवा एक वडा लवा साप-एकवीलमें घुसरहाथा, इससे साफ जाहिरहुवाकि-महाराजकों-सांपने काटाहै. और दाहनेहाथके पंजेको देखातो खून मालूमहुवा. महाराजको यकीनहोगया मेरेदाहनेहाथके पजेपर सर्पने डकमाराहै. खुद सर्पका मत्रजानतेथे पढना शुरु किया, और कुछदेरकेवाद सापका जहरउतरा, पिछलीरात कुछ नीद आइ और आरामभी मालूमहुवा, शुभहहोते आगेकों रवानाहुवे और देसणुक-भीनासर होतेहुवे तीसरेरौज विकानेर पहुचे, सवत् (१९४०) की वारीश वहापर गुजारी, और नयचक्री-पग्रंथ जवानीयादकरना शुरुकिया, जिसमें द्रव्य-गुण-पर्याय-नैयम -संग्रह-व्यवहार-शब्द-समभिरुढ-और-एवभूतनयवगेरानयान है चौमासेकी अर्सातक मुहजवानी यादकरलिया, भगवतीसूत्रभी यहा

वाचा, और-यहांके पुस्तकालयोसे कइपुरानीपुस्तके देखी. जब वारीश खतमहुइ तो मुल्कगुजरातको जानेकेलिये रवाना हुवे.

[संवत् १९४१ का-चौमासा-शहरअहमदाबाद,]

विकानेरसे रवानाहोकर नागोर-जोधपुर-और-पाली होतेहुवे पंचतीर्थीकी जियारतकों गये. १-वरकाणा, २-नाडोल, ३-नाडलाइ, ४-घाणेराय, और-५-रानकपुर इनपांचगांवोकी जो-पंचतीर्थी कहलातीहै, जियारत किइ, और रानकपुरसे आगे पहाडकी घाटीकों पारकरके शहर उदयपुरकों तशरीफ लेगये, और वहांपर एकमहिना कयामकिया, चैतमहिनेमें वहांसेरवानाहोकर तीर्थकेशरीयाजीकी जियारतकों गये. जो वहांसे (१८) कोशके फासलेपर वाकेहै, जियारतकरके वापिस उदयपुर आये, और उदयपुरसें रवाना होकर शिरोही अनादराकी-सफर करते तीर्थआबुजीकों गये. आबुके जैनमंदिर ऐसेखूबसुरत शगमर्मरपर उमदा और वेमीशालकारिगिरिसे तामीरकियेहैकि-जिसकी-तारीफ-तवारिखोमें मशहूर है, वहांकी जियारतकिइ, और चदरौज वहापर ठहरे, वादइसके आबुसे रवानाहोकर पालनपुर-सिद्धपुर-ऊंझा-मेहसानाकी सफर करते शहरअहमदावादमें तशरीफ लाये, और संवत् (१९४१) की वारीश-वहापर गुजारी, महाराजने योगवहनकरके इसचौमासेमे वडीदीक्षा इख्तियारकिइ. वैयाकरणभूषण-और-कुवलयानदअलंकार मुहजवानीयादकिये,-कादवरी-विक्रमोर्वशी-और-शकुंतलानाटक-वांचा, अछीतरह संस्कृत जवानमें बोलनेलगे, और हरेकविषयपर शास्त्रार्थकरनेकी ताकात हासिलहुइ.

[संवत् १९४२ का-चौमासा-शहरसुरत,]

वाद वारीशके शहरअहमदावादसे रवानाहोकर-धंधुका-बोटाद--उमराला--चावडी--होते तीर्थ--शत्रुंजयकी जियारतकों गये, एक महिना वहां कयामकिया. और वहांसे शिहोर-वरतेज वगेराकी सफर करते शहरभावनगरमें पहुचे, जब अपने चचाके घर भिक्षाकों गये तब महाराजकी चाचीनेकहाकि-जिसरौजसे-तुमनेदीक्षा इख्तियाराकिइ उसके छमहिनेकेवाद तुमारेचाचेका इंतकालहोगया, कोइदिन एसा-नही-गुजरताथाकि-उनोने तुमकों याद-न-कियेहो. तुमकों ऐसामुनासिव नहीथाकि-तुम-विना कहेचले गये, और साधु होगये, घरमे कोइ आदमी नहीरहा, जब तुमारी यादआती है विल्कुल रंजीदा हो जातीहु, महाराजने उनकों धीरज दिइ और कहाकि--तुम--खुद समझदारहो, शब्र करो और तीर्थंकरदेवोकी इवादतकरो जिससे सब अछा होगा, एसा कह कर भिक्षालेके अपनेमकानकों आये, और एक महिनेतक शहर भावनगरमें ठहरे, एकरौज महाराजकी चाचीने कहा अगर तुम व्याख्यान धर्मशास्त्रका वाचना सिखेहो--तो--हमकों सुनाओ, दुसरेरौज महाराजने व्याख्यानसभामे वैठकर सबलोगोकों व्याख्यान धर्मशास्त्रकासुनाया, लोग खुशहुवे और तारीफकरनेलगेकि दीक्षा लेना ऐसेही शख्शोका कामहै-जो-धर्मशास्त्रके माहितगार होकर आमलोगोकों धर्मका फायदा पहुचावे,

एक महिनेकेवादभावनगरसे रवानाहोकर गोघावंदरकों गये, और घनौघमडनपारसनाथकी जियारतकिइ, गोघावंदरसें वरतेज गाव होतेहुवे वल्लभीनगरी जिसकों जमानेहालमें-वलागांव बोलते है आये, महाराजकी माता इसी वल्लभीनगरीकीथी, और उनके खानदानमें सिर्फ ! एकहीभाइ लक्ष्मीचंदजी रहगयेथे, जो महाराजके

मामा-होतेथे. जवउनोने सुनाकि-हमारा-भानजा-जो साधुहोगया है आजरौज यहां आनेवाला है, चारकोशतक सामनेगये और बाद मुलाकातके उनोने महाराजसेकहा-तुम-अपने वालिदकेघर एकही बेटेथे और साधु होगये यह तुमको लाजिम नहीथा, महाराजने कहा-आप-बखूबी जानते हैकि-दुनियामें-बडेबडे राजेमहाराजे होगये जिनोने अपना राजपाट छोडकर दीक्षा इख्तियारकिइ-तो-मालूम होताहे धर्मकुछ बडीचीजहै, महाराजने वहांभी आमलोगोको व्याख्यान धर्मशास्त्रका सुनाया. और सबलोग खुशहुवे. फिर महाराजके मामानेकहा-जोकुछ हुवा अछाहुवा, चलो ! अब घरसे भिक्षा लेआओ, महाराज उनकेघर भिक्षाकों गये. वहां उनकी मामीनेभी वहीकलामकहे जो इनके मामाने कहेथे, और यहभीकहा कि-मैने-तुमकों लडकपनमें पालाथा, और अब साधुकेवेषमें देखतीहु-तो-बडारंज मालूम होताहै, घरमे बेठकर क्या ! धर्म नहि होताथा. ? महाराजने कहा बेशक ! होसकताथा मगर जैसा साधुपनेमें होसकताहै दुनियादारीकी हालतमें नही होसकता, औरभी महाराजने धर्मकी वातें सुनाइ, और भिक्षालेकर अपने मकानकों वापिस आये, करीब (१५) रौज वहां मुकीमरहे, फिर वल्लभीसे रवानाहोकर बोटाद-लीमडी-वढवान-और-धोलेराकी सफर करतेहुवे खंभातशहरकोंगये, वहांपरतीर्थस्थंभन पार्श्वनाथकीजियारत किइ. खंभातसें रवानाहोकर भडौचकों गये, वहांकी जियारत किइ, अश्वावबोध-और-शकुनिका विहारतीर्थकी तवारिख अपनी नोटबुकमे यहां लिखी, भडौचसे रवानाहोकर सुरतबंदरकों गये, और संवत् (१९४२) की बारीश वहां गुजारी. आचाराग-अनुयोगद्वार-और ज्ञातासूत्र यहां वांचे. तत्वार्थसूत्रके दस अध्याय मूलपाठ और-प्रमाणनयतत्वलोकालंकार इसचौमासेमें हिफ्ज याद किया,-

(यानी) कंठाग्रकिये. ये-दोना किताबे जैनसूत्रोंकी-और-जैन-न्यायकी एक कुंजी है, जोशख्श इसको समझकर हिफ्ज यादकरेगा जैनतत्त्व-और-स्याद्वादन्यायमें होशियार होजायगा.

[संवत् १९४३ का-चौमासा-शहरपालिताना,]

वादवारीशके सुरतसे रवानाहोकर भडौचकेरास्तेसे शहरवडोदा आये, इनदिनोंमें स्थानागसूत्र वाचा. वडोदसें रवानाहोकर शहरअहमदाबाद-वढवान-लीमडी--बोटाद-और--वल्लभीनगरीकी होतारासफर करतेहुवे वारीशके मौकेपर-शत्रुंजयतीर्थकी तराइमें-शहरपालितानेको गये, जिसकाबयान पेस्तर लिखभीचुकेहै, संवत् (१९४३) की-वारीश-वहांपर गुजारी, इसअर्सेमें महाराज-व-आर्जी-खांसी-मुब्तीलारहे, करीवतीन महिनेके कोइइल्म नही पढागया,—

धर्माख्याने श्मशाने च-रोगिणां या मतिर्भवेत्,
यदि सा निश्चला वुद्धिः-को-न-मुच्येत वंधनात्. १

धर्मकीवाते सुनतेवख्त-मसानमें-और--बीमारीकी हालतमें आदमीकी वुद्धि जैसीधर्मपरपावद रहती है अगर वैसी हमेशांवनी रहेतो-कौनऐसा शख्शहै-जो-ससारके वधनसे-न-छुटसके, ? वीमारीकी हालतमें महाराज हमेशां पचपरमेष्टिका जापकरतेथे, अ-पथ्य खानपानसें परहेजरखतेथे, और किताववगेरा वाचतेरहतेथे. महाराजकी वीमारी सख्त-नहीथी, सख्तवीमारी वह होती है जिसमे अनाजखाना वंदहोजाय-रातकों-नीद-न-आवे, चहेरेकी रवनक विल्कुल वदलजाय, आदमीकों पहिचान सकेनही, शर्म विल्कुल छुटजाय, अस्थि-मास-और-खून-विल्कुल सुकजाय, रातकेवख्त

आस्मानमें-उत्तरदिशातर्फ-जो—ध्रुवका-तारा उदयहोताहै-वह-सख्त वीमारीवालेको अपनीनजरसें-न-दिखाइदे, कानमें अंगुली लगाकर देखनेसे जो अंदर घोरशब्द होताहै-सुनाइ-न-दे, अपनी आंखोंसे अपनेनाककी शिखा-न-दिखाइदे, अपनीजवान मुहसे वहारनिकाले-तोभी अपनीआंखोसे-न-दिखाइदे, ये—सवसख्त वीमारीके निशानहै, वीमारशख्शकों हरवख्त साफहवामें रखना चाहिये, विछौना-और-कपडेभी साफरखना अछाहै, वीमारशख्शकों अकेला छोडना-या-वहुतआदमी जमाहोकर उसकेपास वैठेरहना अछानही, अगर वीमारी वढतीजाय-या-सख्तहोजाय-तोभी-वीमारशख्शके सामने ऐसा-नहीकहनाकि-तुम-इसवीमारीमें मरजाओगे, वल्कि! ऐसाकहनाकि-तुम-जल्दी अछेहोजाओगे, वीमारशख्शके-सामने हमेशां धर्मशास्त्रकी वातें कहतेरहना अछाहै, उसके सामनेवेठकर रोना-नही, वीमारकों वहुतदिनतक एकही मकानमें रखनाअछानही, दिनमेसोंना-रातकोजागना, न-साकरना, मैथुनसेवना, ज्यादा वोलना, ज्यादागर्मीमें-या-ठंडमें वैठेरहना, या-पैशाव-पाखाना-रोकना वीमारकेलिये विल्कुलअछानही, महाराजकी वीमारी सख्त नहीथी. उमर लंवीथी, इस लिये आरामहुवा, इसअर्सेमे-महाराजकी वहेन मौजा-अमरेलीसे आइ, और कहनेलगी, आपकी तकदीरमें दीक्षालिखीथी, खेर! मुजकों दर्शनहुवे यहीगनीमतहै, चदरोज वहांठहरी, और महाराकेमुखसें धर्मकीहिकायते सुनतीरही, चौमासेकी अखीरमें महाराज कर्मग्रंथकीटीका वांचतेरहे, कातिकसुदी पौर्णमाकेरोज पहाडशत्रुंजयपर जाकर तीर्थकी जियारतकिइ, और पुराने मंदिरमूर्त्ति शिलालेखोंकी नकल अपनी नोटवुकमें दर्जकिइ,

[संवत् १९४४ का-चौमासा शहर राधनपुर,]

बादबारिशके महाराज पालितानेसें रवानाहोकर-महुआ-तलाजा-गोघाकी सफरकरते दोबारा भावनगरकों गये, और करीब डेढमहिनेके वहां कयामकिया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशादेतेथे, और हरवख्त धर्मकेबारेमें चर्चेहोतीथी, भावनगरसें रवानाहोकर वल्लभी-लींमडी-वढवान-और-ध्रागधराकी सफर करतेहुवे पाटन शहरकों गये. वहांपर राजाकुमारपालके वख्तका एकमशहूर कुतुबखाना-(यानी) जैनपुस्तकालय देखा, और एकमहिना वहां कयामकिया, पाटनसें रवानाहोकर रियासत राधनपुरकों गये, और संवत् (१९४४) की बारीश वहांपर गुजारी, आर्यदेशदर्पण किताब-महाराजने यहांबनाइ, जोकि-उसीसालमें छपकर जाहिर होचुकी है. इसमें मुताबिक जैनशास्त्रके फरमानसें आर्य-अनार्य देशोंका खुलासा दियाहै, पचाकसून और टीका महाराजने यहांवांची, स्याद्वादमंजरी जोकि-जैनमजहबका एकतर्क ग्रथहै यहां पढा. और उसका मूलपाठ हिफ्ज यादकिया, इनदिनोंमें महाराज बौधमजहबके पुस्तकोंका मुलाहजा करतेरहे, उसमेंसे कुछबातें बौधमजहबकी यहांपर बतलाते है,

कइलोग कहते है जैन-और-बौधमजहब एकहै, और कइकहते है-एक-दुसरेकी शाखाहै, मगर जैन-बौध-किसीसुरत एकनही, न-एकदुसरेकी शाखाहै, जैनमजहब तीर्थंकर रिषभदेवके वख्तसे जारी है, बौधमजहब पीछेसे जारीहुवाहै,-राजाशुद्धोदनके पुत्र-गौतमबुद्धका जन्म-नयपालकी तराइमें सुसमार पर्वतकेपास कपिलवस्तुग्राममें हुवा, जैनमजहबके और बौधमजहबके उमूलमें बहुत फर्क है, जैनमजहबमें तमामवस्तु-उत्पात--व्यय-और--ध्रौव्ययुक्त

मानीगइहै, वौधमजहवमें तमामवस्तु क्षणिकमानी है, गौतमवुधके-चेलोमें-मोदगलायन-शौरीपुत्र-और-आनंद-ये-वडेचेलेथे, विनयपीठिकासूत्र-महावग्गसूत्र-कुलवग्गसूत्र--परिचारपाठसूत्र--दिग्निकायसूत्र-परिनिवाणसूत्र-मध्यमनिकायसूत्र-विमानवथ्थुसूत्र-पेयवथ्थुसूत्र-थिरगाथा-निदीशपीठिका-पाटीसंविदा--कथावथ्थु-वगेरा वौधमजवके पुस्तकोंके नामहै,—

जैनके अखीरके तीर्थंकर महावीरस्वामी जव हयातथे गौतम वुधभी उसवख्त मौजूदथे, गौतमनामसे चारशख्श दुनियामेंमशहूर हुवे, तीर्थंकर महावीरस्वामीके वडे चेले गौतमगणधर जैनथे, गौतमवुध-वौधमजहवके-नामी-शख्शथे, गौतमरिषि-वैदिकमजहवके रिषिथे, नैयायिक मजहवके गौतमरिषि अलग हुवे, वौधमजहवके शास्रोसें मालूम होताहैकि-गौतमवुधके वख्तमें-यागी-वैरागी-यति मौनी-निर्ग्रंथ वगेरा वहुतसे मतके साधु मौजूदथे,-वौद्धमजहवके साधुभी-चौमासेमें सफर नहीकरते, अंतरवसन-मध्यवसन-उत्तरीय-कटिबंध-भिक्षापात्र-जलछाननेकापात्र-ये-वौधमजहवके साधुओके उपकरण कहेजाते है,-राजा कनिष्ककेवख्तसें वौधमजहवमें दो-शाखा हुइ.-इसवख्त हिंदमें वौधमजहवकेलोग थोडे है, मगर मुल्क चीन-जापान बर्मा-और-टिब्वट तर्फ वहुत है,-

[संवत् १९४५ का-चौमासा-शहर-अहमदावाद.]

वादवारीशके राधनपुरसे रवानाहोकर तीर्थ शंखेश्वरकी जियारतकों गये, जोकरीव (१८) कोसके फासलेपरवाकेहै, उसकी जियारतकिइ. और उसकीतवारिख अपनी नोटवुकमें दर्जकरलिइ, तीर्थ शंखेश्वरसे रवानाहोकर कस्बे मांडलको आये और वहापर

महाराजने अपने गुरुजीसे सूरिमंत्र-और-वर्द्धमान विद्या पढी, छेदग्रंथ-महानिशीथभी इसीअर्सेमें बाचा, माडलसे रवाना होकर शहर अहमदाबादको आये, और संवत् (१९४५) की चारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे और सभा अछी भरतीथी, हैमकोश-यहां महाराजने हिब्ज यादकिया, और यहांके पुस्तकालयोंसे-कइ पुस्तक देखे. वसुदेवहिंडिग्रंथ यहांबाचा, कइमरतबे बडीबडी सभा भरकर एक एक बातपर घंटोतक वाज करतेरहे, एक रौज जैनमंतव्यपर वाज किया उसकामतलब इस तरह है.

☞ [जैनमंतव्य-प्रकाश,]

१-रागद्वेष-कामक्रोध वगेरा दुश्मनोसे जिनोने फतेहपाइ है उनको जैनशास्त्रोंमे जिनकहते है, और उनका बयान कियाहुवा-जो मतहै-उसको जैनमत कहते है, जिसकों हमेशांसे लोग मानतेआये, मानते है, और मानेगे, इसलिये इसको सनातनधर्मभी कहागयाहै,

२-जैनोके कायदे ऐसे है जिसका विरोधी बनना नहीहोसकता, अगर कोइ झुठी दलील करके विरोधी बनजाय तो उसकी मर-जीकी बातहै. मगर सची दलीलसे विरोध नही आ सकता,

३-रागद्वेष कामक्रोध वगेरा (१८) दोषोसेरहित जिनेंद्रदेवको जैनमें इश्वरपरमात्मा मानेगये है, अर्हन्-वीतराग-सर्वज्ञ-ये-सब इनहीके नाम है.

४-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-इन चारोंको जैनमें संघ कहते है,—

५-जैनमजहबमें-जगत्-अनादि है,-सबजीव अपनेअपने कियेहुवे कर्मोको खुद भोगते है, इश्वर उसका फलदेवे, ऐसा जैनलोग नहीमानते. रागद्वेष वगेरा दोषोसे रहित इश्वर-फलदेनेके-झगडेमें क्यों पडे ? जो शख्श जैसा कर्म करेगा वैसा फल खुद पायगा, जैसे शराव पीनेवाला नशेके जोरसे खुद गाफिल होजाताहै, वैसे हरेक जीव अपनेकियेहुवे पापकर्मसें गाफिल होताहै,

६-जिसकेपास हथियारहै, जिसकेपास औरतहै. जिसकेपास जपमालहै, और-जो-दुश्मनको मारनेकी तयारीमें खडे है, उनको जैनमें देवनही मानेगये,—

७-पंचमहाव्रतको इख्तियार करनेवाले-भिक्षा मांगकर सीकमपरवरीश करनेवाले-और-सत्यधर्मके उपदेष्टा-जैनमें-मुनि—मानेजातेहै,

८-जिनेंद्रदेवोके फरमायेहुवे-जैनागमको-जैनमजहबमें-सत्शास्त्रमाने है, जिसमें पूर्वापर विरोध—और-इन्साफसे खिलाफ बात नहीहोती,

९-पक्षपातरहित-और-दुर्गतिसे अछीगतिको पहुचानेवाला-जैनमे-धर्म-मानागयाहै,

१०-जैनशास्त्रमे स्वर्ग मनुष्य तिर्यंच और-नरक-ये-चारगति मानीगईहै, स्वर्गगति वहहै-जो-आस्मानमें चांदसूर्य वगेराके विमान देखतेहो, उसमें देवतेलोग रहते है, और-वे-खुद उसको चलाते है. जोलोग कहते है, विद्वानोको देव मानना अविद्वानोको-असुर,-पापियोको राक्षस, और अनाचारियोको पिशाच मानना

चाहिये. जैन-इसबातसें—खिलाफहै. विद्वान्-अविद्वान्-पापी-और-अनाचारी अलगहै, और-देव-असुर-राक्षस-और-पिशाच अलगहै,-

११-मनुष्यगतिमें-जितने-मनुष्यहै सब आगये, जोलोग कहते है दुनियामें सुखी है-वह-देव-और दुखी है-वह-नारकी है, जैनलोग इसबातसे खिलाफहै, जैनलोग-स्वर्ग-नरक-अलगचीज मानते है. मनुष्यगति अलग मानते है.

१२-तिर्यचगतिमें जितने-पशु-पक्षी-हाथीघोडे-मोर-तोते-चिडिया वगेराहै सब आगये,

१३-नरकगति पृथवीके नीचे है, जो अजहद पाप करता है इसगतिकों पाताहै, जहांकि-शिवाय तकलीफ-और-रजके दुसरी चीज-नामनीशानकोंभी नहि है,

१४-मूर्त्तिपूजा-और-तीर्थ-जैनलोग मानते है,-और तीर्थोंकी जियारतकों जानापुन्य समझते है,

१५-अर्हन्-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु—श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र-और-तप-ये-नवपद जैन मजहबमें-आलादर्जेके पाक समझेगये है,

१६-तकदीर-और-तदबीरमें तकदीर बडी-और-तदबीर छोटी समझी गइहै.-तकदीर बुरीहो-तो-तदबीर चाहे जितनीकरलो फायदा-न-होगा.

१७-जैनलोग-तमाम वस्तुकों-स्वस्वरुपसे अस्ति, और परस्वरुपसे नास्ति मानते है, और इसीकों-स्याद्वाद न्याय कहते है,

(अनुष्टुप्-वृत्तं,)

सर्वमस्ति स्वरूपेण-पररूपेण नास्तिच,
अन्यथा सर्वभावानां-एकत्वं संप्रसज्यते, १

१८-प्रत्यक्ष-और-परोक्ष-ये-दो-प्रमाण जैनमें मानेगये है,

१९-जैनमें चेतना लक्षणयुक्तकों जीव मानाहै, और चेतनारहितकों अजीव-शुभकर्मके पुदगलकों पुन्य-और अशुभकर्मके पुदलकों पाप मानाहै, भलेबुरे परिणामोसे जीव शुभाशुभकर्म बांधता है. और उदय आनेसें भोक्ताहै,

[शार्दूलविक्रीडितं.]

२०-तत्वानि व्रतधर्मसंयमगतिज्ञानानि सद्भावना,
प्रत्याख्यानपरिसहेंद्रियमदध्यानानि रत्नत्रयं,
लेश्यावश्यककाययोगसमितिप्राणाः प्रमादस्तपः
संज्ञाकर्मकषायगुस्यतिशयाज्ञेयासुधिभिः सदा ॥१॥

[स्रग्धरावृत्तम्,]

त्रैकाल्यंद्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः
पंचान्येचास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रभेदाः
इत्येतन्मोक्षमलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरिशैः
प्रत्येतिश्रद्धाति स्पृशातिचमतिमान् यस्यवैशुद्धदृष्टिः ॥२॥

नवतत्व-पंचमहाव्रत-द्विविधधर्म-सतराहभेदी सयम-चारगति पंचज्ञान-बारांभावना-दस प्रत्याख्यान-बाइस परिसह-पांचइंद्रिय आठ मद-चार ध्यान-तीनरत्न-छलेश्या-षट्आवश्यक-छकाय-तीनयोग-पांचसमिति-दसप्राण-पांचप्रमाद-बारांभेदीतप-चारसंज्ञा आठकर्म-चारकषाय-तीनगुप्ति-चौतीसअतिशय-तीनकाल-छद्रव्य

और नवपद-इनकों अछीतरह समझना और इनके भेदोकों पहि-चानना यह शास्त्रोका सार है.

२१-जैनमें गर्भाधान-जन्म-उपनयन-विद्यारंभ-विवाह-व्रतारोप-और-अंत्यकर्म वगेरा (१६) संस्कार माने है,

२२-पुनर्लग्न करना जैनमें मनाहै, जिसमें नुकशान ज्यादह और फायदा कमहै, उसकामको करना क्या जरुरत, ?

२३-जैनलोग-पृथवीकों स्थिर-और--चांदसूर्यकों फिरते मानते है,

२४-जीवका-एक गतिसें दुसरी गति-और-इसतरह जन्म-जन्मांतरकों जाना आना-जैन-मानते है, जब सब कर्मोसे रहित होगा, उसकी मुक्ति होगी और फिर वहांसें कभी-न-लोटेगा.

(जैनमंतव्य-प्रकाश-खतम हुवा,)

एकरोज कलंकीराजाके बारेमेंभीवाज-किया, उसरोज बडी सभाभरीथी, जोजोलोग कहतेहैकि-कलकीराजा-संवत् (१९१४) में होगया, मगर यहबात गलतहै, जैनागम महानिशीथसूत्रके पंचमे अध्ययनमें साफबयानहैकि-कलकीराजा श्रीप्रभअणगारकी हयातीमें होगा युगप्रधानयंत्रमें लिखाहै श्रीप्रभअणगार आठमें उदयके पहिले युगप्रधान होगे, पाचमेआरेके एकीसहजार वर्षमें तेइसदफे जैनधर्मका उदय और तेइसदफे अस्तहोगा. उसमें जब आठमा उदय आयगा कलकीराजा-उसवख्तहोगा, जमाने हालमें तीसरा उदय चलताहै, श्रीप्रभअणगार युगप्रधान अबतकहुवे नही, फिर कैसे कहाजासकताहैकि-कलकीराजा होगया, ? युगप्रधान यंत्रकी गिनतीसें यहभी मालूमहोताहै कि-आठमाउदय पांचमेआरेके दस-

हजारवर्ष वतीतहोनेके वाद आयगा, दीपमालाकल्प-और पांचमे-आरेकी-सझाय-महानिशीथसूत्रसे वडीनही, इनवातोंसे सवुतहुवाकि -कलंकीराजा-अवतक नहीहुवाहै, उसरोज औरभी वहुतकुछवहेस हुइथी, मगर यहां उसवातकों थोडेमे लिखदिइहेकि-लिखाण ज्यादा वढेनही और लोगोकों फायदा पहुचे,

(संवत् १९४६ का-चौमासा-शहर जयपुर,)

वादवारीशके शहर अहमदावादसें रवानाहोकर पेथापुर-माणसा-विजापुर-वडनगर-विशनगर-और-मौजे खेरालु होतेहुवे तीर्थ तारंगाकी जियारतकोंगये, उसकी जियारतकिइ, और-अपनी नोटवुकमें तमाम वजुहात उसतीर्थकी दर्जकिइ. तीर्थ तारंगासे रवानाहोकर पालनपुरहोते तीर्थआवुकों गये. वहांकी जियारतकिइ, और पुराने शिलालेखोंकी-नकल-अपनी नोटवुकमें दर्जकिइ, आवुसे रवानाहोकर-पाली-नयाशहर-अजमेर-किसनगढकी सफर करते जयपुर गये, और सवत् (१९४६)की-वारीश-वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा करतेथे, इनदिनोमें वाग्भट्टालंकार और-अलंकारचूडामणि हिफ्ज यादकिये, ये-दोनो अलंकारग्रंथ है, अर्हन्नीतिग्रंथ इसचौमासेमें पढा. पिछले दिनोमें त्रैलोक्यप्रकाश ग्रंथ-जिसमें-नजुमका वयानदर्ज है-हिफ्ज याद किया. चंद्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति-ज्योतिषकरंडक-आरंभसिद्धि-जन्मांभोधि-और-नारचंद्र वगेरा जैननजुमग्रंथ वाचे,-समरसार-और-नरपतिजयचर्या-अन्य मतके नजुमग्रंथ-इसलिये-मुलाहजा कियेकि-इनमें नजुम किसतरह वयान किया है,

रिग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद-अथर्ववेद-मनुस्मृति-याज्ञवल्कस्मृति भारत-भागवत-और-गीता-वगेरा वैदिकमजहवके शास्त्र-शुरुसे

अखीरतक इसगरजसे वांचेकि-इनमें-धर्मके बारेमें किसतरहबयान कियाहै, अकलमंदोंका कौलहैकि-हरमजहबकी किताबोंका मुलाहजा करे, और उनकों पहिचाने. इन दिनोंमें महाराजने संगीतकलाका इल्मभी हासिल किया, सातस्वर-तीनग्राम-एकीसमूर्छना-और-उनंचासतान-इनको जाननेवाला शख्श संगीतकलाका इल्म उमदा तौरसे पासकता है. भैरव--मालकोश--दीपक-हिंडोल-मल्हार-और-श्री-ये-छ-रागके नामहै, पेस्तरके जमानेमें घांणीके सामने बेठकर भैरवराग गानेसे विना बेंलके घांणी चलजातीथी, पथरकी शिलाके सामने बेठकर मालकोश राग गानेसे पथर-पानी होजाताथा, दीयेके सामने बेठकर-दीपक राग गानेसे-विना दियासलाइ दीपक जलजाताथा. हिंडोलेके सामनेबेठकर हिंडोल राग गानेसे-वह-झुलने लगताथा. और श्री रागके गानेसे गवैयेको दौलतकी तंगी नहि रहतीथी, आजकल रागमे वैसी तासीर नहीरही, न-वैसे गानेवालेरहे, जैसा जमानाहै वैसीचीजे मौजूद है. वीणा-सितार-दिलरुवा--सुरशिंगार-सरोद--सरगी-ताउस-हारमोनियम-बेंला-अलगोजा-बंशरी--और-जलतरंग वगेरा-बाजे-गानेवालेके कंठको मदद पहुचासकते है, जब तीर्थंकरदेव-मालकोशरागमें तालीमधर्मकी देतेथे इंद्रदेवते दिव्यवाजोसे स्वर पुरतेथे, आजकलभी अगर कोइ मुनि-रागरागिनीमें तालीम धर्मकी देवे-तो कोइ हर्ज नहिहै, रागरागनी निहायत उमदाचीजहै, अगर तालस्वरसें परमात्माकीइबादत किइजाय तो-अशुभ कर्मकी निर्जरा और औरपुन्यानुबंधि-पुन्यप्राप्तिका हेतु है.-जिसकों संगीतकलाका इल्म-नही है. वे-कहते है रागरागनी कुछ चीज नही. मगर उनके कहनेसे संगीतकला कमजोर नहीहोसकती, जैनागम-स्थानांग-और-अनुयोगद्वारसूत्रमें स्वरोका बयान उमदा तौरसें दर्ज है. जिनकों शकहो

-खूबीदेखे, गानेवालेके स्वरकी नकलकरना सरंगीकाही कामहै, सरे वाजे-गत-तोडे-और-आलाप वेशक ! देसकते है, मगर ग-की नकल करना सरंगीकोही याद है. महाराज सरगम-तराना पद-भैरवी-कालिंगडा--जोगिया--आसाउरी-वेलावल-सारंग-ीला झीझोटी-कमाच-पीलु-धनासीरी-कल्याण--सोरठ-विहाग -और-जेजेवंतीवगेरारागरागनी अछीतरह गानेलगे, और धर्मशा-के व्याख्यानमेंभी रागरागनीसें तालीम धर्मकी देतेरहे,

(संवत् १९४७ का-चौमासा-शहर देहली,)

वादवारीशके जयपुरसे रवानाहोकर सांगानेर गये, चंदरौज हांठहरकर वापिस जयपुरआये, और मुकाम मजकुरपर कयामकि-ा, इसअर्सेमें महाराजके गुरुसाहवभी-जोकि-जोधपुरमें-वारीश-े अय्याममें मुकीमथे, मुनिमंडलके शाथ वडेशान-व-सौकतसें यपुरमें तशरीफलाये, और महाराजभी गुरुजीकी पेशवाइमें गये, यपुरमें करीव (२०) रौजतक शाथठहरे, इसअर्सेमें गुरुजीका-ौर-महाराजका आपसमें कुछतकरार होगया, और महाराज ना-ाजहोकर गुरुजीसें जुदेहोगये, चैतवैशाखके दिनोमें अलवर होते-ुवे शहरदेहलीकों तशरीफलेगये, और संवत् (१९४७) की ारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशांकरतेथे, और ुननेवाले लोग कसरतसे जमाहोतेथे, आचार्यसिद्धसेन दिवाक-की वनाइहुइ द्वात्रिंशका-आचार्य हरिभद्रसूरिका वनायाहुवा लो-कतत्वनिर्णय और षड्दर्शन समुचय मूलपाठ हिब्ज यादकिया, एक ौज महाराज देहलीकी चारोंतर्फ पुरानेमकान-पंढहेर-और-ना-मीग्रामी इमारतें देखनेकों गये, और कइपुराने मकानात देखकर ख्यालआयाकि-क्याक्या ! ! इमारते दौलतमदोने वनाइथी और

अव किसहालमें पडीहै, जिनजिन होजोंमें गुलाव-और-वेदमुश्क-भराजाताथा-उनमें अव काइजमरही है. जहां मखमल-और कमख्वावके फर्शपर मोतियोंकी झालरके शमियानेखडे कियेजातेथे-वहां-अवकोइ झाडुभी नहीदेता, जिनकी अर्दलीमें संकडो सवार दोडतेथे-और-जो तमामहिंदुस्थानमें नहीसमातेथे-थोडीसीजमीनमें सोयेपडेहै, होनहारकेसामने किसीका जोरनहीचलता, उदय अस्त सवकों लगाहै, हुकमहोदा-अमल्दारी और खजाना छोडकर इस दुनियाफानीसरायसे एकरोज जरुरविदाहोनाहै, पुरानीचीजोंको देखकर आदमीकों एकतरहका असर होताहै, और यहभी खयाल-पैदाहोताहैकि-सारवस्तु धर्म है. जींदगीका कोइभरुसा नहीं. जहां-तकवने धर्मकरनाचाहिये.-

(संवत् १९४८ का-चौमासा-शहर लशकरगवालियर,)

वादवारीशके देहलीसे रवानाहोकर कुतुव-मेहरोली-गुडगांव होतेहुवे कस्वे फरुखनगर गये. और करीव (४) महिने वहांठहरे, यहांपर महाराजने अपनेलिये (टाइम-टेवल) कायमकिया, (यानी) शुभहसेलेकर शामतक-और-शामसेलेकर शुभहतक कि-सकिसवख्त क्याक्या कामकरना-उसका वख्त-मुकररकिया, शुभहके (६) वजेसे (७) वजेतक प्रतिलेखना-और-स्थंडिलभूमि जाना, (७) वजेसें (८) वजेतक योगाभ्यास चिंतवन करना (८) वजेतक व्याख्यानसभामें वेठकर धर्मोपदेश देना, (९॥) वजेसे (१०) वजेतक विश्राम, (१०) वजेसे (१२) तक आहारपानी लेना, (१२) वजेसे (४) वजेतक-आयेगये गृहस्थोंकेशाथ धर्मचर्चाके वारेमें वहेसकरना-ग्रथवनाना-लिखना-पढना-या-ज्ञानचर्चा-करना, (४) वजेसे (५) वजेतक प्रतिलेखना

करना, और स्थंडिलभूमि जाना, (९) वजेसे (६) वजेतक आहारपानी लेना, सूर्यअस्त होनेकेवाद (८) वजेतक प्रतिक्रमण वगेरा करना, (८) वजेसे (१०) वजेतक ज्ञानचर्चा-और योगाभ्यास चिंतवन, (१०) वजेसे शुभहके (५) वजेतक शयन करना, (९) वजेसें (६) वजेतक सूरिमंत्रका जाप-और-प्रतिक्रमण करना, इसतरह हमेशांकेलिये अपना टाइमटेवल कायमकिया,-

फरुकनगरसे रवानाहोकर-होडल-पल्वल-मथरावृंदावन-होते हुवे-शहरआगरा गये, और (८) रौज वहांपर कयाम किया, वहांसे रवानाहोकर धोलपुरहोते लशकर-गवालियर पहुचे, और-संवत् (१९४८) की वारीश वहांपर गुजारी, दर्मियान सराफावजार जैन मंदिरके पास पंचायतीउपाश्रयमें कयामकिया, व्याख्यानसभामें सूत्र आवश्यकवृत्ति-और-वासुपूज्यचरित वाचतेथे, व्याकरण चंद्रप्रभा-इसचौमासेमें आधा-हिस्ज-यादकिया. और स्याद्वादरत्नाकरावतारिका पुरी वांची, एकरौजकेलिये छावनी-मुरार-जोकि-तीनकोशकेफासलेपरवाकेहै गये, और वहांपर मूर्त्तिपूजापर व्याख्यानदिया. जहांजहांपर महाराजजातेहै-और व्याख्यानदेतेहै वहां धर्मशास्त्रके (१२) कानुन एकसाइनवोर्डपर लिखकर-या छपवाकर मकानकी दिवारपर इसलिये लगा दियेजातेहैकि-सुननेवाले उनकों-वाचकर अमलकरे, उसकीनकल यहांपरभी देतेहै, इसमें व्याख्यानसुननेका सवमतलवदर्जहै, व-खूवी देखलो, !

☞(व्याख्यान धर्मशास्त्रके (१२) कानुन,)

१-अवलकानुन व्याख्यानसुनते वख्त कोइ शौरगुल-न-करे, चुपचापहो करसुने, व्याख्यानका टाइम साढेआठसे साढेनवतक सवेरकाहै,

२-दुसराक़ानुन व्याख्यानसभामे कोइ सामायिक-न-करे,

३-तीसराकानुन व्याख्यानसुनते वख्त कोइ माला-न-फेरे,

४-चोथाकानुन व्याख्यानसभामें शौरगुलकरे एसे छोटेलडके-को-न-लावे,

५-पांचवाक़ानुन चलतेव्याख्यानमें कोइ उठे नही. खतमहोवे जब उठे,

६-छठाकानुन-व्याख्यानसुननेवालेको कोइ बुलानेआवे तो मुंहसें जवाब-न-देवे, इशारेसें समझावे,

७-सातमाकानुन शोगसंतापवालोकों परभावना लेनेमे कोइ हर्ज नही.

८-आठवाक़ानुन धर्मशास्त्रसुनने आनेमें शोगरखनानही,

९-नवमाकानुन व्याख्यानसभामें जहां जगहदेखे वहां बेठजाय, चाहे गरीवहो-या-अमीर, पेस्तरआवे वह आगेवेठे, पीछेआनकर आगे आनेका इरादा-न-करे,

१०-दसमाकानुन चलते व्याख्यानमे फक्त सीरझुकाकर वंदनकरे, व्याख्यान खतम होनेपर-या-पेस्तर तीनक्षमाश्रमण देनेमें कोइहर्ज नही.

११-ग्याहरमाक़ानुन चलते व्याख्यानमें कोइ-प्रत्याख्यान-न-मांगे,

१२-बारहमा कानुन शोगसंतापवाले अगर परभावना बांटनाचाहे-तो-व-जरीये दुसरेके चीजमगवाकर बांटदेवे,

१३-तेरहमाकानुन व्याख्यानमें जिसकिसीकों-जो-कुछपुछ-

नाहो खुशीसे पुछे, मगर शर्तयह है व्याख्यानमें जोवातचलीहै उसीमजमूनको पुछे, विनासंबंधकी वात-न-पुछे, और अगर मारी भूलपर गुरु-सख्तसुस्त वातकहे-तो-उसकाबुरा-न-मा वल्कि ! हकसमझे,

(सूचना,) तीर्थंकरदेव समवसरणमे वेठकर मालकोशर गमें तालीमधर्मकी देतेथे, जमानेहालमेंभी कोइ-मुनि-रागरागनी व्याख्यानदेवे-तो-कोइहर्ज नही है.—

(व्याख्यान धर्मशास्त्रके (१३) कानुन खतमहुवे,)

☞[छावनी मुरारमें मूर्त्तिपूजापर दियाहुवा व्याख्यान,-

दुनियामें मूर्त्तिपूजा कदीमसे चलीआइ, मूर्त्तिपूजाके निषेधक पुरुष कइहुवे मगर मूर्त्तिपूजा हमेशांकेलिये कायमही रही, गरजवि -विनामूर्त्तिके किसीकाकाम नहीचला, मूर्त्ति-प्रतिमा-चैत्य-बिंब प्रतिकृति-अक्स-औरतस्वीर-ये-सवमूर्त्तिहीके नाम है, अगरकोइ कहे, मूर्त्ति-जीवहे-या-अजीव ?-(जवाव) शास्त्र जीवहै-या-अजी-व, ? अगर अजीवहै-तो-वतलाइये !-अजीव पदार्थको क्यौ मा-नागया, ? अगर कहाजाय-शास्त्रके देखनेसें-ज्ञानपेदा होताहै-तो मूर्त्ति देखनेसेभी उसदेवके स्वरुपका ज्ञान पेदाहोताहै-ऐसा-मान-नेमें क्याहर्ज है, ?

भगवतीसूत्रके मूलपाठमे ब्राह्मीलिपिको नमस्कार कियाहै, सोचो ! ब्राह्मीलिपि ज्ञानकी स्थापनाहै-या-नही ? अगरहै-तो-स्थापना निक्षेपा मानना मजूरहुवा, आवश्यसूत्रकी निर्युक्तिमें भ-रत चक्रवर्त्तिने अष्टापदपर्वतपर जैनमंदिर वनवाये ऐसाखुलापाठहै,

[निर्युक्ति आवश्यकसूत्र-अध्ययन पहिला,]

थुभसयभाउगाणं-चउवीसं जिणघरे कासि
सव्वजिणं पडिमा-वन्नपमाणेहिं नियएहिं, १

इसपाठसे साफजाहिरहैकि-भरतचक्रवर्त्तिने चौइस जैनमंदिर बनवाकर उसमें चौइसमूर्त्ति तीर्थकरोंकी रखी, जैसाकि-उनका रूपरंगथा, अगरकोइ तेहरीरकरेकि-हम निर्युक्ति नहीमानते--तो-उनकों मालूमकरना चाहिये भगवतीसूत्रमें क्यालिखाहै, ? उसमे लिखाहै-निर्युक्तिकों मानना चाहिये, अगर इसवातपर किसीकों शकहो-तो-भगवतीसूत्रको खोलकरदेखलेवे. भगवतीसूत्रकों ढुंढिये मजहबवालेभी मानते है, उसमें मूर्त्तिकामानना साफजाहिरहै,

☞ (भगवतीसूत्रका पाठ-शतक (२५) मा-उद्देशातीसरा,)

सुतथ्थो खलु पढमो-वीयो निज्जुत्तिमिसओ भणियो,
तइयो निरवसेसो-एस विहिहोइ अणुयोगो,—

देखलो ! इसपाठमें साफलिखाहैकि-निर्युक्ति-मानना, फिर कौन कहसकताहैकि-हम-निर्युक्ति नहीमानते, सबुतहुवाकि-बत्तीससूत्रके मूलपाठमें-निर्युक्ति मानना लिखाहै, जोलोग इनकारकरतेहै गलतीपरखडे है, उवाइसूत्रके-मूलपाठमे तीर्थकर महावीरस्वामीके रूबरु अंबडश्रावकने अरिहंतकी प्रतिमाकों वंदना-नमस्कारकरना कुबुल किया, सबुत उसका इसपाठसे साफजाहिर है, देखलो ! उवाइसूत्रका पाठ.—

अंबडस्सणं परिवायस्स नोकप्पइ अन्नउथ्थियएवा-अन्नउथ्थियदेवयाइं वा-अन्नउथ्थियपरिग्गहियाइं अरिहंतचेइयाइं वा-वंदित्तएवा-नमंसित्तएवा-नन्नथ्थ-अरिहंतेवा अरिहंतचेइयाणिवा,

माइने इसपाठके-ये-हैकि-मुजे गेरमजहबीकों-उनके देवोको और गेरमजहबवाले लोगोने अरिहंतकी मूर्त्तिकों लेकर अपने देवरुप करलिइहो-उसकों वंदना-नमस्कार करना मुनासिबनही, मगर जिस अरिहंतकी मूर्त्तिकों गेरमजहबके लोगोने लेकर अपने देवरुप-न-बनालिइहो-और-मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके हो-उसकों-वंदनानमस्कार करना मुजे मंजूरहै. देखिये ! यह सबुत किसकदर सच्चा और-पाबंदहैकि-जिसपर कोइकिसी तरहकी हुज्जत-या-तकरीर नहीकरसकता. ढुंढियेलोग चैत्यशब्दका माइना-साधु-करते है, मगर चैत्यशब्दका-माइना साधु नही है. बल्कि ! हैमकोशमें चैत्यशब्दका माइना जिनमंदिर और जैनप्रतिमा लिखाहै—

चैत्यं जिनोकस्तद्बिंबं, इतिहैमः,-

आनंद श्रावकके पाठसेभी साफ जाहिरहैकि-वह—तीर्थंकर महावीरके सामने गया, और उसनेभी वही नियम इख्तियारकिया जो उपर लिखागयाहै, अगर इसका कोइ सबुत तलब करनाचाहे तो-इसआगे लिखे पाठकों देखकर मालूम करले, उपाशक दशांग-सूत्रका पाठ बतलाते है, देखलेवे,

नो-खलु-मे-भंते ! कप्पइ अज्जपभिइंचणं—अन्न उत्थिवा-अन्न उत्थियदेवयाणिवा-अन्नउत्थियए-परिग्गहियाइंवा-अरिहंतचेइयाइंवा-वंदितएवा-नमंसितएवा,-

माइने इसपाठके और दिगरपाठ जो उपर अंबडजीश्रावकका लिखचुके-दोनोंके-एक होते हैं, देखिये ! अंबड-और-आनंदश्रावककी पाबंदी धर्ममें कैसीथीकि-जिनोने इतनी सख्ती इख्तियार

किइ. महानिशीथसूत्रके पाठसे यहभी साबीतहैकि-जो शख्श जैन मंदिर बनवायगा और मुताबिकशास्त्र फरमानके दानपुन्य करेगा उसकों बारहमें स्वर्गकीगति हासिलहोगी, और वह पाठभी यहां बतलादिया जाताहै, अकलमद गौर करलेवे कुल्लहाल मुफस्सिल मालूम होगा,

(महानिशीथसूत्रका मूलपाठ,)

काउंपि जिणायणेहिं-मंडिया सव्वमेयणिवट्टं,
दाणाइ चउक्कयेण-सढोगछेज्जच्चुयं जाव, ॥ १ ॥

देखलो ! इसपाठमें जैनमंदिर बनवानेवालेकों बारहमें स्वर्गकी गति होना साफ बयानहै. अगर कोइ कहेकि-हम-महानिशीथसू-त्रकों नही मानते-तो-जवाबमें मालूमकरे नदीसूत्रमें महानिशीथसू-त्रका माननालिखाहै-या-नही ? अगर कहोगे लिखाहै-तो-महा-निशीथसूत्रकोभी मानो और मंदिरमूर्त्तिभी कुबुलकरो, असुरकुमार देवता जब उपरकेस्वर्गकों जाताहै-बगेर-अरिहत-अरिहंतकीमूर्त्ति-साधुमहाराजके सरनेके नहीजासकता, वहबात इसआगे बतलायेहुवे पाठसे साबीतहै. ब-गौर देखे,

(भगवतीसूत्रका पाठ,

नन्नथ्थ-अरिहंतेवा-अरिहंतचेइयाणिवा-भाविअप्प-णो अणगारस्सवा-णिस्साए-उढं-उप्पयंति जावसोहम्मो कप्पो,

इस पाठका मतलब उपर आचुकाहै, अगर अरिहंतकी मूर्त्ति जैनमजहबमें मानना मजुर-न-होतीतो एसा पाठ क्यों होता ? दशवैकालिकसूत्रके मूलपाठमें लिखाहैकि-अगर कोइ तस्वीर और-

तकी किसीमकानमें उतारीहुइ मौजूदहो-तो-वहांपें जैनमुनिकों ठहरना नहि चाहिये, उसका पाठ बतलायाजाता है देखिये !

(अध्ययन ८ मा-सूत्रदशवैकालिक,)

चित्तभित्तं-न-णिझाए-नारेवासुअलंकियं,
भखरं पिव दट्ठुणं-दिठी पडिसमाहरे,

इसका मतलव यहहैकि-जिसदिवारपर औरतका चित्रहो-उसकों मुनि-न-देखे. जैसेसूर्यकों देखकर अपनीनिगाह पीछीखें॰ चलिइजातीहै औरतके चित्रकों देखकर अपनीनजरकों खेंचलेवे. किसवास्तेकि-उसतस्वीरकों देखकर असलीऔरतकी यादीआजाती है, सवालपैदाहोनेकीजगहहैकि-जिसहालतमें एक नाचीजऔरतकों देखकर खासऔरत याद आजावे, तो क्या ! तीर्थकरोकी मूर्त्ति देखकर खासतीर्थकरोंकी यादी-न-जायगी, ? इसमें कोइशकनही कि-तस्वीरदेखकर जोकि-खासशख्शहो-वह-जरुरयाद आजाता है, अगर कहाजाय मूर्त्तिपूजा करनेसें जीवोंकी हिंसाहोती है-तो-क्या स्थानक वनानेमें हिंसा नहीहोती, मुनिमहाराज एकशहरसे दुसरेशहर जाते रास्तेमे किसीनदीमें होकर पारहोते है-तो-क्या पानीकेजीव नहीमरते है ? भिक्षाकेलिये जानेमेंभी हवाकेजीव अपने शरीरसे मरतेहै, जवकभी किसीकों दीक्षादिइ जाती है तो जलसा कियाजाता है उसवख्त सेंकडो आदमीयोंकी भीडभाडसें रास्तेमें सूक्ष्मजीवोंका नाशहोताहै इसकों क्या जीवहिंसा नहीसमझते ? सिर्फ मूर्त्तिपूजाहीकों जीवहिंसा समजतेहो, ? अनुयोगद्वारसूत्रमें चार निक्षेपे बयानफरमाये उसमें स्थापना निक्षेपा मूर्त्तिको सबुती देताहै,—

अगर कोइ सवाल करेकि-मूर्त्तिपूजा-अछी है-तो-साधुमहाराज पूजा क्यो नहीकरते ? (जवाव.) साधुमहाराज जिनप्रतिमाके दर्शनकों जाते है, तीर्थयात्राकों जाते है और भावपूजा करते है, जैनशास्त्रोमें साधु-साधवी-श्रावक-श्राविका-पुस्तक-प्रतिमा-और मदिर-ये-सातक्षेत्र वयान फरमाये. अगर मद्रिर-मूर्त्तिमानना जैनमें मनाहोता तो सातक्षेत्र क्यो फरमाते ? मूर्त्तिपूजामे पूजकका इरादा पाक होनेसे भावहिंसा नही. ओर विनाभावहिंसाके पाप नही. वल्कि ! अशुभकर्मोंकी निर्जरा और पुन्यानुवंधि पुन्यप्राप्तिका हेतुहै. अगर कोइ सवालकरेकि-मूर्त्तिपूजा करनेवाले पथ्थरकों पूजते है (जवाव.) पथ्थर नही पूजते, वल्कि ! वितरागदेवका आकार देखकर उसमे वीतरागभावकी यादीलाकर पूजते है, और इवादतकरते हैकि-हे ! वीतराग-अरिहत-सर्वज्ञ-परमात्मा-निरजन निराकार इस हमारीइवादतसे हमारे कर्म-दूरहोकर हमकों मुक्ति मिले, अगर पथ्थर पूजतेहोतेतो ऐसा कहतेकि-हे ! पथ्थर ! ! तु वडा अछाहै, फलानी खानमेसे निकलाहुवाहै. और तुं ! दश रुपयेगजके मोलकाहै, मगर नही, पूजकपुरुपतो मूर्त्तिकेजरीये वितरागहीकी पूजा करताहै. अगर कोइ सवालकरेकि-मूर्त्तिकी जो इवादत किइजाती है-क्या-वह सुनती है, ? (जवाव.) जिस देवकी मूर्त्तिहै-वह-वेशक ! अपने ज्ञानमें जानते हैकि-फलांशख्श इवादत कररहाहै. अगर कोइ कहे, हम-मानसीमूर्त्तिकों मानते है, पथ्थरकी मूर्त्तिको नही मानते, (जवाव.) फिर मानसीक ज्ञानकोंही मानलो, कागज स्याहीकेवनेहुवे पुस्तककों क्यों मानतेहो, ? अगर कोइ सवालकरे मूर्त्ति पथ्थरकी है-उसकों पाव लगादेवे तो क्याहर्ज है ? (जवाव.) पुस्तक कागज स्याहीके है-उसकों पाव लगानेमें क्या हर्ज है, ? अगर कहोगे हर्ज है, तो इसीतरह मूर्त्तिके

बारेमेंभी समझलो हर्ज है. इस व्याख्यानसे यह दिखलानाथ
दुनियामें मूर्त्तिका पूजना कदीमसें चलाआता है,-और उसके
किसीका काम नही चलता, कोइ पहाडको-कोइ मकानको-
शास्त्रको-चित्रकों-और-कोइ मूर्त्तिकों मानता पूजताहै असल
यहसब मूर्त्तिपूजाहीके भेद है.-

(व्याख्यान मूर्त्तिपूजाका खतमहुवा,)

छावनी-मुरारसे-उसीरोज वापिसलशकर आये, संगीत
लाका इल्म इस चौमासेमेंभी हासिल करतेरहे, व्याख्यान धर्मश
स्त्रका हमेशां वाचतेथे, और सभा अछी भरतीथी,

☞ [संवत् १९४९ का-चौमासा-शहर लशकरगवालियर

वादवारीश खतम होनेके लशकरसें रवाना होकर गवालिय
रकों तशरीफ लेगये, जोकरीव (२) कोशके फासलेपर वाके
और किलाभी देखा उसमें पुराने शिलालेखथे-उनकी-नक
किइ, और वहांसे छावनी मुरारकों गये, और वहां चंदरोजठहरे
व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, और धर्मचर्चाके वारेमें हमे
शां वहेसहोतीथी, छावनी मुरारसे फिर लशकर आये, और ज
वहांसे दुसरे मुकामकों जानेका इरादा किया, वहाके श्रावकों
वास्तेठहरने अय्याम वारीशके वहुत आर्जूमिन्नत किइ, जिससे
महाराज वहांठहरे, और सवत् (१९४९) की-वारीश-वहांप
गुजारी, व्याख्यानमें समवायांगसूत्र-और-विविधतीर्थकल्प वाचे,
चंद्रप्रभा व्याकरण जो गइसालमें हिव्ज यादकरना शुरुकियाथा
इसचौमासेमें पुरा किया. और-सम्मतितर्क-जो-आलादर्जेका जै-
नतर्क ग्रथहे पढनाशुरुकिया, उपाशकदशांग-अंतकृतसूत्र-अनुत्तरो-

पपातिका-प्रश्न व्याकरणसूत्र-और-विपाकसूत्र इनदिनोमे वाचे. कइदफे वडीवडी सभाये हुइ. और धर्मचर्चाके वारेमे वहेस होतीरही,—

☞ [कर्म्मपर-व्याख्यान,]

एकरोज-महाराजने-कर्मपर-व्याख्यानदिया. तकदीरकहो-कर्मकहो-या-नसीवकहो-वातएकही है, जैनशास्त्रोमे कर्म्म आठतरहके वयानफरमाये, १-ज्ञानावरणीय, २-दर्शनावरणीय, ३-वेदनी, ४-मोहकर्म,-५-नामकर्म, ६-गोत्रकर्म, ७-आयुकर्म, ८-और अंतरायकर्म, खयालकरो ! एकशख्श वादशाहहै और हिराजवाहिरातलगे तख्तपर वेठताहै एक-मुल्क-व-मुल्क फिरता है और रोटीयोसे मौताजहै, वतलाओ ! इसकी क्यावजह ? एक शख्श अकलमंदहै और एक-वेवकुफहै-तो-सोचो ! यह अकलमंद क्यौंहुवा ? और दुसरा वेवकुफक्यौं ? एकमदर्सेमें दो-लडके-एक उस्तादसें (२०) वर्षतक इल्मपढतेरहे, उसमेसें एक-पास-हुवा, दुसरा फेलहुवा, वतलाओ ! इसकी क्यावजह ? एकशख्श अपनेधर्मपर ऐसा मुस्तकीम हैकि--किसीके वहकानेमें नहीआता. दुसरा ऐसा वेवकुफहैकि-उसको वारांवर्षतक धर्मशास्त्र सुनाओ. मगर उसका एतकात धर्मपर नहीजमता, खयालकरो ! इसकी क्या ! वजह ? एकशख्श तावेउमर तंदुरस्तरहा, और एक ऐसा वीमाररहाकि-तमामउमर उसकी वीमारीमें गुजरी, कहिये ! उसकी क्या ! वजह ? एकशख्शको अपनीऔलाद और दौलतसें इतनी मोहब्बतहैकि-शिवाय इनके धर्मको फिजहुल समझताहै, और एकशख्श धर्मको उमदा औलाद और दौलतको कुछनहीसमजता, सोचो ! इसकीक्यावजह, ? एकशख्श ऐसा हसीन और खूबसुरत हैकि-जिसकीसानी दुसरामिलना दुसवारहै. और एक ऐसावदसु-

रत-बदशिकल हैकि-कोइउसके शाथ बातकरनाभी नहीच
कहो ! इसकी क्यावजह ? एकशख्श ऐसापैदाहुवाकि-उसव
वावी और राजमिला, दुसरा ऐसीजगह पैदाहुवाकि-बुरी
झाडुदेता फिरताहै, खयालकरो ! इसकी क्यावजह, ? एकम
दो-लडके एकहीदिन पैदाहुवे, एक जन्मतेही मरगया, और
साठवर्षतक जीतारहा. सोचो ! इसका क्यासवव, ? दो-श
तिजारत करनेलगे, उसमें एकशख्शको इसकदर फायदा हा
हुवाकि-लखपति-करोडपतिवना, और दुसरेको इसकदर
पडाकि-घरकीपुंजी खोकर दुसरेसे कर्जलेनापडा, वतला
इसकी क्यावजह, ? अगरकहाजाय इश्वरने ऐसाकियातो-सो
इश्वरको ऐसाकरनेकी क्याजरुरत ? क्योंकि-इश्वर रागद्वेपसे
यत पाकहै, असलमें यहसव-अपनीअपनी-तकदीरके ताल्लु
पूर्वजन्ममें जैसा जिसजीवने कियाथा-वैसा उसके आगेआया.

जोशख्श इश्कबाजी करताहै, जीवोंकों कतलकरता है,
विल्कुल नहि. दगावाज पुरा, घमंड वहुत, शोगसंताप वहुत.
जिसको देवगुरु धर्मपर एतकात नहीं, ऐसा शख्श अच्छीगति
पाता, जोशख्श तप करताहै, व्रत नियम पालताहै, दान देता
देवगुरु धर्मपर एतकात रखताहै, शास्त्रके फरमानकों मंजुर कर
और दिलका साफहै वह स्वर्गगतिकों पाताहै, जोशख्श वातकह
मुकरजाय, मतलवहुवाकि--दुश्मन-वनजाय, धर्ममेंभी नर्टदगा
खेले, वह दुर्गतिकों पाताहै. जोशख्श रहमदिलहो, इन्साफकी
वोलनेवालाहो, और-देवगुरु धर्मपर पुरा एतकात रखताहो-व
अच्छीगतिकों-पाताहै. जोशख्श जीवोंकी कतलवाजी-न-करे,
वख्त जीवोंकों वचातारहे-वह-अगले जन्ममें लंवी उमर पाता
जिसने पूर्वभवमें दानपुन्य नहीकिया, वह-उस भवमे एशआरा

वंचित रहताहै, जिसने पूर्वजन्ममें दानपुन्य वहुतकिया है-वह-इस जन्ममें आरामतलव है, जिसने पूर्वजन्ममें देवगुरु धर्मकी खिदमत किइहै वह इसजन्ममें दौलतमंद होताहै, जिसने पूर्वजन्ममें देवगुरु धर्मकी वेंअदवी किइहै-रुपये पैसे होतेहुवेभी धर्ममे खर्च नहीकिया है-वह-इसजन्ममें दरिद्री होता है, जिसने पूर्वजन्ममें इल्म पढाथा दुसरोकों तालीम देकर धर्मात्मा वनायेथे-वह-इसजन्ममें विद्वान् और धर्मज्ञ होताहै, जिसशख्शने पूर्वजन्ममें तोते-मुर्घे-कबुतर-चि-डिया-तीतरवगेराकों-पींजरेमें-केदकियेथे, वह-इसजन्ममें दुसरोंका तावेदारहोकर तकलीफपाताहै, और केदभी पाताहै. जिसने पूर्व भवमें किसी जीवकों तकलीफ नहीदिइ, वल्कि ! तकलीफसें छो-डाये है-वह इसजन्ममें किसीका तावेदार नहीवनता, वल्कि ! खुद मालिक होताहै, जोशख्श अपने गुरुसे-या-उस्तादसे नर्द दगाकी खेलताहै उसका इल्मकारआमद नहीहोता, जोशख्श दानपुन्यकरके पीछे रंजीदा होताहै वह-अगले जन्ममें-नफा-नहीपाता, जोशख्श दुसरोंके लडका-लडकीका-वियोग करादेताहै-वह-अगले जन्ममें औलाद नहीपाता. जोशख्श अपनी जातिका घमंड करताहै वह अगले जन्ममें नीचकुल पाताहै. जोशख्श दुसरोंके हाथ पाव तोड-डालताहै-अगले जन्ममें-वह-लुला-लगडा होताहै, जिस शख्शने पूर्वजन्ममें जीवोपर रहेम किइहै, वह इस जन्ममें खूवसुरत-कमाल-हुस्न-और-चहेरेपर मुवारकवादी पाताहै.

जोशख्श लोगोकों कहताहै धर्मकरनेसे कुछ फायदा नही. परलोक किसने देखा ? ऐसा उपदेश देनेवाला शख्श अगलेजन्ममें धर्म-नही-पाता, जोशख्श दुसरोंकों गला घोटकर मारताहै-वह-अगले जन्ममें बुरीमोतसे मरताहै, जोशख्श दुसरेसे अपना मतलव लेताहै मगर उसकों खानेकेलिये रोटीभी नहिदेता-वह-अगले ज-

न्ममें रोटीयोसे मोहताजहोकर मांगताफिरेगा, जोशख्श तीर्थभूमिमे दंगाफिसाद करताहै, देवद्रव्यको वरवाद करताहै, और मंदिरमूर्त्तियोंके सामने अनाचार सेवनकरताहै-उसकी अगलेजन्ममें अछी गति नहीहोती, जोशख्श धर्मशास्त्र पढानही ओर दुसरोंके सामने कहताहै-में-वहुतशास्त्र पढाहुं-वह-अगलेजन्ममें विद्याहीन होताहै, जोशख्श आप वदकाम करताहै और दुसरेके माथे तोहमत चढाता है-वह-अगलेजन्ममें अछीगति नहीपाता, जोशख्श तीर्थकर-गणधर-आचार्य-उपाध्याय-और साधुमहाराजके अवर्णवाद वोलताहै महामोहकर्म वांधताहै जिसने पूर्वभवमें गुप्तदानदियाहै वह अगले जन्ममें दुसरेके घर गोद आताहै और दौलत पाताहै.

अगर धर्मशास्त्रकी राहपरचलो तो हरेकजीवपर रहेमकरो, आइंदे तुमारा भलाहोगा. धर्मशास्त्र फरमाते है-जो-शख्श-जैसा कर्म करेगा-वैसाफल पायगा, यह एकासिधीसडकहै.—

(कर्मपर व्याख्यान-खतमहुवा,-)

[संवत् १९५० का-चौमासा शहर लशकर गवालियर,]

वादवारीशके लशकरसें रवानाहोकर महाराज छावनी-मुरारको-गये, और शीतरुतुमें वहां कयामकिया, व्याख्यानमे रायपसेणी-जीवाभिगम-और-पांडवचरित वाचा, छावनी मुरारसें रवानाहोकर गवालियर गये, और फिरजव जहांसीतर्फ जानेका इरादाकिया, लशकरके श्रावकलोग वहांआये और अर्जकरने लगे-कि-आप-जहांजायगे फायदाधर्मका पहुचायगे, वराये महेरवानी हमारेही शहरमें इससाल और कयामकिजिये, और हमकों धर्म सुनाइये,-महाराजने उनकीअर्ज कुवुलकिइ, गवालियरसे लशकर

आये, और संवत् (१९५०) की वारीश वहांपर गुजारी; व्याख्यान हमेशाकरतेथे और सुननेवालेलोग कसरतसें जमाहोतेथे, संगीतकला इल्म इनदिनोमेंभी हासिल करतेरहे, धर्मचर्चाकेलिये फइशख्श आतेजातेथे. और माकुल जवावपाकर खुशहोतेथे.-लशकरके श्रावकोने महाराजकी वहुतकदर-व-इज्जतकिइ, धर्मकेवारेमे जोजोवात महाराज फरमातेथे फौरन ! उसपर अमलकरतेथे,-इस चौमासेमें सम्मतितर्कग्रथ तीनहिस्सा वाचा एकहिस्सा वाकीरहा, एकरौज व्याख्यान जगत्कर्ताके वारेमेदिया,-

[व्याख्यान-जगत्कर्त्ताके वारेमे,]

अगर लीलाकरके दुनियाको इश्वरने-वनाइ मानेतो-सोचो ! लीलाकाहोना रागवानको होताहै, और इश्वर रागद्वेपसें निहायत पाकहै, अगरकहाजाय रहमदिलहोकर दुनिया वनाइहै-तो-एकको आराम और तकलीफ क्यों, ? अगरकहाजाय आराम तकलीफ अपनी अपनी तकदीरके ताल्लुकहै-तो-फिर कहनाचाहिये तकदीरही सबसेतेजरही. अगर इश्वरने अपनीशक्तिसे दुनिया वनाइहै ऐसा माने-तो-सोचो ! जीवोंकों पेस्तर निर्मलवनायेथे-या मलीन ? अगर निर्मलवनायेथे--तो-फिर धर्मशास्त्र किसको निर्मलकरनेकेलिये वनायेगये ? अगर मलीनवनायेथे-तो क्यासववहै उनकों पापरुप मलीनता दिइगइ, ? असलमें दुनिया अनादिहै. एकजन्मसे दुसरेजन्ममें जाना उसकानाम मृत्युहै, जोकुछ सुखदुख यहां मिलाहै पूर्वकृतकर्मके उदयानुसारहै, और आगेकों जोकुछ मिलेगा यहांके कियेहुवे कर्मानुसार मिलेगा. अगर ऐसा-न-मानेतो एक सुखी-और-एकदुखी क्यों ?

जीव-जव-दुसरे जन्ममे जाताहै उसकेशाथ पुन्यपाप-और-तैजस-कार्मण सूक्ष्म शरीरशाथ जाताहै, विनावीज वृक्ष नहीं और

विना वृक्ष वीज नही, अगर कहाजाय जड-चेतनरुप-मसाला पेस्तरसेथा, तो-सवाल पैदा होता है कि-वह--मसाला किसने वनायाथा ? वगेरा वहुतसी दलीलें दिइगइथी, यहां थोडेमें लिखा है,—

(संवत् १९५१ का चौमासा शहर लशकर गवालियर.)

वादवारीशके लशकरसे रवानाहोकर गवालियरकों गये, गवालियरसे छावनी-मुरार गये, और वहांपर मोशम शर्दीका खतम किया. व्याख्यान हमेशां वांचतेथे. फाल्गुनमहिनेमें वहांसें विहार करनेकी तयारीकिइ लशकरके श्रावकलोग वहां आये, और एक चौमासा औरभी लशकरमें ठहरनेकी अर्जकिइ, महाराजने देखाकि वास्तेधर्मके-ये-लोग इतनी अर्जकरते है-तो-मुनासिवहै अवका चौमासा फिर लशकरमें करे, छावनी-मुरारसे-फिर लशकर आये. और संवत् (१९५१) की-वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यानमें प्रज्ञापनासूत्र और आचारदिनकर ग्रंथ वाचा, सम्मतितर्कका चोथा हिसा इस चौमासेमें पुरा किया,

अंगं स्वप्नःस्वरश्चैव-भौमं व्यंजन लक्षणे,
उत्पातमंतरिक्षंच-निमित्तं स्मृतमष्टधा ॥ १ ॥

अष्टांगनिमित्तका इल्म इनदिनोमें हासिलकिया, नंदीसूत्र-दशाश्रुतस्कंध-व्यवहारसूत्र-और-निशीथसूत्र-इनदिनोमें वाचे, संगीतकलाका इल्मभी इसअर्सेमें हासिल करतेरहे, क्योंकि-यह-शहरभी इसहुनरकेलिये मशहूरहै,-कइदफे वडी वडी सभा हुइ. एकरौज पृथवी फिरती है-या-चांदसूर्य, ? इसपर व्याख्यानदिया,

(पृथवी फिरती है-या-चांदसूर्य,-)

अगर पृथवी फिरतीहै-एसामाने-तो-एकगांव दुसरे गांवसे जिस दिशामे है उसदिशासें वदलजाना चाहिये. वारीशके दिनोमें समझो दो-घटेतक एकजगह वारीश होतीरही, और इधर जमीन दो घटेमें फिरतीहुइ आगेको चलीगइ फिर तालाव-पानीसे कैसे भरसकेंगें, ? एक द्रख्तके मालेसें निकलकर एक पक्षी समझो आस्मानमे उडा, और वह आधघटेतक आस्मानमे उडतारहा, इधर पृथवीकेशाथ लगाहुवा द्रख्त-आगे चलागया, सोचो ! फिर वह पक्षी अपने मालेको कैसे पासकेगा, ? अगर कहाजायकि-चांद-सूर्य स्थिरहै और पृथवी फिरती है-तो अमावास्याके रोज-चाद-सूर्य एक राशिपर और पौर्णिमाके रोज-एक दुसरेके सामने क्यों आजाते है ? एक राशिपर जो अनेक ग्रहोंका मिलना-और-जुदा होजाना नजरके सामने दिखाइ देरहाहै वह क्योंकर सबुत होगा? अगर पृथवी फिरती है-तो--यहभी सवाल पैदा होगाकि-वह-गाडीके पैयेकीतरह उर्द्ध-अधः फिरती है ? या कुभकारके चक्रकीतरह तिर्यग् फिरती है ? अगर उर्द्ध-अधः फिरती है-तो-उर्द्धस्थित पदार्थ अधः आनेसे गिरनेकी सभावना है. अगर कुभकारके चक्रकी तरह तिर्यग् फिरती है-तो-कहीए ! किसके आधाररहकर फिरती है-, ? वहुतसी वातें वयान किइगइथी, यहां थोडेमें-मतलव कहदिया है.

[संवत् १९५२ का चौमासा शहर भोपाल,]

वादवारीशके लशकरसे रवानाहोकर दतिया-झहासी-ललितपुर-वासोदाहोते भिलसागये, और (१५) रोज वहापर कयाम किया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशादेतेथे, एकरोज भिलसाके पडोसमे वौधस्तुपोंको देखनेगये, भिलसा वौधस्तुपोंके लिये मशहूर

जगहहै. भिलसा टेशनसे (५) मील सांची टेशनकेपास कइ बौधस्तूप वनेहुवेहै, भिलसासे रवानाहोकर शहरभोपाल आये, और संवत् (१९५२) की वारीश यहांपर गुजारी, सूत्रअनुयोगद्वार और नेमिनाथचरित व्याख्यानमें वाचा, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति और द्वीपसागरप्रज्ञप्ति इनदिनोंमे वाचतेरहे, महाराजके उपदेशसे एक-जैनश्वेतावर पाठशाळा यहां खोलीगइ, जिसमे जैनश्वेतांवर श्रावकोंके लडके मजहवीइल्म हासिलकियाकरे,-

[संवत् १९५३ का चौमासा शहर इंदोर,-]

वादवारीशके भोपालसे रवानाहोकर छावनी सिहोर-नरसिंहगढ-सारंगपुर-साजापुर होतेहुवे तीर्थ मकसीकी जियारतकों गये, जो उज्जेनकेपास मुल्कमालवेमे वाके है, वहांकी जियारतकिइ और जोजो नजुहात पुरानी तवारिखकेढेखे अपनी नोटबुकमें दर्ज किये, तीर्थमकसीसें रवानाहोकर कस्वा देवासहोते शहरइंदोरकों आये. और संवत् (१९५३) की वारीश वहापर गुजारी, गलीमोरसलीमें नये मदिरकेपास-मकानमे ठहरे. व्याख्यानमें सूत्रआवश्यकवृत्ति-और-वासुपूज्यचरित वाचना शुरुकिया, सुननेवाले कसरतसें जमाहोतेथे. प्राकृतव्याकरण-यहांपर-हिफ्ज यादकिया, सूत्र अंगचुलिका-और-वगचूलिका यहां वाचे, और मानवधर्मसंहिता ग्रंथ वनाना शुरुकिया,

(सवत् १९५४ का चोमासा शहर रतलाम,)

वादवारीशके इदोरसे रवानाहोकर दोवारा तीर्थमकसीकी जियारतको गये, और वहां करीव (८) रोजठहरे, उसअर्सेमें मुल्कमालवेके वहुलसे जैनश्वेतांवरयात्री-वास्ते जियारतकों वहांपर आयेथे. शहर उज्जेनके जैनश्वेतावर श्रावकोने महाराजसें वहुतअ-

जैमारुज किइकी-आपहमारे शहरमें तशरीफलावे, महाराजने उनकीअर्ज कुबुलकिइ और तीर्थमकसीसे रवानाहोकर मुल्कमालवेके नामीग्रामी शहर उज्जेनकों गये, उज्जेन पुरानाशहरहै, और यहांपर अवंतीपार्श्वनाथका तीर्थ है जियारतकिइ, मोशमशर्म्मा वहांपरगुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे. सभा अछीभरतीथी, उज्जेनके श्रावकोने महाराजकी बहुतकदर और खिदमत किइ, उज्जेनसे रवानाहोकर कस्बे बडनगरको गये, और वहां करीब (१) महिनेके कयामकिया, श्रीयुत-मोहनलालजी लक्ष्मीचंदजी-कुशलगढवाले-यहापर मिले, और धर्मचर्चाके बारेमें बहुतसे सवालपुछे, महाराजने उनका माकुल जवाबदिया, और उनोने दोहे-कवित्त बनाकर महाराजकी इसतरह तारीफकिइ,—

(दोहा.-)

नामशांति गुनशांतहै-शांतिमुनि अनगार,
अशुभकर्मकृतविघ्नको-शांतिकरन दातार, १,
चिंतामनिसम शांतिमुनि-रंगे अधिक वैराग,
पंचममे परगट भये-भविजनकेरे भाग्य. २,

(कवित्त.)

महावीरशासनके उन्नतिकरनहार-धर्मके धुरंधर ऐसे मुनिराजहै,
कुमतिमद हस्तिनके कुंभस्थलफोरवेको-पंचाननराजसमजिनकेशिरताजहै
ज्ञानजलदाता उलसातभविवारिजके-अचलदृढरंगमर्यजिनका समाजहै
मोहनमनमाने-तीनलोकमे-नछाने-ऐसेसुगुरुसयानेविजयशांतिमहाराजहै,

बडनगरसे रवानाहोकर महाराज-शहर-रतलामकों तशरीफलेगये, और सनत् (१९५४)की बारीश वहांपर गुजारी, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी यहापर ज्यादहहै, व्याख्यान सभा अछी

भरतीथी, और सुननेवाले लोग कसरतसे जमाहोतेथे, धर्मचर्चाके लिये कइमहाशय आतेजातेथे और माकुलजवाव सुनकर खुशहोते थे, इनदिनोमे महाराजने--इस्तिहार--छपवाकर शहरमें इसलिये बांट दियेकि-आमलोग-धर्मचर्चाका फायदा हासिल करे,

पर्यूषणपर्वकी अखीरकेरौज जैनोमें-जो-चैत्यपरिपाटिका जलसा निकलताहै चारस्तुति-त्रिस्तुति-माननेवालोका आपसमें वादानुवाद हुवा और उसवातका फैसला रतलामराज्यसे यहहुवाकि चारस्तुति माननेवालोका जलसा पेस्तर निकले, उस वख्त वडा जलसा हुवाथा; रतलामके जैनश्वेतांवर--चारस्तुति माननेवाले श्रावकोने-महाराजकी वहुत कद्र किइ, और एक-खिताव-रेशमी कपडेपर सुनहरी हर्फोंसे लिखकर वतौर जैनपताकाके भेट दिया, उसमें लिखाथा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजित्प्रसादात्-जैनश्वेतांवर धर्मोजयति,-इसकेशाथ एक-मानपत्रभी-इसमजमूनका दियाकि-जैनश्वेतांवरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर न्यायरत्न-महाराजश्री शांतिविजयजीकी खिदमतमे-हम-रतलामका-जैनश्वेतांवरसंघ-यह-मानपत्र और जैनपताका भेट करते है, वराये महरवानी मंजुरकरेगे, सभी जैनश्वेतांवरधर्मावलवीकों मालुम होकि-महाराज-शांतिविजयजी--जैनसूत्रसिद्धांतके पठित- और-षड्दर्शनके जानकारहै, जिनोने पंजाव-मारवाड-मेवाड-गुजरात राजपुताना-मालवा-वगेरा मुल्कोकी सफरकरके जैनधर्मकों तरक्की दिइ, आम जैनश्वेतांवरसंघ इनकेनामसे वाकिफहै, इनके लेख कइ गुजराती-शास्त्री-जैनमासिकपत्रोंमे छपेहुवे मौजूदहै, ये-मुनिमहाराज हमारे शहरमें तशरीफ लाये, और सवत् (१९५४) का चौमासा यहांकिया, हमारे रतलामशहरमें करीब (७००) घर जैन श्वेतांवरोके है, हमलोगोकी अछी तकदीरथीकि-महाराजका पधा-

रना यहा हुवा, और जैनधर्मकी निहायत तरक्की हुइ, जिन जिन श्रावकोंका खयाल धर्मकेवारेमें डावाडोल होगयाथा महाराजने शास्त्र सबुतदेकर धर्मपर पावदकिये, अवहम आपकी खिदमतमें यह मानपत्र-और-जैनपताका भेट करते है, और परमात्मासे इवादत करते हैकि-आपकी-विजय-हमेशां वनीरहे, इसमानपत्रमें (८२) आगेवान श्रावकोकेशाथ-समस्त-जैनश्वेतावर संघकी सही मौजूद है, यहां कहांतकलिखे, जिनको देखनाहो-सन (१८९९) मार्च एप्रिलके-जैनदिवाकर-मासिकपत्र--अहमदावाद-पुस्तक-१४-अंक ५-६-में देखे, यहाभी उसीसे उतारा लियागया है. -महाराजने ज्योतिष्करंडक-और-आरंभसिद्धिग्रंथ इस चौमासेमें पढे, समवायांग और जीवाभिगमसूत्र वाचे, सगीतकलाका इल्म यहांभी हासिल करते रहे.

(संवत् १९५५ का चौमासा शहर मंदसोर,)

वादवारीशके रतलामसें रवानाहोकर मुकाम जावरा गये, और वहांपर पनरांह रौजतक कयामकिया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, जावरेसे रवानाहोकर खाचरोदहोते कस्बे वडनगरकों गये, मोशमशर्मा वहांपरगुजारी, वडनगरसे रवानाहोकर शहर मन्दसोर आये एकमहिना वहापर कयामकिया, मदसोरसे परतापगढ गये, और वहाभी करीब एकमहिना ठहरे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे. और आयेगये गृहस्थोकेशाथ धर्मके वारेमे वहेस होतीथी, परतापगढसे वापिस मदसोर आये, और संवत् (१९५५) की-वारीश वहांपरगुजारी. व्याख्यानमें विविधतीर्थकल्प-और-समरादित्यचरित वाचा. मानवधर्मसंहिताकिताव छपकर तयारहुइ और जिन जिन महाशयोने मंगवाइथी-उनकों भेजीगइ, इनदिनोमें महाराजका इरादाहुवाकि-जैनतीर्थगाइड किताव-वनाकर जाहिर

किइजाय-ताकि-आम जैनश्वेतांवरसंघको फायदा पहुचे. मगरयह वात सव जैन तीर्थोको वगेर देखे भाले नही होसकती, इसलिये इरादाकियाकि-मुल्कपूरवके जैनतीर्थोकी जियारतकों चले, महाराज सवमजहवोकी पुस्तके हमेशां शाथरखते है ताकि-जिसजिस मजहववालोंकों जवावदेनाहो फोरन दियाजाय, दुसरेशहरोके श्रावक जव-महाराजसे-धर्मकेवारेमें सवालपुछते है-तो-उनकाजवाव व-जरीये अखवारके व-खूवीदेते है. इसलिये वहुतसी जैनपुस्तकेभी शाथरखना पडती है, महाराजकी व्याख्यानसभामें कोइ अगर शौरगुलकरेतो उसको अपनीसभासे रुकसत करवादेते है इस वातसे कइश्रावक एतराज करते है मगर जो अकलमंदहै-वे-इस वातकी तारीफ करते हैकि--साधुहो-तो-ऐसेहो-जो गरीव और अमीरकों एकसा समझे, व्याख्यानसभामें जव भावनाअधिकारका वर्ननचलताहै-भैरवी-कालिगडा वगेरा रागरागनीसे व्याख्यान वांचतेहै. और कभीकभी हारमोनियम वजानेवाले शख्श सभामें वेठकर स्वरपुरते है, यहांपर कइदफे महाराजने इसतरह व्याख्यान दियाथा,-

[संवत् १९५६ का-चौमासा शहर लखनउ,]

वाढवारीगके शहरमंदोरसे रवाना होकर तीर्थमक्सीजीकों तीसरी मरतवागये, और जियारतकिइ, तीर्थमकसीसे रवानाहोकर सारंगपुर-वियावरा-गुणा-सीपरी--जहांसी-काल्पी-कानपुर--उनावकी सफर करतेहुवे शहर लखनउ गये, और संवत् (१९५६) की-वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशाश्त्रका हमेशां वांचतेथे और सभा अछीभरतीथी, मुल्क पूरवका खानपान-वोलचाल और-पुशाक अछा और श्रावकलोग निनमान देखेगये, निर्यावलीसूत्र और दश प्रकीर्णकशाश्त्र यहांपर वाचे,

लखनउसे महाराजने तीर्थसमेतशिखरकी जियारतकेलिये तयारीकिइ, रास्तेमें श्रावकोंकी आवादी कमहोनेसे पैदलजानेका इरादा मोकुफ रखा, और द्रव्यक्षेत्रकालभाव देखकर रैलमे सवारी करना दुरुस्त समझा, इरादे धर्मके जब जैनमुनि–मुल्क–ब–मुल्ककी सफरकरे और रास्तेमें नदी–या–दरयाव आजायतो नावमें वेठकर पारहोवे ऐसा हुकमहै, अगर कोइमुनि–शौखसे–या–आरामकेलिये रैलसवारीकरे तो वेशक ! पापहे, और उसकी मुमानियतभी है, क्योंकी–उसका इरादा धर्मपर नहीरहा, आजकल श्रावकलोग ब–सबब रैलके अपना वतनछोडकर हजारा कोसोपर जाबसेहै, जहांकि–धर्मका नामनिशानभी नहीपाता और वहांकोइ जैनमुनि उनकों धर्मका रास्ता बतलानेवाले नहीमिलते, ऊसहालतमें कोइ जैनमुनि इरादेधर्मके रैलमें सवारहोकर वहांजावे और तालीमधर्मकी देवे–तो–धर्मका फायदाहै, जमाने हालमें कितनेक जैनमुनि जब समेतशिखर वगेरा बडेतिर्थकी जियारतकों जाते है–या–जहा श्रावकोंकी आवादी कमहो–वैसीजगह–विहारकरतेहै, तो उनकेशाथ श्रावक–श्राविका–बेलगाडी--नोकरचाकर शाथचलते है, मुनिलोग खुदजानते हैकि–यहकार्य–हमारे निमित्तसे होताहै, अगर कहाजायकि–इसमें–इरादे धर्मके भावहिंसा नही और विना भावहिंसाके पापनही–तो–इसीतरह यहवात रैलसवारीमेभी क्यों–न–समझीजाय ? जोजो जैनमुनि श्रावकोंकी–या–नोकरचाकरोंकी विनामदद अकेले पैदल विहारकरते है–वे–वेशक ! अछे है, मुल्क गुजरातमें जहांकि–गांवगावमें जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आवादी है, वहां पैदल विहारकरना ज्यादह मुश्किलनही, मगर तमाम हिंदुस्थानमें जहांकि–श्रावकोंकी आवादी नही है वहां जैनमुनिकों वगेर दुसरोंकी मददके–या–रैलके जानाआना मुश्किलहै, ऐसासमझकर महाराजने रैलमें सफरकरना मुनासिब समझा,

(संवत् १९५७ का चौमासा शहर मुर्शिदाबाद,-)

लखनउसे रैलमें सवारहोकर महाराज तीर्थअयोध्याकों गये, यह शहर तीर्थंकर-रिषभदेवमहाराजकी-जन्मभूमिहै, उसकी जियारत किइ, और वहांकी जोजो मशहुरबातेथी अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ, अयोध्यासे रत्नपुरी जो सातकोशके फासलेपरवाके है, और तीर्थंकर धर्मनाथकी जन्मभूमि है वहांजाकर उसकी जियारत किइ, और वहांकी तवारिख अपनीनोटबुकमें दर्जकिइ, रत्नपुरीसे रवानाहोकर वापिस अयोध्या आये. और अयोध्यासें बनारसकों गये, तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ-और-पार्श्वनाथकी जन्मभूमि बनारस पुराना जैनतीर्थ है, उसकी जियारतकिइ, वहांके पुराने शिलालेख और तवारिखकीबाते अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ. बनारससे तीन क्रोशके फासलेपर मौजा-सिंहपुरी-तीर्थंकर श्रेयांसनाथकी जन्म-भूमि-और-सिंहपुरीसे सातकोशके फासलेपर चंद्रावती-जो-तीर्थं-कर चंदाप्रभुकी जन्मभूमि है, वहांजाकर जियारत किइ, और जो जो अजुबा वाकातदेखे अपनी नोटबुकमें दर्जकिये. बनारससे र-वानाहोकर मोगलसराय जंकशन होतेहुवे-गयालाइनसे नवादाटे-शन गये. और वहांसे पंचतीर्थीकी जियारतकेलिये रवानाहुवे, यह पंचतीर्थी खुश्कीरास्तेका मुकामहै, और क्रीब वीशकोशके घेरेमें है, नवादेसे रवानाहोकर अवल राजग्रहीकों गये, वहांपर वैभार-गिरि वगेरा पांचपहाडोके मंदिरोंकी जियारत किइ, और वहांके शिलालेखोकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ. राजग्रहीसे सुबे-विहार-सुबेविहारसे-कुंडलपुर-और-कुंडलपुरसें पावापुरी-जो-तीर्थंकर महावीरस्वामीकी निर्वाणभूमि है, कमलसरोवरमें जहां निहायत उमदा मंदिर और-तीर्थंकर महावीरस्वामीकी चरणपादु-का तख्तनशीनहै, ज़ियारतकिइ, तवारिख पावापुरी और शिला-

लेखोंकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ. पावापुरीकी जियारत करके गुणाशिलवनउद्यान गये, और वहांसें-वापिसनवादाटेशनकों आये, और नवादेसे रैलमे सवारहोकर लखीसराय-मधुपुर होते हुवे गिरिडीटेशनको गये, और गिरिडी टेशनसे खुश्कीरास्ते तीर्थसमेतशिखरजानेकेलिये रवानाहुवे, जोकरीब नवकोशके फासलेपरवाके है. चारकोशजानेपर वराकडगांव-जहापर-रिजुवालुका नदीकेकनारे शाल-नामके द्रख्तकेनीचे-तीर्थकर महावीरस्वामीकों केवलज्ञान पैदा हुवाथा जियारत किइ, और वहांसे रवानाहोकर रिजुवालुका नदीकों पारकरतेहुवे समेतशिखर पहाडकीतराइमें मधुवनगये, जैनश्वेतावर धर्मशालामें कयामकिया, वहापर (१०) मंदिर वडेवडे आलिशान वनेहुवे है जियारतकिइ और तमाम शिलालेखोकी नकल अपनी नोटवुकमें दर्जकिइ.

दुसरेरौज समेतशिखर पहाडपर गये, तमाम टौंकोंकी और मंदिरकी जियारतकिइ, और वहांकेशिलालेखोकी नकल अपनी नोटवुकमें दर्जकिइ, शामकों पहाड समेतशिखरसे वापिस आये. चदरौज मधुवनमे ठहरे और वापिस उसीरास्ते गिरिडी टेशनको आये और रैलमें सवारहोकर मधुपुर-लखीसराय-होतेहुवे शहर भागलपुर गये, दुसरेरौज खुश्कीरास्ते चपापुरीकों रवानाहुवे जो दोकोशके फासलेपरवाके है, तीर्थकर वासुपूज्यस्वामीके--पांचकल्याणिक यहांहुवे, उसकी जियारत किइ, वहाके शिलालेखोकी नकल अपनी नोटवुकमें दर्जकिइ, चपापुरीसे वापिस भागलपुरकों आये, भागलपुरसें रैलमें सवारहोकर नलहटी जकशनहोते शहर मुर्शिदावादगये, और संवत् (१९५७) की चारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यानमें सूत्रआवश्यकवृत्ति-और--नेमिनाथचरितवाचा एकरौज विधिवाद-चरितानुवाद--और-यथास्थितवादपर व्या-

ख्यानादिया, विधिवाद उसकों कहते है-जो--तीर्थंकरगणधरोका हुकमहो, चरितानुवाद उसकों कहते है जिसमें कथा--कहानी-चरितवगेरा वयान कियागयाहो, यथास्थितवाद उसका नामहै जैसे द्वीप-समुद्र-नरक-स्वर्ग-गांव-नगर-कोट-किला वगेरा जो चीज जैसी है उसका वयानाकियाहो, विधिवाद काबिलमंजुर करनेके है, चरितानुवादमे-जोजो-वातें मुताविक विधिवादके है-मजुर करना चाहिये, और जोजोवातें खिलाफहै छोडदेना चाहिये, यथास्थित-वाद-काविल जाननेके है, जोशख्श जैनशास्त्रोके मतलबको पहिचाननाचाहे इनको--व-गौर समझे,-

पर्यूषणपर्वकी अखीरमें चैत्यपरिपाटीका जलसा अछा हुवा, और धर्मकी-तरक्की लाइकतारीफके हुइ, निशिथसूत्र--और-वृहत्कल्पसूत्र-इनदिनोमें-वाचे, कइ महाशयोके शाथ-मजहवकेवारेमें-वहेस होतीरही,—

[संवत १९५८का चौमासा शहर कलकत्ता,]

पोप महिनेमें मुर्शिदावादसे रवाना होकर दोवारा समेतशिखरजीकी जियारतकों गये, मुर्शिदावादके कितनेक श्रावक-श्राविका शाथ-आयेथे, मधुवनमे पोपवदी (१०) मीके रौज रथयात्राका जलसा कियागया, दुसरेरौज पहाडपरजाकर जियारतकिइ, चंद-रौज ठहरे और फिर गिरिडी टेशनकों वापिसआये, मुर्शिदावादके श्रावक-श्राविका-अपने वतनकों गये और महाराज-लखीसराय जंकशन आये. और वहां खुश्कीरास्ते करीव (६) कोसके फास-लेपर-जो-काकदी नगरी है जियारतकों गये, तीर्थंकरसुविधिनाथकी जन्मभूमि यही काकंदी नगरी है, उसकी जियारतकिइ और वहाकि तवारिख अपनी नोटवुकमे दर्जकिइ. काकंदीसे रवानाहो-

कर क्षत्रीयकुंडगांव गये, जो-वहांसे-नव कोशके फासलेपर तीर्थ-करमहावीरस्वामीकी जन्मभूमि है, यहांपर एक-जैनश्वेतांबर मंदिर गांवमे दो-तलहटीमें और एक पहाडपर वनाहुवाहै, वहांजाकर जियारतकिइ और तवारिख वहाकी अपनी नोटवुकमें दर्जकिइ, पहाडसे वापिस आतेवख्त-शामके चारवजे तलहटीके मंदिरपास(५०) कदमके फासलेपर एकवडा-शेर-जाताहुवा दिखलाइदिया,-मंदिरके पूजारी-धारीलालने शेरकों देखकर मंदिरका दरवजा वंदकर लिया, जिस-डोलीमें-महाराज सवारथे, डोलीवालोने डोली जमीनपर रखदिइ, महाराजने पुछा डोली क्यौं रखदिइ ?-वे-खौफकी वजहसें जवाव-न-देसके, महाराजने जब-इधरउधर देखा तो करीव (५०) कदमके फासलेपर एक-शेर-नजर-आया, मगर वदौलत-देवगुरुधर्म-और-प्रभावतीर्थभूमिके-वो-सामने-नहिआया, और कुदताहुवा डावीतर्फकी एक-टेकरी-लाघता चलागया, पूजारी धारीलाल-जोकि--डरगयाथा-मंदिरका दरवजा खोला, और कहनेलगा शुक्रहै, आज! हमारी जान वची, यहां-तो अकसर एसाही माजरा हुवाकरताहै, महाराजने वहाकी जियारतकिइ, और शामके पांचवजे क्षत्रीयकुंड गावकों वापिसआये, तीसरेरौज क्षत्रीयकुंड गांवसे रवानाहोकर लखीसराय टेशनकों आये, और रैलमें सवारहोकर शहरपटना पहुचे, वाडेकीगलीमें जैनश्वेतांबर मंदिरकेपास-मकानमें कयामकिया और तीर्थकी जियारतकिइ, शहरसे दो-मीलकेफासलेपर-कमलद्रहपर जाकर-स्थूलभद्र महाराजके चरणोकी छत्री-और सुदर्शनशेठकी शूलीका-सिंहासन-होगयाथा वह-जगह देखी, शिलालेखोकी नकल-और तवारिख पटना-अपनी नोटवुकमें दर्जकिइ. पटनेसे रवानाहोकर वखतीयारपुर होते सुवेविहारकों पहुचे, मोशमसर्मा-वहांपर-गुजारी, चैतमहिनेमें तीर्थ

पावापुरीकी जियारतकों गये, और करीव देढमहिनेके वहांपर कयामकिया. पावापुरीसे रवानाहोकर भागलपुर होतेहुवे चंपापुरी गये और दुसरीमरतवे जियारतकिइ.-चंपापुरीसे भागलपुरआकर शहर कलकत्तेकों गये. और संवत् (१९५८) की-वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, और सभा अछी भरतीथी, पर्यूपणपर्वकी अखीरमें चैत्यपरिपाटीका जलसा उमदा हुवा, अखवार भारतमित्र और हिंदीवंगवासी-जो-कलकत्तेके नामीग्रामी अखवारहै उसमें महाराजकी इसतरह तारीफ छपीथी,

(अखबार भारतमित्र कलकत्ता, तारिख २८ सितंवर-शनिवार सन १९०१ इस्वी-संवत् १९५८ भाद्रपद-शुक्ल १५-)

श्वेतांवर जैनोंके गुरु विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजी चारमहिनेसे कलकत्तेमें है, गतमंगलवारसे पर्यूपणपर्व आरंभहुवा, व्याख्यानके समय (६००) जहोरी जमाहोतेथे, जहोरीलोगोने वडीधूमसे जलसाकिया, भाद्रपदसुदी (४) मंगलवारको सव जैनश्वेतांवर श्रावकोने मिलकर उक्तमहाराजको वडे जुलुससे दर्शन करानेको लेगये, ऐसा जलसा कभी नहीहुवाथा, जैसा इस सालहुवा, आप वडे पडितहै, आपके आनेसे यहा जैनोमे वडा धर्मोत्साह फैलाहै, आपकी वनाइ मानवधर्मसंहिता किताव जैनोके पढनेके काविल है,-

---

(अखबार हिंदीवंगवासी-कलकत्ता, तारिख १८ नवंबर सन १९०१ इस्वी-संवत् १९५८ कार्तिक सुदी ७ सोमवार,)

" कलकत्तेमे गुरु "—

यहांपर अनेक जहोरी जैनीहै, विद्यासागर-न्यायरत्नमहाराज

शांतिविजयजी इन जैनी जहोरीयोंके गुरुहै, आप चारमहिनेसे कलकत्तेमें है, यहां गुरुजीका निवास वडतल्लास्ट्रीट (५८) नंबरवाले मकानमें हुवाहै, आपके आनेसे श्वेतावरलोगोमे उनके धर्मका वडा उत्साह हुवा है.–

इसतरह कइ अखबारोमें महाराजकी तारीफ छपीहुइ है, बडे बडे शहरोमे जहाजहा महाराज तशरीफ लेजाते है उनका बयान अखबारोमें छपताहै,–

एकरौज महाराजने इसवातपर व्याख्यानदियाकि–जिसजिस बातका तीर्थकर–गणधरोने धर्मशास्त्रमें हुकम फरमाया है, सवव आनपडनेसे मनाभी फरमाइ है, और जिसवातकी मनाफरमाइ है उसका हुकमभी फरमायाहै एसा जानो, मगर वो–सवव–इरादे धर्मके होनाचाहिये. जैसेकि–चौमासेकेदिनोमें जैनमुनिकों एकजगह रहना फरमाया, मगर सवव वीमारीका आनपडे तो–चौमासेमेंभी विहार करजाना हुकम है, जैनमुनिकों वनास्पति खाना–या–स्पर्श करना मनाहै, मगर जब किसी–कुवेमें–या–खड्डेमें गिरपडे तो–उस हालतमें किसी द्रख्तकीशाखा–या–लता–वेलडीकों पकडकर वहार आजाना हुकमहै, अगर किसीमुनिको–साप काटजाय तो उसके जहरकों रदकरनेकेलिये नींबके पत्ते चवाजानाभी हुकमहै, जैनमुनिकों क्रोधकरना–या–किसीकों सख्त जवान कहना हुकम नही, मगर जवकोइ धर्मकों हानि पहुचाताहो–या–कुतर्क करके धर्मका खंडन करताहो–उसहालतमें–उसकों सख्तजवान कहनाभी हुकमहै, क्योंकि–इरादा धर्मकाहै, जैनमुनिकों भिक्षामांगकर सीकमपरवरीश करना शास्त्रहुकमहै, मगर जब खुद वीमारपडजाय तो कोइ गृहस्थ आहारपानी मकानपर लादेवे–तोभी–लेलेना हुकमहै. क्योंकि–उस

वख्त अमरलाचारी है, हां ! अगर विनासवव ऐसाकरेतो वेशक! मनाहै, इश्कवाजी-चोरी-और-कुव्यसनकेलिये बिल्कुल मना है. किसीको समझो शरावपीनेकी कसमहै, और दुसरेन उसकों पकडकर जोराजोरी शराव पीलादिइ, उसका इरादा नहीथा-तो-उसकों कसम तोडनेका पाप नही, इसतरह और चीजोकेलियेभी समझना. वगेरा वहुतसा बयान कियागयाथा, यहां थोडेमे लिखा है, कइ महाशय मजहवीवहेसको आतेथे और मजहवकेवारेमें वहेस करतेथे, व्यवहारसूत्र-पंचकल्पसूत्र-और दशाश्रुतस्कंधशास्त्र महाराजने यहांपर वाचे-

(संवत् १९५९ का-चौमासा शहर मंदसोर,)

वादवारीशके-मगसीर-और-पोपतक कलकत्तेहीमे कयामकिया, और माघसुदीमे रवानाहोकर वर्द्धमान-आसनसोल-मधुपुर-और गिरिडी होतेहुवे तीर्थ समेतशिखरकों तीसरीमरतवागये, जियारत किइ, और पहाडपर दसमीटोंककी संवत् (१९५८) माघसुदी (१०) मीके रौज प्रतिष्ठा किइ जोकि-वसवव-विजली गिरजानेके लीवारा मरम्मत किइगइथी, चंदरोज मधुवनमें-कयामकिया, और वहांसे रवानाहोकर वापिस गिरिडी टेशन आये, गिरिडीसे रैलमें सवारहोकर आसनसोल-चक्रधरपुर-रायपुर-विलासपुरहोते शहर नागपुर-आये, जो मध्यप्रदेशका सदरमुकाम और गुल्जारशहरहै, पेठ-आदितवारमे-कयाम-किया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, और सुननेवालेलोग कसरतसें जमा होतेथे, चैत वैशाख जेठतक वहां कयामकिया, अषाढवदीमें शहर-मंदसोरके श्रावकोका तार आयाकि-आप यहां बरायेमहेरवानी कदमरंजा फरमावे, और वारीशका मुकाम करे, महाराजने उनकी अर्ज कुबुलकिइ और नागपुरसें रवानाहोकर भुसावल-खंडवा-और इदोर टेशनपर होते

शहर रतलामगये, रतलामके श्रावक-टेशनपर-हाजिरथे, उनोने दो-रौजकेलिये-ठहरनेकी अर्जकिइ, महाराज वहांपर (२) रौज ठहरे, और व्याख्यान धर्मशास्त्रका वाजाकिया, तीसरेरौज रतलामसे रवानाहोकर शहरमंदसौर आये, और संवत् (१९५९) की वारीश वहांपर गुजारी. पेस्तरभी महाराज यहां वारीश गुजारचुके है, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देतेथे, किताव-रिसाला-मजहव डुढिये-यहांपर वनाइ. जोकि-जैनश्वेतांवर श्रावकान-मंदसोरनेवास्ते फायदे खासआमके छपवाकर जाहिरकिइहै. दुसरीकिताव-गुलदस्ता-जैन-और-इशाइभी यहापर महाराजने तयारकिइ, संगीत कलाका इल्म इनदिनोंमेंभी हासिल करतेरहे. सूर्यप्रज्ञप्ति-और-पिंडनिर्युक्तिशास्त्र-यहापर महाराजने वाचे और वारीश खतम करके तीर्थ-वहीपार्श्वनाथकी जियारतकों गये, जो-करीव (९) कोसके फासलेपरवाके है. यात्रीयोंका वहां-मेला-हुवाथा, और जलसा कियागयाथा, महाराज वहापर दोरौज ठहरे, और वीर्थकीजियारत करके वापिस-मंदसोर-आये,—

[संवत् १९६० का-चौमासा-शहर आकोला,]

वादवारीशके मंदसोरसे रवानाहोकर निमच होतेहुवे चितोडगढकी जियारतकों गये, पहाडपर जाकर पुराने मंदिरोंकी जियारतकिइ, और वहांकी तवारिख अपनी नोटवुकमें दर्जकिइ, चितोडगढसे कपिलपुरकी जियारतकेलिये रवानाहुवे, रास्तेमें अजमेर-जयपुर-वांदीकुइ-भरतपुर-अचनेरा--मथरा-और-हाथरस टेशनपर होतेहुवे कायमगजटेशन उतरे, और वहांसे खुश्कीरास्ते कपीलपुर-जो-तीनकोसके फासलेपर वाकेहै गये, तीर्थंकर विमलनाथजीकी जन्मभूमी यही शहरहै, जियारतकिइ, और वहांके

अजुबात अपनी नोटबुकमें दर्जकिये, वहांसे वापिस कायमगंज आये, और तीर्थ शौरीपुरकी जियारतकेलिये जानेकों रैलपर सवारहुवे, और सिकोहावाद टेशनपर उतरे, वहांसे शौरीपुरतीर्थ खुश्कीरास्ते करीव सातकोसके फासलेपर जमनाकनारे मौजूदहै, जोकि-जमानेहालमे वटेश्वरकेनामसे मशहूरहै, वहांजाकर तीर्थ शौरीपुरकी जियारतकिइ और उसकी तवारिख अपनीनोटबुकमे दर्ज किइ, शौरीपुरसे वापिस सिकोहावाद आये और सिकोहावादसे रैलमे सवारहोकर इलाहावादगये, यहांका पुरानाकिला देखा, जो गंगा-जमनाके-संगमपर वनाहुवाहै, इलाहावादसे रैलमे सवारहोकर कौशांवी नगरीकी जियारतकों गये, भरवारी टेशन उतरकर कौशांवी तीर्थकेलिये रवानाहुवे रास्तेमें एक-हिरन-हिंसक लोगोसे छुडवाया, और उनको धर्मोपदेशदिया, भरवारी टेशनसें कौशांवी-सातकोशके फासलेपरवाके है, और आजकल इसकों कौसंवपाली वोलते है, तीर्थंकर पदमप्रभुकी जन्मभूमि यहीशहरहै, आजकल-यहां-न-कोइजैनश्वेतांवरमंदिरहै-न-श्रावकहै, सीर्फ! उस जगहकी कदमवोसीकरके वापिस भरवारीटेशन आये, और रैलमे सवारहोकर कानपुर-लखनउके टेशनहोते अयोध्याकों गये, और वहांकी दोवारा जियारत किइ. अयोध्यासें सरयूनदीका पुल पारकरके टेशन लकडा मंडीपर गये, और रैलमें सवार होकर वलरामपुर टेशन उतरे, वलरामपुरसे सातकोसके फासलेपर सावथ्थी नगरी जिसकों आजकल किला-सहेटमेट-वोलतेहे गये, यहांपर आजकल कोइ जैनश्वेतांवर श्रावक नही, सीर्फ! एक मंदिर वनाहुवा खाली पडाहै, वहांकी जियारत किइ, और तवारिख सावथ्थीकी अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ, सावथ्थीके रास्तेमे कइ-नयपालीलोग-मिले, और उनसे धर्मकी वातेहुइ, सावथ्थीसे वलराम

पुर होते-अयोध्यागये, अयोध्यासे रवाना होकर बनारस मुगल-सराय-होते गया टेशनपर उतरे, और वहांसे खुश्की रास्ते (१८) कोसके फासलेपर तीर्थ भद्दीलपुरकी जियारतको गये, वहांपर-पहाडकी दामनमे-एक-बहुतछोटा-हटवरीया-नामकागांवहै. पेस्तर यहां भद्दीलपुर शहर आबादथा, तीर्थंकर शीतल नाथकी जन्मभूमि यही भद्दीलपुरहै, आज बिल्कुल विरान होगया, यहापर एकपहाड और-उसपर एक-जैनश्वेतांबर मंदिर बनाहुवा-बगेरमूर्त्तिके खाली पडाहै, वहांकी जियारत किइ, भद्दीलपुरसे उसी रास्ते वापिस गया टेशनको आये, एकरोज गयाटेशनसे (६) मील दखनको बोध गयागाव देखनेको गये, जहापर बोध देवका मंदिरहै उसको देखा, यहांपर नयपाल-बर्मा-शिलोन-जापान-और-चीनके बौध यात्री वास्ते जियारतको आते जातेहै-बौध मजहबके एक-साधु-यहापर मिले, और उनसे जैन-और बौध मजहबके बारेमें बातेंहुइ बोधगयासें वापिस गया टेशन आये और रैलमे सवार होकर पटना होते मुकामा जकशन उतरे, गगा नदी पार होकर सेमरया घाट टेशनसे रैलमें सवार होकर शहर दरभगा होते-सीतामढी टेशन गये, पेस्तर यह नगरी मिथिलाकेनामसे मशहूरथी. तीर्थंकर मल्लिनाथ-और-नमिनाथकी जन्मभूमी यही नगरी है, क्षेत्रस्पर्शना किइ, और यहांकी तवारिख अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ, सीतामढी टेशनसें वापिस उसीरास्ते मुकामा-जकशन आये, और रैलमे सवारहोकर-आसनसोल-चक्रधरपुर-बिलासपुर-रायपुर-और-नागपुरटेशन होते आकोला टेशनपर उतरे, और वहासे तीर्थ अतरिक्षजीकी जियारतको गये, जोकि-(२०) कोशके फासलेपर वाके है, जियारत किइ, और वहाकी तवारिख अपनी नोटबुकमे दर्जकिइ, अतरिक्षजीसे रवाना-

होकर वालापुर गये. और गर्मीयोंके दिनोमें वहांपर कयामकिया, आषाढसुदी पंचमीकेरौज वालापुरसें रवानाहोकर आकोला आये, और संवत् (१९६०) की वारीश वहांपर गुजारी. व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे,-किताव जैनसंस्कारविधि-यहां-वनाइ. औरवास्ते छपनेको भेजी, अंगविद्या-और-प्रवचनसारोद्धार यहां वाचे, संगीतकलाका इल्म यहांभी हासिल करतेरहे, इनदिनोमेंजैन एशोशिएशन-ऑफ-इंडिया-ओफिस वंवइसे महाराजके नामपर एक-खत-आया, उसमे लिखाथाकि-मुल्क-अमरिकासे एक विद्वान् लिखतहै-"Jainsm" आर्टिकल करीव दोहजार शब्दोमें-और-"Life of Tirthanker Mahavir" आर्टिकल करीव एक हजार शब्दोमें लिखभेजे-तो-हम-अपनी वनाइहुइ कितावमें-उसकों जैनमजहवके वयानमें दर्ज करेगे, इसलिये आप दोंनो आर्टिकल आठ रौजमें लिखभेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो-आर्टिकल आठरौजमें तयारकरके जैन-एशोशिएशन ओफ-इंडिया ओफिस ववइको यहांसे भेजे.

[संवत् १९६१ का-चौमासा-शहर-जवलपुर,]

वादवरीशके आकोलेसे रवाना होकर वुरानपुर गये, और करीव दो-महिनेके-वहांपर कयाम किया, वहासे खंडवाला लाइन होकर तीर्थ मांडव गढकी जियारतके लिये महुकी-छावनी गये, और वहांसे खुश्की रास्ते (१८) कोसके फासलेपर मुकाम-मांडवगढ जाकर जियारतकिइ और तवारिख वहांकी अपनी नोटवुकमें दर्जकीइ मांडवगढसें वापिस आकर महुकी छावनीसे रैलमें सवार होकर रतलाम-गोधरा-लाइनके रास्ते अहमदावाद टेसन होतेहुवे आवुरोड टेसन उतरे, आवु पहाडपर जाकर वहाकी जियारत किइ,

और फिर आबुरोडसे रैलमें सवार होकर रोहिडा टेशनपर उतरे, वहांसे खुश्की रास्ते तीर्थ बंभणवाड जाकर जियारत किइ, और वापिस रोहिडाटेशन आकर नाणा टेशन उतरे, वहांकी जियारत किइ, नाणाटेशनसे सवार होकर रानीटेशन गये, और रानकपुर वगेरा पंचतीर्थीकी जियारत किइ, और वहांकी तवारिख अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ, फिर रानीटेशन वापिस आये और रैलमें सवार होकर-अजमेर-लाइनसे चितोडगढ टेशन होते उदयपुर गये, और तीर्थकेशरीयाजीकी जियारतके लिये रवाना हुवे, जो (१८) कोसके फासलेपर वाकेहै, वहाकी जियारत किइ, और शिलालेखोंकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ, तीर्थ केशरीयाजी से रवाना होकर चेतशुदी छठके रोज वापिस उदयपुर आये और बहार वगीचेमे कयाम किया, उदयपुरके श्रावकोंकों मालूमहुवाकि-महाराज यहां तशरीफ लायेह, सवलोग वहा आये. मूर्त्ति पूजापर व्याख्यान दिया, और करीव आठरोज वगीचेमें ठेहरे, रवाना होतेवख्त कवि सूरजमलजीने-गुरुभक्तिपर कइदोहे-और-शेयर वनाकर सुनाये,—

(दोहा.)

चैतसुदी छठके दिवस-आये मुनिवर आप,
दर्शन दे कृतार्थ किये-गये जन्मके पाप, १
वैशाखवद एकम सुदिन-करके आप विचार,
विहार करनेकी मुनिजी-लिनी चितमे धार, २
श्रावकोंकी विनती-करजो आप कुवुल,
हिरदेमेंसे आप मुनिवर-जाजो मत अवभुल, ३
मुनिमहाराज शांतिविजयजी-आपगुनोंकी खान,
चोमासो किजो अठे-दर्शन दिजो आन, ४

सुरजमल्लकी विनयभक्ति-मुनिवर वारंवार,
हाथजोडकर मानजो-करजो आप उपकार, ५

(शेयर,-)

विहार करनेकी मुनिजी-आपकी सुनके खबर.
वहोत दिल मसमसाता-और होताहै फिकर, १
कब सुनेगे ज्ञानचर्चा-आपके मुखसें जिकर,
श्रावकोंकी विनतिहै-चरनमें मस्तकको धर. २
प्रयाण किजो उदयपुरमें-दयाकी करके नजर,
वो दिन उदय कब आयगा-दर्शन दियोगे आनकर, ३

उदयपुरसे चितोडगढ-अजमेर-फुलेरा होते मेरटारोड टेशन उतरे, तीर्थ-फलोदी-पार्श्वनाथकी जियारत किइ, और वहांकी तवारिख अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ, मेरटारोडसे रेलमें सवार होकर फुलेरा आये, और रेवाडी लाइनमें देहलीटेशन होते मेरटटेशन गये, वहांसे खुश्की रास्ते (१८) कोशके फासलेपर जो-तीर्थ-हस्तिनापुरहै-जियारतको गये, तीर्थंकर शांतिनाथ-कुंथुनाथ-और-अरनाथ महाराजकी जन्मभूमि यही शहरहै, जियारत किइ-और-वहांकी तवारिख अपनी नोटबुकमें दर्ज किइ, हस्तिनापुरसे वापिस मेरट आये और गाजियावाद होते सिकंदरावाद गये. आठरौज वहांपर कयाम किया. व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, सिकंदरवादसे रेलमें सवार होकर-अलीगढ-आगरा-गवालीयर लशकर-जहांसी भोपाल-खंडवा होते-बुरानपुर आये, यहांपर करीब एकमहिनेके कयाम किया. किताबजैनसस्कारविधि छपकर यहा आगइ, और जिन जिन महाशयोने मगवाइथी भेजीगइ, इसमें जन्मसंस्कारसे लेकर सोलह सस्कारोंका बयान दर्जहै, इनदिनोंमें जबलपुरके

श्रावकोका खत आयाकि-आप-वराये महरबानी हमारे शहरमें तशरीफ लावे, और हमलोगोंको तालीम धर्मकी देवे. महाराजने उनकी अर्ज मंजुर किइ और बुरानपुरसे रवाना होकर जेठदुसरे वदी तीजके रौज व-सवारीरेल जबलपुर पहुचे, और सवत् (१९६१) की बारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे, कइ मजहबके लोग-वास्ते मजहबी वहेसकों आते जातेथे, और धर्मचर्चाका फायदा हासिल करतेथे.-उपमितिभव प्रपच-और-मेघमहोदधि-ग्रंथ-यहांपर वाचे,

(सवत् १९६२ का-चौमासा-शहर धुलिया,)

बादबारीशके जवलपुरसें रवानाहोकर-कटनी-विलासपुर-चक्रधरपुर-और-आसनसोल होते वर्द्धमान टेशनको गये, कल्पसूत्रमें-जो-अस्थिक ग्रामका जिक्रदर्ज है-जहांकि-तीर्थकर महावीरस्वामीने-अवल चौमासा कियाथा-वो यही वर्द्धमान-(अस्थिकग्राम) हें, आजकल यहां कोइ जैनश्वेतांबर मदिर नही, सिर्फ ! जियारतका मुकामहे, वहांकी क्षेत्रस्पर्शनाकरके आसनसोल आये, और बंगाल-नागपुर रैलमें--भुसावल जकशनहोते पाचोरा टेशन उतरे, मोगमशर्मा वहा गुजारी. व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे. पाचोरेसे रवानाहोकर बालापुर गये. और करीव तीन महिनेके वहां ठहरे, व्याख्यानमें आवश्यकसूत्रवृत्ति-और-समरादित्यचरित वाचा, आषाढमहिनेमें बालापुरसें रवानाहोकर शहर-धुलिया आये और संवत् (१९६२) की बारीश वहापर गुजारी, व्याख्यान हमेशां करतेथ, कितान अजायव-हालात-जैन-और-आर्यसमाज, यहां वनाइ. अनेकातजयपताका-योगशास्त्र-अध्यात्मबिंदु-योगबिंदु-और-योगदृष्टिसमुच्चयग्रंथ यहां वाचे, बादबारीशके मोगमशर्माभी यहां गुजारी, इनदिनोमें इरादा कियाकि-एक

मरतवा-शिखरजीकी-जियारत फिर कर, मामुलीकारोवार तो ऐसेही होतेरहेगे, जोकुछ काम धर्मका करलिया वही वहेत्तरहोगा,

[संवत् १९६३ का-चौमासा-शहर पुना,]

संवत् (१९६३) की-चैतसुदी एकमकेरौज शहर धुलियेसे रवानाहोकर जव पाचोराटेशन पहुचे-तो-वहांके श्रावकोने दो-रोजकेलिये-ठहरालिये, पाचोरेसे भुसावलहोते जव बुरानपुर पहुचे टेशनपर श्रावकलोग आयेहुवेथे शहरमें लेगये, और पनराह रौज-केलिये वहां कयामकरवाया, वहांसे रवानाहोकर खंडवा-इटारसी होते जवलपुर-गये-तो वहांके श्रावकोने दोरौजकेलिये ठहराये, जवलपुरसे रवानाहोकर इलाहावाद गये. और इलाहावादसे पर-तापगढलाइनमें फैजावाद होते तीर्थ रत्नपुरीकी जियारतकों गये, वहांकी जियारतकरके वापिस फैजावाद आये, और फैजावादसें रैलमें सवारहोकर बनारस पहुचे, टेशनपर श्रावकलोग आयेहुवेथे शहरमें लेगये, वहांपर करीव (२०) रौजके कयामकिया, वैशाख सुदी तीजकेरौज-यशोविजयजी-जैनश्वेतांवर-पाठशालाके विद्या-र्थियोंका इम्तिहानलिया, एकरौज-तीर्थ-सिंहपुरी-और चंद्रावतीकी जियारत किइ, एक रौज सारनाथके पास-जो-वौधस्तूप है देखने गये, असलमें यह वौधलोगोका देहगोप (यानी) पूजाकी जगहहै, बनारससें रवानाहोकर शहर-पटना गये, वहांकी जियारत किइ, वहांसे सुवेविहार-और-सुवेविहारसे-पावापुरी-कुंडलपुर-राजगृही और-गुणशिलवनउद्यान-वगेरा पंचतीर्थीकी जियारतकिइ, वहांसे नवादाटेशन जाकर रैलमे सवार हुवे और मधुपुर होते गिरिडी टेशन उतरे, गिरिडीसे शिखरजीकी जियारतकों गये, और चोथी मरतवा जियारतकिइ, शिखरजीसें रवानाहोकर गिरिडी आये,

और रैलमें सवारहोकर–मधुपुर–पटना–मोगलसराय जंकशन होते मिर्जापुर गये, वहाके जैनमदिरोंकी जियारत किइ, दुसरेरौज मिर्जापुरसे रवानाहोकर–इलाहाबाद––कटनी–बिलासपुर––नागपुरके टेशनोपर होते पारसटेशन उतरे, और बालापुर–जो–तीनकोसके फासलेपर खुश्कीरास्तेवाके है गये, करीब पनरा रौज वहा ठहरें, आषाढसुदीमें बालापुरसे रवानाहोकर–भुसावल–पाचोरा–मनमाड और–कल्यानकेरास्ते शहर–पुना–गये, और सवत् (१९६३) की वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे, और सुननेवाले कसरतसें जमाहोतेथे, आसोजके महिनेमें जब–प्लेगबीमारी जोरशोरसे चलने लगी,–और लोग इधरउधर बहारगांव चलेगये, महाराजने मुताबिक जैनशास्त्रके देखाकि–अगर किसी किसमकी–आफत–आजावे–तो––चौमासेमेंभी–मुनि––उसजगहको छोडदेवे, कल्पसूत्रकी मिशालहै कि–

(अनुष्टुप्–वृत्तम्)

☞ अशिवे भोजनाप्राप्तौ–राजरोग पराभवे,
चातुर्मासिक मध्येपि–विहर्तुं कल्पतेन्यतः ? १

बीमारीका सववहो–भिक्षा–न–मिलतीहो–या–राज्यकी तर्फसें कुछ पराभवहो–तो–वारीशके दिनोंमेंभी–मूनि–एक जगहसे दुसरी जगह चलेजाय, महाराज शहर पुनासे रवाना होकर–लुनीगांव–गये, जो पांचकोसके फासलेपर वाकेहै, करीब एक महिनेके वहां कयाम किया, और जब बीमारी प्लेग–कमहुइ–शहर पुनामें वापिस आये. सूरिमंत्रकल्प–वर्द्धमान विद्याकल्प–भक्तामरकल्प–और–भक्तस्तवकल्प वगेरा शास्त्र इनदिनोंमें वाचे, और मोशमशर्मा शहर

पुनेमें गुजारी, माघवदीमें महाराजकी चाची-शहर भावनगरसे-वास्ते दर्शनोको शहर पुना आये, कुछदिन महाराजके मुखसे शास्त्र सुना, और-तारीफ करने लगेकि--हमारे--खानदानमें--ऐसापुत्र पैदाहुवा जिसने परमेश्वरके नामपर अपनी जिंदगी जायाकिइ,पुत्र-हो-तो-ऐसाहो, आजतक जैसे-तुम-अपने धर्मपर पावंदरहे आइं-देभी रहना, एक मरतवा अपने वतनकोंभी चलना. और सव कुटुंबके लोगोकों तालीम धर्मकी देना, तुम थोडे अर्सेसे-जो-रेलमें वेठतेहो-इससे तुमको-कोइ-नहीमानेगे ऐसा खयाल मतकरना, तुमकों-तो-सवमानेंगे, महाराजने कहा ! नही ! ! ऐसा खयाल नहीहै, वल्कि ! मुजे मुल्क गुजरातके कइ श्रावकोंने अर्ज गुजारीश किइहैकि-आप-इधरके मुल्कमें पधारे, मगर मुल्क गुजरातमें-मुनि महाराज अकसर ज्यादह सफर करतेहै, और इधरके मुल्कमें-कम-आते जातेहै इसलिये इधरके मुल्कमें सफर करना ज्यादह फायदे मंदहै, और जव ज्ञानिदृष्ट भावहोगा उधरभी आना वन सकेगा, अठारां रौज महाराजकी चाची-शहर पुनेमें रहे और फिर अपने वतनकों गये,

[संवत् १९६४ का चौमासा शहर आकोला.]

माघसुदी (१०) मीके रौज महाराज पुनेसे रवाना होकर-कल्यान-मनमाड-होतेहुवे शहर धुलियाकों गये, और करीव देढ-महिना वहांपर कयाम किया, किताव त्रिस्तुति परामर्श छपकर यहांपर आगइ और जिन जिन महाशयोने मगवाइथी, भेजीगइ, इस अर्सेमें शहर-मुलतान-मुल्क-पंजावके जैनश्वेतांवर श्रावकोंने वजरीये-खतके अर्जकिइकि आपहमारे शहरमें कदमरंजा फरमावे और हमकों तालीम धर्मकी देवे,महाराजने उनकी अर्जकुबुल किइ, और सवत(१९६४)के चैतसुदी एकमके रौज धुलियासे रवानाहोकर व-मुकाम-पाचोरा गये. और वहांपर करीव एकमहिना कयामकिया, पाचोरेसे वैशाखसुदी-

तीजकेरौज रवानाहोकर-देहलीके रास्ते-अंबाला-लुधियाना-जालधर-अमृतसर-लाहोर-होतेहुवे-गुजरानवाल-टेशनगये टेशन-से करीब आधमीलके फासलेपर-जो-महाराजके गुरुजीकी चरनपादुका-और-छत्री बनीहुइहै-यहापर जाकर चरनपादुकाके सामने सूरिमंत्र-और-वर्द्धमानविद्या पढी, और सामको टेशनपर वापिसआये, गुजरानवालके श्रावकलोगोने सुनाकि-महाराज-शांतिविजयजीसाहब यहापरतशरीफ लायेहै, उनकी मुलाकातको जानाचाहिये, कितनेक श्रावकलोग शामकेछबजे टेशनपर वास्ते मुलाकातको आये, और कहनेलगे आप शहरमें चलिये, महाराजने कहा-मे-इसवख्त-सफरमेंहु-और-शहर मुलतान जानेकेलिये इधर आयाहुं, इसलिये फिरकभी देखाजायगा, शहरगुजरानवाल टे-शनसें रैलमे सवारहोकर-लाहोर-राविंड-और-खानावलजकशन होते दुसरेरौज शहर-मुलतान-पहुचे, टेशनपर श्रावकलोग वास्ते पेशवाइको आयेथे शहरमें लेगये, असलमे मुलतानके श्रावकोने महाराजको इसलिये बुलायेथेकि-श्वेतांबर-दिगबर श्रावकोंकी आपसमे धर्मचर्चाकेबारेमें हमेशां बहेसहुवा करतीथी. महाराजने वहाजाकर जाहिरकियाकि-जिसकिसी श्रावकको धर्मचर्चाके बा-रेमें-जो-कुछ पुछनाहो-छपवाकर पुछे, जवाबभी उसका छपवा-कर दियाजायगा, ताकि-कोइकिसमकी रदबदल-न-होसके, महा-राजने करीब दोमाहिनेके शहरमुलतानमें कयामकिया. किसी श्रा-वकने कोइ सवाल धर्मके बारेमें छपवाकर नही पुछे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा करतेथे, इनदिनोमें पनरानजीरे लिखकर महा-राजने मुलतानके जैनश्वेतांबर मंदिरकी दिवारपर आइनेमें जडवा-कर लगवादिइ, और श्वेतांबर श्रावकोंसें यह बात कहीकि-अगर कोइ तुम लोगोसे जैनश्वेताम्बर मजहबके बारेमे कुछ पुछे-तो इसको

देखकर जवाबदियाकरो, मुलतानके जैनश्वेतांबर श्रावकोंने महाराजसे-वास्ते चौमासेके-वहुत आर्जीजीकिइ, मगर महाराजने मुल्क दखनके श्रावकोंकी अर्ज-पेस्तर-कुबुल करलिइथी-इसलिये-आषाढवदी तेरसकेरोज शहर मुलतानसे रवानाहोकर-लाहोर-आये, और खयालकियाकि-इतनी दुर आयेहै-तो-पेशावरभी होतेचले जैनतीर्थ गाइडकेलिये-जो-कोइ पुराने लेख मिलेगें अपनी नोटबुकमें दर्जभी करतेचलेगे, गरजकि-महाराज-लाहोरसे पेशावरगये, और वहांसे लोटकर लालामुसा जंकशन होते तीर्थ-भेराकी-जियारतको गये, वहांकी तवारिख अपनी नोटबुकमें लिखलिइ, वीतभयपतननगर इसी भेराका नामहै, वहांसे लाहोरआये, और लाहोरसे-देहली-आगरा-भुसावल-मनमाड--कल्यान होते पुना टेशन उतरे, और वहांसे खुश्कीरास्ते-जुनेर-जानेकेलिये रवानाहुवे रास्तेमे वारीश खूव होनेकी वजहसे नदी-नाले-चढगयेथे मुकाम मजकुरको-न-जासके, वापिस लोटकर खिडकी टेशनसे रैलमें सवारहुवे, ओर कल्पान-भुसावलहोते-आकोला गये, और संवत् (१९६४) की वारीश वहांपर गुजारी. व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे, पर्यूषणपर्व-उमदा तौरसे खतमहुवे, इनदिनोंमे ललितविस्तरा-द्वात्रिंशका सिद्धसेनदिवाकर-अष्टक हरिभद्रसूरि-अंगुलसित्तरी-कालसप्तति--और-युगप्रधानयंत्र वगेरा ग्रथ वांचे, आसोजमहिनेकी शुरुआतमें जब प्लेगवीमारी जोरशोरसे चलनेलगी और श्रावकलोग वहारगाव चलेगये, महाराज-कस्बे बालापुरको तशरीफ लेगये, और आधीवारीश वहापर खतमकिइ, इनदिनोंमे-कवि-सुरजमलजी-शहर-उदयपुर मुल्कमेवाडसें महाराजके दर्शनोंको बालापुर आये, और गुरुभक्तिपर-कवित्त-दोहे वगेरा बनाकर सभामें सुनाये,

☞ (कवित्त,-]

विद्याकेसागर और न्यायके रत्नआप, मुनिश्रीशांतिविजय तपधारीहै,
मायासेविरक्त प्रभुनामके सयुक्त, दिनकरसो प्रकाशसदातिमिरनाशकारीहै
जिनमतको दिपावे सूत्रसारकोबतावे,दयाकेनिधान मुनिज्ञानकेभंडारीहै,
ऐसेहैमुनिराजभविजनकेसारेकाज, जिनकेआचारीजिनकोंवदनाहमारीहै

☞ (दोहा,)

भारतवर्षके वीचमे,-धन्यहै ये अनगार,
सुरजमल्लभी वंदना,-करता वारवार, १,

☞ [गुरुभक्ति पर पद,-]

(रागिनी-भैरवी,)

मुनिजी ! जिनमतमे परवीन,
न्यायरत्न अरू विद्यासागर,-उपमा जगने दीन, मुनिजी, १
पचमहाव्रत धारक प्रभुके,-चरन सरनमें लीन, मुनिजी, २
शांतिविजयजी साधु संवेगी,-मोहरिपु कियाछीन, मुनिजी ३
परमक्रिया उपकार महामुनि,-तीनतत्वमें लीन, मुनिजी, ४
वारवारहै वदना मेरी,-जानतहो गुन तीन, मुनिजी, ५

इनदिनोंमें द्वादशारनयचक्र-धर्मबिंदु-ज्ञानबिंदु-और-पार्श्वनाथचरित ग्रंथ महाराजने वाचे, और वारीश खतम किए.-

[संवत् १९६५ का-चौमासा-शहर दख्खन-हैदराबाद.]

वादवारीशके पोषवदी दुजकेरोज वालापुरसे ओशियानगरीकी जियारतकों जानेका इरादाकिया और पारसटेशनसे रेलमेंसवार होकर-भुसावल-खडवा-अजमेर-फुलेरा-और-मेरटारोड होतेहुवे जोधपुरटेशनपर उतरे, मुकाम जोधपुरसे (१८) कोसके फासले-

पर-जो-ओशियानगरीवाकेहै गये, जियारतकिइ, और वहांके शिलालेखोकी नकल अपनी नोटबुकमे दर्जकिइ, जमाने पेस्तरमें यह-उपकेशनगरीके नामसे मशहूरथी, ओशियानगरीसे रवानाहोकर वापिस जोधपुर आये, और रैलमें सवारहोकर-पाली-मारवाडजंकशन होते आबुरोडटेशन उतरे, वहांसे खुश्कीरास्ते तीर्थ-कुंभारीयाजीकी-जियारतकों गये, जो (१२) कोशके फासलेपर वाकेहै, पेस्तर इसकानाम आरासणनगरथा, वहांके आलीशानमंदिरोंकी जियारतकिइ, और शिलालेखोकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जकिइ, तीर्थ-कुंभारियासें-रवानाहोकर आबुरोडटेशन आये, और रैलमेंसवार होकर-अजमेर-खंडवा-भुसावल होते माघसुदी दुजकेरौज वालापुरगये, श्रावकोने अर्जकिइकि-आप-हमकों सूत्र अनुयोगद्वार-सुनावे वडीमहरवानी होगी, महाराजने अनुयोगद्वार सूत्र-व्याख्यानमें सुनाया, इनदिनोमें Description of Parasnath Hills,-"बयान-पारसनाथ-पहाड किताव"-वनाइ, जो छपकर जाहिरहोचुकी है, और हिंदके वडेवडे शहरोंमे श्रावकोके पास पहुचचुकी है, दर-बयान-सवत् (१९६५)-की-सालका ब-जरीये नजुमके इसीमे जाहिर कियाथा, नजुम सचाहै मगर शर्तयहहैकि-उसकों जाननेवाला चतरहोनाचाहिये, नजुमशास्त्रकों अछीतौरसे देखागयातो इम्तिहानके मेदानमे सचापाया, तीर्थंकर गणधरोकी-यह-कमाल महेरवानी समझोकि-नजुमकों-वे-शास्त्रोंमें बयानफरमा गये, खयालकरोकि-नजुम-अगरसचा-न-होतातो नजुमीलोग-जमीनपर बेठकर आस्मानके सितारोका हाल बयान कैसेकरसकते? आफताव-और-चांदकों-कव-और-किसरौज ग्रहणलगेगा कैसेवतलासकते? तीर्थंकर-गणधर-और-पूर्वाचार्य आलादर्जेके नजुमीहुवे, चंद्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति-भद्रबाहुसंहिता-ज्योति-

करंडक-आरंभसिद्धि-जन्मांभोधि-यत्रराज--त्रैलोक्यप्रकाश-मानसागरीपद्धति-मेघमाला-गणिविज्जापयन्ना--मेघमहोदधि--भुवनप्रदीप-और-नारचद्र--ये-जैनमजहबके नजुमग्रंथहै, जैमनिसूत्र-पारासरसूत्र-अगस्तिसूत्र-वाराहसहिता-लंपाक-नीलकंठ-टोडरानंद-वृहद्जातक-पारिजातरत्नाकर-सूर्यसिद्धांत--कमलाकर-और आर्यभट्टसिद्धांत-वगेरा दुसरेमजहबके नजुमग्रंथहै, जैनमजहबमें द्वादशारचक्रमय-कालचक्र-मानाजाताहै, और वैदिकमजहबमें सत्य-द्वापर-त्रैता-और-कलियुग यहचारयुग मानेजाते है, चांदसूर्य ग्रह-किसीका भलाबुरा नहीकरते, जोकुछ करनेवाले है-अपने अपने-पूर्वसंचित कर्म है, चांदसूर्य वगेराग्रह-उसके सूचक और द्योतकहै, ऐसाजानना,

ज्येष्टवदीमें वालापुरसे रवाना होकर महाराज-भुसावल-मनमाड-औरंगावाद होते शहर जालना गये, और तीनहफते वहांपर कयाम किया, जालनेसे रवाना होकर पर्वणी-निझामावाद-होते हैदरावाद गये और संवत् (१९६९) की-वारीश वहांपर गुजारी व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे और सभा अछी भरतीथी, जलसा-पर्युषण पर्वका-उमदा तौरसे हुवा,-आसोज सुदी तीजके रौज मुसानदीकी तुगयानी वडी जोरसे हुइ,-(यानी)-मुसानदीमें पानीका तोफान हुवा,-मगर वदौलत देवगुरू धर्मके चार कमान तर्फ किसी किसमकी आफत नही गुजरी, जहांकि महाराज-ठहरेहुवेथे,-इनदिनोंमें हिंदके वहुतसे शहरोंसे महाराजके नाम कइ-तार-और चीठीयां इस मजमूनकी-आइकि-आपकी खेरीयतका हाल इरशाल फरमावे, महाराजने उनका जवाब लिखा कि-में-बदौलत देवगुरुधर्मके खुशहु, वादवारीशके-हैदरावादसे पोष वदी नवमीके रौज महाराज-तीर्थ-कुल्पाकजीकी जियारतको गये,

जो-करीव (५०) मीलके फासलेपर आलेर टेशनसें जायाजा
और दो-कोश-खुश्की रास्ते जानेसे मिलताहै, पोषवदी दशमीके
वहां यात्रीयोंका मेला भराथा और रथयात्राका जलसा हुवा
तीर्थ-कुल्पाकका मंदिर वहुत पुराना होगयाथा महाराजके उप
शसे उसकी मरम्मत होना शुरुहुइ, पांचरोज वहापर ठहरे, औ
वापिस हैदरावाद आये,-

(१)-महाराजको लेखलिखनेका-और-ग्रंथ वनानेका अजह
शौखहै, वरवख्त महाराजकी कलम चलती रहती है, और लिख
पढनेमें मशगुल रहतेहै. जैन-सप्ताहिक-पाक्षिक-मासिक वगेर
अखवारोंमे महाराज धर्मके वारेमें लेखदेते रहतेहै, दिगर मजह
वाले जब जैन मजहबपर दलील करतेहै-तो-उसका फौरन! जवा
देतेहै, महाराजके तमाम लेख-जोकि-जैन अखवारोंमें-छपचुकेहै-
अगर-उनको इकठेकरके छपायेजाय-तो-एकवडा ग्रंथ वनजाय,
(२) महाराज आपने हमरा सव मजहवोकी पुस्तके हमेशां रख
तेहै-ताकि-जिसमजहववालोंको जवाब देनाहो-सवुतकेशाथ दि-
दियाजावे, (३) महाराजकी व्याख्यान सभामें शोर गुल करना-
या-वातचित करना सख्त मुमानियतहै. और यहवात ठीकभीहै
कि-शोर गुलहोनेसे-सुननेवालोको शास्त्र सुननेमें खलल पडताहै
व्याख्यान सभामें-सादर-नादर-कोइ किसी किसमका शोर गुल-
करे-तो-उसको रुकसत करवा देतेहै, इससे कइ श्रावक नाराज
रहतेहै, और कहतेहै विद्वान् अछेहै मगर मिजाजके वडे सख्तहै,
मगर अकलमंद लोग तारीफ करतेहै कि-साधुहो-तो-अैसेहो, जो
गरीव--और--अमीरको एकसा समझे, (४) जैसे समवसरणमें
तीर्थंकर महाराज मालकोश-और-भीमपलासी-रागरागनीमें-तालीम
धर्मकी देतेथे-और-इंद्रदेवते-राजोंसें स्वरपुरतेथे, व-मुजव-अपनी

ताकातके महाराज व्याख्यान सभामें-जव-भावना-अधिकारका वर्नन चलताहै-भैरवी कालिंगडा वगेरा रागरागनीसे व्याख्यान वांचते है और कभीकभी हारमोनियम वजानेवाले शख्श व्याख्यान सभामें बेठकर स्वर पुरतेहै, (५) महाराज जहा जहां तशरीफ लेजातेहै, वहांपर श्रावकलोग मय वेंडवाजा-वगेरा-जुलु-सके पेशवाइ करके शहरमे लेजातेहै, कही मौका-अैसाभी-होजाताहै कि-वाजे वगेराका इतजाम नहीहो-वहा-श्रावक लोग जुलुस-के शाथ पेशवाइ नही करसकते, महाराजकों इनवातोंसें-न-रजहै न-खुशीहै, महाराज-न-किसीकों फरमातेहै कि-तुम-मेरेलिये अैसाकरो, जिसकी जैसी मरजीहो-वैसा-करतेहै, (६) महाराजके लेखमें जैसाज्ञानका असरहै, वैसा व्याख्यानमेंभी भारीअसर है, सुननेवाले तारीफ करतेहै कि-ज्ञानकी-खूबझडी बरसातेहै, देवद्रव्यके-तीर्थोके-और-ज्ञानपुस्तकोंके बारेमे लेख लिखकर श्रावकोंकों होशियार करना इन्हीका साहसहै, साफसाफ वातकहनेमें किसीकी परवाह नही करते, महाराजका एतकात धर्मपर पुख्ता-है, (७) महाराज मुल्कोंकी सफरकरना ज्यादह पसंद करतेहै, गुजरात-मारवाड-पंजाव-राजपुताना--वंगाल-मालवा-खानदेश--वराड-और-मुल्क दखनमें सफर करचुके है, मुनिजनोकी फर्ज है कि-मुल्कोंकी सफर करके धर्मको तरक्की देना,—

☞ व-कल्म-भगुभाइ-फतेचंद-कारभारी,

एडीटर-जैन,-बोंबे,—

☞ [गुरुभक्तिपर-लावनी,]

(सवाने-उमरी)

विद्यासागर न्यायरत्न श्री शांतिविजयजी-वडेअणगार,
संयमलिनो आपने छोडयो कुटुंवसव धनघरवार,
भावनगर गुजरातके मांही-शहरवडा भारी उत्तम,
धन्यहै धरणी वहांकी जहां मुनिजी लियो है जनम,
धन्य पिता मानकचंदजीको-वो चलते जिनमतको धरम,
थे सतवादी जिनके पुत्र कहलाये अनुपम,
धन्यवाद रलियातकवरको-माता वुद्धिकी थी अगम,
संस्कारसे आप आजन्मे उदयभये निजपूरवकरम,
महाजन विशाओशवालथे-जूठवचन नही एक लगार,
संयमलीनो आपने छोडयों-कुटुंवसवधनघरवार, विद्या, १
श्रीरी आत्मारामहाराज-जिनोनेलिये आपको है पहिचान,
दीक्षालिनी साल उन्नीस और छत्तीसममान,
वैशाखशुरु दसमी गुरुवारे-हुवेसंयमी चतुरसुजान,
मलेरकोट पांचालमुल्कमें जानते है सव निखिलजहान,
धर्मशास्त्रकों पढे मुनिश्वर-व्याकरणकोशको भारीज्ञान,
सर्वशास्त्रकों आपने पृथक् पृथक् लिने सवजान,
पंजाव पूरव मारवाड-गुजरात मालवाकों दियोतार,
संयमलीनो आपने छोडयो कुटुंव सवधनघरवार, विद्या, २
दखनमेंगये आप मुनिजी-जिनमत खूवदिपायाहै,
देशदेशमें आपका सुजश वहोतसा छायाहै,
मानवधर्मसंहिता एकपुस्तक-वहोतखूव फरमायाहै,

प्रश्नपांचको खंडनकरके मजहव रिसाला वनायाहै,
तीनथुइका परामर्श एक-तीनथुइपें रचायाहै,
विधि जैनसंस्कार वनाकर तनपरयश उपजायाहै,
गृहस्थापनमें नाम हठीसिंह-जन्मलग्नमें विदितविचार,
संयमलीनो आपने छोडयो कुटुंव सवधन घरवार, विद्या, ३,
उन्नीसवर्षकी उमरआपकी-जवसें यह संयम धार्यो,
धन्यमुनिजी आपने कामक्रोध रिपुकों मार्यो,
सकल कामना तजी जगतकी-लोभपाप पावकजार्यो,
धन्यहो स्वामीआपने निजआतम कारजसार्यो,
विद्यासागर न्यायरत्नमुनि-धर्मधुरधर पदधार्यो,
देशदेश और नगरगाममें सुजश आपने विस्तार्यो,
सुरजमल्लकी हाथजोडकर-मुनिजीवंदना वारवार,
संयमलीनो आपने छोड्यो कुटुंव सवधन घरवार, विद्या, ४
(इति गुरुभक्तिपर लावनी.)

[लावनी-अष्टपदी.-]

[जगतमें नवपदजयकारी-सेवतां पापटले भारी,]

(इसचालपर-)

मुनिश्री शांतिविजयजी आप-कर्मके मेटदिये संताप,
मुखसंसारसें मुखमोडयो-कुटुवसें सव नातो तोडयो,
ध्यान निज जिनप्रभुसें जोडयो-लोभ और मोहकाम छोडयो,
(दोहा.) पंचमहाव्रतधारके-करतेहो उपकार,
छकायाके जीवबचाते-मुनिजी वारवार,
भुलकर नहीकरते संताप-कर्मके मेटदिये सव पाप, मुनिश्री, १

कामना छोडी सारीको-तरसना मारी भारीको,-
धन्य ऐसे आचारीको-नमनहै दृढव्रतधारीको,
(दोहा.) पुदगल परिचय छोडियो-भव्यजीवनके काज,
विचरतहो सवजगतमें स्वामी-धर्मध्यानके जहाज,
अनुकंपा रही दिलमें व्याप-कर्मके मेटदिये संताप, मुनिश्री, २
दोपसव कर्मनको टार्यो-गरव तनमनसे सव गार्यो,
धर्म जिनवरकों विसतार्यो-अन्यमत चितमें नही धार्यो,
(दोहा.) मिथ्यामतकों खंडन किनो-जिनमतमंडन कीन,
श्रीजिनप्रभुके चरनसरनमें-रहतेहै लयलीन,
दुष्टजन गये आपसें कांप-कर्मके मेटदिये संताप, मुनिश्री, ३
इंद्रियां पांचोकों मारी-आपने तजे कनक नारी,
धर्मके ग्रंथ रचे भारी-वचन सव माने संसारी,
(दोहा.) कहांतलक वर्ननकरुं-मुनिजी परमदयाल,
सुरजमल्लकी हाथजोडकर-वंदना ल्यो प्रतिपाल,
प्रभुका नित उठकरते जाप-कर्मके मेटदिये संताप. मुनिश्री, ४

(इति-अष्टपदी लावनी समाप्त.)



(गहूली पहली)

(जगतगुरु जिनवर जयकारी,) इस चालपर,-

श्रोतारे सुनो गुरुगुणना रागी-जानोरे तुम भाग्यदशा जागी,
श्रोतारे सुनो गुणना रागी,
जंबुमांहि भरतभलूं सुनिये-देशगुर्जर राजनगर गणिये,
शोभारे तेह शहरतणी सुनिये-श्रोतारे, १
शोभे जिनमंदिर जयकारी-के-शत उपर अठ निरधारी,
नमेरे जहां नितनित नरनारी-श्रोतारे, २
करमदल कापवा बलवंता-साधु जिनशासनमें रमता,
एतोरे पांचो इंद्रियने दमता-श्रोतारे, ३
आव्या गुरु देशविदेश फिरी-भूमी राजनगरनी पवित्रकरी,
श्रोतारे मन शसय दूर हरी-श्रोतारे, ४
संवत् ओगणीस चालीस विषे-गुरु गिरुवा एकविस शिष्ये,
रही राजनगरमें कर्म पीसे-श्रोतारे, ५
तृष्णा तरुणीथी मन तांणी-विरतिरमणी करी पटराणी,
जेह उभयलोकमा गुणखाणी-श्रोतारे, ६
विवेकने मंत्रीपद ताजा-सवेगकुवर किया युवराजा,
सवर रहे हाजर दरवाजा-श्रोतारे, ७
आर्जवपटहस्ती महाभारी-विनयरूप घोडा सिणगारी,
मुनि आतमराज करे भारी-श्रोतारे, ८
रथ संयमशिलतणा भरिया-सुभट शमदमथी अलकरीया,
मुनि समतारसना दरिया-श्रोतारे, ९
के समकितमहेल मनोहारी-सतोपसिंहासन गुणकारी,

वेठारे जहां मुनिमुद्रा धारी–श्रोतारे, १
चामर जहा धर्मशुकल करता–किरतिजशछत्र जहां फिरता,
कर्यारे जेणे मोहारिपु डरता–श्रोतारे, ११
अलिकद्रव्यराज कर्युं अलगुं–भलुंरे भावराजमां मन वलगुं,
दुरितवन शिघ्र जेथी सलगुं, १२
आतमरुप लक्ष्मी रुडी लेवा–सदा करे शांतिविजय सेवा,
मीलेरे जेथी मुक्तितणा मेवा,

(गहूली दूसरी,)

(भवी तुमे सुणजोरे–भगवतीसूत्रनी वाणी,) इस चालपर
भवीतुम सुणजोरे–गुरुमुखमधुरी वाणी,
दिलमां धरजोरे–समतारसगुणखाणी,
पंजाबदेशमां जन्मलिया गुरु–बालपणे व्रत लीधा,
व्याकरणालंकार भणीने–दुर्मत दुरे किधा, भवीतुम. १
नामसमानगुणे शोभंता–सुमतिगुप्तिना धारी,
आतमनिजपद ध्यांनमां लिना–भिना जिनगुणक्यारी, भवीतुम. २
आगम अनुसारी किरियामा–अप्रमत गुरुराया,
तृष्णातरुणीथी मन तांणी–संयम तान लगाया, भवीतुम. ३
गांमनगरपुर देसविदेसे–विचरंता व्रतधारी,
बहुजनने प्रतिबोध दइने–दुरमति दुर निवारी, भवीतुम. ४
शंसयशत्रु दुर निवारी–भयथी निर्भय कीधा,
खटमततत्व स्वरुप बतावी–लोचन अमने दीधा, भवीतुम. ५
कुमतवादलां दुर निवारी–कीधो हम सुपसाय,
जलहलदिवडा जिनवाणीना–प्रकटाया गुरुराय, भवीतुम. ६
ए उपकार तुमारो कहो गुरु–निसार्यो किम जाय,

स्मर्णकरी उपकारीतणां सहु–गुणगाता दुख जाय, भवीतुम. ७
ज्ञानवधे ज्ञानीगुणगाता–ज्ञानी गुणथी भरिया,
शांतिविजयकहे गुरुगुणदरिया–केम तराये तरिया, भवीतुम. ८

(गहूली तीसरी.)

(इसमे महाराजश्री आत्मारामजीका–जीवनचरित–दर्ज है,–)
(साभलजोरे मुनि–सयमरागी, उपशमश्रेणी चढीयारे,)

ए देशी,

आजनगरमें सुगुरु पधार्या–जिनआगमना दरियारे,
ज्ञानतरंगे लहेरो लेता–ध्यानपवनथी भरियारे, आजनगरमें, १
आजकालमां जे जिनआगम–दृष्टिपथमा आवेरे,
गहनगहन तेहना जे अर्थो–प्रकटकरीने बतावेरे, आजनगरमें, २
शक्तिनही पण भक्तितणे वश–गुणगावा उलसावुरे,
कर्णामृत गुरु चरित सुणावी–आनद अधिक वढावुंरे, आज० ३
दक्षिणदिशि जंबूद्वीपमाही–यही भरतमझाररे,
उत्तरदिशि पंजाबदेस जहां–लहेरा गांव मनोहाररे. आज० ४
क्षत्रीयवंश गणेशचंदघर–जन्मलिया सुखधामरे,
रुपदेवी कुक्षी सुक्तिमां–मुक्ताफल उपमानरे, आज० ५
लघुवयमां पण लक्षणथी बहु–दीपता गुरुरायारे,
सगतथी मिली ढुढकजनने–ढुढकपंथ धरायारे, आज० ६
संवत ओगणीसे दसमाही–उज्वल कार्त्तिक मासेरे,
पंचमीने दिवसे लिये दीक्षा–जीवणराम गुरुपासेरे, आज० ७
ज्ञानभण्या वली देस फिर्या बहु–जुना शास्त्र विलोकीरे,

शंसयपडिया गुरुने पुछे–मतिमा केम उवेखीरे, आज० ८.
उत्तर न मिला जव गुरुजीने–ज्ञानकला घट जागीरे,
सुमतासखी घट आन वसी जव–ढुढपंथ दिया त्यागीरे, आ० ९
धर्मशिरोमणि देसमनोहर–गूर्जरभूमि रसालीरे,
जहां आवी सुविहितगुरुपासे–मनशंका सहु टालीरे, आ० १०
परमकर्यो उपकार तुमे वहु–श्रीगुरु आतमरायारे,
जयवंता वर्तो आभरते–दिनदिन तेज सवायारे, आ० ११
दुषमकालसमे गुरुजी तुमे–वचनदीवडा दीधारे,
शांतिविजय कहे जेथी हमारा–विषमकाम पण सिधारे आ० १२

(गहूली चतुर्थी.)

(इसमेंभी उक्तमहाराजका जीवनचरित–शेष है.)

आजनगरमें सुगुरु पधार्या–रत्नत्रयीना धारीरे,
ज्ञान अपूरवदान दइने–जडता दूर निवारीरे, आ० १
संवत ओगणीसे वत्तीसे–राजनगर मोझाररे,
संयमलिया सुविहितगुरुपासे–सोलह शिष्य परिवाररे, आ० २
चरणकरण गुणधार अनुपम–श्रीगुरु आतमरामरे,
जिनशासन शिंगार महामुनि–तत्वरमणनां धामरे, आ० ३
नयगम भंग प्रमाण करीने–जीवादिकनुं स्वरुपरे,
ध्रुव उत्पात नाशथी गुरुने–जाण्युं निखिल अनुपरे, आ० ४
जाण्या द्रव्यगुणपर्याय–धर्माधर्म आकाशरे,
पुदगलकाल अने वली चेतन–नित्यानित्य प्रकाशरे, आ० ५
परम कर्यो उपकार तुमे गुरु–दुर्मत दुर नसायारे,
जयजयकार थयो जिनशासन–आनंद अधिक सवायारे, आ० ६

जो न होत आ वखत तुमारा-वचन दीवडा रुडारे,
तो दुषम अंधारी राते-लेत अमे मत कुडारे, आ० ७
विद्यानी वधती करवामा-जेहना विविध विचाररे,
ये गुरुना उपकार कहो किम-भूले आ संसाररे, आ० ८
देस बहु विचरो गुरुराया-क्रोडकरो शुभ कामरे,
अंतरघटमां शांतिविजय-पण राखेछे दृढहामरे, आ० ९

[गहूली-पांचवी,]

(भवीतुमे अष्टमीतिथि सेवोरे-इसचालपर.)

रहोगुरु राजनगर चोमासुरे-गुणनिधि गुण तुमारा गास्युं-रहोगुरु,
तुमे रागथी नही रगायारे-नही द्वेषरिपुथी बंधायारे,
महामोहथी नाही रगाया-रहोगुरु. १
धनमाल अने राजधानीरे-महासंकट आकर जानीरे,
तुमे छोडी दुनिया दिवानी-रहोगुरु. २
पांच इंद्री सुभटथी सुरारे-आलसविकथाथी दुरारे,
चार चोर किया चकचुरा-रहोगुरु. ३
ज्ञानदोरीथी मनकपि वांध्युरे-तीर तत्व रमणतामां साध्यु रे,
जेथी समकित अदभूत लाध्यु-रहोगुरु. ४
गुरु विद्यावेलडीये विटायारे-जेनी कल्पतरुसम कायारे,
एतो समता जलथी सिंचाया-रहोगुरु ५
तुमे शास्त्रसुधारस पिधोरे-महामोहरिपु वश किधोरे,
तुमे अनुभव प्यालो पिधो-रहोगुरु. ६
तुमे ज्ञानरतनभंडाररे-करवा हमपर उपकाररे,

थाजो नोधाराना आधार–रहोगुरु. ७
तुम आणा सदा शिर धरस्युरे–तपनियमविशेषे करस्युंरे,
कहे शांतिविजय अनुसरस्युं–रहोगुरु. ८

(गुरुभक्तिपर–पद–झीझोटीकी ठुमरी,)

विद्यासागर–न्यायरत्नश्री–शांतिविजय महाराज मुनि है, वि,
मिथ्यामतज्वर दूर करनकों–बानी अमृतरसमधुर ध्वनि है, वि, १
भविजनके हितकारक तारक–तुम कीर्त्ति विख्यात मुनिहै, वि, २
दशपुरनगरमध्य चौमासो–भाग्य भलो और शुभकरनीहै, वि, ३
नरनारी मिल चरनकमलयुग–सेवो ये गुरु ज्ञानगुनीहै, वि, ४
सोभाचंदवंदित प्रमुदितचित–मेरे तो अब आप धनीहै, वि, ५

☞(तीर्थंकर महावीरस्वामीके जन्महोनेपर,–)

(सिद्धार्थराजाकेघर खुशीकी निशानी,)

[हरिगीत छंद.]

श्रीवर्द्धमान जिनेंद्रजन्में–हर्षवाढों अतिमही,
सिद्धार्थराजाके भुवनमें–न्यात सब भेली भइ,
परिवारके सब पुरुषनारी–मुदितमन तहां आइयां,
सिद्धार्थराजा स्वतः उनकों–थाल भरभर लाइयां, १,
सब न्यात मिल भोजन करे–आनंदभर धन ते घडी,
बहु कुलवधुमिल धवलमंगल–गीतगान करे खडी,
शुभ नालियरकी गिरी केला–दाख नारंगी भली,

अंगूर जामन जामफल-दाडम अलूचा आमली, २,
लोकाट आम अनार आडु-सेंव सरदा फालसा,
केमर कसेरु नासपाती-बीह कमरस कलरसा,
नींबु खजूर अंजीर खिन्नी-सुरस पौंढा आमला,
चकतर सरीफा वोर आदिक-हरितमेवा मन रला, ३,
बादाम पिस्ते दाख खारक-वेल चारोली मली,
अखरोट खुरमा खोपरा-चिलगोजिया मूगीफली,
इत्यादि वहुविध खुश्कमेवा-अवसुनो भोजन सही,
अतिमिष्ट मोतीचूर लाडु-मगद मोदक मूगही, ४,
मोदकमनोहर सिहकेशरी-सरस नुक्ती पाकके,
तिलके सक्करके केल मोदक-आम्ररस अरु दाखके,
बर्फी जलेबी मूत्रफेणी-शकरपारा इमरती,
पेडा गिदोडा लालजामन-कलाकद भला अति ५,
खजला सुहाल खजूर मठडी-शाहूसाही रेवडी,
लौजात मोहनभोग सीरा-ल्हापसी मीठी वडी,
पूरी कचौरी दालबाटी-वेंढवी खस्ता लुची,
मांडे परोंठे दालचावल-खीरपुवा मनरुची, ६,
चीले पकोडे गुलगुले-माखन मलीदा चूरमा,
मीठी कढी अरु चर्चरी-इत्यादि भोजन सब जमा,
पापड चणेकीदाल भुजी-सेंव खटरस पापरी,
बहुविध चवीणा दही ताजी-नमक जीरासें भरी, ७,
परवाल चौले मुहजने-सागरवगेराकी फली,
मटरा करेला वाकली-कचरी कचारेकी कली,
खीरा करोंदा आल कोला-खेलरा ककडी तुरी,
मिरची हरी मेथी खरी-भिंडी नगेरा नहुहरी, ८,

नींबूके रसयुत बहुपदारथ–वडे नानादालके,
चौले चनेकी मूंगकी–पीठीके नानाचालके,
कर्पूर अगर इलायची–इत्यादि मिश्रितजल सरस,
मिश्रीमें मिश्रितकेवडा–अरु दुग्ध उपजे मनहरस, ९,
तंबोल पानइलायची–बादाममिश्रित छालिया,
केशर जवत्री जायफल–कर्पूर लवंग कथा लिया,
धर वर्क सोनेमे लपेटे–हाथ सवकेमें दिया,
चंपा चमेली जुही मेहदी–केवडा नीका लिया, १०,
गेंदा गुलाव सिगार मरवा–मदनसर शुभ मोगरा,
नानाप्रकार सुगंध ले–सन्मान वहुजनका करा,
सेले दुपट्टे रेशमी–पघडी कलावतूनकी,
जरके बनाये वस्त्र वहु–और–कोर साची उनकी, ११,
सब नारियोंकों जरी साडी–कांचली अरु औढना,
वहुमूल्य वस्त्रदिये–किया सत्कार आदर वहुघना,
सिद्धार्थनृप महावीरस्वामीके–पिता जग यश लिया,
शांतिविजय कहे विबुध पुरजन–सवनकों राजी किया, १२,

☞[-जिनाय नमः-]

[जैन-तीर्थ-गाइड,]

(उर्दूमें,)

(जैन-जियारत-गाह.)

☞[इबादत,]

(जिनगुण-स्तुति-सवैया-अष्टकौनपदाकार दुमलछंद.)

करुनाकर दिनदयालप्रभु-तुमरे पदपंकजका सरना,
सरनागतराखनहारविभु-गुनसिंधु अपारकहा बरना,
बरनागरइंद्रकरेमहिमा-मुनिध्यायभवांबुधिको तरना,
तरना भवसागर चाहतहुं-हमरायहकाज तुमे करना,

☞[बीचबयान-तारीफ-मुनिमहाराजोंकी,]

जिनके धरम्यान सुजानभये-सुखदेखत लोचनकों मनकों,
जिनके सुनवेन सुचैनबधे-परमानाकिये प्रभुता जिनकों,
जिनके पग लाग सुभागभये-बलीरूपसुपुष्ट करे तनकों,
तेनसाधु-यति-मुनिकोंप्रणमुं-गुनगायलहु धिखणाधनकों,

चाहत जीवसभी जगजीवन–देहसमान कछुनहीप्यारो
संयमवंत मुनीश्वरकों उपसर्गपडे तन नासन हारो,
त्युं चितवें हम आतमराम–अखंड अबाधत ज्ञान हमारो
देह अचेतन सो हमतो नही–सत्यचिदानंदरुप हमारो.

(रहम करना जीवोंपर,)

करना जिनशासन मूलकही–सबहि गुन आयमिले दुरके
मिल संघ बनी शिवराहचले–मगमांहि घने पुरहै सुरके,
जिनकेतक राहरमें पुरमें–शिवजे पहुचे–न–चले मुरके
सुरते पुर फेरलहे शिवकों–इसभातसु बेन सुने गुरुके,

(दोहा.)

धर्म करत संसार सुख–धर्म करत निर्वान,
धर्म पंथ साधन विना–नर तिरियंच समान,

☞(शुरुआत–किताब.)

तीर्थोंमेफिरनेसे आदमीकेइरादे पाकहोतेहै. और अशुभ कर्मोंकी निर्जराहोतीहै, आदमीका चोला पाकर जो शख्श तीर्थोंकी जियारतकों नहीजातेहै–वे–धर्मकेबडेहिस्सेसें अबतक खारिजहै ऐसा कहना कोइहर्जनही. बहुतरोजसें हमाराइरादाथाकि–जैनश्वेतांबर तीर्थोंकी कोइकिताब ऐसीतयारकरे जिसकेजरीये आमजैनश्वेतांबर फिरकेको फायदापहुचे. दुनियामें जहारीलोग जवाहिरातकों वेचते है,और सोनहार–गेहने–जेवरको–कोइ शालदुशालेकों और कोइ

ख्वासेमलमलकों-कोइवादामपीस्ते-औरकोइ इतरफुलेलकोवेचरहेहै. हम सीर्फ बत्तीसहर्फोंके मसालोंसें अपनाकामचलातेहै, शिवायबत्तीसहर्फोंके हमारेपास दूसराकुछनही. गोया! बत्तीसहर्फ हमारा एकमेगजीनहै, अगर तुम मुल्कोंकी सफर और जैनश्वेतावरतीर्थोंकी जियारतकरनाचाहतेहो-तो-एकदफे इसकिताबको पढलो, और बन पडेतो शाथरखलो.

☞[हिदायत-उल-आम.]

सफरकरना दोतरहसेंहोसक्ताहै, एकतिजारतकेलिये दूसरा तीर्थोंकीजियारतकेलिये, जोशख्श दुनियाकेधदोसे छुटकर तीर्थोंकीसफरकों जाताहै उसकी हजारहजारतारीफकरो, औरतुमभी तीर्थोंकी सफरजानेकीकोशिशकरो, जिससें तुमारी जीदगीपाकहो. जब सफरकोंजाओ इतनीबातें वहांकी जरुर नोट करलिया करो, उसमुल्कमे कौनसाशहर मशहूरहै. ? अमलदारी किसकीहै ? इल्म कैसाहै ? मशहूरचीजें कौनकौनसीहै ? आबहवा वहांकीकैसी और आदमीयोंका दिल धर्मपर कितनारजुहै ? कोइपुरानाशिलालेख दिखपडे जरुरउसकीनकल करलो, नदी-तलाब-बागबगीचे-पुरानेदेवालय-धर्मशाला-कोटकिला-बाजार और रोजगारकीतरक्कीकैसीहै, ? पतेवार उसका बयानलिखलो,-ये-सबबातें तुमकों सफरकरनेसें बखूबी मालूमहोसकेगी, कइमुल्कोंकी तासीरगर्म है, और कइयोंकी शर्द, कइमुल्कोंमें मेवेके गजलगेहै, कइयोंमें नामनिशानभी नहीं. गांवकेलोग शहरका रहना-और-शहरकेलोग गांवकारहना-नापसंद करेगें-पहाडीलोग पहाडमें और जगली जगलमें खुशहै, कौनसाशहरबडाहै और कौनसाछोटाहै ? वहांके वाशिंदे कैसेहै, ? इनबातोंकों असलीतोरसें जभी जानसकोगे जबतुम खुदसफरकों निकलोगे,

(दोहा.)

सेतसेत सबएकसे-जहां कपूर कपास.
ऐसे देश कुदेशमें-कबहु-न-किजे वास, १,
कोकिल बायस एकसम-पंडित मूरख एक,
इंद्रायन दाडिम विषय-जहां-न-नेक विवेक. २,
बासिये ऐसे देश नहि-कनक वृष्टि जो होय.
रहिये तो दुख पाइये-प्राण दिजिये खोय, ३,

कइमुल्क ऐसेहै जहां बेशुमार पहाड और नदीयां है औरकइ ऐसेहै जहां पानीकेबिदून लोगहमेशांतगहै, कइमुल्कोंकेलोग अपनी औरतोंको पर्दानसीनरखते है, औरकइ सरेबाजार शाथलेकर फिरतेहै; जोशख्श जिसमुल्कमेरहता हो उसको उसीमुल्कका रवाज अच्छामालूमदेगा, चाहे कोइ कैसाही उमदाखाना और पुशाकसामने लावे; मगर जोशख्श जिसमुल्ककाहै उसकों अपनेही मुल्कका खानपान और पुशाकउमदा मालूमदेगा.-कइमुल्कोंमें मुन्नाजवाहिरातकी खाने मौजूदहै कइयोंमें-ये-चीजे-ख्वाबमेंभी नहीदिखपडती. इसीसेकहाजाताहै विनासफर मुल्कोंकीकिये कुछभी मालूम नहीहो शकता. किसी होशियार शेयरबनानेवालोंने लिखाहै—"सफर कुंजी दौलतका है,-"

दुनियामें पैदाहोकर जितनाबनपडे धर्मकरो, औरइसकों अपनाअसली दोस्त समझो ख्वाबमेंभी इसकों मतभूलो, आदमीका चोला बारबार नहीमिलता, जब तुमारे मकानपर खुशीके नकारे बजेंगे सबलोग हाजिररहेंगे; औरजब रंज-और दिल्गिरी नियामत होगी, कोइपासतक-न-आयगा, इसीसे कहाजाताहै दुनिया मत-

लबकी गरजीहै, धनदौलत एकरौज छोडजानाहै जितनाधर्मकरोगे तुमारेशाथचलेगा, धर्मात्मा-रहमदिल-और खुशमिजाज आदमी हजारोमें एकामिलेगा. थोडीमुसाफरीकेलियेभी कितनाबदोबस्तकरतेहो. वडीमुसाफरीका कुछबदोबस्त नहीकिया इसकी क्यावजहहै ? वदौलतधर्मकी यहांचैनपाया. औरआइंदेभी इसीकी वदौलतपाओगे. दौलत वहुतमिली-औरमिलेगी लाखहांरुपये आयेगये लेकिन ! खजानेमें कुछ-न-रहा, इसकासोच मतकरो, जितनेरुपये तुमारेधर्ममें खर्चकियेगये उसीकोउमदासमझो, अपनेघरकाभेद औरदिलकाइरादा किसीकेसामने बयानमतकरो, आजकल दुनियामें जूठ-और-फरेब ज्यादह चलपडा है,

हिंदुस्थानमें इसवख्त अमलदारी अग्रेजसरकारकी-और इसमें गुलजार रजवाडेकइहै. कइवहुतवडे औरकइ छोटेछोटेभी है, हैद्राबाद दखन-वडोदा-लश्कर गवालियर-इंदोर-महीशूर-काश्मिर--कोलापुर-जोधपुर-विकानेर-जयपुर-उदयपुर--भोपाल-जामनगर-भरतपुर-भावनगर-पटियाला-झींद-नाभा--कपूरथला-वहावलपुर-फरीदकोट-शीरमौर-मलेरकोट-अलवर-रामपुर-जुनागढ वगेरा वगेरा, तुम कौनकौन मुल्ककी सफरकरना चाहतेहो ? रैल सवारीसे जाओगे-या-जहाजकेजरीये ? ब-जरीये रैलके जाना है तो-रास्तेमें कहाकहा रैलबदलेगी इसकीतलाश करलो, अगरअंग्रेजी इल्मजानतेहो-तो-टाइमटेवल किताब साथ रखलो, कौन कौनसी जगह जैनश्वेतानरतीर्थ है-और-इसजमानेमें उनके क्याक्या नाम मशहूरहै ? खानपानकी चीजें वहा मिलतीहै-या-नही. ? इनबातोंकी माहितीमिलालो, रास्तेका हाल मालूम-न-होनेपरकइतीर्थोकी जियारत रहजातीहै और घर आकर निहायतरज उठानापडताहैकि -हमको फलाफलां तीर्थोंकी जियारत-न हुइ, -अगरइसकिताबको

शाथरखकर हरवख्तदेखतेरहोगे तो हमउमेदकरते है कोइमुकामात तीर्थोकाबाकी-न-रहेगा.

जहांतकबने सफरमें ज्यादहअसबाब शाथ मतरखो. ज्यादह-असबाब शाथरखनेसे रैलमें चढतीउतरतीवख्त निहायततकलीफ होगी. इसलिये जरुरीचीजेंही शाथमेंरखो. रास्तेमें ऐसेगांवभी मिलेंगे जहां खानपानकी चीज बिलकुल-न-मीलसकेगी, अगरमिलेगी तोभी तबीयतसे मुखालिफ! इसलिये रसोइ बनानेके हलकेहलके बर्तनभी शाथरखलो, भारी बर्तनोका बोझा कहांकहाउठाये फिरोगे? थाली-लोटा-गिलास-कटोरी-तवाह-कुर्छी-चमचा-चिमटा-कटोरदान-और-घीकेलिये सकडेमुहका डिब्बा शाथलो! ताकि-रास्तेमें -घी-गिरनेकी दिक्कत-नहो, हरजगहउमदा-घी-नहीमिलसकता, अगरपानखानेकी आदतहै-तो-पानदानभी शाथलेलो! मुल्कपूरबके लोग पान जियादह खायाकरतेहै, गुजरातमे इसकारवाज कमहै, मगरजिनको जिसबातकी आदतहै-कब-छोडसकतेहै, एकलालटेन -गोल-जरुरशाथरखलो-जो-बेलगाडीकीसफरमें-और-मकानमें रातकोजलानेकेलिये कामदेवे.

कागज-कलम-दवात-कार्ड-लिफाफे-चीठीपत्रीकेलिये हरवख्तशाथरखो.-न-मालूम किसमौकेपरकाम-आवे, चक्कु-कतरनी-और-एकताला इसलिये शाथरखोकि-जब-कहीठहरनापडे-तो-बहारजानेके वख्त मकानमें असबाब धरकर लगादियाजाय, पानी खीचनेको डोरी खूब लंबी-और-मजबूत हलकेवजनकी पासरखो, बाजेबाजेकुवोंमें पानी बहुतनीचेरहताहै, पानीछाननेकेलिये छलनाभी शाथरखनाजरुरीहै, जोजोलोग जलछानकर नहीपीते उनको तरहतरहकी बीमारी पैदाहोतीहै. जलमे बारीक जीवोकी हिंसाकाभी इससे बचावहोगा, रसोइमेभी जल छानकर लगानाचाहिये.

सफरमें आटा-दाल-चावल-निमक-मीरच-चीनीवगेराभरनेके लिये कुछ थेलियांभी शाथरखलो! वाजेवख्त कामदेगी, रास्तेमें मसालाकुटना साफकरना मुश्किलहोगा, इसलिये कुट-छानकर तयारकरके पासरखलो. मौकेपर वडाकामदेगा. मुसाफरीमे कचापका खानाभी खानापडताहै, इसलिये कुछचूरन-और-दस्तावर दवाइये साथलेलो, सर्दहवामे स्नानकरनेसे सर्दी होनेकाभी खौफरहताहै,. इसलिये कुछ-चाय-जायफल-जवत्री-लौंग-सोंठ-पीपल-बदाम-दालचीनी-वगेराचीजें पासरखो, जिससेसर्दी रफाहोकर तबीयत दुरुस्तहोसकेगी.मुडडोराभी वाजेवख्तकपडेसीडनेको साथलेलो. कमसेकम चारपांचजोडेकपडोंके जरुरपासरखनाचाहिये, क्यौंकि-शिवायवडेशहरोंके कपडाधुलवानेका मौकानहीमिलसकेगा, मैलेकपडेवालोंकी इज्जतनहीहोती. तुमने सुनाभी होगाकि-"**एकनूर आदमी हजारनूर कपडा**"-शतरज-गालिचे-या-दरीवगेराचीजें मुताविकहेसीयतकेजरुर शाथलेनाचाहिये. जवकहीठहरनेकामौका-हो-तो-उसको जमीनपरवीछाकर उसकेउपर असवावरखाजाय और चलो जव उसमें विस्तरवाधलियाजाय, ताकि-विस्तरमैला-न-हो. विस्तरवाधनेकीरसीभी भूलनानहीचाहिये, इसकेविदून सवकामरुक जायगा.-दोतीनजोडे सूतीमौजेकेभी जरुरशाथरखलो, याते पहाड चढतेउतरते पहेनलियेजाय. जिससे पांवजलेनहीं, और ककरपथ्थरभी पावको चूभेनही, नंगेपावचलनेसें तलवोंमें छालेपडजातेहै, और मग्जमे गर्मीपहुचतीहै, दूसरेरौज मारेतकलीफकेकहोगे हमसें यात्रा -न-होगी, इसलिये अवलसे होशियार रहना चाहिये.

हरमर्दको-दो-या-तीन धोती और दो-दुपटेपास रखनाचाहिये. जो देवदर्शन-या-पूजनकेवख्त कामदे, औरतकेलियेभी दो--लेहगे साफरखनाजरुरी है, पूजनकेवख्त पहननेको कामदेगें, और-

तके लिये जब रितुधर्म-अयाम आवे-तो-तीनरौज अलगरहे, द-र्शनपूजन-न-करे, चौथेरौज पाकहोकर दूरसेदर्शनकरे. अगर ठह-रनेकेलिये फुरसतहो-तो-सातवेरोज पूजनभी होसकेगी .पूजनके लिये छोटीछोटी रकाबियां-और-जापकरनेको मालभीशाथरखो, केशर-कपूर-धूप-चावल--वर्क--चांदीसौनेके और वढीयाइतरभी देवपूजनकेलिये शाथलेलो. अगरतुम कितावपढना जानतेहोतो--स्तोत्रपाठ-या-स्तवनावली वगेरा-या-जैनश्वेतांवर तीर्थगाइड--शाथमे-लेलो. तीर्थोमे-जाकर गप्पकरनेकानाम जियारतनही है. तीर्थोमेंऐसे स्तोत्र औरस्तवनपढना चाहिये जिससें दिलपर देवगुरु धर्मकेलिये पावंदीवढे, खैलतमाशेकी किताव-या-शतरंज-गंजीफा वगेराशाथरखना कोइजरुरतनही, तमाम उमर खेलतमासोमेंगुजरी, तीर्थमेंजाकर देवदर्शनमें-और-पूजनमे-मशगुलरहो. खैलकोवदकरो, और तीर्थभूमिमेंवेठकर ध्यानकरो.-अगर-ज्ञानचौसर खेलनाजान-तेहोतो-वेशक ! खैलो, क्योंकि-उसमे कोइवात पापकर्मकेवढानेकी नही, वल्कि ! धर्मपावंदीकीवातहै,--जितनेदिन तीर्थयात्रामेलगे--सामायिक-प्रतिक्रमणहमेशां करतेरहो. अगरउक्तकार्य-न-वनशके, तो-नमस्कारमत्रकी एकदो-माला-जरुरफेरो,-गप्पकरनाठीकनही. कइवर्सोमें जियारतको चले-औरफिर-उसमेभी वहीहालरखोगे तु-मारीजियारत फिजहुलहोगी, देखिये ! पेस्तरके श्रावक पैदलचल कर-जियारतकरतेथे, रास्तेमें ब्रह्मचर्यपालतेथे, दिनमे एकहीदफे खानाखातेथे. सचित्तचीजे नहीखातेथे,-औरजमीनपरसोतेथे, आज वसवव रेलसवारीके इतनाभी वनजायतो गनीमत है,

कुछदोअन्नी-चोअन्नी-और-पैसेवगेराभीसाथ रखलो, जो तीर्थयात्रामें-अंधे-लुले-लंगडे-और-रोटीयोंके मोहताजोको खैरात केलिये काममेंदेगा, तीर्थंकरदेवभी वार्षिकदान अनुकंपासेदेतेहै, अनु

कपादान तीर्थंकरदेवोंने किसीशास्त्रमें मनानहीफरमाया, जोलोगफरमाते है अनुकंपादानदेना ठीकनही उनकीभूलहै. दुखीको देखकर जिसकेदिलमें रहमनहीआइ उसकोधर्मीकौनकहसकताहै. ? यात्रामें हरवख्त एक कडा-या-अंगुठीहाथमे-जरुरपहनलो. गेरमुल्कमें कभी अकेलेरहजानेके वख्त-या-चौरीहोजानेपर इसकों वेचनेसें कामचलेगा, वरना ! ऐसीहालतमे वडीतकलीफ उठानापडेगी, किसकिसकेपास मांगनेजाओगे. आजकल रुपये पैसे उद्धारदेना वहुतसेंलोग परहेजकरते है,—जियारत जानातोजहांतक वनपडे कुटुंवकों और रिस्तेदारोंकोंभी शाथलेनाचाहिये. अगर उतनीताकात-न-होतो अपनीऔरत-और-आपदोनोजाना मुनासिव है. अगर उतनीभी ताकात-न-होतो-अकेलेही चलेजानाठीकहै, मगर ऐसानहीकरना कि-आजसेंकल-और-कलसेंपरसों इसतरह सुस्तीमें दिनगुजरते जाय, कइलोग इसखयालमेंभी रहतेहेकि-हम-पेस्तर दौलतमंद थे और अव गरीवहोगये,-अगर विनानोकरचाकरके अकेले चलेजाय तो-हमारीइज्जत-न-रहेगी, तो-यहएक आलादर्जेकी भूलहै, इज्जत केलिये धर्मको खोनावहेत्तरनही. अकेलेही चलेजाना, मगरइज्जतकावहानालेकर तीर्थयात्राको छोडनाठीकनही. जो-कामधर्मकाकर लिया वहीअपनाहै, अगरतुम खुदकजुस वनकर दौलतखर्चकरना नहीचाहते-उसकातो कोइइलाजही नहीं है,—

मारवाड-और मुल्कपूरवके जैनश्वेतांवरश्रावक-जोकि-अपनी औरतोंकों पर्दानसीनरखतेहे, यात्रामें नौकरचाकर दासदासीका खर्चाउठाना ताकातनही-और-उनकों पर्देहीपर्देमें उमरवीतकरगदेना कोइ अकल्मदीकीवातनही, तीर्थोमें देवमदिरोंमे ओर व्याख्यानसभामे पर्दारखना गोया ! देवगुरुधर्मकी वेअदवीकरनाहै. देखो ! तीर्थंकरोंके समवसरणमें वडेवडेछत्रपतिराजाओंकीरानीयेंभीखडीरहती-

थी, तुमकिसगिनतीमेंहो ? देवमंदिरमे-रागरागनीकेशाथ पूजनहो रहीहै-और-औरतोकेलिये मदिरमे कपडेकापर्दा लगाहुवाहैं, कहिये ! यहकिसधर्मशास्त्रका पाठहै, ? व्याख्यानसभामे गुरुमहाराज धर्मशास्त्रसुनारेहहै और-औरतोकेलिये वहांभी आधेमकानमे कपडेकापर्दा लगाहुवाहै, वतलाइये ! यहकिसधर्मशास्त्रका हुकमहै, ? हरशख्शकों लाजिमहै तीर्थयात्रामे-देवमंदिरमें और व्याख्यानसभामें पर्दा-न-रखे, मर्दऔरत यात्राकेलिये चलेजाय, किसीकीराह-न-देखे, वख्तआखीरी नजदीक चलाआताहै, तीनहिस्सा उमरवीतगइ, न-मालूम डेहरा किसवख्त कुचहोजायगा, मुस्तीरफाकरो और तीर्थयात्रामे चलनेकी तयारीकरो, असलमे जोलोग वखीलहै पैसाखर्चना आलादर्जेकी तकलीफसमझतेहै उनकोकोइ समझानहीसकता. दिलके दलेरहै-वे-अपना खर्चादेकर दुसरोकोभी शाथलेजातेहै, यहांजिसपर एहसानकरो अगलेजन्ममे वह-तुमपर-एहसानकरेगा,-

अगर तुम दौलतमंदहो-तो-रैलमे सेकंडक्लास-या-इंटरक्लासकी टिकीटलो, मगर मूमोकों इतना खर्चकरना मुश्किलहोगा. वल्के ! कहेगे नाहक ! खर्चक्योंकरना, ? रास्तेमे किसीअनजानशख्शके हाथका पान-या-खानामतखाओ, कइलोग अमीरोंके लिवासमें वनेरहतेहै, और नसीलीज खिलाकर गाफिलकरदेते है, और फिरमजेमें उनके मालअसवावकों लेकर रफुचकरवनतेहै,-तुमने अवतक मुसाफरी किइनही, दुकानके गादीतकीयोंपरवेठकर पानवीडी खातेरहेहो, सफरमेंवहुतहो शियारीरखनाचाहिये. अगरसफरमें तुमारेपास ज्यादहअसवावहै-तो-उसका वजनकरा कर तुलवालो, और टेशनपर पारसलवावुकी मुपुर्दकरदो, अपना टीकीट उनकों दिखाकर तीसरेदर्जेका पनरासेर-ड्योढेदर्जेका वीनसेर और सेकंडक्लासका चालीससेर वादकरके वाकीकाकिरायादेदो, और रसीद उनसे

लेलो, जहाजाकर उतरनाहो-वहा-वहरसीद दिखलाकर अपनाअ-सवाब, अगर ब्रीकमें दियाहो तो -गार्ड-या-ष्टेशनमास्तरसे मिलकर छोडालो -अगरशाथरखाहोतो कुलीकेपास उठवाकर मुसाफिरखा-नेमें लेजाओ, मगर कुलीका नंबर देखलियाकरो, याते चौरीजानेका खौफ-न-रहे,-अगर किसीशहरसे-या-रास्तेमें कुछअसबाबखरीदो -और-अगर-वहबहुतहै-तो-एकसंदुकमें बंदकरके बजरीये रैल-मालमें--या--पारसलमें--जिसमें किराया कमलगे, घरकोंभेज दो. अगर थोडा भेजनाहो-तो-डाकखानेमें थोडामेहसूल लगताजानो डाककेजरीये पारसलबनाकर भेजदो. ताकि-रास्तेमें उठायेउठाये-न-फिरनापडे,-न-खोयेजाने-या-टुटने फुटनेका खौफरहै, अगर किसीमुकामपर घरसे खबर मगानाहो-तो-लिखभेजो, फलानेशहरके डाकखानेमें यहचीठी जमारहे; जबफलानेनामका शख्श फलानाश-हरकारहनेवाला आवेतो उसे मिले. उसडाकखानेसें अपनानामबत-लाकर अपनी चीठी मागलो.

अगर तुमको गानेबजानेका शौखहै-और-सितार-सारंगी-या हारमोनियम बजाना जानतेहो-तो-उसकोंभी शाथलेजाओ. तीर्थोंमें जिनेंद्रोंकी तारीफकेपदगाना, और अपनेआत्माकों अनित्य-अशर-णभावनासे भावितकरना-जिससेआइंदे अपनाभलाहो. अगर पहा-डपरचढकर दूरदूरकेमकानोंकी शैरकरनाचाहतेहो-तो-एकदूरबीन भी साथलेतेजाओ, अगर फोटोउतारना जानतेहोतो-फोटोकाकेमरा भीशाथलेलो. औरतीर्थोंके फोटोउतारलेआओ. तीर्थभूमिमें कोश दो-कोश-या-जगलमें कोइमदिरहो-उसकेदर्शनभी जरुरकरलिया करो, थोडीदूरके दर्शनछोडकर जबघरआओगे इसबातपर रजहो-गाकि-हमने थोडीसीजगहकेलिये तीर्थकेदर्शन नहीकिये. और घर चलेआये, ताते इसरंचरही चेतेरहनाहै, तीर्थमेंजाकर जल्दीकरनाठीक

नही. जियारतमें धर्मकामकेलिये चलेहो किसीशहरमें जाकर इ
बाजीमें मतपडना, कितनेकऐसेभीहैकि-तीर्थयात्रामें जाकर ऐशक
है, और इबादतकों बरबादकरतेहै, तीर्थमेजाकरभी इश्कशैतानीके
-न-छोडातोक्याछोडा ?—कितनेक ऐसेभी है-जो-तीर्थोंमें-औरतं
मंदिरोंमें दर्शनकरतेहुवेभी औरतकेशाथ मोहब्बतकी बातेकरतेरहते
धर्मशास्त्रफरमाताहै इनबातोंसें तीर्थोंमेंपरहेजकरो, तीर्थयात्रामेंधर्म
खललपहुचानेवाला कामकरनागोया ! अपनीतकदीरकों हारजाना

पहाडपर जियारतकेलिये पैदलजाना हद्दूल-मकदूर-बहुतबे
त्तरहै, अगरचलनेकी ताकात-न-हो-तो-डोलीमेंबेठकर जानाभी
कोइहर्जनही. मगरडोलिकेलिये इंतजाम पेस्तरसेंकरलेनाचाहिये, या
चलनेकेवख्त देरी-न-हो, केशर-चंदन-धूप-फल-फुल-बादाम-
-सोपारी-चावल-मेवा--मिठाइ--इत्तर--वर्क-सोनेचांदीक-औरकुछ
रुपयेपैसे सबसामान पूजाकातयाररखो, यात्राकेरौज बहुतशुभहजल्दी
सेउठो, और उमदाकपडेपहेनकर दर्शनोंकोजाओ. मेलेकपडेपहेनकर
जाना देवकी बेअदबी करनाहै, नौकर-चाकरकों-और अपनेदोस्त-
कोंभी अगरबनपडेतो पूजनकीसामग्री अपनेपैसोसें खरीदकरकेदो,
पहाडपरजातेवख्त रुपया-महोर-नोट वगेराजोकुछ जोखमकीचीज
हो-अपनीकमरकों बांधकर शाथलेतेजाओ. ताकि-दिलकोंतसल्लीरहे,
औरदेवदर्शनमें फिक्रपेदा-न-हो -कितनेकएसेभीशख्शहै-जोकदीमसें
बखील-वहेमी-और ख्वाबमेंभी रुपये पैसे यादकरतेरहतेहै. फिरइबा-
दतमें कैसेमशगूलरहेगें पासरहनेसें बेफिक्री-औरतीर्थयात्रा बखूबीअदा
होगी. इसीलिये हिदायतदिइगइहैकि-होशियाररहो, अगरकिसीकेब-
दनमेंकमताकातहोनेके सबब—मलमूत्रकीहाजत बनीरहतीहो--तो-दो
चावलभर अफीमखाकर पहाडकोंचलो, रास्तेमेमजेसें चलसकोगे.
मगर ऐसामतकरनाकि-ज्यादहअफीमखाकर नशेमेंगाफिलबनजाओ,
हां ! जो खुदअफीमची है उसकेलिये ज्यादहखानाभी कोइहर्जनही,-

जब जियारतकी जगहपहुचजाओ सिरझुकाकर सिजदा करो. और इबादतकरोकि-शुक्रहै आजकारौज जोमुजे कमनसीबको इसतीर्थकी जियारत नियामतहुइ, तीर्थोंकीमीटी सीरकोलगनेसें तुमारेबुरे कर्मोंकी रजअलगहोगी. तीर्थोंमें फिरनेसें तुमारा चौरासीलाखजीव योनिमें फिरना कमहोगा, औरमोक्षकारास्ता हासिलहोगा, पूजन-गीत-गान-नाचमुजरा जोतुमसेबने तीर्थोंमें धर्मकेकामकरो. तीर्थयात्रामे पर्दामतरखो, दिलकों बुरेइरादोंसें बचाओ.-यहीअसलीपर्दाहै, -मगरजोलोग दौलतकी गर्मीसें सरगर्महोरहेहै-वे-इसबातकों कबमानसकतेहै, ? तीर्थयात्रामें जो-दुखीदरिद्री-बैठेरहतेहै उनकोंभी कुछ-न-कुछ-देतेरहो, ऐसामतकरोकि-वे-तुमकों-अमीरसमझकरकुछसवालकरे, ओर तुमचुपहोकर मुंहमोडते चलेजाओ, तीर्थमेंजाकर कमसें कम दोतीनयात्रा जरुरकरो, ऐसामतकरोकि-एकही-यात्राकरके दुसरेरौज घरकोंचलदिया. कइऐसेभीशख्शहै-जो-मंदिरमेंगये-ओरदो-चावलके दानें फेंककर चलेआये.-न इबादतकिइ-न-ध्यानकिया, और-न-पूजनकिया. सीर्फ ! देवकेसामनेगये औरचलेआये. मंदिरोमेंजाकर थुकनानहीचाहिये, इससेदेवकी बेअदबीहोतीहै, किसीमंदिरकी दिवारपरअपनानामभी मतलिखो, खुशनसीबोंने उमदामंदिर बनवाये और तुमने अपनानामलिखकर उसमंदिरकीदिवारकों कालि करदिइ, क्याखूबढंगहै, ? तीर्थोंमें पहाडोपर-या-चरणपादुकाकी जगह -सबजमीन-पाकसमझो. ऐसाशक मतलाओकि-क्या ! इसीजगह जहाकि-मंदिरबनाहै-तीर्थंकरोंकानिर्वाणहुवाहोगा, गरजकि-तमामपहाड और तीर्थभूमि पूज्यभूमि समझो, लाखोंकरोडोंवर्सहोगये हमेशां यहीठीक उसीजगहबनीरहीहै-ऐसाहठ-मतकरो, शत्रुंजय-गिरनार-आबु-समेतशिखरवगेरातीर्थोंके नकशे-जो-छपेहुवेहोतेहै शायरखो, ताकि-पहाडपरचढकर मालूमहोजायकि-यह-मंदिर इसतीर्थंकरमहाराजकाहै-यह अमुक महाराजका-है,-

☞ [कानुन-रैल्वे,]

रैलसवारीमे तीसरेदर्जेका-किराया-पौनपैसेसें एकपैसा फीमीलत कहै, इंटरक्लासका किराया एकपैसेसे देढपैसा-फी-मील-सेकंडक्लासकाकिराया दो-पैसेसे तीनपैसे मील-और-फर्स्टक्लासका किराया -एकआनेसे देढआने मीलतकहै,-फर्स्ट-और-सेकंडक्लासके सोतेहुवे मुसाफिरकों रैलकाकोइअप्सर-या-नोकर जगा-नहीसकता. तीन वर्ससें वारांवर्सतकके बच्चोंका किराया मआफहै, तीनवर्ससें वारांवर्सतकके बच्चोंका किराया आधालियाजाताहै, वारांवर्सतकका लडका औरतकेशाथ जनानागाडीमें वेठसकताहै, इससेंज्यादहउमरका नहीवेंठ सकता. रैलटेशनके भीतर प्लेटफोर्मपर गाडीआनेजानेकेवख्त कोइ जानाचाहे दोपैसेकी टिकीटप्लेटफार्मलेकर भीतरजासकताहै, रैलवेमुसाफिरोंकों इसवातपर जरूरखयालरखना चाहियेकि-जब-टीकिट खरीदेतो-उसकोंपढलियाकरे. या-दूसरेसें पढालेवे, क्योंकि-टीकीटके जोदामदियेहोतेहै-टीकीटपरलिखेरहतेहै-उसकोदेखलेनाचाहिये कि-गलतीसे दुसरेटेशनकाटीकीट-तो-नहीआगया.-चलतीहुइ रैलकादरवाजाखोलनेवाला मुसाफिर कानुनीमुजरीमहोताहै, और खुदकोंभी गिरजानेका खतराहै, जिसमुसाफिरने टीकीटखरीद लियाहो-और-रैलमेवेठनेकीजगह-न-मिलनेकीवजहसेंउसमे-जा-न-सकेतो-वह-तीन घंटेकेभीतर टेशनमास्तरसे अपनाकिराया पीछालेसकताहै-या-उसके बाद जानेवालीगाडीमें जासकताहै. जिसदर्जेका टीकीटखरीदकियाहो उसदर्जेमें जगह-न-हो-और-वहमुसाफिर कमदर्जेमें भेजाजावे-तो -बाकीकेदाम रैलवालोंसे वापीस मीलसकताहै, अगरकमदर्जेका टीकीटखरीदकर वडेदर्जेमेंजानाचाहे तो-बाकीके दाम देकर वडेदर्जेका नयाटीकीट लेकरजासकताहै,

अगरकोइ मुसाफिर टीकीटखरीदकर सफरकरनेसें पेस्तर-बीमार होजाय-या-कोइ एसाअमरलाचारीहोकि--जिससेवहमुसाफरी--न-करसकेतो तुर्त-टेशनमास्तरको इतिलादेवे, और टेशनमास्तरकी तस-ल्लीकरदेनेपर टेशनमास्तर उसका किराया वापीसदेसकताहै. जिसटे-शनकाटीकीटखरीदकर मुसाफिररेलमेंसवारहो-और-अगरउसीगाडीमें आगेजानाचाहे-तो-जासकताहै, लेकिन! मुकामीटेशनपहुचनेके पे-स्तररास्तेकेटेशनपर गार्डकोंकहदेना चाहिये, जिससे गार्डउसकोआगे काटीकीटखरीददेगा, जिसदर्जेमेंकोइमुसाफिर चलाजारहाहै-अगररा-स्तेमें वडेदर्जेमेंजानाचाहे-तो-उससे उतरकरगार्डसेइत्तिलादेवे, और बाकीकी सफरका वडेदर्जेके हिसावसे दामदेवे-वडेदर्जेमेजासकताहै, हरमुसाफिर (१००) मीलगयेवाद एकरौजरास्तेमे जहा-जी-चाहेठ-हरसकताहै, मसलन! जिसने (२००) मीलतकका टीकीटलियाहो--वह-रास्तेमेंवाद (१००) मीलजानेके-एकरौज किसीटेशनपर ठहर सकताहै, और उसीटीकीटसे मुकामी-टेशनतक-जाशकताहै, ऐसान-हीकि-सोमीलगयेनही-और बीचमे एकादिनरहसके. इटरकलासका मुसाफिर रैलमें जगहकी गुंजाशहोनेपर थोडेसेफासलेकेलिये डाकगा-डीमेंभी जासकताहै,

तीसरे दर्जेका मुसाफिर अपनेशाथ अपनाबिस्तर-या-असबाव कुछ (१५) सेर वजनतक लेजासकताहै. इंटरक्लासका मुसाफिर (२०) सेर-असबाव और बिस्तर लेजासकताहै, (यानी) बीससेर असबाब-और-अलावा इसके बिस्तर अलग लेजासकताहै, बिस्तर उसका असबाबकेवजनमें-नही-गिनाजाता, अनपढमुसाफिरको अ-पना टीकीट खुदलानाचाहिये, क्योंकि-बाजेटेशनपर कइठगलोगफि-रतेरहतेहै-जे-कहेंगे! लाओ!! हमतुमको टीकीटलादेवे, उसउरांदेसे उससेदाम-वसुलकरके थोडेफासलेका टीकीटलाकरदेतेहै, और

केदामआपलेकर चलदेतेहै, फिरअनपढमुसाफिरकों टीकीटचाककराते वख्त मुश्किलहोताहै, अगररैलका पुराकमरा–या–गाडीलेनाहो–और उसीलाइनकेटेशनको जानाहो–तो–चोइसघटेकेपेस्तर, औरदूसरीला-इनकेटेशनको जानाहोतो अडतालीसघंटेकेपेस्तर टेशनमास्तरकों अ-र्जिदेनेसेटीकीट मिलजाताहै, उसगाडीपर लेवलकागजपर लिखकर तख्तालगायाजाताहै, फिररास्तेमें उसकमरे–या–गाडीमे कोइगेरमुसा फिरनहीआशकेगा. ऐसाकरनेपर तीसरेदर्जेकेकमरेका (८) मुसाफिर और–इंटरकलासका (६) मुसाफिरोका किराया–फी–कमरादेनाहोगा, तीसरेदर्जेकी पुरीगाडीकेलिये पांचकमरेवालीका (४०) छकमरेवाली का (४८) मुसाफिरोंका किरायादेनापडेगा. इंटरकलासकीगाडीका (२७) मुसाफिरोंका किरायादेनापडेगा, लेकिन! जितनेमुसाफिरोंका किरायादियागयाहोगा उननेतकही मुसाफिर उसगाडीमे जासकेगें. ज्यादहबेठाओगे–तो–उसकाकिराया अलगदेनाहोगा, इष्टइंडियारैलवे यानी–कलकत्ता लाइन इंटरकलासके कमरेकेलिये (८) मुसाफिरोंका किरायालेतीहै–(६) का–नहीं.

अगरकोइ मुसाफिर पुरीगाडीलेकर उसकों रास्तेमें ठहरानाचाहे –तो–ठहरासकताहै. ऐसीहालतमे जब पुरीगाडी लेनेकी अर्जिदिइ जायतो उसमे लिखनाचाहिये यहगाडीरास्तेमें फलानेफलाने टेशनपर इतनेइतने दिनया–घंटेतक ठहरीरहे, सो–वहगाडी–उनटेशनोपर काट कर ठहराइजायगी, और उसकी फीस जितने घटे गाडी ठहराइजा-यगी आठआने घंटे देनापडेगा, गाडीरवानेहोनेके (१०) मीनीट पेस्तर टीकीटमीलना बंदहोजाताहै. इसलिये दसमीनीटके पेस्तरजाकर टीकीट लेनाचाहिये, कइजगह हरवख्तभी टीकीट मिलसकताहै, कइ जगह शहरोमेंभी टीकीटओफिस होतीहै, और वहांसे टीकीटमिलस-कताहै. जिसटेशनका टीकीट लियाहो–और मुसाफिर सोजाय–या–

गलतीसेमुकामीटेशनसे अगलेटेशनचलाजाय-तोजितनेटेशन आगेगया उसका महसूलदेनाहोगा. और शिवाय इसके दोआनेसे एकरुपयेतक जरीमानाभी देनापडेगा. जिसदर्जेका टीकीट लियाजाय-अगर उससे वडेदर्जेमें वेठकर सफरकरे तो वाकीका महसूलदेनापडेगा. अगर वगेर गार्डकों इत्तिलादेनेके धोखेवाजीसें ऐसाकरे तो शिवाय महसूलके औरभी जरीमाना देना होगा उसकी हद (६) रुपयेतकहै,

अगर कोइ मुसाफिर अपनेटीकीटका नंवर-तारिख-या-टेश-नकानाम मलकर ऐसाकरदेवे जो-पढा--न--जासके, उसकेलिये जैसाटेशनमास्तरचाहे करसकताहै, जहासे टीकीटोंका इम्तिहानहो कररैलचलतीहै वहांतकका किरायालेकर छोडसकताहै, अगरउस-कों यह मालूमहोजायकि-इसने रैलकोंधोखादेनेकेलिये ऐसाकिया है-तो-उसकाचालानहोकर उसपर (१००) रुपयेतक जरीमाना हो सकताहै, कोइमुसाफिर औरतोंकी गाडीमें चढजावेतो वहकानुनी मुजरीमहै, उसको सजादिइजायगी, अगर किसीटेशनपर खराव खानामिलताहो-या-पानी-न-मीलताहो-तो-मुसाफिर उसटेशन मास्तरकी रिपोर्ट-डिस्ट्रीकट-ट्रेफिक-सुपरिंटेंडटको करसकताहै, रैलमें पार्सल लेनेदेनेका वख्त शिवाय इतवारके हमेशा सातवजे शुभहसे पाचवजे शामतक रहताहै.—

☞ [तालीम धर्मशास्त्र.]

धर्मशास्त्रका फरमानाहै हरसाल एकनयेतीर्थकी जियारतकरे. नयेतीर्थकोंजाना-न-वनसके-तो-जिसकी जियारत अवलकिइहै दोवारा करे, लेकिन ! ऐसाकोइवर्ष-न-गुजरनेदेवेकि-जिसमेंएक तीर्थकीजियारत-न-किइजाय, जोशख्श तीर्थभूमिहीमेंरहताहो, उ-सकों चाहिये दूसरेतीर्थकी जियारतकरे,--तीर्थनामउसकाहै जहा

जाकर जीव संसारसमुद्रसे तीरे, मगर जिसशख्शका इरादापाक नहीहै उसको तीर्थभी-न-तारसकेगा, दौलत आजहै और कल-नहोगी जोकुछधर्मकार्य करनाहो जल्दी करलो. दुनियाकेझगडोका कभी-पार-नहीआता. जोकुछ धर्मकामकरलोगे वहीतुमाराहै, कइ शख्श मरतेवख्त कहतेजातेहै हमकों-फलाने दोकामकरना बाकी रहगये, लेकिन! यहकोइ नहीकहताकि-हमकों फलानेतीर्थकी जि-यारतकरना बाकीरहगइ, तिजारतके लिये तुमऐसीजगहघूमे जहां-कि-जानवचाना मुश्किलथा, लेकिन! तीर्थयात्राकेलिये एकदफेभी नहींघूमे, कइलोग कहतेहै तीर्थोकी जियारत हमारेतकदीरमेनही. कैसेजाय,? मगर यहनहीसौचतेकि-हमने-घरसें एककदमभी नही उठाया और कहदिया हमारेतकदीरमेनही, क्या! खूबढंगहै,? दौ-लतमिलानेकेलिये हरजगहजानेकी तदबीरकरना और तीर्थयात्राके लिये तकदीरका बहानालेना, बडेहोशियार हो. निश्चयनयकोदि-लमेंरखकर व्यवहारनयसें वर्तावकरना तमामशास्त्रोकासारहै.—

आजसे करीब (२५००) अढाइहजारवर्ष पेस्तर जबकि-तीर्थ-करोंका जमानाथा विद्याधरलोग अपनीविद्याकी शक्तिसे आस्मा-नमें विमानचलातेथे, और उसकेजरीये लोग सफरकरतेथे, आज-कल रैलकासाधन मौजुदहै, फिरसुस्तीकरना और तकदीरकाबहा-नालेना-कोइअकलमंदीकी बातनही, करीब सो-सवासोवर्ष पेस्तर जबरैलनहीथी-लोग-खुश्कीरास्ते सफरकरतेथे, औरबहुतसाखर्च करनेपरभी उतनीजगह-नहीजासकतेथे-जितनी आज थोडेखर्चमे जासकतेहो. जिनकोंधर्म प्याराहै-कभी-सुस्तीनहीकरते, तीर्थया-त्राकोंजानेसे पेस्तर इसबातको अवलसौचलोकि-तुमारेपास उतना खर्च है-या-नही,? गेरमुल्कमें किसकिसकेपास मागतेफिरोगे.? जिसराजे-महाराजेकी अमलदारीमे तीर्थकीजगहहो-उनकों-इसबा-

तपर खुशहोनाचाहियेकि-तीर्थकेसबबसे हमारीअमल्दारीकी तरकी और रियासतकी आबादीहै, शहरकी रवन्नक-और-रौजगारकी तेजी,-सोचो ! इससे ज्यादह और क्याबातचाहतेहो, ?--हरखुश-नसीब राजेमहाराजोंकों चाहिये तीर्थयात्रीयोंका लिहाज रखे,--उनकोंहरबातसें मददकरे, और इसबातपर उनकी तारीफकरेकि--दुनियाका धंदाछोडकर-ये-तीर्थोंकी जियारतको आयेहै. परमेश्वरकी भक्तिमें उनकादिल रजु-न-होतातो-तीर्थोंमें कैसेआते, ? तीर्थके मेनेजरोंकों-और-पूजारीयोंकोंभी मुनासिबहै उनकीखातिर करे, व-दौलतयात्रीयोंहीके तीर्थोंका खजाना-तर-होताहै, जिस तीर्थमे यात्रीयोंकी आमदरफत कमहै-उसतीर्थमे रवन्नक नहीरहती. कइतीर्थोंमे पूजारीलोग ऐसेभी देखेगयेहैकि-यात्रीयोंकी नाकमेंदम लादेतेहै, अगर रुपया पैसा-न-देवे-तो-निंदाबोल्नेलगते है. तीर्थोंके मेनेजरोंको लाजिमहै ऐसे पजारीयोंकों तीर्थोंमेसे रुकसतकरे, और अगर गुस्ताखीकरेतो-उसको कानपकडकर उसीवरतमंदिरसें बहारकरदेवे, वे-लोगबडेबेसमझहै-जो--यात्रीयोंकेसाथ गुस्ताखी करतेहै-और-उनका लिहाज नहीरखते, यात्रीलोग थकेहुवे-और मजीलकरकेआये है, उनकों हरबातसें आरामदो, जिसचीजकी उनकों दरकारहो-उनकेसामने हाजिरकरो, यात्राकरके लौटतेवख्त अगर यात्रीकेपास रुपयेपैसेकी गुंजाशहो-तो-जिसपूजारी-या-नोकरने तुमारी खिदमतकिइहै उसको कुछइनामदेना,-चुनाचे-ये-लोग मंदिरके खजानेसें तनख्वाह बेशक ! पाते है-उनका-कोइहकनही कि-तुमकों रोककरकुछलेवे, लेकिन ! तुमारी रहमदिलीहैकि-अगर गुंजाशहो-तो-उनकों बतौर धर्मकीराहपर कुछदेना. अगर तुमारे पास रुपयेपैसेकी कुछगुंजाश नही है-तो-कोइजरुरतनही, नोकरलोग-या-पूजारी ऐसाताना-तुमकोनहीदेसकतेकि-तुमनेहमकों कुछनहीदिया, दानपुन्यकरना अपनेदिल्की खुशीकेताल्लुकहै.-और

यहबातभी काबीलगौरकेहैकि-नोकरपूजारीयोंका तुमारेपरकुछहक नहीकि-जोरजूर्म करसके,-अगर कोइ जोरजुर्म करेतो फौरन उसको राज्यके जरीये शिक्षा दिलवाना.—

तीर्थोकी देखरेख करनेवालोंको-लाजिमहै जिसमजहबका जो तीर्थ-या-मंदिरहो-उसमे उसीमजहबकी मूर्त्ति रखनाचाहिये, जो तीर्थ-या-मंदिर जिसमजहबकाहै, खर्च-आमदनी-नौकर-चाकर और-खजाना उसीमजहबवालोंकेपास रहनाचाहिये, अगरकोइकहे हम उसमेदर्शनोंको आते है इससेहमाराभी उसमेंहकहै-तो-इससे उनका हकउसतीर्थ--या-मंदिरमे नहीहोशकता, जिसमजहबका-जो--तीर्थ--या--मंदिरहै उसके वहीखातेमे उसीमजहबवालोंके आयेहुवे रुपयेपैसे जमाहोना चाहीये. अगरकोइ दूसरेमजहबवाले-आनकर उसमें रुपयेपैसेदेवे--तो-वें--रुपयेपैसे उसतीर्थ-या--मंदीरकी आमदनीके खातेमेजमाकरना, मगर उनकेनामसें जमानही करना, मजहबीमामले ऐसेहैकि-कभी-मुकदमेंचलनेपर-वे-लोग--ऐसाकहेगेंकि-देखो! तुमारे वहीखातेमें हमारेमजहबवालोंके-नामसे-रुपयेपैसेजमाहै-या-नही, ? जो-तीर्थ-या-मंदिर जिसमजहबवालोंकाहै, उसके कारखानेपर उसीमजहबवाला शख्श अधिकारीरखनाचाहिये, गेरमजहबवाला रखागयाहोगा-तो-वह-कुछ--न-कुछअपनेमजहबका पक्षजरुरकरेगा और अखीरमें तुमको कुछ नुकशान पहुचानेकी कोशिश करेगा, जो-तीर्थ-या-मंदिर जिसमजहबवालोंकाहै-उसतीर्थ-और-उसमंदिरमें-उसीमजहबको माननेवाला शख्श-पूजारी-रखनाचाहिये,-अगर-गेरमजहबको माननेवालारखोगे कुछ-न-कुछ-वह-अपनेमजहबका पक्षकरेगा.-श्वेतांबरमजहबके तीर्थ और मंदिरमें श्वेतांबरमजहब माननेवाला पूजारी रहनाचाहिये, दिगंबरमजहबके तीर्थ और मंदिरमें दिगंबरमजहब माननेवाला पूजारी रहना चाहिये,—

अगर कोइ तीर्थका-मेनेजर-या-मुखीया-उसतीर्थ-या-मंदिरका हिसाब-न-बतलावे-तो-राज्यकेजरीये उपावलेनाजरुरीहै, इतनेपरभी-वह-गुस्ताखीकरे तो उसको सघसे खारिजकरनाचाहिये. और-उसतीर्थ-या-मदिरकी कुचीया उससें छीनलेनाचाहिये. कइयात्री अैसेभी-है-जो-आरतीका-या--पूजनका-घी-बोलकर रुपयेपैसेदेतेनही, और चूपमारकर चलेजाते है, कइकहते है हम-उस-अमानतकी कोइचीजबनाकर मदिरमेंधरेगें, या-धर्मशालाबनवादेयगें, मगर शास्त्रफरमाताहै उसद्रव्यसे चीजबनवानेका-या-धर्मशाला तयारकरवानेका तुमकों क्याहकहै, ? यहतो जबसेतुम-आरती-या-पूजनवगेराकेलिये बोले तबसेही देवद्रव्य होचुका,-कारखानेके सुपुर्दकरो, सघ-उसका-रक्षकहै, तुम-चीज-या-धर्मशालाबनवानेवाले कोन, ? सघकी जोरायहोगी-वह-कामहोगा, कइकहतेहै हमने हमारीदुकानके वहीखातेमे देवकेनामसें जमाकरलिये है आठआनासेकडे व्याजदेयगें, मगर उसकोंजमाकरलेनेकाभी तुमकों कोइइख्तियार नही. सघ उसकों जैसामुनासिव-समझेगा वैसाकरेगा, श्रावकोकेघर देवद्रव्यरखनेका हुकमनही. हरजगह आनदजी-कल्यानजीकेनामसे दुकानशुरुकरके मुनीम-गुमास्तेरखना और कामचलाना, याते कोइएकश्रावक अपनीहकुमत उसपर चलासकेनही. देवद्रव्य घरमें रखनेसेकोइफायदा नही, जिनजिनोने देवद्रव्यघरमे रखा देखलो ! उनकों अखीरमें नुकशान हुवा, इसलिये सीधेहोकर उसदेवद्रव्यकों देदेना इसींमे तुमारीतारीफहै, मुनिमहाराजोकी फर्ज है देवद्रव्यकी हिफाजतकरवानेमे सुस्ती-न-करे, अगरकोइ इसदलीलकों पेशकरेकि-मुनीमहाराजतो त्यागी है-उनकों देवद्रव्यकेकाममें बोलनेका क्या अधिकार है, ? जवाबमें मालूमहो, मुनिमहाराज पापकेकामके त्यागीहै, धर्मकामकरनेके-त्यागीनही है, ओरउनकों देवद्रव्यकेलिये बोलनेका अधिकार

इसलिये हैकि-चतुर्विधसंघमे अवलदर्जा-उनकाहै,-श्रावक दुनिया दारहै-और-एकदूसरेकी उसको परवाहभी रहती है, इसलिये जो देकर कैसाबोल सकेगा? और मुनिमहाराजोंको किसीकीपरवा नहीं, इसलिये जोरकेसाथ बोलसकतेहै, जो-श्रावक-ऐसाकहत हैकि-आप मुनिहै आपको इसमे बोलनेकी कोइजरुरतनही, व खुदकानुनधर्मके मुखालिफ और तीर्थंकर-गणधरोंका गुनहगारहै,

☞ [बयान-शकुनशास्त्र.]

सफरकेवख्त अछेशकुन होनपर अछीसफरहोगी. यहभी शकुनशास्त्रका फरमानहै, शकुन-दो-तरहके, एक दृष्टशकुन, दूसरा शब्दशकुन, दृष्टशकुन-वहहै-जो-सफरकी शुरुआतमें नजरआवे, शब्दशकुन-वहहै-जो-अवाजके जरीये सुनाइदे, सफरकेवख्त रास्तेमे अगर जैनमुनी-उसगांवका राजा-हाथी-घोडा-मोर-बैल-राजहंस-मर्दऔरतका-जोडलाघरआताहुवा-या-पदमनीऔरत मिलेतो जानना सफरअछीहोगी, जिनप्रतिमालेकर कोइआताहो-और-सफरकेवख्त सामने मिलजायतो जानना सफरनिहायतअछी होगी, फल-फुल-गेहने आभूषन-धजा-पताका-छत्र-चवर-सोनाचांदी-रथ-पालखी-बाजा वीणा-सारंगी-तबले-सितार-मृदंग कुमारीकन्या-पकीरसोइकाथाल-विनाधुंएकीआग-गातीहुइसोहागन औरतें-भेरी-शख-आरिसा-भराहुवाघडालेकरमर्द-या-औरत-मलयागिरिचंदन-दुध-दही-घी-मीटी-गैरोचन-सहेत-सूरमा-कमल-पदमनीऔरत-आरी-हथियार-पंखा-सिंहासन-जवाहिरात-अंकुश नावा-चावल-सरसो-लडकेकोंगोदमेंलेकरआतीहुइऔरत-पानबीडी-हरीवनास्पति-मीठाई--धोये हुवेकपडेलेकरआताहुवाधोबी-इतरफुलेल-या-उमदावर्ण-गंध-रस-स्पर्शवाली-कोइचीजहो--सफरकेव-

ख्तसामनेमिलजाय तो-जानना सफरअछीहोगी, दिलकीमुराद हासिलहोगी-और-किसीतरहकी तकलीफ दरपेश-न-होगी, कोइ किसीकाभलाबुरा नहीकरता, जितने उपरलिखे शकुनहै शुभाशुभके सूचक और द्योतकहे, होना-न-होना अपनीतकदीरके ताल्लुक! सीर्फ! अच्छेशकुनहोनेसें अछा-और-बुरेहोनेसें बुराहोनेका अदाज कियाजाताहे, अछेशकुनहोनेपर दिलको ताजगीमिलतीहे, आजकल कइलोग ऐसाकहेदेतहेकि-यह-एकतरहका वहेमहै-औरहम इसवातको वाहियात समजतेहै, मगर यहउनकी आलादर्जेकी गलतीहे, अविद्यानदोके-न-माननेसे शकुन-ओर-निमित्त ज्ञान जूठे नही होसकते,

गर्भवती-रजस्वला-और-विधवाऔरत सफरकेवख्त मीले-तो-ठीकनही. अगर माता विधवाहो और सामनेमिलजायतो को-इहर्ज नही, माता बेटेकेलिये हमेशा खेरख्वाहहै, उठ-गधे-या-भेंसेपर चढाहुवाआदमी सामने मिलजाय तो वेशक! बुराहे, श-कुन उसकानाम है-जो घरसें रवानाहोतेवख्त-थोडीदूरपर मिले,-तमामरास्ता देखतेरहना कोइजरुरत नही. कोइरोताहुवाआदमी-या-नपुंसक सफरकेवख्त सामनेमिलजाय निहायतबुराहै. गावमें घूसतेवख्त खुद हसनागाना मनाहै, पेशवाइमें आयेहुवे हसे-या-गायनकरे कोइमनानही, लेकिन! खुद गानाहसना मनाहै, सफ-रकेवख्त अपनेपीछे कोइमर्द-या-औरत खालीघडालेकर जलभर-नेको जातेहो निहायतउमदाहे, जैसेवह जलभरकर घरआयगा स-फरकरनेवालाभी दौलतलेकर घरआयगा, साप-किरकाटिया-पल्ली-और-गोह सफरजानेवालेको आडे उतरे-तो-बुराहै. सफ-रजानेवालेकी वायीतर्फ भमरा आनकर गुंजारकरे-या-फुलोंकार-सलेता दिखाइदे अछाहै. सफरकेवख्त मुर्गेकी अवाजसुनाइदेना-

या-उसका खुद नजरआजाना उमदाहै, सफरकरनेवाला उ कदमउठावे और अवलकदमको ठोकरलगे-अटकजाय-कपडा फ जाय-धजा उसकीगिरजाय-या-उसका चपरासी गिरपडेतो बु है, सफर अछी-न-होगी, लुला-लंगडा-काणा-या-अंधाशख सामने मिलजायतोभी बुराहै, लकडीका भारालेकर कठिहारा सा नेमिलजाय-दगाकरतीहुइ बिल्ली दिखाइदे--या--बदबूवालीची सामनेमिले-किसीसुरत अछा नही,

कौलसे-राख-हड्डी-विष्ठा-तेल-गुड-चमडा-चर्बी--खाली- या-फुटाहुवावर्तन-नमक-सुकाघास--छाछ-कपास--अनाजकेछी- लके-केश-काले रगकीचीज-लोहा-दख्तकीछाल-दवा--अर्गला- लोहेकीसांकल-खरल-अकालवृष्टि-और-अशुभवर्णगंधरसस्पर्शवा- लीचीज सफरकेवख्त सामने मिलना अछानही. कोइमर्द-या- औरत हाथमेंफललेकर सामनेआतेहो-तो-जानना सफरअछीहोगी, सारसका जोडला चाहेकिसीतर्फ दिखाइदे-या-दोनों एकशाथअ- -वाजकरे सफरमे जरुरफायदा होगा, एकीलासारस दिखाइदेना अछानही, सफरकेवख्त छातालियेहुवे तंबोलखाताहुवा कोइशख्स सामनेमिले तो अछाहै, जानना सफरअछीहोगी, रोतेहुवेलोग मु- र्दालेजाते सामने मिलनाबुराहै, सारगीतबलेशाथ गातेहुवेमुर्देकेशाथ जारहे है औरसफरकेवख्त सामनेमिलजाय अछाहै. सफरकेवख्त पीछाडी-या-दाहनी तर्फकीहवाचलतीहो अछाहै, घरआतेवख्तभी ऐसाही समझना, सामनेकी-या-बायीतर्फकीहवा सफरकेवख्तठी- कनहीं. सफरकेवख्त नोलिया सामनेमिलजाय-या-दिखाइदे-या- उसकी अवाजसुनाइदे-तो-अछाहै. तीतर-या-मुर्गा-दाहनेहाथ- कों-या-सामनेमिलना उमदाहै, गधा बायेहाथको भोंके तो अछाहै.

चद्रस्वरचलते दखन-पश्चिमदिशातर्फ जाना अछा, पूरव-उत्तरकों सूर्यस्वरमेजानाठीक, लडाइदगेकेलिये-या-अदालतमे जानातो सूर्यस्वरमे ठीकहै, बाकीके कामकों चद्रस्वरमें जानाअछा, चंद्रस्वर अमृतनाडी है, योगशास्त्र-विवेकमार्तंडरहस्य-और-कपूरचदजीकृतस्वरोदयज्ञान-किताब देखो, उसमेंसवहाल रौशनहै, जबचद्रस्वर चलताहो बायीतर्फ जोजोशकुन होगें पूर्णफल देगे, और सूर्यस्वरमें दाहनीतर्फ जितनेशकुनहोगे अछाफलकरेगें, रिक्तस्वरमें अछेशकुन कमजोरहोजाते है और पूर्णस्वरमें कमजोरशकुनभी ताकतवरहोतेहै, घरसेचले और तुर्तहीअछेशकुनहुवे तो समझलो, तुर्तही फायदाहोगा, कोशदोशगयेबाद अछशकुनहुवेतो देरसें फायदा होगा, शकुनशास्त्रका फरमानहै घर-या-गावकेनजदीकके शकुन असलीशकुन है, सफरकेवख्त अगर बुरेशकुनहुवे-तोभी-ठहरजाना ठीकहै. तीसरीदफे बुरेशकुनहुवे-तो-सफरकों जाना अछानही, लौटजाना चाहिये. सज्जन-शकुन-और-निमित्तज्ञानी-मनाफरमावे उसवख्त सफरकरना फायदेमद-न-होगा.—

शब्दशकुन उसकों कहतेहैं जोसफरके वख्त बजरीयेशब्दके सुनाइदे, जैसें कोइशख्श सफरकोचला और उसवख्त दुसरा बोलरहाहै फतेह होगी, समजलो! शब्दशकुनअछेहुवे, अगरऐसासुनाकि-तुमारी तकदीर फुटीहुइहै, डुबजाओगे-खतापाओगें-तोजाननाचाहियेशब्दशकुनअछेनही हुवे,-वारसें-तिथी-बलवान-तिथीसें-नक्षत्रबलवान्--नक्षत्रसेकर्ण-कर्णसेंलग्न-लग्नसेंनिमित्त-और-निमितसें स्वरोदयज्ञान बलवानहै, जिसमुल्ककों-या-गावकोजाना तुमारा दिल-नहीचाहता वहांजाना फायदेमदनही, क्योंकि-दिलभीएकतरहकी पुख्तासबुतीहै,-सफरजानेवालेकों लाजिमहै देवगुरुकोंनमस्कारकरके सफरकरे,-जिनमदिरमेंजाकर जिनप्रतिमाकेद-

गैनकरे-रुपया-महोर-जैसीताकातहो-भेटरखे. औरफिर उपाश्रय जाकर गुरुमहाराजके मुखसे मंगलीकस्तोत्र सुने,-और उनके सामनेभी भेटरखे. गुरुलोगद्रव्यके त्यागीहोतेहै उसचढेहुवेद्रव्यको अपनेकाममे-न-लेव. ज्ञानवृद्धिके काममेलगवादेवे.

[दरयान-अष्टांगनिमित्त,]

सफरकेवख्त मर्दका दाहनाअंग-ओर-औरतका बायाअंगफुरकना अच्छाहै, सफरजानेके पेस्तर ख्वावमें तीर्थंकरोकीमूर्त्ति-निर्ग्रंथमुनि-और-तीर्थभूमि दिखाइदे-तो-समझलो! तीर्थयात्राजरुर होगी. सफरके-वख्त-षडज--रिषभ-गधार-मध्यम--और-पंचम स्वरकी अवाज-सुनाइदे-तो-अच्छाहै, मगर स्वरकीअवाज पहिचानना-अकलकेताल्लुकहै. हरशख्शको अपनीस्वाभाविकअवाज किस स्वरमें निकलती है इसकीपहिचान सीखनाचाहिये. सफरकेवख्त तोतेकीअवाज बायींतर्फसुनाइदेना फायदेमंदहै, घरकोआते दाहनी तर्फ सुनाइदे--तो--अच्छा, सफरकेवख्त तोताउडकर सामनेआवे निहायतउमदाहै, मगर रोतीअवाजकेशाथ सामने आनगिरनाअच्छा नही, सफरकेवख्त जिसकाघोडा हनहनाटकरे-या-दाहनेपांवसे जमीनकोउकेरे अच्छाहै, सवारकी फतेहहोगी. सफरकेवख्त मोरकी अवाजसुनाइदे-या-नाचताहुवा दिखाइदे-निहायतउमदाहै, सफरके वख्त चकोरकी अवाजसुनाइदेना-या-खुद-चकोर नजरआजाना अच्छाहै,भारद्वाजपरींद-जिसको लोग रुपारेलबोलतेहै उसकी अवाजभीचकोरकीतरहअच्छीहोतीहै, जिसमुल्कमे भूकपहो-वहां-समझलो! एकतरहका उत्पातहोगा. जिसशहरकेदरवजेपर-या-देवमंदीरपर बिजलीगिरे वहांटंटेझगडेफैलेगे. जहांदेवमूर्त्ति हसतीहुइदिखाइदे-वहां-आदमीयोकोकुछखौफहोगा. जहांदिवारपरबनीहुइ चित्रामकी पुतली-हसतीहुइदिखाइदे-भ्रूकुटीचढाकरगुस्साकरे-या-रोतीहुइदि

खाइदे-वहां उजाड होगा, और लोगोंकों घरछोडकरभागनापडेगा. जहांदेवमदिर-या-राजाके चबरसें बिनाअग्नि-आगके अगारे झरनेलगे वहा दगेफिसाद होकर कइतरहकी तकलीफें दरपेंशहोगी जिसमुल्कमें सिताराधूम्रकेतु दिखाइदे-निहायतबुराहै, उसमुल्कके-रहनेवालोंकों-हरसुरतसें तकलीफहोगी,

अछेलक्षणवाले--खूबसुरत-मर्दऔरत-जरुरदौलतमद होतेहै, दुनियामें रुप-एकतरहका-वशीकरनहै, जिसनेपूर्वभवमे धर्मक्रिया है-जीवोंपर-रहमकिइहै और देवगुरुधर्मकी खिदमतकिइहै-वह-रुपवानहोताहै, जोशख्श हिमतबहादूरहो-जरुरखुशनसीवहोगा, अनुयोगद्वारसूत्रवृत्तिमें फरमानहै-"सर्वसत्वेप्रतिष्ठितं"-जहासत्वहै वहांसबकुछहै.

तवारिख शहर बंबइ,

भारतमें इसवख्त जैनमजहबके (१०८) तीर्थ मशहूरहै, इनसबकी तवारिख इसकितावमेंदर्ज है, इसकी शुरुआतमे इरादाथाकि-अयोध्यासें लिखनाशुरुकरे, अयोध्या-जमानेतीर्थकर रिषभदेवके आबादहुइ और इसीसववसे पुरानी है, फिरऐसाभी इरादाहुवाकि-उज्जेनकों-अवलरखे, क्योंकि--उजेनहिंदके मध्यमें है, मगरबंबइ कलकत्ता इसवख्त तरक्किअवलमौरचेपर खडे है, इसलिये बंबइसेंही सफरकीशुरुआतरखीगइ, बबइसेंचलकर मुल्कगुजरात-सौराष्ट्र-कछ-मारवाड-सिंध-पंजाव-काश्मिर-अवध--बगाल-आसाम उडीसा-सेंट्रलइंडिया-राजपुताना-मालवा-वगड--खानदेश-दखन मद्रास--लका-मलवार-महीशूर-कर्णाटक-और-मुल्ककोंकनकी सफरकरके बबइआजायगें. अलावा इसकेऔरभी जोजोतीर्थ जैसेकि अफगानीस्थान-टिबेट-नयपाल-भोटान-और-बर्मा वगेरामेंथे इ-

नकेहालातभी इसमेंदियेजायगें, किसकिसजगह कौनकौनसेतीर्थंकर हुवे ? उनके पंचकल्याणिक कहांहुवे ? और कौनकौनसेमुनिकहांपर मुक्तिपाये, अतिशयक्षेत्र कौनकौनसेथे ? और किसकिसराजेमहाराजोंकेवख्त उनकी तरक्कीहुइ ? वगेरावातें इसकितावमें दर्जकिइ गइहै, इसकितावके वनानेमें इतनीमेहनतहुइहैकि–तावेउमरकी मेहनतएकतर्फ–औरइसकी मेहनत एकतर्फ, जहांतकवना तमामजगहघूमकर जोजोहाल अपनीआंखोंसेदेखा इसकितावमेंलिखाहै, कुल तीर्थोंकी तलाशीमें वहुतकुछ मेहनतहुइहै, पुरानेतीर्थोंकी तवारिख जैनशास्त्रोंसें–इतिहासिककितावोंसे और शिलालेखोंसे लिइगइहै,–इसकों पढकरआमलोग फायदा हासिलकरें,

हिंदकी अकलीममें दखन समुद्रकेकनारे वंबइ एक–नायाव–और–बेमिशालशहरहै,जिन्नत–खुवसुराति हरएकचीजकेवसमें–और–उमदगी मकानातमें ववइ–वेहत्तर–व–ज्यादहहै, मुवादेवीकेनामसे शहरकानाम–ववइ कहलाया, अग्रेजी ज्वानमें इसको Bombay वांवे–वोलतेहै, करीव (१२५) वर्षपेस्तर वंवइ वहुतछोटाशहरथा. दिनपरदिन इसकी तरक्की होतीगइ. सन (१८१८) मेंववइ वहुत वडामारुफ और मशहूरशहर कहलाया, औरदरियावके शहरोंमें वडीइज्जतपाइ, ववइहातेकी चोडाईकम––मगरलवाइ उत्तरदखनकों करीव (१०००) मीलसेभी ज्यादहहै, इसहातेमें पहाडवहुत–समुदरकनारे ज्यादेतर नारियल–सुपारी–और–ताडकेदरख्तखडे है, खासफसल अनाजऔररूइकी–ज्यादह, कलकारखाने इतने है–जो दूसरेहातेमें हर्गिज !–न–होगें, ववइहातेमें मुल्कसिंधकोंछोडकर मराठे–गुजराती और पारसीअपनेनामकों अवल और वालिदके नामकों पीछेवोलते है, औरवर्षकीशुरुआत कातिकसुदीएकमसें मानते

है, उत्तरहिंदकेलोग-चेतसुदी एकमसें वर्षकीशुरुआत-और वालि-दकानाम-अवल लिखते है.

बंबइकोछोडकर इसहातेमे (२३) जिल्लेआवादहै, उनमे पुनाके पेसवा-ओर-वडोदेके गायकवाड ज्यादह मशहूरहै, रेलसडक वब-इसें-जी-आइ-पी-ओर-बी-बी-एंड-सी-आइ--निकली, जी--आइ--पी-मध्यहिंदमेंहोकर इष्टइंडियाकेशाथ मिली, और नागपुरसे आगे वगालनागपुरकोभी जाकरमिली है! ववइमें रेलवे टेशन (१३) है, सबसेवडाटेशन वोरीवंदर-इसकादूसरानाम विक्-टोरियाटर्मीनसभीवोलतेहै. हिंदमेंदूसराकोइऐसाटेशननही-जेसावोरी-वंदरका टेशनहै, सन (१८१८) में करीव (२७०००००) लाख रुपयोंके खर्चसे वनायागया. छतमें सुनहरी और मीनाकारीकाम-मारवलपथ्थरके खंभे खवसुरत वेलवुटोंसेसजेहुव-ओर-एकवुरज-पर वडाकीमतीघटायरकि-जिसकीअवाज दूरदूरतकजाती है, देखकर ताज्जुव ओर हेरतकरोगे, खासवोरीवंदरटेशनकी जमीन (१९००) फुटलवी, वहुतसें पासेंजर इसोटेशनपरउतरते है, जोकोइमुसाफिर शहरवबइमें कदमरखे वोरीवंदरटेशनउतरे. शिवायइसके जहा जि-सकोंसुभीताहो वहांभी उतरसकताहै, इकागगी-हरवख्तमौजूदरहते है जहांकहो पहुचादेगा, समुदरकनारे अपोलीवंदरकि-जहांपरवि-लायतजानेवाली ष्टीमरेंखडीरहती है, समुदरकेकनारे पथ्थरोंकीता-मीरकिइहुइ वहुतवडीदिवार मयसीढियोंके वनीहुइदेखकरताज्जुवक-रोगे, जिसको समुदरकापानी हरवख्तटकराताहै, वाजेलोग ष्टीमरोंमे वेठकरसमुंदरकी सैरकोभी जायाकरते है वडीरवमुककी जगहहै. गोदीमें जहांकी-समुंदरका-जल-रुकाहुवाहै कइष्टीमरे हरवख्त य-हांपर खडीरहाकरती है. ष्टीमरकेआतेवख्त पुलखोलदियाजाताहै. औरफिर ष्टीमरकेचलेजानेपर वंदकरदेते है, गगी-घोडे-आदमीयोंका

रास्ताभी वनाहुवाहै. वहुतसीष्टीमरे औरजहाज इसवंदरगाहसे लगते औरखुलते है, एकष्टीमर बंबइसेलंकाकों-एकद्वारिकाहोकर करांचीकों-और-सवसेवडी ष्टीमरऐडनहोकर विलायतकोंजाती है. तरहतरहका मालअसवाव-यहां-चढाया और उताराजाताहै, वडी वडीआलिशानष्टीमरे औरसमुद्रका अथाहजल देखकर दिलनिहायतखुशहोगा,—

बंबइसेंखुश्कीसडक-कल्याणी-नाशक--धुलिया-मउ--इंदोर-फतेहावाद-और-गवालियरकों होतीहुइ आगरेकोंगइहै. दूसरी पैदलसडक-वीचहिंदुस्थानके होतीहुइ खासकलकत्तेकोंभी गइहै, बंबइमें ट्रामवेकंपनी वडीतरक्कीपरहै, सन (१८९१) की मर्दूमशुमारीमें खास! बंबइकी आवादी (८२१७६४) मनुष्योंकीथी. जिसमेंकरीव (२५७२५) जैनलोगहै, बंबइकेमकान ऐसेउमदा औरखूवसुरतहैकि-जिसपर लाखहांरुपये सर्फहुवे, वडीवडीआलिशानइमारतें इसकदर उमदा औरझलाझलवनी हैकि-देखकर आदमीकी अक्लचकराजाती है, रगरौशन वडेवडेआइने-तरहतरहके मेहरावदारखंभे औरसाइन वोर्ड हरमकानपर लगेहुवेहै. बंबइके वडेवडेमहोले-कोट-और-वहारकोट-जिसमें पायधोनी-भींडीवाजार--कवडीवाजार-नलवाजार-कापडवाजार-भातवाजार-जहोरीवाजार-तांवाकांटा- मारकीट-चीडावाजार-कालवादेवीरोड-मंवादेवीरोड-महालक्ष्मी-चरनीरोड जुमामशजीद-गिरगांव-वालकेश्वर-मांडवीवंदर-वोरीवंदर-भाइखल्ला-परेल-कुलावा-और-ग्रांटरोडवगेराहै. वडेवडेवाजारोमें दुलफांसगीन और-रंगरौशनकियेहुवेमकान देखकर मालूमहोताहै किसीराजमहेलोंकी सैरकररहे है. वगी-विक्टोरिया-जिसकेपैयोपररवरलगाहुवा हरजगह किरायेमिलती है, रुपया-आठआने कियादेकर तीनआदमी उसमेवखूवी-वैठसकते है, औरजहा सैरकरने जानाहोजासकते है.-

भींडीबाजारकीसडक जोकि-कुलाबेकों-गइहै-सबसेचौडी है, कुलाबेमेंरुडकाबाजार ज्यादह-हरवख्तव्यापारीलोग आतेजातेहै, वडीवडी आलिशानइमारते-पासमेसमुंदरका गहेराजल-और-तरहतरहकेजहाजदेखकर दिलखुशहोगा. बंबइशहर-इसवख्त हिंदका एकगुलजार बाग कहदो-कोइहर्जकी बातनही. तवारिखोंमें पढाहोगा-बंगाल-औरबनइहाता-हिंदमें दो-गुलजारबागहै नजरकेसामने देखलो.

हरबाजारमें मेवामीठाइ-पूरीकचौरी-औरगर्मदूध तयारमिलता है, बगी-घोडे-ट्रॉम-औरमोटार-हरजगह फिरतीदेखोगे. ट्रामर्मेबेठकर जिसजगह दिलचाहो चलेजाओ. परेलसेंकुलाबा-औरकुलाबेसे ग्रांटरोडतक जानेसे बंबइकेबहुतसे हिस्सोंकी सैरहोसकती है, तरहतरहके रेशमी औरऊनीकपडे-सोनाचांदीजवाहिरात-वगेरामाल-असबाब-लाखहांरुपयोका यहापरमिलसकताहै, मगर खजाना-तरबा-ताजाचाहिये, विनातरखजानेके कुछचीज नहीमिलसकती, इग्लाः चीन-जापान-फ्रांन्स-जर्मनी-रुस-इटाली-स्पेन-अमेरिका--नोर्वे-स्वीडन-स्वीटझर्लांड-अरब-काबुल-आफ्रिका-एडन-जंजीवार-मोरसस-जिसमुल्ककीचीजचाहो यहामिलसकती है, तरहतरहकी पुशाकपहनेहुवे मुल्कमुल्केमर्द-औरत-छोटेवडेइसकदर शौखसेचलरहे है गैसेकोइ अमीरउमरावदेखलो. उमदासेउमदाकपडा--और-गेहना यहां मिलसकताहै, बंबइकेलोग निहायतखूबसुरत-जिसनेपूरवजन्ममें जेवोंपररहेमकिइहै, कतलबाजी-नहीकिइ-वह--कमालहुस्न-औरखूबसुरतरुप पाताहै, हरवख्तऔरहरबाजारमें ऐसीभीड-और-हजुम देखोगेकि-आदमीयोंका चलनाफिरनादुसवारहोगा. अंग्रेजलोग ज्यादहकरकेकोटमें औरकुलाबेमें औरनेटीवकोट--बहारकोट-सबजगह आबादहै, बंबइकी सफाइउमदा-सडकेंलंबीचौडी-मगरगलिये निहा-

यततंगहै, भाइखल्ला–चीचपोखली–परेल–और–कुलाबेमें कपडेकेकारखाने और मीलेंबहुतसीवनीहुइहै,

वंबइकीदिवाली मुल्कोंमेनामी दूरदूरसेलोग इसजलसेकोंदेखनेके लियेआतेहै, चैतमेवसंतकामेलाभी एकनामीग्रामी है, चौपाटीमें दरीयावकनारे हवाखोरीकेलिये वेठनेको कुर्शीओरवाकडे वनेहुवेहैं, चाहेजहां वेठजाओ कोइमुमानियतनही, जाडेकेदिनोमें–न–सर्दी है–न–गर्मी, वारिशकेदिनोमें करीव (७०) इंचपानी यहांपरगिरताहै, करीव मारकीटके धर्मशाला माधवदासजीकी मुसाफिरोकेलिये आरामकी जगहहै, विकटोरिया–गार्डनशहरकेउत्तरमे औरपरेलके पूरवकेकनारे वडालेंवाचोडा काविलदेखनेकीजगहहै, औरअजायवघरभी इसमे वनाहुवाहै,

वंबइकीपींजरापोल–वडी–और–इसमें जींदेहुवेजानवर जोकि–करीव–उल–मोतहैवहुतउमदातौरसेंउनकी हिफाजत किइजाती है, लाखोरुपयेइनकी खिदमतमेखर्चकियेजाते है, नोकरचाकर सवइंतजाम अछा–और लाइकतारीफकेहै. वंवइमे वडेघंटाघर (६) अवलबौरीवंदरपर—दूसरा दाउदसासनस्कुलकेपास–तीसराविकटोरियागार्डनमे –चोथामारकीटकेदरवजेपर—पाचवाप्रिन्ससडोकपर––और––छठाराजावाइटावरपर–इनकी अवाजदूरदूरतक पहुचती है, ववइमें काविल देखनेकी चीजेंकइहै मगर वौरीवंदर–विकटोरियागार्डन–कुलावा–राजावाइटावर–और—गोदी–ये—नामीजगहहै, हरजगहपानीकानल–और–रौशनीग्यासकीजारी है, युरोपियनजनरल अस्पताल–टेलीग्राफ औफिसवडेकीमती मकानहै, हाइकोर्टका मकान (५६०) फुटलवा और पाचमंजीलावनाहुवा–मेहरावदारखंभे–दोनोंतर्फ (१२०) फुट ऊंचेटावर और उनपर इनसाफ औररहेमकी मूर्त्तवनीहुइ–देखकरदि–

लकों ताज्जुब होगा. बंबइमे महराठी-गुजराती-और उर्दूजबान ज्यादहबोलीजातीहै. अठाइस-छपन-और असीरुपयेभरका सेर यहांपरचलताहै, सल्मे-सीतारेकाकाम बंबइमे-उमदा-युनीवरसीटी-सीनेटहाउस-सरकारीमहेकमे-बडेबडेआमुदेलोगोंके मकानपरलगा हुवा-टेलीफोन जिससे-घरबैठेतमामहालमालूमकरलो, एल्फींष्टोन सर्किल-कष्टमहाउस-टाउनहोल-टंकशाल-और-बंबइके-बडेकीमती और कार्बिलडेखनेके मकानहै. पश्चिमकीतर्फ कुलाबे चर्च-और-विश्वविद्यालयवगेरा बडीइमारतेहै, कइजगह गुलजारचमन-रंगरौशनकियेहुवेमकान-पानीकेफूव्वारे नजरआतेहै गवर्नमेंटहाउस बडी लागतकामकानहै-सेकडोंजगहकलकारखाने-और स्कुले बनीहुइ-जिनपर-बेशुमार दौलतसर्फहुइहै, कहांतकबयानकरे,-बंबइकी मुन्सीपालीटीमे असीलाखरुपयोंकी सालीयाना आमदनी और उतनाही खर्च है, लाइटहाउस-यानी-रौशनीघर बंबइमे तीन-जोकि-बंबइसे (१०) मीलपर दखनपश्चिमकों बनेहुवे-अपोलोबंदरसे नावमेंबेठकरवहांपरजायाजाताहै. औरअठारामील दूरसें दिखपडतेहै. जहाजवाले इनकेजरीये जहाजको लेजाते और रोकतेहै,

बंबइमे जैनश्वेतांबरमंदिर कइहै, सबसेबडा तीर्थंकर गोडीपार्श्वनाथजीका इसमे तीर्थंकर गोडीपार्श्वनाथजीकी निहायतखूबसुरत मूर्त्ति नख्तनशीनहै. बाजारकेवीच इसकदरउमदा और तीमजीला खुबसुरत बनाहुवाकि-जिसकीतारीफ बेमीशालहै, सुनहरी और मीनाकारीकाम-तीर्थोकेनकशे.-तस्वीरे-झाडफानुस-और-फर्स-संगे मर्मरकादेखकर दिलखुशहोगा, मंदिरकेदरवजेपर पीतलकेकठहरे दूरसें नजरआते है, उमदारगरौशन-और-कारीगरीदेखकर ताज्जुबकरोगे. शामकेवख्त हारमोनियम-सारंगी-तबले-और-सीतारवगेरा साजसे गवैयेलोग संगीत-और-नाचमुजराकरते है, दूसरामंदिर

सीकेकरीबमें तीर्थंकर महावीरस्वामीका इसमें तीर्थंकरमहावीरस्वामी-कीमूर्त्ति जायेनशीनहै, कइतीर्थोंकेनकशे और काम शंगेमर्मरपथरका लाइकतारीफके बनाहुवाहै, तीसरामंदिर रिषभदेवमहाराजका, इसमें तीर्थंकर रिषभदेव-भगवानकी मूर्त्ति-तख्तनशीनहै, मारवाडीश्रावकोकी आमदरफत इसमेंज्यादह-और-ये-तीनोमंदिर एकलाइनमें बनेहुवे है; चौथामंदिर तीर्थंकर शांतिनाथजीका भींडीबाजारके कौनेपर--शंगमर्मरपथरका निहायतउमदाकाम और तरहतरहके चित्र इसमेंकायम औरबरपाहै. पांचवा--मंदिर भींडीबाजारमें तीर्थंकर नेमनाथजीका--छठा--चिंतामनपार्श्वनाथजीका--सातमा शांतिनाथजीकाकोटमें, दोमंदिर मांडवीबंदरपर इनमें कछीश्रावकोंकाआनाजानाज्यादहहै, तीनवालकेश्वरमें, एकभादखलेमें और कोलाबेमें, इसतरह बडीलागतकेबनेहुवे मंदिरमौजूदहै, हरजैनश्वेतांबर यात्रीकोंलाजिमहै बंबइमेंकदमरखेंतो इनमंदिरोंके दर्शनजरूरकरे, बंबइके जैनश्वेतांबरमंदिरोंकी कहांतकतारीफकरे ! एकसेएकबढकरहै, लालबागमे नयाउपाश्रय और एकमंदिर बतौरचैत्यालयके तामीर हुवाहै,—

जैनबुकसेलर-श्रावक-भीमसी-माणककीऔफीस-माडवीबंदर शाकगलीकेनाकेपर बनीहुइ जिसमेंतरहतरहके जैनपुस्तक बीक्रीसे मिलते है, सबसेबडाबुकसेलर हिंदमेंयहीनामीहै, इनकेमकानपरउनके नामकासाइनबोर्ड लगाहुवा-जिनकों जैनपुस्तकोंकी दरकारहो-जाकर-लेआवे, जैनश्वेतांबरलाइब्रेरी--बोर्डिंगहाउस-और--स्कुलबाबु पंनालालजी-पूरनचंदजी-जहोरीका-कीमतीमकानहै, तमामहिंदके जैनश्वेतांबरश्रावक बंबइमेंआबादहै, पैदाशअछीहोनेसें सबलोगसुखी [illegible], मगर-मकानकीनिहायततंगी-छोटीछोटी कोठ-[illegible] लोगअपना गुजरकरतेहै, किरायाज्यादे औरजगहकीकोता-

इहै, व-सबबपैदाशके लोगयहांरहनापसदकरतेहै, जहां पैदाशज्या-दहहो-एशआरामकीचीजेभी वहांज्यादहहोती है,—

कइतरहके डेली-सप्ताहिक-और-मथलीअखवारयहासे जारी होते है, हरमुल्ककेमुसाफिर यहांआतेऔरजाते है. कोइरौजएसा-न होगा जिसरौज दसपनरांह हजारमुसाफिर वबइमे-न-आयेगयेहो,-दू-सरेशहरमे कमदेखोगें,-राज्यअग्रेजसरकारका-और-इन्साफीकानुन जारीहै,-कोइकिसीकों तकलीफनहीदेसकता, अपनेअपनेमकानमे सव लोगचैनकररहे है. जोशख्शववइसे रवानाहोकर हिदमेंजैनतीर्थोंकी जियारतकरनाचाहे इसरास्तेचलकरकरे. बवइसे बी-बी-सी-आइ रैलके--जरीये-कुलाबा-चर्चगेट-मरीनलाइन-चरनीरोड-ग्राटरोड-महालक्ष्मी-परेल-एलफीस्टनरोड--दादर-माटुगारोड-माहिम-बाद-रा-शाताकुज-अंदेरी-गोरेगाव-मालाड-बोरिवली-भायदर-वस-इरोड-नलसोपारा-वीरार-सोपाला--पालघर-बोइसर-वानगांव टेहणुंरोड-घोलवड-वेवजी-सजान--भीलाद--दमणरोड-उदवाडा पारडी-वलसाड-डुगरी-विल्लीमोरा-अमलसार--वेडछा-नवसारी मरोली-और-सचीन होतेहुवे सुरतजाय, रैलकिराया दो--रुपये-तीन आने,—

☞ बयान—सुरत,

कुलाबाटेशनसें (१६७) मील उत्तर-ओर-भरुअछसे (३७) मीलदखनकों तापीकेदरियेकनारे समुदरसें (१०) मीलपूरवजिलेका सदरमुकाम सुरतशहर एकगुलजारवस्ती है, सन (१८९१) की म-र्दुमशुमारीकेवख्त फौजीछावनीकों मिलाकर सुरतकी आबादी (१०९२२९) मनुष्योंकीथी, टेशनकेपास एकसरकारीसराय बनी हुइ जिसमें मुसाफिरलोग व-खूबीकयामकरे. मकानवडेआलिशान और रगरोशन कियेहुवे तापीकनारे सन (१५४०) इस्वीकाबना

हुवा एकपुख्ताकिल्लाकि-जिसकीदिवार आठफुटचौडी और चारो तर्फ उमदागुंवज बनेहुवे है, विक्टोरियाबाग एकदेखनेकीजगहहै, दिल्लीजानेकी सडककेनजदीक (८०) फुटउंचा घटाघरसन (१८७१) का तामीरकियाहुवा-जिसकी-अवाजदूरदूरतकजाती है इसपरचढ-करदेखोतो तमामसुरतशहर दिखपडताहै, हाइस्कुल-खेरातीअस्प-ताल-और-रुइकेकटकल-कारखानेबडेकीमतीवनेहुवे है, सडकोंपर रातकोंलालटेनोंमें झलाझलरौशनी, चदनकीलकडीपर सुरतका न-कासीकाम मुल्कोंमेमशहूर-और (३६) रुपयेभरका सैर यहापर जारी है. तापीनदीकापुल (१७) खंभोपर बनाहुवा निहायतपुख्ता, सतपुडेपहाडसे निकसकर तापीनदी नजदीकसुरतके (१४) मील पश्चिमकोंजाकर-खंभातकीखाडीमें गीरी, सुरतजिलेके जगलोमें तेंदुवे-भालु-सुअर-और-भेंडिये वगेरा वहुतसेंजानवर रहाकरतेहै सन (१३४७) इस्वीमें महम्मदतुगलककी फौजने सुरतको फतेहकिया, सन (१३७३) इस्वीमे फिरोजशाह तुगलकने सुरतमे एककिल्ला ता-मीरकरवाया, उसवख्त तिजारतकी वडीतरक्कीथी. सन (१५७३) इस्वीमे वादशाह अखबरने सुरतको फतेहकिया, जहांगीर और शाहजहांकी अमल्दारीकेवख्त सुरत अछीरवन्नकपररहा, पोर्तुगाल-वाले सुरतमें तिजारत करतेथे तवारिखोसे जाहिरहै, होलाडवालो-कीकोठी सन (१६१६) इस्वीमें यहांपरवनी. सन (१६६८) में फ्रांसवालेकीभी कोठीवनी. सन (१८००) इस्वीके करीव सुरत और-कस्वा-रांदेर अंग्रेजसरकारके इख्तियारमेंआया. सन [१८३७] इस्वीमें सुरतमे वडीभारीआगलगी, जिसमें कइमकानात जलगये, कहते है [१०] मीलतक आग उसवख्त फैलगइथी, तापीनदीकी वाढभी उसीसालमे सुरतपर फिरगइ, जिससेवहुतनुकशान लोगों-काहुवा, और कइसोदागिर उसवख्त सुरतकों छोडकर वंबइकों चलेगये,—

जैनश्वेतांबर श्रावककरीब [४००] और-जैनश्वेतांबरमदिर-बडाचौटा-नाणावट-गोपीपुरा—छापरियासेरी—हरिपुरा--नयापुरा वगेरामे वडीवडीलागतके बनेहुवे है, और उनमे-वडीवडीआलिशानमूर्त्तें तख्तनशीनहै. कइजगह मिनाकारीकाम-और-उमदाचित्रकारी देखकरदिल तर-व-ताजाहोगा, मकान-साधुलोगोकेठहरने के वडेचौटेमे—और—गोपीपुरा वगेरामेबनेहुवे है. धर्मशाला--शेठ--प्रेमचंद रायचदकी जैनश्वेतांबर यात्रीयोकेलिये आरामकी जगहहै, यात्रीलोगवहांकयामकरे. कोइमनानही, टेशनसे एक मिलके फासलेपर शहरकी आवादीशुरुहै, वाजार गुलजार और जिसचीजकी दरकारहो यहा मिलसकती है, सोना-चांदी-जवाहिरात-मेवामीठाइ-और-उमदा रेशमीकपडे जैसेचाहिये यहापरमिलसकेगे. सुरतकीबर्फी मुल्कोंमेमशहूरहै, सल्मेसितारेका काम यहा इसकदर उमदाबनताहै जिसकीतारीफ बेमीशलहै. तापीके सामने कनारे कस्बा-रादेर-एक गुलजारबस्तीहै, मर्दुमशुमारी (१०९२६) मनुष्योंकी-दो-जैनश्वेतांबरमदिर-और-कइ-जैनश्वेतांवरश्रावक यहांपर आवादहै, हमने संवत् (१९४२) मे-सुरतशहर देखा—और वहांचौमासाभी कियाहै. सूरतसें-अमरोली-सायन-कीम-कोसबा-पानोली-और-अकलेश्वर-होतेहुवे भरुच-जाना, रैल किराया आठ आने.

[तवारिख—अश्वावबोधतीर्थ औरशकुनिकाविहार]

भरुअछका दुसरानाम अश्वावबोध तीर्थहै, संस्कृतजबानमें घोडेको अश्व-बोलतेहै. तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीने यहा एक-घोडेकों ताल्मिधर्मकी दियी-और-उसको-ज्ञानहुवाथा—इसलिये इसका नाम अश्वावबोधतीर्थकहलाया. जमानेहालमें मनुष्योंकोभी ज्ञानहोनादुस्वारहोगया-जानवरोंकों कैसे हो. ? पेस्तर जानवरों-

कोंभी-ज्ञानहोजाताथा-और-पूरवभवकी बात उनके ज्ञानमें दिख-पडतीथी.जिसघोडेको तीर्थकर मुनिसुव्रतस्वामीने तालीमधर्मकीदि-इथी-उसको-जातिस्मर्णज्ञानहुवा और वहअपनापुरवभवको देख-नेलगा, ज्ञानीयोंकी सोबतसें जानवरोंकोंभी इतनील्लियाकत होजा-तीहै, जमानेहालमें वैसेज्ञानी मौजूदनहीरहे-मगर-जैसेहै उनकीभी सोवतकरनाचाहिये. जिसरौजसे घोडेकों ज्ञानहुवा-उमरभर उसने किसीजीवको नहीसताया, जब उमरउसकी खतमहूइ-मरकर-स्व-र्गमें देवगतिको पाया, और जबवहा अपनेअवधिज्ञानसे देखनेलगा तो-उसकों मालूमहूवाकि-मुजे-जोस्वर्गमीलहै वदौलततीर्थकर मु-निसुव्रतस्वामीकी मीलहै फोरन! स्वर्गसें भरुअछमें आया, और जहांउसनेज्ञान पायाथा-तीर्थकर मुनिसुव्रतस्वामीका मंदिरतामीर करवाया समवसरणकी शिकलबनाइ, और उसकेसामनेएक-मूर्त्ति -घोडेकी तामीरकरवाइ तीर्थकरमुनिसुव्रतस्वामी-तालीम धर्मकी देरहेहै-ऐसीशिकलभी वनायी, गरजकि-उसदेवने शहरभरुअछमें अश्वावबोधतीर्थकीनीवडाली उसरौजसे अश्वावबोधतीर्थ-कहलाया.

भरुअछका तीसरानाम-शकुनिकाविहारभी-जैनकितावोंमेंमश-हूर है, सिहलद्वीपमे पेस्तर एक-श्रीपुरनामका शहर आबाद था, उसवख्त वहांके राजाकों सातलडके-और-एकलडकी जिसकानाम सुदर्शना-था, निहायतखूबसुरत थी, वडीहोनेपर उसने इल्मपढा, और जब-लाइक उमरहुइ-तो-उसके वालिदकों इसवातका फिक्र-हुवा कि-किसकेसाथ इसकीसादीकरना चाहिये, एकरौजकीवातहै सुदर्शनालडकी-अपने वालिदकेपासवैठीथी शहरभरुअछका एकध-नेश्वरनामका शाहुकार वहां उसके दरवारमे आया; राजाकों मु-जरा किया-और-बाद उसके अपनीसफरकेवारेमें कुछवातेंकरने लगा,-वातेंहोतीथीकि-अचानक उसकों छीकआइ, और मुंहसे

नमो अरिहंताणं-पद बोला, सुदर्शनाको उसपदके सुनतेही मूर्छा आइ. और जमीनपर गिरपडी, लोगोने समझा बनिया कोइजादुगिर है, कुछअसरकिया मालूमदेता है, यहांतककि-कइलोग-उसको मारनेपर आमादा हुवे. उधर सुदर्शनाको बादमूर्छाके जातिस्मर्णज्ञान पैदाहुवा, जातिस्मर्णज्ञान उसको कहतेहै-जिसकेजरीये अपना पूरवभव दिखाइ दे, सुदर्शना जब सचेतहुइ और देखतीहै-तो-उस बनियेपर सबलोग नाराजहोरहेहै, कहनेलगी क्यो इसकोतंगकरते हो ? लोगोने कहा तुमपरइसने जादुकियाथा. सुदर्शना कहनेलगी सब-झूठेहो, यहबडानेकहैकि-जिसकीनिगाह धर्मपरइतनीबढीहुइहै, इसनेजो-नमोअरिहंताणंपदपढा, सुनतेही मुजेमूर्छा आइऔरज्ञान हुवा. इसबातको सुनकरसबलोग उसकीतारीफकरनेलगे-औरकहने लगेकिबडानेकशख्शहै,-

राजानेसुदर्शनासे पुछाक्योंक्या ! माजराहै, ? और किससबबसे तु ! हेरानपरेशानहै, ? उसनेकहा नमोअरिहंताणपदसुननेसे मुजेज्ञानहुवा-औरअब-मै--अपनापूरवभवदेखतीहु. नर्मदाकनारे भरुअछशहरके कोरंटवनमे-मै-एक-शकुनिका-(यानी) आस्मानमे उडनेवाली चीलथी. औरवहाके एकपेडपर-रहतीथी, बारीशकीमौसिमकेवख्त सातरोजतकबारीशहुइ. औरएकदमभरभी-न-थमी, मुजेइतनीभूखलगीकि-उसवख्त-मेराजिनादुसवार था, आठवेरोजपेडसेउडकर-मै-भरुअछशहरमेगइ. और एकशिकारीके मकानपरजेरपलीहु-तो-मासकाढेरलगाहुवादेखा, मैनेउसमेसे मासका एकटुकडाउठाया. औरउडकरकोरंटवनमेअपने कयामीमकानपर आइ, शिकारीतीरकमानलेकर मेरेपीछेआया, औरनिशानालगाकर तीरमाराकी-मै-जमीनपरगिरी. औरचिल्लानेलगी, एक-जैनाचार्य जोकि-उसरास्तेसेकरनिकलतेथे जातेथेमेरीरोनेकी अवाजसुनकर

पासआये. औमुजेपरमेष्टीमहामंत्रसुनाया. मैंनेउसमंत्रको अच्छासमझा औरदिलमेंयकीनलाइकि-दुनियामें-उमदावस्तु धर्महै, तकलीफके मारे-मै-वहां-मरगइ, औरआपकेघरआनकर लडकीपैदाहुइ, शिकारीमांसकाटुकडालेकर अपनेमकानकोंगया. राजाइसवातकोसुनकर ताज्जुवकरनेलगाकि—दुनियामेंज्ञानकीवरावर कोइचीजनहीं, मेरीलडकी निहायतखुशनसीवहैकि-जिसकोंपूरवभवकाज्ञान हुवा, सुदर्शनाकहनेलगी अपनेवालिदसेअवमुजे भरुअछशहरजानेदो, उसजमीनकोंदेखनेकी वडीउमेदहै, औरवहाजाकर उसतीर्थकी जियारतकरुंगी, राजानेअपनेदिवानको हुकमदियाकि-वडीहिफाजतसे इसकों भरुअछलेजाओ, धनेश्वरसाहुकारकोभी कहाइसकोअपनेसाथ लेतेजाना, समुदरकेरास्तेकेलिये कइजहाजशाथदिये. नोकरचाकर चपरासी फौज तरहतरहकेहथियार-वाजा-नोवतखाना औरखानपानकी चीजेशाथदिइ.—

सुदर्शना वडीतयारीसे भरुअछआइ, शाथमेउसके वडीफौज सुनकर भरुअछके राजाने समझाकोइ गनीमआताहै, अपनीफौज तयाररखो, ऐसा-नहोकि-राज्य-छीनलेवे, दुनियामें सवकों अपना फिक्रपडाहै, उसकाआना यात्राकेलियेथा, मगरराजासमझगया गनीमआताहै, सुदर्शनाकेजहाज समुंदरकनारेउतरे, औरउसकादिवान नजरानालेकर जयराजाकेपास जानेलगा लोगोनेसमझलिया कोइ गनीमनही, किसीराजेका दिवानहै, जववह-भरुअछमेंआया और नजराना सामनेरखा-तो-राजानिहायत खुशहोकर कहनेलगा कहासेऔर किससवबकेलिये आनाहुवा,? दिवाननेकहा ! मे !!-सिहल्द्वीपकेराजाका नौकरहु-औरउनकी लडकीकेशाथआपके शहरकी सफरकोंआयाहु, सुदर्शनायहाएक जैनमदिरतामीरकरवाना चाहती है, अगरआपका हुकमहोसवकाम ठीकहोगा, आपकेशहरका एक

शाहुकार जोकि–हमारेसिंहलद्वीपको गयाथावहभी हमारेशाथहै, अ-
गरआपका हुकमहो–तो–तमामफौज–लवाजमा–औरसुदर्शनाशहरमें
आवे, राजानेकहा जल्दीआओ!–मै–बहुतखुशहुं, मंदिरकेलिये जि-
तनीजमीनचाहिये लेलो! मैचाहताहु–वडेजुलुससें सुदर्शनाकी पेश-
वाइकिइजाय, औरशहरमें कयामकरायाजाय, दिवाननेजाकर सब
हाल सुदर्शनाकोंकहा, तयारीकिइ, औरभरुअछकेराजानेवडेजलसेके
शाथ शहरमेंलाकर राजमहेलकेपास कयामकरवाया, सुदर्शनानेभ-
श्वाववोध तीर्थकी जियारतकिइ. औरतीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीकी
मूर्त्तिकी पूजाकरके उपवासव्रतकिया औरकहनेलगी शुक्रि[illegible]
रौज–जो–मुजेकमनसीवको इसतीर्थकीजियारत नियामतहुइ, [illegible]
शख्श तीर्थोंकीजियारतको जातेहैलाजिमहै–उनको वहांजाकर [illegible]
व्रतनियमकरना,

सुदर्शनाने भरुअछमे जमीनमौललेकर जैनमंदिरवनवाना [illegible]
किया औरवहुतरौजतकवहारही, धर्मचुस्तआदमी [illegible]
नको अपनेघरसेंभी वढकरसमझतेहै, जिसजैनाचार्यने [illegible]
जीवको शकुनिकाकेभवमें परमेष्टिमहामत्र सुनायाथा–[illegible]
आमलोग और सुदर्शनाउनके दर्शनोंकोगइ, और [illegible]
राज! मैनेपूरवभवमें क्यापपाकियाथाकि–जिससें–[illegible]
ह? और किससववसे शिकारीने मेरीजानलिइ. [illegible]
उनोनेकहा तु! शकुनिकाकेभवसें पेस्तरकेभवमें[illegible]
जाकीलडकीथी, जोकि–वैताढयपर्वतकी उत्तरश्रेणीमें [illegible]
रीकी अमल्दारीकरताथा, उसभवमेंतेरानाम [illegible]
रौजतु! अपनेरिस्तेदारोंकेशाथ दखन[illegible]
एक नदीकेकनारे अपनादिल बहलानेकेलिये [illegible]
[illegible] सापनदीकनारे फिरताथा [illegible]

पथ्थरमारा और पीछेफिरफिरकर निहायततकलीफदिइ, उसतक-लीफसें उसकामरना होगया, औरतुं! वहांसेअपनेरिस्तेदारोंकेसाथ आगेकों रवानाहुइ, आगेजाकर दूसरेपडावमेंतेने एकजैनमदिरदेखा, और उसमेजाकर जिनेंद्रकीमूर्त्तिके दर्शनकिये और वडीभक्तिकेसाथ देवकीइबादतकिइ, जबरसोइजिमनेकी तयारीमेंथी-एक-साधवीव-हांतेनेदेखी, उनकेपासजाकर धर्मकीवातेसुनी और खानपानकीची-जदेकरनिहायत खिदमतकिइ, वहांसेचलकर बहुतमुदततक तुं! मु-साफरीकरतीरही, वैताढ्यपर्वतकी दखनलाइनकोंजाकर बादकितने कअर्सेके फिरअपनेघरकोलोटी, फिरवहांसे मरकर इसीभरुअछके कोरंटवनमें शकुनीपरीदहुइ. जिससर्पको तेनेपथरसेमाराथा-वह शिकारीहुवा, तेनेउसकेघरसे मांसकाटुकडाउठाया, और उसनेतेरे-को तीरसेमारडाली. मैने--जोतुजकों परमेष्ठिमहामंत्र सुनायाथा वदौलतउसकी-तुं! सिहलद्वीपमे राजकुमारीहुइ, जो तेनेपूरवभवमें जिनमंदिरकेदर्शन और साधवीकी खिदमतकिइथी वदौलतउसकी-तेने-यहां जैनधर्मपाया,—

सुदर्शना अपनापूरव भवसुनकर निहायतखुशहुइ, और कहने लगी आपकी-मै-बहुतआसानमंदहुं, और तारीफकरतीहुं आपके ज्ञानकीकि-ज्ञानीहो-तो-ऐसेहो, सुदर्शना उसरोजसें निहायतधर्म पावंदहुइ. और-जो-मंदिरवनवाना शुरुकियाथा पुराकिया. नर्मदा नदीकनारे कोरंटवन-शकुनीका-और-वोडवृक्षका-आकार, शिकारी उसकेतीरसे किसकदर अपनामरनाहुवा-जैनाचार्यने किसतरह प-रमेष्टीमहामंत्र सुनायाथा-वगेरा जोजोहाल अपनेपरगुजराथा-तमाम आकार संगमर्मरपथरमे उकेरवाकरवनवाया. और अपनेपूरवभवके नामसे उसमंदिरकानाम शकुनिका विहाररखा, धर्मशाला--और-दानशाला वगेरावहांवनवाइ, और तीर्थकेखर्चेकेलिये बहुतदौलतदे

कर अपनेवतनकोंलोटी. शकुनिकाविहारतीर्थ उसरोजसेजारीहुवा, सुदर्शनाकेवालिदने एकराजकुमारकेशाथ उसकीसादीकिइ, तावेउ-मरउसनेसुखचैनपाया, धर्मकीतरक्कीकिइ, और उमरपुरीहोनेपर मर-करस्वर्गकोगइ,—

आजकल कइलोग पूरवजन्मको नहीमानते, और इसबातपर हंसी उडाते हैकि-पूरवजन्म किसनेदेखा. ? मगरखयालकरो ! पूरव जन्म-न-होतातो-जन्मतेही एकसुखी-और-एकदुखी-क्यों, ? एक शख्श अपनाकामखराबकरताहै मगरअपनेकोंउसपर मोहब्बतपैदा होती है, औरएकशख्स अपनेको-चाहताहै, मगरउसपरअपनेको मोहब्बतनहीहोती. बतलाओ ! इसकीक्यावजहहै, ? इसकीवजह यहहैकि-वह-तुमारेपूरवभवका दुश्मनहै.

(सूत्र-आवश्यके अवलअध्ययनका फरमानाहैकि-)

यंदृष्टावर्धतेकोपः स्नेहश्चपरिहीयते,
सविज्ञेयोमनुष्येण-एपमेपूर्ववैरिकः, १,
यंदृष्टा वर्धतेस्नेहः-कोपश्चपरिहीयते,
सविज्ञेयोमनुष्येण-एपमेपूर्ववांधवः, २

सबुतहुवा पूर्वजन्मजरुरहै, जिसकोंदेखकर अपनेको क्रोधपैदा होताहै जाननाचाहिये यहअपनापूरवभवका कोइदुश्मनहै, और जि-सकोंदेखकर मोहब्बतपैदाहोतीहै-जाननाचाहिये यहअपनेपूरवभवका कोइ रिस्तेदारहै, अश्वाववोध-और-शकुनिका विहारतीर्थ मुनिसु-व्रतस्वामीके शासनकालमें जारी हुवेथे. जिसको आज करीब (११८७४३३) वर्षगुजरे, जिसकोंशकहो कल्पसूत्रखोलकर देखे, तीर्थंकरमुनिसुव्रतस्वामीके पीछे तीर्थंकरनमीनाथहुवे, नमिनाथजीके बाद-तीर्थंकरनेमिनाथ-और नेमिनाथकेबाद-तीर्थंकरपार्श्वनाथहुवे,

पार्श्वनाथजीकेपीछे–तीर्थंकरमहावीरस्वामी और बादउनके निर्वाण होनेके (४७०) पीछेविक्रमसंवत् जारीहुवा, बडेबडेखुशनसीबइस तीर्थकीतरक्की और मरम्मतकरतेचलेआये. मंत्रविद्याके–चक्रवती–जेनाचार्य–श्रीमत्–खपुटाचार्यमहाराज–जबभरुअछमे पधारेथेमंत्रबलसें बडेबडेचमत्कार उनोनेयहांदिखलायेथे, आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनमें उनकाबयानदर्ज है,–जमाने–राजा–कुमारपालके–जैनाचार्य–हेमचंद्राचार्यभी भरुअछमेपधारेथे. उसवख्तएक–मिथ्यादृष्टि–सैधवादेवी–जोकि–यात्रीको तकलीफदेतीथी, हेमचंद्रसूरिजीने मत्र बलसेउसको हठादिट. बडेबडेआश्चर्योंकी भूमि–भरुअछतीर्थ–निहायतपुरानीजगहहै, कहांतकबयानकरे! जिसकेबडेभाग्यहो–इसतीर्थकी जियारतकरे, कइदफेतुम भरुअछकेरास्ते बवइगयेआये, मगर ताज्जुबकीवातहै भरुअछतीर्थकी जियारत–नहि–किइ, मुनासिवहै अगर मौकाबनेतो जरुरइसतीर्थकी जियारतहासिलकरना. हमने इसतीर्थकी जियारतकिइहै. अश्वावबोध–और–शकुनिका विहारके पुरानेमंदिर अबनहीरहे, मगरतीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीका आतिशय युक्त–मंदिर अबभी मौजूदहै.

जमानेहालमे–बंबइकुलाबाटेशनसें (२०४) मील–उत्तर, और वडोदाटेशनसे (४४) मील–दखन–नर्मदाकनारे जिलेकासदर मुकामभरुअछशहर अबभीरवन्नकालिये है. सन (१८९१) इस्वीकी मर्दुम–शुमारीकेवख्त–भरुअछकीमर्दुमशुमारी (४०१६८) मनुष्योंकीथी, भरुअछकीचारोतर्फ पेस्तरपुख्ताकोट बनाहुवाथा उसका कुछहिस्सा दखनकीतर्फअबभीमौजूदहै, करीब (१) मीललंबीऔर (३०) फुटउंचीपथरकीदिवार अबभीमजबूतबनीहुइहै,–नर्मदाके पास–पहाडीपरएकपुरानाकिलाकि–जिसमे–अस्पताल–गिर्जाघर–स्कूल–स्मॉलकॉजकोर्ट–पोस्टऑफिस–लाइब्रेरी–जिलेकीकचहरीया–जैलखा-

ना–और–होलांडवालोंकी पुरानीकोठीवनीहुइहै, नर्मदाकीचौडाइ भरुअछकेपासकरीव (१) मील–औरउसपरकीमतिपुलतामीर है, कइजगहकेपुल अपनीनजरसेदेखेगये मगरयहपुलभी–हिंदमें–एक नामीग्रामी है, अमरकटकके पाससेनिकसकरनर्मदा मध्यहिंदमेंहोती हुइ (७००) मील–वहकर–भरुअछसे (३०) मीलपश्चिमकों जाकरसमुदरकोंमिली,

सन (६०) इस्वीसे (२१०) इस्वीतक भरुअछमें जैनराजोंकाराज्यथा, चीनामुसाफिर हयात्तसाग–जोकि–सन (६२९) इस्वीसें (६४५) तकहिंदमेरहाथा अपनेसफरनामेमें वयानकियाहै मैने–भरुअछशहरकों देखा, उसवख्त वौधोकीभीनहां आवादीथी, और कइवौधमंदिरथे, सन (७४६) इस्वीसें–सन (१२९७) इस्वीतक भरुअछ–अणहिल्लपुरपटनके राजपुतराजोके तावेमें रहा. वाद मुसलमानोंकी अमल्दारीकेवख्त उनकीअमलदारीभी यहाहुइ, जमानेहाल सरकारअंग्रेजवहादूरकी अमल्दारी यहापरजारीहै, वडे वडेमकान–और–वाजार–निहायतलवा–तरहतरहकी दुकाने और जिसचीजकी दरकारहो–यहापर–मिलसकती है, जैनोकी आवादी करीव (५००) मनुष्योंकी–और–महोले–श्रीमालीमें–तीर्थंकरमुनि सुव्रतस्वामीका निहायतउमदा और शिखरवदमंदिरतामीरहै, और तीर्थंकरमुनि सुव्रतस्वामीकी–अतिशययुक्तमूर्त्ति–उसमें तख्तनशीन है. एकमंदिरपुरेमे और कइश्रावकवहांआवादहै, जैनश्वेतावरयात्रीयोकेलिये एकधर्मशाला–श्रीमालीमहोलेमें वनीहुइहै, जोकोइजैनयात्री–इसतीर्थकी जियारतकरनाचाहे शौखसेकरे, कोइतकलीफ–नहोगी,–जिलेभरुअछमें इसवख्तजवान गुजरातीवोलीजातीहै,–कौशांबीकारहनेवाला धनशेठ–पाचसोजहाज लेकरभरुअछसेसमुदरके रास्ते मुल्कदसनकी मुसाफरीकोंगयाथा, नइनइआश्चर्योकीभूमि–भ-

रुअछ-शहरहै, कहातकवयानकरे !!-जिनकेवडेभाग्यहो-इसतीर्थकी जियारतकरे. भरुअचसे-रवानाहोकर चमारगांव-पालेज-लकोदरा -मियागांव-काशीपुरा-इटोला-वरनामा-मकरपुरा- विश्वामित्री-होते शहरवडोदेकों जाना, रेलकिराया नवआने.

☞ बयान-शहर-वडोदा.

वंबइसे (२४८) और-सुरतसे (८१) मीलउत्तरकोवडोदा शहरएकउमदाजगहहै, सन (१८९१) इस्वीकी मर्दुमशुमारीकेवख्त फौजीछावनीकों मिलाकर वडोदेकी मर्दुमशुमारी (११६४२०) मनुष्योंकीथी वडोदेराज्यमें (५११) स्कुल, वडोदेकेतख्तपर जमानेहालमे महाराज-सियाजीरावबहादूर—तख्तनशीनहै विद्या और इल्मकीतरक्की—और—सबरिया—याचैनकररही है, वंवइ हातेमें चौथे नंबर शहर वडोदा-वडेवडे शरीफोंके—कीमतीमकान वाजारवडागुलजार—जिसचीजकी दरकारहो—यहां मिलसकती है, इक्का—वगी—हरवख्तकिरायेपर तयारहै वेठकरजहां-जी-—चाहेसैरकरआओ, रैलटेशनसे थोडीदूरपर (४००) फुटलंवी और (१२५) फुटचौडी-वडीकोलेजजिसमें-वी-ए-तकइल्मपढा-याजाताहै वडीलागतकामकानहै, वडेवागमेंचीडियाखानाजिसमे-तरहतरहकेजानवररखेहुवे है. नजरवाग-एकगुल्जारचमन जिसमे तरहतरहकीवनास्पति औरपेंडखडे है, एकमहेलमेंफर्समारवलपथर-का-और-अजनवी-चीजेंरखीहुइ-देखकरादिलखुशहोगा, टेशनके पासदोधर्मशाला—वास्तेमुसाफिरोंके वनीहुइहैजिसमेंवडीधर्मशाला दिवानसाहवकी तामीरकरवाइहुइ निहायतपुख्ताहै, अजवा-झील्से नलपानीशहरमें लायागयाहै, वडोदेमें—जैनोकीआवादीफगीव

(२०००) की–और–कडवडेआलिशान जैनश्वेतांवरमंदिर वने
है, दर्शनकरकेदिलखुशहोगा. घडियालीपोलमें–श्रावकोंकीआवा
ज्यादह,–और––जैनश्वेतांवरमुनिजनोंकेलिये मकानभीइसीमहोले
है, वडोदेसेअगरडभोइकस्वेको जानाहोतोब्राचलाइनमें वहांजान
करीव (१४) मीलकेफासलेपर दखनकीतर्फडभोइकस्वा आवादी
सन (१८९१) कीमर्दुमशुमारीकेवख्त––डभोइकीमर्दुमशुमा
(१४५३९) मनुष्योंकी–जिसमेंकरीव (५००) जैनलोगहै. जै
नश्वेतांवरमंदिरऔर–जैनउपाश्रय–वगेरावनेहुवे है, डभोइकेमंदिरो
दर्शनकरकेवापीस वडोदेआना, औरवडोदेसेरवाना होकरवाजुवा
वासद–नावली–आनंदजंकशन–आगास–पेटलाद–नार–तारापुर
और–सयामाहोतेखभातजाना, रैलकिरायानवआना नवपाइ,

☞ [बयान–शहर–खंभात.]

ववइहातेंमे समुदरकनारे खभातशहरपुरानीवस्ती है, सन
(१२००) केकरीवखभातशहर अणहिल्लपुरपटनके महाराजोकेता-
वेमेंथा. सन (१२९७) इस्वीमेंमुसलमानोने जव अणहिल्लपुरपाटनको
फतेहकियाखभात उसवख्ततरक्कीपरथा, सन (१६१३) के असेंमे
जवहिंदमेअंग्रेजोकी तरक्कीहोनेलगी–उसवख्त–पोर्चुगाल–और–होलां-
डवालोंकीकोठी खभातमेंवनीहुइथी, वादजवसुरतकी तरक्कीहुइ–
खभातकीतिजारत कमहोनेलगी, सन (१८९१) की–मर्दुमशुमा-
रीकेवख्त खभातकीमर्दुमशुमारी–(३१३९०) मनुष्योंकीथी, जैन
श्वेतांवरश्रावकोंकी आवादीऔर कइवडेवडेजैनमंदिर यहांपरमौजद
है. जिसमेंस्थंभन–पार्श्वनाथजीका–मंदिरनामी है. मुनिजनोंकोठह-
रनेकेलिये मकान–और–जैनपुस्तकालय यहांवहुतवडाहै जोकि रा-
जाकुमारपालका कायमकियाहुवा–ताडपत्रपरलिखेहुवे जैनग्रंथइसमें

मौजूदहै खुशनसीवोंने किसकदरइल्मकी तरक्कीकिइथी ! आजउसकी हिफाजतहोनादुसवारहोगया, लकडीऔरपथरकाकामयहांकामुल्कोमें मशहूरहै. अमल्दारीयहांपर नवावसाहवकी-शाहिमकान वडीलागतके वनेहुवे वाजारवडीरवन्नकका–और–उसमें जिसचीजकीदरकारहो मिलसकती है, हमने शहरखंभातकों देखाहै, यात्रीयोंकों ठहरनेकेलिये धर्मशालावनीहुइहै. कोइतकलीफ–नहोगी, खंभातसेंजहाजमें सवार होकर समुंदरकेरास्ते––कावी–गंधारतीर्थकोंजाय, जोकरीव––सात कोशकेफासलेपरहै, कावी–औरगंधार–दोनोंअलगअलग कस्वे है मगरवसवव तीर्थकेएकहीनामसेमशहूरहै, दोनोमेंवडेवडे कीमतीमं-दिर वनेहुवे–एकमेंतीर्थकर रिषभदेव–और एकमेंतीर्थकर धर्मनाथ-जीकीमूर्त्ति–तख्तनशीनहै, गधारमेंअमीझरा–पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति निहायतखुवसुरत–दर्शनकरके दिलखुशहोगा, धर्मशाला दोनोजगह वनीहुइ–यात्री–इनमेंकयामकरे–और–तीर्थकी जियारतहासिलकरे, कावी–गंधारमें कोइजैनश्वेतांवरश्रावकनही. खंभातकेजैनश्वेतांवरश्रा-वक इसतीर्थकी निगरानीरखतेहै, कावी–गंधारसेफिरउसीसमुंदरके रास्तेखंभातआवे और खंभातसें रैलमेंसवारहोकर–सयामा–तारापुर नार–पेटलाद–आगास–आनद–वोरीआवी–नाडियाद –महम्मदावाद –और–वारेजाक्षोतेक्ष्वे–शहर–अहमदावादको जाय, रैलकिराया दश

र–अहमदावाद,]

तेरे, वंवर्द... शिरोताज सावरमतीके वायेंकनारे

का–अ ... –वतके कुलावेटेशनसे (३१०)

पासदोथ ... वाद एकगुल...

दिवानसाहे ... –अहमदावाद–जंकशन–वडीलागतका वनाहुवा–झला-

नल्पानीकाह रंगरौशनकियेहुवेमकान–और–खूवसुरत–कमालहुस्न–

मर्द–औरत–हरजगह नजरआते है, पेस्तर अहमदाबादमे (३६०) महोले आबादथे, औरबडीरवनकथी. अवभी किसीकदर कमनही. इका-वगी–हरजगह तयारमिलते है, किरायादेकर जहा–जी–चाहेसैर करआओ.–सन (१४११) इस्वीमे सुलतान, अहमदने–शहर-पनाह बनाया–अहमदाबादकी तरकीकिइ. सन (१४८६) मे–महम्मुदशाह बेगडाने शहरपनाहको दुरस्तकरवाया, सन (१५११) में अहमदाबादकी आबादी और तिजारतवढी, सन (१५७३) में बादशाहअखबरने–अहमदाबादकों फतेहकिया, सन (१७३८) में महाराजदामाजी–गायकवाडने अहमदाबादके तख्तपर अपनीअमलदारीकिइ, जमानेहालमे राज्यअग्रेज सरकारकाजारी है. मुल्क गुजरातमे–सुरत भरुअछ–खेडा–पचमहाल–और–अहमदाबाद–ये पांचअग्रेजी–जिले है.–महीकांठा–रेवाकाठा–येभी–एजन्सी है,

साबरमतीनदीकापट (६००) गजकाचौडा हरवख्त गहरापानी इसमेंभरारहताहै, अरबलीपहाडसें निकलकर दखन-पश्चिमको (२००) मीलतक बहतीहुइ खभातकेपास समुद्रकीखाडीको जामीली. शहरसे (३॥) मीलपूर्वोत्तर फौजीछावनी बडीगुलजारजगहहै, अहमदाबादकी मर्दुमशुमारी फौजीछावनीकों मिलाकर (१४८४१२) मनुष्योंकी, टेशनकेसामने वास्तेमुसाफिरोंके धर्मशालावनीहुइहै, पानीइसमें कयामकरे, शहरकीसडकें लबीचौडी–और–रातकोंउनपर लालटेनोंकी रौशनीहुवा करती है, मानकचौक–जहोरीवाडा–माढवीपोल–पतासापोल–दाणापीठ–वगेरावडेवडे महोले है. जैनश्वेताबर मदिरअन्दाज (१२५) बडीलागतके और पुख्तावनेहुवेहै, बतौर चैत्यालयके छोटेछोटेकइमदिरहै, शहेरकीउत्तरतर्फ सडकसें (६००) गजदूर हठीभाइका तामीरकरवायाहुवा तीर्थंकर धर्मनाथजीकावडा आलिशान-मदिर-कावीलेदीदहै, सन (१८४८) मेंयह (१०००००)

लाखरुपयेकी लागतका तामीरकरायागया, (१३०) फुटलंबा-और (१००) फुट चौडा-चारोंतर्फ छोटेछोटे (५२) मंदिर और उनमेंमूर्त्तियें जायेनशीनहै, तीर्थंकरधर्मनाथजीकी मूर्त्ति—निहायत खूबसुरत-और इसके ललाट ओर स्कंधोपरभयजवाहिरात-सोनेकेपते लगेहुवे है, शहरमेजैनमुनियोंको ठहरनेकेलिये कइमकान-कइजैन पुस्तकालय-और पाठशाला यहांपरबनीहुइहै, चांदीका-रथ-पालखी और-देवमूर्त्तियोंकेगहने-उमदासेंउमदा यहांबनायेजाते है, सल्मे--सीतारेकेचंदोए-रुमाल-जैनमुनियोकेलिये-काष्टकेपात्र-तर्पणी और रजोहरणवगेरा जोजोचीजें जैनोंको-वास्तेधर्मोपकरणके दरकारहोती है यहांबनाइजाती है, कइलेखकलोग यहांजैनपुस्तकलिखतेहै -छापखानेभीयहां कइहै और उनमे उमदाकिताब छपतीहै.

अहमदाबादका कमख्वाब-एक-मशहूरचीजहै, अहमदाबादी कागज निहायतपुख्ता-और-मुल्कोंमेंनामी है,-अहमदाबादकीदस्तकारी-जिसनेदेखी हजारहजारतारीफकिइ, बडेबडेउमदा कारीगर यहांमोजूदहै, जेनबोर्डिंग-श्राविकाशाला-और-जेनअस्पताल-यहां बनेहुवेहै,-व्याकरण-काव्य-कोस-न्याय-और अलकारके पढ़ेहुवे आलादर्जेके विद्वान-और-निमित्त ज्ञानी पडित-यहाके मुल्कोंमें नामी है.

अहमदाबादसे रवानाहोकरसाबरमती—आमलीरोड-सानद-छारोडी-जाखवाडाहोतेहुवे-टेशनविरमगाव-जाना, रैलकिरायादस आने, अहमदाबादसे (४०) मीलपश्चिमकों विरमगांवएकबडाकस्बा है, मर्दुमशुमारीवीरमगांवकी (२३२०९) मनुष्योंकीऔर करीब (२०००) जैनश्वेताम्बरलोग यहांपरआबादहै, जैनश्वेताम्बरमंदिरऔर मुनिलोगोकोठहरनेकेलिये मकानबनेहुवे है, टेशनकेपास सरकारी

धर्मशालामौजूदहै, इसमेंमुसाफिरलोग व-खुवी कयामकरे, कोइमना नही, वीरमगांवकी चारोंतर्फपुख्ताकोट-कपडेवनानेकीमील-अस्प-ताल-स्कुल-और--कचहरीवगेरा वडीलागतकेमकानहै, वाजारमें जिसचीजकीदरकारहो मिलसकेगी, वीरगांवसें साबलीरोड-लीला-पुररोड-लखतरहोतेहुवे वढवानजकशनजाना, रैलकिरायाआठआने,

वीरमगांवसे (३९) मीलदखनऔर अहमदावादसें (७९) मीलपश्चिमको वढवानएकनामीशहरहै, छावनीऔर वीचशहरकेकरीव (४) मीलकाफासलाहोगा. जिलेकाठियावाडमे वढवानएकपुराना शहरहै, औरयहांसेकइ रैलवेलाइनगइहै, वढवानकी मर्दुमशुमारी (२४६०४) मनुष्योंकी-जिसमेंकरीव (२०००) दोहजार जैनश्वे-तांवरश्रावक आवादहै, जैनश्वेतावरमंदिर-औरयात्रीयोकों ठहरनेके लिये धर्मशालायहावनीहुइहै. वढवानकीचारोंतर्फ पथरकीदिवार-दखनकीतर्फराज्यमहेल-और-रुइकीतिजारत यहापरज्यादहहोती है, वाजारगुलजार औरजिसचीजकीदरकारहो यहामिलसकेगी, सरका-रीऔफिस-जैलखाना-अस्पताल--घडीकाबुर्ज--धर्मशाला-और-स्कुलवडीलागतके मकानहै, वढवानराज्यमें (२०) स्कुले-और-उसमेंकरीव (१३००) लडकेइल्मपाते है, वढवानसें एकखुश्कीसडक राजकोटकोंगइहै, वढवानकेमहाराज-झालाराजपुतकहलाते है. और धर्मपरसावीतकदमहै, वढवानकेंपमें एकजैनश्वेतावरमदिर औरधर्मशा-लावनीहुइहै, वढवानसेंआगे लींमडीकोंजाना, रैलकिरायाचारआने,

धोलाजकशनसें (५९) मीलउत्तर झालावाडमातमें एकछोटी नदीकेउत्तरकनारे लींमडीकस्वा आवादहै, लींमडीकी मर्दुमशुमारी (१३४९७) मनुष्योंकी-जिसमेंकरीव (२०००) दोहजारजैनश्वे-

तांवरश्रावकलोग आवादहै, जैनश्वेतांवरमंदिर औरवहुतवडीआलि-शानधर्मशाला एक–जैनश्वेतांवरश्राविका–श्रीमती–पुरीवाइकीतामीर किइहुइ यहांपरमौजूदहै. यात्रीलोग इसमेंकयामकरे आरामकीजगह है,–लीमडीराज्य काठियावाडके दुसरेदरजेकेराज्योंमेसे एकदेशीरा-ज्यहै, महाराजलीमडी झालाराजपुतकहलातेंहै उमदाराज्यमहेल–अस्पताल–और–कच–हरीयहांपर वडीलागतकेमकानहै, लींमडी राज्यकी जमीनसपाट–और एकछोटीनदी इसमेंवहतीहै, रुइ और अनाजकी पैदायशज्यादह और लोग मिलनसारहै.

लीमडीसे रैलमेंसवारहोकर–चुडा–रानपुर–कुंडली–वोटाद–उ-जलवाव–धोलाजंकशन–और–सनोसरा होतेहुवे–सोनगढटेशनजाना रैलकिराया एकरुपया,–टेशनसोनगढपर जैनश्वेतांवर यात्रीयोंको ठहरनेकेलिये धर्मशालावनीहुइ–ठहरनाहो–एकरात–यहाठहरे–या–तीर्थशत्रुंजयको जानेकेलियेआगेको रवानाहोवे,–तीर्थशत्रुंजय–यहांसे करीव (७) कोशकेफासलेपरहै, और इक्का–वगी–वेलगाडी वगेरा सवारी तयार मिलती है,

[तवारिख–तीर्थ शत्रुंजय,]

(करीवशहेरपालीताना–जिले–काठियावाड–मुल्कसौराष्ट,)

मुल्क–सौराष्ट्र–पेस्तरवडेघेरेमे आवादथा. झालावाड–गोहल-वाड–सौराष्ट्रप्रदेश–और हालारइसीके भीतरहै,–सोनगढटेशनसे(७) कोशदूरपलिताना एकगुलजारशहरहै, तीर्थंकरमहावीरस्वामीके नि-र्वाणहुवेवाद (४६७)–और–विक्रमसंवतके (२) वर्ष पेस्तरजैनध-र्मके वडेआलिम पादलिप्ताचार्य–यहांपधारेथे. जवसें शहरपालिताना

आबादहुवा, पेस्तरयहांआदि पुरशहरआबादथा, य-सबबतीर्थ भूमि केयहां हरवख्तरवन्नक वनीरहती है, कोइदिनऐसा-नहोगा-जो-यह यात्री-न-आयेहो. सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवख्त पालिता-नेकी मर्दुमशुमारी (१०४४२) मनुष्योंकीथी. जैनश्वेतांवरश्रावकोंके घरकरीव (५००) पैदाश-रुइ-और अनाजकी ज्यादहहोती है, दि-वानी-फौजदारी महकमे यहांपर वनेहुवे है, पालितानेकेनीचे एकनदी हमेशांवहती है, शहरमेंजैनश्वेतांवरमंदिर (३) सवसेवडा तीर्थंकररिष-भदेवभगवानका-दूसरा गोडीपार्श्वनाथजीका, नयेपुरेमे पासमोतीक-डीयाकी धर्मशालाकेऔर वहारशहरके तलहटीके रास्तेपर तीसरा वावुमाधवलालजीजहोरी कलकत्तेवालोंका, तीनोमदिर शिखरवद वडीलागतकेवनेहुवे है, दर्शनकरके दिलखुशहोगा, कारखाना आन-दजी कल्यानजी-जोकि-तीर्थ-शत्रुंजयका एकखजानाहै, मुनीम-गु-मास्ते-नोकर-चाकर--घंटा-घडियाल-चौकीपहरा-और--चपरासी वगेरा सवठाठ शाहानावनाहुवा, नोवतखाना यहांपरदिनमें चारदफे वजताहै. और हमेशां अमनचैनवनाहै, पालितानेका वडावाजार राजमहेलसेंलेकर माडवी-और आगेशत्रुंजयदरवजेके वहारतकचला गया, खानपानकीचीजें-मेवा-मिठाइ-पुरी-कचौरी-आटा-दाल-घी दूध-जितनाचाहेलेलो ! सोना-चांदी-कपडा-फल-फुल-सवचीजें यहांपरमिलती है. जोकोइयात्री यहांआताहै आराम-और-चैनपाता है. धर्मशाला यहांपर कइवनी है,—

१, सवसे वडीधर्मशाला शेठ मोतीशाहकी.
२, दूसरी हेमाभाइशेठकी.
३, तीसरी हठीभाइशेठकी.
४, चौथी मोतीकडियाकी, जोकि-हेमाभाइशेठका कारकुनथा,
५, पाचवी राधनपुरवाले मशालियाकी.
६, छठी सुरतवाले डाह्याभाइ-भूपणशाहकी.

७, सातवी भंडारीजीकी,
८, आठवी अहमदावादवाले, सुरजमलजीकी,
९, नवमी अहमदावादवाले ललुभाइकी.
१०, दसमी पटवा जोरावरमलजीकी,
११, ग्यारहमी जोधपुरवाले राजारामजी गडियाकी.
१२, वारहमी शेठ नरसिंह नाथाकी.
१३, तेरहमी शेठ नरसिंह केशवजीकी.
१४, चौदहमी मोती सुखीयाकी.
१५, पनराहमी गोधरावाले रतनचंद वीरचंदकी,
१६, सोलहमी जामनगरवालोंकी,
१७, सतराहमी वाबुधनपतसिंहजीकी.
१८, अठारहमी सुरतवाले कस्तुरचंदजी परतापचंदजीकी.
१९, उन्नीसमी वावु पन्नालालजी पुनमचंदजीकी,
२०, वीसमी कोटावाले मोतीचंदजी करमचंदजी, सकनाये पाटन-मुल्क गुजरात,
२१, एकीसमी भरुअछवाले रतनचंदजीकी,
२२, वाइसमी कलकत्तावाले वावु माधवलालजी जहोरीकी,
२३, तेइसमी कछी देवजी पुनसीकी,
२४, चोइसमी सुरतवाले नगीनदासजी कपुरचंदजीकी,
२५, पचीसमी भावनगरवाले अमरचंद जशराजजी वहोराकी.
२६, छवीसमी उज्जमवाइ अहमदावादवालोंकी.
२७, सताइसमी वडोदेवाले प्रेमचंद मोदीकी.
२८, अठाइसमी, गोघावालोंकी.

औरभीकइ धर्मशाला, यहा वनरही है, यात्रीइन धर्मशालामें जहां दिलचाहे क्यामकरे, कोइमना नहीकरसकता.

[तालीम-धर्मशास्त्र,—]

तुम इसवख्त तीर्थमेआयहो - धर्मपरसावीतकदमरहो, गेरजगहकाकियाहुवापाप तीर्थमेंछुटसकताहे, मगरतीर्थमेकियाहुवा निकाचितपापहर्गिज! नहीछुटसकता. तीर्थमेआनकरइश्क-और-मोहव्वतसे परहेजकरो, तायेउमर दुनियादारीके झगडोमें फसेरहे-अब-सुस्तीरफाकरो. औरधर्मपर कोशिशकरो, जिससेतुमारा बेडापार हो, तीर्थमें आनकर बुरेकामोंकी गुफतगु मतकरो जिससेतुमारीरुह दोजककी सफरकरे, शास्त्रोकाफरमाना दुरुस्त औरसहीसमझो, इस परशक मतलाओ, खयालकरो! दुनियाकेकामोसें तुमकिसकदर हेरानपरेशानहुवे,---इसवख्ततीर्थमेआयेहो-ऐसामतकरोकि-नेरगरह जाओ. देवगुरु धर्मकाहमेश एहसानमानो, वदौलतजिसकी तुमने मनुष्यका चौलापाया उसकोंमतभुलो, हमउसकों खुशनसीब समझते है--जो-धर्मकों तरक्कीदे. यहखूबयादरखोकि--धर्महीदुनियामें उमदाचीजहै, तकदीरउसीकी खुबसुरतहै-जो-धर्मकीवढवारीकरे, जवानीचलीगइ, मगरक्याकसुरहै उसका ? जवानीकिसीकी कदीमसेकरनहीरही. धर्महीतुमारा कदीमीदोस्तहै. तीर्थमेआनकर रहमकरो, जिससेआइंदे तुमाराभलाहो, तीर्थमेंआनकर पर्देकोंरुकसतदो, तकरारऔर हुज्जतमतकरो, एकतोकडुआकरेला और दूसरानीबका असर, फिरतोक्याकहना! हजारबातकीएकवात, तीर्थमेआनकर नेकीकरो, और इसबातपर शुकरगुजारोकि-तीर्थकीजियारततुमकों नियामतहुइ. पूजाकरनेकाढग तुमकोंयाद-न-हो-तो-च-जरीयेकितानकेअपना कामचलाओ, यादरखो! जवानीनमाखर्चसें कुछकाम न-चलेगा, तवीयत नादुरस्तका नहानालेकर धर्मकोंमतछोडो,

जिसकोतुम अपनासमझतेहो-वही-बेगानाहै गाफिलमतबनो, यादरहे! किस्मतकी कमनसीबीपर किसीकामिजाज नहीचलता

वेटावेटीकेविवाहमें हजारोरुपये वरवादकिये, धर्मपरएककोडीभीनही दिइगइ, क्या! इसीपरघमंडकरतेहोकि-हमनेवहुतकुछधर्म करदिया. तीर्थमे आपसकाझगडा करनावेकारहै. आफतकीभरीवात घरपरच-लायाकरो, यहांतीर्थकीजगहहै इसमेआनकर इवादतकरो, खैरात दो! गरीव और रोटीयोंके मोहताजोपर रहमकरो, तुमारेपासवहुत कुछरुपयेपैसे हाजिरहै-फिर! क्यों! सुमवनतेहो? क्या! दौलत तुमारेशाथचलेगी? देखलो! किसकदर खुशनसीवोने तीर्थमेंआ-नकरदौलत सर्फकिइ है? तुमकोंपांचरुपयेदेते दर्दहोताहै, वडीशर्म-कीवातहै. अछेखानदानहोकर दलेरनहीवनते, तीर्थमेंआनकर कुछ दिनकयामकरो, औरजलदीमतकरो, तमाममंदिरोकी और तीर्थोंकी जियारतकरो, अगरतुमको यहांपर कोइवेमुनासिव वातकहे उसपर गुस्सामतकरो, तुमतीर्थमेआयेहो, इवतेकोंतिनखाभी सहाराहोताहै नेकवक्तोको चुपरहनाहीवेहत्तरहै, इवादतकीजगह तकरारकरना कोइ जरुरतनही, जिसनेधर्मकीजगह वेइमानीकिइ उसनेआलादर्जेकी ग-लतीकिइ, अपनेदहीको कोइखटानहीकहता, मगरतारीफहै उनकी जोअपनीभूलकों कुवुलकरे. तकदीरकेआगे ततवीरनहीचलती, मगर धर्मउसवख्तभी फायदेमंद होताहै, तीर्थमेजाकर अगरदंगाफिसाद कियातो जियारतका वदमजाकरदिया, आखरकारधर्महीका वेडापार है, अगरतुमने तीर्थमेंजाकर लडाइलडीतो कुछनहीकिया, वलिक! जि-यारतको पायमालकिइ, रुकेउससेरुकिये--और--झुकेउससेझुकिये, इसवातको यादकरो! जोअपनेसेनेकीकरे, उससे अकडमिजाज मत रहो. हमेशां खुशमिजाज होकर धर्मकरो, चाहेकोइकेसाही गैरआ-दमीहो-मगरजहांखर्चका कामआनपडे सियारवनजाताहै, औरकह-ताहै हमपरक्यासितमगुजरा, मगरयहखूवसमझोकि-दौलततकदीर-कीदासी है, एकवागकेदोफल कहांइमली औरकहांआम! एकआ-स्मानकेदो-सितारे-कहा सूर्य-और चांद!! अगरतुमारी तकदीर

तैजहै-तो-दौलतफिर आनकर मिलेगी, धर्ममेंरखीलहोना कोइजरुरतनहीं, जबदौलत झलाझलहै-तो-खर्चकेलिये क्योंचुपरहजातेहो, इतनाररखो धर्मपर, हकीकतमें सबधर्महीकाफलहै. अधेरनगरीकी तरहसबकों एकभाव--न--समझो. दरयाफतकरलो दौलत और धर्म इसमें कौनवडाहै? धर्मकोंभुलगये जभीतो यह तकलीफ हासिलहुइ खेर! कोइमुझाखानही. आदमीकुछखोकरही सीखता है, मुमकीनहै कुछधर्मकीराहपरदेना, दौलतचंदरौजकी है और धर्म हमेशांकाशाथी है, अगरशुभहका सिताराआफतावके आगेचलेतो वह आफतावनहीहोसकता, रिस्तेदारोकी तकरारकानिवेडाकिया मगरअपनानिवेडा कबकरोगे? तीनहिस्साउमर वतीतहोगइ मगर परलोककारास्ता साफनहीकिया, जोकुछधर्मकामकरनाहो, पीछेमतरखो, न-मालूमकिसवख्त क्याहोजाय? दौलतखाना-मकान औरलडके तुमारेसामने तयारहुवे, बुजुर्गोका कहनाहै धर्मकरो! नसीहतकेवख्त हसदेतेहो यहएकगुनाहहै, दावतमेंसबलोग आतेथे मगरबीमारीकेवख्त कोइपासतकनहीआया, कोइआदावअर्ज कहनेवालेभी नहीआये, अबतीर्थमेंआयेहो पनाहलो! देवगुरुधर्मकी और इबादतकरो तीर्थकर देवोंकीजिससें तुमारादुखसें निस्ताराहो, वाग बगीचे--इतरफुलेल--उमदापुशाक और खर्चआमदनीका हिसाब मिलाते जिंदगीतयहुइ, जिसनेतुमारेशाथ नर्दंदगाकीखेलीथी-वेभी--चलेगये, वफादारवेवफाहुवे, नोकरचाकर जवाबदेगये, अखवारपढनेका शौखथा-वहभी दौलतकीतंगीसे कमहुवा, कोइभीमुराद हासिलनहीहुइ, अबतो यकीन लाओ! धर्मपर, वडेवडेखुशनसीबधर्महीसे पारहुवे, खजानाखुश्कहुवा, जवानीपायमालहुइ, सलामतहै

अवंभीतुमाराधर्म-जोकि-तुमकोंजहुर देरहाहै.-इसीलिये कहाजाताहै तीर्थमेंआयेहो, वख्तगाफिलरहनेकानही, धर्मकरो,—

☞ [दरबयान-पहाड-शत्रुंजय,]

आमतीर्थोंका शिरोताज शत्रुंजयपहाड निहायतपुरानातीर्थ है, इसतीर्थकी बुजुर्गी सबसेज्यादह-जिसने इसतीर्थकी जियारतकिइ गोया! दोजकसे अमन-वा-अमानहुवा, जैनमेंयहतीर्थ बहुतमशहूर और मारुफहै, जगहनिहायतपाक! बल्कि पहाडक्याहै!! मानीदे बहिस्तका एकगुलजारबागहै. जमीनदिलकश खुशनुमाकाबिलेदीदहै, तीर्थकर रिषभदेवमहाराज इसतीर्थपर पूरवननानुदफेआये, और यहापर ध्यानसमाधिकिइ, इसीलिये ननानुयात्राकरनेका रवाजयहां परजारीहुवा, भरतचक्रवर्ती जोकि-तमामभारतवर्षका बादशाहहुवा अयोध्यासे पैदलचलकर इसतीर्थकी जियारतकोआयाथा, साथमें बडेबडेराजेरहीस और लवाजमाथा. जवाहिरात-औरमोतीयोंके थालोसे उनोनेइसतीर्थका नसारकियाथा, (यानी) बधायाथा, और जियारतहासिलकिइथी. बडेबडेदौलतमंद और खुशनसीबया-त्री यहांपरआचुकेहै, जैनोमेंकाबिल इसकेदुसरातीर्थनही. सिद्धा-चल-विमलाचल-सिद्धक्षेत्र--तीर्थाधिराज--औरकंचनगिरी—ये-सबइसीतीर्थकेनामहै, पेस्तरयहांपर पारसपथ्थर होताथाकि-जिसके लगानेसे सबधातसुन्ना होजातीथी. ऐसीऐसी जडीबुटीयां यहांपर पैदाहोतीथीकि-जिसकोघीसकरअगर बदनपरलगाइजायतो आदमी अदृश्यहोजाताथा. हरतालजैसे पीलेरंगके पथ्थरयाइसकिस्मके हो-तेथेजोदूधकेसाथ घीसकर बदनपरलगायेजाय तमामबीमारीयारफा होजातीथी. ऐसीऐसीताकतवर वनास्पतियहांपर मौजूदथीकि-

जिसकेखानेसे आदमीबेशुमार ताकतवालाहोसकताथा, शेर-भालु तेंदुए-वगेराजानवर यहांहरवख्तरहाकरतेथे, अबभी चीतावगेरा यहांनजरआतेहै, जवाहिरात औरसुवर्णकी-खानयहांपर मौजूदथी, मोर-तोते-कोयल-मेना-चीडियावगेरा तरहतरहके परींदयहां द-रख्तोपरकलोले करतेरहतेहै, तरहतरहकीवनास्पति यहांपरखडी है, पानीकेहौज-वा-फुवारेयहांपर हमेशांतयार-व-पाकबनेरहते है, क-हांतकबयानकरे मानींदेसेब-वहिस्तहै.

बडेबडेमहर्षियोंने यहांपर ध्यानसमाधिकिइ, पेस्तरकेजमानेमें पहाड बडालंबा चौडाथा-आजदिनपरदिन कमहोगया. मगरबारह कोशकेघेरेमें अबभीहै, शत्रुंजयनदी पहाडकी दामनमेंहमेशां वहती है. नमि-विनमिविद्याधर इसतीर्थपर मुक्तिपाये. तीर्थंकरअजित-नाथमहाराज इसतीर्थपर वारीशके चारमहिनेठहरे और धर्मको रौशनकिया, दंडवीर्यराजा जोकि-भरतचक्रवर्तीकी आठमीगदीपर तख्तनशीनथा, इसतीर्थपर बडेबडेआलिशानमंदिर मूर्त्तेंवनवाइ, और पुरानेमंदिरोंकी मरम्मतकरवाइ, सगरचक्रवर्तीने बडेसंगीन मंदिरऔर खूबसुरतमूर्त्तेंयहांपरतख्तनशीनकिइ. जमानेतीर्थंकरचंदा-प्रभुकेचंद्रयशाराजाने यहांबडीलागतकेमंदिर तामीरकरवाये. और धर्मकी निहायततरक्कीकिइ. तीर्थंकरशांतिनाथमहाराजने इसपहाड-परचारमहिनेगुजारे, औरधर्मकोरवन्नकदिइ, छत्रपतिचक्रायुधराजाने यहांबडेआलिशानमंदिर औरमूर्त्तेंजसीमवनवाइ,-औरपुरानेमंदिरों-कोंमरम्मतकिया, रामचंद्रजीऔरलछमनजी जोकि-अयोध्याकेतख्त परबडेमशहूर औरमारुफहुवेइसपहाडपर उनोनेबडीलागतके मंदिर बनवाये, औरजिनेंद्रोंकीमूर्त्तेंतामीरकिइ. पुरानेमंदिरोंकी मरम्मत औरबेशुमार दौलतसर्फकिइ. चंद्रराजा-जोकि-आभापुरीकाछत्रपति राजाथा इसीपहाडपर सूरजकुंडकेजलसेंस्नानकरके तंदुरस्तहुवा, यु-

धिष्टिर-अर्जून-भीमसेन-सहदेव-और-नकुल-ये-पांचपांडवजोकि दुनियामेंवडेवहादूरहुवे इसपहाडपरवडेवडे-खुवसुरतमंदिर औरमूर्त्तें तामीरकरवाइ. प्रद्युम्नकुमार ओरशंवकुमारइसीतीर्थपर आनकरमुक्तिकोंपाये, थावचाकुमारऔरशैलकराजर्षिने-यहां ध्यानसमाधि किइऔरमोक्षकोगये. जाली-मयाली-उवयालीऔर देवकीजीकेलडकेइसीपहाडपर अनशनकरकेमुक्तिमें कायम-व-दायमहुवे, रामचंद्रजीकों-पांडवोकों-औरकृष्णजीकों वैदिकमजहववाले-उनकेमजहवकेप्रवर्तक-व-नायववतलाते है औरजैनकितावोंकीरुसे-ये-महाशय जैनीथे, छत्रपतिसंप्रतिने इसपहाडपर वडेकिमतीमंदिरऔर मूर्त्तें तामीरकरवाइ. विक्रमसंवत् (१०८) में मुल्ककाश्मिरके व्यापारी जावडशाहनेइसपहाडपर वडेआलिशानमंदिर औरमूर्त्तेंवनवाइ और पुरानेमंदिरोंकीमरम्मतकिइ. छत्रपतिराजाकुमारपालके-दिवानवाहडमंत्रीन (२५७००००) दोकरोडसतावनलाखरुपये खर्चकरके इसपहाडपर वेसकिमतीमंदिरतामीरकरवाये औरखूवसुरतमूर्त्तेंतख्तनशीनकिइ. संवत् (१३७१) मेंसमराशाहओशवाल जिसकासितारावुलंदथा वडेवडेपुख्तामंदिर औरमूर्त्तेंइसपहाडपर वनवाइ. संवत् (१५७८) में कर्माशाहशेठ जिसकामुधारकनाम आजतकमशहुरहै इसपहाडपरआनकर वुलदशिखरवंदमंदिर औरतीर्थंकररिषभदेवभगवान्‌की आलिशानमूर्त्तिंवनवाइ. औरएककरोडसेंज्यादहरुपयेखर्च किये, क्या ! उमदाकारिगरी-शिखर-और-गुंवजोंकाकाम-आलिशानचौक औरघेराव-देखकर मानोंदोगिर्दा-आस्माननजरआताहै, तमामहिंदमेंजितनीजैनमूर्त्तिंहै मगरइसकीसानीएकभीनहि. कर्माशाह शेठकीकहांतकतारीफकरेंकि-जिनोने अपनेलियेदरवजा वहिस्तका खोलदिया, खुशनसीवहोतोऐसेहो. इसतीर्थपरवडेवडेसोलह उद्धार हुवे, अखीरकाउद्धारइसीकर्माशाहशेठने करवाया.

ऐसेपाकतीर्थकी हरवख्तइज्जितकरनाचाहिये. जिसनेइसकीबेअदबीकिइगोया ! उसनेअपनीतरक्कीकोखाखमेमिलाइ. पाचवेंआरेकीअखीरमें तमामजैनतीर्थवरबादहोगें मगरउसवख्तभी इसतीर्थका रिषभकुटशिखर देवोंकरकेपूजनीकरहेगा, वडेवडेगुनहार औरपापी इसतीर्थकी जियारतसेपाकहुवेहै, जिसकेवडेभाग्यहो इसतीर्थकीजियारतकरे, मंदिरमूर्त्तिवनवावे, औरचवरछत्रवगेराचीजें यहांपरभेट करे, जैनाचार्य भद्रबाहुस्वामी-वज्रस्वामी-और-पादलिप्ताचार्यने इसतीर्थकीतवारिखलिखी, मगरजमानेहालमें-वे-सवनेस्तनाबुदहुइ आचार्यधनेश्वरसूरिजीने जोतवारिखलिखीथीअबमौजूदहै, जिसका नामशत्रुंजयमहात्म मशहूरहै,-

शहरपालितानेसे दखनकीतर्फ शत्रुंजयपहाडएककोशकेफासलेपरशुरुहोताहै, छोटेवडेतीनहजारजैनश्वेतांवरमंदिर इसपरबनेहुवेजिसनेइसतीर्थकी जियारतकिइमकसद दोनोंजहानकापाया. शहरपालितानेसे शत्रुंजयपहाडकीतराइतक सडकपक्कीबनीहुइ-दोनोंतर्फवडे वडेगुलजारपेड औरदरख्तलगेहुवेहै, सवारीइक्का-वगी-जोचाहोमिल सकेगी. पैदलजानेवालेपैदलजाय कोइतकलीफ-न-होगी. यात्रीयोंकाहरवख्तमेलायहांवनारहताहै. जिसमेंकातिकऔरचैतकीपुनमको ज्यादहहोताहै. शहरपालितानेसे पहाडशत्रुंजयकोंजाते-अवल पुरानीतलहटी-चौइसतीर्थंकरोके चरण-और-पक्कीबनीहुइ छत्री मिलेगी, इसकेदर्शनकरके आगेकोंचलनाचाहिये. थोडीदूरपर शेठ भूषणदास सुरतवालोकी बनाइहुइ निहायतखुशगवार पानीकी वावडीऔर चरणपादुकाकी एकछत्रीआती है, इसकोंरानावावडीभी बोलते है, आगेइसके पहाडकीदामनमें खासतलहटी-उमदाधर्मशाला-दोछत्रीयें-वगीचा-मीठेपानीकीवावडी-चारउमदा उमदाबेठके-जिसपरकरीव पाचपांचसोआदमी-व-खुबी-बेठसकते है, बडी रवन्नक जगहहै.-

जिसकों खानपानकरनाहो इसजगहकरे, जंगलजानाहो यहां जावे, आगेपहाडकेउपरव-सबबपाकी औरताजगीके जगलजाना-न-होगा, क्यौंकि-तमामपहाड जायेअदबकाहै, यहांतककि-पावमें जुताभीकोइ जैनीनहीपहनता. यात्रीलोग शुभहकों पहाडपरजातेहै और-जियारतकरकेशामकों पीछेलोटआते है, पहाडपर चढनेकेलियेम्याना-व-डोलीवगेरातयारमिलती है. अगरकोइ पैदलजानाचाहै-तो-इख्तियारउसके है. शत्रुजयपहाड समुदरकेपानीसे (१९८०) फूटऊंचा, पहाडपरचढनेकेलिये पथरोंकी बेंडोलसीढीयें बनीहुइ है, कोइखुशनसीब यहांपरऊमदा सीढीयेबनानाचाहे बनसकती है, मगर खर्चकाकाम ज्यादहहै, पहाडकीशरुआतमें रास्तेकीदोंनों तर्फदोहाथी इंटचुनेकेबनेहुवे निहायतखूबसुरत गोया! सचेहाथी यहांपर आनखडे देखलो,

इसपहाडकी इज्जतजैनोंमें यहांतकमशहूरहैकि-अगरकोइयात्री पहाडपरजाय-व-मुजबअपनी हेसीयतकेमोती-और--जवाहिरात नसारकरे, जवाहिरातकीताकात-न-हो-सुन्नेकेबनेहुवे फूलोंसें नसारकरे, जिसकीताकातउससेभीकमहो-तो-चादीकेफुलोंसें--और अगर उसकीभी वसत-न-होतो-चावल-या-गुलाब-चमेलीके फुलोंसें-नसारकरे (यानी) बधावे-औरफिरअगाडी कदमरखे,-

जहांसेंरास्ताशुरुहोताहै दोनोंतर्फदोबडेबडेदालान-अठारसछोटीबडीछत्रीये जिसमेंसंगमर्मरपथरकाकाम औरइनमेंतीर्थकरोंकेचरन तख्तनसीनहै, यात्रीयहाताजीमकरे, औरफिरआगेंकोंकदम उठावे. थोडोंदूरपरचढनेसें-रायबहादुर धनपतसिंहजी-साकीनमुर्शिदाबादकातामीरकरायाहुवा खूबसुरतमंदिरमिलेगा. इसकेसामनेपश्चिमकी तर्फश्रुतदेवीकीएकप्रतिमाफाबनीहुइ, आगेइसकेपौनकोशचढनेसें, एकइमा

कुंड (यानी) पानीकाहौजमिलेगा. यहहौजसवत् (१८३१) सुरतवालेशेठ इछाभाइनेतामीरकरवाया. इसकेआगेपावकोश वढेतो छत्रपतिमहाराज कुमारपालकाबनायाहुवा कुमारपालकुंड-और-आगेइसके हिंगलाजकाहडा, दिलखुशनुमा-औरहवादारमकानहै, जिसकेदेखनेसेरुहकों ताजगीमिलतीहै. म्याने-या-डोलीमें जानेवाले यात्रीकोंभी यहांपरपचासकदमउतरनाहोगा. क्योंकि-चढाव-कठिन है, जगहनिहायत उमदा-और-यहांपरकलिकुंडपार्श्वनाथजीके चरन जायेनशीनहै, आगेइसकेछालाकुंड-मीठेजलकाभराहुवा-और-यहां परचारतीर्थकरोंके चरनोंकीछत्रीवनीहुइहै, यहांसंदो-रास्तेफटे है, दाहनीतर्फकारास्ता श्रीपूज्यजीकीटोंकका-जिसमें तपगछकेश्रीपूज्यों केचरन-और-गौतमगणधर-पदमावतीदेवी वगेराकीमूर्त्ति तख्तनशीनहै, वायीतर्फकारास्ता मदिरोंकीतर्फकोंजाताहै, थोडीदूरपरअतिमुक्तकमुनीकीछत्री-द्राविड-वारिखिल्लकी छत्री-हीरावाइका कुंड और-इसकेआगे पांचपाडवोंकीछत्रीकेदर्शनहै, आगेभूपणकुंड-भूपणशाहशेठसाकीनसुरतका तामीरकियाहुवा मीठेपानीसेलब्दतरऔर आगेइसकेशैलगराजर्पि शुकदेवजी-थावचामुनिकीछत्रीये वनीहुइहै, आगेइसके दोरास्तेफटेगें. एकरिपभदेवभगवान्की टोंकका-दूसरा चौमुखाजीका-रिपभदेवभगवानकी टोंककेरास्तेपर-जालि-मयालि -उमयालिकीगुफा जिसमेंतीनोंकी मूर्त्तिजायेनशीनहै.-

आगेखासकिलेका जहांसेमंदिरोंकी शुरुआतहोती है रामपोल दरवजामिलेगा. इसमेंहोकरविमलवशीटोंककों जानाचाहिये. जोकि -दखनकीतर्फ है, तीर्थकररिपभदेवभगवान् जहाखिरनीदरख्तकेनिचे तशरीफलाकर पूरवनबानुदफेपधारेथे. इसटोंकमेंवडाआलिशानदरख्त खडाहै. फाल्गुनसुदी (८) मीकेरोजतीर्थकररिपभदेवभगवान् यहांअवलआयेथे इसलिये फाल्गुनसुदीअष्टमीकी यात्रावडीपाकऔरउमदा समझीगइ,

रामपोलदरवजेकेआगे दो-छोटेछोटेवगीचे-निहायतखूवसुरत तरवा-ताजेमिलेगे. इनकेफुलहमेशांदेवकों पूजनमेंचढायेजाते है, मोतीशाह शेठकीटोंककारास्ताभी इधरकीतर्फसें हैलेकीन ! अवलविमलवशीटोंककोंजाकरवापिस अतिवखतइसटोंककेदर्शनकरनाचाहिये. जवयात्री रामपोलदरवजेतकपहुचे म्याने-डोलीवाले यहांहीठहरजायगें. और यात्रीकोंआगे पेदलजानाहोगा. इसकेआगेरिषभदेवभगवानकी टोंकका दूसरादरवजामिलेगा, इसमेहोतेहुवे जवआगेचलोगे तीसरादरवजा वाघनपोलकामिलेगा, जमानेपेस्तरकेएकनहारनीयहांआनकर रहीथी, औरव-दौलततीर्थकेधर्मकीपायवंदहोकर उमदागतिकोंगइथीं, इससववइसदरवजेकानाम वाघनपोलमशहुरहुवा. वाघनकीएक मूर्त्तिकरिव दरवजेकेवनीहुइहै, आगेवाघनपोलदरवजेके तीर्थकरशांतिनाथजीका निहायतउमदामंदिर शेठहीराचंदरायकरनसाकीनदमनकातामीरकरवायाहुवा संवत् (१८६०) काप्रतिष्ठितकावीलेदीद मिलेगा, करीवइसमंदिरकेएकमंदिर देवीचक्रेश्वरीका जोकि-संवत् (१५७८) शेठ-करमाशाहनेतीर्थशत्रुंजयके उद्धारमेतामीरकरवाया था निहायतउमदावनाहे. मूर्त्तिचक्रेश्वरीदेवीकीलाइकदीद औरदिदारकी है, देवीक्याहे ! गोया ! ! आइनेमददगारगाथीहे, आगेइसके एकमंदिर तीर्थकरनेमनाथजीका इसमेंतीर्थकरनेमनाथजीकीचवरी-समवसरणकाअकस-और-चौमुखाजीकीमूर्त्ति तख्तनशीनहे आगे इसकेएकमदिर जगतशेठकातामीरकरवायाहुवा वहुतखुशनुमाऔर लाइकतारीफकेदेखोगे, जवहाथीपोलके दरवजेपरपहुचोगेदो--वडे वडेहाथीदिवारपरवनेहुवे नजरमेंआयगें, गोया ! येअसलीहाथीयहां आनकरखडे है, पेस्तरकेजमानेमें दरवजेमदिरकेहाथी वनानेकीरसम जारीथी. आजयहरसम कमहोतीजाती है.

छत्रपतिराजाकुमारपालका तामीरकरायाहुवा वडाआलिशान मंदिरइसीहाथीपोलके सामनेखडाहै. सुरजकुडकारास्ताभी इसहा-

थीपोल दरवजेकी दाहनीतर्फशुरुहै जोकि-पाक-और-सफेदपानीसें
पानीदे वर्फ जमाहै. हाथीपोल दरवजेके आगे बहुतवडी सीढियां
बढकर खास तीर्थंकर रिषभदेव भगवान्के मंदिरको जानाचाहिये.
मंदिरक्याहै ? गोया ! शत्रुंजयपहाडका एक जवाहिरातहै, सवत्
(१५८७) में शेठ करमाशाहनेइसकों तामीरकरवायाअव्वलिखचु-
केहैं, करमाशाहशेठ-जैसे-खुशनसीब-और-मुवारिकसितारे दुस-
रे कौनहोगें ? जिनोंनेऐसे अजायब कामकिये. जोइनसानकी अकल
से बाहरहै, कलमकी ताकातनहीकि-लिखकर बतलादे, जबानकी
हैसीयतनहीकि-तकरीरकरसके. स्याहीइतनी मौजूदनहीकि-इसका
बयान लिखे. दुनियामें एकसेएकनकासी और शिल्पकारी जाहिर
है मगर उस्तादोने यहाआनकर उस्तादी खतमकिइ. वडेवडेकारि-
गरलोक इसमंदिरका नकसा उतारकरलेजाते है. मंदिरकेबहार वडा
आलिशान चौक-शंगेमर्मरकाफर्स-और सेंकडो मंदिरोंकाघेराव दि-
लकों मोहेलेताहै, मंदिरोकेशिखर-सोनेकेकलश-धजापताका और
काझलरौशनी देखकरआदमीकी नजरचकराजातीहै, शत्रुंजयतीर्थ-
का यह एकमूलमंदिरहै,-औरइसमें तीर्थंकररिपभदेवभगवानकी वडी
आलिशानमूर्त्ति काबीलेदीद और दिदारके वनीहुइ गोया ! खास
तीर्थंकररिषभदेवमहाराज यहा आनकर तख्तनशीनहै. इसमूर्त्तिकी
तारीफ कहातकलिखे जिसकीसानी दुनियामेदुसरी-न-होगी. उ-
सकेइमे छहाथ वडी-आखे स्फटिकरत्नकी और ललाटमें हीरालगा
हुवाहै, दर्शनकरके दिल निहायतखुशहोगा, मंदिरकेभीतरी रंगमंड-
पमें शंगमर्मरपथरके वनेहुवे हाथीपर राजाभरतचक्रवर्ती औरमरुदे-
वीमाताकी खूबसुरतमूर्त्ति जायेनशीनहै, यहरचना उसवख्तकी है
जबकि-तीर्थंकररिपभदेवमहाराजकों केवलज्ञान पैदाहुवाथा, भरत-
राजाकी औरमरुदेवीमाता वास्ते तीर्थंकररिपभदेवजीके दर्शनोंकों आयेथे,

औरभी कइखूवसुरतमूर्त्तिये इसमेंजायेनशीनहै. ओंकार और हूँकार खास दरवजेके दोनोंतर्फ दिवारोंमें मयजिनमूर्त्तियोंके वनेहुवेदेखलो !

मूलमंदिरकेसामने मंदिरपुंडरीकगणधरका वेसकीमतीवनाहुवा है, तीर्थंकररिषभदेवभगवान्‌के दर्शनकरकेयात्री इसमंदिरकेदर्शनको जाते है. इसके दर्शन करके आम मंदिरोंकी परकम्मा–और–नसार करना चाहिये. (यानी) रुपये पैसे असर्फियोंसें ताकातहोतो मोतीयोसे तीर्थको वधाना चाहिये, तीर्थंकर रिषभदेवमहाराजके पीछाडी–जहा खिरनीकादरख्त खडाहै नीचेउसके तीर्थंकररिषभदेवमहाराजकेचरन जायेनशीन, अगुंठेअंगुलियोंकेउपर सोनेके पत्तेजडे हुवेइसके दर्शनकरनाचाहिये, इसीजगह तीर्थंकररिषभदेवमहाराज रायनवृक्षकेनीचे पधारेथेऔर ध्यानसमाधिकिथी. एकमंदिरनंदीश्वरदीपका इसमेंनंदीश्वरदीपका आवेहुवआकारवनाहुवादेखलो !–एकमंदिरसहस्त्रकूटका–एकमेरुशिखरपहाडकी रचनाका–और–एकमंदिरअष्टापद तीर्थकीरचनाका इसकदरउमदा औरसाफवनाहै जैसे वहोचीजेलाकर यहारखीहै, एकमंदिरसमेतशिखरतीर्थकी रचनाका निहायतउमदा–जिसकीतारीफ––वेमीशालहै, कहांतकवयानकरे ! जोदेखताहै वहीजानसकताहै, हरसालकातिकशुक्ल पुनमकेरौज इसी विमलवशीटोंकमें रथयात्रा निकलतीहै, सोनेचादीकेरथ–पालखी–और–तरहतरहकेवाजे वगेराजुलुससे मूलमंदिरकीचारोंतर्फ परकम्मादिजातीहै. सोनेकेकलशे–धजापताका–वाजोंकी अवाजें–और यात्रीयोंकाठाठ–उसवख्तयहा जमाहोताहै, वडेवडेवजंत्री–सारंगी–तवले–हारमोनियम–वेला–और–जलतरंगवगेरा साजसे गवैयेलोग यहापर गायनकरते है, जिसशख्शने कातिकसुद पुनमकेरौज शत्रुंजय तीर्थकीयात्राकिइगोया ! उसनेखास ! वहिस्तदेखलिया, और तीर्थंकरोके समवसरणमें खुदजावेठा, एकतर्फयात्रीयोंके स्नानकरनेकी

जगह-केसरचदनघीसनेवालेपूजारी-और--एकतर्फगुप्तभंडार बना हुवाहै. फूलवेचनेवालेमालीलोग तरहतरहकेफुललेकर यहा बैठेरहते है यात्रीकोंफुलकीदरकारहो पैसेदेकरशौखसेलेलेवे. दिवानवस्तु-पाल-तेजपालकेवनाये कीमतीमंदिरइसीटोंकमे तामीरहै, विमलवशी टोंककेदर्शनकरके वापिसलौटतेवख्त वाघनपोलकोआना, शेठनर-सिंह-केशवजीसाकीन मुल्ककच्छका वनायाहुवा वंशकीमतीमदिर जोहालहीमें नयातामीरहुवाहै देखकरदिलखुशहोगा,—

☞ [दूसरीटोंक मोतीशाहशेठकी.]

मोतीशाहशेठने यहटोंककिसकदर मेहनतसेबनवाइहैकि-जिस-कीतारीफवेमीशालहै. पेस्तरयहांपर एककुंतासरनामका वडाभारी खडा—यानी—पहाडकी एकखोंहथी. शेठमोतीशाहने इसकों (९५३०००) रुपयेखर्चकरकेभरवाया. और उसपरयहटोंक ता-तीरकरवाइ. वडाभारीआलिशान मंदिरदेखकर दिलतर-वा-ताजा होताहै, संवत (१८९३) मेंइसकीप्रतिष्टाकिइगइ, खर्चाइसटोंकका अवतकमोतीशाहशेठकी पुस्तानपुस्तसेचलताहै, शाहअमरचदखेम-चंद साकीनदमन-जोकि-इसीमोतीशाहशाहशेठके-दिवानथेएकवडा भारीमंदिर इसीटोंकमेउनोने तामीरकरवाया.—औरएकस्वस्तिक जिसमें नवरत्नलगेहुवेहैबनवाया. औरभीकइखुशनसीब औरदौलत-मदलोगोने यहांमदिरवनवाये है, इसटोंककीखूबसुरती कहांतकबया-नकरे ! खास ! मोतीशाहशेठके मदिरकीचारोंतर्फ इसकदरउमदा तौरसे परकम्मावनीहुइहैकि-जिसकोदेखकर-आंखे-तरहोजाती है, मोतीशाह शेठकेवनायेहुवे मंदिरकेसामनेउनकी और-उनकी ओर-तकीमूर्त्ति सगमर्मरपथरकीवनीहुइखडी है औरआजीजीकररहे हैकि हमने-कुछभीखर्चनहीकिया. जायेगौरहेकि-मोतीशाहशेठने इसटोंकके वनानेमेंवेशुमारदोलतसर्फकिइ-मगरफिरभी यहीकहरहे हैकि-हमने-

कुछभीखर्चनहीकिया. दौलतमंदहोतोऐसेहो ! औरधर्मकेपायवंदहोतो-ऐसेहो ! हरखासोआमकोंलाजिमहै मोतीशाहशेठकीमिशालकोंयादमें-रखे. औरअपनेसें वनपडेउतना खर्चकरे, दुनियाचंदरौजकेलिये एकमुसाफिरखाना है, जोकुछ धर्म करोगे वही शाथी होगा,—

☞ [तीसरी टोंक-वालाभाईशेठकी,]

संवत् (१८९३) मे यहटोंक-शेठवालाभाइने तामीरकरवाइ, और वहुतसीदौलतखर्चकिइ. इसकानामवालावशीमशहुरहै, इसमें तीर्थंकररिषभदेवभगवान्का वहुतवडाआलिशानमंदिर और-निहायतखूबसुरतमूर्त्ति तख्तनशीनहै, रंगमंडपइसकाकाविलेदीद-आसपासकइछोटेवडेमंदिरवनेहुवे-और-खर्चाइसका शत्रुंजयतीर्थकेखजानेसेंचलताहै,-

[चोथी टोंक-प्रेमचंदमोदीकी,]

वालावशीटोंककेआगे औरचाथीटोंककेवीच कुछउंचाइपरएक वडाआलिशानमंदिर अद्भुदजीका-जो-सवत् (१६८६) में तामीरकियाहुवा निहायतपुख्ता और वडीलागतकाहै, मूर्त्तिइसमेंतीर्थंकररिषभदेवभगवान्की सातहाथउचीवडी आलिशानतख्तनशीनहै, असलमेंयहमूर्त्ति पहाडसेजुदीनही पहाडहीमेंउकेरीहुइ-और-इसपर वहुतकीमतिचीजोंकालेपहुवाहै, चोथीटोंक प्रेमचंदमोदीकी वनाइहुइ औरउंचीजमीनपरतामीरहै, तीर्थंकररिषभदेवभगवान्का वडाआलिशानमंदिर औरउसमे निहायतखुबसुरत मूर्त्तितख्तनशीनहै, सामने इसकेमंदिरपुंडरीकस्वामीका--मंदिर सहस्रफणापार्श्वनाथजीका-मंदिर चौमुखजीका तिमंजिला-ग्रोरानी-जेठानीकेवनायेहुवे-दो-आले-कइछोटेवडेमंदिर औरमूर्त्तियेंतामीरहै,-

☞[पांचवी टोंक हेमाभाइशेठकी,]

शेठ हेमाभाइवखतचंद रहीशअहमदावाद साहुकारेकलानहुवे, उनोनेसवत् (१८८२) मे वेशुमारदौलतलगाकर यहटोंक तामीर करवाइ, इसमेंतीर्थंकरअजितनाथजीकामदिर और निहात खुबसुरत मूर्त्तिसंवत् (१६८६) कीवनीहुइतख्तनशीनहै, दाहनीतर्फमदिर चौमुखाजीका-सामनेपुंडरीकस्वामीका-वगेराकइछोटेवडे मदिरलाइ-कतारीफकेवनेहुवे है, आंझुकाकुंड-पाकसफेदमीस्ले वर्फके वनाहुवा-और एकवगीचा-गुलाव-चमेली-वा-मोगरावगेरा हरकिस्मकेफूल इसमेंमौजूदहै और-वरवख्तपूजनके यहीदेवकोंचढायेजाते है,-

☞[छठी टोंक नदीश्वरद्वीपकी,]

यहटोंक उजमवाइनेवनवाइ--जोकि-निहायतधर्मपावंद और-शेठ-हेमाभाइकी हकीकीवहेनथी. सवत् (१८८३) में उसखुशन-सीवनेयहटोंक तामीरकरवाइ. इसमेंछोटेछोटे (५२) मदिर-और-नंदीश्वरद्वीपका अकस-निहायत उमदावनाहुवाहै, इसमेंकुल्ल मूर्त्त (२२८) तख्तनशीनहै, मदिरकुंथुनाथस्वामीका-और-एक मदिर परसनवाइका तामीरकरवायाहुवा काविलेदीदहै,

☞[सातवींटोंक-साकरचंद प्रेमचदकी,]

साकरचदप्रेमचद साकीन अहमदावादने सवत् (१८९३) में यहटोंक वडीलागतसें तामीरकरवाइ, तीर्थंकरचितामणिपार्श्वनाथकी धातुमय (यानी) सोना-चादी-तावावगेराधातुओंको मिलाकर एकआलिशान-व-वेंनजीरमूर्त्तिवनवाइ औरतख्तनशीनकिइ. मदि-रपदमप्रभुका-और-मंदिरपार्श्वनाथस्वामीका—निहायतउमदा और कारिगरीकानमुनाहै, औरभीकइ छोटेवडेमदिर इसटोंकमें तामीरहै.

कुछभीखर्चनहीकिया. दौलतमंदहोतोऐसेहो ! औरधर्मकेपायबंदहोतो-ऐसेहो ! हरखासोआमकोंलाजिमहै मोतीशाहशेठकीमिशालकोंयादमें-रखे. औरअपनेसें वनपडेउतना खर्चकरे, दुनियाचंदरौजकेलिये एकमुसाफिरखाना है, जोकुछ धर्म करोगे वही शाथी होगा,—

☞ [तीसरी टोंक-वालाभाईशेठकी,]

संवत् (१८९३) मे यहटोंक-शेठवालाभाइने तामीरकरवाइ, और बहुतसीदौलतखर्चकिइ. इसकानामवालावशीमशहुरहै, इसमें तीर्थंकररिषभदेवभगवान्का बहुतवडाआलिशानमंदिर और-निहायतखूबसुरतमूर्त्ति तख्तनशीनहै, रंगमंडपइसकाकाबिलेदीद-आस-पासकइछोटेवडेमदिरवनेहुवे-और-खर्चाइसका शत्रुंजयतीर्थकेखजानेसेंचलताहै,-

[चोथी टोंक-प्रेमचंदमोदीकी,]

वालावशीटोंककेआगे औरचाथीटोंककेवीच कुछउंचाइपरएक वडाआलिशानमद्रिर अद्भुदजीका-जो-सवत् (१६८६) में तामीरकियाहुवा निहायतपुख्ता और वडीलागतकाहै, मूर्त्तिइसमेंतीर्थंकररिषभदेवभगवान्की सातहाथउचीवडी आलिशानतख्तनशीनहै, असलमेंयहमूर्त्ति पहाडसेजुदीनही पहाडहीमेंउकेरीहुइ-और-इसपर बहुतकीमतिचीजोंकालेपहुवाहै, चोथीटोंक प्रेमचदमोदीकी वनाइहुइ औरउंचीजमीनपरतामीरहै, तीर्थंकररिषभदेवभगवान्का वडाआलिशानमंदिर औरउसमे निहायतखुबसुरत मूर्त्तितख्तनशीनहै, सामने इसकेमंदिरपुंडरीकस्वामीका--मदिर सहस्रफणापार्श्वनाथजीका-मद्रिर चौमुखाजीका तिमजिला-देरानी-जेठानीकेवनायेहुवे-दो-आले-कइछोटेवडेमंदिर औरमूर्त्तियेंतामीरहै,-

☞[पांचवी टोंक हेमाभाइशेठकी,]

शेठ हेमाभाइवखतचद रहीशअहमदाबाद साहुकारेकलानहुवे, उनोनेसंवत् (१८८२) में बेशुमारदौलतलगाकर यहटोंक तामीर करवाइ, इसमेंतीर्थंकरअजितनाथजीकामदिर और निहात खुबसुरत मूर्त्तिसंवत् (१६८६) कीबनीहुइतख्तनशीनहै, दाहनीतर्फमदिर चौमुखाजीका-सामनेपुंडरीकस्वामीका-वगेराकइछोटेबडे मदिरलाइ-कतारीफकेबनेहुवे है, औरकुंड-पाकसफेदमीस्ले वर्फके वनाहुवा-और एकवगीचा-गुलाब-चमेली-वा-मोघरावगेरा हरकिस्मकेफूल इसमेंमौजूदहै और-वरवख्तपूजनके यहीदेवकोचढायेजाते है,-

☞[छठी टोंक नंदीश्वरद्वीपकी,]

यहटोंक उजमवाइनेबनवाइ—जोकि-निहायतधर्मपावद और-शेठ-हेमाभाइकी हकीकीवहेनथी. सवत् (१८८३) में उसखुशन-सीबनेयहटोंक तामीरकरवाइ. इसमेंछोटेछोटे (५२) मदिर-और-नंदीश्वरद्वीपका अकस-निहायत उमदावनाहुवाहै, इसमेंकुछ मूर्त्त (२२८) तख्तनशीनहै, मदिरकुंथुनाथस्वामीका-और-एक मदिर परसनवाइका तामीरकरवायाहुवा काबिलेदीदहै,

☞[सातवींटोंक-साकरचंद प्रेमचदकी,]

साकरचंदप्रेमचद साकीन अहमदाबादने सवत् (१८९३) में यहटोंक वडीलागतसें तामीरकरवाइ, तीर्थंकरचिंतामणिपार्श्वनाथकी धातुमय (यानी) सोना-चादी-ताम्बावगेराधातुओंको मिलाकर एकआलिशान-व-बेनजीरमूर्त्तिबनवाइ औरतख्तनशीनकिइ. मदि-रपद्मप्रभुका-और-मदिरपार्श्वनाथस्वामीका—निहायतउमदा और कारिगरीकानमुनाहै. औरभीकइ छोटेबडेमदिर इसटोंकमें तामीरहै.

जिसकों-देखकरताज्जुवहोगा. देवीचक्रेश्वरीकीमूर्त्ति इसमेंकाविलेदीदऔर सुनीदकेवनीहुइहै,

☞[आठवीटोंक-छीपावशीकी,-]

साकरचंद प्रेमचंदकीटोंकसें पूर्वतर्फछीपावशी टोंकसंवत् (१७९१) में-तामीरकिइगइ, इसमें तीर्थंकर रिषभदेवस्वामीका शिखरवंदमंदिर और उनहीमहाराजकी मूर्त्तितख्तनशीनहै. एकदरख्त-सुझयन-साफ—खिरनीकायहांखडाहै और नीचेइसकेतीर्थंकर रिषभदेवभगवानके चरनजायेनशीनहै, तीर्थंकरअजितनाथ-और-शांतिनाथजीकेदोमंदिर पासपासमेंवनेहुवे निहायतखूवसुरत और पुराने है,-एकमंदिर नेमनाथजीका-संवत् (१७९४) कावनाहुवा इसटोंकमें है. आगेइसके चौमुखाजीकीटोंककोंजाते करीवखीडकीके मंदिरएक पांचपांडवोंका-जिसमें युधिष्ठीर—अर्जुन-भीम-सहदेव-नकुल-पांचोकीमूर्त्ति कायोत्सर्ग ध्यानमेंखडी है, इसमंदिरकेपिछाडी मंदिरएक—सहस्त्रकूटका—वहुतसाफ औरकीमती वनाहुवा संवत् (१८६०) का-तामीरहै, जोकि-शेठ-खूवचंदमयाचंद सुरतवालोंका वनायाहुवाइसमें-चौदहरज्वात्मकलोकका-अकस-समवसरणकानमुना-सिद्धचक्रजीकानकशा-और-चौइसछोटीछोटीमूर्त्ते जायेनशीनहै,.दर्शनकरके दिलखुशहोगा.—

☞[नवमीटोंक चौमुखाजीकी,]

यहटोंकअहमदावादवाले सदासोमजीने वडीमेहनतसें तामीर करवाइ, और वेंशुमारदौलत सर्फकिइ. यहटोंक संवत् (१६७५) में तयारहुइ. औरइसमें तीर्थंकररिषभदेवभगवानकी चार वडीवडीमूर्ते चारोंतर्फ तख्तनशीन किइहुइ जोपांचपांचहाथकी वडी काविलेदीद औरदिदारकेहै, कइमूर्त्तेऔर चरनपादुका इसमेंतामीरहै, सामनेउनके

एकमदिर गणधरपुंडरीकस्वामीका उसीसालका तामीरकियाहुवा-और-आसपासइसके कइमदिर छोटेबडेकायमहै मदिर शांतिनाथजी-का-मदिरसीमधरस्वामीका-खिरनीकादरख्त--मदिरमल्लिनाथजीका-मदिर अजितनाथजीका-मदिरसभवनाथजीका-मदिरचद्रप्रभुजीका-और एकमदिर छत्रपतिसंप्रति राजाका-तामीरकरवायाहुवा-मदिर तीर्थंकरअभिनंदनस्वामीका-जिसकोंवनेआज (२१२६) वर्षहुवे वडा पुरानाहै. अवलजोलिखचुकेहैकि-राजासप्रतिने शत्रुंजयपरम-दिर वनवायासो-यही-मदिरहै, तीर्थोमेंयह कदीमीरवाजहैकि-एक मदिरपुरानाहोकरगिरगया किसीखुशनसीवने फिरतामीर करवाया, इसीकानामजीर्णोद्वारकहते है, औरइसीतरह तीर्थकायम-वा-दायम वनारहताहै, यहटोंक-सवटोंकसेंऊंची औरवालाहै. सववकि-पहा-डकेऊंचेसीरपरवनीहुइहै. पहाडशत्रुजयकी ऊचाइयहापर खतमहुइ, करीव (२५) कोशकीदूरसें जोशत्रुजयतीर्थका मंदिरनजरआताहै-वह-यहीमदिरहै,---

तीनकोशकेघेरेमे नवटोंक-और-छोटेवडेतीनहजार मंदिरइसप-हाडपर कायम-और-वरपाहै, इनमदिरोंकी औरटोंकोंकी चारोंतर्फ एकदिवारमानींद किलेकेवनीहुइ-नवटोंकोंके वडेवडेअठाराहफाटक-कइदरवजे-खीडकीयें-और-जानेआनेकेरास्ते-साफ और पाकवने हुवेहै. किसीयात्रीकों कोइतकलीफनही, हरटोंककेरास्तेरातकोंवदकर दियेजातेहै, शत्रुजयपहाड जैनमदिरोका-एकनायावशहरहै, इतनेइ-कठेमदिरएकजगहकहीनही देखोगे, मदिरोंकेशिखर-धजाओंकाफर-राना-घटोंकी झनझनाट दिलकों चकितकरदेती है, वडीवडीमूर्त्तिके मस्तकपरहीरे-कधे-हाथ-और घुंटनोंपर सुन्नेकेपतेलगेहुवे निहायत खूवसुरती दिखलारहे है.-एकपहाडपर इतनेजैनश्वेतावरमदिरोंका ज-मावहफतेअकलीममें कहीनहींपाओगे.-वैदिकऔर वौधलोगोकेइतने

कसरतकेमंदिर किसीतीर्थपरनही, महाराज छत्रपति-संप्रति-और-महाराजकुमारपाल-ये-दोनो जैनश्वेतांवर श्रावकथे, जिनके बनाये हुवे जैनमंदिर यहांपर मौजूदहै, दिवानवस्तुपाल तेजपालभी जैन-श्वेतांवरश्रावकथे, जिनोने इसतीर्थपर जैनमंदिर वनवाये है, दौलत और हकुमतपाकर धर्मकरना ऐसे धर्मपावंदोका कामहै,

[अनुष्टुप-वृत्तम्.]

श्रीयुगादिजिनादेशात्-पुंडरीकोगणाधिपः,
सपादलक्षमितं-नानाश्चर्यकरंवितं,
श्रीशत्रुंजयमहात्म्यं-सर्वतत्वसमन्वितं,
चकारपूर्व विश्वैक-हिताय महितं सुरैः,

शत्रुंजयतीर्थकी तारीफ जैनशास्त्रोमें ज्यादहलिखी है तीर्थकर रिषभदेवमहाराजके अव्वल गणधरपुंडरीकस्वामीने इसकी तारीफ सवालाख श्लोकसे वयानकिइथी, तीर्थकर महावीरस्वामीके पांचमे गणधरसुधर्मास्वामीने चौइसहजारश्लोकसे तारीफ वयानकिइ, वाद उनके श्रीमान्-धनेश्वरसूरिजीने-शत्रुंजयमहात्मनामका ग्रंथ वनाकर तारिफकिइ, जो अवभीमौजूदहै, पेस्तर पहाडवहुत वडाथा, जमाने हालमें कमरहगया, पेस्तरयहां वडीवडी गुफाये और तरहतरहकी वनास्पति-अशोक-केवडा-मोरसली-मयूरशिखा-केतकी, चंपा, और चमेली वगेरा वहुतायतसेंथी,

[अनुष्टुप-वृत्तम्.]

नास्त्यतऽपरम तीर्थ-धर्मो नातः परोवरः
शत्रुंजये जिनध्यानं-यज्जगत्सौख्यकारणं,

शत्रुंजयसमान दुसरातीर्थ नही, इसतीर्थमेंआनकर ध्यान कर-नेसे पुन्यानुवंधि पुन्यऔर अशुभकर्मकी निर्जराहोती है, मुल्क सौ-राष्ट्रका शिरोताज यही शत्रुंजयपर्वतहै,—

चौमुखाजीकीटोंकके हातेमें राजासंप्रतिका तामीरकरवायाहुवा मंदिरइसपहाडपर सबसेपुरानाशुमाराकियाजाताहै,-तीर्थंकरमहावीर स्वामीकी हयातीमेंराजगृहीके तख्तपरराजाश्रेणिक अमलदारीकरताथा-औरवहजैनमजहबपर पाबंदथा. श्रेणिककाबेटा कौणिकहुवा, उसकादुसरानामअजातशत्रुथा, औरयहभीजैनमजहबपर एतकातररखताथा. वालिदकेगुजरजानेपर उसनेराजगृहीकोंछोडकर अपनी अमलदारीचंपामें कायमकिइ, कौणिककाबेटाउदायीहुवा. यहभीजैनमजहबपर पाबंदथा, औरउसनेचंपाकों छोडकरअपनीअमलदारी पटनेमेंकायमकिइ. उदायीकेतख्तपर नंदनामकाराजाहुवा, नंदके तख्तपरआठपीढीतक नंदनामकेहीराजेहातेरहे, ये-जैनीनहीथे, इनकीअमलदारीभी पटनाहीरही, नवमेंनंदकोशिकस्तदेकर ऊसकीगदीपरचंद्रगुप्तराजाहुवा. यहजैनमजहबपर एतकातरखताथा. और उसकीअमलदारीभी पटनाहीरही.-चंद्रगुप्तकाबेटा—बिंदुसारहुवा. यहभीजैनमजहबपरपाबंदथा. औरउसनेपटनाको छोडकरअपनीअमलदारी शहरउज्जेनमेंकायमकिइ. बिंदुसारकाबेटा अशोकश्रीहुवा, इसनेबौधमजहबकों इख्तियारकियाथा. राजा-प्रियदर्शी-अशोकके जोशिलालेख हिंदमेंकहीकहीमिलतेहैडसी अशोकके है, अशोकश्रीका बेटाकुणालहुवा. यहजैनथा. औरकुणालकाबेटा-संप्रतिहुवा. इसकी अमलदारीभी शहरउज्जेनथी. औरजैनमजहबपरपाबंदथा. इसने अपनेतमाममुल्कमें हजारोंजगह जैनमंदिरबनवाये—औरजैनमूर्त्तिये तख्तनशीनकिइ. कइजगहअबतकउनके बनायेमंदिरमौजूदहै, तीर्थ शत्रुंजयऔरगिरनारपर इसीकेबनायेहुवे मंदिरजोकि-पुराने-शुमार कियेजातेहैमौजूदहै, जमानेहालमें-जो-(३६०००) जैनश्वेतावर मंदिर हिंदमेंकायमहै उनमेंकइमंदिरइसीसंप्रतिराजाके तामीरकियेहु-

कसरतकेमंदिर किसीतीर्थपरनही, महाराज छत्रपति-संप्रति-और-महाराजकुमारपाल-ये-दोनो जैनश्वेतांबर श्रावकथे, जिनके बनाये हुवे जैनमंदिर यहांपर मौजूदहै, दिवानवस्तुपाल तेजपालभी जैन-श्वेतांबरश्रावकथे, जिनोने इसतीर्थपर जैनमंदिर बनवाये है, दौलत और हकुमतपाकर धर्मकरना ऐसे धर्मपात्रंदोका कामहै,

[अनुष्टुप-वृत्तम्.]

श्रीयुगादिजिनादेशात्-पुंडरीकोगणाधिपः,
सपादलक्षप्रमितं-नानाश्चर्यकरंचितं,
श्रीशत्रुंजयमहात्म्यं-सर्वतत्वसमन्वितं,
चकारपूर्व विश्वैक-हिताय महितं सुरैः,

शत्रुंजयतीर्थकी तारीफ जैनशास्त्रोमें ज्यादहलिखी है तीर्थंकर रिषभदेवमहाराजके अव्वल गणधरपुंडरीकस्वामीने इसकी तारीफ सवालाख श्लोकसे बयानकिइथी, तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचमे गणधरसुधर्मास्वामीने चौइसहजारश्लोकसे तारीफ बयानकिइ, बाद उनके श्रीमान्-धनेश्वरसूरिजीने-शत्रुंजयमहात्मनामका ग्रंथ बनाकर तारिफकिइ, जो अबभीमौजूदहै, पेस्तर पहाडबहुत बडाथा, जमाने हालमें कमरहगया, पेस्तरयहां बडीबडी गुफाये और तरहतरहकी वनास्पति-अशोक-केवडा-मोरसली-मयूरशिखा-केतकी, चंपा, और चमेली वगेरा बहुतायतसेंथी,

[अनुष्टुप-वृत्तम्.]

नास्त्यतऽपरमं तीर्थ-धर्मो नातः परोवरः
शत्रुंजये जिनध्यानं-यज्जगत्सौख्यकारणं,

शत्रुंजयसमान दुसरातीर्थ नही, इसतीर्थमेंआनकर ध्यान करनेसे पुन्यानुबंधि पुन्यऔर अशुभकर्मकी निर्जराहोती है, मुल्क सौराष्ट्रका शिरोताज यही शत्रुंजयपर्वतहै,—

चौमुखाजीकेमंदिरमे जोशिलालेखलगाहुवाहै उसमेंलिखाहैसु-लतान-नुरुद्दीनजहांगीरके जमानेमेंसवाइविजयराजा—सुलतान-खुशरुऔरखुरमाके वख्तमेंसवत् (१६७५) वैशाखसुदी (१३) के रौजदेवराज-और-उनकेखानदानमे-सोमजीऔरउसकी औरतरा-जलदेवीने यहचौमुखाजीकामंदिर तामीरकरवाया, शहरपालितानेमें जैनश्वेतांबरकारखाना वडीलागतकावनाहुवा-मुनीम-गुमास्ते-नो-कर-चाकर-पूजारी-चौकी-पहरा-हरवख्तमौजूद-वा-कायम रहता है, उनकाखर्च-खराजात-सवकारखानेशत्रुजयसे दियाजाताहै, और यहसवआमदनी औरखर्चजैनश्वेतावरोंके तावेमेंहै, जैनमेंऐसातीर्थ किसीआविलममें-न-देखोगे. गिरनार-समेतशिखर-आवु-और-केशरियाजीवगेरा कइजैनतीर्थ है मगरशत्रुंजयतीर्थ-प्रायःशाश्वताहै इसलियेसवतीर्थोंमें इसतीर्थकोंवडामानागया. अगरकोइयात्री-शत्रुं-जयतीर्थकी एकरोजमे-दो-दफे-यात्राकरनाचाहे विमलवशी-और मोतीशाहशेठकीटोंककेपास-जोनीचेउतरनेका-रास्तावनाहै उतरकर आदिपुरगांवकोंजाय, सीढीयावेंडोलपथरोंकी वनीहुइहै, वहापरती-र्थकरनेमनाथमहाराजकी छत्रीऔरचरनपादुका तख्तनशीनहै. उनके दर्शनकरे, औरफिरवहांसे वापीसचढकरउसीरास्ते विमलशीटोंकको आवे, विमलवशीटोंकके दर्शनकरकेफिर वापीसपालितानेकी तलह-टीकोंलौटजाय दो-यात्रा-होजायगी,—

अगरकोइयात्री शत्रुंजयपहाडके सवमंदिरोंकीचारोंतर्फ छको-शकी परकम्मादेनाचाहे दरवजेरामपोलके दाहनीतर्फसें शुरूआतकरे, अवल देवकीजीकेखटनंदनकी छत्रीकेदर्शनकरे, आगेइसके चदनत-लाइ-सिद्धशिला-और- तीर्थंकरअजितनाथ-शांतिनाथजीके चर-णोकी दोछत्रीयेंआयगी. उनकेदर्शनकरे, सिद्धशिलाकीचट्टानपर बेस्तरकइमुनि अनशनकरके मुक्तिकोंगयेहै, इसीसववसें कइयात्री

वे है. राजासंप्रतिकेगुरु-आर्य-सुहस्ती-जैनाचार्यवडेआलीम--फाजिलथे-और-वे-दशपूर्वज्ञानका इल्मरखतेथे. उनोनेराजासंप्रतिको खातिरजमा करवादिइथीकि-दौलत-और-जींदगी--दुनियामेकोइ वडीचीजनहीहै. उमदाचीजएकधर्महीहै, औरवहीवडीचीजहै. हजारोंराजेरहीशहोगयेदेखलो ! कोइकायमनहीरहे, जोकुछकायमरहनेवालीचीजहै-वो-धर्म है. राजासंप्रतिनेउनकेफरमानपर पुराअमल कियाथा, औरहरवख्त धर्मपरसावीतकदमथा.—

शत्रुंजयपहाडकेमंदिरोकी कारीगिरी अजीवकिस्मकी देखोगे, हरजगह सफाइ-खूबसुरति-तरहतरहकी कतावजाकेवनेहुवे मंदिर-चौक-गुंबज-और होजदेखकरआंखेतरहोतीहै, वडेवडेमंदिरोकेशिखरपरचढकरदेखोतो चारोतर्फमानींदे स्वर्गविमानके नजरआताहै. विमलवशीटोकमें जोतीर्थकररिषभदेवभगवानका मंदिरकर्माशाहशेठनेसंवत् (१५७८) में तामीरकरवायाहै-वे-चितोडके दिवानथे, औरउनकीइज्जित औरधर्मश्रद्धालाइकतारीफकेथी. जव-वे-शहर पालितानेमेंआयेथे उनकीमुबारिकवादीकेलिये वहुतजलसाहुवाथा, उनकेशाथमेंहाथी-घोडे-म्याने--पालखी-रथ--सिपाही--नोकर-चाकर-और-चर्च-चंग--वगैरातरहतरहकेवाजेथे, वडेवडेदाना-औरवहादूरशख्श उनकेशाथआयेथे. जव-वे-तीर्थकररिषभदेवभगवानके नयेवनायेहुवे मंदिरकीप्रतिष्ठाको शत्रुंजयपहाडपरगयेथे, जवाहिरात-और--सचेमोतियोके--थालोंसेंतीर्थका नसारकियाथा, औरअछेमुहुर्त्तमे प्रतिष्ठाकिइथी, धर्मपावंदशख्श होतोऐसेहो, उसवख्तउनकी इज्जतइतनीथीकि-आजकलकेतमाम श्रावकोमें होनादुसवारहै,—

शहरपालितानेमें एकमंदिरजो दिगवरलोगोंकाहै थोडेवर्षोसेवनाहै धर्मशालाभी–थोडेअर्सेसें वनीहुइहै जितनी पुरानीधर्मशाला–और पुरानेजैनमदिर तीर्थशत्रुंजय–या–शहरपालितानेमें है सवजैनश्वेतां-वरोकीतर्फसे है. हमनेइसतीर्थकी कइदफेजियारतकि और मुनिहालतमेंचौमासाभी यहाठहरेहै जीसनेइसतीर्थकी जियारत नहीकिइ उसनेजैनमदिरोंकी झलाझलरौशनी नहीदेखीयहकहना कोइगलत नही.—

[तवारिख तीर्थ–शत्रुंजय खतमहुई.]

यात्रीशत्रुजयतीर्थकी जियारतकरकेवापिस सौनगढटेशनकोंआवे, और सौनगढटेशनसें पाचमीलपूरवकों-जो-शिहोरकस्वाहै व–जरीये-रैलकेजाय, टेशनसें (१) मील–दखनकीवाजुशिहोरकस्वा-आवादहै, शिहोरकीमर्दुमशुमारी (१०००५) मनुष्योकी–और–उसमेकरीव (५००) जैनश्वेतावरश्रावक आवादहै, एकशिखरवद–जैनश्वेतावर मदिर–और–यात्रीयोकोंठहरनेकेलिये एकधर्मशाला यहापरवनीहुइ है, यात्रीइसमेंकयामकरे कोइतकलीफ–न–होगी. शिहोरकीतमाखू और–वर्तन–तांवापीतलके–मुल्कोमेंमशहूरहै, असलमेंशिहोरकस्वा–पहाडकेघेरेआवादहै, औरपेस्तर यहाइतनाझाडी–झुखड–थाकि–कोशीशकरास्तापाना—दुसवारथा, मगरजमानेहालमें वहसव—साफ करादियागया. ब्रह्म–कुड–और–गौतमकुड यहाकाविलदेखनेके है, वाजारमें जिसचीजकीदरकारहो–मिलसकेगी.–पुरानेशिहोरमें पहाडोंकेउपरकइ मकानातवनेहुवे है, शिहोरसें रैलमेंसवारहोकर वरतेज टेशनहोतेहुवेयात्री शहरभावनगरजाय, सोनगढटेशनसें भावनगर तकरैलकिराया चारआने,—

शिहोरटेशनसे (१४) और–सौनगढटेशनसे (१[illegible] [illegible] भावनगरशहरएक–रैलकाटेशनहै, सन (१७२३

यहांवेठकर ध्यानसमाधिकरतेहै, औरइससववसे इसकानामसिद्ध-शिलाकहागया, आगेइसकेभाडवाकापहाडजहांकि-तीर्थकरअजीत-नाथ-और-शांतिनाथजीने चौमासाकियाथा,दर्शनकरके अगाडीव-ढना. औरआगेइसकेकुछनीचे उतरकरसिद्धवडकोंआना,-यहांपर एकवटवृक्षखडाहै, नीचेइसके कइमुनियोंनेध्यानसमाधि करकेमुक्ति पाइथी. इसीलियेइसकानाम सिद्धवडमसहूरहुवा, यहांपरदो-छत्रीये वनीहुइमोजूदहै.वस ! सिद्धवडसेंशहरपालिताने पहुचनेकासिधारा-स्तावनाहुवाहै चलेजाओ ! छकोशकी परकम्माखतमहुइ.—

अगरकोइ शत्रुंजयपहाडकी चारोंतर्फवारांकोशकी परकम्मादेना-चाहे-तो-यहपरकम्माभी वनीहुइहै, चाहेकोइवेंलगाडीमे सवारहोकर जाय-या- पैदलजाय, यात्रीकोंइख्तियारहै, शहरपालितानेसे रवा-नाहोकरअवल शत्रुंजयनदीकोंजाय. वहांपरएकछोटासामंदिर और उसमेतीर्थंकररिपभदेव भगवानकेचरण जायेनशीनहै, उनकेदर्शनक-रकेआगेवढे. चारकोशआगेएक-भंडारियागांवआयगा. औरभंडा-रियागांवसेंआगेएक- कदंबगिरिपहाड-जिसपरकदंवगणधर अगले जमानेमें मुक्तहुवेथे, उनकेचरनयहांपरवनेहुवेहै. औरनिहायतउमदा एकछत्री-उनकेनिशानपर तामीरहै,—उनकेदर्शनकरके आगेवढेतो चौकगांवआयगा. वहांपरआरामकरें. औरदुसरेरोजहस्त गिरिपहा-डकीजियारतकोंजाय. इसपहाडपरहस्तीनामके एकगणधरमोक्षहुवेथे उनकेचरनऔर छत्रीयहांपरवनीहुइहै, दर्शनकरकेनीचेआवे. और घेटीगांव-जो-दरमियानरास्तेके आताहै होतेहुवेशहरपालितानेकों वापिसलोटआवे. वारांकोशकी परकम्माखतमहुइ.

--शत्रुंजयपहाडपर विमलवशीटोंकमें जो-एकमंदिरपीछेसेंवना-हुवा दिगंवरमजहववालोंकाहै-पुराने औरमूलमंदिरोंके वादवनाहै,

शहरपालितानेमें एकमंदिरजो दिगंबरलोगोंकाहै थोडेवर्षोंसेवनाहै धर्मशालाभी–थोडेअर्सेसें बनीहुइहै जितनी पुरानीधर्मशाला–और पुरानेजैनमंदिर तीर्थशत्रुंजय–या–शहरपालितानेमें है सबजैनश्वेतांबरोंकीतर्फसे है. हमनेइसतीर्थकी कइदफेजियारतकि और मुनिहालतमेंचौमासाभी यहांठहरेहै जीसनेइसतीर्थकी जियारत नहीकिइ उसनेजैनमंदिरोंकी झलाझलरौशनी नहींदेखीयहकहना कोइगलत नही.—

☞ [तवारिख तीर्थ–शत्रुंजय खतमहुई.]

यात्रीशत्रुंजयतीर्थकी जियारतकरकेवापिस सौनगढटेशनकोआवे, और सौनगढटेशनसें पांचमीलपूरवकों-जो-शिहोरकस्बाहै ब–जरीये-रैलकेजाय, टेशनसे (१) मील–दखनकीवाजुशिहोरकस्बा-आवादहै, शिहोरकीमर्दुमशुमारी (१०००५) मनुष्योकी–और–उसमेंकरीब (५००) जैनश्वेतांबरश्रावक आवादहै, एकशिखरबंद–जैनश्वेतांबर मंदिर–और–यात्रीयोंकोंठहरनेकेलिये एकधर्मशाला यहांपरबनीहुइ है, यात्रीइसमेंकयामकरे कोइतकलीफ–न–होगी. शिहोरकीतमाखू और–वर्तन–तांवापीतलके–मुल्कोंमेंमशहूरहै, असलमेंशिहोरकस्बा–पहाडकेघेरेआवादहै, औरपेस्तर यहांइतनाझाडी–झुखड–थाकि–कोशोंतकरास्तापाना—दुसवारथा, मगरजमानेहालमें वहसब—साफ करादियागया. ब्रह्म–कुंड–और–गौतमकुंड यहांकाविलदेखनेके है, बाजारमें जिसचीजकीदरकारहो–मिलसकेगी.–पुरानेशिहोरमें पहाडोंकेउपरकइ मकानातबनेहुवे है, शिहोरसें रैलमेंसवारहोकर वरतेज टेशनहोतेहुवेयात्री शहरभावनगरजाय, सोनगढटेशनसें भावनगर तकरैलकिराया चारआने,—

शिहोरटेशनसे (१४) और–सौनगढटेशनसे (१९) मीलदूर भावनगरशहरएक–रैलकाटेशनहै, सन (१७२३) इस्वीमें भाव-

जोकि–अब–गोघेके नवखंडापार्श्वथजीके मंदिरमेंजायेनशीनहै, हमने इसतीर्थकीजियारत दोदफेकिइहुइ औरतमामजगह बखूबीदेखीभालीहै

गोघाबंदरसेंफिरवापिस–भावनगर–आना, और रैलमेंसवारहो करधोलाजंकशनजाना. अगरफुरसतहोतो–यहांउतरकर (६) कोशखुश्कीरास्ते वल्लभीनगरीजोकि––पुरानीनगरीहैजाना,––तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाणहुवेबाद (९८०) वर्षपीछे–दुषमांधकार-तरणि–जैनाचार्य–देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण महाराजनेयहां ताडपत्रोंपर जैनआगमलिखेथे, जैनश्वेतांमवरमंदिर–और–देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण महाराजकी मूर्त्ति–यहांपर–जायेनशीनहै. दर्शनकरके वापिसधोला-जंकशनआना, औरधोलासें–जालिया–धसा–लाठी–चीतल–कुनी-धर–कुंकावाव–खाखरीया–वावडी–जेतपर–जेतलसरजंकशन–और वाडलहोतेहुवे-जुनागढजाना. रैलकिराया १–१२–० पोनेदोरुपये.

☞ (तवारिख–तीर्थ–गिरनार,)

(करिब शहर जूनागढ–जिले काठियावाड.)

जिले काठियावाड-मुल्क-सौराष्ट्रमें-जुनागढ-एक-अजनबी-और नायावशहरहै, अमलदारीनवावसाहबकी–टेशनसेशहर बहुतकरीब–और–जानेआनेकेलिये सवारीइका–वगी–हरवख्तमिलतीहै, खास! दरवजेकेनजदीक एकमुसाफिरखाना बनाहुवाहै, मगरजैनश्वेतांवर यात्रीकोंशहरमेंहीजानामुफीदहै,–बाजारबडेलंबे–और –ग्रीनचौकबडी गुल्जारजगहहै, जिसचीजकी दरकारहोयहामिलसकतीहै, राजमहेल वडेउमदा–रगबेरंगेचित्र–मेहरावें––झाडफानुस–तस्वीरे–बडेबडेआइने औरसोनाचांदीकी कुर्शियें–इसमेंरखीहुइहै, बाजारमोहब्बत–सर्किल में–हरकिस्मकीचीजें–यहांभीमिलतीहै,–

खास ! जुनागढकी मर्दुमशूमारी (३१६४०) मनुष्योकी-अस्पताल—कचहरी—और—कइउमदाउमदा मकानात यहांपर तामीरहै रुइकी पैदाश ज्यादह-सक्करबाग-और सिरदारबाग यहां देखनेकी जगहहै, उमदा मकानात-पानीकानाला-और-शेर-हिरन-वगेराजानवर इसमेंरखेहुवेहै, महोलेउपरकोट-किला-रायखेंगारकेवख्तका-तालाव-पुरानीइमारतें-औरतलघर अजनवीवनेहुवेहै, फाटककेउपरसन (१४५०) इस्वीकावनाहुवा एकशिलालेख-दो-पुरानीतोपें-जुमामशजिद-दो-वावडीये-और-कइगुफायें वनीहुइहै, जैनश्वेतांवरश्रावकोकेघर जुनागढमेंकरीव (१२५)-महोले उपरकोटमें धर्मशालातीन-एक हेमाभाइशेठकी-दूसरी—वाबुकी-तीसरीलीमडीवाली पुरीवाइकी-यात्रीकोंइख्तियारहै दिलचाहेवहां ठहरेकोइमनानहीं, जैनश्वेतांवरमंदिर जुनागढमेंदो-एक शिखरवद-और-दूसराछोटा-तामीरहै, खजानातीर्थ-गिरनारका-देवचंद-लक्ष्मीचंदकेनामसे-जुनागढमें जारी है. मुनीम-गुमास्ते-नोकरचाकर-घंटाघडीयाल-चोकीपहरा-चपरासी-वगेरासवठाठराजसी, जमाने तीर्थंकरनेमनाथजीके वडेवडेमहेलात-और-किले -यहांपरमोजूदथे, दशदशाखरवीरपुरपके वनायेहुवे वडेवडे आलिशान-मकानकि-जिनपरवेंशुमार दोलतलगीहुइ-और-खजानेयहांपर मामूरथें, अ-वभीवहमकानात-औरखजाने जमीनसेंनिकलते नजरआतेहै, पेस्तर यहांएकगढनामका किलापूरवदिशातर्फ मशहूरथा-और-उसकेतीन नामथे-उग्रसेनगढ-जीर्णगढ-औरखेंगारगढ-जिसमें-जीर्णगढकानाम जुनागढकहलाया, सस्कृतजवानमें जुनेकोंजीर्णकहते है, इसीलीयेलोग भाषामेंजुनागढनाम मशहूरहोगया, पेस्तर यहांपरतीर्थंकररिषभदेवभगवानकावडापुराना मंदिरथा. यादववंशीराजोने कइ-जैनमंदिरयहां तामीरकरवायेथे जोकि-न-सवजगदौंसजमानेके अवनहीरहे. वाद-

तीर्थंकरनेमनाथजीके कइजैनधर्मावलंबीराजे यहांपरहुवे कहांतक कोइ बयानलिखे, विविधतीर्थकल्प ग्रंथमे तेहरीरहैकि-राजा-जयसिंहदेव ने खेंगाररायको परास्तकरके यहांपर अपना अमल दरामद किया और संवत् (११८५) में तीर्थंकरनेमनाथजीका मंदिर फिरतामीर करवाया, जो अवतक मौजूदहै,-संवत् (१२२०) में छत्रपतिराजा कुमारपालके कोतवालदंडाधिपतिनेगिरनारपहाडपर सीढियांवनवाइ, जोकि-श्रीश्रीमालज्ञातिकाथा. सीढीकेदाहनेतर्फ लक्षारामनामकावा-गथा, मगरवहअवगर्दीस जमानेकेवरावाद होगया. दिवानवस्तुपाल तेजपाल-जोकि-राजावीरधवलके वजीरथे. उनोनेकरीवगिरनारपहा-डकेएक शहरतेजलपुरनामकायहां आवादकियाथा. और उसमेंअपने वालिदकेनामसेएक मंदिर तामीरकरवाकर , तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी मूर्तितख्तनशीनकिइथी. और उसकानाम आसराजविहार रखाथा- वाल्दा कुमरदेवीकेनामसे एक-कुमरसरोवरबनवायाथा, तेजलपुर और जुनागढ—दोनो वहुत करीवथे इसलियेदोनो एकनामसे जुनागढ मशहूर होगये,—

☞[पहाड—गिरनार,-.]

शहरजुनागढसे पूरवकोंगिरनारपहाड जैनोका एकवडा मशहूर तीर्थ है. शहरसें पहाडकी दामनतककरीव (२) कोशका रास्ता होगा, इक्का-वगी-वेलगाडी-म्याना-पालखी-डोली-वगेरासवा-री आसानीसें जासकती है, जिसकीखुशीहो सवारीमेंजाय-या-पांवपेदलजाय. वडेवडेदरख्त-और-तरहतरहके जंगली मेवाजात क-सरतसेंखडे है. वंदरोंकेझुंडदरख्तोंपर कलोलेकरतेरहते हैं, रास्तेमें दाहनीतर्फ--राजाप्रियदर्शी-अशोकका--शिलालेख-एकतर्फदामोद-रकुंड-सुवर्णरेखानदी-पहाडकीनराइमें उमदातालाव—दरख्तोंकेझुंड औरजगहसुहावनो है, खास ! पहाडकीदामनमें-तलहटी-और-दो

जैनश्वेतांवरधर्मशाला वनीहुइ-जिनमें-एकशेठ-प्रेमचंदरायचंदजी-की-दूसरी फुलचंदभाइ—लस्करवालोंकी दोनों धर्मशालामें करीव (५००) यात्री-व-खूवीठहरसक्ते है, यात्रीकोंयहापर अगरखान पानकरनाहो करे. हाजत-व-शरीरे फारकहोकर वदनसाफ करे. औरपहाडपरजानेकी शुरुआत करे, शुरूमेंएकआलिशान दरवजाव-नाहुवा उसमेंहोकर सीढीकेउपर कदमरखे,

समुंदरकेपानीसें गिरनारपहाड (३६७९) फुटऊंचा-और-इसकादुसरानाम रैवताचलभी है, तीर्थंकर नेमनाथजीने इसीपहाड-पर मुक्तिपाइ. और उनके दिक्षा-केवलज्ञान-और-मुक्ति-ये-तीन कल्याणकयहांहुवे. कृश्नवासुदेवने यहापर तीर्थंकरनेमनाथजीके वडे वडे आलिशानमंदिर और मूर्त्तियें तख्तनशीनकिइथी, मगरतवदील जमानेकीवजहसें-वे-मंदिर-और-मूर्त्तियेंअवनहींरही, कइराजेमहा-राजोंकी सल्तनतइसजमीनपरगुजरी जिनकानामनिशानभी पुरेपुरा नजरनहीआता, कृश्नजीकेवडेभाइ वलभद्रजीका तामीरकरवायाहुवा मंदिरभी इसपहाडपरथा, मगरवहभीनहीरहा, तीर्थंकरनेमनाथजीने इसीगिरनारपर सहस्राम्रवनमें दीक्षाइख्तियार किइथी. वह जगह वडेवडेताज्जुव-और-नायावकी है, तरहतरहकेमेवाजात-वनास्पति अनार-वा-नारंगी-यहा-व-कसरतके मौजूद है. परींदाजानवर-मौर-तोते-चीडिया-मेना-वगेरा हरकिस्मके दरख्तोंपरकलोलेकररहे है, चीस्मे-आव-मानीदेवर्फ-सफेद और मीठायहापरजारी है,

गिरनारकी गुफायें मुल्कोंमेंमशहूर वडेवडेमुनिमहर्षियोंने यहां परध्यानसमाधिकिइ. सोने-चांदी-जवाहिरातकी खानें यहांपरमौ-जूदथी. तरहतरहकी जडीवुटी औररसकुंपिका यहापरकायमदायमथी मगर आजकल उनकेपहिचाननेवाले नहींरहे,

[अनुष्टुप-वृत्तम्]

न-स-वृक्षो-न-सा-वल्ली-न-तत्पुष्पं-न-तत्फलं,
नेक्षतेत्राभियुक्तैर्यत्-इत्येतिह्यविदो विदुः,—

ज्ञानशिला-उन्नशिला-और-अंजनशिला-वगेरा कइशिला-ध्यानसमाधिकेलिये यहांपरमशहूरथी. मगरआजकल-वे-नामांतर होजानेकीवजहसें पहिचाननेमेंनहीआती. वेगवतीऔर ज्ञानशिलाके निचेऐसीमीटीहोतीथीकि-अगरतरकीवकेसाथ उसकोपकाइजाय-तो सोनाहोजाताथा, मगरजमानेहालमें वहतरकीव-और-उसमीटीकों पहिचाननेवाले नहीरहे, पेस्तरजो-किमियागिरिका इल्मथा-वह-झुठानहीथा, वेशक! आजकलइस इल्मकेजाननेवालेनहीरहे, गिरनारपहाड आजकलभी तरहतरहकी वनस्पति और चीस्मेआवसेतर-व-तरहै, आवहवायहांकी साफऔरउमदा-गिरनारपहाडकी सीढियां-जोकि-राजाकुमारपालके कोतवालनेवनवाइथी पुरानीहोजानेकी वजहसें यात्रीकों चढनेकी तकलीफथी, जैनश्वेतांवर संघने करीव अढाइलाखरुपये सर्फकरके वास्ते आरामके नयी सीढिये वनवाइ. जिससेंयात्री इनदिनोंमें वहुतआसानीसे आतेजाते है,

गिरनारपहाड वडेवडेजैनमंदिरोसें मुझयन-औरकावीलेदीद है. तीर्थंकरनेमनाथजीने इसपहाडपर ध्यानसमाधि करके मुक्ति पाइ, इंद्रदेवते उनकीखिदमतमे हाजिररहतेथे. पेस्तरकेजमानेमें कइजंघाचारण-विद्याचारणमुनि इसपहाडपर कदमरंजा फरमाचुकेहै जिसके वडेभाग्यहो इसतीर्थकी जियारतकरे, रास्तेमें कइजगह उमदावेठके-और-तरहतरहकीखुशवु मेहकरही है, तलहटीसेकरीव (२) मील तीर्थंकर नेमनाथजीकी टोंकहोगी, अवलटोंकइसीकोंकहते है, यात्री

यहांपरपहुंचकर तीर्थंकरनेमनाथजीकी मूर्त्तिकेदर्शनकरे, वडेयेरेमें मंदिरोका जमाववनाहुवाहै, पूजारी-नोकर-चाकर सवइतजामउमदा तौरसेंकायमहै. तीर्थंकर नेमनाथजीकी टोंकपरवडेवडेसोलहजैनमदिर निहायतखूवसुरतिकेशाथ एकदूसरेसेंवढकर वेशुमारदौलत-और-पुख्तगीसेंवने है, देखकरदिलखुश औरताजाहोगा, (१४९) फुटलवे और (१३०) फुटचोडेअगनमें तीर्थंकरनेमनाथजीका शिखरवंदमदिरवहुतख्वीकेशाथ तामीरहै, औरइसमेंतीर्थंकरनेमनाथजीकी मूर्त्ति--शामरग-और-हमेशां सोनेजवाहिरातोंसें सजीहुइतख्तनशीन है, दर्शनकरकेदिलखुशहोगा, सन (१२७८) इस्वीमेंइसकीमरम्मतहुइ, बडेवडेरगमंडप-चरणपादुका-और शिलालेखयहांपरमौजूदहै, तीर्थंकरनेमनाथजीके मदिरकी-चारोतर्फउमदा ताजगीसें वनेहुवे छोटे छोटे (७०) मंदिरदेखकरदिलखुशहोगा. वायीतर्फवडेवडेआलिशान तीनमंदिर-एकमदिरमें तीर्थंकररिषभदेवभगवानकी मूर्त्तितख्तनशीन है, सामनेइसके पाचभाइयोंकामदिर-पश्चिमकीतर्फवडा आलिशान पार्श्वनाथजीकामंदिर-और-इसके उत्तरकीतर्फ फिरएकमदिरपार्श्वनाथजीका-इसकेउत्तर वगलकेपास-मदिर-छत्रपतिराजाकुमारपाल का-और-नेमनाथजीकेमदिरसें पिछाडीदिवान-वस्तुपाल-तेजपाल केवनायेहुवे तीनमदिर-जोकि-सन (११९९) इस्वीकेअर्सेमेंतामीर करायेगये है, वडीलागतके है,—

छत्रपतिमहाराज संप्रतिकावनायाहुवा शिखरवदकीमतीमदिर वडीलागतका औरपुरानाहै. उसकीशिल्पकारीगिरीपर आजविल्कुल वेंपरवाइहोरहीहै, औरउसपरचुनापुतवायाजाताहै. असलमेंऐसीकारिगरीपर चुनापुतवानाकोइजरुरतनही. वगेरचुनेकेही-वे-निहायत खूवसुरतमालूमदेते है, देखोखुशनसीवोंने क्यान्या उमदा कारीगिरी कीइथी जो जमानेहालमें होनादुसवारहै, पथरोपर नख्सकारी और

तरहतरहकेचित्र जो अव्वलके कारीगिरीने अपनी चतराइसें कियेथे वैसेचित्रऔर नख्सकारीकाकाम. अवकहांहै, किसकदर खुशनसीब औरइकबालमंदोने यहांपर अपनीदौलत सर्फकिइथी जिसकीवरावरी करना आजकलनहीहोसकता, खुशनसीव औरधर्मपावंद होतोऐसेहो अवभीमंदिरोंपरऔरदिवारोंमें जोजोकारिगिरी औरनक्षकारीकामहै- अगरकोइखुशनसीव उसपरकोशिशकरे, औरमरम्मतकरावे क्याहीउ मदावातहो! नयामंदिरवनानेसें पुरानेमंदिरोकी मरम्मतकराना जादह फायदेमंदहै, तीर्थकरनेमनाथजीकी टोंक-और-मेकरवशीकेवीच जोवडे वडेहर्फोके शिलालेखहैवेशक! इसवख्तउनपर लकडेकेढकनवनेहुवेहै मगरधुप औरबारीशमें औरभीज्यादहहिफाजत होनाजरुरी है पुरानीची जोकोबरबाद-न-होनेदेना इसीकानामतीर्थकीसेवाहै. संवत् (१९३२) केअर्सेमेंगिरनारपहाडपर कइमंदिरोंकीमरम्मतकिइगइ. नेमनाथमहारा- जकेमंदिरकी चोतर्फ-जो-किला-और परकम्माहैउसकीमरम्मतहुइ, मंदिरअदबुदजीका-पंचमेरुका-और-मेकरवशीका-मय परकम्माके जीर्णोद्धारकरायागया, मंदिरसंग्रामसोनीका-और उसकाचौक मर- म्मतकियागया. मंदिरजोकि-ज्ञानवावडीके-नजदीकहै किलाउसका नयातामीरकरायागया मंदिरछत्रपतिमहाराजा-संप्रतिकाभी उसी अर्सेमेंमरम्मतकियागया. औरउसमेंनयेपथ्थरोका चौकनयावनवाया गया, करीव (३०) वर्पहुवेइसीचौकमेंसे (७१) मूर्त्ते-और-धातुका परिकरनिकलाथा. मंदिरवस्तुपाल-तेजपालकी चारोंतर्फनयाकिला बनवाया. औरचौकमेंनयेपथ्थरोंका फर्सलगाया. मंदिरसंभवनाथ- जीका-और-पानीकाकुंड उसीअर्सेमेंमरम्मतकरायागया. औरचारों तर्फनयाकिलातामीरकिया, राजुलगुफा-और-रथनेमिजीका-मंदिर जिर्णोद्धारकरवायागया. औरअवलदरवजेपर नयाबंगलाबना. यह सबकाम-शेठ-नरसिंह-केशवजीकीतर्फसें (४५०००) हजाररुप- योंकेखर्चसेतामीरहुवाहै.

गिरनारकी गुफायें पेस्तरबडीथी, और उनमे वडेवडेमुनिमहर्षि ध्यान कियाकरतेथे, अवभी कइगुफाये मौजूदहै. जिनोनेइसतीर्थकी जियारतकिइहै उनको वखुवीमालुम होगा. जिनके वडेभाग्यहो इस तीर्थकीयात्रा करे, धर्मशाला–पानीकेकुड–कोठी–और–कारखाना–सर्वइतजाम अछावनाहै. नेमनाथजीकी टोंकसेआगे दुसरीटोंकके दर्शनोंको जानाचाहिये. रास्तेमेंपानीकेहौज–मकानात–औरराजुलगुफा वगेराआतेहै दुसरीटोंकसेंआगे तीसरीटोंककोजाना सहस्राम्रवन जानेकारास्ता तीसरीटोंकसें फटताहै. सहस्राम्रवनसेंआगे अगरकोइ यात्रीनीचे तलहटीको जानाचाहेतो जासकताहै, रास्ता पगडंडीका वनाहुवाहै, सहस्राम्रवनमें तीर्थकरनेमनाथमहाराजके दीक्षाकल्याणिककी जगह–छत्री–और–चरन जायेनशीनहै, दर्शनकरके जोकोइ यात्री पांचमी टोंकको जानाचाहे फिरवापिसआनकर चौथीटोंकको जावे, चोथीटोंकपर तीर्थकर नेमनाथजीकी अधिष्ठात्रीदेवीअंबिकाका मंदिरवनाहुवाहै, चोथीटोंकसे आगे पाचमी टोंकका रास्ता शुरुहै, उसरास्ते–पांचवी टोंककोजाय. रास्ताअलवते ! कठिनहै. असलमे पाचवीटोंक गिरनारपहाडके सीरेपरऔर पहाडकासीरा–आस्मानसे बिलकुल वरावरीकररहाहै. यात्रीकोंपाचवींटोंककोजानादुसवारऔर हेरानी मालुमहोती है, गोकि–जवानआदमीहो–वगेरेलकडीके जाना नहीहोसकता. इससववसेंहरयात्री वहापरजानेकेलिये वतौरसहारेके लकडीशाथ लेजाताहै, जिसकेवडेभाग्यहो इसतीर्थकी जियारत करे पांचवीटोंकपरतीर्थकर नेमिनाथजीके चरणजायेनशीनहै,–और एक मूर्त्ति दिवारमेंउकेरीहुइ उसके दर्शनकरे.–जगहसुहावनी–देखकर दिलखुशहोगा.–जिसवख्तइसटोंकपर खडेहोकर नजरफेरेतो मालुम देताहैमानो ! आस्मानसेंजमीनकी शैरकररहेहै, तरहतरहकी हरिया-

ली-गांव-बगीचे-और-शहरजुनागढ सामनेदिखपडताहै, इसटोंकके दर्शनकरके यात्री वापिस आनेका इरादाकरे. गजपदकुंड-सूर्यकुंड- तरहतरहकी वनास्पति-और-जडीवूटीयें यहांपरखडीहै, कहांतक कोइबयानकरे पांचवीटोंकसे चौथीटोंक-और-चौथीटोंकसे तीसरी, तीसरीसे-दुसरी-और दुसरीसे पहेली-इसतरह जिसरास्ते गयेथे उसीरास्तेहोकर नीचेतलहटीपरआजाय,-यहांपरकयामकरनाहो-बे-शक ! करे-या शहरमेंजानाहो शहरमेंजाय, गिरनारपहाडकाचढाव तलहटीसें पांचमीटोंकतक (६) मील-आतेजाते (१२) मीलहुवे. शुभहकोंगयेहुवे यात्री शामको ब-खूबीबीळे-लौटसकतेहै,-

छत्रपतिमहाराजसंप्रति-छत्रपतिमहाराज कुमारपाल-दिवान वस्तुपाल तेजपाल-और-संग्रामसोनी-जिनके तामीरकरवाये हुवे जैनमंदिर यहां मौजूदहै.-वे-सब जैनश्वेतांबर आम्नायके श्रावकथे,

सुरासुरा अप्यतुलप्रमाणं-नमतिबद्धाजलयो यमुच्चैः,
ध्यायंतियं योगविदोहृदंतः-तं नेमिनाथंप्रणतस्तवीमि,

[अनुष्टुप-वृतम्]

स्थानेदेशः सुराष्ट्राख्यो-विभर्ति भुवनेष्यसौ,
यद्भूमिकामिनीभाले-गिरिरेपविशेपकः,
सहस्राम्रवनं लक्ष्यारामोन्येपि वनव्रजाः,
मयूर कोकिला भृंगी-संगीतसुभगाइह,
नदीनिर्झरकुंडानां-खनीनां विरुधामपि,
विद्राकरेचात्रसंख्या-संख्यावानपिकःखलु,
रैवताद्रिमणिरत्न-किरणैर्धनवर्णकैः,
अयत्नं चित्र निर्माण-मासीत्तत्रजिनालये,

सन (२१०) इस्वीकेपेस्तरसेंगिरनारतीर्थ जैनश्वेतांबरोंकोजियार-तकी जगहमशहुरहै-ऐसा-इतिहासकारोंकाभी फरमानाहै,-

(तवारिख-तीर्थ-गिरनारखतम-हुई,-)

तीर्थगिरनारकी जियारतकरके जुनागढसेंअगरकोइ पौरबंदर तकरैलमें औरपौरबंदरसें छीमरमेंबेठकर समुदरकेरास्तेद्वारिका होते-हुवे मुल्ककछको जानाचाहेतो जासकतेहै, अगरकोइजुनागढसे रैल-केरास्ते राजकोट-जामनगरहोकर-जामनगरसेंछीमरमें तूणाबंदरके रास्तेमुल्ककछकों जानाचाहेतोभी जासकतेहै. जिनकोंकछके जैन-तीर्थजानेकी फुरसत-न-हो-और-जुनागढसे धोलाजकशन होते-हुवे-वढवान-वीरमगांव-अहमदाबादके रास्ते-उतर-पूरब-या-द-खनकों जानेकाइरादाहो-तोभी-जासकतेहै, कइरास्तेहै जिनकीजै-सीमरजीहो-मुताबिकउसकेसफरकरे,

(बयान-पौरबंदर-और द्वारिका.)

(जुनागढसे पोरबंदर द्वारिकाहोतेहुवे-)

(मुल्ककछ जानेका रास्ता.)

*जुनागढसे-वडाल-जेतलसरहोकर धोराजीजाय, यहांपर जैनश्वेतांबरमंदिर औरआबादीजैनश्वेतांबरश्रावकोंकी अछीहै, मर्दु-मशुमारी (२०४०६) मनुष्योंकी-और-जिसचीजकी दरकारहो

* जुनागढसें दखनमें वेरावल-पाटन-जैनोकी आबादीके-शहर और-उनमें वडेवडेआलिशान जैनमंदिरबनेहुवेहै, रैलकिराया -पनरह आने,

यहांमिलसकेगी. जिलेकाठियावाडमे एकमशहूर तिजारतीकस्वा-और-चारोतर्फइसके पक्कीदिवारघिरीहुइहै, धोराजीसेउपलेट-भायावदर-जामजोधपुर-साखपुर-और-रानावाव-होतेहुवे पोरबंदरटेशनजाय. रैलकिराया-सवारूपया. जुनागढसे (९५) मील-पश्चिमकीतर्फ-समुंदरकनारे देशीराज्यकीराज्यधानी-पौरबंदरशहर-जिसकों-बहुतलोग-सुदामापुर बोलते है यहीहै, पौरबंदरकीमर्दुमशुमारी-(१८८०९) मनुष्योंकी-जिनमेकरीब (१०००) जैनश्वेतांबरश्रावकलोग आबादहै, कइजैनश्वेतांबर मंदिर-और-ठहरनेकेलिये मकानबनेहुवेहै यात्री--जाकर देवदर्शनकरे. पौरबंदरकी चारों तर्फ पक्काकोट--और--बहुतसे मकान यहांपथरोंके बनेहुवेहै, राणासाहबके महेल-कचहरी-स्कूल--अस्पताल-और-धर्मशाला--बडीलागतके-मकानहै. पौरबंदरकी--तिजारत समुदरकेरास्ते-सिंध-बलुचीस्तान-फारसकीखाडी-अरबस्तान-और-आफ्रिकाके बंदरगाहोतकहोतीहै, हिंदमें--सुरत--भरूच--नवसारी-बंबइ-कोकन-और-मलबारतकहोतीहै, पौबंदरराज्य समुंदरकनारे वडीदूरतकलंबा फैलाहुवा मगरचोडाइमे (२४) मीलसें ज्यादहनही, जमीन-उपजाउहै. राज्यमेंतीन--चार-छोटी-छोटी-नदीयेंबहती है औरलोग अमनचैनकररहेहै, बंबइसे-जो-ष्टीमर-वेरावल-मांगराल-पौरबंदर और-द्वारिकाहोतीहुइ कराचीजातीहै उसीमें द्वारिकाजानेवालेयात्री पौरबंदरसें सवारहोवे. सेकडकलास पासेंजरकेलिये-दोरूपये-और-थर्डकलासवालेकेलिये एकरूपयाकिराया लगेगा. ष्टीमरसे चढनेउतरनेवाली जोछोटीनाव होतीहैउसका किराया(४) आने अलगलगेंगे.-

☞ तीर्थ द्वारिका.

बंबइसे (३४२) मील-और-पोरबंदरसें (५६) मील-पश्चिमोत्तर द्वारिकानगरी-एकनिहायतपुरानीजगहहै, पोरबंदरसेद्वारिकातकखुश्किरास्ता बनाहुवाहै, जोलोगअगबोटमें बेठना-नापसंद करतेहो उनकोंखुश्कीरास्तेजानाही वेहत्तरहै, पेस्तरकेजमानेमेंजबदश दशारवर वीर-पुरुष-समुद्रविजयजी-उग्रसेनजी-ओर वसुदेवजीयहांरहतेथे उसवख्तद्वारिका बडीरवन्नकपरथी, वडेवडेआलिशानजैन मंदिरयहां मौजूद थे, क्या! उमदामहल--समुद्रविजयजीके-उग्रसेनजीके-वसुदेवजीके-और--उनकीरानीयोंकेथे--जिसकी तारीफ वयानकरना अकलसेवडदहै. जमानेहालमेंजो द्वारिकामौजूदहै नयी आबादहुइहै--पेस्तर द्वारिकाकिसकदरजलाझल रौशनीलियेथी? वहरौशनी-और--खूबसुरतीअवकहाहै? वरायेनाम-एकछोटीसी पुरी-देखलो! जमीनवेंशक! वहीहै-मगर-वे-खुशनशीव-और -दौलतमंदलोग अवनहीरहे, इसवख्तद्वारिकाकी मर्दुमशुमारीकुल (५०००) मनुष्योंकी-आठ-दस-धर्मशाला-पांचसातस्कुले-कइअस्पताल-पुलिस-और-जेलखाना-वगेरेमकान वनेहुवेहै, समुंदरकनारे-नमकवहुत औरइसीसववसे शस्ताभीविकताहै, शिवायनमकके दूसरीचीजकी पैदाशयहांकमहोतीहै, गोमतीनामकी खाडीयहां वडीलबीचलीगइ-जोकि-पानीसे-हरहमेश-तर-व-तरवनीरहतीहै, कनारेइसके (९) घाट-वडीलागतके वनेहुवे-जिनकेनाम-संगमघाट-वसुदेवघाट-और-पाडवघाट-वगेरा, द्वारिकाकों वेदिकमजहव वालेभीतीर्थ मानतेहै, द्वारिकासें (१०) कोशआगे वेटद्वारिका-एकअलग--टापुहै, पेस्तरलिखआये द्वारिकानगरी-वहुतवडीथी-असलमे-ये-सब-उसीके अलगअलगहिस्से होगयेहै, ऐसासमझो,

द्वारिकासे वेटद्वारिका (७) कोशपरहै, रास्ताखुश्कीसडकका वनाहुवा-सवारीकेलिये वेलगाडीमिलसकतीहै किरायाएकरुपया गाडीलगेगा. आरंमडा-गांवतकवेलगाडी जायगीऔरआरंमडासें(३) कोशआगे समुंदरकीखाडीमे-व-जरीयेनावके-जानाहोगा. किराया नावका सीर्फ ! आधआनाहे, द्वारिका-टापु-करीव (७) मील-लंवाकइधर्मशाला-तालाव-और-हरजगहपकेघाट वंधेहुवेहै. जगह सोहावनी-और समुंदरकीतरंगे दिलको मोहेलेतीहै, जैनश्वेतांवर मंदिरयहांतामिरहै, द्वारिकामें पेस्तरजैनतीर्थथा-तीर्थकरनेमनाथजीके यहांवडेवडेकीमति मंदिरथे,-मगरजमानेहाल उनमेसें एकभीनही-सीर्फ ! इसीमंदिरके दर्शनकरके-तीर्थद्वारिकाकी जियारतहुइ समझे वेटद्वारिकासे द्वारिकाआनकर समुंदरकेरास्ते छ्टीमरमें सवारहोना और मांडवीवंदरजाना औरआगेमुलककछके जैन-तीर्थ-घृतकल्लोल-और-भद्रेश्वरकी-जियारतकरना-जुनागढसे पौरवंदर-और-द्वारिकाकारास्ता खतमहुवा,

अगरकोइयात्री जुनागढसे पौरवंदरके रास्ते-न-जानाचाहै औररैलकेरास्ते जुनागढसे जामनगरऔर जामनगरसे खुश्कीरास्ते वैलगाडीमें द्वारिकाजावे तोभीजासकतेहै,-मगरकोइ जुनागढसेंरैल रास्ते जामनगरऔर जामनगरसे समुद्रकेरास्ते छ्टीमरमेसवारहोकर तुणा वंदरहोते मुल्ककछका जाना चाहे तो नीचे वतलाये हुवे रास्ते जाय,-

जुनागढसे रैलमेंसवार होकरवडाल-जेतलसर-नवागढ-वीर-पुर-गोंडल-और-रिवडा-होते राजकोटजावे, रैलकिराया पनरां आने लगतेहै. पोलिटीकलएजंटका सदरमुकाम राजकोट-जिलेका-

ठियावाडमें एकगुलजारवस्तीहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारिकेवख्त राजकोटकी मर्दुमशुमारी (२९२४७) मनुष्योंकीथी. महाराजराजकोट जाडेजाराजपुत कहलातेहै राजकोटराजकी जमीन कहींउंचीकहीं नीचीऔर पथरीलीहै, औरअनांज-रुई-इख ज्यादह पैदाहोतेहै,-हाइस्कुल सन (१८७९) इस्वीमें (७००००) रूपयोके खर्चसें तयारहुवा औरखुला. राजकुमार कालेजसन (१८७०) इस्वीमें तामीरहुवा औरखुला. राजकोटमें जैनश्वेतांवरमदिर-और श्रावकोंकेघर आवादहै, जिलाकाठियावाड (२२०) मीललवा और (१६५) मीलचोडा-इसमेंमशहूर शहरभावनगर-जामनगर-जुनागढ-राजकोट-गोंडल-मोरवी-वांकानेर-पोरवदर-वढवाण-लीमडी-और-पालितानाहै. रुइऔर अनाजकीतिजारत इसजीलेमें ज्यादहहोतीहै औरजवानअकसर गुजराती वोलीजातीहै, खास ! पोलीटीकलएजट-मुकामराजकोटमें रहतेहै, जिलेकाठियावाडमें शत्रुजय-गिरनार-मशहूरजैनतीर्थहै, यात्रीराजकोटसे रैलमेंसवारहोकर पडधरी-हडमतीया-वणथली-और-अलियावाडा टेशनहोते-जामनगजाय, रैलकिराया वाराआने लगतेहै.-

राजकोटसे (५१) मील पश्चिमका जामनगर एकमशहूर-व-मारूफशहरहै, और इसकादूसरानाम नयानगरभी वोलतेहै, सन (१५४०) इस्वीमें जामरावलजीनेइसको आवादकिया, जामनगरकी मर्दुमशुमारी (४८५३०) मनुष्योंकी, राजमहेल वडेउमदा -और-शहरदिनपरादिनतरक्कीपरहै, अतराफशहरके पक्काकोटघिराहुवा-इमारतें मजवुतपथरोंकी-शिवायजामनगरके दुसराकोइउमदा शहरहालारप्रांतमें नहीं, कारचोवीकाकाम--कमख्वाव-रेशम-दुपट्टे शेले-तिलककरनेका कुकुम-मोतीका सूरमा-औरइतरयहां उमदावनतेहै, जैनश्वेतावरमंदिर जामनगरमें (९) औरश्वेतावरश्रावकोके

घरअंदाज (१५००) केहै, जैनश्वेतांबरमुनियोंको ठहरनेके आठ नवमकान–वगीचादादाजीका–और–वंडा–अजरामरहरजीका–वडी-लागतकावनाहुवा–यात्रीइसमें कयामकरेऔर वखूवीजैनमंदिरोंके दर्शनकरे, जिलेजामनगरमें मारवलपथ्थर–तांवा–लोहा–रूइ–और–अनाजज्यादहहोताहै. पहाडीयोंमे पेस्तरशेरभी रहाकरतेथे, चीते औरतेंदुएअवभी पायेजातेहै, जामनगरके राजवंशीजाडेजा राजपुतोंमेंसेंहै, जामनगरकीउत्तरतर्फ कछकारण–और–समुंदरकीखाडी–पूरवमेंमोरवी–राजकोट–औरगोंडलराज्य–दखनमेंसोराष्ट्र विभाग–और–पश्चिममेंऊखमंडल–मौजूदहै, यात्रीजामनगरसे रवानाहोकर मुल्ककछकोंजाय, अवल वेंडीवंदर जोकरीव (२॥) कोशकेफासलेपरहै इक्केमेंसवारहोकरजावे, वेडीवंदरसे आगेष्टीमरमें सवारहोकरदरियाइरास्ते–तुणावंदर––ऊतरे, रास्ताकरीव तीनघंटेका–और –किरायासीर्फ ! आठआनेफी–आदमीलगेगा, तुणावंदरसेआगे खुश्कीरास्ते–वैलगाडीमें–सवारहोकरतीर्थभद्रेश्वरजाय,–

☞ [वीचवयान भद्रेश्वर और घृतकल्लोल.

मुल्ककछमें भद्रेश्वरतीर्थ निहायतपुरानाहै, गांवभद्रेश्वरवहुत वडानहीलेकीन ! तीर्थकीवजहसे मशहूरहै,–धर्मशालायहांपर वनीहुइहैयात्रीइसमें कयामकरेऔर तीर्थकीजियारत हासिलकरे, मंदिर शिखरवंद वावनजिनालयका–वडाआलिशान–वनाहुवाऔर इसमें तीर्थंकरमहावीरस्वामीकी मूर्तितख्तनशीनहै, सालमेंदोदफे यात्रीयोंकायहा मेलाभरताहै और ऊनदिनोमेंवडी रवन्नकरहतीहै, कारखानातीर्थ भद्रेश्वरका वर्द्धमानकल्याणजीके नामसेजारीहै जोकुछरकमतीर्थ भद्रेश्वरके खजानेमेंदेनाहो–यात्री–यहांपरदेवे, औरभद्रेश्वरसेंरवानाहोकर शहरमाडवी वंदरकोंजाय, जो–करीव (१२)

फासलेपरहै. रास्ता वैलगाडीका और किराया अंदाज तीन रूपये लगेगे.

मांडवीबंदर कच्छके दखनकनारेएक वडाशहरहै, सन (१८९१) की-मर्दुमशुमारिकेवख्त-मांडवीकी मर्दुमशुमारी (३८१९९) मनुष्योकीथी. मुल्ककच्छमे शिवायमाडवीके दूसराकोइ वडाशहरनही. महाराजकच्छकी अमलदारीकातख्त-बेशक! भुजशहरहै, मगरआबादीमेंशहरमांडवी वडाहै, भुजशहरकीआवादी (२५४२१) मनुप्योकी-औरमांडवीकी ऊपरवतलाचुकेहै देखलो ! ज्यादहहै. अतराफशहरमांडवीके पकीदिवारबनीहुइ औरवहारशहरके दो-सराय-एकपुरानी औरएकनयी मौजूदहै जिनमेंमुसाफिरलोग ठहराकरतेहै. मगरजैनयात्रीको शहरमें जानामुफीदहोगा-जामनगरसें कइजहाज कच्छकीखाडीकेरास्ते मांडवीकों आतेजातेहै, हरसप्ताहमें जोएकष्टीमर शहरवंबइसें खुलकरकराचीकों जातीहै वेरावल-पौरवदर-द्वारिका-और-माडवीबंदरहोतीहुइजातीहै, और करांचीसेखुलकर जोष्टीमरववइकों रवानाहोतीहै-वोभी-मांडवीवदर-द्वारिका-पोरबंदर-औरवेरावलहोतीहुइ जातीहै, मांडवीबंदरकेपास एकलाइटहाउस-(यानी) रौशनीघर वनाहुवाहै, रातकोंइसीके जरीये जहाजवाले अपनाकामलेतेहै, माडवीमेंजैनश्वेतावरमदिर (५)-और कइजैनश्वेतावरश्रावकोंके घरआवादहै, यात्रीशहरमेंजाकर जैनमदिरोकेदर्शन करे,—

मांडवीसेरवानाहोकर आगेसुथरीकस्बेकोंजाय, जो (११) कोशकेफासलेपर वाकेहै,-किरायावैलगाडीका करीन (३) रुपयेलगेगें,

सुथरीकस्बावडाहै औरयहांपर घृतकल्लोलपार्श्वनाथजीका पुरानातीर्थहै. जैनश्वेतावरश्रावकोकेघरकरीन (२०५) औरधर्मशाला

एकयहां वहुतवडीवनीहुइहै यात्रीइसमेंकयामकरे औरतीर्थकीजिया-रतव-खुबीहासिलकरे, मंदिरबेशकीमती तामीरकियाहुवा-औरइसमें तीर्थंकरपार्श्वनाथमहाराजकी मूर्त्तितख्तनशीनहै, हरसालकातिकसुदीपुनमकेरौज यात्रीयोंकायहां मेलाभरताहै खानपानकीचीजेंजोचाहियेयहांमीलसकेगी. सुथरीसेंरवानाहोकर जिसरास्तेगयेथे वैलगाडीमेंमांडवीआना. मांडवीसेंउसीरास्तेफिर भद्रेश्वरऔर भद्रेश्वरसेंअंजारटेशनआना, जोकरीव (४) कोशकेफासलेपरहै, कस्वाअंजार गुलजार और यहांपरहरचीज व-आसानी दस्तयावहोतीहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवख्त अंजारकी मर्दुमशुमारी (१४४३३) मनुष्योंकीथी, अंजारसें रैलमेंसवारहोकर तुणाबंदरकोंआना, मुल्क कच्छकीसफर यहांखतमहोतीहै, इसमेंभद्रेश्वर औरघृतकल्लोलयही(२) वडेजैनतीर्थहै, जिनकावयान उपरवतलाचुके,—

मुल्ककच्छमें (८) कस्वेऔर (८८९) गांवआवादहै, जवान कच्छी-और-कुछलोग उर्दूभीवोलतेहै, कच्छकेराजासाहवक्षत्रीय खानदानके औरउनकातख्तभुजशहरहै, कच्छमेंकोइकदीमीनदीनही. अय्यामवारीशमे जवछोटेछोटेनालेवहते है उनहीकोंनदीयांसमझलिजिये अनाजकी तिजारतयहांज्यादहहोती है, मकानपुख्ता औरउमदाकारिगिरीकेवनेहुवे, कच्छकामेंदानमुल्कोंमें मशहुर-जिसकेदो-हिस्सेकायमहै, अवलहिस्सा (७००) वर्गमीलका-और-दूसरा (२००) काहै, कच्छइलाकाकेमशहुरशहर मांडवी-भुज-मुद्रा-और-अंजारहै. सुथरी-कोठारा-नलिया-तेरा-जखो-और कोडाय-येभीअच्छेकस्वे है, औरइनसवमें-जैनश्वेतांवरमंदिर-और-हरजगह श्रावकोंकीआवादी है, जीवोंकीजिवेकारी कच्छमेंवहुतकम-और-लोग मिलनसार है, तुणाबंदरसेंष्टीमरमेंवेठकर यात्रीवापिस जामनगरआवे, औरजामनगरसें रैलमे सवारहोकर-अलियावाडा-वणाथली-हडमतीया-पडधरी-राजकोट-खोराना-सिधावधर-वांकानेर--थान--रामपर्डा

मूलीरोड-वढवांणकेंप-लखतर-लीलापुररोड-सांवलीरोड--विरमगांव-और-विरमगावसे खारागोढा लाइनमेंसवार होकर झुंडटेशन जाना, रेलकिराया करीव सवारुपया लगताहै,—

☞ [तवारिख-तीर्थ-शंखेश्वर,]

झुंडटेशनसे (१५) कोशकेफासलेपर खुश्कीरास्तें वैलगाडीमें सवारहोकर तीर्थशखेश्वरकोंजाना. शंखेश्वरगाव वहुतवडानही लेकीन ! तीर्थकीवजहसे मशहुरहै, जैनश्वेतांवरश्रावकोके घरयहांदश,-बारां-और वडाआलिशान जैनश्वेतांवरमंदिर यहांमानींदे स्वर्गविमानकेखडाहै, परकम्मामंदिरकी वहुतवडी-रंगमंडप-निहायतउमदा-और-फर्सशंगेमर्मरका लगाहुवादेखकरदिलखुशहोगा, तीर्थंकरपार्श्वनाथ महाराजकी सफेद मूर्त्ति-करीव सवादोहाथकेवडी-इसमें-तख्तनशीनहै, गत चौविशीके नवमेतीर्थंकरमहाराजके जमानेमेंएक-अषाढी नामकेश्रावकने यहतामीर करवाइथी जवकि-जरासिंधुके शाथ-कृष्नवासुदेवजीकी लडाइहुइथी-और-उसनेजव जइफीहोनेका-वान-कृष्नवासुदेवजीकी फौजपरछोडाथा,-तमामफौज उसरत कृष्नवासुदेवजीकी जइफहोगइथी. कृष्नवासुदेवजीने-इस-तीर्थकरपार्श्वनाथजीकी मूर्त्तिकास्नानजल-लेकर अपनीफौजपरछिडकाथाकि-फौरन ! उनकीफौज-व-दस्तुरपहेलेके होशियारहोगइथी, यहमूर्त्ति-पेस्तर वहुतनियामत वक्षनेवालीथी. जवकि-अहुतसें आकील-और-दानालोग मौजूदथे, औरउनकाएतकातधर्मपर मुस्तकीमथा, इसवजहसेउनकोंफौरनपरचामिलताथा, आजकल-वो-बातनहीहै जोपेस्तरथी. कोइकोइइसदलीलकोंभी-पेंशकरतेहैकि-शखेश्वरपार्श्वनाथजीकी-इतनीपुरानीमूर्त्ति-इतनेकालतक कैसेरहसकी?

मगर इसवातपरखयाल नहींकरतेकि-अधिष्ठायकदेव—जिसमूर्त्तिके रक्षकहोजाय-वो-मूर्त्ति वहुतकालतकभी कायमरहसकती है,—

धर्मशाला यहांपरवहुतवडी वनीहुइहै, मगरउसकी मरम्मत होनादरकारहै, तीर्थशंखेश्वरका कारोवारवतौर शाहाना-वनाहुवा मुनिम-गुमास्ते-नोकर-चाकर-घंटा-घडियाल-और नोवतखाना सवचीजेंमौजूदहै, पेस्तरइसतीर्थकी-जेरनिगरानी राधनपुरकेश्राव-कोंकीथी, मगरचंदसालसें शहरअहमदावाद वालोंकीहोगइहै,-या-त्रीकों जोकुछरकम-खजानेशंखेश्वरजीके देनाहो यहांदेवे. औरतीर्थ कीजियारत हासिलकरके-व-जरीये वैलगाडीकेवापिस झुंडटेशन आवे, वहांसेंरैलमें सवारहोकर विरमगावजंकशन उतरेऔर विरम-गांवसें भंकोडा-देतरोजहोतेहुवेगेलडा-टेशनजाय. रैलकिरायातीनआनेनवपाइ,-गेलडाटेशनसे तीर्थभोयणी-करीवपौनकोशके फा-सलेपरहै, व-जरीयेवैलगाडी-या-पांवपैदलजाय, यहएकनयातीर्थ शुमारकियाजाताहै, औरइसकी दास्तानइसतरहहै,—

☞ (तवारिख-तीर्थ-भोयणी,-)

एकमरतवाका जिक्रहैसंवत् (१९३०) की सालमेंएककिसा-नकेखेतमेंजोकि-मौजेभोयणीका वाशिंदाथा. औरजिसकानामकेव-लपटेलथा, दुफेरकेवख्त उसकेनोकरकुवा खोदरहेथे. उसवख्तएक दमकुवेकेभीतरसे वाजोंकीआवाजआनेलगी, लोगोनेताज्जुवकिया-कि-यह-क्या- ! माजराहै, ? औरअतराफकुवेके देखनेलगे कुछ-नहीमालूमहुवा. जवअंदरकुवेके उतरेतोवहांसें औरभीज्यादह अवा-जवाजोंकीआइ. लोगोनेकहा ! यहांपरकुछअजीववातहै, वे-फौरन ! कुवेकेवहारआये, औरदिलावर मर्ददो-चार-भीतरकुवेकेउतरे देखतेहै—कुवेकीकुछ थोडीसीजमीन फटीऔरउसमेसें तीनमूर्ति-

निकली. ऊनोनेउनमूर्तियोंको बहारनिकाली. उसवख्त जैनश्वे-तांबरश्रावक-त्रिभोवनदास-जोकि-कुकवावगांवका वाशिंदा-अपनी-शिकमपरवरीशकेलिये मौजेभोयणीमें दुकानकरताथा तीनोंमूर्तियोंकोदेखा, औरकहा ! येतोहमलोगोके मजहबकीहै,-इनमेंजो पद्मासनमूर्तिहै तीर्थंकरमल्लिनाथजीकीहै औरकायोत्सर्गध्यानमयजो औरहै वेभीहमारेहीमजहबकीहै,-तीनोंमूर्तिये सफेदशगमरमरकीबनीहुइ देखकरसबखुशहुवे, कडीगाववाले लोगकहनेलगेहम अपने गावमेंलेजायगे, कुकवावगांववालेवोले हमलेजायगे. भोयणीकेठाकोरसाहबबोले हमअपने भोयणीगावमें लेजायगें. क्यौंकि-हमारेगांवके किसानखेतमें ये मूर्तियेनिकलीहै, औरइसलिये इमाराहकहै, गरजेकि-उसवख्त तकरारहोनेका मौकाआगया, कुंकवावगांवके वाशिंदेत्रिभोनदासने कहाकि-जराठहरो ! ! अगरदेवसचेहै-तो-सवकुछठीकहोजायगा. तकरारकरनेकी कोइजरूरतनही. एककाम-करो विनावैलजोते एकगाडीलाओ. औरइनमूर्तियोकों गाडीमेंसवारकरो, जिसतर्फगाडीकामुह-खुद-व-खुदफिरजाय उसतर्फले-जाओ, लोगोनेवैसाहीकिया, और फौरन ! गाडीकामुह मौजेभोयणीतर्फ फिरगया, वस ! फिरक्यादेरथी ! ! भोयणीवाले खुद उसमूर्तिकों अपनेगावमेंलेगये. भोयणीगांवकेठाकोरसाहबने पेश्ववाइकिइ. औरगावमेंलेजाकर केवलपटेलकेघर-एक-अलगमकानमें तीनोंमूर्तिजायेनशीनकिइ, शहर-व-शहरसे यात्रीआनेलगे, पूजनका कारोवार वखूबीचलनेलगा. औरयात्रीकी आमदरफतसे खजाना दिनपरादिन बढतीपर होतागया, पेस्तरधर्मशालावनी और-बाद एकबडाआलिशान शिखरवदमंदिरवनाकर सवत् (१९४३) माघ वदी (१०) केरौज-प्रतिष्ठाकिइगइ औरतीर्थंकर मल्लिनाथमहाराज की मूर्तिइसमेंतख्तनशीनकिइ,-कारखाना-मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर-पूजारी-सवठाठवनाहुवाहै, यात्रीजोकुछरकम तीर्थकेख-

जानेमें देनाचाहेखुशीकेशाथदेवे. औरजियारतकरके वापिसगेलडा टेशनआवे. औररैलमें सवारहोकर-कटोसन-जोटाणा-लीच-होते-हुवे-मेहसानाजंक्शनजावे, रैलकिराया सवातीनआने लगतेहै, मे-हशानेसेचारतर्फ रैलवेलाइनगईहै, एक-शहरपाटनकों-दुसरीखेरा-लुकों-तीसरीअहमदाबाद-और-चोथीआबुरोड होकरमुल्कमारवाड कों,-यात्री-मेहसानेसे खेरालुलाइनमें तीर्थ-तारंगाकी जियारतकों जावे-मगरकस्बे मेंहसानेमेंजाकर जैनश्वेतांबर मंदिरकेदर्शनभीकरे छोटेवडे (१०) जैनश्वेताबरमंदिर-औरबहुतआबादी जैनश्वेताबर श्रावकोंकी यहांपरमौजूदहै, जैनपाठशालावगेरा सबइंतजाम-लाइक तारीफकेदेखोगे. यात्री-मंदिरोकेदर्शनकरके वापिसटेशनपर आवे, औरखेरालुजानेवाली रैलमेंसवारहोकर-रानदाला-विशनगर-वड-नगरहोतेहुवे खेरालुटेशन जावे. रैलकिराया सवापांचआनेलगतेहै,-

☞ [तवारिख-तीर्थ-तारंगा,]

मौजाखेरालु एकअछीवस्ती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर (१५०) औरमहोलेडेहरासेरी-दो-जैनश्वेताबरमंदिरमौजूदहै, ध-र्मशालायहांपरबनीहुइहै, इसमेंकयामकरे औरतीर्थतारंगाजानेका इं-तजामकरे. जोखुश्कीरास्तेफासले पांचकोशकेवाकेहै, सवारीकेलिये बैलगाडीमिलसकेगी. खेरालुसेरवानाहोकर यात्रीतीर्थतारंगाकोंजावे कोइतकलीफ-न-होगी. शाथआरामकेपहुचजाओगे, रास्तेमें एक डभोडानामकागांवमिलेगा, यहांपरधर्मशालाबनीहुइहै, औरपांचसात दुकाने-साहुकारोंकीभीमौजूदहै, करीबतारंगापहाडकीदामनमें एक टींबागांवमिलेगा, रास्ताचढाइका-चढाव-दो-कोशका-और तमाम पहाडकाघिरावबाराकोशकाहै, घोडा-टट्टूभी-चढसकतेहै-और-पांव पेदलभी ब-आसानीजासकतेहो, लेकिन ! पहाडकाचढनाजरा मु-श्किलकाहै, रास्तेमेंदरख्तोंकेझुंड-आम-अमरुद-खीरनी-शरीफे-इ-

मली-नीम-बबुल वगेरादरख्तखडेहै. कभीकभीइसजगह शेरभीआ-
जाताहै. जबपहाडकीचोटीपरपहुचोगे एकधर्मशालाऔरदुकानेबनी-
येकीमिलेगी,-हरेककिसमका सामान-वास्तेगिजाके-जोकुछदरका
रहो दस्तयावहोसकेगा.

तारंगातीर्थकी तरक्कीवदोलत हेमचंद्राचार्यकेहुइ, क्योंकि-
-ये--राजा--कुमारपालकेगुरुथे और कुमारपाल अठारादेशोका
राजाथा, जबकुमारपालकों राज्यनहीमिलाथा हेमचद्राचार्यजीनेउस
केलक्षणदेखकर कहदियाथाकि-तुं ! आलादर्जेकाराजाहोगा, जब-
कुमारपाल-राजाहुवा हेमचंद्राचार्यकी कदमबोसीकोंआया, औरअ-
पनेनगरमें बडीशान-सौकतसेलेगया, राजाकुमारपालकीसलतनतका
खासमुकाम-शहरपाटन-जोकि-मुल्कगुजरातमें एकमशहुर-व-मा-
रुफशहरहै जोकुछहुकमवगेरा सबजिलोमेंजारीहोताथा उसीपाटनसे
निकलताथा. हेमचद्राचार्य-बडेआलिमफाजिल-संस्कृतविद्याके आ-
लादर्जेकेपंडितथे, जिनोनेअपनी अकल-और-इल्मसेअछेअछे धर्म-
शास्त्र-और-व्याकरण-काव्य-कोश-न्याय-अलंकारवगेरा बनाये
है, जिनकोपढकर आलादर्जेकेपंडितलोगभी ताज्जुबकरते है राजा
कुमारपाल हेमचंद्राचार्यके हुकमकोंसीरपररखताथा औरकभीहुकम
अदुलीनहीकरताथा, दुसरेमजहबवाले जोकि-बडेमत्रवादीकहलातेथे
राजाकुमारपालके दरबारमेंआनकर अपनामंत्रबलबहुतसा बतलातेथे
मगरक्या ! मजालथीकि-कोइ उनकामुकाबिलाकरसके ! क्योंकि-
आचार्यहेमचंद्रजीको शासनदेवीसिद्धथी, हेमचंद्राचार्य-हमेशांआम-
लोगोकों व्याख्यानधर्मशास्त्रकासुनातेथे, औरधर्मसभा जुडतीथी.
राजाकुमारपाल हमेशाधर्मशास्त्र आमलोगोंकीबराबरीमें जमीनपरये-
ठकरसुनताथा, औरउतनीबदगी गुरुकीकरताथाकि-किसीतरहउनके
हुकमकों नहीटालताथा, रा[illegible]रपालकी देवम[illegible] [illegible]पेसीथी

पाटनकेजिनमंदिरमें हमेशांखडाहोकर वीतरागस्तवपढताथा, जबजब शहरमेंजिनमूर्त्तिकी रथयात्रावगेराका जलसा होताथा-राजाकुमारपाल-अपनेगुरु हेमचंद्राचार्यजीकेशाथ नंगेपांवचलताथा, औरशामके वख्त जिनमूर्त्तिकीआरती मंदिरमेंखुदजाकरउतारताथा, आजकल कितनेकश्रावक धर्मकोंयहांतक भूलगयेहैकि-जिनमंदिरमेंजानेकीभी उनकोंफुरसतनही. हेमचंद्राचार्यजैसे जैनश्वेतांबराचार्य गुरुऔर कुमारपालजैसा जैनश्वेतांबरश्रावक-होनादुसवारहै, हेमचंद्राचार्यजीने राजाकुमारपालकों इसबातकीखातिरजमा करवादिइथीकि-दुनियामें-दौलत-हकुमत-माल असबावऔर जीदगीकोइ उमदाचीजनही, उमदाचीज एक धर्मही है,

तारंगातीर्थकामंदिर इसी--राजाकुमारपालका तामीरकियाहुवाहै, इसकीपायदारी औरबनावट ऐसी उमदाहैकि-इसके बनानेमें जितने रुपयेसर्फहुवे बयाननही करसकते, रंगमंडपऔर खंभेइसकदर बडेहैकि-देखकर-आदमीताज्जुब करनेलगताहै, चारोंतर्फउसकी परकम्मा औरबडासहनदेखकर तबीयतनहीचाहती यहांसेबहारचले जाय, बाहरकीदिवारमेंचारोतर्फगजथर औरअश्वथरलगा हुवा-हाथीघोडोंकीशकले--पथरमेंबनीहुइहै, अकसराशिल्पशास्त्रका कायदाहैकि-राजाओंके तामीरकरवाये हुवे मंदिरमें जरुरगजथर-अश्वथरलगायेजाय. राजाकुमारपालका इरादाथाकि-इसमंदिरको खुबउंचाबनाना, मगरहेमचंद्राचार्यजीने फरमायाज्यादह उंचामतबनाओ बहुत उंचेमंदिरकी उमरअकसरकमहोतीहै, राजाकुमारपालकों उनकेफरमानेपर कुछउजरनहीथा इसलियेइसनेउतनाही

उंचातिमंजिलारखा, रंगमडपकीएकतर्फसें-उपरतिमंजिलेतकजा-नेकारास्ताबनाहुवाहै, मगरकचेदिलवालोंकी हिंम्मतनहीहोतीकि-तीसरीमजिलतकचलेजाय. अकसरवीचमेंसेंहीलोटआते है, इसमंदिर कीकारीगरीदेखकर बडेवडेशगतरासहेरान परेशानहोजाते है और तारीफकरतेहैंसायत ! यहमदिरदेवताओंकाबनायाहुवाहोगा. राजा कुमारपालकी कहातकतारीफकरे जिसनेऐसामंदिरतामीर कराकर अपनेलिये रास्तास्वर्गकाखोलादिया, तीर्थंकरअजितनाथमहाराजकी पांचहाथवडीसफेदरगमूर्त्ति इसमेंतख्तनशीनहै, पूजाकरनेवालेलोग सीढीपरचढकर मूर्त्तिकेमस्तकपरतीलककरसकते है, मूर्त्तिकेनिलाडपर सोनेकापत्र-और-उसमेंजवाहिरातजडीहुइहै, हाथपावोपरभी सोनेके पत्रलगेहुवे-जिसवख्त मूर्त्तिकाशिगाराकियाजाताहै माल्महोताहैसा-क्षाततीर्थंकर अजितनाथमहाराज यहांपरआगये है,-

अगरतुम अपनीहमराह सितार-हारमोनियम-या-सारंगी-त-वलेलायेहो-तो-मदिरमेंवेठकर व-खुवीइवादतकरो, किसीकिसमकी रोकटोक यहापरनहीहै, तमामऊमरदुनियाके कारोवारमें खतमकिइ औरएशआराममें गायवरहे, अवचाहिये आकयतकाकुछ रास्तासु-धारे, जिंदगीकाकोइभरोसानहीं यहमानींदवुलवुलेकेहै, दौलतआज है, कलनही, तीर्थकेखजानेमें जोकुछरकम देनाहो-टो, ऐसामतकर-नाकि-वकीलवनकर अपनेघरका रास्तालो, अगरतुमपरलोगमें कु-छआरामचाहतेहो-वतौरधर्मकीराहपर देतेजाओ-यही-तुमारेशाय चलेगा, मदिरकेवहार एकवहुतउमदा वगीचाजिसमेआम-अनार-सतरे-जाम-औरकेलावगेराके दरख्तखडेहै, गुलाव-चमेली-वेळा-मोतियावगेराके फुलभीकसरतसे यहापेदाहोतेहै औरहमेशादेवपु-जनमें चढायेजातेहै, तारगातीर्थका खजानावहुतवडा और-वो-आनंदजीकल्याणजीके नामसेमशहूरहै. मुनिम-गुमास्ते-नोकर-चा-

कर-सीपाहीघंटाघडीयाल-और नोवतखाना यहांपर मौजूदहै, इसकी जेरनिगरानी-जमानेहालमें वडनगरके श्रावकोंके ताल्लुकहै; जोयहांसे करीब (१०) कोसके फासलेपरवाकेहै,-

मंदिरकेवहार एकतालाव-वायेहाथकों कुंड-और-सामनेएक वावडीवनीहुइहै,—तालावकेआगे एकछोटापहाड—जिसकीचढाइ करीव कोशकेहोगी इसपरएकछत्री औरउसमें तीर्थंकरोके कदमबने हुवेकुंडके आगेदुसराछोटापहाड जिसकीचढाइ करीव-आधाकोशके होगी इसपरभीछत्री-तीर्थंकरके-कदम-औरएकतर्फ कोटीशिला नामसें एकशिला मौजूदहै, यात्रीसवजगह जाकरजियारतकरे, यह-वो-शिलानही-जिसकों वासुदेवउठातेहै, वहगेरमुल्कमेंहै तारंगाप-हाडपरएकतारणदेवीकाधामहै जहांअकसर गेरमजहवके लोगआया करते है,

तारंगाका मंदिरकव तामीरकियागया इसपरगौरकि-याजायतो हेमचंद्राचार्य-संवत्-(११६६) में मौजूदथे. संवत् (१२२९) मे ऊनकाइंतकालहुवा, राजाकुमारपाल-हेमचंद्राचार्यजीके-वख्तहाजिरथा-जिसने ऊनकीधर्मता-लीमपाकर तारंगातीर्थका मंदिरतामीर करवाया, तारंगा तीर्थकी जियारतकरके यात्री-खेराल्लुकोंवापिस लोटे, औररैलमेस-वारहोकर वडनगर-वीशनगर-रानदालाहोते फिरमेहसानाजंकशन आवे. औरआवुरोडजानेवाली ट्रेनमेंसवारहोवे, टेशनभांड-ऊंझा-सिद्धपुर-छापी-उमरदेशी-पालनपुर-चित्रासन -रोहऔर--मावल होतेहुवे आवुरोडजाय, रैलकिरायातेरह आनेल्गतेहै, जिसकाइरदा पालनपुरदेखनेकाहो-वह-पालनपुर उतरे, वरना ! सिधा आवु रोड जाय,—

पालनपुर शहरअहमदावादसे (८३) मीलके फासलेपर देशी राज्यकी राजधानी-और-एजेन्सीका सदरमुकामहै. इसकीमर्दुम-शुमारी-(२१०९७) मनुष्योंकी है, जैनश्वेतांबरश्रावकोंकेघरकरीब (५००)-और जैनश्वेतांबरमदिर छोटेवडेयहापर (९) है,-अहमदावादसे पालनपुरराज्यमेहोकर अजमेर-देहली-और-आगराकों सडकगईहै, पालनपुरमेंनवावसाहबकेमहेल-पोलिटिकलएजटकीकोठी -स्कुल-लायब्रेरी-अस्पताल-और--पोस्टआफिस-वडी लागतके मकानहै. पालनपुरकीउत्तरमें अमलदारीशिरोही ओर मारवाडका सबडिविझनहै, यात्रीपालनपुरके-जैनमदिरोंके दर्शनकरकेवापिसटेशनपरआव औररैलमें सवारहोकर उपरदिखलायेहुवे रास्ते आबुरोड टेशन जाय,-

पालनपुरटेशनसें-(१३) मील पूर्वोत्तरजोसरोत्राटेशन पेस्तर लिखचुके है यंहांइहाताछुटकर वहासेंराजपूतानामदेशशुरुहोताहै. सरोत्रासे (१९) और पालनपुरसे (३२) मील-पूर्वोत्तर-राजपूताना विभागमें आबुरोडएकबडाटेशनहै-और-इसकादुसरानाम खरेडी-कस्वाकहते है, इसकीआबादीकरीब (६०००) मनुष्योंकी-और-दिनपरदिनतरकीपर मालूमहोताहै, मकानपक्के-और-सडकोंपर-सफाइअछी, अकसरदेखागयाकि-जहांपरपानीकी वहुतायतहोती-है पैदावारीभीअछीरहती है, इसवजहसेंयहकस्वा दिनपरदिनवढताजाताहै, औरएकनदी-बनास-नामकी यहांपरवहतीरहतीहै, टेशनऔर गाववहुतनजदीकहोनेकी वजहसेरवनक हमेशावनीरहतीहै, अमलदारीयहापर शिरोहीकेराजासाहवकी,-और इंतजामसवठीकहै, जैन श्वेतांवरश्रावकोंकेघरकरीब (२०)-और-एकजैनश्वेतावरमदिर-यहापरवनाहुवा-पासमें दो-धर्मशाला-एक रायवहादुरवुधसिंहजी-साकीन-मुर्शिदावादकी दुसरीपंचायती है. दोनोंमकरीबएकहजारआद-

व-खुवी ठहरसकते है,-तीर्थकुंभारीया और-आवुजानेवालेयात्री
ीखरेडीटेशनपर उतरतेहैंऔर यहांसेदोनोंतीर्थकी जियारतकेलिये
ते है, पेस्तरकुंभारीयाजानिर्फ जानेवालेयात्री खयालकरे, उनके-
येरास्तावतलायाजाताहै. खरेडीसेकुंभारीयातीर्थ करीव (१२)
ाशकेफासलेपरवाकेहै, सवारिकेलिये-डोली--घोडा-और-वैल-
डीतयारमिलतीहै, डोलिकाकिराया साढेपांचरूपये-घोडेकाएक
ाया-ग्यारहआने-और गाडीकेपोनेचाररूपये- सीर्फ ! जानेकेही
ातेहै, ऊतनेही वापिसआनेकेभी समझलिजिये, खेरडीसे रवाना
करयात्री कुंभारीया तीर्थकोंजाय,-

[तवारिख-तीर्थ-आरासण,—]

कुंभारीयातीर्थका असलीनाम-आरासणतीर्थ है, जमानेहालमें
रासणपहाडपर जोकुंभारीयागामहै असलीनाम-आरासणनगर
,-पुरानेशिलालेखोमेभी आरासणनाम लिखानिकसताहै, यात्री
रेडीसे कुंभारीयागांवजाय, रास्ता-कठीन-कइजगह-नदी-नाले
र वहुतसा झाडीझुखडआताहै, उसकोपारकरके जव-आरासण
ाडके करीवपहुचोगे-एकतर्फ अंवादेवीका धामआयगा, इससे
गेकरीव कोशभरदूर कुंभारीयागांव मौजूदहै,--जहांकि--वडेवडे
ालिशान पांच-जैनमंदिर-वतौर स्वर्गविमानकेखडे है,-वहांजाकर
र्मशालामें- कयामकरना, कुमारीयागांव सीर्फ ! साठ-सतरघरोकी
ावादीमें-रहगया. पेस्तर वडागुलजारथा, अमलदारी यहांपर
ताके राणासाहवकी जारी है, पेस्तरालिखचुके है यहांपर वडेवडे
चआलिशान मंदिरखडे है, और उनकीपूजनकेलिये-एकमुनीम
नपूजारी-और-एकनोकर मुकररहै,—

यहांपर सवसेवडामदिर तीर्थंकरनेमनाथजीकाहै, इसकेतीनतर्फवडेवडेदरवजे-उत्तरतर्फकादरवजा वहुतवडा-तीमंजिला-मयमहरावके गोया ! देवलोकका खासदरवजा मालूमहोता है, जमानेहालमें जववारीशहोती है दरवजेकीछतसे पानीगिरताहै, कोइइकवालमंदहो इसकीमरम्मतपर-गौरकरे, दरवजेकीसीढीचढकर जवमंदिर केरंगमंडपमें पहुचते है मानो ! स्वर्गनजरआताहै. कया ! खुशनसीवोंने मंदिरतामीर करवायाहै जिसकोंदेखकर अकलकामनहीकरती. परकम्मामें जाकरदेखोतो मंदिरकेपीछलेपासे दिवारमेंगजथर लगाहुवाहै,-इससेसवुतहुवा यहमंदिर किसीराजाका तामीरकरायाहुवा है, इसकाशिखर वहुतवुलंद-सगीन-और-वेशकीमती है, तीर्थंकर नेमनाथमहाराजकी-सफेदरंगमूर्त्ति-करीव-चारहाथवडी इसमेंतख्तनशीनहै, और इसकेनीचेलिखाहै संवत् १६७५ वर्षे-माघशुद्धचतुर्थ्यां-शनौ-श्रीउपकेशज्ञातीय वृद्धसज्जनायतपा गछे भट्टारक श्रीविजयदेवसूरि . श्रीनेमिनाथचैत्ये श्री नेमिबिंबंकारितं--प्रतिष्ठितं--च--भट्टारक श्रीहीरविजय सूरीश्वरपट्टप्राचीनाचलमार्तंड मंडलायमानभट्टारक श्री विजयसेनसूरि शर्वरीसार्वभौमपट्टालंकार. गुणगणारंजितमहातपाविरुदधारितभट्टारक श्रीविजयदेवसूरिभिः पंडितश्रीकुशलसागर गणिप्रमुखपरिवारसमन्वितैः-

इसकामतलव यहहुवाकि-संवत् (१६७५) में यहमूर्त्ति तामीरकरवाइगइ औरश्रीविजयदेवसूरि महा-

राजने इसकीप्रतिष्टाकिइ, इसमूर्त्तिके पास दो-मूर्त्ति-औरहै जिसकाकदकरीब सवासवाहाथहै, गभारेके ब-हारखडआकार चारमूर्त्ति--सफेदरंग-निहायतखुबसुरत जायेनशीनहै औरसबकेनीचेलेख मौजूदहै मगरबच-नहीसकते. इनमूर्त्तियोंकेसामनेसमवसरणका आकारका-बिलदेखनेकेहै, दिवारमें दाहनीतर्फ एकहीपथरमें १६४ मूर्त्ते-छोटीछोटीबनीहुइ-बीचमे-परिकरसमेत समवसर-णकाआकार बनाहुवाहै, दोनोंतर्फ दोदरवजेथे-न-मालूमक्यों बंदकरदियेगये, ? दाहनीतर्फकेदरवाजेकी जगहदिवारपर एकहीपथरपर (१९) मूर्त्ते बनीहुइ-और-उनकेनीचे लिखाहै संवत् (१३४५) में-श्रीप-रमानंदसूरिने इनकीप्रतिष्टाकिइ,

दूसरेरंगमडपमें एकतर्फके आलेमें नंदीश्वरद्वीपका आकार-और एकतर्फ देवीकी मूर्त्तिबनीहुइहै, दाहनीतर्फ रिषभदेव भगवानकी सफेदमुर्त्ति करीब (२॥) हाथबडी जायेनशीनहै. औरउसकेनीचे लिखाहुवाहैकि-संवत् (१६७५) वर्षे माघवदि (४)श्री मालीज्ञातीयवृद्धशाखीय-शा० रंगाभार्या-किला--भार्या-सत्पत्नीभार्या-संपूरसतहीरजी-श्रीआदिनाथबिंबं कारितं-तपागछे-श्रीविजयदेवसूरिभिः पंडित श्रीकु-शलसागरगणिपरिवारयुतैः प्रतिष्टितं, बायीतर्फ पार्श्वनाथ भगवानकी सफेदरंग-मूर्त्ति-जायेनशीनहै, जोकरिब (५॥) हाथ

बडीहोगी. इसपरकुछलेखनही, सीर्फ! निशान सप्रतिराजाके वख्त का बनाहुवाहै, सप्रतिराजाकी वनाइहुइमूर्त्तिपर ऐसाहीनिशानहोत है, इसमडपमे शिगारचोकीकीदाहनीतर्फ तसिरेखभेमें लिखाहुवाहै

संवत् (१३१०) वर्षे-वैशाखवदि (५) गुरौ प्राग्वट ज्ञातीय-श्रे-विल्हणमातृ-रुपिणीश्रेयोर्थं—आसपालेन-सिद्धपाल-पद्मसिंहसाहितेन-निजविभवानुसारेण-आरासणनगरे-श्रीअरिष्टनेमिमंडपे-श्रीचंद्रगछीय श्रीपरमाणंदसूरिशिष्य श्रीरत्नप्रभसूरीणामुपदेशेन स्तंभः कारितः इसलेखसें सबुतहुवाकि-यह-रंभा-सवत् (१३१०) में नयावनायागया,—

इसखंभेकेपीछे एकखभेकों छोडकरदूसरे खंभेपर लिखाहै,

संवत् (१३४४) वर्षे-आषाडसुदि पूर्णिमायां देवश्री नेमिनाथचैत्ये-कल्याणिकत्रयस्यपूजार्थं—श्रे-श्रीधर-ततपुत्र-श्रे-गांगदेवेन विसलप्रियद्रमाणां (१२०) श्रीनेमिनाथदेवस्य—भांडागारेनिक्षिप्तं—इसकेपास एक आलेके—खभेपर लिखा है—श्रीकल्याणत्रये-श्रीनेमिनाथ बिंबानि-प्रतिष्टितानि-नवांगवृत्तिकार श्रीमदभयदेव सूरिसंतानीयश्री चंद्रसूरिभिः श्रे-सुमिग-श्रे-वीरदेव-श्रे-गुणदेवस्यभार्या जइतश्री साहूपुत्रवइरापुनालुणा विक्रमखेताहरपातिकर्मटराणा करमटपुत्र खीमसिह-तथावीर-देवसुत- [illegible] गांगदेवेन [illegible]

इसनेमिनाथजीके मदिरकीपरकम्मामें वायीतर्फ-जो-आठ-छोटेदे-वालयहै ऊसमेंअवल देवालयके दरवजेकी दाहनीतर्फ दिवारमें एक शिलालेखशंगमर्मरपथरपर ऊकेराहुवा-और-ऊसमेलिखाहैकि-प्राग्वाटवंशे-श्रे--वाहडेन--श्रीजिनचंद्रसुरि सदुपदेशेन-पादपराग्रामे-उंदेरवसहिका चैत्यं-श्रीमहावीरप्रतिमायुतं-कारितं-तत्पुत्रौ-ब्रह्मदेवसरणदेवौ-ब्रह्मदेवेन-संवत--१३७५ अत्रैव श्रीनेमिमंदिररंगमंडपे-श्रीडाढाधरःकारितः-श्रीरत्नप्रभसुरिसदुपदेशेन-तदनुज-श्रे-सरणदेवभार्या-सहदेवी-तत्पुत्राः श्रे-वीरचंद-पासड-आंबड-रावण-यैः-श्रीपरमाणंदसुरीणामुपदेशेन--शसतिशततीर्थे-कारितं-संवत् (१३१०) वर्षे-वीरचंद्रभार्या-सुखमिणीपुत्रपुना-भार्यासोहगपुत्रलूणा झांझण-आंबडपुत्रबीजा खेतारावण भार्या-हीरुपुत्र-बोडाभार्या-कामलपुत्रकडुआ-द्वि-जयताभार्या-मुंटपुत्र देवपाल-कुमरपाल-तृ-अरिसिंहनाग-उरदेवीप्रभृतिकुटुंबसमन्वितैः श्रीपरमाणंदसूरीणामुपदेशेन संवत् (१३३८) श्रीवासुपूज्यदेवकुलिकां-संवत् [१३४५] श्रीसमेतशिखरतीर्थे-मुख्यप्रतिष्टां-महातीर्थयात्रां-विधाप्य-जन्मपरंपरया सफलीकृतं,-इसलेखकों लिखनेवाले देवपाल-कुमरपाल-वयानकरतेहै-कि-हमने-अपनेकुटुंब परिवारसमेत-यहां--आनकरतीर्थकरवासुपूज्यभगवानका-यह-छोटादेवालय संवत् (१३३८) में वनवाया, और-सवत् (१३४५) में-समेतशिखरतीर्थके मुख्यमंदिरकी प्रतिष्टा-और-महायात्राकिइ, इसलेखसे

शिखरजीतीर्थकेलिये सबुती मिलतीहैकि-संवत् (१३४५) मे॰ शिखरजीतीर्थपर जैनश्वेतांवर मंदिरवनेहुवेथे, यह लेखलिखनेवाले पोसिनागांवके रहनेवाले जैनश्वेतावर श्रावकथे ऊनकेनाम-देवपाल-उपरलिखचुकेहै,-और-पोसिनागांव-जमानेहालमें तीर्थकुंभारीया-जीसे (१२) कोशकेफासलेपर वाकेहै,

उपरलिखेहुवे वासुपूज्य भगवानके देवालयके अंदरवेदीपर लिखाहै-संवत् [१३३८] वर्षे ज्येष्टसुदि [१४] श्रीनेमिनाथचैत्ये-बृहदगछीयश्री रत्नप्रभसूरि शिष्यश्रीहरिभद्रसूरिशिष्यैः श्रीपरमानंदसूरिभिः प्रतिष्टितं-प्राग्वाटज्ञातीयश्रीसरणदेवभार्या-खुहडदेवी-तत्पुत्रश्रीवीरचंद्रभार्या-सुषमिणीपुत्रपुनाभार्या-सोहगदेवी... आंवडभार्या-श्रीअभयसिरिपुत्रवीजाखेता-रावणभार्याहीरुपुत्र बोडसिंहभार्या-जयतलदेवीप्रभृतिस्वकुटुंबसहितैः रावणपुत्रैः स्वकीय सर्वजनानां श्रेयोर्थ-श्रीवासुपूज्यदेवकुलिकासहितं कारितं-प्रतिष्टापितंच, इसलेखमेंजो रत्नप्रभसूरिजीके शिष्य-हरिभद्रसूरि लिखेहै-वेहरिभद्रसूरि दुसरेजानना.-और-जिनोने पचाशकवगेरा प्रकरणवनायेहै-वे-हरिभद्रसूरि दूसरेजानना जो इनोसेअवलहुवेहै.

पाचवेदेवालयकी वेदीपर लिखाहै संवत [१३३५] वर्षे-माघसुदि [१३] चंद्रावत्या जालणभार्या भार्या मोहिनीसुतसोहडभ्रातृ सांगाकेन आत्मश्रेयोर्थ श्रीशांतिनाथ बिंबंकारापितं प्रतिष्टितंच, श्रीवर्द्धमानसूरिभि -इसके नीचे एकदुसरे लेखमे-लिखाहै-संवत् [१३३८] वर्षे-ज्येष्ट

सुदि १४ शुक्रे–वृहदगछीय श्रीचक्रेश्वरसूरिसंताने पूज्य श्रीसोमप्रभसूरिशिष्यैः श्रीवर्द्धमानसूरिभिः श्रीशांतिनाथ बिंबं-प्रतिष्ठितं--कारितं श्रेष्टिआसलभार्या मंदोदरी-ततपुत्र श्रेष्टिगलाभार्याशील्ह-ततपुत्रमेहातटभुजेन साहुखांखणेन--निजकुटुंबश्रेयसे--स्वकारितदेवकुलिकायां स्थापितंच-मंगलमहाश्रीभद्रमस्तु—

सामनेकेदेवालयमे वेदीपरलिखाहै—संवत् [१३३५]मे श्री आदिनाथ भगवानकीमूर्त्ति-श्रीवर्द्धमानसूरिजीने प्रतिष्टित किइ, और नीचेउसके ऐसाभी लिखाहै श्रीमंदाहडगछे-श्रीमंगलमस्तु इसकेआगेके देवालयमें लिखाहै संवत् [१३३५] मे तीर्थंकररिषभदेव भगवानकीमूर्त्ति--श्रीचंद्रसूरिजीकेशिष्य-वर्द्धमानसूरिजीने प्रतिष्टिताकिइ, इसकेआगेके देवालयमें संवत् [१३३८] ज्येष्टसुदि १४ शुक्रवारकेरोज श्रीदेवेंद्रसूरिजीने तीर्थंकर चंदाप्रभुकीमूर्त्ति प्रतिष्टिताकिइ; इसकेआगे सभामंडपकों छोडकर दुसरेदेवालयकी वेदीपर लिखाहै संवत् (१३४३) माघसुदि (१०) शनिवारकेरोज-वृ-श्रीहरिभद्र-सूरिकेशिष्य-परमानंदसूरिने तीर्थंकर अरिष्टनेमिभगवान-कीमूर्त्ति प्रतिष्टिताकिइ, इसकेआगेके देवालयकी--वेदीपर लिखाहै संवत् (१३४४) ज्येष्टसुदि (१०) मीकेरोज तीर्थ-कर रिषभदेवभगवानकी मूर्त्तिप्रतिष्टिताकिइ, प्रतिष्ठाकरने वालेआचार्य-महाराजका नामतोडागयाहै, इसकेआगेके

देवालयकी वेदीपरलिखाहै संवत् (१३३५) मे तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ भगवानकी मूर्तिमृगसीर वदि १२ केरौज वृहद्गदछीय श्रीहरिभद्रसूरिके शिष्य-परमानंदसूरिने प्रतिष्टित किइ,—

दूसरामदिर तीर्थंकर महाविरस्वामीका—वडासगिनऔरपुख्ता—रंगमंडपकी छतमेंकिसकदर ऊमदाकारीगरी हुइहैकि—जिसकाबयानकरना जवानसेवहारहै. पथरमेंऊकेरेहुवे तरहतरहके भाव—कहींकहीं तीर्थंकरोंके समवसरणका आकार—परकंमामें—चोइसदेवालयवनेहुवे मगर किसीमें मूर्तिनहीरही, मूलनायक तीर्थंकरमहावीर स्वामीकी सफेदरग मूर्त्ति—करीव (२॥) हाथवडी इसमेंतख्तनशीन है, और ऊसपर लिखाहै संवत् (१६७५) वर्ष माघशुद्ध ४ शनौ-श्रीउपकेशवंशीयवृद्धशाखीय-सात्राहियाभार्या-तेजलदेसुत. गोरदेसुत-सानानियाकेनभार्या-नामल देवसुत सोमजीयुतेन-श्रीमहावीर बिंबंकारितं-प्रतिष्टितंच-श्रीतपागछे-भट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वर प्रभाकर-भ-श्रीविजयसेनसूरि पट्टालंकार भट्टारक श्रीविजयदेवसूरिभिः श्री आरासणनगरे-ठ्०-राजपालोदामेन,—

गभारेकेवहार दोनोंतर्फ खडेआकर दोवडीऔर दोछोटी मूर्ति निहायतखूबसुरत जिनकाननना जमानामौजूदामें निहायत मुश्किलहैजायेनशीनहै, रगमंडपमेंदोआले वगेरेमूर्त्तिके खालीपडेहै और उसमेंसिर्फ ! (११४८) का सवत्‌ही नजरआताहै व—सववहर्फोके घीसजानेसेंइवारत नहीपडीजाती, दिगरआलेका लेखइससेंभीज्या-

दह घिसाहुवा-उसका-न-संवत्-और-न-इबारत माल्महोतीहै, मंदिरकी परकम्मामें दाहनीतर्फ निहायतउमदा शंगमरमरपथरपर समवसरणका आकार-तीनकोटवगेरादेखाव हुवहु मौजूदहै, मगर अपशोपहै, टुटगयाहै,

तीसरा मंदिर तीर्थंकर शांतिनाथजीका-इसकीकतावजा-मानींद नेमनाथजीके मंदिरकेहै, इसकेभी दरवजेतीन-परकम्मा-और-दोनोंतर्फमिलाकर (१६) देवालय तामीरकियेहुवे-मगरकिसीमें मूर्त्तिनहींरही. छतमें ऊमदाकारीगरी और-इसकी मेहरावे अछीवनीहुइथीमगर सीर्फ ! एकही मेहराव-वास्ते नमुनाके रहगइ-वाकीकीतमाम नेस्तनाबुदहोगइ, सामनेकीतर्फजो छोटेछोटे आठदेवालयहै-अवलदेवालयके उपरलिखाहै संवत् (११४६) ज्येष्ट शुक्ल (९) शुक्रे-मल्लदेवहालिकासुतेन-प्रोहारिश्रावकेन-भ्रातृवीरकसंयुतेन-श्रीवीरजिन प्रतिमाकारिता-दूसरेदेवालयपरलिखाहै संवत् (११३८) वीरकसलहिकासुतेन-देवीगसहोदरयुतेन-जासक श्रावकेन विमलजिनप्रतिमा कारिता, इसकेपासकेदेवालयपर लिखाहै संवत् (११३८) वल्लभदेवीसुतेन-वीरकश्रावकेन-श्रेयांसजिनप्रतिमा कारिता, इसकेआगेकेदेवालयपर लिखाहैसंवत् [११३८) सोमदेवसहोदरेण-सुंदरीसुतेन-शीतलजिनप्रतिमा कारिता, आगेके देवालयमें तीर्थंकर पार्श्वनाथजी प्रतिमा है, एक देवालयपर संवत् [११३८] सहदेवश्रावकेन सुविधिजिन प्रतिमाकारिता लिखाहै, और दो देवालयके लेख टुटेहुवे है, छोटे, आठ देवालयोंके लेख खतम हुवे,

इसमंदिरमें मूलनायक-तीर्थंकरशांतिनाथ-भगवानकी सफेद रंगमूर्तिकरीव (१।) हाथवडी तख्तनशीनहै. यहमूर्त्ति-राजासंप्रति कीतामीरकिइहुइ-वही-निशानात-मूर्त्तिकेनीचे वनेहुवे-जो-राजा संप्रतिकी तामीरकिइहुइ मूर्त्तिओंपर होतहै, राजासंप्रतिकों इंतकाल हुवे करीव (२१२४) वर्ष गुजरे, मगरउसका नेकनाम अवतक जारिहै, दुनियामें रूपयपैसा किसीके शाथनहीजाता. सीर्फ ! धर्मही शाथजाताहै, एसेएसेशख्स दुनियामें होगयेजिनोने वडेवडे धर्मकेकामकिये, वदौलत ऊनकीनेंकनामीके आजतकऊनका नाम चलाआया, तुमभीकुछ धर्मकीराहपर नेंकीकरोजो तुमकों आइंदे फायदेमंदहै,

चोथामदिर तीर्थंकरगोडीपार्श्वनाथजीका-इसकीकतावजाभी उसी नेमिनाथजीकेमंदिरकी वतौरहै, शगमर्मरपथरपर क्याउमदा कारीगीरीका नमुना जिसकों देखकर इनसान चकितरहजाताहै, इसमें तीर्थंकर-पार्श्वनाथजीकी सफेदरंग मूर्त्तिकरीव (२॥) हाथ वडीतख्तनशीनहै. और उसकेनीचेलिखाहै संवत् [१३६५] वर्षे-माघधवलेतर शनौ उपकेशवंशीय-वृद्धसज्जनीय-सा०-जगडुभार्या-जमनादेसुतरहियाभार्या-चापलदेसुतनान-जीकेन-भार्यानवरंगदेयुतेन-आत्मश्रेयोर्थं-श्रीपार्श्वनाथविंवं कारितं-प्रतिष्टितं श्रीतपागछेश्वरभट्टारक श्रीहीरविजय सूरीश्वरपट्टोदय दिनमणि-भट्टारकश्री विजयसेनसूरिप-ट्टालंकाहार-भट्टारक-श्रीविजयदेवसूरिभिःपं० कुशलसा-गर गणिप्रमुखपरिवारयुतैः वु० राजपालोदामेन—

मंदिरकेगभारेके वहारछोटे रंगमंडपमेंदो-खडेआकार-सफेद-रगमूर्त्तिकरीब तीनतीनहाथ वडी-जायेनशीनहै. छोटेरंगमडपके दरवजेकी दाहनीतर्फके आलेकी वेदीपर लिखाहै संवत् (१२१६) वैशाखसुदि (२)-श्रे० पासदेवपुत्रवीरापुनाभ्यां--भ्रातृ-जेहड श्रेयोर्थे-श्रीपार्श्वनाथ प्रतिमेयं कारिता-श्रीनेमिचं-द्राचार्य शिष्यैः देवाचायैः प्रतिष्ठिता, वडेरंगमंडपमें तरहत-रहकी कारीगरी और महरावें तामीर किइगइहै, मंदिरकी परक-म्मामें दाहनीतर्फ अखीरके देवालयकी वेदीपर एक शिलालेख--संवत् (११६१) का है, इसके बनानेवाले और प्रति-ष्ठकरानेवालेका नाम हर्फोंके मिटजानेकी वजहसें पढा नहीजाता, सीर्फ ! निशान मालूमहोतेहैकि-इसमें उनकी तारीफ किइगइथी, और अखीरमें धाराप्रदीयगच्छवगेरा-भी कुछनजर आतेहै,-

पाचमांमंदिर तीर्थंकरसंभवनाथजीका इसमेंतीर्थंकरसंभवनाथ-जीकी सफेदमूर्त्तिकरीब (२) हाथवडीतख्तनशीनहै, गभारेकेवहार आठआलेवनेहुवेसीर्फ ! एकहीआलेमें एकमूर्त्तिबाकीरही दुसरेसब खालीपडेहै. दरवजेतीन और अतराफमंदिरके कोटखीचाहुवाहै,-तीर्थआरासणकेकारखानेमें एकमुनीम-तीनपूजारी-एकपानीभरने-वाला कुलपाचआदमी हमेशाकेलियेतैनातहै. औरखिदमतगुजारी-क-रतेहै, मुनीमकीतनखाह रुपयेआठ-और-पूजारीयोंकीरुपये साढेचार माहवारी है. और-इतनीकलील (थोडी) तनखाहमें इनकागुजारा नहीहोसकता और-न-किसीतरहकी इनकोदिगरआमदनी है, इस-लिये इनकीतनखाह वढानाचाहिये. तीर्थजगलमें है-औरइतनीछोटी

तनखाहमेंइनकारहना मुहालहै, कवल-शतरंजीवगेराभी यहांकुछ नही, आनेजानेवालेयात्रीको मुश्किलगुजरती है; औरपूजारीवगेराकोंभी किसीतरहका आरामनही. अगरकोइइकबालमंद-इसलेखपर गौरकरेऔर मजकुरसामान यहांभेजदेवेउमदाबातहै मुकामजंगलका है, एकवडीभीहोना यहांजरुरी है, कोइखुशनसीब दसपनरांररुपयेकी घडीखरीदकरभेजदेवे. कोइमुश्किलकीबातनही, दुनीयाकेखराजात इसीतरहचलेजाते है जोकुछनेंकनामीकरोगे वहीअछाहै, शत्रुजय-गिरनारवगेरा तीर्थोंमेंखर्चदेनेवालेवहुतहै.-मगरऐसेतीर्थमेंदेवे तारीफउसकीज्यादहहै, इसतीर्थकीदेखरेख दांताकेश्रावकलोगरखते है, इमारतें सबमरम्मतचाहती है, तीर्थआरासणकी जियारतकरके वापिसउसीरास्ते आवुरोडटेशनआना,—

☞ [तवारिख-तीर्थ आबु,]

आबुरोडटेशनसे आबुपहाडपरजानेकेलिये सडकपकीवनीहुइ घोडा-टट्टु-वेलगाडी-वगीवगेरासवारी पहाडकेसीरेतक जासकती है, यात्री-आबुरोडसेंसवारीका इंतजामकरके पहाडपरजाय, राजपुतानाकेजनुबीसरहदपर आबुएकमशहूरपहाडहै, आबुकासीर (१२) मीललंबाऔर (४) मीलचोडापहाडकेउपरकामेंदान जमीनकीसतहसें (३०००) और समुदरकीसतहसें (४०००) फुटऊंचाहै, औरजोसवसेबुलंदशिखरहै उसकीऊंचाइ समुदरकीसतहसें (५६५०) फुटहै, इसपहाडपरपेस्तर (१२) गांवआबादथे, अब (१५) होगये, उनकेनाम-१, देलवाडा, २-गवां, ३-तोरणा, ४-साल, ५-हुंडाइ, ६-हेठमची, ७-आरणा, ८-मास, ९-सानी, १०-ओरिया, ११-अचलगढ, १२-जावाइ, १३-उतरज, १४-सेंर, और-१५, भाखी,-इनमेंदेलवाडा-ओरिया-ओर-अचलगढमें जैनमंदिरवनेहुए है, आबुकाचढाव अठारामील-चढनेकारास्तासाफ, दुतर्फाद्रख्तों-

कीछाया-तरहतरहकीवनास्पति-और-सरचिश्मेआव-जिसकोंदेख-कर तवीयततरहोजातीहै, जव (१६) मीलपरपहुचोगे-छावनी मिलेगी, सवारीयहांतकहीजाती है, सरकारीअपसरोंके-वंगले-रेस्सीडेन्सी-कलव-वाजार-वगेरायहांगुलजारजगहहै, नखीतालाव-झील-हरहमेशपानीसेतर वनीहुइपश्चिमकनारे वांधवनाहुवा रवन्नककी जगहहै. करीव-(१) मीलउत्तरतर्फदेलवाडेगांवमें जैनमंदिरवनेहुवे है, चारोतर्फपहाडकीचोटियां-और-देखावमानो ! स्वर्गलोगसा नजरआताहै, जवनजदीकदेलवाडेकपहुचोगे. निहायतउमदाजैनमंदिर दुरसेदिखलाइदेगें, फौरन ! सीरझुकाकर नमस्कारकरो औरअपनी तकदीरकोंसावाशीदो-जिसनेतुमकोंयहांतकपहुचाया, देलवाडावहुतछोटासागांवहै, व-सववजैनमंदिरोंके रवन्नकवनीहुइहै, घरदेखोतो कुछ-(२५)-या-(३०) केकरीवमगर यहांकेवाशिंदे इसीजगहको वसववमंदिरोके उमदासमझतेहै, धर्मशालायहांपर (२) एकशेठ-हठीसिंह-केशरीसिंह-साकीनअहमदावाद-मुल्कगुजरातकी तामीर करवाइहुइ, दुसरीकोटके अंदरपंचायती-हठीसिंह-केशरीसिंहवाली वडी हैजिसमेंकरीव (२००) आदमीआराम करसकते है. अलावा इसकेपांचकोठरी औरभीवनीहुइ यात्रीइसमेंभी आरामकरनाचाहे शौखसेकरे, एकधर्मशाला-नयीतामीरहोरही है, यात्रीचाहेजिसधर्मशालामें कयामकरे, कोइमनानही.—

कारखानातीर्थ आवुका वतौरशाहीके वनाहुवा-मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर-घटाघडीयाल-चपरासीवगेरा हमेशांयहांपरतैनातहै, जवयात्री-मंदिरमें जाकरदर्शन करेगें दिलवहारअनेकाना होगा, अगरकोइ आवुपहाडपर सवसेपुराना मंदिरकोनसाहै ? तो कइकहदेगे-विमलशाहशेठका, मगरनही ! इससेभी पुरानामंदिरवो-है, जोविमलशाहशेठके वनायेहुवे मंदिरकीपरकम्मामें दाहनीत-

फके कौनेमें देवीजीकेपासहै, जिसमेंकि–शामरंगमूर्त्ति–करीव (३) हाथवडी–निहायत–खूवसुरतऔर पुरानीराजासंमतिकी तामीरकिइ हुइ तख्तनशीनहै. और वहीनिशान उसपरहै जोराजासंमतिकी वनाइहुइ मूर्त्तिओंपरहोताहै, मंदिरभी पेस्तरकाहै कारीगरी इसमें कमहै पुरानायहीहै, इससेभी पुरानेजैनमंदिर यहांपरथे–मगर–गर्दी सजमानेके–व–नहीरहे,–तीर्थोंमें यहकदीमी रवाजचला आयाकि–एकमंदिर पुरानाहोकरगिरगया किसीखुशनशीवने दूसरातामीरक-रवाया, इसीतरह दर्जे–वदर्जे वनतेजातेहै औरतीर्थ हमेशांकेलिये कायम–रहताहै, विमलशाहशेठने जवअपनानयामंदिरवनवाया–इसपुरानेमंदिरकी रदवदलनहीकिइ. पेहलेके मुतावीकही रखा,

अवविमलशाह शेठके–और वस्तुपाल तेजपालके वनवायेहुवे मंदिरोंकावयान सुनिये ! हिंदके तमामजैनमदिरमें–ये–दो–मंदिर कारीगरीके काममें आलादर्जेके खूवसुरतहै संवत् [१०८८] में जब विमलशाहशेठने यहांपर मंदिर वनवाया–[१५००] कारीगार और–[२०००] मजदूरमुकररथे, इसके-वनानेमें तीनवर्षलगे कुलकाम शंगमर्मरपथरका और पहाडपर हाथीयोसे मालअसवाव चढायागया था, ख्याल करो ! कहांकहांसे पथरमंगवायेगयेथे और किसकदर महेनतकेशाथ पहाडपर चढायेथे, अंदाज दो करोडरुपये इसमें सर्फहुवेहोगे, मंदिरकी लंवाइ [१४०] फुट–और चोडाइ (९०) फुटहै–रंगमंडपमें खंभोमें–और मेहरावोमें कैसेकैसे वेलवुटेवनायेहै जिसकीकारीगरीता-रीफके वहारहै,–हाथी–घोडे–और पुतलीयेंकिसकदरऊम

दाऔर बेमीशाल बनाइहै-जिसकों देखकर बडबडेकारीगरभी चकितरहजातेहै, आलादर्जेकी कारीगरीकरके कारीगीरोने ऐसाकमालकियाकि-ऐसीकारीगीरी दुनियामें कम नजरआतीहै, परकम्मामें-चारोतर्फ बावनजिनालय मंदिर बनेहुवे हरेकमे जिनेंद्रदेवोकी पदमासनमूर्त्तिये जायेनशीनहै, मंदिरके अंगनमेंजो रंगमंडपहै (४८) खंभेलगेहुवे-औरठीकवीचमें एकगुंबज-इसकदर कारीगीरीसेबनाहैकि-जिसको-देखकर अकल हेरानहोजातीहै, बावनजिनालयोंके सामने-खंभोमें-छतोंमे-और-दिवारोंमें जोजो नकशकारीका कामकियाहै जिसकीतारीफ-जबानसे बाहरहै, जोशख्श देखेगा वहीजानसकेगा. सबजिनालयोंमे राजासंप्रतिकी तामीरकराइहुइ मूर्त्तिये जायेनशीनहै, विमलशाहशेठकीकहातक तारीफकरे जिनोने अपनी दौलत इसकदर धर्ममें सर्फ किइ.—

इसमें मूलनायक-तीर्थंकर रिषभदेव-भगवानकी मूर्त्ति बारहाथ बडी जोकि-राजासंप्रतिकी तामीरकिइहुइ वेसेही-निशानातहै जो राजासंपतिकी बनाइहुइ मूर्त्तियोंपर होतेहै, संवत् [१०८८] में इसकी प्रतिष्टाकिइगइ-शिलालेखोंसे साबीतहै, इस मूर्त्तिके दाहनेऔर बायेपासे दोमूर्त्ति खडेआकार और है उनकेनीचे लिखाहै संवत (१३८८) मे बनाइगइ. गभारेसे बहारजो मूर्त्ति सर्वधातमय पदमासनहै दाहनेपासेकी मूर्त्तिकेनीचे लिखाहै संवत् (१५२०) में यह तामीरकिइगइ, इनमुर्त्तियोंकेआगे रंगमंडप तर्फबढोतो जोदो मुर्त्ति खडेआकार साढेतीनहाथ बडीहैउनके नीचे

लिखाहै संवत् [१४०८] मे-ये-तामीरहुइगइ. औरजैनाचार्यककसुरीजीने इसकीप्रतिष्ठाकिइ. परकम्मामें जोबावनजीनालयके मंदीरबनेहुवेहै, कइजीनालयोंकेदरवजेपर संवत् [१३७८] काएकपर संवत् [१३८२]काएकपर संस्कृतजबानमें [१३] काव्य लिखेहुवे औरअखीरमें ऊसकीबुनीयाद संवत् [१२०१] कीबतलाइहै. एकजिनालयके दरवजेकी दाहनीतर्फ कालेरंगके पथ्थरका एकलेखहै उसमें संवत् [१३५०] औरइसकेआगे-महाराजाधिराज-सारंगदेव-और-विशलदेवका नामहै. एकाजिनालयके बहारदरवजेकी बायीतर्फ चौमुखाजीकेपास डुंगरपुरीपथ्थरपर (१६) श्लोकलिखेहुवे है,—

इसजिनालयके दरवजेकी दाहनीतर्फ चरणपादुकाके पासएककाले पथ्थरका लेखहै जिसमे [४०] काव्य और संवत् [१२७९] लिखाहै. एकजिनालयके ऊपर संवत् (१२४५) वैशाखवदी पंचमीगुरुवार लिखाहै, औरउसके थोडेदुरनीचे संवत् (१३७८) का लेखहै, जिसमे जैनाचार्य धर्मघोषसूरि-और-ज्ञानचंद्र सूरिजीकेनामहै, एकजिनालयके दरवजेपर संवत (१२४५) का लेख दो-लंबी-सतरे और उसमे चारश्लोकलिखेहुवे है, अवलसतरमे खंडेरगछ-महाति-यशोभद्र

सरि-और-इसकेआगे शांतिसूरिका नामहै. मंदिरकेठीक सामनेदरवजेके-एक पथरका नकघोडा-और-उसपर विमलशाह-शेट बगा! उसका चेहरानजर आताहै जैसेकोट-बडामखी और इकलाल्अजशरकशहै। कमाल्हुस्न-और-मुबारीकवार्दा उनकेचहरे परअलकरहेहै, मुसलमानों अमलदारीकेवख्त यहमुर्ति कुछतोडी गइथी. हालमे कलीचुनेसे मरम्मत किइगइहै. विमलशाहशेठके घोडेके अगलवगल औरपीछे (१०) हाथी शंगमरमरपथरके क्याही खूबसुरतबनेहैकि-मानो! किसीकारिगीरने अभीइसको बनायाहो. जोकरीबतीनतीन हाथवडे औरचोडेहोंगे-उनकीहिफाजतके लिये उपरछत बनीहुइहै, संवत् (१८१८), मे महाराजश्री पदमविजयजीने जोतीर्थ आबुकास्तवन बनायाहै विमलशाहशेठके बनायेहुवे मदिरमे (८७६) मूर्त्तिथी-लिखाहै, सेकडोकोशोंसे शंगमर्मपथर मगवाकर पहाडपर मदिरवनवाना कितनामुश्किलहै, हाथीयोपर मालअसबाब लदवाकर चढायजाताथा जिसमें बेशुमार खर्च होताथा.-

अब वस्तुपाल तेजपालके मदिरका बयानसुनिये. खुशनशीबोंने दुनियाकी पुस्तपर क्याक्या करदिखायाहै जिसकानाम आजतक दुनियामेंरोशनहै, असलमे-वस्तुपाल-तेजपाल-आसराजजीकेबटे और राजावीरधवलके दिवानथे, उनोनेभी मानींद विमलशाहशेठके दोलतलगानेमे कोइ कसरनहीकिइ. अपनाखजाना लाकरगोया! आबुपहाडपर रखदिया. विमलशाहशेठके मंदिरकोदेखकर उनोनेभी वैसाहीमदिर यहांबनाया. शोभनदेवकारीगर उसवख्त तमाम शगतरासोका अफसरथा. जेसा-उसका-नामथा वैसाही शगमरमरपथरपर करकेदिखलादिया. बडाआलिशान मंदिरदेखकर दिलनिहायतखुशहोगा. छतोमे-रगमडपमें-और-गोखडोमे, गोमीगेमी

कारीगरी किटगइहैकि-जिनकीतारीफ-जबानसे बहारहै, जोजो-वेल्बुटे-कमलफुल-पुतलीया-गुलदस्ते-वनायेहै देखकर अछेअछे कारीगर ताज्जुबकरतेहै, मुलनायक तीर्थंकर नेमनाथभगवानकी मूर्त्ति करीव तीनहाथवडी शामरंग इसमें तख्तनशीनहै, यहमूर्त्तिराजासम तिकी बनाइहुइ-वैसेही निशानात इसपरवनेहै-जैसे उनकी तामीर कराइहुइमूर्त्तियोंपरहोते है, इसमंदिरकीप्रतिष्टा संवत् (१२८८) मे हुइ, परकम्मा केजिनालयोपरलिखाहै आसराजसुत-वस्तुपाल-तेजपालने-यहमंदिरतामीरकरवाया, इसकेभीतरीरंगमंडपमें गभारेकेवहार वायीतर्फजोखडेआकार दोहाथवडीमूर्त्ति जायेनशीनहै उसकेनीचे लिखाहै संवत् (१२८९) फाल्गुनसुदी (८) कोरंटकीय गछपुन्यसिंहभार्या--पुन्यश्रीसुत--भ्रातृमूलगेहासहितेन-मुंडस्थलसत्कश्रीमहावीरचैत्ये--निजज्येष्टबांधवमहदुदाश्रेयोर्थ-जिनयुगलंकारितं प्रतिष्टितं,—

वाहारकेरंगमंडपकीवायीतर्फ-परकम्मामें--जो-दो--वडे वडे शिलालेखसंस्कृतपद्यवद्ध-है-ऊसमेंएककालेरंगका-दुसरासफेदरंगका--सफेदरंगके शिलालेखपरलिखाहै संवत् (१२८७) फाल्गुनवदी (३) इतवारकेरौजयह लिखागया, दोनोंशिलालेख- -संस्कृतजवानमे-हर्फनिहायतउमदा-मगरकइजगह टुटगयेहै, इसमंदिरमे बावनजिनालयका आकारउमदावनाहै कइजिनालयोपर संवत् (१२९३) केलेखहै, एकपर (१२९०)-और-एकपरसंवत् [१२९१] कालेखहै,और-ये-सब-छोटछोटेजिनालय वस्तुपाल तेजपा-

मरि--और--इसकेआगे शांतिसूरिका नामहै. मंदिरकेठीक सामनेदरवजेके-एक पथरका एकघोडा-और-उसपर विमलशाह-शेट क्या ! उमदा चेहरानजर आताहै जैसेकोट बडामस्ती और स्कवाल्फंदशन्दशहै. फाल्गुन-और-मुबारगकवादी उनकेचेहरे परअलकरदीहै, मुसलमानी अमलदारीकेवख्त यहमुर्त्ति कुछतोडी गइथी. हालमे कलीचुनेसे मरम्मत किइगइहै., विमलशाहशेठके घोडेके अगलबगल औरपीछे (१०) हाथी संगमरमरपथरके क्याही खूबसुरतबनेहैकि-मानो ! किसीकारिगीरने अभीइसको बना-याहो. जोकरीबतीनतीन हाथबडे औरचोडेहोगे-उनकीहिफाजतके लिये-उपरछत बनीहुइहै, संवत् (१८१८) मे महाराजश्री पद्म-विजयजीने जोतीर्थ आबुकास्तवन बनायाहै, विमलशाहशेठके बना-येहुवे मंदिरमे (८७६) मूर्त्तिथी-लिखाहै, सेकडोकोसोसें संगम-र्मरपथर मंगवाकर पहाडपर मंदिरबनवाना कितनामुश्किलहै, हाथी-योपर मालअसबाब लदवाकर चढायजाताथा जिसमे बेशुमार खर्च होताथा.-

अब वस्तुपाल तेजपालके मंदिरका बयानसुनिये. खुशनसीबोंने दुनियाकी पुस्तपर क्याक्या करदिखायाहै जिसकानाम आजतक दुनियामेंरोशनहै, असलमें-वस्तुपाल-तेजपाल-आसराजजीकेबटे और राजावीरधवलके दिवानथे, उनोनेभी मानिंद विमलशाहशेठके दौलतलगानेमे कोइ कसरनहीकिइ. अपनाखजाना लाकरगोया ! आबुपहाडपर रखदिया. विमलशाहशेठके मंदिरकोंदेखकर उनोनेभी वैसाहीमंदिर यहांबनाया. शोभनदेवकारीगर उसवख्त तमाम सग-तराशोका अफसरथा..जेसा-उसका-नामथा वेसाही संगमरमरप-थरपर करकेदिखलादिया. बडाआलिशान मंदिरदेखकर दिलनि-हायतखुशहोगा. कतोमें-रंगमंडपमें-और-दरवाजोंमे गोमीणोंमी

वा-जो-शकुनिका-विहारकाआकारहै उसमेंभरुअच्छशहरके पासका दरियाव-जहाजमेंवेठीहुइ-सुदर्शनाराजकुवरी एकतर्फवोडकादरख्त-सामनेतीर लगाताहुवा एकशिकारी-जमीनपरगिरीहुइ शमलीऔर नमस्कारमत्रसुनातेहुवे पासखडे-जैनमुनि-वगेराआकार-शकुनिका विहारका बनाहुवाहै, औरउसपरालिखाहै संवत [१३३८] वर्षे ज्येष्टशुक्र [१४] शुक्रेश्रीनेमिनाथचैत्ये-संविज्ञविहारिश्री चक्रेश्वरसूरिसंताने-श्रीजयसिंहसूरिशिष्यश्री -सोमप्रभसूरिशिष्यैः श्रीवर्द्धमानसूरिभिः प्रतिष्टितं-आरासणाकरवास्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय-श्रे०-गोनासंताने-श्रे० आमिगभार्या-रतनी पुत्रतुल्हारि-आसदेव-श्रे० पासड-तत्पुत्रसिरिपाल-तथा-आसदेवभार्या-सहजू-पुत्रतु० आसपालेन-भा-धरणि सिरिमति-तथा-आसपालभार्या--आसिणि-पुत्रलिंबदेव-हरिपाल-तथा-धरणिभार्या .ऊदाभार्या-पाल्हणदेविप्रभृति कुटुंबसहितेन-श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं-अश्वाववोध-शमलिकाविहारतीर्थोद्धारसहितं--कारितं-मगलंमहाश्रीः-इसलेखकामतलवयहहुवाकि-आरासण नगरकेरहनेवाले-पोरवाडज्ञाति-आसपालनामके श्रावकनेयहानेमनाथभगवानकेमंदिरकी परकम्मामेंतीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीकी मूर्त्तिजायेनशीन किइ-और-अश्वाववोध-शकुनिका-विहारतीर्थकाआकार--पथरपर उकेरवाकर कायमकिया,

महाराज श्रीपद्मविजयजीने तीर्थआवुके स्तवनमें उसवख्त वस्तुपाल-तेजपालके मंदिरमें (४६८) प्रतिमाथी-लिखाहै.

लक्खानदानवालोने बनवाये है, मंदिरकीपीछाडी शंगमर्मर पथरके (१०) हाथी–जोकरीब तीनतीनहाथ लंबेचोडेजिसकी कारीगीरी–हदसेज्यादहहै–जोदेखेगेवेही जानसकेगें, इनहाथीयोंकेउपरछतऔर पीछाडीदिवारबनीहुइहै, उसमेंअलगअलगआले–और और–उनआलोमें वस्तुपाल–तेजपाल–ऊनकीऔरतें––चचावगेरा रिस्तेदारोंकी मूर्तेंशंगमर्मरपथरकी बनीहुइहे, कैसीकैसीउनकी खूबसुरति–कमालहुस्न–और–इकबालमंदी–चेहरेपरझलकरहीहै, खुशनसीब–बहादूर–और–धर्मपाबंदहोतो ऐसेहो,—

मंदिरकेरंगमंडपमेदोंनोंतर्फजोदो–आले–एकबायी–और एकदाहनीनर्फबनेहुवे है. उसकदर उमदाकारीगरीकिइहैकि–शंगमर्मरपथरको बतौरकागजकरके दिखलादिया, ये–दोनों–आलेवस्तुपाल–तेजपालकीऔरतोंने–अपनेजेबखर्चसेतामीर करवायेहै, दरअसलमें–ये–आलेनही है मगरकारीगरीमें बडेबडेमंदिरोंको मातकरनेवाले है, शाबाशहै ऊननेंकऔरतोंके खयालोको जिनोनेधर्मपर ऐसीनेंकनामीकिइ. आबुकेजैनमंदिरोंकी जोतारिफसुनतेहो इनहीविमलशाहशेठ–और–दिवानवस्तुपाल–तेजपालकेबनायेहुवे मंदिरोंकी है,–वस्तुपाल––तेजपालकेमंदिरकी तामीरातमें एककरोड––असीलाखरुपये सर्फहुवे, अलावाइसके जिसजगहपर मंदिरबनाहै उसकीभरतीकरनेमे छपनलाखरुपयेहुवे. जगलीभील–लोगोनेइसमंदिरको कुछनुकशानपहुचायाथा––तबसेइसकी रवनक–कमहोगइ मगरफिरभी बहुतकुछरवनकहै, जबयेहमंदिरबनकर तयारहुवाहोगा उसवख्त–देखतेतो मालूम–होताकि–क्यारवनकथी,—

मंदिरकी दाहनीतर्फपरकम्मामें–अंबिकादेवीकी उरलीतर्फ–विचलेदेवालयमें पूरवतर्फकीदिवारकेपास शगमर्मरपथरपर उकेराहु–

अब-अचलगढके मदिरोंका-हालसुनिये, देलवाडेसें अचलगढ (५) मीलके फासलेपर वाकेहै, सडक पकीबनीहुइ-मगर चोटाइमें बहुततर सीर्फ घोडे-और-डोलीयें जासकतीहै. बगीया-गाडीनही जासकती. रास्तेमें एकमौजा ओरीयानामका वाकेहै जिसमें श्रावकोंका एकभीघर नहीरहा-सबघर दिगरमजहब वालोंके करीब (१००) है, जैनश्वेतांबर मदिर एक-यहांनिहायत पुरानाबनाहुवा-और-इसमें मूलनायक भगवान् महावीरस्वामीकी मूर्त्ति करीब (१॥।) दो-हाथवडी तख्तनशीनहै, यहमूर्त्ति राजासंप्रतिकी तामीरकिइहुइ-वही-निशानातइसपर बनेहुवेहै, बांयीतर्फ एकमूर्त्ति-तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी-इसपरलेखनही-सीर्फ ! पार्श्वनाथभगवानका नामहै, दाहनीतर्फ एकमूर्त्ति तीर्थंकरशांतिनाथजीकी जो करीबपोनेदोहाथवडी जायेनशीनहै और यहभीराजासंप्रति की तामीरकीहुइहै, आबुपहाडपर बहुतसीमूर्त्तिये राजसंप्रतिकीहीतामीरकिइहुइ पाइजातीहै, निगरानी-इसमदिरकीअचलगढके खजानेसे किइजातीहै, इसकेदर्शनकरके-वापीस उसीसडककोंआना-जो-अचलगढकों गइहै,

अचलगढगाव पहाडकी दामनमेंबसाहुवा जबतलहटीमे पहुचोगे राजाकुमारपालका तामिरकियाहुवा मदिरदाहनी तर्फकों नजरआयगा, जो-बडासंगीन-और-पुख्तशिखरबंद बेशकिंमती बनाहुवाहै, और इसमे तीर्थंकर शांतिनाथ महाराजकी मूर्त्ति तख्तनशीनहै, यहमूर्त्तिभी राजासंप्रतिकी तामीरकिइहुइ-और-वही-निशानात इसपरमौजूदहै, रंगमंडपमें शिलालेख लगाहुवाहै मगरब-वजहटुटजानेके बचनहीसकता दो मूर्त्ति-जो-खडेआकार इसमेंजायेनशीनहै बांयीतर्फकी

डशाहने-और-ल्हुनामक साहुकारने-यहांकइदफे जल्सेकिये और दौलतसर्फकिइ. हिदमं आबुकेजैन मदिरअपनी कारीगीरीसें आम-जगह मशहूरहै, मदिर-सोना-चांदी-जवारातके बनेनहींहै पथरकेहै मगर कारिगरीके सामने-सोना-चांदी--जवाहिरातभी-नाचीजहै. फीजमानाके कारीगिर यहांकीकारीगरी देखकर ताज्जुबकरतेहै और इसहुनरको सीखनेकी कोशिशकरतेहै, कइअग्रेज-इनमदिरोका फोटो उतारतेहै,-कीर्त्तिकौमुदी-औररासमाला किताबजोकि-आलादर्जे-की तवारिखें शुमारकिइजाती है उनमेंआबुकेजैनमंदिरोका हालद-र्ज है, जोशख्शयहाआनकर नजरसेंदेखेगा अजहदखुशहोगा.-

वस्तुपाल-तेजपालके मंदिरसेथोडीदूरशेठ-भेंसाशाहका तामी-रकियाहुवा निहायतउमदामंदिर बडेघेरेमें है. मूर्त्तिइसमेंमूलनायक भगवानकी करीबतीनहाथवडी सवधातकी तख्तनशीनहै, इसके नीचेंलिखाहै [संवत् १५५२] मेंतामीरकिइगइ, तपगछ-नायकश्रीसोमसुंदरसूरि-तत्पदे-मुनिसुंदरसूरि-तत्पदे-ज-यचंद्रसूरि-तत्पदे-रत्नशेखरसूरि-औरउनकेपट्टपर लक्ष्मी-सागरसूरि-जिनोने--इसमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाकिइ, गभारेके बहाररंगमंडपमें दोमूर्त्ति-एक-तीर्थंकररिषभदेवभगवानकी दुसरी-मुनिसुव्रतस्वामीकी-जायेनशीनहै, तारीफकरनाचा-हिये भेंसाशाहशेठकी जिनोनेइसकदरअपनीदौलत इस तीर्थपरखर्चाकिइ, चोथामंदिरचौमुखाजीका तीमंजीला-और-तीनोंमंजीलोंपर मूर्त्तिचौमुखाजीकी तख्तनशीनहै. वडाबुलंदशिखर औरसबकाम पुख्ताबनाहै, रंगमंडपबहुत-बड़ा जिसमेंकरीब [५००] आदमीबखूबी बेठसकते है,

बखूबी (५००) आदमी बेठसक्तेहै, वडासंगीन रंगरौशन किया हुवा बतौरदेव मजलीशके देखलो ! मूलनायक तीर्थंकर रिषभदेव भगवानकी-मूर्त्ति-सबधातकी बनीहुइ करीब (४) हाथवडी निहायत खूबसुरत तख्तनशीनहै, इसमें ज्यादाहिस्सा सोनेका-और-बाकी दिगरधातुकाहै,

इसपरलिखाहै-संवत् (१५६६) फाल्गुनसुदि (१०) मी-दिने-श्रीअचलचढदुर्गे-राजाधिराज श्रीजगमाल-विजयराज्ये-प्राग्वाटज्ञातीयसं-कुरपालपुत्रसं-रत्नसं-ध-रणसं-रत्नपुत्रसं-लाषासं-सलषासं-सजासं-सालिंग-भासं-सुहागदेपुत्रसं-सहसाकेनभासं-सारदे पुत्रापिमरा-जद्दि-अनुपमदेपुत्र-देवराज-षिमराज भारमादेपुत्र-जयमल-मनजीयुतेन-निजकारित चतुर्मुख प्रासादे-उ-त्तरद्वारे-पित्तलमयमूलनायक श्रीआदिनाथ बिंबकारितं-तपगछनायक सोमसुंदरसूरि-तत्पदे मुनिसुंदरसूरि-त-त्पदेजयसुंदरसूरि-तत्पदेविशालराजसूरि-तत्पदे रत्नशेखर सूरि-तत्पदेलक्ष्मीसागरसूरि-श्रीसोमदेवसूरिशिष्य-श्री सुमतिसुंदरसूरि-शिष्य-गछनायक श्रीकमलकलशसूरि शिष्य-संप्रतिविजयमान-गछनायक-श्रीजयकल्याणसू-रिभिः श्रीचरणसुंदरसूरि प्रमुखपरिवारयुतैः प्रतिष्ठितं,-

मुलनायकजीकी तर्फ जो मूर्त्ति जायेनशीनेहै उ-सपरसंवत् (१५१८) का लेखहै, उनकेपीछाडी जोदो

मूर्त्तिकेनिचे लिखाहैसंवत् [१३०२] जेठसुदी (९) मी-शुक्रवारकेरोज यहमूर्त्ति प्रतिष्टितकिइगइ, पल्लीवालज्ञा-तीयश्रावक [नामखंडित होगयाहै] की भार्याने यहमूर्त्ति बनवाइ, और आगेचौथीलकीरमें तीर्थंकरशांतिनाथजीका नामलिखाहुवाहै, आसपास-चुना-लगादियाहै जिससे लेख पुरेपुरा वचनहीसकता, रंगमंडप वडाआलिशान-वहार-कीतर्फ उमदाकारिगीरी-और-अतराफमंदिरके सगीनकोट खींचा-हुवाहै. राजाकुमारपालके मंदिरकादर्शन-करके जववहारआओगे सामने एकतालाव नजरआयगा. और उसकी एकतर्फ तीनभैंसे पथरके वनेहुवे खडेदेखोगे, आगेपहाडकी-तर्फचढोतो-एकदरवजा-और-एक तालाव आयगा, इसकेभी आगे वढोतो दुसरादरवा-जाऔर अचलगढगांवकी आवादीशुरूहोगी, आवादीक्याहै, ? व-रायेनाम वीशपचीशघर रहगये यहांपरएक मंदिर तीर्थंकरकुंथुनाथ जीका-और-एकधर्मशाला पुरानी वनीहुइहै, यात्री इसमें जाकर कयामकरे, मंदिरमें सवधातकी वनीहुइ मूर्त्ति-तीर्थंकरकुं-थुनाजीकी तख्तनशीनहै औरउसके नीचेलिखाहै संवत् [१५२७] में. यहतामीर किइगइ,-

यहांसेआगे वडेमंदिरको जाना जो वुलदशिखरपर मानींद स्वर्गविमानके नजरआताहै, पास नयीधर्मशाला-कारखाना-मुनी-म-गुमास्ते-नोकरचाकर-चौकी पहरा सवठाठ शाहाना देखोगे, यहकारखाना जेरसाया-रोहिडा गांवके श्रावकोंकेहै, औरअलवते ! इसवख्त इसमंदिरकी तरक्कीहै, पहाडकेवुलंद शिखरपर जैसाखूव-सुरतमंदिर अचलगढकाहै दुसरीजगह नहीदेखोगे, इसके रंगमंडपमें

बखूबी (५००) आदमी बेठसक्तेहै, बडासंगीन रंगरौशन किया हुवा बतौरदेव मजलीशके देखलो ! मूलनायक तीर्थंकर रिषभदेव भगवानकी–मूर्त्ति–सबधातकी बनीहुइ करीब (४) हाथबडी निहायत खूबसुरत तख्तनशीनहै, इसमें ज्यादाहिस्सा सोनेका–और–बाकी दिगरधातुकाहै,

इसपरलिखाहै–संवत् (१५६६) फाल्गुनसुदि (१०) मी–दिने–श्रीअचलचढदुर्गे–राजाधिराज श्रीजगमाल-विजयराज्ये–प्राग्वाटज्ञातीयसं–कुरपालपुत्रसं–रत्नसं–ध-रणसं–रत्नपुत्रसं–लाषासं–सलषासं–सजासं–सालिंग-भासं–सुहागदेपुत्रसं–सहसाकेनभासं–सारदे पुत्रापिमरा-जद्दि–अनुपमदेपुत्र–देवराज–पिमराज भारमादेपुत्र–जयमल–मनजीयुतेन–निजकारित चतुर्मुख प्रासादे–उ-त्तरद्वारे–पित्तलमयमूलनायक श्रीआदिनाथ बिंबंकारितं–तपगछनायक सोमसुंदरसूरि–तत्पदे मुनिसुंदरसूरि–त-त्पदेजयसुंदरसूरि–तत्पदेविशालराजसूरि–तत्पदे रत्नशेखर सूरि–तत्पदेलक्ष्मीसागरसूरि–श्रीसोमदेवसूरिशिष्य–श्री सुमतिसुंदरसूरि–शिष्य–गछनायक श्रीकमलकलशसूरि शिष्य–संप्रतिविजयमान–गछनायक–श्रीजयकल्पाणसू-रिभिः श्रीचरणसुंदरसूरि प्रमुखपरिवारयुतैः प्रतिष्टितं,–

मुलनायकजीकी तर्फ जो मूर्त्ति जायेनशीनहै उ-सपरसंवत् (१५१८) का लेखहै, उनकेपीछाडी जोदो

मूर्त्तियेहै ऊनमें एकपर संवत् (१५१८) और दूसरीपर (१५६६) का लेखहै, बायीतर्फजो तीनमूर्त्तिये है ऊनमेएकपर संवत् (१५६६) एकपर संवत् (१५२९) औरएकपर संवत् (१५६६) का लेखहै, मूलनायकजीकी दोनोंतर्फ–जो–दोमूर्त्ति–खडेआकारहै–वेभी–सबधातकी बनीहुइहै, रंगमंडपकी दाहनीतर्फके आलेमें तीर्थंकरनेम-नाथ भगवानकी मूर्त्ति–और–उपरकी मंजिलपर चौमु: खामहाराजकी चारमूर्त्तियोंपर संवत् [१५६६] का लेखहै औरएकपर बिल्कुल लेखनही–ये–कुल (१४) मूर्त्तियां-वजनमे (१४४४) मणकी शुमारकिइजातीहै, उनमें ज्यादा–सोना–और तांबा–पीतलवगेरा दिगरधातु कमहै; मंदिरकी छतपर जाकरदेखो तो तमामकेफियत आबुपहाडकी–और–मंदिरोंकी नजरआतीहै, किसकदर हरियाली तरहतरहके द्रख्त–चिश्मेआब–नदीनाले–और छोटेछोटे गांवनजरआतेहै ! एकउमदा कालीन बीछाहो, औरदेखने वाले आस्मानकी शैरकररहेहो, पासमें एकशिखरपर कुंभाराणा-जीके महेल–और–सावन–भादवा तालावके निशानातबनेहुवेहै, अचलगढके मंदिरकीजियारत करके नी[illegible] १८
गांवमें पाचसातघर जैनश्वेताम्बर [illegible]
गढसे वापीस उसीरास्ते [illegible]

लगालेवेतो अदृष्टहोजातेथे, आजकल जमाना नाजुकहै उमदाचीजे गायवहोती जातीहै, और कमजोरचीजें दरपेशहोतीहै, पेस्तरयहां पीलेरगके पथर ऐसेहोतेथे अगरऊनकों दूधकेसाथ घीसकर वदन-पर लगादियेजाय तोतमामवीमारीया रफाहोतीथी, ताकतवरऔप-धियें यहांऐसीहोतीथीजिसकों खाकरआदमी हजारशरशोकीवरावर ताकतहासिलकरताथा, मगरआजकलसीर्फ ! सुननेकेलिये वातेंरह गइ, न-वे-चीजे है-न-वे आदमी है, आबुकल्पमे लिखाहै,—

न सवृक्षो न सा वल्ली-न तत्पुष्पं न तत्फलं,
न सकंदो न सा शाखा-या नैवात्र निरीक्ष्यते, १

ऐसाकोइद्ररूत-लता-वल्ली-फल-फुल-और-कुद--नहीथाजो यहांपर नहीपायाजाताथा, पेस्तरयहा सिद्धरसहोताथा, बुजुर्गलोग कहाकरतेहैकि—

पदेपदे निधानानि-योजने रसकुंपिका,
भाग्यहीना न पश्यंति-बहुरत्ना वसुंधरा, १,

आबुकीहवा मुल्कोंमेंमशहूरहै गर्मीयोंकेदिनोमेंभी रातकोयहापर शर्दी-मालूमहोती है, कइकिसमके परीदेद्ररूतोंपर कलोलेकरतेहै, आम अनार-अजीर-वादाम-अगुर-केले-जामफल-जभीर-नींबु--नरंगी गुलर-खजूर-अद्रक-पोंदिना-कुष्माड-कठेर-केर--कविठ-ककडी-और-कचनारवगेराकइचीजें यहांपरपैदाहोती है, फुलोंकावयानसुनो तो-तरहतरहकेगुलाव-हजारोमणपैदाहोतेहै, चंपाकेद्ररन औरफुल उसके वेंशुमारउतरते है, गर्मीयोंमेंऔर वारीशमेंजिधरदेखो फुलोंकी खुशवूमहेकरहीहै, औरतरहतरहके गिरेहुवेफुल जमीनपर इसकदर बीछेहुवे दिखाइदेतेहै, मानो ! कोइऊमदा कालीनवीछाहुवाहै, जाइ -जुइ-केतकी-डमरा-मरूआ-केवडा-और चमेली हरकिसमकी यहां

खडीहै, गुलवेलिया-और-केशुवगेरा जंगली फुलोंकी गिनतीकरो तो एककितावभरजाय, विधाब्राह्मी-सहदेवी-काकजंघा-शरपुंखा-लक्ष्मणा-मयूरशिखा-हंसराज-नकछीकनी-रतनजोत--जलजमनी-और-प्रियंगु-यहांहजारोमण पैदाहोतीहै, सफेदमुशली-वहडे-आवले-अरीठे-मोंथ-घोडवेल-और-मरोडफलीभी--किसीकदरकमनही, कांटालकासहेत यहांवहुत पेदाहोताहै. भौरे-कांटालजातिकी नाशपातीकारस पीइकर सहेतकों पैदाकरतेहै,-

अय्यामवारीशमें आबुपहाड वदलोंसें इसकदर छाजाताहै बुलंदशिखर विल्कुलनजर नहीआते, आवुपर छावनीमें जिसचीजकी दरकारहो आसानीसे मिलसकतीहै, आवुकेजैनमंदिर जिनोनेनही देखे एकआलादर्जेकी कारीगरीका हिस्सानहीदेखा ऐसाकहनाकोइ गलतवातनही, मदिरोंमें जातेवख्त-लकडी-हथियार-छडी-जुतेवगेरावहार रखकर जानाचाहिये, देवमंदिर एकअदवकी जगहहै, अंदरजाकर कारीगिरीकों विल्कुल-न-छीवे, दूरसे सबचीजदेखे, दरवजेपर इसीमजमुनका एकइस्तिहारभी लगाहुवाहै, आबुतीर्थकी जियारतसें यात्रीकों दो-किसमके फायदेहोगें, अवलधर्मका दोयम कारिगीरीके देखनेका-देलवाडेसे यात्री उसीरास्ते वापीसखरेडी आवे जिसरास्तेगयेथे, आवुपेरचढनेके रास्तेकइवनेहै, मगरखास रास्तेदो-है, अवल खरेडीका-दोयम-अनादरेका, पहाडपर चढतेवख्त रास्ताचढावका-और-उतरतेवख्त उतारकाहै, व-सवव-सडकके रास्तासाफ- हरजगहहरियाली कुछकुछ फासलेपर चौकीपहरेलगेहुवे और सवइंतजाम अछाहै,-

(तवारिख आवु खतमहुई,)

☞ [तवारिख तीर्थ बंभणवाड]

आबुरोडसे रवानाहोकर यात्री किरवरली-भिमाना-रोहिडा-और-बनासटेसन होतेहुवे टेशन पीडवाडा उतरे, रेलकिराया-पाचआने लगतेहै, पिंडवाडेमें श्रावकोके मकानात-धर्मशाला-और-पुराने मदिर बनेहुवेहै, दर्शनकरके आगे बभणवाडतीर्थकों जाना जो करीब (४) कोशके फासलेपर वाकेहै, सवारीके लिये बेल-गाडी मिलसकेगी, रास्ता खुश्कीकाहै, चौकीदारकों शाथ लेनाचाहिये. और खानपानका बंदोबस्तभी यहासेही करलेना ठीकहै. बंभणवाडगांव छोटाहै चाहिये वैसीचीज वहांपर नहीमिलसकेगी, तीर्थबभणवाड पहुचनेपर धर्मशालामें कयामकरना जो-निहायतपुख्ता और आलिशान बनीहुइहै, बंभणवाड कस्वा बहुतबडानही मगर तीर्थकी वजहसे मशहूरहै. यहांपर तीर्थंकर महावीर स्वामीका बडाआलिशान मंदिर-गांवसे-कुछ फासलेपर जंगलमें बतौर देवविमानके खडाहै, कारखाना-मुनीम-गुमास्ते-नोकरचाकर और पूजारीवगेरा हमेशाकेलिये यहां तैनातहै, मंदिरके सामने पथरका-एकहाथी-मानीद असलीहाथीके-बनाहुवाखडाहै, मदिरमें मूलनायक भगवान-तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्त्ति-वालुरेतकी-बनीहुइ जिसपर मोतीयोंका लेप लगाहै करीब (१) हाथबडी तख्तनशीनहै, दर्शनकरके दिलखुशहोगा,

जोलोगकहते हैकि-तीर्थंकरमहावीरस्वामीके कानोमें जो-गोवालियेने लकडेकी बडीबडीकीले बतौरमेखके लगाइथी-चहखरक-नामकेवैद्यनेयहां निकालीथी, मगरयहबात बिल्कुलगलतहै, असलमें-यहमाजरा मुल्कपूरवकाहै, देखो! कल्पसूत्रमें जहांतीर्थंकर महावीरस्वामीका अंतर्वाचनाका जिक्रदर्ज है, ऐसापाठ मौजूदहै, कि-तीर्थंकरमहावीर खणमानीगांवकेवहार ९७०. १५१।न५१

खडीहै, गुलवेलिया-और-केशुवगेरा जंगली फुलोंकी गिनतीकरो, तो एककिताव भरजाय, विद्याब्राहमी-सहदेवी-काकजंघा-शरपुंखा-लक्ष्मणा-मयूरशिखा-हंसराज-नकछीकनी-रतनजोत--जलजमनी-और-प्रियंगु-यहांहजारोमण पैदाहोतीहै, सफेदमुशली-वहडे-आवले-अरीठे-मोंथ-घोडवेल-और-मरोडफलीभी--किसीकदरकमनही, कांटालकासहेत यहांवहुत पैदाहोताहै. भौरे-कांटालजातिकी नाशपातीकारस पीइकर सहेतकों पैदाकरतेहै,-

अय्यामबारीशमें आबुपहाड वदलोंसें इसकदर छाजाताहै बुलंदशिखर विल्कुलनजर नहीआते, आबुपर छावनीमें जिसचीजकी दरकारहो आसानीसे मिलसकतीहै, आबुकेजैनमंदिर जिनोनेनही देखे एकआलादर्जेकी कारीगरीका हिस्सानहीदेखा ऐसाकहनाकोइ गलतवातनही, मंदिरोंमें जातेवख्त-लकडी-हथियार-छडी-जुतेवगेरावहार रखकर जानाचाहिये, देवमंदिर एकअदवकी जगहहै, अंदरजाकर कारीगिरीकों विल्कुल-न-छीवे, दूरसे सवचीजदेखे, दरवजेपर इसीमजमुनका एकइस्तिहारभी लगाहुवाहै, आबुतीर्थकी जियारतसें यात्रीकों दो-किसमके फायदेहोगें, अवलधर्मका दोयम कारिगीरीके देखनेका-देलवाडेसे यात्री उसीरास्ते वापीसखरेडी आवे जिसरास्तेगयेथे, आबुपरचढनेके रास्तेकइवनेहै, मगरखास रास्तेदो-है, अवल खरेडीका-दोयम-अनादरेका, पहाडपर चढतेवख्त रास्ताचढावका-और-उतरतेवख्त उतारकाहै, ब-सवब-सडकके रास्तासाफ- हरजगहहरियाली कुछकुछ फासलेपर चौकीपहरेलगेहुवे और सवइंतजाम अछाहै,-

(तवारिख आबु खतमहुई,)

☞ [तवारिख तीर्थ बंभणवाड]

आबुरोडसे रवानाहोकर यात्री किरवरली-भिमाना-रोहिडा और-वनासटेसन होतेहुवे टेशन पीडवाडा उतरे, रेलकिराया पाचआने लगतेहै, पिंडवाडेमें श्रावकोके मकानात-धर्मशाला-औ -पुराने मंदिर बनेहुवेहै, दर्शनकरके आगे वभणवाडतीर्थको जान जो करीब (४) कोशके फासलेपर वाकेहै, सवारीके लिये बेल गाडी मिलसकेगी, रास्ता खुश्कीकाहै, चौकीदारको शाथ लेनाचाहिये. और खानपानका बंदोवस्तभी यहांसेही करलेना ठी-कहै. बंभणवाडगांव छोटाहै चाहिये वैसीचीज वहांपर नहीमिलस-केगी, तीर्थबंभणवाड पहुचनेपर धर्मशालामें कयामकरना जो-नि-हायतपुख्ता और आलिशान बनीहुइहै, बंभणवाड कस्वा बहुतव-डानही मगर तीर्थकी वजहसे मशहूरहै. यहांपर तीर्थकर महावीर स्वामीका बडाआलिशान मंदिर-गांवसे-कुछ फासलेपर जगलमें बतौर देवविमानके खडाहै, कारखाना-मुनीम-गुमास्ते-नोकरचा-कर और पूजारीवगेरा हमेशांकेलिये यहां तैनातहै, मंदिरके सामने पथरका-एकहाथी-मानीद असलीहाथीके-बनाहुवाखडाहै, मंदिरमें मूलनायक भगवान-तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्त्ति-वालुरेतकी-बनीहुइ जिसपर मोतीयोंका लेप लगाहै करीब (१) हाथबडी तख्तनशीनहै, दर्शनकरके दिलखुशहोगा,

जोलोगकहते हैकि-तीर्थकरमहावीरस्वामीके कानोमें जो-गो-वालियेने लकडेकी वडीवडीकीले बतौरमेखके लगाइथी-वहखरक-नामकेवैद्यनेयहा निकालीथी, मगरयहबात बिल्कुलगलतहै, असल-में-यहमाजरा मुल्कपूरवकाहै, देखो! कल्पसूत्रमें जहांतीर्थकर महावीरस्वामीका अतर्वाचनाका जिकदर्ज है, ऐसापाठ मौजूदहै, कि-तीर्थकरमहावीर खणमानीग''''''हार खडेहोकरध्यानकरतेथे-

एक-गोवालीयेने ऊनकेकानोमें दो-मेखां-लकडेकीलगाइ, और जब-वे-मध्यमअपापानगरीकोंगये वहांकेरहनेवाले सिद्धार्थवणिक- और-खरकनामकेवैद्यने-ऊनोकेकानसे वडीकोशिकेशाथ मेखां नि- काली, कल्पसूत्रका पाठ और सबहकीकत आगेचलकरलिखेगे जहांकि-मुल्कपूरवके जैनतीर्थोंका बयान करेंगे, असलवात मूल्क पूरवमें बनीथी पीछेसें यहां ऊनकी-नकल-किइगइहै, वंभणवाडसें यात्री नादियागांवको जावे, जोकि--दोकोशकेफासलेपरवाके है, औरयहांपर तीर्थंकरमहावीरस्वामीका वडाआलिशानमंदिर बनाहुवा है जियारतकरे, गांवनादियाके वहार एकछोटी पहाडीकी खोहमें- तीर्थंकरमहावीरस्वामीकी मूर्त्ति पहाडमेऊकेरीहुइ-और-एकशिला- पर सर्पका निशानबनाहै जिससांपकानाम चंडकौशिक था-और इन्होके पांवकों काटाथा, जब उससर्पकों तालीमधर्मकीदिइ उसका गुस्सा उतरगयाथा, और-वहधर्मी होगयाथा. यह माजराभी मु- ल्कपूरवकाही है, जब तीर्थंकरमहावीर श्वेतांबिकानगरीकों जातेथे- कनकखलतापसाश्रमके पास-चंडकौशिकनामके सर्पनेऊनकेपांवकों काटाथा, ऊसकी नकल यहांपरबनाइगइहै, जैसे रायणवृक्ष (यानी) खिरनीद्रख्तके नीचे तीर्थंकर रिषभदेवस्वामीका पधारना तीर्थश- त्रुंजयपरहुवाथा-मगर-स्थापना-उसकी औरभी कइजगह किइगइ है इसीतरह यहभी माजरा समझलो,

कल्पसूत्रमे देखो साफबयानहै तीर्थंकरमहावीर छदमस्थ-हा- लतमें-मुल्कपूरवतर्फही विचरतेरहे मारवाडमें नहीपधारे, नादियाके आसपास-लोटाणा-अंजारी-शिरोहीवगेराभी जैनोकी आवादीके मुकामहै, और वडेवडेजैनश्वेतांवरमंदिर वहांपरबनेहुवे है, अगरफुर- सतहोतो वहांभी जानाचाहिये, अगर कमफुरसतहो-तो-नादियासें वापिस वंभणवाड-और-वंभणवाडसे उसीरास्ते देशनपींडवाडेआना,

और रैलमें सवारहोकर केशवगंज-नाणा-मोरीवेरा-एरनपुरा सदेराव-और-फालना होते रानी-टेशन उतरना, रैलकिराय छअ लगते है,—

☞ [तवारिख-पंचतीर्थी,-]

मुल्क मारवाडमें-रानीटेशनसे (२०) कोशके घेरेमें पंचतीर्थी एकमशहूर जगहहै,-वरकाणा-नाडोल-नाडलाइ-घाणेराव और-रानकपुर-ये-पंचतीर्थीके नामहै, सवारीके लिये वेलगाडी रूपयेरोजके किरायेपर मिलसकेगी, रास्ते दो-है, एक वरकाना होकर रानकपुर जाना, दुसरा रानकपुर होकर वरकाना आना, जिनकों जैसा सुभीताहो-वैसा करे, दोनो तर्फसे वापीस रानीटेशनकोंही आनाहोगा. और कमसेकम आठरौज लगेंगे, जोलोग भगाभगी करके चार-या-पाचरौजमेंही खतमकरतेंहै उनकीजियारत फिजुलहै, घरछोडकर तीर्थमेंआये और तीर्थमेंभी वही हालरहा तो इससे बेहत्तरहै घरहीवेठेरहना, यात्रीकों रानीटेशनसें चलकर एक रौजवरकानामें रहनाचाहिये, जोकरीब देढकोशके फासलेपर वाकेहै वरकाना-कस्वा पेस्तर वडाथा अब करीब (७५) घरकी आवादीका रहगया, जैनश्वेतावरश्रावकोंके घरअंदाज दसपनराहकेहै, धर्मशाला यहा (२) है, एकछोटी एकवडी, दोनोंमें मिलाकर करीब (१००) आदमी-व-खूबीठहरसक्तेहै, अतराफ—मंदिरके-एक पुख्ताहाता खीचाहुवा, कारखानेमें मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर पूजारी वगेरा हमेशांकेलिये तैनातहै, और जेरनिगरानी उनपर बीजवाकेश्रावकलोगोंकी है, जोयहासे मीलभरकेफासलेपर वाके है, यात्रीकों अगरभाडे-वर्तनकी दरकारहोतो कारखानेसें मीलसकेंगे, मंदिर वरकानेका-बहुतवडा आलिशान-बावनजिनालयका-निहायतपुख्ताहै, घेराव इसका चारसोगजसे कम-न-होगा, दरवजेके-

बहार दोनोतर्फ दोवडेवडेहाथी-पथरकेवनेहुवेखडेहै दरवजेमे घुसते वायीतर्फके हाथीकेनजदीक एकशिलालेख-खडाहै जोकरीब देढ गजलंवा एकहाथचोडा-उसपरलिखाहै-संवत् (१६८६) पोषवदी अष्टमी शुक्रवारकेरोज मेदपाटके अधीशराणाजगतसिंहजीने तपगच्छाचार्य-विजयदेवसूरिके वचनसे मेलेकेदिनोंमें चाररोजका महेसूल माफकिया, पोषवदी-८-९-१०-११-तकमेला यात्रीयोंका यहां जमाहोताहै उनका मेहसूललेना छोडदिया,

दरवजेकेभीतर चौकमें एकवडाहाथी पथरकावनाहुवा ठीक-मूलनायकजीके सामने-खडाहै, मंदिरकीचारोंतर्फ दिवारमें जोजो कारीगरी किइहै लाइकतारीफकेहै, देखकर दिलनहीचाहताकि-यहांसे-वहारचलेजाय, मंदिरकेचौकमें तीनशिलालेख संवत् (१८०६) के लिखेहुवे खडे है मगरइनमें मंदिरकेवननेका कोइजिक्रनही, सीर्फ ! इनवातोंका जिक्रहै जोउसअर्सेमें यहांकेलोगोने इकरारकियाथा, जवमंदिरके रंगमंडपकेदरवजेपर पहुचोगे निहायत उमदाकारिगिरी नजरआयगी, रंगमंडपवहुतवडा-और-नवचौकीके एकखंभेपर शिलालेखलगाहुवाहै मगरजहांपर संवत् लिखाहुवारहताहै-वो-जगह टुटगइहै, वहुतगौरकेशाथदेखागयातो संवत् (१२११) लिखापाया, आगेकेहर्फभी टुटेहुवे है अछीतौरसें पढेनहीजाते. सवुतहुवामंदिर वारांसीग्यारहके पेस्तरका वनाहुवाहै, मूलनायककी मूर्त्तिके सामने और नवचौकीके खंभेकेपास एकहाथी पथरका वनाहुवा-और-उसकेउपर एकशेठशेठानीकी-मूर्त्ति जायेनशीनहै, लेखइसपरनही-मगर यहांके वाशिंदोमें यहवात मशहुरहैकि इनोने यहमंदिर तामीर करवायाथा मूलनायक तीर्थंकर पार्श्वनाथभगवानकी करीव एकहाथवडीमूर्त्ति-सयफणके निहायत खुवसुरत-[illegible] है, इसपर कोइलेखनही मगरनिशानात् [illegible]

जाते है, चारोंतर्फ़ इसके-जो-पीतलका परिकरलगाहुवाहै संवत् (१७०७) का-बनाहुवाहै, मंदिरके आलोमें-छोटेछोटे-जिनालयोमें और रंगमंडपमें कुछमूर्त्तिये करीब (२००) के-है, दर्शन करके दिलखुशहोगा-मानो! स्वर्गमें आनखडे है, खुशनसीबोने कैसेकैसे आलिशानमंदिरबनवाये है यहांपर बगीचा-एक-बडागुलजार जिसमें गुलाब-चंपा-जाइ-जुइ-चमेली-डमरा-मरुवा-वगेराकेफुल हमेशा ऊतरतेहै और देवपूजनमें चढायेजाते है, फलोमें आम-नींबु-नरंगी-अनार-केलेवगेरा यहा पैदाहोते है, बयान-वरकाणातीर्थ-खतमहुवा,—

वरकाणासें रवानाहोकर यात्री नाडोल जावेजो अठाइस कोशके फासलेपर एककस्बाहै, जैनश्वेतांबर मंदिर इसमें (६)-जिनमे तीर्थंकर पद्मप्रभुका शिखरबंद मंदिर निहायतपुराना और मूर्त्ति इसमें राजा-संप्रतिकी बनाइहुइ तख्तनशीनहै, दुसरा और तीसरा मंदिर इसीबडे मंदिरमें सामीलहै, चोथामंदिर तीर्थंकर नेमनाथजीका पांचमा शांतिनाथजीका-और-छठा तीर्थंकर पार्श्वनाथजीका बतौर चैत्यालयके बनाहुवा, शिवायइसके उपाश्रयमेंभी कइधातुकी मूर्त्तिये जायेनशीनहै. जैनश्वेतांबरश्रावकोंके घर-धर्मशाला-और-खानपानकी चीज़ेयहा सब मिलसकतीहै. बयानतीर्थ-नाडोल-खतमहुवा.

नाडोलसें रवानाहोकर नाडुलाइकस्बेकों जाना, जोकरीब (३) कोशके फासलेपर वाकेहै, श्रावकोंकेघर यहा बनीस्पतनाडोलके ज्यादह-धर्मशाला उमदा और मंदिरभी छोटेबडे मिलाकर (११) है, इनमे (२) मंदिर गावकेबहार और (९) भीतरहै, भीतरकेमंदिर बडीलागतके-पुराने और-एकएकसे आलाजने हुवेहै, एकमंदिर जो दरवाजेकेपासहै, मूलनायक तीर्थंकररिषभदेवभगवानकी मूर्त्ति इसमें निहायतखूबसुरत-तख्तनशीनहै, यहाके लोगोमें यहबातमशहूरहैकि

जैनश्वेतांबराचार्य यशोभद्रसूरि अपने मंत्रवलसे इसमंदिरकों उडाकर यहां लायेथे. जैनश्वेतांवराचार्य यशोभद्रसूरिका-और-शैवाचार्यका मंत्रविद्याकेवारेमें यहां विवाद हुवाथा. लोगोने कहा ऐसेविवादसे क्याफायदा ! कोइवात ऐसीकरजाओकि-यहांपर आपलोगोंकानाम हमेशाकेलिये वनारहे, उसवख्त जैनश्वेतावराचार्य-यशोभद्रसूरिजी यहमंदिर तीनसोकोशके फासलेपरसे-उडाकर-अपनेमंत्रवलसे यहां लायेथे और जमीनपर कायमकियाथा, शैवाचार्य अपनेमंत्रवलसे अपना शैवमंदिर उडाकरलायेथे जोदुसरीतर्फके दरवजेकेपास मौजूदहै, कुछलेखी सवुतइसवातका नहीमिलता, सीर्फ ! यहांकेलोगोंमें यहवातमशहुरहै, वयान तीर्थ नाडुलाइ खतमहुवा,—

नाडुलाइसे रवानाहोकर यात्री-घाणेराय-कस्वेकोजावे. जो पंचतीर्थीमें-चोथेदरजेपर वाकेहै, जैन-श्वेतांवर श्रावकोकेघर-यहांकरीव (२००) और (१०) जैनश्वेतांवरमंदिर वनेहुवे है दर्शनकरके दिलखुशहोगा, कस्वेघाणेरायसे करीव (१॥) कोशकेफासलेपर एकमंदिर जो मुछालामहावीरकेनामसे मशहुरहै जंगलमे वतौरदेव विमानके खडाहै, और उसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीकी अतिशय युक्त मूर्त्ति तख्तनशीनहै, रंगमंडप वडाआलिशान-और-सवकाम संगीनवनाहुवा धर्मशाला वहुतवडी-जिसमें-जाकरयात्री आराम करे. पासमें जलका हौजवनाहुवाहै, अतराफ मंदिरके झाडीझुखड -द्रख्त-और-पहाडही-पहाडनजर आते है, जंगलमें मंगल इसीका नामहै, खुशनसीवोने क्या क्या कामकरवतलायेहैकि-जिसकी तारीफ वेंमिशालहै, जिसको धर्मप्याराहै-दिलकेदलेरहै-वही ऐसेकाम करसकेगें, मूमऔर वखील जोकि-अपनी कमाइहुइ दौलतआप नहीखा सकते, उनसें काम होना मोहालहै, वयान तीर्थ घाणेराय खतमहुवा.—

घाणेरायसे रवानाहोकर यात्री सादरीगांव जावे, जो करीव चारकोशके फासलेपर वाकेहै. जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घरवहां करीव (४००) और-एक-वडाआलिशान जैन-श्वेतांवर मंदिरवनाहुवा, इसमे मूलनायक-तीर्थंकर चिंतामणि पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति करीव देढ हाथ वडीतख्तनशीनहै, इसपर लेखनही, राजासंप्रतिकी तामीरकराइहुइ मूर्त्तियोंके निशानात इसपर पायेजातेहै. गर्भद्वारकी दोनोंतर्फ जो-दो-मूर्त्ति-जायेनशीनहै उसमें वायींतर्फकी मूर्त्तिपर संवत् (१६८६) और तपगछकानाम लिखाहै, मंदिरकी-परकम्मामें दाहनीतर्फ एकदेवालयमें एकजगह एकमूर्त्तिपर संवत् (१६४४) और तपगछ-हीरविजय सूरिवगेराके नाम लिखेहै, रंगमंडप निहायतवुलंद और सवकाम पुख्ताहै, यात्री सादरीगांवके मंदिरके दर्शनकरके-तीर्थ-रानकपुरकी जियारतकों जावे, जो पंचतीर्थीके पांचवे नंवरपर और सादरीगांवसे अंदाज तीनकोश फासलेपरहै, सादरीसेरवाना होतवख्त चौकीदार मीणा-शाथलेना चाहिये, वगेरचौकीदारके रास्तेमें तकलीफ होगी. और राज्यकी तर्फसेभी सख्त मुमानीयतहै, रास्ता कठीन-पहाडोंके घेरेमें-वडेवडे झाडीझुखडको पारकरके जाना होगा, चौकीदार हरेक जगहका वाकीफ होताहै.—

जव करीव रानकपुरके पहुचोगे वीचझाडी झुखडके एक-आलिशान त्रैलोक्य दीपक-जैनश्वेतांवर मंदिर वतौर स्वर्ग विमानके दिखलाइदेगा, फौरन ! गाडीसें उतरकर मंदिरकों नमस्कार करों. और अपनी तकदीरका शुकरमनाओकि-जिसने हमकों इस जगहपर पहुचाया, इसमंदिरकी वनावट और खूबसुरति देखकर ताज्जुब करोगे, जव धरणाशाह शेठनेइसकों वनाकर तयारकरवायाथा इसकी खूबसुरति देखनेतो मालूमहोताकि-झलाझल रोशनी

देवविमानकी यहांआगईहै, और इसीलिये इसकानाम त्रैल
दीपक मंदिर कहागया, बावनजिनालयका उमदामंदिर और
लादर्जेकी कारीगरीका नमुना देखनाहो-नजरके सामने देख
चारोतर्फसे बराबर तीनतीनमंजील ऊंचा-और-चारोंतर्फके
दरवजे इसतरह बनेहुवेहै, मानो ! समवसरणका आकार
हो, पेस्तरयहा रानकपुर नामका शहर आबादथा. संवत् (१५
की सालमें कहतेहै यहांपर जैनश्वेतांबरश्रावकोंके घरअदाज(३०
थे, जब-रानकपुरकी आबादीकमहुइ-कितनेकश्रावक-सादरीमे
वसे, कइपाली-मेवाड-और-मालवेतर्फ चलेगये, दुनियाकेकारो
इसीतरहसे चलेजाते है, कभी नावगाडीपर-कभी गाडी नाव
यह सब तकदीरीमामलाहै, और पूर्वसंचितकर्मके ताल्लुकहै, श्रा
लोगही क्या ! दिगरकोमकेलोगभी रानकपुरसे रवानाहोकर
रीजगह जावसे, गरजकि-इसवख्त रानकपुरमें एकभी घर
श्वेतांबरश्रावकका नहीरहा. सीर्फ ! रानकपुरकीजगह-मंदिर-
शाला-बाग-और-पुरानेकोटके निशानात बाकीरहगये. रणाजे
बनायेहुवे मंदिरके पासजाकरदेखीतो पुरानेकोटकी दिवार
दूरतक लंबीचलीगइहै, और ऊसीके पाससे भानपुरहोकर मेव
जानेका रास्ताशुरुहै,—

मंदिरकेपासबडी आलिशानधर्मशाला बनीहुइहै यात्री इस
जाकर कयामकरे, और तीर्थकी जियारत हासिलकरे, तारीफ
हो ! ऐसे बहादूर और सखी धरणाशाहशेठकी जिसने ननाण
लाखरुपये सर्फकरके यह त्रैलोक्यदीपकमंदिर तामीरकरवाया,
पश्चिमकी-सीढी तयकरके मंदिरके रंगमंडपमें पहुचोगे, मानींद
स्वर्गलोकके नजर आयगा, छतोंमें-स्थंभोंमें-और-मेहराबोंमें
कारीगिरीकिइगइहै उसकी तारीफकरना जबानसेबाहर

किसकिसतरहके गुलदस्ते—पुतलीयें-वेल-वुटे-वगेरावनायेहैकि-जिनकोदेखकर आदमी ताज्जुवकरने लगताहै, जवदुसरे रंगमंडपमें पहुचोगे-पेस्तरकी वनीस्पत ज्यादहकारीगीरी नजरआयगी, दाहनीतर्फका रंगमंडपदेखोतो उसकी कतावजा—उससेंभी निराली है, पीछलीतर्फका रंगमंडप देखोतो औरही कताका वनाहै, छतपर वारीककाम—और पुतलीये किसकदर तमाशा कररही है जोकाविल देखनेके है, वायीतर्फका रंगमंडप—सवसे—ज्यादहखूवसुरतवनाहै, चाररंगमंडपवडे औरचार उनकेसामनेछोटे—कुल आठहुवे, और सोलहरंगमंडप चारोतर्फके कोनेमें कुल (२४) हुवे,

इसमदिरमें मूलनायक चौमुखजीकी चारमूर्त्तिये—निहायतखूवसुरत और अतिशययुक्त तख्तनशीनहै, पश्चिमतर्फजो मूर्त्ति—तख्तनशीनहै उसपरसंवत् (१४९८) लिखाहै, उत्तरतर्फकी मूर्त्तिपर संवत् (१६७९) पूर्वतर्फकीमूर्त्तिपर सवत् (१४९८) और दखन तर्फकी मूर्त्तिपरभी वहीसंवत् (१४९८) का—लेखहै. पश्चिमतर्फके मूलनायके सामने दरवजेकी दाहनीतर्फ जोदिवारमेंलगाहुवा वडा शिलालेखहै उसमें सवत् (१४९६) श्रीमेदपाट—राजाधिराजश्रीवप्प—और—श्रीगुहिलवगेराराजाओकी (४०) पीढीयोंके नाम—और फिर आगे (३९) मी—पंक्तिमे लिखाहै परमआर्हत धरणाशाह पोरवाडने यहमदिर तामीरकरवाया, (४१) मी पक्तिमेंलिखाहै राणकपुरनगरे राणाश्रीकुंभकर्ण नरेंद्रेण सुनाम्ना—निवेशितः—फिर आगे (४२) मी—पंक्तिमें लिखाहै त्रैलोक्यदीपकाभिधान—श्रीचतुर्मुखयुगादीश्वरविहारः—कारितः—इसकेआगे लिखाहै श्रीवृहत् तपागछे—श्रीजगतचद्रसूरि—श्रीदेवेंद्रसूरि आगेकुछखडितहोगयाहै पढा नहीजाता, मगरअखीरकी पक्तियोंमें तपगछके आचार्यमाहाराजने प्रतिष्ठाकिइ लिखाहै, जवराज्यका उल्थाहुवाथा—किसीने प्रतिष्ठाचार्यकानाम तोडदियाहै,

देवविमानकी यहांआगइहै, और इसीलिये इसकानाम त्रैलोक्य दीपक मंदिर कहागया, बावनजिनालयका उमदामंदिर और आलादर्जेकी कारीगरीका नमुना देखनाहो-नजरके सामने देखलो. चारोतर्फसे बराबर तीनतीनमंजील ऊंचा-और-चारोतर्फके चार दरवजे इसतरह बनेहुवेहै, मानो ! समवसरणका आकार बना हो, पेस्तरयहां रानकपुर नामका शहर आबादथा. संवत् (१५००) की सालमें कहतेहै यहांपर जैनश्वेतांबरश्रावकोंके घरअंदाज(३०००) थे, जब-रानकपुरकी आबादीकमहुइ-कितनेकश्रावक-सादरीमेआन बसे, कइपाली-मेवाड-और-मालवेतर्फ चलेगये, दुनियाकेकारोबार इसीतरहसे चलेजाते है, कभी नावगाडीपर-कभी गाडी नावपर-यह सब तकदीरीमामलाहै, और पूर्वसंचितकर्मके ताल्लुकहै, श्रावक लोगही क्या ! दिगरकोंमकेलोगभी रानकपुरसे रवानाहोकर दुसरीजगह जाबसे, गरजकि-इसवख्त रानकपुरमें एकभी घर जैनश्वेतांबरश्रावकका नहीरहा. सीर्फ ! रानकपुरकीजगह-मंदिर-धर्मशाला-बाग-और-पुरानेकोटके निशानात बाकीरहगये. रांणाजीके बनायेहुवे मंदिरके पासजाकरदेखोतो पुरानेकोटकी दिवार बही दूरतक लंबीचलीगइहै, और ऊसीके पाससे भानपुरहोकर मेवाड जानेका रास्ताशुरुहै,—

मंदिरकेपासवडी आलिशानधर्मशाला बनीहुइहै यात्री इसमें जाकर क्यामकरे, और तीर्थकी जियारत हासिलकरे, तारीफकरो ! ऐसे बहादूर और सखी धरणाशाहशेठकी जिसने नवाणवे लाखरुपये सर्फकरके यह त्रैलोक्यदीपकमंदिर तामीरकरवाया, जब पश्चिमकी-सीढी तयकरके मंदिरके रंगमंडपमें पहुचोगे, मानीद एक स्वर्गलोकके नजर आयगा, छतोमें-खंभोमें-और-मेहराबोंमें जोजो कारीगिरीकिइगइहै ऊसकी तारीफकरना जबानसेबहारहै. छतमें

(११) बुधवासरे-राजाश्री कर्णवीजयजित्समये भट्टारक श्रीवीजयदेवसूर्युपदेशेन-श्रीआदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं-प-श्री वेलागणि-पं-श्रीजयविजयगणि-पं-श्रीतेजहंसगताभिः-ओशवालज्ञाति--कोठारी केशवभार्या-कपूरदे-तत्पुत्रकोठारी इसकेआगेके हर्फ घीसगयेहै खुलतेनही. मगर मतलब सबका यहीनिकलताहैकि-संवत सोलहसो उन्नासीमे-राजाकर्ण विजयजीके वख्तमें-विजयदेवसूरिके उपदेशसे. कोठारीकेशवजीकी भार्या कपुरदेके वेटेने यह मूर्त्तिवनवाइ, धरणा शाहपोरवाडके बाद-यह मूर्त्ति बनाइ गइहै ऐसाजानना, एक जिनालयमे तीर्थअष्टापदका-और-तीर्थनंदीश्वरद्वीपका आकार बनाहुवाहै, मगरलेख इसपर कोइनही,

मूलनायक तीर्थंकर रिषभदेवभगवानके सामने-एकहाथीपर मरूदेवाजीकी मूर्त्ति जायेनशीनहै उसपर सवत् (१७२८) का-लेखहै, और छोटेछोटे जिनालयोंका जिक्र खतमहुवा, मूलनायक भगवानकी दाहनीतर्फ-रगमंडपोकी बाजु एक रायणकाद्रख्त-और-उसकेनीचे तीर्थंकर रिषभदेवजीके कदम जायेनशीनहै, इसत्रैलोक्यदीपक मदिरमें-(८४) तलघर बनेहुवे और उनका रास्ता-पश्चिमतर्फके दरवजेमे घुसते जो दोनों तर्फकी दिवारमें-सिला-लगीहुइ वहहै उधरसेहै, शेठ धरणाशाह पोरवाडकी तारीफकरोकि-जिसने-ऐसेऐसेकाम-अपनी दिलोजान-व-मालसें किये, श्रावकहो-तो-ऐसेहो,

इस मदिरमे (४२) पाट पथरके टुटगयेहै जो काबिल नये बनवानेकै, अगर आजकल्मे बनजायतो वहतरहै वरना ! ज्यादह सर्फा पडेगा, मूलनायक महाराजकी दाहनी तर्फकी परकम्मामें इशानकोंन तर्फकी दिवार झुकगइहै, अगरइसकी मरम्मत [illegible] तो यहदिवार गिरजायगी, जोकाम अव एकहजार [illegible]

मंदिरकी दुसरीमंजीलपरजानेसे औरही खुबी नजरआतीहै, हुबहु स्वर्गविमानका नकशादेखलो.-मूलनायक यहांभी चौमुखजी महाराजकी चारमूर्त्तिये जायेनशीनहै, जिनमें पश्चिमतर्फकी मूर्त्तिपर संवत् (१५०७) लिखाहै. उत्तरतर्फकी मूर्त्तिपर (१५०८)-पूरव तर्फकी मूर्त्तिपर (१५५१) और दखनतर्फकी मूर्त्तिपर सवत् (१५०६) लिखाहै. तीसरीमंजीलपर जाकरदेखो औरही उमदारव-न्नक दिखाइदेती है, मंदिरका बुलंदशिखर-और चौरासीजिनाल-योके छोटेछोटे-(८४) शिखरदेखकर स्वर्गविमान मालूमहोताहै, असलमें यह त्रैलोक्यदीपकमंदिर-नलिनीगुल्म-विमानका-नकशाहै, तीसरीमंजीलपरभी मूलनायक चौमुखजीहीकी मूर्त्तिये जायेनशीन है. और ऊनमें पश्चिमतर्फकी मूर्त्तिपर संवत् (१५११) का-लेख है, तारीफकरो धरणाशाहपोरवाडकी-जिनोने-ऐसा त्रैलोक्यदी-पक-युगादीश्वरदेवका मंदिर बनवाया, जिसकीसानी दुसरा कोइ नजर नहीआता,

परकम्मामें (८४) जिनालय-और-मूलनायककी दाहनी तर्फ-तीर्थ-समेतशिखरका आकार--बनाहुवाहै, उसपर संवत् (१५४८)--लिखाहै, एकजगह सवत् (१५५६)--एकजगह (१५५०) और एकजगह सवत् (१५४७) लिखाहै, मेरुपर्वतके आकारपर सवत् (१५००) का लिखहै, इसके आगे एकाजिनाल-यमें तीर्थंकर महावीरस्वामीकी साढे तीनहाथडी मूर्त्ति तख्तनशीनहै, उसपर लिखाहै सवत् (१६५१) वर्षे-माघसुदी (१०) मीके रौज यह बनाइगइ. छोटे जिनालयोमें सबजगह बहुतकरके राजा संप्रतिकी बनाइ मूर्त्तियेही जायेनशीनहै. वायीतर्फ परकम्माकेएक जिनालयमें-तीर्थंकर रिषभदेवभगवान्की साढेतीनहाथ बडी-मूर्त्ति जायेनशीनहै, और उसपर लिखाहै सवत् (१६७०)-वैशाखसुदी

लिया, मंदिरकी दुसरीमंजीलपर पूर्वतर्फके रगमंडपकी पीछलीवाजु एकपाटपर-एकशिलालेखमे लिखाहै संवत् (१६४७) वर्षे फाल्गुनशुक्लपक्षे पंचम्यातिथौ-गुरुवासरे श्रीतपागछाधिराज बादशाह अखबरदत्त जगद्गुरू विरूद धारक भट्टारक श्रीश्रीश्रीहीरविजयसूरीणा उपदेशेन चतुर्मुख श्रीधरणविहारे माग्वाटज्ञातीय सुश्रावकशाह खेतानायकेन वर्द्धापुत्र यशवंतादि कुटुंबयुतेन-अष्टचत्वारिंशत् ममाणानि-(४८) सुवर्णनाणकानि-पूर्वदिक्सत्क मतोलीनिमित्तं-अहमदावाद पार्श्ववर्त्ति-सापुरतः श्रीरस्तु,-

इसका माइना यहहैकि-संवत् (१६४७) फाल्गुनसुदी पचमीगुरुवारकेरौज-तपगछाधिराज-आचार्य श्रीहीरविजयसूरिके उपदेशसे पोरवाड खेतानायक श्रावकने धरणाशाहशेठकेमदिरमें पूर्व तर्फके दरवजेकी मरम्मतकेलिये (४८) सोनामहोरे भेटकिइ, धरणाशाहशेठ तपगछके श्रावकथे, मतिष्ठाभी इसमदिरकी तपगछके आचार्यनेकिइ उपरलिखचुकेहै, खरतरगछके श्रीयुतसमयसुंदर-उपाध्यायने जो रानकपुरका स्तवन सवत् (१६७६) में वनायाहै उसकी पाचवी गाथामें वयानहै कि-"खरतर वसही खातसुरेलाल"-वह-इसवडे मदिरकी वहार जोछोटामदिर वनाहै उसकीबात है, रानकपुरके मूलमदिरकी तवारिख खतमहुइ, अव वहारके (२) मदिरोंका वयानसुनिये ! सामने धर्मशालाके जो-तीर्थंकर पार्श्वनाथजीका मदिरहै उसकी दिवारोंपर तरहतरहकी कारीगरी-वेलबुटे और पुतलीये निहायत खुवसुरत वनीहुइ अतराफ मदिरके पुख्ता कोट खींचाहुवा और सवकाम पायदारहै, इसमें मूलनायक-तीर्थंकरपार्श्वनाथ भगवानकी शामरग मूर्त्ति करीव सवाहाथ वडी तख्तनशीनहै, दुसरा मदिर तीर्थंकर नेमनाथजीका-[illegible]
नेमनाथ महाराजकी शामरग मूर्त्तिकरीव सवाहाथ

लताहै-बादमें-वह-लाखरूपये-खर्चतेभी-न-निकलेगा, दाहनीत-र्फके रंगमंडपकी छतसेंअय्याम वारीशमेंपानी गिरताहै उसकीभी मरम्मत होना दरकारहै, आजकल जोजो श्रावक-जातेहै उपरसे देखभालकर चलेआतेहै, मगर यह खयालनही करतेकि-हमारे बुजुर्गोके बनायेहुवेमंदिरका क्याहालहै, ?-जिसको बनेआज (४००) वर्षहोगये मरम्मतहोना दरकारहै-या-नही ? लाजिमहै इसमंदिर-की-रकम चाहेजहां-जमाहो-मरम्मतमें लगादेनाचाहिये,

धरणाशाहशेठके खानदानमें ऊनकेभाइबेटे कस्बे घाणेरायमें अब-भी मौजूदहै, हरसालजबचैतवदी (१०) मी-के-रौज तीर्थरानकपुरमें यात्रीयोंका मेलाभरताहै मंदिरकेशिखरपर उनहीकीतर्फसें बनवाइहुइ धजा चढाइजाती है, अंगी-पूजाभी उसरौजमंदिरमें ऊनहीकीतर्फसें होती है. संवत् (१९६०) चैतवदी (१०) मीके रौज हमइसती-र्थके मेलेमें मौजूदथे, यात्रीयोंकामेला बहुतभराथा धरणाशाहशेठके खानदानकेलोग-घाणेरायकस्बेसे आयेथे औरशिखरपर ध्वजाच-ढाइथी. शाबाशहै ! ऐसे सखी-और-इकबालमदके भाइबेटोंको !! जो-अबतक-अपनेबुजुर्गोके नामसें-इतनाभीधर्मका कामचलाते है, कुल्लधर्मशास्त्रोंकी यहीनसीयतहैकि--बेटाबेटी-रिस्तेदार-औरत-चांदी-सोना-और-जवाहिरात कोइशाथ नहीजायगा, सीर्फ ! धर्महीशाथजायगा,

मेलेकेरौज यहांबहुतलोग जमाहोते है, कभी पाचहजार-और कभीसातहजारतक यात्रीयहांआते है, जलसाभी अछाहोताहै, दुकाने हरेककिसमकी लगती है, मंदिरमें पूजन-गीतनृत्य-अंगी-रौशनी वगेराअजहदजलसा होताहै, जहांतकबनपडे उसरौजकी जियारत जरुरकरनाचाहिये, हमने शंगतरासोसे रानकपुरकमादिरका-नकशा

किराया आठआनेलगेगे,-टेशनकेसामने धर्मशाला वडीपुरतावनी हुइहै, एककोठरीमें डेहराकरके देवदर्शनको जावे,-

मारवाडकी-दशीरियासतोंमें-मशहूर-राजधानी-जोधपुर एक गुलजार शहरहै, सन (१४५९) इस्वीमें महाराजजोधरावजीने इसकों वसाया, जोधपुरकी मर्दुमशुमारी (६१८४९) मनुष्योंकी-जोधपुरराज्यकी जमीन रवन्नकलिये और जगहजगह पहाडीयोंका शिलशिला जारीहै, खासजोधपुरभी पहाडीयोंकी दखनतर्फ करीव (६) मीलके घेरेमें आवादहै, वाजरी-जवार-और-मोंठ इस राज्यमें ज्यादहपैदा होतेहै, जोधपुरके राजासाहव सूर्यवंशीराठोड राजपुतोमेसेंहै, अतराफजोधपुरके पकाकोटखीचाहुवा-सातफाटक और-वडेवडेआलिशानमकान उमदापथरोंके वनेहुवे है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकेघर यहाकरीव (६००) और (८) जैनश्वेतांबरमदिर-जिनमे (३) धानमडीमें-(१) कोलडीमें (१) गुदीकेमहोलेमें (२) शीगीयोके चौकमें और (२) दफतरीयोंकेवासमें-नागोरी दरवजेके वहार-मुताकुंदनमलजीका तामीरकिया हुवा शिखरवद मदिर-मूर्त्ति-इसमें तीर्थकरपार्श्वनाथजीकी करीवपौनहाथ वडी तख्तनशीनहै, एकधर्मशाला-और-पासमें वगीचा-दखकर दिल खुशहोगा,

जोधपुरसें देढकोशके फासले गुरांकेतालावपर (२) मदिर और एकधर्मशाला-वनीहुइहै, वडेमदिरमें तीर्थकरपार्श्वनाथजीकी सफेदरंगमूर्त्ति-मयधरणेंद्र पदमावतीके करीव (१) फुटवडी तख्तनशीनहै, ऐसीमूर्त्ति दुसरीजगह वहुतकमदेखीजाती है, मदिरके पीछाडी एकतालाव-और-नजदीकमें एकवगीचा-जिसमें-अनार-नींवु-गुलाव-चमेली-वगेराके द्रख्तखडे है, देखकरदिल तरहोगा, जोधपुरसे (३) कोश उत्तरतर्फ मडावरगांव-जो-जोधपुरकेपेस्तर

है, कारीगरी इस मंदिरमें कमहै, कोट बेशक ! पुख्ता खीचाहुवा -संगीनहै,-

नेमनाथजीके मंदिरसे आगेजो सूर्यमंदिरहै-वो-राणाजीका तामीरकरवाया हुवाहै-जैनमंदिर यहां कुल्ल तीनहै, एकवडा और दो-छोटे, धर्मशाला यहांपर (२) एकवडी दुसरी छोटी, दोनोंमें करीब (२०००) यात्री-आरामकरसकते है, बावडी मीठेजलकी और एकबाग यहांपरमौजूदहै, जिसमें मोगरा-जाई-वगेराकेफुल हमेशां उतरते हैं और पूजनमें चढायेजाते है,-

(तवारिख पंचतीर्थी-खतमहुइ,-)

रानकपुरसे वापिस रानीटेशनआना, और रानीटेशनसे रैलमे सवारहोकर-जावाली--सोमेसर-भीनवालियां होतेहुवे मारवाड जंकशनजाना, और वहां उतरकर पाली-जोधपुरजानेवाली रैलमें सवारहोकर-बोमदराहोते पालीटेशनजाना, रैलकिराया रानीसे यहांतक दसआने लगतेहै, अगर यात्रीको फुरसतहो-एकरौज यहां कयाम करके यहांके जैन मंदिरोकेभी दर्शनकरे पाली अछा कस्बाहै मर्दुमशुमारी इसकी (१७१५०) मनुष्योंकी और बहुत जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर यहा है, वडेवडे जैनश्वेतांवर मंदिर-जिनमें-नवलखा पार्श्वनाथजीका मंदिर नामीग्रामीहै, जैनश्वेतांवर मुनियोंको ठहरनेके कइ मकान यहां बनेहुवेहै, यात्रीयोके लिये धर्मशाला मौजुदहै, इसमें डहेरा करके जिन मंदिरोके दर्शन करे, दुसरेरोज वापीस पालीटेशनको आवे औररैलमें सवारहोकर केरला-रोहात *लुनी-सालावासहोते जोधपुर आवे, पालीसे जोधपुरतक रैल

* लुनीसें सिंधहैदराबादलाइनमें बालोतरा टेशनजाना, वहां-नाकोडा-पार्श्वनाथका तीर्थ है,

गरी जोधपुरसे खुश्कीरास्ते (१६) कोशकेफासलेपर वाकेहै, स-वारीकेलिये वेलगाडीही कामदेगी और किराया जानेआनेका क-रीव (६) रूपयेलगेगे, रास्तेमें वालुरेत ज्यादहहोनेकी वजहसें इका-वगी काम-न-देयगे, शिवाय आक-वबुल-खेजडे-केर-और-नींवके दुसरेपेंड रास्तेमे न देखोगे. रास्तेमें आठकोश जानेपर एकम-थाणीयागाव मिलेगा. रातको-वहा कयामकरना और दुसरेरौज ओशियानगरीको जाना,-

☞ [तवारिख-ओशियानगरी,]

जव खास ओशियानगरी पहोचोगे करीव (५००) घरोकी आवादीका एकछोटासाकस्वा नजरआयगा, जो-रवन्नक इस नग-रीकी पेस्तरथी अवकहा है, ? पुरानेमकानोके खडहेर देखकर मा-लूमहोताहै पेस्तरयहापर वडेवडेदौलतमदवाशिदेथे,-मथाणियागांव-जोपेस्तर (८) कोशके फासलेपर लिखचुकेहै वहां ओशियानग-रीकी धानमंडीथी, और जो तीवरीगाव मथाणियाकी वाजुपरहै वहां ओशियानगरीका तेलीवाडाथा, तीवरीके आगे-चारकोशपर जो घटीयालागावहै एक शिलालेख वहापर जमीनमें आधागडा हुवा मौजूदहै उसपर लिखाहै यहा ओशियानगरीका सदर दरव-जाथा, ओशियानगरीका असलनाम संस्कृत जवानमें उपकेश नगरीथा, प्राकृतजवानमें उवयेश-और-लोकभापामें ओशिया नगरी मशहुरहोगया, तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाणहोनेके वाद (७०) वर्प पीछे जैनाचार्य-रत्नप्रभसूरि यहापधारेथे, जो चौदहपूरवके-पाठी-श्रुतकेवली तरहतरहकी विद्यालब्धिके भडार-और-तीर्थंकर पार्श्वनाथजीके शासनमेसे एक थे, और तीर्थंकर महावीरस्वामीके शासनमें दाखिल होचुकेथे, क्यौंकि-जवसें-महाराज केशीकुमार-जीकी-और-गौतम स्वामीकी चार-और-पांचमहाव्रतके उपर वहे-

मुल्कमारवाडकी राजधानीथा-आजकल छोटासाकस्वा रहगया, पेस्तर इसमेंबडी आवादीथी, किलामंडोर-या-गढमंडोर इसीकों कहते है, करीबपांचसो वर्षपेस्तर इसकावडानामथा, दरवजा वडा संगीन-बागवगीचे-द्रख्तोकी चकाचक-आम-अमरुद-अनार-नारंगी-केले-शरीफे-द्राक्ष-वगेराकेपेंड यहां कसरतसेखडे है, जैन श्वेतांवर श्रावकोकेघर पेस्तरयहां बहुतथे मगर आजवरायेनामकुछ एकघर रहगया मंदिरजैनश्वेतांवर (२) एकवडा,-एक छोटा--वडेमंदिरमें तीर्थंकर-पार्श्वनाथजीकी वादामीरंगमूर्त्ति करीव देढ-हाथवडी तख्तनशीनहै, और इसपरलिखाहै संवत् (१२२३) में-यह प्रतिष्ठितकिइगइ, दाहनीतर्फ तीर्थंकरधर्मनाथजीकी-और-बायीतर्फ चंद्रप्रभुजीकी सफेदमूर्त्ति-एकएकहाथवडी जायेनशीनहै, और दोनोंपर लिखाहै संवत् (१२२३) में यहप्रतिष्ठित किइगइ, दुसरामंदिर छोटा-और-वादामीरंग मूर्त्ति सवाहाथवडी इसमें तख्तनशीन है,

जोधपुरमें इका वगीवगेरा सवारी तयार मीलतीहै मंडोर जानेकेलिये-सडक पकी वनीहुइ यात्री शौखसें जावे और मंदिरके दर्शनकरे, जोधपुरसें (६) मीलपर और मंडावरके रास्तेसें वाइतर्फ-वालसमन तालाव-निहायत पाकजलसे भराहुवा काबिल देखनेकी जगहहै, पचासफुट उंडाजल-ठंडीठंडीहवा-दोनोतर्फ पके महलात-और-घाटपथरोका वडीपुख्तगीके शाथ वनाहुवा देखकर दिल-तर-व-ताजाहोगा, पासमे एक वगीचा-अनार-नरंगी-वगेराकेरंगवरंगद्रख्त और सब्जी-आखोकों तरी देरहीहै, जोधपुर शहरमें गुलावसागर-आनासागर तालाव वेंशक ! काबिल देखनेकेहै मगर इसकीरवलकों कोइनहीपाता, जोधपुरके जैनमंदिरोंके दर्शनकरके यात्री ओशियानगरी जानेकी तयारीकरे, ओशियान

वे-ओशवालकहलाये ऐसाजानना, ओशियानगरीसे रवानाहोकर जब (१८) वर्षकेवाद रत्नप्रभसूरि-लखीजगल नामकेशहरमें गयेथे वहां (१००००) शख्शोकोंउनोने तालीमधर्मकी देकर जैनीकिये थे, जोलोगकहते है, महाराजरत्नप्रभसूरि तीर्थंकरमहावीरस्वामीके बाद (२२२) वर्षपीछेहुवे, विना तलाशकिये कहते है, तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके वाद-(५२) वर्षपीछें महाराजरत्नप्रभसूरिको-आचार्यपदवी मीली, और (१८) वर्षकेवाद-वे-ओशियानगरीमें आये यहीबात सच मालूमहोती है,

संवत् (१२२८) मे जब कुमारपाल भूपाल प्रतिबोधक-हेमचद्राचार्य-मुल्क गुजरातमें हुवे उनोनेभी वहुतसोंकों जैनवनायेहै, श्रीयुत-जिनदत्तसूरिजीनेभी वहुतसे जैनीकिये, वादउनकेश्रीयुत-वर्द्धमानसूरिजीने कइयोंकों तालीमधर्मकी देकर जैनीकिये, सवत् (१६४०) मे जब एहदसलतनत-वादशाह-अखवरकी जारीथी आचार्य हीरविजयसूरिनेभी वहुतोंकों अपने धर्मोपदेशसे जैनवनाये, इसवख्त हिंदकेतमाम मुल्कोमें ओशवाल लोग फैले हुवेहै, ओशवालोमें कइगोतहै, मुल्कगुजरातमें गोतकी चर्चा-कमरही, दखनमेंभी कमहै, मुल्कपंजाबमेभी कम-सीर्फ ! मारवाड-और पूरवमें-गोतकी चर्चा जारीहै, जैसे कोठारी-भडारी-पारख-सुता-गाधी-कोचर-शींगी-भणसाली-नवलखा-सुराणा-कासटीया-ढढा डाघा-भडकतीया-लुणीया-गोलेछा-सचेती-वाठिया-दुगड-दुघेडिया-नाहर-सुणोत-वगेरा वगेरा, कइ मशहूरहै, कइ-लुप्तहोगये,-

ओशियानगरीमे तीर्थंकर महावीरस्वामीका-मंदिर-जो-अब-मौजूदहै, संवत् (२०३३) मे-इसकीमरम्मत किइगइ. और मूर्त्ति तीर्थंकर महावीरस्वामीकी दुसरी पधराइ गइ, जोकि-राजासंप्रतिकी बनाइहुइहै-और-अबभी मौजूदहै, रगमडपमें दोनोंतर्फ ती-

सहुइ तवसे–वे–चारमहाव्रतकी जगह पांचमहाव्रत कुवुलकरचुकेथे,–महाराजरत्नप्रभसूरिजी उनहीसमुदायमेंसेंथे,–जव–व–ओशियानगरीमें तशरीफ लाये ओशियानगरी खुवतरक्कीपरथी, औरउसवख्त इसकी मर्दुमशुमारी लाखोआदमीयोंकीथी. साहुकारोंकी दुकानपर सोना चांदी–और-गंगंजलगतेथे-और कोटीध्वजवाशिंदोसे यहनगरी सरगर्मथी, राजासाहव–उपलदेव–परमार यहां अमलदारी करतेथे, और लोग अमनचैनमेंथे, महाराज रत्नप्रभसूरिजीने उससालकी वारीश ओशियानगरीमे गुजारी, उनकी धर्मतालीमसे–महाराज–उपलदेवपरमार जैनधर्मपर एतकातलाये, और ओशियानगरीके (३८४०००) शख्शोने जैनधर्म मजूरकिया, रत्नप्रभसूरिजीने अछेवख्तपर उनको नमस्कारमंत्रदिया, और–हिदायतकिइकि–अगर तुम-इससचेधर्मपर पावदरहोगे–तुमारा इसलोक परलोकमेंभलाहोगा, ओशियानगरीके वाशिदेहोनेसे इनकानाम ओशवालकहलाया, जैनधर्म–तीर्थंकर रिपभदेवभगवानके वख्तसे चलाआताहै, इस अवसर्पिणीकालमें अवल तीर्थंकर रिपभदेवहुवे–रिपभदेवकेवाद तीर्थंकरअजितनाथ–इसीतरह चौइसतीर्थंकर होचुके है, क्षत्रीय–ब्राह्मण वैश्य–और–शुद्र–ये–चारफिरके हमेशांसे चलेआतेहै उनमेंसे अखीरके शुद्रफिरकेको छोडकर वाकीके तीनोफिरकोमे जैनधर्मपालनेवाले लोग पेस्तरसें चलेआतेहै, चक्रवर्ती–वासुदेव–प्रतिवासुदेव–मांडलीक–और–छत्रपतिवगेरा वडेवडेराजे जैनमजहवमें होगये अखीरके तीर्थंकरमहावीरस्वामीके वाद (७०) वर्षपीछे जव–रत्नप्रभसूरिजीने ओशवाल–कायमकिये–तवसे–ओशवालनाम ज्यादहमशहूर हुवा, जोलोगकहतेहै–रत्नप्रभसूरिजीने–ओशियानगरीके शुद्रलोगोंकोंभी–सामीलकरालियेथे यहवात महेजगलतहै, क्षत्रीय–ब्राह्मण–और वैश्य–इनतीनोंफिरकेमेंसें जिनाजिनोनेजैनधर्म इख्तियारकिया

देखकर अंदाजकियाजाताहै बडेबडेमोतवीर और मालदारशख्श यहांरहतेथे, सलतनतके रदवदलमें कइमंदिर बरबादहुवे,-और-कइतोडेगये, मगर यह-तीर्थंकरमहावीरस्वामीका मंदिर ऐसीघडीमें बनायाथाकि-टुटनेपरभी वैसाही बनारहा, और मरम्मतहोनेपर सुधरगया, इसवख्त ओशियानगरीमें कोइजैनश्वेतांवर श्रावकनही, खानपानकी चीजे यहा सब मिलसकती है छोटासा बाजार और पचाससाठ दुकाने आबाद है, जोचाहोसो चीज दस्तयाबहोगी, अलबते! शहर जैसी चीजतो कहासेमीलेगी मगर मामुलीचीजे खानपानकी सबहाजिरहै, देवीजीकेमंदिरकी पीछाडी एकउपाश्रय जैनश्वेतांवर मुनियोंके ठहरनेका विरानपडाहै, उसके एक थंभेपर शिलालेखहैकि-संवत् (१२४५) फाल्गुणशुक्ल (५) अद्य-श्रीमहावीर रथशाला निमितं पाल्हियाधित देवचंद्रवधू-यशोधरभार्यया-संपूर्णश्राविकया-श्रेयोर्थं गृहदत्तं, मतलब इसका यहहुवाकि-तीर्थंकर महावीर स्वामीकी रथशालाके लिये देवचद्रजीकी औरत-यशोधरा श्राविकाने-यहघर-धर्मार्थदिया,

ओशियानगरीकी पूर्वतर्फ आधामीलके फासले एकछोटी पहाडीपर जमीनमें आधागडाहुवा एकथंभाहै उसपर एकचरणपादुका और शिलालेख मौजूदहै, उसमें लिखाहै संवत् (१२४५) माघ कृष्न (१४) शनिवासरे श्रीमज्जिनभद्रोपाध्यायशिष्यैः-श्रीकनकप्रभमहर्षिः कायोत्सर्गः कृतः-(यानी) संवत् (१२४५) माघवदी (१४) शनिवारके रोज श्रीमान्-जिनभद्र-उपाध्यायकेचेले-श्रीकनकप्रभमहर्षिने यहापर अपने देहका त्यागकिया, तीर्थओशिया नगरीकी देखरेख पोकरन फलौदीके जैनश्वेतांवर लोग रखतेहै, मंदिरकेपास कारखाना बनाहुवाहै, जिसमें मुनिम-गुमास्ते-नोकर चाकर-पूजारी हमेशांकेलिये तैनातहै, कोइयात्री यह। ।धार

र्थंकर रिषभदेव भगवानकी मूर्त्तिये दोदोहाथवडी राजासम
तामीर किइहुइ जायेनशीनहै, यहमूर्त्तियेभी संवत् (१०३३
जबकि–मंदिरका जीर्णोद्धार हुवाथा वेठाइगइहै, मंदिरकी परक
बावन जिनालयका हकवनाहुवाहै, मगर इसवख्त (४) जि
योंमे मूर्त्ति बाकीरहगइ. तीनाजिनालय बिल्कुल खालीपडेहै,
रकेसामने निहायतपुख्ता सभा मंडप बनाहुवा और उस
वारमें डेढहाथलंबा–सवाहाथचौडा–शाहरंगपथरपर एक शिल
लगाहै, और उसमेंलिखाहै संवत् (१०३३) में–यहलेख
लगायागया, सबमीलकर पंक्ति (२८) है और उसमें ती
रिषभदेव और महावीर स्वामीकी तारीफबयान किइगइहै,
परिहार वंशका जिक्र–और–वत्सराजाका नाम–जिसने ए
ओशियानगरीको–वडीआफतसे बचाइथी, दिगर मतलब ह
घीसजानेकी वजहसे पढानहीजाता, वडीमुश्किलसें इतनापढा
जो उपर दर्जकरचुके,

मंदिरकी मेहराबपर बायीतर्फकेखंभेमें लिखाहै संवत् (१०
आशाढसुदीदसमी—आदित्यवार स्वातिनक्षत्रकेरोज इसतौर
प्रतिष्टा किइगइ, तौरण पथरकाबनाहुवा और उसपर आठपद
सन जिनमूर्त्ति–चारकायोत्सर्ग ध्यानमय–और फिर चारपद
सन इसतरहकुल्ल (३२) मूर्त्तियें बनीहुइहै, मंदिरकी शिल्पकारी
देखकर अछेअछे शंगतराशभी तारीफकरते है, शिखर इसकदर
मदा बनाहै जो दुसरीजगह हर्गिज ! न–देखोंगे, जमानेहालमें
म्मत मंदिरकी चलरही है, रंगमंडपकाफर्सकाले औरसफेद शगम
रका इसकदर उमदाबनाहै गोया ! एकगालिचा बिछादियाह
पुरानाटुटीहुई मूर्त्तियोंके ऊपर जहांकही जोडलगायाहै पुरानी औ
नयीकारीकाफर्क साफ नजरआताहै, जोकोइश्रावक तीर्थोंमें दौल
करना। ऐसेतीर्थोंमेंकरे, यहांपरपुरानेमंदिर और मकाना

☞ [बयान-शहर अजमेर,]

ओशियानगरीकी जियारतकरके-यात्री-उसीरास्ते वापिस जोधपुर आवे, जोधपुरसे एकरैललाइन मेरटारोडगइहै जहांकि-फलवर्द्धी-पार्श्वनाथकातीर्थ है, मुल्कमारवाड जानेवालोको-यहला-इनमुफीदहै, मगर जो तमामजैनश्वेतावर तीर्थकी जियारतकों जाना चाहते है-वे-जोधपुरसे रैलमेंसवारहोकर पालीटेशनहोते मारवाड जंकशनकों वापिसआवे, और वहासे अजमेर जानेवालीरैलमें स-वारहोवे, मारवाडजंकशनसें आगे टेशनधारेश्वर-सोजतरोड-चंदा-वल-शुरीया-हरीपुर--वार-सेंदरा-वियावर-खेरवा-मंगलीयावास-सरधना-और-आगे अजमेर मिलेगा रैलकिराया दसआने लगेंगा अजमेरशहर वडागुलजारहै, टेशनपर वडीरवन्नक-बाजार लबाचो-डा-और हरजगह सडकेंवनीहुइहै,-देहलीदरवजा-आगरादरवजा-उसरीदरवजा-और-मदारदरवजा-ये-चारदरवजे ज्यादह मशहू-रहै, पुतलीघर-कचहरीयां-और-कइ कारखाने यहा वनेहुवेहै, महोले लाखण कोठरीमें-जैनश्वेतावर श्रावकोंकी आवादी-और-दो-जैनश्वेतांवर मंदिर वडीलागतकेहै, वडेवडे-आलिशान मकान-हरजगह पानीका नल-और-रातकों सडकोंपर लालटेनोंकी रोश-नीहोतीहै,-तारागढकी पश्चिमघाटी तर्फ पुराना अजमेर अवभी म-शहूरहै, जहाकि-चोहानराजाओंके मेहलातथे, अजमेरसें रवाना होकर यात्री-चितोडगढकों-जावे, और नसीरावाद-चांदरवाडा-सिंगावल-वरल-रुपाहेली-सारसेरी-लाविया-मांडल-भिलवाडा--हमीरगढ-गंगरोर-चंदेरिया-होते-चितोडगढ टेशनउतरे,-

☞ [तवारिख-चितोडगढ]

अजमेरसें (११६) मील दखनकीतर्फ-चितोडगढ पुराना शहरहै, पेस्तर वडाआवादथा-अवभी रैलका टेशन होनेसें तरकी

तेसें कुछरकम देनाचाहे खुशीसेदेवे, छपीहुइ रसीद उसकी एवजमें मिलतीहै, वर्तन-विछौना वगेराकी दरकारहो-कारखानेसे मीलसकेगा, धर्मशाला एक-जिसमें (६) कोठरी और रसोइका मकान अलग वनाहुवाहै, एककोठारी हीराचंदजीसचेती-साकीन अजमेरकी-एकफलौदीवालोकी-और-रसोइकी जगह-सुरतवालोंकी वनाइहुइहै, मंदिरकी वायव्यकोनमें उपाश्रयभी पुख्ता वनाहुवा-मगर खालीपडाहै,-एकदिन-वोथा-जो-यहां महाराज रत्नप्रभसूरि जैसे प्रभाविक-जैनाचार्य-कदम रखतेथे-आज-न-कोइ आचार्य है-न-मुनिहै, उपाश्रयके सामने-एकधर्मशाला वनाइजायतो-यात्रीयोंको आरामरहेगा-और-मंदिरकेकोटकी हिफाजतहोगी, ओशियानगरीके मंदिरमे (१९) मूर्त्तिये ऐसी मौजूदहै-जोकोइश्रावक खर्चादेकर अपने शहरमें मंगानाचाहेतो-मीलसकती है, और उसका दियाहुवा खर्चा-ओशियानगरीकेमंदिरमे वतौर जीर्णोद्धारके लगायाजायगा, तीनमूर्त्तियेवडी-वाकी छोटी है, ओशियानगरीकामंदिर वहुतवडाआलिशानथा, मगर दिन-व-दिन चारोतर्फसें वालुरेतवढ जानेसेअवलदरवजेकी सीढीयां-विल्कुलजमीनमें डटगइहै, हरसाल फाल्गुनसुदी (३) केरोज यहांपर यात्रीयोंका मेलाभरताहै, पोकरण फलौदीवगेराके श्रावकलोग यहांआते है और मंदिरकेशिखरपर धजा चढाइजाती है,-हरशख्शको ऐसेतीर्थकी जियारतकरनाचाहिये-ओशियानगरीमें खतपहुचनेका पता,-पोस्ट-तीवरी-जिला-जोधपुर; मुकाम-ओशियानगरी, इतनालिखनेसे वहांचीठी पहुच सकती है, तवारिख ओशियानगरीकी खतमहुइ.

जमदामंदिर ननवायेथे आर अब ऊनकाहालदेखोतो विल्कुलविरान पडे है, रगमंडपमें और थभोमें जोजो नक्शकारी किइहै देखनेवालेही इसकानयानकरसकते है, दोनोंमदिर गिरेगिरायेहै मगरजब अंदरजाकरदेखोगे वहारआनेको-जी-नहीचाहता, चितोडके जैनश्वेतांबरमदिरमें जोजोप्राचीनपुस्तकथे-न-माल्म अब-वे कहां है ? एकदिन-वो-जमानाथाकि—वडेवडेआलिमफाजिल जैनश्वेतांबराचार्य यहां कदमरखतेथे, आज विल्कुल उनकाअभावहै,

गौमुखकुडकेपास जो सुकोशलमुनिकी गुफामशहूरहै, उसमें एक पथरपर सुकोशलमुनिकी-और-एकसिंहनीकीमूर्त्ति बनीहुइहै, जैनशास्त्रोंमें कीर्त्तिधरमुनिकी-और सुकोशलमुनिकीहिकायत इस तरहबयानकिइहैकि-जब-वे—दुनियादारीकी हालतमें थे-वाप-वेटथे, वालिदने दुनियाछोडकर अवलदीक्षा इख्तियारकिइथी-और बेटने पीछेसे, गरजकि-महर्षि-कीर्त्तिधरजी गुरुथे-और मुनि सुकोशलजी उनकेचेलेथे, सुकोशलजीकी वाल्दा-जबकि-सुकोशलजीने दीक्षा इख्तियारकिइथी नाराजहोकर बुरेध्यानसे मरकर सिंहनी होगइथी और इसचितोडगढकी पहाडीयोंमें आनकररहतीथी, एक रोजकी वातहै जबकि-महर्षि-कीर्तिधरजी-और-मुनिसुकोशलजी-मुल्कोंकी सफरकरतेहुवे चितोडगढके पहाडोमें आये-तब सिंहनी उनकेसामनेआइ, इधर कीर्त्तिधरमहर्षि-सुकोशलमुनिसे कहनेलगे उपद्रव आयाहै मुजे आगेको होनेदो, सुकोशलमुनिने कहा-में आगेहोउगा. क्षत्रीयका धर्म पीछेपावकरनेकानही, उधरसे सिंहनी उछलकर सुकोशलमुनिपर झपटी, और उनकेशरीरकों तोडकर खागइ. वादमें गुरुजीने उससिंहनीको धर्मका उपदेश दिया, अरे ! वेरहम ! ! तेने अपने वेटेकोही खाडाला, गुरुजीकों अपनेज्ञानसे माऌमथाकि-यह सिंहनी पेस्तरकेभवमें सुकोशलमु-

परहै, चितोडकी मर्दुमशुमारी (१०२८६) मनुष्योंकी-जैनश्वेतांवरश्रावकोंके घर अंदाज (५०) और (२) जैनश्वेतांवर मंदिर यहां पर वनेहुवेहै, एक जुनेवाजारमें-और-दुसरा तीर्थंकर रिषभदेव भगवानका पुराना-जिसमे एकतर्फ राजा समतिकी तामीरकिइ हुइ मूर्त्ति जायेनशीनहे वाजार चितोडगढका गुलजार और हरेककिसमकी चीजयहां मिलसकतीहै शहरकेमंदिरोंकेदर्शनकरकेदूसरेरोजयात्रीकिले चितोडगढपर जावे, मगरजानेकेपेस्तरराज्यकीतर्फसे इजाजत लेनाचाहिये. अगर राज्यका पास-न-लेजाओगे-तो-किला-न-देखसकोगे, ओर अवल दरवजेपर रोकदियेजाओगे, किला-चितोडगढ निहायतपुख्ता-और-उपरजानेकेलिये-सडकपकी-चढाव उतार करीवतीनकोश-रास्तावलखाता हुवा उपरको गयाहै, सवारी हरेककिसमकी उपर जासकती है, मगर किरायेपर वगीवगेरा नहीमिलती, सीर्फ ! वेंलगाडी मिलसकेगी, जव किलेपरपहुचोगे वडेवडे मेदान-तालाव और आमरास्ता नजरपडेगा, कुछआगेवढनेसे वाजार दुकाने औरलोगोकीआवादी मिलेगी. गणेशपोल दरवजा लक्ष्मणदरवजा रामपोलदरवजा-कइ टुटेफुटेमकान-और खंडहेर देखकर पुरानाजमाना यादआताहै, तवारिखोंमें देखते है-तो-हरजगह चितोडगढकीतारीफ पाइजती है, पेस्तर यहां जैनोकी आवादी वहुतथी, मगरअवकुल्ल (२०) घर जैनश्वेतावरश्रावकोंके रहगये, नजदीकरत्नेश्वरतालावके-एकजैनश्वेतांवरमंदिर और उपाश्रय मौजूदहै, मंदिरमें राजासंमतिकी तामीरकिइहुइ तीनमूर्त्तिये जायेनशीनहै, पुराने कीर्त्तिस्थंभकेपास-और-रास्तेमें (२) जैनश्वेतांवरमंदिर खालीपडे है, अंदाजकियाजाताहै मूर्त्ति उठाकरदूसरी जगह पधराइगइहोगी. मंदिर खालीरहगये, क्याक्या ! कारीगीरी इनमंदिरोमें हुइहै देखकर ताज्जुबकरोगे, खुशनसीवोने क्याक्या,

उमदामदिर वनवायेथे और अव ऊनकाहालदेखोतो विल्कुलविरान पडे है, रगमडपमें और थंभोमें जोजो नक्शकारी किइहै देखनेवालेही इसकावयानकरसकते है, दोनोंमदिर गिरेगिरायेहै मगरजव अंदरजाकरदेखोगे वहारआनेको-जी-नहीचाहता, चितोडके जैन-श्वेतांवरमदिरमें जोजोप्राचीनपुस्तकथे-न-मालूम अव-वे कहा है ? एकदिन-वो-जमानाथाकि—वडेवडेआलिमफाजिल जैनश्वेतांवराचार्य यहा कदमरखतेथे, आज विल्कुल उनकाअभावहै,

गौमुखकुंडकेपास जो सुकोशलमुनिकी गुफामशहूरहै, उसमें एक पथरपर सुकोशलमुनिकी-और-एकसिहनीकीमूर्त्ति वनीहुइहै, जैनशास्त्रोमें कीर्त्तिधरमुनिकी-और सुकोशलमुनिकीहिकायत इस तरहवयानकिइहैकि -जव-वे—दुनियादारीकी हालतमें थे-वाप-वेटथे, वालिदने दुनियाछोडकर अवलदीक्षा इख्तियारकिइथी-और वेटने पीछेसे, गरजकि-महर्षि-कीर्त्तिधरजी गुरुथे-और मुनि सुकोशलजी उनकेचेलेथे, सुकोशलजीकी वाल्दा-जवकि-सुकोशलजीने दीक्षा इख्तियारकिइथी नाराजहोकर वुरेध्यानसे मरकर सिंहनी होगइथी और इसचितोडगढकी पहाडीयोंमे आनकररहतीथी, एक रौजकी वातहै जवकि-महर्षि-कीर्तिधरजी-और-मुनि-सुकोशलजी-मुल्कोंकी सफरकरतेहुवे चितोडगढके पहाडोमें आये-तव सिंहनी उनकेसामनेआइ, इधर कीर्त्तिधरमहर्षि-सुकोशलमुनिसे कहनेलगे उपद्रव आयाहै मुजे आगेको होनेदो, सुकोशलमुनिने कहा-में आगेहोउगा. क्षत्रीयका धर्म पीछेपावकरनेकानही, उधरसे सिंहनी उछलकर सुकोशलमुनिपर झपटी, और उनकेशरीरको तोडकर खागइ. वादमें गुरुजीने उससिंहनीको धर्मका उपदेश दिया, अरे ! वेरहम ! ! तेने अपने वेटकोही खाडाला, गुरजीको अपनेज्ञानसे मालूमथाकि-यह सिंहनी पेस्तरकेभवमें सुकोशलमु-

निकी माताथी, और बुरेध्यानसे मरकर सिहनीहुइहे, सिंहनीकों कीर्तिधरमहर्षिके धर्मोपदेशसे जातिस्मर्णज्ञानहुवा, दिलमें रंजकिया और उसरोजसे जीवोंकामारना कतइछोडदिया. पेस्तरकेजमानेमें जानवरोंकोंभी जातिस्मर्णज्ञान होजाताथा जिससे पीछलेभवकी वात उसको यादआजातीथी,-आजकल-वैसाज्ञान नहीरहा. धर्मशास्त्रकी रुसेमालूमहोताहे पेस्तर ऐसाज्ञान-होताथा.—

एक मदिर शो-कीर्त्तिस्थंभके पास खालीपडाहे दिवारमें एक छोटा शिलालेख लगाहे उसमें चौलुक्य वंशके मूलराज-सिद्धराज और-कुमारपाल वगेरा राजाओके नामहे. मगर अपशोषहैकि-वीचमेसे तोडागया जिससे असली मतलव नही खुलता,-कीर्त्तिस्थंभ अंदाज (१००) हाथ ऊंचा-और-उसपर चढनेकी सीढीयां करीव (१२१) वनीहुइहे, नवमी मंजीलपर-चारशिलालेख लगेहुवेथे जिनमेंसे अवसीर्फ (२) वाकीहै, सोभी कहीकही तोडेगयेहैअछी तरहपढे नहीजाते, वीचमें हमीर भुपाल वगेरा राजाओके नाम लिखेहुवेहै, इसमंजीलपर चढकर अगर चारोंतर्फ नजर किजायतो मालूमहोताहे आस्मानकी सैर कररहेहै, गांव-नगर-वाग-वगीचे-द्रख्तोके झुंड-सडक-और नदीवगेरा इसखूवसुरतीसे दिखाइ देते है-जिसको देखकर तवीयत खुशहोजातीहै, हिंदमें वहुतसे किलेहै मगर चितोडगढका किलाभी एकनामी ग्रामीहै, तमामपहाड जडीवूटीयोंसे भराहुवा-जावजा-तालाव-कुंड-वावडी-कुवे-और-चिश्मेआव-तर-व-तरहै, श्रीयुत-रत्नसिंहजीका महेल जोकि-तेरहमीसदीका वनाहुवाहे-काविल देखनेकेहै, रत्नसिंहजीकी रानी-पदमनीथी-उसका महेल और सरोवर अवभी वहां वनेहुवेहे. चितोडगढके किलेपर वडेवडेजंगहुवे, और कइनहादूरोने अपनी वहादुरी वतलाइहै, चितोडगढके वहादूर योद्धेसमरसिंह-

हमीर-कुंभाराणा-संग्रामसिंह-और-सूर्यमल वगेराहुवे, जिनको तवारिख पढनेका शौखहै वखूवी जानतेहोगें. कुंभाराणाजी जव सन (१४६८) इस्वीमें चितोडके तख्तपरथे चितोडराज्यकी वडी तरक्कीथी, कीर्तिस्तंभ-पदमनीका महेल-सूरजपोल दरवजा-हिंगलुहाडाका महेल-येचीजे यहापर काविलदेखनेकेहै,-किले चितोडगढकी परकम्मा करीव (७) मीलकी-और हरजगह पुराने मकानात खडेहै, किलेके जैनमंदिरोंकी जियारतकरके यात्री चितोडमें वापिस आवे और टेसनपर जाकर उदयपुरके लिये रैलमें सवार होवे,

[वयान-शहेर-उदयपुर]

चितोडसे गोसडा-कपासन-सनवार-मावली-खेमली-और-टेवारी होतेहुवे टेशन उदयपुरकों जावे, रैलकिराया ग्यारह आना छपाइ, चितोडसे (६२) मीलके फासलेपर मेवाडका शिरोताज उदयपुर एकनामी शहरहै, उदयपुरके महाराज राणासाहव चितोडराज्यके वशानुयायीहै, उनमेंसे महाराज उदयसिंहजीने मुल्क मेवाडमें आनकर उदयपुर वसाया. अतराफ शहरके पकाकोट खीमाहुवा--कइवाग--और-चारदरवजे यहा मशहूरहै, वडेवाजार होते राजमहलकों जानेका रास्ता वनाहुवाहै, अजायव घर-लाइब्रेरी-और विद्यालय यहा देखनेकी चीजे है, गुलावबाग-और पिछोलाझील मशहूर जगह-और वाजार लखाचोडा-जिसचीजकी दरकारहो यहा मिलसकती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर करीव (४००) और छोटेवडे (३५) जैनश्वेतांवर मंदिर यहापर वनेहुवेहै, सवसे वडा मंदिर वीचवाजार कोतवालीके पास-तीर्थंकर शीतलनाथ महाराजका-जोकि-वडाखुवसुरत और मजवूतहै. मंदिर चंद्राप्रभुजीका मंदिर रिषभाननजीका-मंदिर रिषभदेवभगवानका-

(२०००) आदमी ब–खूबी कयाम करसकतेहै, खानपानकी चीजें–आटा दाल–घी–सकर मेवा–मिठाइ–जोचाहो मिलसकती है जैनश्वेतांबरश्रावकोके घर–यहां पांचसात–और–कुलव्यापारीयोंकी दुकाने (१००) के–करीबहोगी, यात्री किसीधर्मशालामें जाकर कयामकरे, कोइमना नहीकर सकता,–करीव एकहजार वर्षहुवे मूर्त्ति–केशरीयाजीकी–धुलेवा–गांवसे बहारकी जमीनसें निकलीथी,–मूर्त्ति–ततकाल परचा देनेवाली होनेसें–यात्री–बहुतआने लगें और दिन–ब–दिन पूजामें तरक्की होनेलगी. बाद चंदरोजके जब खजाना तरहुवा–मंदिर बननेका काम शुरूहुवा, और जबबन कर तयार होगया–बडीशान–ब–सोतकसे प्रतिष्ठाकिइगइ, वहीमंदिर अबतककायमहै, उदयपुरकी तवारिखसें मालूमहोताहै. महाराणा मोकलजीकेवख्तमें यहमंदिर बना, बडासंगीन–बेशकीमती–बावन जिनालयका मंदिर देखकर दिलखुशहोगा, रंगमंडपकी दाहनीतर्फ दिवारमें एकशिलालेखलगा हुवाहै उसमें लिखाहै संवत् (१४३१) वैशाखसुदी (३) बुधवारकेरोज फलां सख्शने इसतीर्थकी जियारतकिइ, वायीतर्फकी दिवारपर जोदूसराशिलालेख लगाहै उसमें संवत् (१५७२) वैशाखसुदी (५) सोमवारके रोज फलांशख्सने इसतीर्थकी जियारतकिइ, इनलेखोंसे सबुतहुवा–संवत् चौदहसोके पेस्तरका यहमंदिरबना हुवाहै,–शिवायइसके दूसरे कोइशिलालेख नहीपायेजाते,—

बहारकेरंगमंडपमें जोबायीतर्फकी दिवारपर एकशिलालेख मौजूदहै संवत् उसका दबगयाहै–नीचेकीतर्फ जिनभक्तिसूरि–और–जिनलाभसूरिवगेरा जैनाचार्योकेनामहै. मंदिरका रंगमंडप–और–शिंगारचौकी उमदा कारीगीरीसे बनाइगइहै, अतराफमंदिरके कोट खींचाहुवा–और–मूलनायक तीर्थंकररिषभदेवमहाराजकी शामरंग

मूर्त्ति-करीव अढाइहाथवडी तख्तनशीनहै, मूर्त्तिपर कोइलेखनही-शिंगार-गेहने-आभूपन-अंगीवगेरा काम-मुताविक जैनश्वेताबर आम्नायके होताहै,-इसमूर्त्तिपर जाफरान वहुतचढती है और जाफरानकों संस्कृतजवानमें केशरवोलते है-इसीवजहसे इसमूर्त्तिका नाम केशरीयाजी कहागया. मंदिरकेरगमंडपमें-नवचौकीकी छतमें सभामंडपमें-और-परकम्मामें-जोजोकाम पथरोपरहुवाहै सवउमदा कारीगीरीके शाथहै,

मंदिरकीवहार नकारखानेकेनीचे थंभेकी वरावरीमें जोवडा शिलालेखहै महाराणा सग्रामसिंहजीकेवख्तकाहै, इसकेपास छोटे पथरपर सवत् (१८४९) जो-गाव-विलखकेलोगोका इकरारनामाहै उसमेलिखाहै, हमलोग मंदिरकीचौकी वखूवीकरेगें, एकलेख संवत् (१९३७) काहै उसमें भीललोगोंका इकरारनामाहै,-एक लेख अरिसिंहजीकाहै, इसमे सवत्कीजगह टुटीहुइहै.-मदिरकेदरवजेकी वहार अवलचौकीकी छतमें (८१) कोठेका-यत्र-पथरमें ऊकेराहुवावडामभाविकहै,-मंदिरकेपास केशरीयाजीतीर्थका कारखाना वनाहुवाहै-मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर-चपरासी-और-नकारखाना हमेशाकेलिये जारी है, परकम्माके जिनालयोमें-कइ जिनमूर्त्तिये सवत् (१७३६) की है, कइसवत् (१७५४) की-कइसंवत् (१७७८) और कइसवत् (१७९०) की-प्रतिष्ठित जायेनशीनहै. मूलनायकजीके सामने एकहाथी पथरका वनाहुवा-और-उसपर-मरुदेवजीकी मूर्त्ति-जायेनशीनहै, मंदिरकी सीढीकी दोनोतर्फ-शासनदेवी-चक्रेश्वरी-और-पदमावती. शगेमर्मरपथरपर उमदाबनीहुइ-निचली डयोढीकेपास-दोहाथी-आमनेसामने-शगरंग पथरके वनेहुवे-और-वडेदरवजेके वहार नकारखानेकेनिचे फिर-दोहाथी-उतनेहीवडे निहायखूरत पथरकेवनेहुवे वतौरपेशबाइके खडे है,-

(३०००) आदमी व-खूवी कयाम करसकतेहै, खानपानकी चीजे-आटा दाल-घी-सकर मेवा-मिठाइ-जोचाहो मिलसकती है, जैनश्वेतांवरश्रावकोके घर-यहां पाचसात-और-कुलव्यापारीयोंकी दुकाने (१००) के-करीवहोगी, यात्री किसीधर्मशालामें जाकर कयामकरे, कोइमना नहीकर सकता,-करीव एकहजार वर्षहुवे मूर्त्ति-केशरीयाजीकी-धुलेवा-गांवसे .वहारकी जमीनसें निकलीथी,-मूर्त्ति-ततकाल परचा देनेवाली होनेसें-यात्री-वहुतआने लगें और दिन-व-दिन पूजामें तरक्की होनेलगी. वाद चंदरोजके जव खजाना तरहुवा-मंदिर वननेका काम शुरूहुवा, और जबवन कर तयार होगया-वडीशान-व-सोतकसे प्रतिष्ठाकिइगइ, वहीमंदिर अवतककायमहै, उदयपुरकी तवारिखसें मालूमहोताहै. महाराणा मोकलजीकेवख्तमें यहमंदिर वना, वडासंगीन-बेशकीमती-वावन जिनालयका मदिर देखकर दिलखुशहोगा, रंगमंडपकी दाहनीतर्फ दिवारमें एकशिलालेखलगा हुवाहै उसमे लिखाहै संवत् (१४३१) वैशाखसुदी (३) वुधवारकेरोज फलां सख्शने इसतीर्थकी जियारतकिइ, वायीतर्फकी दिवारपर जोदूसराशिलालेख लगाहै उसमें संवत् (१५७२) वैशाखसुदी (५) सोमवारके रोज फलांशख्शने इसतीर्थकी जियारतकिइ, इनलेखोंसे सबुतहुवा-संवत् चौदहसोके पेस्तरका यहमंदिरवना हुवाहै,-शिवायइसके दूसरे कोइशिलालेख नहीपायेजाते,--

वहारकेरंगमडपमें जोवायीतर्फकी दिवारपर एकशिलालेख मौजूदहै संवत् उसका दवगयाहै-नीचेकीतर्फ जिनभक्तिसूरि-और-जिनलाभसूरिवगेरा जैनाचार्योंकेनामहै. मंदिरका रंगमंडप-और-शिंगारचौकी उमदा कारीगीरीसे वनाइगइहै, अतराफमंदिरके कोट खीचाहुवा-और-मूलनायक तीर्थंकररिषभदेवमहाराजकी शामरंग

मूर्त्ति–करीव अढाइहाथवडी तख्तनशीनहै, मूर्त्तिपर कोइलेखनही–शिंगार–गेहने–आभूषन–अंगीवगेरा काम–मुताबिक जैनश्वेतांबर आम्नायके होताहै,–इसमूर्त्तिपर ज़ाफरान वहुतचढती है और जाफ़रानकों सस्कृतजवानमे केशरवोलते है–इसीवजहसे इसमूर्त्तिका नाम केशरीयाजी कहागया. मंदिरकेरगमंडपमें–नवचौकीकी छतमें सभामडपमें–और–परकम्मामें–जोजोकाम पथरोपरहुवाहै सबउमदा कारीगीरीके शाथहै,

मंदिरकीवहार नकारखानेकेनीचे थभेकी वरावरीमें जोवडा शिलालेखहै महाराणा संग्रामसिंहजीकेवख्तकाहै, इसकेपास छोटे पथरपर सवत् (१८४९) जो–गाव–विलखकेलोगोका इकरारनामाहै उसमेलिखाहै, हमलोग मदिरकीचौकी वसूवीकरेगें, एकलेख संवत् (१९३७) काहै उसमें भीललोगोंका इकरारनामाहै,–एक लेख अरिसिंहजीकाहै, इसमें संवत्कीजगह टुटीहुइहै.–मंदिरकेदरवजेकी वहार अवलचौकीकी छतमें (८१) कोठेका–यत्र–पथरमें ऊकेराहुवावडामंभाविकहै,–मंदिरकेपास केशरीयाजीतीर्थका कारखाना वनाहुवाहै–मुनीम–गुमाश्ते–नोकर–चाकर–चपरासी–और–नकारखाना हमेशांकेलिये जारी है, परकम्माके जिनालयोमें–कइ जिनमूर्त्तिये संवत् (१७३६) की है, कइसवत् (१७५४) की–कइसवत् (१७७८) और कइसवत् (१७९०) की–प्रतिष्टित जायेनशीनहै. मूलनायकजीके सामने एकहाथी पथरका वनाहुवा–और–उसपर–मरुदेवजीकी मूर्त्ति–जायेनशीनहै, मंदिरकी सीढीकी दोनोंतर्फ–शासनदेवी–चक्रेश्वरी–और–पद्मावती, शगेमर्मरपथरपर उमदावनीहुइ–निचली ड्योढीकेपास–दोहाथी–आमनेसामने–शामरग पथरके वनेहुवे–और–बडेदरवजेके वहार नकारखानेकेनिचे फिर–दोहाथी–उतनेहीवडे निहायखूरत पथरकेवनेहुवे वतोरपेशवाइके खडे है,–

मंदिरकी वहारकीपरकम्मामें-एकजिनालय तीर्थंकर पार्श्वनाथस्वामीका बनाहुवा-मूर्त्ति-जगवल्लभपार्श्वनाथजीकी करीव साढेतीनहाथवडी-जांयेनशीनहै, और उसपरलिखाहै संवत् (१८०९) वैशाखसुदीपंचमी शुक्रवारकेरौज यहतामीरकिइगइ, और तपगछके सुमतिचंद्रगणिजीने इसकीप्रतिष्ठा किइ, केशरीयाजीकेमंदिरकी पीछाडीकी दिवारपर तरहतरहकीकारीगीरी-पुतलीये-और-गुल्दस्ते वनेहुवे है, इसमंदिरकी तामीरातमें अंदाज (१५०००००) रुपयेसर्फहुवे कहेजाते है-अगरकोइयात्री-केशरीयाजीमहाराजकी मूर्त्तिपर-सवालाखरुपयोकी जेवरात-जोकि-यहांकेखजानेमें जमाहै-एकरौजकेलिये चढानाचाहे-तो-(२३) रुपये सर्फाहोगा.-यानी-मंदिरकेखजानेमें देनाहोगा, अगरकोइयात्री-मंदिरमें रौशनीकरानाचाहे-तो-एकरौजकेलिये-ज्यादहसेंज्यादह (१६।।।) रुपये खर्चलगेगे, औरकम रौशनीकरानाचाहे-तो (२) तकभी होसकती है, जिसकीजैसीताकातहो-वैसा-करे,-यात्रीकों तीर्थकीजगहपर दिलकेदलेर होनाचाहिये. केशरीयाजीमहाराजके मंदिरमें नोकर-चाकर-छडीदारवगेरा (२७) आदमी हरहमेश हाजिररहते है,-और-खर्चभी-इसतीर्थमें ज्यादहहै,-वनीस्पत और तीर्थोंके-माकुलपेदाशभी यहां अछीहोती है-जिससे तमामरवन्नक वनीहुइहै,-

हरसाल चैतवदी अष्टमीकेरोज यहांपर यात्रीयोंका मेला भरताहै उसरौज महाराज उदयपुरकी तर्फसें-हाथी-घोडे-फौज-सवार वगेरा मयलवाजमाके आते है और-वंदोवस्त करतेहै, वाजा-नकारखाना-कोतल घोडे-संगीत कलावगेरा जुलुसके साथ-भगवानकी सवारी मंदिरसें-छत्रीतक जाती है, यह वही जगहहै, जहासें केशरीयाजी महाराजकी मूर्त्ति जमीनसें निकलीथी. धुलेवा

गांवके सब–लोग–और–आसपासके आयेहुवे देहातीलोग–भील–वगेरा–दोतीन हजार आदमी–शाथ–चलतेहै,–और–बडाजलसा होताहै,–जिसकी अछीतकदीरहो असे मोकेपर जियारत करे इस मेलेमें कभीकभी दसपनरा हजार आदमीतक जमाहोतेहै, कोइ यात्री मणभर केशरतक केशरीयाजीकी मूर्त्तिपर चढाताहै, छत्रीपर जहाकि–सवारी लाइजातीहै उमदाछत्री–वगीचा–और–तीनबावडी मीठे जलकी भरीहुइ मौजूदहै, बागमें–गुलाब–चंपा–चमेली–जाइ–जुइ–डमरा–मरूआ–वगेराफुलोंके पेंड–खडे है, छत्रीमें केशरीयाजी महाराजके कदम–जायेनशीनहै, और उसकेसामने पहाडकी दामनमें आमखास–नशीस्तगाह बनीहुइ–उसपर–मेलेके रोजमूर्त्ति तख्तनशीन करके उसका पूजन कियाजाताहै, आमलोगके लिये बेठनेकी जगह चुनागर्चीकी बनी है जिसपरपाचहजार आदमी बखूबीबेठ सकतेहै, मेलेके रोज यहापर गीतगान–नाच मुजरा कियाजाताहै, महाराजकी सवारी मदिरसे दिनके (२) बजे रवाना होकर शामके (६) बजे मदिरमें वापिस आजाती है, तीर्थकेशरीयाजीकी जियारत करकेयात्री उसी खुश्कीरास्ते वापिस उदयपुर आवे, और रैलमें सवारहोकर चितोडगढ जाय, चितोडगढसें नीमच–मंदसोर–रतलाम–उज्जेनहोती हुइ मकसीजी तीर्थकोंभी रैल–गइहै. और इंदोर–खडवाहोकर भुसावलकोंभी गइहै. मगरतुमकों चितोडगढसे अजमेर–फुलेरा होतेहुवे फलोदी तीर्थकों जानाचाहिये. इसलिये चितोडगढसें रैलमें सवार होकर वापिस अजमेर आना रैलकिराया पेस्तर बतलाचुके है, अजमेरसें रैलमें सवारहोकर–मदार–लाडपुरा–आखरी–किशनगढ–तिलोनिया–साली–सखुन–नरायणा–होते फुलेराजकशन जाना, रैलकिराया आठआने लगते है, फुलेरा उतरकर मेरटारोड जानेवाली रैलमें सवारहोना,

और-सांभर-गुढा-कचामनरोड-नारायणपुरा-मकराना-वोरावर-गछीपुरा-देगाना-और-रैन-होतेहुवे मेरटारोड टेशन उतरना. इसीकानाम फलोदी तीर्थहै,-फुलेरासें मेरटारोडतक रैलकिराया पनरा आना-तीनपाइ लगते है,—

☞ (तवारिख-तीर्थफलोदी.)

फलौदी पार्श्वनाथजीका-यहां-पुराना जैनतीर्थ है, इसकी तवारिख बुजुर्ग लोग इसतरहसें वयान करतेहै, संवत् (११८१) में यहां एक-श्रीश्रीमाल-धुंधलकुमार-जैनश्वेतांवर श्रावक रहताथा उसके वहां वहुतसी गायेंथी. जिनमेंसें एक गौका-यहहालथाकि-जब-जंगलसें चरकर-शामकों घर वापिसआती-तो-रास्तेमें एक बेरीकेनीचे उसका दूध-खुद-ब-खुदझर जाताथा, कुछ-दिनकेबाद धुंधलकुमारने गोवालियेसे ताकीदकिईकि-हमारीगौका दूध-कौन दोहताहै, ? उसनेकहा ! आप मेरेसाथ जंगलमें चले, और-ब-चश्म-खुद इसवातको अजमावे, दुसरेरौज धुंधलकुमार खुद जंगलकोंगया, और गौके पीछेपीछे वापिस घरकों आया, तो रास्तेमें एक-अजुवा-देखाकि-उसवेरीके दरख्तनीचे गायका दूध खुद-ब-खुद झरनेलगा यहहाल देखकर वह हैरानहुवा और दिलमें सौचनेलगा क्या माजराहै, ? जरूर यहांपर कुछ सववहै घरआनकर जब सवकासोसे फारीकहुवा और आरामसें सोगया, रातके-वख्त उसकों एकख्वावहुवाकि-उसमुकामपर देवाधिदेव-पार्श्वनाथ भगवानकी मूर्त्ति जमीनमें मौजूदहै, तुं ! उसकों निकालले !! उसने दुसरेरौज यह माजरा अपने दोस्त एक-शिवंकर नामकेश्रावककोंकहा, और दोनों मिलकरजंगलकों गये, और उसवेरीके दरख्त नीचे जमीनकों खोदा-तो-एक-निहायत उमदा-मूर्त्ति-शामरंग-तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवानकीउनकों मीली.-और-वे-अपने मका-

नक्शे लेआये.-और-अलायधा एक मकान वनाकर पूजाकरना शुरूकिइ. ज्यूं ज्यूं यात्री आते रहे तीर्थकी तरक्की होतीगइ. और वडा आलिशान मदिर वनाकर मूर्त्ति उसमें तख्तनशीन किइगइ. जो-मदिर अव मौजूदहै उसी वख्तका वना हुवाहै,- इसकी प्रतिष्ठा जैनश्वेतावराचार्य धर्मघोषसूरिजीने किइ, फलौदी गांवमें मूर्त्ति जाहिरहोनेसें इसकानाम फलौदीपार्श्वनाथ रखागया. दिनपरदिन तीर्थकी तरक्की होनेलगी, पेस्तर जव यहां रैलनहीथी यात्री-वजरीयेवेंलगाडी-या-पांवपैदल जातेथे. आजकल रैलहो नेकीवजहसें वहुतसेंयात्री आतेजातेहै. टेशनके उतरतेही सामने वडाआलिशान-शिखरवदमदिर-और-धर्मशाला नजरआती है. यात्री वहाजाकर मुकामकरे. धर्मशालामें चालीशकोठरीये-और- एकवडासहेन वनाहुवा-गर्मीकेदिनोमें वडाआराम देताहै, अगरए- कहजारयात्री-एकशाथ आजाय-इसधर्मशालामें व-खुवी कयाम करसकते है,-वीच धर्मशालाके मदिरफलौदी पार्श्वनाथजीका नि- हायतउमदाशिखरवंद-वनाहुवा-और इसमें-तीर्थकरपार्श्वनाथभग- वानकी शामरगमूर्त्ति-करीव अढाइहाथवडी-तख्तनशीनहै. दर्शन करके दिलखुशहोगा,

गर्भद्वारके दरवजेकेनीचे दाहनी-ओर-वायीतर्फ , सस्कृतज- वानमें लिखाहै संवत् (१२२१) मृगशीर्षसुदी (६) के-रौज- फलवर्द्धिकाया (यानी) फलौदीगावमे तीर्थकरपार्श्वनाथजीका- मदिर-तामीरकियागया,-कुछहर्फ घीसगयये है वरावरखुलतेनही, वायीतर्फ लिखाहै-चैत्येन-नरतरे-येन, श्रीमह्लक्ष्मटकारिते-मडपो मडन लक्ष्म्याः, आगे फिरकुछहर्फ घीसजानेकी वजहसे खुलतेनही तीसरे श्लोकके तीसरे चरणमें-लिखाहै-उत्तानपट्ट-श्रीपार्श्वचैत्य- (यानी) वडेपट्टवाला-तीर्थकर पार्श्वनाथजीका मदिर तामीरकि-

यागया, भीतरके रंगमंडपमें जो-दाहनीतर्फ-तीनमूर्तियें जायेंनशीनहे वडीमूर्त्तिके नीचे संवत् (१६५३) में यहतामीर किइगइ लिखाहै. तपगछाचार्य हीरविजयसूरि और उनके चेलोकेनाम-भी-लिखेहै, वायींतर्फ जो तीनमूर्त्तिये है उनमें एक मूर्त्तिके नीचे संवत् (१६५३) वैशाखसुदी (४) बुधवारके रौज-तीर्थंकर शीतलनाथजीकी मूर्त्ति तामीर किइगइ लिखाहै, और तपगछाचार्य विजयसेनसूरि-और-विनयसुंदर गणिके नामभी मौजूदहै,-एक शामरंगमूर्त्ति-मुंडियाल गांवसें लाइहुइ नयी है, तीसरीमूर्त्ति-तीर्थंकर अरनाथजीकी उसीसंवत् (१६५३) और वही तपगछाचार्य विजयसेनसूरि-और-विनयसुंदर गणिके-नाम इसपर मौजूदहै, रंगमंडपवहारका-बहुतपायदार बनाहुवा-जिसमें (५००) आदमी बखूबी बेठसकते है,

एकतर्फके कौनेमें तीर्थअष्टापदजीका नकशा-संगमरमर पथर पर-उकेराहुवा इसमें असी मुश्शवरी और सुनहरीकाम बनाहुवा जो दुसरी जगह नही दिखाइदेता.-श्रीयुत-वरधीचंदजी सचेतीनेतीन नकशे तामीर करवायेथे. जिनमेसे एक-शत्रुंजयतीर्थपर विमल वशीटोंकमे चक्रेश्वरी देवीके मंदिरसे आगे-हाथीपोलसे उरेदाहने हाथतर्फ उनहीके तामीरकरवाये हुवे मंदिरकी दिवारमें लगाहै, दुसरा लशकर गवालियरके मंदिरमें-और तीसरा यहां फलोदी पार्श्वनाथजीके मंदिरमें-कुल्ल (३) हुवे. इसमें क्या ! ! उमदाछोटीछोटी मूर्त्तिये पनरासो तापसोंकी बनीहुइ-जोकि-गणधर गौतमस्वामीके चेले होगयेथे,-एकतर्फ रावण-और-मदोदरीकीमूर्त्ति-नृत्यकर रही है. वीचमें [२४] तीर्थंकरोकी मूर्त्तियें-और-अस्मानसें उतरते हुवे देवतोंके विमान इसकदर खूबसुरातिकेसाथ बनेहुवेहै जिसकी तारीफ जबानसे बहारहै, इसको देखकर

माल्म होताहै-सर-व-सर-तीर्थअष्टापद नजरके सामने मौजूदहै, दूसरी तर्फके कौनेमें-नंदीश्वरद्वीपका नकशा उसीतरह-शंगमर्मर पथरपर बनाहुवा दिवारमें लगाहै. द्वीप-समुंदर-और-तरहतरहकी निहायत खूबसुरत मूर्त्तिये दिलको इसकदर असर करती हैकि-गोया ! अभीमुंहसें वार्तेकरेगी.-मेरूपर्वत-युगलीक मनुष्योके क्षेत्र-और-उदयाचल वगेरा पहाड इसकदर कारीगरीसें बने हैकि-देखने वालेही उसकी खूबी बयान करसकतेहै, वाणव्यंतरदेवता-और देवांगना इसकदर बनेहैकि-मानो !-वे-सचमुच-यहांआगयेहो,—

दुसरा मंदिर कोटकेबहार जो थोडी दूरपर बनाहुवाहै इसमें मूलनायक-चौमुख महाराजकी चार मूर्त्तिये तख्तनशीनहै, उनमें एक मूर्त्तिपर संवत् (१८९१)-और-एकपर संवत् (१८९६) लिखाहुवाहै, चारोंकोनोंमें-चार-छोटीछोटी छत्रीये एकमे-चौदह स्वप्न-एकमें जन्मकल्याणिक-और-एकमें दीक्षाकल्याणिकका आकार शंगमर्मरपथरपर ऊकेराहुवा मौजूदहै, अतराफ मदिरके कोट खींचाहुवा और सबकाम सगीनहै कारखाना फलौदी तीर्थका-भीतर धर्मशालाके एकतर्फ बनाहुवा-मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर-चपरासी-सबकाम शाहानाहै,-यात्रीकों खानपानकी मामुली चीजेंयहां दस्तयात्र होसकतीहै, टेशनपर हलवाइयोंकी दुकानेभी मौजूदहै, मिठाइवगेरा वहांसेमिलसकेगी. हरसाल आसोजसुदी दशमीकों-यहा-यात्रीयोंका मेलाजुडताहै, करीबउसवख्त दशहजार आदमी जमाहोते है,-तीर्थंकरफलौदी पार्श्वनाथजीके सोनेकेबनेहुवे जेवरात उसरोज मेरटेसें यहालाये जाते है और मूर्त्तिपर चढायेजातेहै. चांदीका सामान-नकारखाना-निशान-और-तरहतरहके बाजेभी शहर मेरटेसें आतेहै और बडेजुलुशकेशाथ-तीर्थंकरफलौदी पार्श्वनाथजीकी-सवारी-मदिरकीचारों तर्फ फिराकर बहारतालाव

पर लाइजाती है, और वहां पूजन होनेकेबाद शामकों वापिस मंदिरमें आतीह. जिसकी अछीतकदीरहो अैसे मौकेपर जियारतकरे,

मंदिरकेपास मीठजलका कुवा और एकगुलजार बाग बनाहुवाहै. मोर-तोत-चिडिया वगेरातमाम किसमके परींद यहां हरवख्त कलोले करते रहतेहै, और दाना चुगनेकोभी उनकों यहां मिलताहै, कइदफे इसतीर्थपर मुसीबतें आइ, मगर बदौलत देवधर्मके सब रफाहोतीगइ,-फलौदी तीर्थकी जियारतकरके टेशन मेरटारोडपरआना-और अगर फुरशतहोतो-मेरटासीटी-नागोर-और-विकानेर जाकर वहांके मंदिरोंके दर्शनकरना, मुल्क मारवाडमें-ये-मशहूर शहरहै इसलिये उनका वयानभी यहां वतलाते है, जिसकों जानाहो-जावे, न-जानाहो-न-जावे, मेरटारोडसे रेलमें सवार होकर मेरटासीटीजाना, रैलकिराया देढआना,—

मेरटाशहर एकपुरानी आवादी है. अतराफ कोट वनाहुवा-बाजार पसारहटा-और-सदर जिसमे सराफ औह कपडेवेचनेवाले वेठते है किसीकदर रवन्नकदारहै, मेरटेकी शोहोरत-जो-पेस्तरथी अवनहीरही मगरकिसीकदरठीकहै, हाथीदातके छल्ले-अंगुठी-फुल और घडीकी जंजीर यहाआलादर्जेकी वनती है, खसकेपंखे-उनी-कपडे-और-मीटीके खिलौने यहांकेनामी है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घरपेस्तरवहुतथे-मगरअवसीर्फ ! (८०) के-करीवरहगये, जैनश्वेतांवरमंदिर (१४) और-उनमेखूवसुरत पुरानीमूर्त्तिये तख्तनशीनहै जैनपुस्तकोंका पुराना भडारयहापर मौजूदहै, जैनमुनिजनोको ठहरनेकेलिये कइमकान वनेहुवे है, वहार शहरके छत्री दादाजीकी और-वगीचा उमदाहै-मगर मरम्मत दरकारहै, मेरटेके जैनमंदिरोके दर्शनकरके यात्रीनागोरजावे, रैलकिराया पोनेसात आनेलगते है, और-देशवाल-खजवाणा-मुंडवा-ये-टेशन रास्तेमे आते है,—

मुल्क मारवाडमें नागोर एकपुराना शहरहै, अतराफ शहरके पकाकोट खीचाहुवा, (६) दरवजे और (२) वारीयेमौजूदहै, कपडा वाजार-सराफा-पसारीवाजार-और-धानमडीरवन्नक लियेहै, दर मियान शहरकोकिलेमें राजमहेल-मोतीमहेल-और त्रिपोलीयादरवजा काबील देखनेके है, जैनश्वेतावर श्रावकोके घर करीव (४००) और (९) जैनश्वेतावर मंदिरयहां वनेहुवेहै, सवसे वडामदिर तीर्थंकर रिषभदेवजीका-इसमें-तीर्थंकर रिषभदेवजीकी सर्वधातमय मूर्त्ति तख्तनशीनहै, दुसरा मदिर दाडीवालोंके महोलेमे-तीसरा घोडावतोकेमोहल्लेमे और-दो-दफतरीयोके महोलेमे यात्रीइनमें जाकर देवदर्शनकरे. माहीदरवजेके वहार यतिजी रूपचदजीका तामीर कियाहुवा-और-इसकेआगे आधमीलके फासलेपर छत्री दादाजीकी-और नजदीकमें वगीचा-हौजवगेरा वनेहुवे है, नागोरमें वख्त सागर-गिनाणी-और-शम्मस-ये-तीनतालाव मशहूरहै, गर्मीयोके दिनोमें वहुत कामदेते है, शहरमें मुनिजनोके ठहरनेके लिये कइमकानहै, जैनपुस्तकोके लिखनेवाले कइलिखारी यहां रहते है, चार रूइये हजारश्लोक लिखेगे, मगर कागजका खर्चालिखाने वालोके जुम्मे होगा, नागोरके जैनमदिरोके दर्शनकरके-यात्री-वापिस टेशनपर आवे और शहर विकानेरको रवानाहोवे. वुदवासी-अलाय-भग्गु-विकासर-सुरपुरा-और गीगासर-होतेहुवे-टेशन विकानेर परउतरे, रैलकिराया साढे वारह आने लगते है,

मुल्क मारवाडमें विकानेर शहर पथरीली जमीनपर वसा हुवाहै, श्रीयुत-विकारावजी महाराजने इसको आवाद किया इसलिये विकानेर कहलाया. विकारावजीका जन्म सन (१४३९) इस्वीमें हुवाथा, पाचदरवजे और तीनतर्फ इसके पुख्ता खाइ वनी हुइ है,-सन (१८९१) की-मर्दुमशुमारीमें विकानेरकी मर्दु-

मशुमारी (५६२५२) मनुष्योंकीथी, शहरपनाहके फाटकसें क
(३००) गजके फासलेपर एककिला–जिसमे उमदा राजमहे
–तामीर कियेहुवे–और–अतराफ उनके पुख्ता खाइ मौजूद
विकानेरमें–कइकुवे अैसे है, जिसमे (१५०) या (२००) ह
तकलंवीरसी लगती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर विकानेरमें अं
ज (१०००) होगे जैनश्वेतांवर वडेवडे मंदिर (८) और (२
के अंदाज छोटे है, वडेमंदिरोमें तीर्थंकर रिषभदेवजीका–भांडास
जीका–तीर्थंकर नेमनाथजीका महाविर स्वामीका शांतिनाथजीव
वडेआलिशानहै, जैनश्वेतांवर मुनियोकों ठहरनेकेलिये पोषधशाल
एक–पंचायती और करीव (१०) वडेछोटे उपाश्रयहोगें, जैनपुस्त
क लिखनेवाले लिखारी यहांभी–अछेअछे मौजूदहै. और चार
पये हजार श्लोक लिखतेहै, विकानेरके (२) वाजार अछेगुलजार
मीसरी विकानेरकी निहायत उमदा–और–चुरनभी यहांका नाम
वनताहै, किलेके पास सुरसागरतालाव–एकअछी जगहहै,

इसरियासतमें नदीयें कम–वारीसके जलपर लोगज्यादह भरु
सा रखते है, पोखरोमे–और–कुंडोमें–वारीशका जल–इसकदर
भॅररखते है जो गर्मीयोके दिनोंमें वहुतकाम देताहै, वैशाख–जेठमे
गर्मी—इतनी सख्तपडतीहै—और—इसकदर हवा चलती है–
कि–कहींकहीं वालुरेतके टीवे जमाहोजाते है. असलमें इसमुल्कमें
वालुरेत ज्यादह–और यहांकी फसल वाजरी–मोंठ–तरवुज–खेलरे
ककडी–केर–सागरी वगेराहै,–घोडे यहांकेवडे मजवूत–हाथीदात–
की चुडीयां और कंवल मुल्कोंमें मशहूरहै,–वारीशके दिनोंमें मुल्क
हराभरा होजाताहै. विकानेरसे (२०) मील दखन–पश्चिमकीतर्फ
एक–गजनरझील–हमेशांमीठेजलसे भरीहुइ वाग–वगीचे–हरीयाली
और उमदाजगह वनीहुइहै,–विकानेरके जैनमंदिरोंके दर्शनकरके

ात्री वापिस मेरटारोड और मेरटारोडसें फूलेराजंकशनआवे रैल
केराया पेस्तर वतलाचुकेहै,-फुलेरासें जयपुरके लिये रवाना होवे
योकि-देहली होकर तीर्थहस्तिनापुरकी जियारतकों-जाना होगा
गर रास्तेमें जयपूर शहर काबिल देखनेकेहै, वहांके जैनमदिरोके
ी दर्शन करना चाहिये-फुलेरासे-रैलमें सवारहोकर-हरनोदा-
ासलपुर-उगरीयावास-धाकिया-और-कनकपुरा होतेहुवे जयपुर
शन उतरना, रैलकिराया छआना,

☞ (दरवयान-शहर-जयपुर.)

राजपुतानेके देशीराज्योंमें जयपुर एक गुलजार राज्यहै. क-
ीबटेशनके एकउमदा धर्मशाला वनीहुइहै. मगर जैनश्वेतांवर
ात्रीकों शहरमे जाना वेहतर होगा. टेशनपर इक्के-वगी-तयार
िलते है, सागानेरी दरवजेके पास जो शेठ-नथमलजीकी धर्मशा-
ा वनीहुइहै जाकर उसमें कयामकरे, सन् (१८९१) की-मर्दुम-
मारीमें-जयपुरकी मर्दुमशुमारी (१५८९०५) मनुष्योकीथी,
हरकी लंवाइपूरव-पश्चिमदो-मील-और-चोडाइ उतर दखन
डमील होगी, वहुतसी सडकें वसी-और-लवी, वाजार इसउमद-
ीसे वनेहै मानो ! कारीगिरोने अभीवनाकर तयारकिये है, हरेक
ादर-नादरकेमकानमें--आरामगाह--नाहनेधोनेकीजगह--और-
ीस्तगाह ऐसेउमदा वने है जोदिगरशहरमें कमदेखोगे, जहोरी
ाजार-ह्वामहल-रामगज और त्रिपोलीया वगेरानामी वाजारहै,
ासमें सागानेरीदरवजेसें-हवामहेलहोतीहुइजो आमेरीदरवजेतक-
ाइकगइहै वडीरवन्नकपरहै. वडेवडे आलिशानमकान-वेलबुटे-
ार-चित्रकारी -झलकरही है, हरेककिसमके-मेवे-मिठाइ-और-
ालअसबाव-यहामिलसकताहै, हिंदुस्थानमें वहुतशहर देखेहोगे
ार्इसकी फतेवजेभी एकनिराली है, वाजारकीसडके इतनीसाफ-

कि–जहां–गर्देका नामनही. जयपुरके मकानोंकी कहांतक तारीफ करे हरमकानपर रंग और चित्रकारी वनीहुइहै, हरजगह पानीके नल और–रातकों सडकोंपर लालटेनोंकी रौशनीहोती है, जयपुरके राजमहल वडेउमदा–और कीमती क्या ! उमदावावनकचहरियां–जिनकी कतेवजे निराली है, देखकर ताज्जुबहोगा,

जैनश्वेतांवरश्रावकोकेघर करीव (१२५) और–जहोरीवाजार मेघीवालोकेरास्तेपर–दो–जैनश्वेतांवरमंदिर वनेहुवे है, जिनकीकारीगीरी–नक्शकारी–शगमर्मरपथरका काम–वेलवुटे–और–चित्रकारीदेखकर दिलखुशहोगा.—जैनश्वेतावरमुनिजनोकेलिये ठहरनेके कइमकान यहांपरहै, घाटदरवजेके आगेकरीव (२) मीलकेघेरेमें–घाटनामसें एकउमदाजगह वनीहुइहै जहांपर अकसर वडेवडेआदमीयोंकी गोंठहुवाकरती है, और खानपान वनताहै, चाहे दुकाल पडे तोभीवहां आनंद वंधनहीहोता, रास्तेमेंदुतर्फा जालीदारमकान वीचमें सडक–मकानोपर तरहतरहकी मेहरावे–महल–वागात–पानीकेहोज–चिश्मेआव–और–सडकपर फर्सपथरका लगाहुवा–जगह सोहावनी है, एकजैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर वेशकीमती वनाहुवाया–त्री इसकेदर्शन जरुरकरे, जयपुरमे हरजगह इक्का–वगी–किरायेपर तयारमिलते है,–वेठकर जहां–जी–चाहे सैरकरलो,—

सांगानेरीदरवजेके वहार–रामनिवासवाग—काविलदेखनेकी जगहहै, अजायवघरभी इसमें मौजूदहै, जिसमें दुनियाकी अजनवी चीजेरखीहुइ देखकर दिलकों औरही असरहोती है, खास ! ग्रहवेधके मकानकानकशा, तरहतरहकेसीके–नकलीआदमी–शंगमर्मरका वनाहुवा आगरेका ताजमेहल–हिंदुस्थानके तमामदेवताओंकी मूर्त्ति तीर्थकरोंके समवसरणका आकार–शंगमर्मरका तामीरकियाहुवा निहायत उमदाहै, मुल्कवर्माका वनाहुवा चादीकाकाम–सिंहलद्वी–

पके वनेहुवे मीटीके वर्तन–इजीप्तकीतस्वीरोंके नकशे–सुपारीकी वनीहुइलकडी–भरतपुरका वनाहुवा–वासकीचीरोंका वाजा–मुल्क चीनके मंदिरका नकशा–आदमीका कलेवर–जिसमें नशें–पसली–हड्डीवगेराके आकारदेखकर दिलमें असरहोताहैकि–आदमीकाशरीर इनइनचीजोंका वनाहुवाहै,–लंकानगरीका चित्र–दमयंतीका स्वयंवर–जयपुरके कारीगिरोंने इसकदर चित्रामकियाहैकि–इन्सान देखकर ताज्जुवकरताहै, जयपुरकेचितारे आलादर्जेके होशियार, चाहे जिसजगहजाकर देखो जयपुरकीसी नक्शकारी वहुतकमदेखोगे,–दिवारपर (१४) राजेमहाराजोंकी तस्वीर–इसकदरउमदा चित्राम किइहे मानो ! अभी वोलने लगेगी. हरमुल्कके परींदे–और–जानवर–आफ्रिकाका–केशरीसिह–जिसकी गर्दनपर केशोंका जुडहोताहै, शास्त्रोंमें जिसको केशरीसिह कहा–यहांपर मौजूदहै,–हरेक किसमके सांप–हरेककिसमकी मछलीयें–और–कबुतर–तोते वगेरारखेहुवे है अजायवघर–इतवारको वंद रहताहै दुसरे दिनोंमें जवतवीयत चाहे जाकर देखलो, ! कोइ रोकटोक नही,–

शहरके वहार दादावाडी–उमदा–और–चरनपादुकाकी छत्री काविलदेखनेके वनीहुइहै. जयपुरसे थोडीदूरपर एक–गलता–नामका स्थान–जलके झरने–कुड और मेदान सोहावनी जगहहै, जयपुरके जैनमंदिरोंके दर्शन करके यात्री–झालना–सागानेर–कनो–[illegible]–दसइ–झीर–जटवाडा–डोंसा–भाखरी–आरन–गढीकुइ–नमुरा जगड–दिगवाडा–मालाखेडा–महवा–होतेहुवे अलवर टेशन उतरे [illegible]किराया ग्यारहआने,–राजपुतानेके देशीराज्योंमें अलवर राज्य–[illegible]–अछाहे, शहर अलवरमें अछेअछे वाग–सराय–और–उमदा [illegible]ान वनेहुवे है, सवारीके लिये इक्का–वगी–टेशनपर तयार मि[illegible]ीहै शहरमें जाकर वहाके जैनमंदिरोंके दर्शनकरो,–सन्

कि-जहां-गर्देका नामनही. जयपुरके मकानोंकी कहांतक तारीफ करे हरमकानपर रंग और चित्रकारी वनीहुइहै, हरजगह पानीके नल और-रातको सडकोंपर लालटेनोंकी रौशनीहोती है, जयपुरके राजमहल वडेउमदा-और कीमती क्या! उमदावावनकचहरियां-जिनकी कतेवजे निराली है, देखकर ताज्जुवहोगा,

जैनश्वेतांवरश्रावकोंकेघर करीव (१२५) और-जहोरीवाजार मेवीवालोंकेरास्तेपर-दो-जैनश्वेतांवरमंदिर वनेहुवे है, जिनकीकारीगीरी-नक्शकारी-शंगमर्मरपथरका काम-वेलवुटे-और-चित्रकारीदेखकर दिलखुशहोगा.—जैनश्वेतांवरमुनिजनोंकेलिये ठहरनेके कइमकान यहांपरहै, घाटदरवजेके आगेकरीव (२) मीलकेघेरेमें-घाटनामसें एकउमदाजगह वनीहुइहै जहांपर अकसर वडेवडेआदमीयोंकी गोंठहुवाकरती है, और खानपान वनताहै, चाहे दुकाल पडे तोभीवहां आनंद वंधनहीहोता, रास्तेमेंदुतर्फा जालीदारमकान वीचमें सडक-मकानोंपर तरहतरहकी मेहरावे-महल-वागात-पानीकेहोज-चिश्मेआव-और-सडकपर फर्सपथरका लगाहुवा-जगह सोहावनी है, एकजैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर वेशकीमती वनाहुवायात्री इसकेदर्शन जरुरकरे, जयपुरमे हरजगह इक्का-वगी-किरायेपर तयारमिलते है,-वेठकर जहां-जी-चाहे सैरकरलो,—

सांगानेरीदरवजेके वहार-रामनिवासवाग—काविलदेखनेकी जगहहै, अजायवघरभी इसमें मौजूदहै, जिसमें दुनियाकी अजनवी चीजेरखीहुइ देखकर दिलको औरही असरहोती है, खास! ग्रहवेधके मकानकानकशा, तरहतरहकेसीके-नकलीआदमी-शंगमर्मरका वनाहुवा आगरेका ताजमहेल-हिंदुस्थानके तमामदेवताओंकी मूर्त्ति तीर्थंकरोंके समवसरणका आकार-शंगमर्मरका तामीरकियाहुवा निहायत उमदाहै, मुल्कवर्माका वनाहुवा चांदीकाकाम-सिंहकद्दी-

बनाया, बादशाह-शाहजहांने हमेशांके लिये इसमें अपनी सकुनत कायमकिइ. कइमहल-जनानखाना-दिवानेआम-और-दिवानेखास इसमें बनेहुवे है, देहलीसे तीनकोशके फासलेपर बादशाह-हुमायुका मुकबरा जो उसकी बेगमने अपनेखाविंदकी यादगीके लिये बनवायाथा सन (१५५४) में बनना शुरूहुवा और (१५७०) इस्वीमें तयार हुवाथा. दिवारमें नगीने जडेहुवेथे और-सुनहरी चित्रकारीका कामथा, मगर अब बेमरम्मत खाली मकान पडाहै, देहलीके अतराफ दसदस कोसके फासलेतक-कइइमारतें-और-मुकबरे बने हुवे बतौर खडहेरके पडे है. एकदिनवो रवनकथी-जो-देखनेवाले ताज्जुब करतेथे, आज वो ख्वावमेंभी नजर नही आती जमाने हालमें अंग्रेज सरकारकी अमलदारी मौजूदहै और सबलोग अमन चैन कररहे है,—

सन (१८७७) जनवरीमें यहां—एक—इम्पिरियल—अेंमेदरबारहुवाथा—उसवख्त बडाजलसा हुवाथा. सन (१९०३) जनवरीमें—महाराज—सप्तम—एडवर्डका दरबार यहां बडीशानसौकतसेहुवा, उसवख्त (२०) कोशके घेरेमें वास्तेदरबारके देहलीका मेंदानआरास्ता कियागयाथा. हिंदुस्थानकेसबराजा—नवाब—और—बडेबडेरहीश यहा जमाहुवेथे. और सवारीनिकलीथी. देहलीकेमकान उमदाननेहुवे—सडकेलबी—चोडी—हरजगह पानीकानल और—रातकों लालटेनोंपररौशनीहोती है, करीबटेशनकेपास एकधर्मशाला और—सरायबनीहुइहै—मुसाफिरलोग इसमेठहराकरते है, सवारीके लिये इका वगी तयारमिलते है, जमनानदीपर दो—मंजिला पुल—सन (१८६७) इस्वीमें—बनायागया, चांदनीचौक—जहोरीबाजार—दरीबा—अउेगुलजारहै, तरहतरहकी चीजें और मालअसबाब यहा मिलताहै. वर्क चांदीसोनेके—और—काम सलमेसितारोंका यहां इस-

(१८९१) की-मर्दुमशुमारीमें अलवरकी मर्दुमशुमारी-(५२३५८) मनुष्योंकी-थी, अलवरशहर पहाडके नीचेकी सतहपर बसाहुवाहै, राजमहेल उमदा-बाजार गुलजार-और अनाजका व्यापार यहां ज्यादहहै, टेशन और शहरकेबीच कंपनीबाग-काबिल देखनेकी जगहहै, अलवरमें जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी-और-मंदिर मौजूदहै, दर्शनकरके-वापिस टेशनपर आवे-और-देहलीके लियेरवाना होवे,-टेशन अलवरसे परिसाल-खेरस्थल-हरशौली-अजेरका--बावल-रेवाडी-खलीलपुर--जाटौली-पाटली-गढीहरसरू-गुडगांव-पालम-और-सरायरोहिला-होतेहुवे देहली जावे,-रैलकिराया सवारूपया लगताहै, कमींवेसी होगयाहो-तो-टाइमटेबलमें देखलेना,

(बयान-शहर-देहली,)

रैवाडीसे (५२) और गुडगांवसे (२०) मील-पूर्वोत्तर जमनाके पश्चिमकनारे देहली एकमशहूर और मारूफ शहरहै,-महाराज पृथवीराज चौहानके वख्त इसकीरवन्नक बहुतथी, और कस्बे मेहरोलीतक जहांकि-कुतुवकी लाटबनीहुइहै आबादथा.-महाराजपृथवीराजने जो अपनी अहदमें किला तामीर करवायाथा-अबतक उसकेनिशानात अतराफ देहलीके पायेजाते है,-पृथवीराज चौहानके जमानेतक हिंदुस्थानमें स्वयवर विवाह होताथा. और-लडाइके वख्त क्षत्रीयलोग शंवजातेथे, बेशुमार दौलत-और-बडेबडे इकबाल मट लोगथे, बहुत असैंतक देहलीके तख्तपर क्षत्रीयराजे सलतनते करते रहे, बाद-मुसल्मानोंकी सलतनत जारी हुइ और कइवादशाहोंने अमल्दारीकिइ. सन (१६४०) इस्वीमें-देहलीके तख्तपर शाहजहांवादशाह अमल्दारी करताथा, लालकिला जो-जमना कनारे अवमौजूदहै बहुत दौलतसर्फ करके नववर्षमें

बनाया, बादशाह-शाहजहांने हमेशांके लिये इसमें अपनी सकुनत कायमकिइ. कइमहल-जनानखाना-दिवानेआम-और-दिवानेखास इसमें बनेहुवे है, देहलीसे तीनकोशके फासलेपर बादशाह-हुमायुका मुकबरा जो उसकी बेगमने अपनेखाविंदकी यादगीके लिये बनवायाथा सन (१५५४) में बनना शुरूहुवा और (१५७०) इस्वीमें तयार हुवाथा. दिवारमें नगीने जडेहुवेथे और-सुनहरी चित्रकारीका कामथा, मगर अब बेमरम्मत खाली मकान पडाहै, देहलीके अतराफ दसदस कोसके फासलेतक-कइइमारते-और-मुकबरे बने हुवे बतौर खडहेरके पडे है. एकदिनवो रवन्नकथी-जो-देखनेवाले ताज्जुब करतेथे, आज वो ख्वाबमेंभी नजर नही आती जमाने हालमें अंग्रेज सरकारकी अमलदारी मौजूदहै और सबलोग अमन चैन कररहे है,—

सन (१८७७) जनवरीमें यहा—एक—इम्पिरियल—ऍमेदरबारहुवाथा-उसवख्त बडाजलसा हुवाथा. सन (१९०३) जनवरीमें-महाराज-सप्तम-एडवर्डका दरबार यहां बडीशानसौकतसेहुवा, उसवख्त (२०) कोशके घेरेमें वास्तेदरबारके देहलीका मैंदानआरास्ता कियागयाथा. हिंदुस्थानकेसबराजा-नवाब-और-बडेबडेरहीश यहा जमाहुवेथे. और सवारीनिकलीथी. देहलीकेमकान उमदाबनेहुवे-सडकेलंबी-चोडी-हरजगह पानीकानल और-रातकों लालटेनोंपररौशनीहोती है, करीबस्टेशनकेपास एकधर्मशाला और-सरायबनीहुइहै-मुसाफिरलोग इसमेठहराकरते है, सवारीके लिये इक्का बगी तयारमिलते है, जमनानदीपर दो-मजिला पुल-सन (१८६७) इस्वीमें-बनायागया, चांदनीचौक-जहोरीबाजार-दरीबा-अछेगुलजारहै, तरहतरहकी चीजें और मालअसबाब यहां मिलताहै. वर्क चांदीसोनेके-और-काम सलमेसितारोंका यहां इस-

(१८९१) की-मर्दुमशुमारीमें अलवरकी मर्दुमशुमारी-(५२३५८) मनुष्योंकी-थी, अलवरशहर पहाडके नीचेकी सतहपर वसाहुवाहै, राजमहेल उमदा-वाजार गुलजार-और अनाजका व्यापार यहां ज्यादहहै, टेशन और शहरकेवीच कंपनीवाग-काविल देखनेकी जगहहै, अलवरमें जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी-और-मंदिर मौजूदहै, दर्शनकरके-वापिस टेशनपर आवे-और-देहलीके लियेरवाना होवे,-टेशन अलवरसे परिसाल-खेरस्थल-हरशौली-अजेरका--वावल-रेवाडी-खलीलपुर--जाटौली-पाटली-गढीहरसरू-गुडगांव-पालम-और-सरायरोहिला-होतेहुवे देहली जावे,-रैलकिराया सवारूपया लगताहै, कमीवेंसी होगयाहो-तो-टाइमटेवलमें देखलेना,

☞ (वयान-शहर-देहली,)

रैवाडीसे (५२) और गुडगांवसे (२०) मील-पूर्वोत्तर जमनाके पश्चिमकनारे देहली एकमशहूर और मारूफ शहरहै,-महाराज पृथवीराज चौहानके वख्त इसकीरवन्नक वहुतथी, और कस्वे मेहरोलीतक जहांकि-कुतुवकी लाटवनीहुइहै आवादथा.-महाराजपृथवीराजने जो अपनी अहदमें किला तामीर करवायाथा-अवतक उसकेनिशानात अतराफ देहलीके पायेजाते है,-पृथवीराज चौहानके जमानेतक हिंदुस्थानमें स्वयवर विवाह होताथा. और-लडाइके वख्त क्षत्रीयलोग शंवजातेथे, वेशुमार दौलत-और-वडे-वडे इकवाल मद लोगथे, वहुत अर्सेतक देहलीके-तख्तपर क्षत्रीय-राजे सलतनते करते रहे, वाद्-मुसलमानोंकी सलतनत जारी हुइ और कइवादशाहोंने अमल्दारीकिइ. सन (१६४०) इस्वीमें-देहलीके तख्तपर शाहजहावादशाह अमल्दारी करताथा, लालकिला जो-जमना कनारे अवमौजूदहै वहुत दौलतसर्फ करके नववर्षमें

कुतुवलाटके पास एक-लोहकी छोटी लाटभी-खडीहै इसपर राजा धवके प्रतापका वयान लिखाहुवा दुसरे लेखमे-सवत् (११०९) दुसरे अनगपालका-और-आठमी सदीके पहलेके अनंगपालका नाम दर्ज हे, इससे सवुतहुवा-पहले अनंगपालने इसको तामीर करवाइ होगी, इसकी ऊंचाइ (२२)फुटकी-ओर चोडाइ (१६) इंचहै,—

देहलीके जैनमदिरोके दर्शनकरके-यात्री-तीर्थहस्तिनापुरकी जियारतको जावे, देहलीसे-शाहदरा-गाजियावाद-मुरादनगर-वेंगमावाद-महीउद्दीनपुर होतेहुवे मेरटसीटी टेशनपरउतरे,-रैल-किराया सातआने-नवपाइ, जिलेका सदरमुकाम मेरट एकवडा शहेरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवख्त-मेरटकी मर्दुमशुमारी (११९३९०) मनुष्योकी-वाजार वहुतवडा और जिसचीजकी दरकारहो यहां मिलसकती है,-मेरटमे हरतरहकी तिजारतहोती है जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी यहापर नही-न-जैनश्वेतांवर मदिरहै, वहारशहरके धर्मशाला मौजूद है यात्री इसमें कयामकरे, और दुसरेरोज तीर्थहस्तिनापुर-जानेकी तयारीकरे, जो (१८) कोशके फासलेपर खुश्कीरास्ते वाके है,-अववहा-न कोइवाशिंदा है-न-इमारते है,-सीर्फ ! मदिर और धर्मशाला वनीहुइ है, मेरटसे सवारी हरकिसमकी दस्तयाव होसकती है, जिसकदर रुपयाखर्च करेगे आरामपाओगे. मगर वखीलोंका रास्ताही अलायधाहै, न--वे-खासकते है-न-पुन्यकरसकते है. शुभहके गयेहुवे यात्री शामकों-खास हस्तिनापुरमें पहुचसकेगे. मेरटसे मोहानागाव तक पकी सडकामिलेगी, आगे छकोश कचा रास्ता है, खास ! हस्तिनापुरकेपास रेतकारास्ताभी मिलेगा, सडककी दोनोतर्फ हरकिसमके द्रख्तलगेहुवे गंगानदीकी तरावटसे हमेशां पडा सब्जीवनीहुइ

कदरउमदाननताहै-जो-दुसरीजगह-कमदेखोगे,--हरेककिसमकेमेवे-मीठाइ-दुकानोंमें मौजूदहै औरचोराहेपर चुरनवेचनेवाले दोहेकवित्त बोलकर अपनेचुरनकी तारीफकरते है, शामकेवख्त तरहतरहके खुमचेवाले औरफुलगजरेवेचनेवाले वाजारमेंनजरआते है, औरशौकीन लोग-उमदासेउमदाकपडे पहनकर हवाखोरीकेलियेनिकलते है, खानपान-बोलचाल-और-पुशाकयहांकी निहायतउमदा-बीचशहरके घंटाघरवनाहुवा औरइसकीअवाज दूरदूरतकजातीहै,-सन (१८९१) कीमर्दुमशुमारीमे देहलीकी मर्दुमशुमारी मयछावनीके (१९२५७९) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतावरश्रावकोंकेघर करीव (१००) और (२) जैनश्वेतांवरमंदिर यहांपरवनेहुवे है, वडामंदिरमहोले नवघरेमें-औरछोटा अचेलपुरीमे, जोकोइ जैनश्वेतांवर यात्री देहलीमें कदमरखे अवल नवघरेमें जावे और मदिरके दर्शनकरे, देहलीसे (४) कोशके फासलेपर छोटे दादाजीकी छत्री-और-कुतुवलाट-महरोलीके पास वडेदादाजीकी छत्रीभी वनीहुईहै कुतुव मिनार जिसको कुतुव लाट वोलते है देहलीसे करीव (१०) मीलके फासलेपर मौजूदहै, पेस्तर छमंजिलथी, भूकंपसे उपरका हिस्सा कुछटुटगया, सन (१८२९) में फिर वनायागया पेस्तर (२५०) फुट ऊचीथी अव (२४०) फुट रहगइ, इसकी पांचमजिले अव कायमहै, तीनमंजिलोमें लालपथर लगाहुवा उपरकी दोमें सफेद मारवल पथर लगाहै और इसके भीतरसें चक्करदार सीढीये वनीहुइ जिसके जरीये उपरसीरे तक जासकतेहो जव उपर चढकर चारोंतर्फ नजर करोगे-गाव-नगर वागवगीचे-दरख्तोकेझुंड-सडक-और-नदीयां वगेरा देखकर तवीयत खुशहोगी, और यह माल्म होगाकि-मानो ! आस्मानकी सैरको चलेहै, देहलीकी इमारते-आसपासके मुकवरे-और-पुराने खंडहेर टुटेफुटे मकानात देखकर पुराना जमाना याद आताहै,-

कुतुबलाटके पास एक-लोहकी छोटी लाटभी-खडीहै इसपर राजा, धवके प्रतापका बयान लिखाहुवा दुसरे लेखमे-सवत् (११०९) दुसरे अनंगपालका-और-आठमी सदीके पहलेके अनंगपालका नाम दर्ज है, इससे सबुतहुवा-पहले अनगपालने इसको तामीर करवाइ होगी, इसकी ऊचाइ (२२)फुटकी-ओर चोडाइ (१६) इंचहै,—

देहलीके जैनमदिरोके दर्शनकरके-यात्री-तीर्थहस्तिनापुरकी जियारतको जावे, देहलीसे-शाहदरा-गाजियावाद-मुरादनगर-बेंगमावाद-मईउददीनपुर होतेहुवे मेरटसीटी टेशनपरउतरे,-रैल-किराया सातआने-नवपाइ, जिलेका सदरमुकाम मेरट एकवडा शहेरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवख्त-मेरटकी मर्दुमशुमारी (११९३९०) मनुष्योंकी-बाजार बहुतवडा और जिसचीजकी दरकारहो यहां मिलसकती है,-मेरटमे हरतरहकी तिजारतहोती है जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी यहापर नही-न-जैनश्वेतांवर मदिरहै, वहारशहरके धर्मशाला मौजूद है यात्री इसमें कयामकरे, और दुसरेरोज तीर्थहस्तिनापुर-जानेकी तयारीकरे, जो (१८) कोशके फासलेपर खुश्कीरास्ते वाके है,-अववहां-न कोइवाशिंदा है-न-इमारते है,-सीर्फ ! मदिर और धर्मशाला बनीहुइ है, मेरटसे सवारी हरकिसमकी दस्तयाव होसकती है, जिसकदर रुपयाखर्च करोगे आरामपाओग. मगर वखील्लोंका रास्ताही अलायधाहै, न-वे-खासकते है-न-पुन्यकरसकते है. शुभहके गयेहुवे यात्री शामको-खास हस्तिनापुरमें पहुचसकेगे. मेरटसे मोहानागाव तक पकी सडकमिलेगी, आगे छकोश कचा रास्ता है, खास ! हस्तिनापुरकेपास रेतकारास्ताभी मिलेगा, सडककी दोनोतर्फ हरकिसमके दरख्तलगेहुवे गंगानदीकी तरावटमे हमेशां यहां सब्जीवनीहुइ

है. और द्रख्तभी वडेवडेवुलंद और-पुख्ता-मोसमगर्मामेंभी यहां पर वनिस्पत दिगरमुल्कोके गर्मी कमपडती है, वल्कि! शुभहके वख्त किसीकदर शर्दीभी मालुमहोती है,-मोहानागांवसें आगे एक मौजा-जिसकानाम गणेशपुर। है,—मिलेगा,

☞ [तवारिख-तीर्थ-हस्तिनापुर]

हस्तिनापुर एक पुराना शहरहै-तीर्थकर रिषभदेव महाराजने साधुपनेकी हालतमें वैशाख सुदी तीजके रौज अपने वार्षिक तपेका पारना यहां कियाथा, तीर्थकर शांतिनाथ महाराज इसी हस्तिनापुरमें पैदाहुवे, चवन-जन्म--दीक्षा-और--केवलज्ञान-ये चार कल्याणिक उनके यहांहुवे, विश्वसेन राजाके घर अचिरा रानीकी-कुखसे जेठवदी (१३) भरणी नक्षत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, तीर्थकर शांतिनाथ महाराज चक्रवर्त्ती पदवीके धारक हुवे और वहुत अर्सेतक उनोने यहांपर अमलदारीकिइ, पेस्तरदीक्षालेनेके एक सालतक उनोने यहां खेरातकिइ, और जेठ वदी (१४) के रौज दुनिया फानीसरायकों छोडकर उनोने यहां दीक्षा इख्तियार किइ, पौषसुदी (९) के रौज उनोकों यहां केवल ज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवते वगेरा उनकी खिदमतमें हाजिर होतेथे,-सतराहमें तीर्थकर कुंथुनाथ महाराजभी इसीहस्तिनापुरमें पैदाहुवा,--चवन-जन्म-दिक्षा-और-केवलज्ञान--ये-चारकल्याणक उनके यहांहुवे, सुरराजाके घर--श्रीरानीकी कुखसे वैसाखवदी (१४) कृत्तिकानक्षेत्रके रौज उनका यहाजन्म हुवा, तीर्थकर कुंथुनाथ महाराजभीचक्रवर्त्ती पदवीके धारकथे, और वहुतअर्सेतक उनोने यहापर अमलदारी किइ, दीक्षाके पेस्तर एकसाल तक वरावर उनोनेयहां खैरात किइ, चैतवदी (५) के रौज दुनियाके एशआराम छोडकर उनोने यहा दीक्षा इख्तियारकिइ, चैतसुदी

(३) के रौज उनको यहां केवलज्ञानपैदाहुवा, इंद्रदेवतेवगेरा उनकी खिदमतमें आतेथे,–

अठारहमें तीर्थंकर अरनाथ महाराजभी इसी हस्तिनापुरमें पैदाहुवे, चवन–जन्म–दीक्षा–और–केवलज्ञान–ये–चार कल्याणक उनके यहां हुवे, सुदर्शन राजाके घर–देवीरानीकी कुखसे मृगशीर्ष सुदी (१०) रेवती नक्षत्रके रौज उनका यहा जन्महुवा, तीर्थंकर अरनाथ महाराजभी चक्रवर्त्ती पदवीके धारकथे और बहुत अर्सेतक उनोने यहांपर अमलदारी किइ, दीक्षाके पेस्तर एकसालतक उनोने यहांबहुत खैरातकीइ, और मृगशीर्ष सुदी (११) के रौज दुनीयवीकारोंबार छोडकर उनोने यहां दीक्षा इख्तियार किइ, कार्तिक सुदी (१२) केरोज उनोकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, उनकी खिदमतमें इंद्रदेवता हाजिर रहतेथे,

उन्नीसमें तीर्थंकर मल्लिनाथमहाराज यहां तशरीफ लायेथे, और उनका समवसरण यहांपरहुवाथा,–कौरव–पांडवोका युद्धइसी हस्तिनापुरके मेंदानमें हुवाथा, सुभूमचक्रवर्त्ती इसीहस्तिनापुरके तख्तपरहुवा, वडीवडी अजुवावाते यहापर गुजरचुकी है. वहुतसें खुशनसीव–इकवालमंद–आलीम–फाजील–जमामर्द–दलेर–और–वहादूरशख्श यहां पैदाहुवे कहातक लिखे? कार्त्तिकशेठ–इसी हस्तिनापुरके रहनेवालेथे, महर्षि–दमदंत–यहापर तशरीफलाये और मुकम्मीलइवादत यहांपरकिइ, ऐसीऐसी जडीबुटीयें यहांजगलमें खडी है जिनके पहिचाननेवाले नहीरहे, तीनतीन–चारचार कोसकेघेरेमें वहुतसी नासपातीयोके द्रख्त, मशलन ! जामुन–अमरुद–अनार–शरीफे–अमरख–शम्ल–शिशम–वेल वगेरा हरकिसमके पेंड यहापरखडे है, पटेराके पेंड जिसकी चटाइ वनजाती है यहा कसरतसे देखोगे,–अय्यामवारीशमें कभीकभी यहा–नवाहि-

रातके नगीने जमीनसे निकस आते है इससे सबुतहोता है पेस्तर यहांके लोग वडेमालामालथे,—

जोकोइयात्री हस्तिनापुरमें तशरीफलावे अपने खानेपीनेका इंतजाम-मेरट-या-मोहानागांवसे करते आवे, (यानी) आटादाल -घी-सकर-मिठाइवगेरा शाथलेतेआवे,-अगर किसीचीजकी दरकार पडे पूजारीको बुलाकर कहसकतेहो वह इंतजाम करसकेगा, और गनेशपुरेसें-या--वसुमागांवसें चीजमंगवाकर तुमकोदेसकेगा, खास हस्तिनापुरमें--जहाकि--वडाआलिशान जैनश्वेतांवरमंदिर और धर्मशाला वनीहुइ है यात्रीउसमें कयामकरे,-और तीर्थकी जियारतकरे, पेस्तर यहां तीर्थकर शांतिनाथ-कुंथुनाथ-और-अरनाथमहाराजके वडेवडे कीमतीमंदिर वनेहुवेथे, वीचलेदिनोमें जब हस्तिनापुर विरानहोतागया ऐसा वख्तभी आगयाथाकि-थोडी दूरपर एकद्रख्तकेनीचे तीर्थंकर शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ महाराजके कदमकी छत्रीही सीर्फ ! कायमरहगइथी. जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी पेस्तरसेही वरवादहोगइथी, जब-जहोरी-परतापचंदजी-पारसान-साकीनकलकत्ता यहांपर तशरीफलाये, और देखाकि-तीर्थ-दिनपरदिन विरानहोजाताहै करीव एकलाखरुपये खर्चकरके उमदा आलिशान जैनश्वेतावर मंदिर तामीरकरवाया, और संवत् (१९२९) वैशाखसुदी तीजकेरोज उसकी प्रतिष्टाकिइ, एकधर्मशाला निहायत उमदा वनवाइ जिसमें (६) कोठरी और आठदालान वनेहुवेहै, जोकोइ जैनश्वेतावर यात्रीआतेहै इसीमें कयामकरते है, ज्यादहयात्री आनेपर वेशक ! विदून दुसरी धर्मशालाके तकलीफहोती है कोइखुशनसीव यहां दुसरी धर्मशाला तामीरकरावे उमदावातहै, वडेतीर्थेमें वहुतसीधर्मशाला वनीहुइ रहती है और वहा दूसरी वनवानेवालेभी वहुत है, मगर तारीफ उसी शख्शकी है जो एसीजगहपर खयालकरे,—

बगीचा एकयहांपर मंदिरकी पूर्वतर्फबना हुवाहै मगर बंदरोंके सबब द्रख्तोंकी बढवारी कमहोती है, ताहम ! इसमे हरेक किसमके द्रख्त मौजूदहै, मशलन ! आम-अमरूद-कमरख-खीरनी-अनार-नीबु-चकोतरा-नारंगी-शरीफा-जामुन-जमोआ-सीसम-नीबवगेरा, और फुलभी हरेककिसमके पैदाहोते है मंदिरमे मूलनायक तीर्थकर शांतिनाथ महाराजकी करीब डेडहाथ बडीमूर्त्तितख्तनशीन है,-जो राजासंप्रतिकी तामीरकिइ-वही--निशान इसपर पायेजाते है, दाहनीतर्फ सीमंधर स्वामीकी मूर्त्ति करीब सवाहाथ बडी जायेनशीनहै और यहभी-राजासंप्रतिहीकी तामीर कराइहुइहै बायी तर्फ तीर्थकर अभिनंदन स्वामीकी मूर्त्ति सवाहाथबडी जायेनशीन है और उसपर लिखाहै-संवत् (१६८२) जेठवदी नवमी गुरूवारके रोज यहप्रतिष्ठित किइगइ,-तपगछके आचार्य-विजयदेव सूरिजीके जमानेमे-विवेकहर्षगणिके शिष्य-महोपाध्याय-मुक्तिशागरगणिने इसकीप्रतिष्ठाकिइ, एकमूर्त्ति करीब पौनहाथ बडी जो-तीर्थकर शांतिनाथ भगवानकी है उसपर संवत् (१९३१) लिखा है, नवमूर्त्ति-सर्वधातुकी-और-एकसिद्धचक्र यत्रभी-बनाहुवा मौजूदहै, परकम्माके पास दाहनीतर्फके जिनालयमे तीर्थकर कुंथुनाथ भगवानकी मूर्त्ति जायेनशीनहै, और उसपर संवत् (१९३१) लिखाहै, बायीतर्फके जिनालयमें तीर्थकर-अरनाथ भगवानकी मूर्त्ति जायेनशीन है और उसपरभी संवत् (१९३१) का-दर्ज है,--अधिष्ठात्रीदेवी निर्वाणी--और--यक्ष गरूडकी मूर्त्ति संवत् (१९०९) वेशाख सुदी तीजकी प्रतिष्ठितभी इस मंदिरमें मौजूदहै,—

मंदिरका चौक निहायत उमदा-जस-स्नात्रपूजन-पढाइजाती है सबलोग इसीमे बेठतेहै, उपर इसके लोहेकी जाली लगी हुइहै-

ताकि-कबुतर-चिडीया वगेरा इसमें-न-जासके, मंदिरके पास-जमीन-जहोंरीपरतापचंदजी पारसानकी खरिदीहुइ मौजूदहै अगर कोइ खुशनसीब यात्री यहां दुसरी धर्मशाला-या-मंदिरबनवाना चाहे बना सकते है,-इसकी जेर निगरानी आजकल देहलीके जैन-श्वेतांबर श्रावकोंके ताल्लुकहै, जोकुछ चढापा मंदिरमें चढताहै भंडारमें जमाहोती है. और पूजारीकी तनखाह मुकररहै,-

तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके कदमोकी छत्री-जो-उत्तरतर्फ सवामीलके फासलेपर बनीहुइहै, इसकी पूजावगेरेका इंतजामभी जैनश्वेतांबर संघके ताल्लुकहै, असलमें पुरानीजगह यही है, मंदिरसें छत्रीतकजाते रास्तेमें जो-नाला-आताहै, बहुतसे खजुरीके पेंड-और--ककडी-खरबुजे-कुष्माड--घियावगेरा यहां कसरतसे पैदाहोते है. पानीयहांपर जमीनमें बहुतनजदीक अगर पांचहाथ-जमीन खोदीजावे फौरन ! पानी निकलआताहै, जगह सोहावनी और तरहतरहकी जडीबुटीयें यहांपरखडी है, छत्रीमें तीर्थंकर रिषभदेव भगवानके कदमतख्तनशीनहै यात्री वहांजाकर दर्शनकरे, छत्री पुरानीहोजानेकी वजहसे इसकीमरम्मत होनादरकारहै, दिवारे इसकी टेडीपडगइहै और कहीकही दराजेभी नजरआती है. अगर कोइयात्री इसकी मरम्मत करानाचाहे करीब (५०००) रुपये लगेगे अतराफ छत्रीकेहाता लोहेकेसिकचोंका बनवादियाजाय-और-एक मजबूतदरवजा तयारकरके उसकेकिवाड बनादियेजाय-तो-छत्रीकी हिफाजतहोगी,-छत्रीपर बेठकर चारोतर्फ नजरकरते है तो शिवाय जंगलके दुसरीकोइचीज नजरनहीआती, चारकोशके फासलेपर गगानदीकी धारा बहरही है और जगह बहुतही सुहावनी दिखाइदेती है जिसकेबडेभाग्यहो-ऐसे-तीर्थकी जियारतकरे, छत्रीके दर्शनकरके यात्री वापिस धर्मशालामें आवे. जहांसेगयेथे,

हस्तिनापुरकी जियारतकरके वापिस उसीरास्ते टेशन मेरट और मेरटसे रैलमें सवारहोकर मुल्कपंजावके जैनतीर्थोकी रतको जाना,—

(तवारिख हस्तिनापुर खतमहुइ.—)

☞ [बयान-शहर-अंबाला-और-लुधिहाना]

मेरटसे मेरट केटोन्मेंट-सरधना-खतौली-मन्सुरपुर-मु नगर-रोहाना-देवबंद-नगाल-टपारी--सहारनपुर-सरसवा- नोर-जगाद्री-दराजपुर-मुस्तफावाद-बराराकेशरी--और-अ केन्टोन्मेंट-होतेहुवे टेशन अंबालासीटी उतरना,-रैलकिराय रुपया छ आने नवपाइ, जिलेका सदरमुकाम अंबाला एक शहरहै,-तवारिखोंमें बयानहैकि इस्वीसनकी चौदहमी शत एक अंबाजी नामके राजपुत महाशयने इसकों आवादकि इसीलिये अंबाला नाम मशहुरहुवा,-सन (१८९१) इस मर्दुमशुमारीके वख्त--अंबालेकी मर्दुमशुमारी मय छाः (७९२९४) मनुष्योंकी थी.-बाजार गुलजार-और जिस की दरकारहो यहा मिलसकती है, पूरी--कचौरी मिठाइ-हर तयार मिलेगी, यात्रीको कोइ तकलीफ-न-होगी, अंबालेमें अनाज-दरी-और-कपडेकी तिजारत ज्यादहहै,-शहर और नीकेवीछ सरकारीइमारतें-कचहरी-खजाना-और-स्कुल व मकानात बनेहुवे है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और म मौजुदहै, यात्री दर्शनकरके आगे लुधियानेकों जावे,-अंबाले सभु-राजपुरा-सराइबजार-साधुगढ--सरहिंद-गोविंदगढ-ख चावा-दुराहा-सनाहवाल-और डडारी होतेहुवे टेशन लुधिय उतरे,-रैलकिराया तेरहआने तीनपाइ,-अंबालेसे (७१)

पश्चिमोत्तर शतलज नदीसे (८) मील दखनकी तर्फ-जिलेका सदर मुकाम लुधिहाना एक उमदा शहरहै, सन (१४४०)इस्वी में लोदीखानदानके युसुफ और निहंगामके शाहजादोने इसकों आबादकियाइसलिये लुधिहाना कहलाया,-सन (१८९१) की मर्दुम शुमारीके वख्त लुधिहानेकी मर्दुम शुमारी (४६३२४) मनुष्योंकीथी,-जिला कचहरी-सराय-खेराती अस्पताल-और स्कुल अछी लागतके मकान बनेहुवे है, कश्मीरी-कावली-और-पठाण लोग यहां ज्यादह रहते है. शाल-दुसाले-और पशिमेका काम यहां लाइकतारीफके बनताहै,-पघडी दुपट्टे और हरेक किसमकी सोदागीरी यहांपर होती है,-बाजार गुलजार खानपानकी चीजें पुरी-कचौरीमीठाइ वगेरा यहां उमदा बनती है,-जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी-और मंदिर यहांपर बनाहुवाहै, यात्री दर्शन करके आगे जालंधरकों-जावे,-लुधिहानेसे रैलमें सवार होकर लाधोवाल-फिलोर-गोराया-फगवाडा-और-चिहेरु होते जालंधर टेशन उतरे, रैलकिराया छआने छपाइहै,-जिलेका सदर मुकाम जालंधर एक पुराना शहरहै, सिकंदरकीचढाइके पेस्तर जालंधर कटौचराजपुतोकी राजधानीथी, सातमी सदीमे-चीनके मुसाफिर हवांक्तसांगने जब जालंधर शहरको देखाथा अपनी तवारीखमें लीखाहै उसवख्त दोमीलके घेरेमेंथा सन (१७६६) के करीब सिख्खोंके कबजेमें आया, जमाने हालमें अमल्दारी अग्रेज सरकारकी यहां पर जारीहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमे जालंधरकी मर्दुमशुमारी (६६२०२) मनुष्योकीथी, सरकारी कचहरीया-जनानास्कुल-और-सरायवगेरा पुख्ता मकान बनेहुवे है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और मंदिर यहां मौजूदहै, यात्री दर्शनकरे, बाजार बडागुलजार पुरीकचौरी-उमदामिठाइ-और गर्मदूध जबचाहो

तयारमिलशकता है,-रैशमका काम यहा लाइक तारिफके वनताहै, जालंधरसे खुश्की रास्ते (१८) कोशके फासलेपर होशियारपुर एक अछा कस्वाहै,-जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी और मदिर वहांभीमौजूदहै, फुरसत हो-तो-वहाभी जावे, और अगर फुरसत न-हो-तो जालधरसे रैलमेंसवार होकर आगे अमृतसरके लिये रवाना होवे—सुरानसी—करतारपुर—हमीरा—वीझ—बुटारी जडियाला-और-मननवाल टेशन होते अमृतसर टेशन उतरे, रैल-किराया नवआने तीनपाइ,

[दरबयान-शहर-अमृतसर,]

मुल्कपंजावमें अमृतसर एकवडा-नामीग्रामी शहरहै, रैलवे टेशनसें करीव आधमीलके फासलेपर आवादी शुरूहोती है, सवा-रीकेलिये इक्का-वगी-टेशनपरतयार मिलेगी, सन (१५७४) इस्वीमें सिख्खोके गुरू-रामदासजीने इसको आवादकिया, और अमृतसर नामका एक तालाव वनाया जिसकी वजहसें शहरका नाम अमृतसर कहलाया,-सन १८०९) इस्वीमें महाराज-रण-जितसिहजीने गोविदगढ किला वनवाया,-सन (१८९१) कीम-र्दुमशुमारीमें अमृतसरकी मर्दुमशुमारी-(१३६७६६) मनुष्योंकी थी,-शाल-दुशाले यहा आलादर्जेके तयार होते है, अदाज चार हजार कश्मिरी कारीगीर यहा दुशाले वनानेका कामकरतेहै, और (८००) रूपये तकका दुशाला यहा तयारहोताहै,-सिख्ख-क्ष-त्रीय-ब्राहमन--शेठ-साहुकार-अफगान-कश्मिरी-नयपाली-बुखारा वाले-और वलुचीस्तान वगेराके लोग-यहा आवादहै, वाजारमें हरकिसमकी चीजे-पुरी-कचौरी-मिठाइ-जवचाहो तयारहै,-टाउ नहोल-अस्पताल-और-स्कुल-वगेरा मकान अछे वनेहुवे है. उनी रेशमी कपडे-और-कारचोबीका काम-यहा लाइक ५.

(वयान-शहर-लाहोर-और-गुजरानवाल,-)

मुल्कपंजावमें रावी नदीके वाये कनारे लाहोर एकवडा नामी शहरहे, लाहोरकी मर्दुमशुमारी छावनीकों मिलाकर (१७६८५४) मनुष्योंकी-लाहोर शहर मुल्क पंजावमें पुरानाहै, चीना मुसाफिर व्हांत्सांगने अपने सफरनामेमें लिखाहै मुल्कपजावमें लाहोर शहर वडागुलजारथा, सन (९७७) इस्वीमें लाहोरके तख्तपर छत्रपति-राजा-जयपाल अमलदारी करताथा, वादशाह अखवरने लाहोरको तरक्कीपर किया,-और किल्लेको वढाया. वादशाह जहांगीर लाहोरमें वहुत मुदततक रहा, सिख्खोके महाराज रणजितसिंहने सन (१७९९) इस्वीके अर्सेमें लाहोरपर अमलदारी किइ. जमाने हालमें अंग्रेज सरकारकी अमलदारी यहांपर जारी है, लाहोरकी चारोंतर्फ (१५) फुटउंची-इंटोकी दिवार और (१२) दरवजे है, शहरपनाहके वहार चारोंतर्फ पक्की सडक वनीहुइ.-और टेशनके पास एक धर्मशाला मौजूदहै,-पानीका नलहरजगह लगाहुवा-और सडकोंपर रातके वख्त लालटेनोंकी रौशनी होती है, अनारकली चौक वडा वाजारहै, हरेक चीज यहांपर मिलसकती है,-पुरी कचौरी-मिठाइ वगेरा खानपानकी चीजे यहां उमदा वनती है,—

चीफकोर्ट दो मंजिली इमारत वनीहुइहै, चिडियाखानेमें तरहतरहके जानवर रखेहुवे है, यहांके गालिचे उमदा और-अमारिका इग्लांड तक भेजे जाते है, रावीनदीपर नावका पुल वधाहुवा-जिसपर होकर शाहदरा जानेका रास्ताहै, रेशम और सोनाचांदीके लेश-लाहोरमें-उमदा वनतेहै, पोस्टओफिस-टेलीग्राफ आफिस-अजायवघर-गवर्नमेटकालेज-छोटीकचहरीयां-मेओ अस्पताल-किला-सिख्खमंदिर-शीशमहल वगेरा वडी लागतके मकानात है,

छावनी मियांमीर-लाहोरसें-तीनमीलदुरहै, शालामार वाग-टंकशाल दरवजेसें (६) मीलके फासलेपर काविल देखनेकी जगहहै, सन (१६३७) में वादशाह शाहजाके हुकमसें वनाया गयाथा,—

लाहोरसे रायविंड और-खानावाल जंकशन होतीहुइ एकरैलवे लाइन मुलतानकोंभी गइहै, जोकि-आगे-सिंधहैदरावाद और कराचीतक जारीहे, मुलतान शहर वडाहै,-जैन-श्वेतांवर श्रावकोके घर अदाज (७०) और-एक जैनश्वेतावर मदिर वाजार चुडीसरायमें वनाहुवाहै, मूलनायक तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजकी मूर्त्ति सवत् (१८६४) की प्रतिष्ठित इसमें तख्तनशीनहै, दुसरी एकमूर्त्ति-जोकि-वादामी रंगकी है राजासंप्रतिके वख्तकी वनीहुइ-वही निशानात उसपर पायेजाते है जोराजा संप्रतिकी वनाइ मूर्त्तिपर होते है, मुलतानसे डेहरा गाजीखान-नजदीकहै और वहांभी जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मदिरहै,-यात्रीकों-मुलतान जानेकी फुरसतहो तो जावे-और-अगर फुरसत-न-होतो शहर गुजरानवालको जाय,

☞ [वयान-शहर-गुजरानवाल.]

लाहोरसें रैलमें सवार होकर वादामीवाग-शाहदरा-मुरीदकी कामोकी-और-अमीनावाद होते गुजरानवाल टेशन उतरे, रेलकिराया सातआने-नवपाइ लगते है, जिलेका सदर मुकाम गुजरानवाल एकअछा शहरहै, मर्दुमशुमारी गुजरानवालकी (२६७८९) मनुष्योंकी लाहोरके महाराज रणजितसिंहके वालिद यहा रहतेथे, जमाने हालमें अमल्दारी यहापर अंग्रेज सरकारकी जारी है, जिले गुजरानवालके पश्चिमोत्तर चनावनदी-और-शाहपुर जिलाहै, दखनपश्चिमको झंग-मोंटगोमरी-लाहोर जिला--और--पूरवको

(वयान-शहर-लाहोर-और-गुजरानवाल,-)

मुल्कपंजाबमें रावी नदीके वाये कनारे लाहोर एकवडा नामी शहरहे, लाहोरकी मर्दुमशुमारी छावनीकों मिलाकर (१७६८५४) मनुष्योंकी-लाहोर शहर मुल्क पंजाबमें पुरानाहै, चीना मुसाफिर वहांक्तसांगने अपने सफरनामेमें लिखाहै मुल्कपंजाबमें लाहोर शहर वडागुलजारथा. सन (९७७) इस्वीमें लाहोरके तख्तपर छत्रपति-राजा-जयपाल अमलदारी करताथा, वादशाह अखवरने लाहोरकों तरक्कीपर किया,-और किलेकों वढाया. वादशाह जहांगीर लाहोरमे वहुत मुद्ततक रहा, सिख्खोंके महाराज रणजितसिंहने सन (१७९९) इस्वीके अर्सेमें लाहोरपर अमलदारी किद. जमाने हालमें अंग्रेज सरकारकी अमलदारी यहांपर जारी है, लाहोरकी चारोतर्फ (१५) फुटउंची-इंटोकी दिवार और (१३) दरवजे है, शहरपनाहके वहार चारोंतर्फ पकी सडक वनीहुइ.-और टेशनके पास एक धर्मशाला मौजूदहै,-पानीका नलहरजगह लगाहुवा-और सडकोंपर रातके वख्त लालटेनोंकी रौशनी होती है, अनारकली चौक वडा वाजारहै, हरेक चीज यहांपर मिलसकती है,-पुरी कचौरी-मिठाइ वगेरा खानपानकी चीजे यहां उमदा वनती है,—

चीफकोर्ट दो मंजिली इमारत वनीहुइहै, चिडियाखानेमें तरहतरहके जानवर रखेहुवे हैं, यहाके गालिचे उमदा और-अमारिका इग्लांड तक भेजे जाते है, रावीनदीपर नावका पुल वधाहुवा-जिसपर होकर शाहदरा जानेका रास्ताहै, रेशम और सोनाचांदीके लेश-लाहोरमें-उमदा वनतेहै, पोस्टओफिस-टेलीग्राफ आफिस-अजायवघर-गवर्नमेंटकालेज-छोटीकचहरीयां-मेओ अस्पताल-किला-सिख्खमंदिर-शीशमहल वगेरा वडी लागतके मकानात है,

नहीथा,–पीछेसे जैन मजहबपर पाबंदहुवा, उसकी पटरानी प्रभावती पेस्तरसेही जैन मजहबसे ताल्लुक रखतीथी जोकि–विशाला नगरीके चेडा राजाकी बेटीथी. जब–गांधार नामका श्रावक जैन तीर्थोकी जियारत करताहुवा यहां आयाथा, उसके साथ तीर्थंकर महावीर स्वामीकी चंदनमय मूर्त्तिथी, राजा उदयनके दरबारमे उसकी बडी तारीफहुइ, गांधार श्रावकने खुशहोकर वहमूर्त्ति–राजा उदयनकीरानी प्रभावतीकों दिइ, और प्रभावतीने अपने जेबखर्चसे एकबडा आलिशान मंदिर बनवाकर उसमें–वह–मूर्त्ति तख्तनशीन किइ,–हरहमेश उसकी पूजन करतीरही,–जब प्रभावतीने–दुनीयवीकारोबार छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, और उसका इतकाल हुवा; उज्जेनका राजाचंडप्रद्योत पोशिदगीसे वीतभय पतनमे–आया और एक स्वर्ण गुलिका दासी–और–उसमूर्त्तिकों उज्जेन लेगया, जब उदयनकों यहबात मालूम हुइ बडी फौजलेकर चड प्रद्योतका पीछा किया–मारवाडके रास्ते मुल्क मालवेमें जाकर शहर उज्जेन कों घेरा, चंड प्रद्योतभी बडी तयारीसे सामने आया और दोनोंका जगहुवा, आखरीश–चंड प्रद्योतने सिकस्तखाइ, और उदयनकी फतेहहुइ,–इस किस्सेका कुछ हिस्सा उज्जेनकी तवारिखमें बतलायगे, यहांइतनाही लिखना काफी हैकि–उदयनकी फतेह हुइ और अपनेवतन वितभय पत्तनकों लोटआया,–

भेरेकस्बेकी मर्दुमशुमारी (१७४२८) मनुष्योंकी––बाजार रौनकदार–और–हरेक किसमकीचीजें यहांपर मिलसकती है, पेस्तर जैनश्वेताम्बर श्रावक यहां बहुतथे, मगरदिनपरदिन कमहोते गये, थोडे अर्सेकी बातहै दोचार श्रावकथे–मगर–वेभी शहरगुजरानवाल तर्फ चलेगये, एक–जैनश्वेताम्बर मदिर यहापर मौजूदहै, और एकपूजारी तैनातहै, आये गये यात्रीयोंसे खर्चचलताहै,

स्यालकोट जिलाहै,शहर गुजरानवालका बाजार अछा–और–हरेक किसमकी चीजें यहांपर मिलसकती है, दिवानी–फोजदारी कचहरियां–सडक लंबीचौडी–और–मकान पक्केबनेहुवे है, शालदुशाले और रेशमका काम यहां अछा होताहै, जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर करीव (७९) और––एक––जैनश्वेतांबर मंदिर यहांपर बनाहुवाहै, यात्री दर्शनकरे, आधेमीलके फासलेपर जैनश्वतांवराचार्य––न्यायांभोनिधि––महाराज आत्मारामजी–आनंदविजयसूरिजीके चरनोंकी छत्री वडी लागतसे वनीहुइहै,–यात्री वहां जाकर गुरूवंदनका फायदा हासिल करे, और फिर गुजरानवालके आगे वितभय पत्तननगर जिसका नाम आजकल भेंरा कस्वा बोलते है जावे. टेशन गक्कर–वजीरावाद–केंथला–शहर गुजरात–लाला मुसाजंकशन–जौराह–डिगा–चिलियानवाल–वहउद्दीन––आला––हरिवाह–मुल्कोवाल जंकशन–मियानी–हुजुरपुर–होते भेंरा टेशन उतरे गुजरानवालसे वजीरावाद तक रेलकिराया करीव तीनआने नवपाइ, वजीरावादसे लालामुसातक तीनआने नवपाइ, लालामुसासें मुल्कोंवालतक आठआने छपाइ, और मुल्कोंवालसें भेंरेतक तीनआने तीनपाइ लगते है,–

[तवारिख–तीर्थ–वीतभयपतन,–]

आवश्यक सूत्रमे–इसकानाम वितभय पतन नगर लिखाहै, जमाने तीर्थंकर महावीर स्वामीके–यहांपर–राजा उदयन–अमलदारीकरताथा, जोकि–वितभय *उदयनके नामसे मशहूरथा, उसवक्त शहर वडागुलजार और वेशुमार दौलतथी, वडेवडे जैन मंदिर और–इमारते पायदार संगीन वनीहुइथी. राजा उदयन पेस्तर जैन

* कौशांबीका राजा उदयन वत्सउदयन कहलाताथा.—

नहीथा,-पीछेसे जैन मजहवपर पावंदहुवा, उसकी पटरानी प्रभावती पेस्तरसेही जैन मजहवसे ताल्लुक रखतीथी जोकि-विशाला नगरीके चेंडा राजाकी वेटीथी. जव-गांधार नामका श्रावक जैन तीर्थोकी जियारत करताहुवा यहां आयाथा, उसके साथ तीर्थंकर महावीर स्वामीकी चंदनमय मूर्त्तिथी, राजा उदयनके दरवारमे उसकी वडी तारीफहुइ, गांधार श्रावकने खुशहोकर वहमूर्त्ति-राजा उदयनकीरानी प्रभावतीकों दिइ, और प्रभावतीने अपने जेवखर्चसें एकवडा आलिशान मंदिर वनवाकर उसमें-वह-मूर्त्ति तख्तनशीन किइ,-हरहमेश उसकी पूजन करतीरही,-जव प्रभावतीने-दुनीयवीकारोवार छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, और उसका इंतकाल हुवा; उज्जेनका राजाचंडप्रद्योत पोशिदगीसे वीतभय पतनमे-आया और एक स्वर्ण गुलिका दासी-और-उसमूर्त्तिकों उज्जेन लेगया, जव उदयनकों यहवात मालूम हुइ वडी फौजलेकर चंड प्रद्योतका पीछा किया-मारवाडके रास्ते मुल्क मालवेमें जाकर शहर उज्जेनकों घेरा, चड प्रद्योतभी वडी तयारीसे सामने आया और दोनोंका जगहुवा, आखरीश-चड प्रद्योतने सिखस्तखाइ, और उदयनकी फतेहहुइ,-इस किस्सेका कुछ हिस्सा उज्जेनकी तवारिखमें वतलायगे, यहाइतनाही लिखना काफी हैकि-उदयनकी फतेह हुइ और अपनेवतन वितभय पत्तनकों लोटआया,-

भेरेकस्वेकी मर्दुमशुमारी (१७४२८) मनुष्योंकी--वाजार खन्नकदार-और-हरेक किसमकीचीजें यहांपर मिलसकती है, पेस्तर जैनश्वेतांवर श्रावक यहा वहुतथे, मगरादिनपरादिन कमहोते गये, थोडे अर्सेकी वातहै दोचार श्रावकथे-मगर-वेभी शहरगुजरानवाल तर्फ चलेगये, एक-जैनश्वेतांवर मंदिर यहांपर मौजूदहै, और एकपूजारी तैनातहै, -आये गये यात्रीयोंसे खर्चचलताहै,

ऐसी जगहपरकोइ यात्रीमंदिरकी मरम्मत करावे—और—धर्मशाला बनवावे वहुतअछीवातहो, वरना ! जोकुछ अवहै वह-भी-न-रहेगा, यात्री यहां आनकर मंदिरके दर्शनकरे, और जो-कुछ वनपडे तीर्थमें देवे, तीर्थमें खेरात करना वडापुन्यहै, भेरेके पास-पिंडदादन खानमें जैनश्वेतांवर श्रावककोंके घर पनराह वीस आवादहै, तीर्थ वितभयपतनकी जियारत करके यात्री रैलमेंसवार होवे और मुल्कोंवाल जंकशन होतेहुवे वापिस लालामुसाजंकशन आवे, लालामुसासे शहर गुजरात और केथला टेशनहोते वजीरा-वाद जंकशन उतरे, रैलकिराया पेस्तर लिखचुके है, वजीरावादसे जंबुजानेवाली रैलमें सवार होकर-सोधरा-वेगोवाला-संब्रियल-उगोकी-स्यालकोट-डालोवाली-सुचेतगढ-रणविरसिंह-मिरानसा-हव-और-सतवारी कैंटोन्मेंट टेशनहोते-जंवुकेपास टावीटेशनउतरे, वजीरावादसे यहांतक रैलकिराया नवआने नवपाइ लगतेहै,–

☞ [वयान-शहर-जंबु-और-काश्मिर.]

मुल्क काश्मिरकी अमलदारीमे राज्यकी दखनपश्चिम सीमाके पास-चनावनदीकी सहायक टावीनदीके कनारे जंवु एक निहायत उमदा शहरहै, काश्मिर महाराजका तख्त जंवुमेंभी है और श्रीनग-रभी राजधानी कामिरहीकी है, सन (१८९१) की मर्दुमाशुरीमें जंवुकी मर्दुमशुमारी (३४५४२) मनुष्योकीथी, राजमहल नदीके दाहने कनारे और किला वाये कनारे पर नदीकी सतहसे (१५०) फीट उपरकों है, जंवुका वाजार वहुत अछा और हर किसमकी चीज यहांपर मिलसकती है, मकान उमदा और खूवसुरत वनेहुवे यहांसे श्रीनगरतक सोदागीरीका मार्ग—और आमदरफ्त होतीरह-ती है, मुल्ककाश्मिरमें पेस्तर जैनोकी आवादीऔर जैनमंदिरथे. मगर अव नहीरहे, यात्री अगर क्षेत्रफरसना करना चाहे-तो–

खुश्किरास्ते श्रीनगर जासकते है, इक्का-बगीजाती है, रैलनहीगइ,-मुल्क काश्मिरमे श्रीनगर वडा शहरहै, सन (१८९१) की-मर्दुमशुमारीमें श्रीनगरकी मर्दुमशुमारी (११८९६०) मनुष्योंकीथी राजमहल काविल देखनेके वनेहुवे है, गर्मीयोंके दिनोंमें काश्मिरके महाराज-जंबुसे यहा आनकर रहते है, महाराजगंज बाजार नामी और-जिस चीजकी दरकारहो-यहा मिलसकती है, शालदुशाले यहा उमदासे उमदा वनते है और यहवात आममुल्कोंमे मशहूरहैकि दुशाले काश्मिरके मानींद किसी मुल्कमें नहीवनते, रेशमी दस्तकारीभी यहा उमदा वनती है,--स्कुल-अस्पताल-और-टकशालघर अछे मकान वनेहुवे है,--और--राममुन्शीबाग काविल देखनेकी जगहहै,-काश्मिरके पहाड-नदी-झील-और वन वडेसोहावने और जाडेके दिनोंमें यहां ठड वहुत पडतीहै, वल्कि ! पहाडोंपर वर्फ जमजातीहै. वादाम-पिस्ते-सेव-अगुर-नासपाती-आलुचा-शाहदाना-सहतुत-और-अखरोट वगेरा मेवा यहा ज्यादह होताहै, जेहलमनदी काश्मिरसें निकलीहुइ और दुसरी कइ छोटी नदीयेंभी इसमे आकर मिली है, काश्मिरमें कइ-खानें-लोहेकी और जंबुकी पहाडियोंमें सुर्माभी पैदाहोताहै, कस्तुरियेमृग--वराहसिंगा--और-वडाहिरणभी यहांकी पहाडियोंमें अकसर नजर आता है, रामपुरमें केशर पैदा होती है, काश्मिरके आदमी वडे मजबुत और खुवसुरत होते है,-काश्मिरमें सस्कृत विद्याकी पेस्तर वडी तरक्कीथी वडेवडे आलादर्जेके पडित यहां होचुके-यात्री-जंबुसे रैलमे सवार होकर वापिस उसी रास्ते वजीरावाद जकशन आवे,-रैलकिराया अवल लिखचुकेहै,-

वजीरावादसे-गुजरानवाल--लाहोर-अमृतसर-जालधर-लुधियाना-अंवाला-मेरट होते वापिस गाजियावाद आना, रैलकिराया

और रास्ता पेस्तर बतला चुकेहै,-टाइमटेबलमें सब बातका खुलासा लिखारहताहै देखलेना,-मुल्क पंजाबमें-शतजल-ब्यासा-रावी चनाव-और-जेहलम-येपांच बडीबडी नदीयां है, और इसी सबवसें इसका नाम पंजाब कहलाया, संस्कृत जबानमें पांचाल बोलते है,-गाजियाबादसे तीर्थकंपिलपुरकीजियारतके लिये रैलमें सवार होकर-मारीपट-दाद्री-अजायबपुर-सिकंदराबाद-वायर-चोलाबुलंद शहर-खुर्जा-डामर-सोमना-कुलवा-आलिगढ-माद्रक-सासनी-हाथरससीटी (मेंडु)-हाथरसरोड-रतिकानागला-सिकंदरारोड--अगसोली-मरेहरा-काशगंज-बधारीकला-साहावारटाउन-गंजडुंडवारा--पटियाली-दर्वावगंज-और-रूदैन होतेहुवे कायम गंजटेशन उतरना, गाजियाबादसे हाथरस जकशन तक रैलकिराया एकरूपया एकआना, और हाथरस जंक्शनसे कायम गंजतक चौदहआने लगते है,—

[तवारिख-तीर्थ-कंपिलपुर]

टेशन और कायमगंजके बीच एककोशका फासलाहै, सवारीकेलिये इक्का-बगी-तयार मिलती है शहरमें जाकर सरायमें ठहरे, सराय यहांपर दोबनीहुइहै एक बीचशहरके और दुसरी बहार, तीर्थ कंपिलपुर यहांसे तीनकोशकेफासले पर वाके है, सडक कची बनीहुइ इक्का-बगी-मजेमे जासकते है, कायम गंजसे शुभहके वख्त रवाना होकर जियारत करके शामको वापिस आसकतेहो, खानपानकी चीजे वहांपर मिलसकेगी मगर उमदातौरपर नही, बहेतरहै कायमगंजसे इंतजाम करतेजावे-कंपिलपुर पेस्तर बडा गुलजार शहरथा, तेरहमे तीर्थकर विमलनाथ महाराज इसीकंपिलपुरमें पैदाहुवे-चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये--चार कल्याणक उनके यहाहुवे,-कृतवर्मा राजाके घर-श्यामा रानीकी कुखसे माघ

सुदी (३) उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रकेरौज उनका यहां जन्महुवा, बहुत अर्सेतक उनोने कपिलपुरके तख्तपर अमलदारी किइ, दीक्षाके पेस्तर उनोने यहापर बहुत खैरात किइ. माघशुदी (४) के रौज उनोने दुनियाके एशआराम छोडकर दीक्षा इख्तियारकिइ पोषसुदी (६) के-रौज उनको यहा केवल ज्ञानपैदा हुवा, इंद्र देवते उनकी खिदमतमे आतेथे. दसमे चक्रवर्ती हरिषेण-और-बारहमे चक्रवर्ती ब्रहमदत्तजी इसीकापिलपुरमें हुवे. वडेवडे दौलत मंद यहापर पेस्तर आबादथे. तीर्थकर महावीर स्वामीके निर्वाण हुवेबाद (२२०) वर्ष पीछे अश्वमित्र नामकेचोथे निन्हव इसीक-पिलपुरमें आनकर सुधरे, गागलिकुमार इसीकापिलपुरका बाशिंदा था, जोकि-पृष्ट चंपानगरीके राजा-शाल-महाशालका-भानजाथा, पृष्ट चंपानगरी हिमालय पहाडकी उत्तरकों मुल्क तिब्बतमें आबा-दथी, जब-शाल-महाशालने दुनियाछोडकर तीर्थकर महावीर स्वामीके पास दीक्षा इख्तियार किइ, अपने भानजे गांगलिकुमार-कों कंपिलपुरसे बुलाकर अपनीगदीदिइ और आप मुनि होगये, दुर्मुख नामका राजा जोइसी कपिलपुरमें अमलदारी करताथा एक रौज जब बागकीसैरकों निकला एक मोटाताजा बैल रास्तेमें उ-सकी नजरसे गुजरा, देखकर दिलमें निहायत खुशहुवा और कह-नेलगा क्या उमदा बैलहै, दुसरे रौज वही बैल मरगया, और उ-सीरास्तेमें पडाहुवाथा जिसरास्तेसे राजादुर्मुख फिरनिकले, और देखते है-तो-वही बैल मराहुवा नजर आया, इस परसे उसकों नसीहतहुइकि-दुनियामें-एकादिन सबकों मरनाहै, इससें यहीमुना-सिबहै दुनयवी कारोबार छोडकर दीक्षा इख्तियार करना, दुसरे रौज उनोनें वैसाहीकिया,—

और रास्ता पेस्तर वतला चुकेहै,-टाइमटेवलमें सव वातका खुलासा लिखारहताहै देखलेना,-मुल्क पंजावमें-शतजल-व्यासा-रावी चनाव-और-जेहलम-येपांच वडीवडी नदीयां है, और इसी सववसें इसका नाम पंजाव कहलाया, संस्कृत जवानमें पांचाल वोलते है,-गाजियावादसे तीर्थकंपिलपुरकीजियारतके लिये रैलमें सवार होकर-मारीपट-दाद्री-अजायवपुर-सिंकंदरावाद-वायर-चोलावुलंद शहर-खुर्जा-डामर-सोमना-कुलवा-अलिगढ-माद्रक-सासनी-हाथरससीटी (मेंड्ढ)-हाथरसरोड-रतिकानागला-सिकंदरारोड--अगसोली-मरेहरा-काशगज-वधारीकला-साहावारटाउन-गंजडुंडवारा--पटियाली-दर्वावगंज-और-रूदैन होतेहुवे कायम गंजटेशन उतरना, गाजियावादसे हाथरस जंकशन तक रैलकिराया एकरूपया एकआना, और हाथरस जंकशनसे कायम गंजतक चौदहआने लगते है,—

[तवारिख-तीर्थ-कंपिलपुर]

टेशन और कायमगंजके बीच एककोशका फासलाहै, सवारीकेलिये इक्का-वगी-तयार मिलती है शहरमे जाकर सरायमें ठहरे, सराय यहांपर दोवनीहुइहै एक बीचशहरके और दुसरी वहार, तीर्थ कंपिलपुर यहांसे तीनकोशकेफासले पर वाके है, सडक कची वनीहुइ इक्का-वगी-मजेमे जासकते है, कायम गंजसे शुभहके वख्त रवाना होकर जियारत करके शामको वापिस आसकतेहो, खान पानकी चीजे वहांपर मिलसकेगी मगर उमदातौरपर नही, वहेतरहै कायमगंजसे इंतजाम करतेजावे-कंपिलपुर पेस्तर वडा गुलजार शहरथा, तेरहमे तीर्थकर विमलनाथ महाराज इसीकंपिलपुरमें पैदाहुवे-चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये--चार कल्याणक उनके यहाहुवे,-कृतवर्मा राजाके घर-श्यामा रानीकी कुखसे माघ

शुदी (३) उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रकेरौज उनका यहा जन्महुवा, वहुत अर्सेतक उनोने कपिलपुरके तख्तपर अमलदारी किइ, दीक्षाके पेस्तर उनोने यहांपर वहुत खेरात किइ. माघशुदी (४) के रौज उनोने दुनियाके एशआराम छोडकर दीक्षा इख्तियारकिइ पोषशुदी (६) के-रौज उनको यहा केवल ज्ञानपैदा हुवा, इंद्र देवते उनकी खिदमतमे आतेथे. दसमे चक्रवर्ती हरिषेण-और-बारहमे चक्रवर्ती ब्रहमदत्तजी इसीकंपिल्पुरमें हुवे. वडेवडे दौलत मंद यहापर पेस्तर आवादथे. तीर्थंकर महावीर स्वामीके निर्वाण हुवेबाद (२२०) वर्ष पीछे अश्वमित्र नामकेचोथे निन्हव इसीकंपिलपुरमें आनकर सुधरे, गागलिकुमार इसीकपिलपुरका वाशिंदा था, जोकि-पृष्ट चंपानगरीके राजा-शाल-महाशालका-भानजाथा, पृष्ट चंपानगरी हिमालय पहाडकी उत्तरकों मुल्क तिब्बतमें आवादथी, जब-शाल-महाशालने दुनियाछोडकर तीर्थंकर महावीर स्वामीके पास दीक्षा इख्तियार किइ, अपने भानजे गोंगलिकुमारकों कंपिलपुरसे बुलाकर अपनीगदीदिइ और आप मुनि होगये, दुर्मुख नामका राजा जोइसी कपिलपुरमें अमलदारी करताथा एक रौज जब बागकीसैरकों निकला एक मोटाताजा बेंल रास्तेमें उसकी नजरसे गुजरा, देखकर दिलमें निहायत खुशहुवा और कहनेलगा क्या उमदा बेंलहै, दुसरे रौज वही बेंल मरगया, और उसीरास्तेमें पडाहुवाथा जिसरास्तेसे राजादुर्मुख फिरनिकले, और देखते है-तो-वही बेंल मराहुवा नजर आया, इस परसे उसकोंनसीहतहुइकि-दुनियामें-एकादिन सबकों मरनाहै, इससें यहीमुनासिबहै दुनयवी कारोवार छोडकर दीक्षा इख्तियार करना, दुसरे रौज उनोनें वैसाहीकिया,—

और रास्ता पेस्तर वतला चुकेहै,-टाइमटेबलमें सब वातका खुलासा लिखारहताहै देखलेना,-मुल्क पंजावमें-शतजल-व्यासा-रावी चनाव-और-जेहलम-येपांच वडीवडी नदीयांहै, और इसी सववसें इसका नाम पजाव कहलाया, संस्कृत जवानमें पांचाल वोलते है,-गाजियावादसें तीर्थकंपिलपुरकीजियारतके लिये रैलमें सवार होकर-मारीपट-दाद्री-अजायवपुर-सिकंदरावाद-वायर-चोलावुलंद शहर-खुर्जा-डामर-सोमना-कुलवा-आलिगढ-माद्रक-सासनी-हाथरससीटी (मेंड)-हाथरसरोड-रतिकानागला-सिकंदरारोड--अगसोली-मरेहरा-काशगंज-वथारीकला-साहावारटाउन-गंजडुंडवारा--पटियाली-दर्यावगंज-और-रूदैन होतेहुवे कायमगंजटेशन उतरना, गाजियावादसे हाथरस जकशन तक रैलकिराया एकरूपया एकआना, और हाथरस जंकशनसे कायम गंजतक चौदहआने लगते है,—

☞ [तवारिख-तीर्थ-कंपिलपुर]

टेशन और कायमगजके वीच एककोशका फासलाहै, सवारीकेलिये इका-वगी-तयार मिलती है शहरमें जाकर सरायमें ठहरे, सराय यहापर दोवनीहुइहै एक वीचशहरके और दुसरी वहार, तीर्थ कंपिलपुर यहांसे तीनकोशकेफासले पर वाके है, सडक कची वनीहुइ इका-वगी-मजेमें जासकते है, कायम गंजसे शुभहके वख्त रवाना होकर जियारत करके शामको वापिस आसकतेहो, खानपानकी चीजे वहांपर मिलसकेगी मगर उमदातौरपर नही, वहेतरहै कायमगंजसे इंतजाम करतेजावे-कंपिलपुर पेस्तर वडा गुलजार शहरथा, तेरहमे तीर्थंकर विमलनाथ महाराज इसीकंपिलपुरमें पैदाहुवे-च्यवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये--चार कल्याणक उनके यहांहुवे,-कृतवर्मा राजाके घर-श्यामा रानीकी कुखसे माघ

सुदी (३) उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रकेरौज उनका यहा जन्महुवा, वहुत अर्सेतक उनोने कपिलपुरके तख्तपर अमलदारी किइ, दीक्षाके पेस्तर उनोने यहापर वहुत खैरात किइ. माघशुदी (४) के रौज उनोने दुनियाके एशआराम छोडकर दीक्षा इख्तियारकिइ पोषसुदी (६) के-रौज उनको यहा केवल ज्ञानपैदा हुवा, इद्र देवते उनकी खिदमतमे आतेथे. दसमे चक्रवर्ती हरिषेण-और-बारहमे चक्रवर्ती ब्रह्मदत्तजी इसीकंपिलपुरमें हुवे. वडेवडे दौलत मद यहांपर पेस्तर आवादथे. तीर्थंकर महावीर स्वामीके निर्वाण हुवेवाद (२२०) वर्ष पीछे अश्वमित्र नामकेचोथे निन्हव इसीक-पिलपुरमें आनकर सुधरे, गांगलिकुमार इसीकापिलपुरका वाशिंदा था, जोकि-पृष्ट चंपानगरीके राजा-शाल-महाशालका-भानजाथा, पृष्ट चंपानगरी हिमालय पहाडकी उत्तरकों मुल्क तिव्वतमें आवादथी, जब-शाल-महाशालने दुनियाछोडकर तीर्थंकर महावीर स्वामीके पास दीक्षा इख्तियार किइ, अपने भानजे गांगलिकुमार-कों कपिलपुरसे बुलाकर अपनीगदीदिइ और आप मुनि होगये, दुर्मुख नामका राजा जोइसी कपिलपुरमें अमलदारी करताथा एक रौज जब वागकीसैरकों निकला एक मोटाताजा वैल रास्तेमें उ-सकी नजरसे गुजरा, देखकर दिलमें निहायत खुशहुवा और कह-नेलगा क्या उमदा वैलहै, दुसरे रौज वही वैल मरगया, और उ-सीरास्तेमें पडाहुवाथा जिसरास्तेसे राजादुर्मुख फिरनिकले, और देखते है-तो-वही वैल मराहुवा नजर आया, इस परसे उसकों-नसीहतहुइकि-दुनियामें-एकदिन सबकों मरनाहै, इससें यहीमुना-सिबहै दुनयवी कारोवार छोडकर दीक्षा इख्तियार करना, दुसरे रौज उनोनें वैसाहीकिया,—

द्रुपदराजाकी कुंवरीद्रौपदी इसी कंपिलपुरमें पैदाहुइथी, और उसका स्वयंवर मंडप यहांही रचागयाथा, जो रवन्नक और आवादी पेस्तरथी अब नहीरही, आजकलकरीव (६००) घरोंकी आवादीका कस्बा रहगया, जैनश्वेतांवर श्रावकोका घर एकभी नहीरहा, वाबु छोटालाल सरूपचंद साकीन लखनउका तामीर करवाया-हुवा-तीर्थंकर विमलनाथ महाराजका वडाआलिशान मंदिर यहां पर मौजूदहै, जिसकोअंदाज पचास वर्ष हुवेहोगे, पेस्तर जवकि-चक्रवर्ती राजाओका जमानाथा वडेवडे जैन मंदिर और मूर्त्तिये यहांपरथी, तीर्थोमेंयह अकसर होता चलाआया एक मंदिर पुराना होकर गिरगया किसी खुशनशीवने उसकों फिरसे वनवाया, इसीतरह तीर्थ कायम वनारहताहै,-इसमंदिरमें मूलनायक तीर्थंकर विमलनाथ महाराजकी मूर्त्ति तख्तनशीनहै, दोनोतर्फ दो-मूर्त्ति-तीर्थंकर चंदाप्रभुकी और आगे तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्त्तिभी इसीवेदीमें जायेनशीनहै, दर्शनकरके दिल खुशहोगा, अतराफ मंदिरके कोट पकावनाहुवा-और-चारकोनेमें चार छत्रीये कायमहै उनमे तीर्थंकर विमलनाथ महाराजके-चवन-जन्म-दीक्षा-और केवलज्ञान-ये-चार कल्याणक और-उनके-कदम जायेनशीनहै,-मंदिरके कोटके नीचे एकतर्फ इसकदर खड्डा होगयाहैकि-वारीशके दिनोमें पानीकी मारसे कोटकों खतराहै, अगर पथर और चुनेसे उसखड्डेकों भरादिया जाय और पानीके जानेका रास्ता वनादिया जायतो कोटकीहिफाजत वनीरहेगी और तीर्थ कायम रहेगा, वडे तीर्थोमें वहुतसे मंदिरवनेहुवेहै मगर ऐसे तीर्थोमें नया मंदिरवनाना या-पुराने मंदिरकी मरम्मत कराना वडेपुन्यका कामहै,

धर्मशाला यहांपर एक निहायत पुख्ता भंडारी मुनालाल साकीन फरकावादकी वनवाइहुइ मौजूदहै, जिसमें (२५०) आ-

दमी वखूवी कयाम करसकते है, इसकों वनेवहुत अर्सा होगया इसकी मरम्मत होना दरकारहै,-आगेका दरवजाभी मरम्मत होनेके काविलहै, इसतीर्थकी जेरनिगरानी लखनउके जैनश्वेतांवर श्रावक लोग करतेहै. मदिरका खर्चा-और-पूजारीकी तनख्वाह वगेरा भी लखनउके श्रावक देतेहै, अगर कोइ यात्री अपनी दौलत खर्च करना चाहे ऐसे तीर्थमें करे, तुमने अकसर कइदफे देहली आगरेकी सफरकिइ होगी मगर कंपिलपुर तीर्थकी जियारत नहीकिइ वडेअपशोसकी वातहै, खेर ! अवभी खयाल रखो, जिसके वडेभाग्यहो-ऐसे तीर्थकी जियारत करे, कपिलपुरकी जियारतकरके यात्री कायमगज वापिस आवे, और कायमगजसे रैलमे सवार होकर हाथरस रोड आवे, रैलकिराया पेस्तर लिखचुके है, हाथरसरोडसे मेडु-हाथरस सीटी-मुरसान-राया-मथरा केन्टोन्मेन्ट होते मथरा सीटी उतरे, रैलकिराया चारआने,—

(तवारिख-तीर्थ-मथरा.)

पश्चिमोत्तर प्रदेश आगरा विभागमे जमनाके दाहने कनारे जिलेका सदर मुकाम मथरा एक पुराना शहरहै. जैनशास्त्रोमें इसके आसपासकी जमीनको सुरसेन देश लिखाहै, तीर्थकर सुपार्श्वनाथजीके वख्त यहां वहुतसे जैनमदिरथे, यादव कुल दिवाकर-समुद्र विजयजी-उग्रसेनजी-और-वसुदेवजी वगेरा दशदशारवर-वीर पुरुष इसी मथरामें हुवे, कृष्न वासुदेव और उनके वडेभाइ वलभद्रजी यहाही पैदाहुवे जो दुनियामें वडे नामी ग्रामी और मशहूर कहलाये. १-अर्कस्थल, २-वीरस्थल, ३-पदमस्थल, ४-कुरुस्थल, और-५-महास्थल येपाच यहा पेस्तर वडेवडे स्थल-थे,-लोहजधवन-मधुवन-छिल्लवन-तालवन-कुमुदवन-वृंदावन-

द्रुपदराजाकी कुंवरीद्रौपदी इसी कंपिलपुरमें पैदाहूइथी, और उसका स्वयंवर मंडप यहांही रचागयाथा, जो रवन्नक और आबादी पेस्तरथी अब नहीरही, आजकलकरीब (६००) घरोंकी आबादीका कस्बा रहगया, जैनश्वेतांबर श्रावकोंका घर एकभी नहीरहा, बाबु छोटालाल सरूपचंद साकीन लखनउका तामीर करवायाहुवा–तीर्थंकर विमलनाथ महाराजका बडाआलिशान मंदिर यहां पर मौजूदहै, जिसकोअंदाज पचास वर्ष हुवेहोगे, पेस्तर जबकि–चक्रवर्ती राजाओका जमानाथा बडेबडे जैन मंदिर और मूर्त्तिये यहांपरथी, तीर्थोमेयह अकसर होता चलाआया एक मंदिर पुराना होकर गिरगया किसी खुशनशीबने उसको फिरसे बनवाया, इसीतरह तीर्थ कायम बनारहताहै,–इसमंदिरमें मूलनायक तीर्थंकर विमलनाथ महाराजकी मूर्त्ति तख्तनशीनहै, दोनोंतर्फ दो–मूर्त्ति–तीर्थंकर चंद्रप्रभुकी और आगे तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्त्तिभी इसीवेदीमें जायेनशीनहै, दर्शनकरके दिल खुशहोगा, अतराफ मंदिरके कोट पकाबनाहुवा–और–चारकोनेमें चार छत्रीये कायमहै उनमे तीर्थंकर विमलनाथ महाराजके–चवन–जन्म–दीक्षा–और केवलज्ञान–ये–चार कल्याणक और–उनके–कदम जायेनशीनहै,–मंदिरके कोटके नीचे एकतर्फ इसकदर खड्डा होगयाहैकि–बारीशके दिनोमें पानीकी मारसे कोटको खतराहै, अगर पथर और चुनेसे उसखड्डेको भरादिया जाय और पानीके जानेका रास्ता बनादिया जायतो-कोटकीहिफाजत बनीरहेगी और तीर्थ कायम रहेगा, बडे तीर्थोमें बहुतसे मंदिरबनेहुवेहै मगर ऐसे तीर्थोमें नया मंदिरबनाना या–पुराने मंदिरकी मरम्मत कराना बडेपुन्यका कामहै,

धर्मशाला यहांपर एक निहायत पुख्ता भंडारी मुनालाल साकीन फरकाबादकी बनवाइहुइ मौजूदहै, जिसमें (२५०) आ-

दमी बखूबी कयाम करसकते है, इसकों बनेबहुत अर्सा होगया इसकी मरम्मत होना दरकारहै,-आगेका दरवजाभी मरम्मत होने काबिलहै, इसतीर्थकी जेरनिगरानी लखनउके जैनश्वेतांबर श्रावक लोग करतेहै. मंदिरका खर्चा-और-पूजारीकी तनख्वाह वगेरा भी लखनउके श्रावक देतेहै, अगर कोइ यात्री अपनी दौलत खर्च करना चाहे ऐसे तीर्थमें करे, तुमने अकसर कइदफे देहली आग-रेकी सफरकिइ होगी मगर कंपिलपुर तीर्थकी जियारत नहीकिइ बडेअपशोसकी बातहै, खेर ! अबभी खयाल रखो, जिसके बडेभाग्यहो-ऐसे तीर्थकी जियारत करे, कपिलपुरकी जियारतकरके यात्री कायमगज वापिस आवे, और कायमगजसे रैलमें सवार होकर हाथरस रोड आवे, रैलकिराया पेस्तर लिखचुके है, हाथरसरोडसे मेंडु-हाथरस सीटी-मुरसान-राया-मथरा केन्टोन्मेन्ट होते मथरा सीटी उतरे, रैलकिराया चारआने,—

☞ (तवारिख-तीर्थ-मथरा.)

पश्चिमोत्तर प्रदेश आगरा विभागमें जमनाके दाहने कनारे जिलेका सदर मुकाम मथरा एक पुराना शहरहै. जैनशास्त्रोमें इसके आसपासकी जमीनको सुरसेन देश लिखाहै, तीर्थंकर सुपार्श्वनाथजीके वख्त यहा बहुतसे जैनमंदिरथे, यादव कुल दिवाकर-समुद्र विजयजी-उग्रसेनजी-और-वसुदेवजी वगेरा दशदशारवर-वीर पुरुष इसी मथरामें हुवे, कृष्न वासुदेव ओर उनके बडेभाइ बलभद्रजी यहाही पैदाहुवे जो दुनियामें बडे नामी ग्रामी और मशहूर कहलाये. १-अर्कस्थल, २-वीरस्थल, ३-पदमस्थल, ४-कुरुस्थल, और-५-महास्थल येपाच यहा पेस्तर बडेबडे स्थल-थे,-लोहजघवन-मधुवन-बिल्ववन-तालवन-कुमुदवन-वृन्दावन-

भंडीरवन-खदीरवन-कामितवन-कोलवन-बहुलवन-और-महावन ये-(१२) वन यहांपर थे. इनमेंसें कइ मौजूदहै, कइनहीरहे, वृंदावन इसवख्त वहुत तरक्की परहै,-जैनाचार्य आर्य रक्षितसूरि यहां तशरीफ लायेथे उसवख्त जैनोंकी आवादी यहां अछीथी. स्कंदिलाचार्यने यहां जैनसंघको इकठाकरके जैनागमका अनुयोग प्रवर्तायाथा, जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणने महानिशीथसूत्रका यहां अनुसंधान कियाथा, कृष्णजीकी जन्मभूमिहोनेसे वैश्नव संप्रदाय वाले-शहर मथराकों वडा तीर्थ मानतेहै. उनकी संप्रदायके वहुत मंदिर और विश्रामघाट वगेरा कइ घाट यहां वनेहुवेहै. चीना मुसाफिर-फाहियान-और-हवांत्तसाग जब हिंदुस्थानकी सफरकों आयेथे-उनोने अपने सफरनामेमें लिखाहै हमने मथराको देखा. फाहियान अवल आयाथा, हवांत्तसांग (२५०) वर्षके वाद आया हवांत्तसांगने लिखाहै उसवख्त मथरामें (२०) बौद्धमठ-थे,-मथराजिलेमें वहुतेरे गांव--उपवन--और--कुंजोसे घेरे हुवे है, जिलेकी खास फसल गेहु-जवार-वाजरा--कपास-और-उखहै. सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त खास शहर मथराकी मर्दुमशुमारी (६११९५) मनुष्योंकीथी; वडी वडी सडके वहुतेरे मंदिर और-मकान-पथरके वनेहुवे है; वाजार लंवा चोडा और हरेक किसमकी चीजें यहां मिल सकती है; वडीवडी आलिशान इमारतें वागवागीचे-और दौलतमंद लोग यहां आवादहै. महोले घियामंडीमें एक जैनश्वेतांवर मंदिर वनाहुवाहै, थोडे वर्स पेस्तर जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादीभीथी; मगर जमाने हालमें कमहोगइ, इसलिये इस मंदिरकी जेरनीगरानी लशकर गवालियरके जैनश्वेतांवर श्रावक लोगरखते है. इसमें मूलनायक तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवानकी मूर्त्ति-निहायत खूबसुरत एक बिलस्तवडी तख्त

शीनहै, बायीतर्फ एक पुरानी मूर्त्ति जोकरीव देढहाथवडी है दर्शन
रके दिल खुशहोगा, मथराके वहार थोडी दूरपर जो जैन टीला
रानी जगहहै, कहतेहै यहां जैनोकी आवादी और मंदिरथे. म-
र अव तमाम विरानहै, जव–सर–ए–कनिंगहाम साहवने–पुराने
शेला लेखोंकी तलाश किइथी–तो–कइजगहसे पुराने लेखमिलेथे,
कलेखमें लिखाहै, सिद्धं० सवत् (२०) गृष्यरूतुका पहला महिना
थि पुनमके रोज जयपालकी माता–वि—की–स्त्री–दत्तिलकी
त्रीदत्ताने यहकीर्त्तिमान वर्द्धमान स्वामीकी मूर्त्ति चतुर्विध सधको
र्पण किइ. और कौटिक गछ–वाणिज्यकुल वज्रीशाखाके सीरी
गके आर्यसिंह–आचार्यने इसकी प्रतिष्ठाकिइ, दुसरे लेखमें लि-
है अरिहंतकों नमस्कार सिद्धकोंनमस्कार सवत् (६०) उष्न
का तिसरा महिना तिथि पंचमीके रोज यह स्थान उस समुदा-
उपभोगकेलिये दियागया जिसमे चारवर्गका समावेश होताहै,
रा अर्थ यहभी निकलताहैकि–एकएक वर्गके लिये इसका एक-
हिस्सा देनेमें आयाथा, तीसरे लेखमे लिखाहै सिद्ध महाराज
नेष्कराज्यके संवत् (९०) महिना पेहले तिथि पचमीके रोज
माकी पूत्री–भट्टि मित्रकी स्त्री–विकटाने सत्र जीवोंके फायदेके
ते–यहकीर्त्ति मान वर्द्धमानकी प्रतिमा वनवाइ. इसकी प्रतिष्ठा
टेकगण–वाणिज्यकुल–और–वयरी शाखाके आचार्य नागनदीने
, चोथेलेखका पुरेपुरा समाधान मिलना मुश्किलहै लेकिन !.
लपंक्तिके एकटुकडेकेदेखनेसें मालूम होताहैकि–यह अपर्णकर-
काम एकस्त्रीसे हुवाथा–और वह अमुक पुरुषकी–स्त्री तरीके
नेमें आइथी. दूसरीपक्तिमें कौटिक गणतः प्रश्नवाहनतः कुलतो
मातः शाखातः लिखाहै,-पांचमे लेखका मतलव -यहहैकि–वर्ष

(४७) उष्नरूतुका दुसरा महिना मीति विशमीके रोज यह एक पानी पीनेका स्थान अर्पण करनेमे आया, छठे लेखमे लिखाहै अरिहंत महावीरको नमस्कारहो, राजावासुदेवके संवत् (९८) वर्षारूतुका चौथा महिना (११) के यह एक स्त्रीकी तर्फसे बनवायीगइ. और पारिहासिक कुलकी पौर्णपत्रिका शाखाके आचार्य आर्यरोहने यहस्थापन किइ यहलेख एक अलगपाषाण परहै इसलिये निश्चय नही कियाजाताकि–यह–क्याचीज स्थापनकिइ, ..

इनमे जो अवल लेखकी अखीरमें कौटिकगछ–वाणिज्यकुल–वज्री शाखावगेरा नामदर्जहै जैनश्वेतांवर आम्नायके कल्पसूत्रसें संबंध रखते है, तीसरे लेखकी अखीरमें जो कीर्त्तिमान वर्द्धमान स्वामीकी मूर्त्ति–कौटिक गछ–वयरीशाखाके आचार्य नागनंदीने प्रतिष्ठित किइ लिखाहै, यह मूर्त्ति जैनश्वेतांवर आम्नायकी सबुत सबुत होती है. क्योंकि–कौटिकगछ–वयरीशाखा–कल्पसूत्रमें साफ जाहिरहै, और कल्पसूत्र जैनश्वेतांवर आम्नायका सूत्रहै, जमीनसे निकलेहुवे शिलालेखका और कल्पसूत्रका पाठ एक मिलगया,–चोथे लेखकी अखीरमें कौटिकगछ–मश्नवाहनकुल–मध्यमा शाखा लिखाहै–छठे लेखकी अखीरमे पारिहासिक कुल और पौर्णपत्रिका शाखा लिखी–ये–सब शाखा–कुल–और गणभीजैनश्वेतांवर आम्नायके शास्त्र–कल्पसूत्रसे संबंध रखते है. जोजो संवत् लिखाहै हिंदुस्थान और सीथियादेशके–बीचके राजा कनिष्क–और वासुदेवके जमानेके–है, अवतक इन सवत्सरोकी शुरूआत मालूमनही हुइ मगर इतना सबुत होसकताहैकि–हिंदुस्थान और सीथिया देशके राजाओंका राज्य इस्वीसनके अवल सेकडेकी अखीरसें–और

दुसरे सैंकडेके पौन भागसे कमनही होसकता. क्योंकि-इस्वीसन (७८) वा-(७९) के वर्षमें कनिष्कमहाराज-तख्त नशीन हुवा सबुत होचुकाहै,-

मथराकी जियारत करके जो यात्री वृंदावन जानाचाहे तो व जरियेरैल जासकते है.मथरासे (६) मील उत्तर यमुनाके दाहने कनारे वृंदावन एक गुलजार कस्बाहै. मथरा छावनीटेशनसें (८) मीलकी रैलवेशाखा वृंदावनकों गइहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके-वख्त-वृंदावनकी मर्दुमशुमारी (३१६११) मनुष्यो की-जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी यहापर नहीरही, बाजार लंबाचोडा-और-हरेक किसमकी चीजे यहांपर मिलसकती है, निजवन-सेवाकुंज-कालिद्रह-और-चीरघाट-अलग अलग स्थानबने हुवे है, वृंदावनसे यात्री-वापिस मथरा केन्टान्मेट टेशनको आवे, और वहांसे आगरे जानेवाली रैलमें सवार होकर-भैंसा-पारखाम और अचनेरा जकशन होतहुवे आगरा फोर्ट जावे. रैलकिराया छआने लगते है,—

☞ [वयान-शहर-आगरा,]

जमनाके दाहने कनारे जिलेका सदरमुकाम आगरा एक अजिव और नायाव शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त आगरेकी मर्दुमशुमारी (१६८६६२) मनुष्योंकीथी. आगरेकादूसरानाम अकबराबादभी बोलतेहै, करीबटेशनके धर्मशाला बनीहुइ और किरायेकेमकानभी मिलसकतेहै, यात्री जहां सुभीता देखेकयाम करे, शहरके मकान निहायतखुबसुरत और पथरके बनेहुवे जिनपर खुलीछत देखकर दिलखुशहोगा, सडकेलंबीचोडी बजार गुलजार-पूरीकचौरी मेवामिठाइ-शाल दुशाल और तरह-

(४७) उष्नरूतुका दुसरा महिना मीति विशमीके रोज–यह एक पानी पीनेका स्थान अर्पण करनेमें आया, छठे लेखमे लिखाहै अरिहंत महावीरकों नमस्कारहो, राजावासुदेवके संवत् (९८) वर्षारूतुका चौथा महिना (११) के यह एक स्त्रीकी तर्फसे वनवार्यीगइ. और पारिहासिक कुलकी पौर्णपत्रिका शाखाके आचार्य आर्यरोहने यहस्थापन किइ यहलेख एक अलगपापाण परहै इसलिये निश्चय नही कियाजाताकि–यह–क्याचीज स्थापनकिइ, .

इनमे जो अवल लेखकी अखीरमें कौटिकगछ–वाणिज्यकुल–वज्री शाखावगेरा नामदर्जहै जैनश्वेतांवर आम्नायके कल्पसूत्रसें संवंध रखते है, तीसरे लेखकी अखीरमे जो कीर्त्तिमान वर्द्धमान स्वामीकी मूर्त्ति–कौटिक गछ–वयरीशाखाके आचार्य नागनंदीने प्रतिष्टित किइ लिखाहै, यह मूर्त्ति जैनश्वेतांवर आम्नायकी सवुत सवुत होती है. क्योंकि–कौटिकगछ–वयरीशाखा–कल्पसूत्रमें साफ जाहिरहै, और कल्पसूत्र जैनश्वेतांवर आम्नायका सूत्रहै, जमीनसे निकलेहुवे शिलालेखका और कल्पसूत्रका पाठ एक मिलगया,– चोथे लेखकी अखीरमे कौटिकगछ–ब्रह्मवाहनकुल–मध्यमा शाखा लिखाहै–छठे लेखकी अखीरमे पारिहासिक कुल और पौर्णपत्रिका शाखा लिखी–ये–सव शाखा–कुल–और गणभीजैनश्वेतांवर आम्नायके शास्त्र–कल्पसूत्रमे संवध रखते हे. जोजो संवत् लिखाहै हिंदुस्थान और सीथियादेशके–वीचके राजा कनिष्क–और वासुदेवके जमानेके–है, अवतक इन संवत्सरोकी शुरूआत मालूमनही हुइ मगर इतनो सवुत होसकताहैकि–हिंदुस्थान और सीथिया देशके राजाओंका राज्य इस्वीसनके अवल सेकडेकी अखीरसे–और

हरनगांव फिरोजाबाद-और-मकनपुर होते सिकोहाबाद टेशनउतर रैलकिराया करीब छआने तीनपाइ लगते है,—

☞ (तवारिख-तीर्थ-शौरीपुर,)

सिकोहाबाद टेशनसें सात कोशके फासले जमना कनारे शौरीपुर एक निहायत पुराना जैन तीर्थहै, यात्री सिकोहाबाद टेशन उतरकर सरायमें कयामकरे और खाने पीनेसें फारिगहोकर शौरीपुरजानेकी तयारी करे. सिकोहाबादसें चार कोश तक सडकपकीमिलेगी आगे कची है, इका-बेशक ! जासकताहै. मगर कमजोरघोडा विल्कुल-न-चलसकेगा, इकेका किराया जातेआते अदाज तीन रूपये लगेगा, और उसमे तीन सवारी जासकेगी, वडीफजर सातवजे सिकोहाबाद सरायसे रवाना होकर-बारांवजे शौरीपुर पहुचसकतेहो और अगर तीर्थ शौरीपुरकी जियारत करके उसीरौज लोटना चाहोतो लोटसकतेहो मगर वेहतरहै एक रौज यहापर कयाम करना, भगा भगीकी जियारत करना ठीकनही. सिकोहाबाद सरायसें रवाना होते वख्त खानपानकी चीज पुरीकचौरी मिठाइ वगेराका इंतजाम करलेना जैसी उमदाचीज यहामिलेगी वहां-न-मिलेगी.

तीर्थंकर नेमनाथमहाराजकी जन्मभूमि शौरीपुर-पेस्तर बडा आबाद और रवनक अफजूंथा, मगर जमाने हालमें वहरवनक नहीरही, पेस्तर वडेवडे दौलतमंद और खूशनसीब आबादथे जिनकेघर बेंशुमार दौलतथी, आज लखपतिभी कमनजरआते है, सीर्फ एकहजार आदमीयोंकी वस्तीका कस्बारहगया, न कोइ-जैनश्वेतांबर श्रावकहै-न-धर्मशाला सीर्फ ! जमनाकी सीहदमें एकऊंची पहाडीपर बेंमरम्मत पांच जैनश्वेतांबर मंदिरखडे है, [illegible] चार ५

तरहकी चीजे यहांपरमिलतीहै, शामकेवख्त वडीरवन्नकदेखोगे. जगहजगहपरखुमचेवाले तरहतरहकी मीठाइ और चुरनवाले चुरन वेचरहेहै, अमीर उमराव उमदापुशाकपहनेहुवे शामको जवहवा-खोरीको निकलतेहै वडीही रवन्नक मालूम देतीहै, जैनयात्री लो-नमंडी और रोशनमहोलेमेंजाकर जैनमदिरोके दर्शनकरे, वडेवडे आलिशानजैनश्वेतांवरमंदिर वनेहुवेहै, जिनमें चिंतामणी पार्श्वना-थजीका मंदिर वडाखूवसुरतहै,-जवकि-जैनश्वेतांवराचार्य हीरवि-जयसूरिजी शहर आगरेमें तशरीफलायेथे जैनधर्मकी तरकी अछी हुइथी. जमानेहालमें जैनश्वेतांवरश्रावकोके घर यहांपर (२०) के अंदाजहै.-कइवागवगीचे और मकान वडेहीसोहावन वने हुवेहै,

जमनाकेकनारे पक्काघाट-और-रैलका दोमंजिला पुल-निहा-यतपुख्ता वंधाहुवाहै, आगरेमें कारचोवीका काम-पथरकाकाम-और विछानेकी दरी उमदावनतीहै. जमनाके दाहनेकनारे आ-गरेका किला एकदेखनेकी चीजहै, और जोकोइ उसमें जानाचाहे पासलेकर देखनेको जायाजाताहै, सन (१५६६) इस्वीमें वाद-शाह अकबरने इसको तामीर करवाया, दिवानेआम-दिवानेखास-सुनहरा सायवान-अंगूरीवाग-शीशमहल वगेरा कीमती मकान इसमें वनेहुवे है, किलेसें-एक मीलके फासलेपर जमनाके दाहने कनारे ताजमहल एक मशहूर मकान है, सन (१६३०) इस्वीमें वादशाह-शाहजहांने अपनी मुमताज महलवेंगमकी कवरके लिये वनवानाशुरु किया जोकि (१७) वर्षके अर्सेमें तयारहुवाथा, चारोंतर्फ वाग-चारसडके-जलके फवारे-होज-मारवल पथरका-फर्स-कइ कमरे-महेरावें-और-चारोंतर्फ चारमनारे वनेहुवे है, जैन यात्री आगरेके जैनमदिरोके दर्शन करके तीर्थ-शौरीपुरकीजियारत कलिये रवानाहोवे, आगरेसें-कुवेरपुर-एतमादपुर-टुंडलाजंकशन-

इसतीर्थका कुछअर्सेतक नामनिशान बनारहेगा बहुतसे यात्री बडे बडे तीर्थोकी जियारतकोंजाते है मगर ऐसे तीर्थकी जियारतकोंभी जरुर जानाचाहिये, वहांपरजानेसे तमामहाल बखूबीमाल्म होसकेगा,— तीर्थ—शौरीपुरकी जियारतकरके यात्री उसीरास्तेवापिस सिकोहाबाद आवे और रेलमे सवारहोकर—करोरा—भदन—बलराइ—जशवतनगर—सरायभोपट—इटावा—एकदिल—भरथना—सामहोन—अचल्दा पेटा—फफुद—कानचौसी—झीझक—अवियापुर—रुरा—मेथा—भावपुर और पांकी—होतेहुवे—टेशन कानपुर उतरे,—

☞ (दरबयान—कानपुर)

हाथरस जकशनसे (१८८) मील पूरवकों इलाहाबाद विभागमे गगाके दाहने कनारे जिलेका सदरमुकाम कानपुर एक गुलजार शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त कानपुरकी मर्दुमशुमारी मयछावनीके (१८८७१२) मनुष्योकीथी, टेशनसे शहर कुछ फासलेपरहै और सवारीकेलिये इक्का—बगीतयार मिलतीहै, बैठकर शहरमें चलेजाओ. धर्मशाला कइबनीहुइ जहां सुभीता देखो कयामकरो, बाजारकी सडकेलंबी चौडी मगर गली और रास्तेतगहै, बडेबडे आलिशान—रगरौशन कियेहुवे मकान—कोठिये यहां बनीहुइहै, कपडे बनानेकी कले—और—कइकारखाने यहां मौजूदहै बाजारमें हरेककिसमकी चीजे पुरी कचौरी—मेवा मिठाइ—शाल दुशाले और जेवर जिसचीजकी दरकारहो मिलसकती है, अनाजकी तिजारत यहां ज्यादह होती है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर बीस—और—एक जैनश्वेतांबर मदिरयहां महेशरी महोलेमें मौजूदहै, जो भडारी रूगनाथप्रसादजीका तामीर करवाया हुवा काबिलदेखनेकेहै, यात्री जाकर वहां दर्शन करे, पासमें एकमकान मुनियोंके ठहरनेके लियेभी मौजूदहै,

एकमें-तीर्थंकर नेमनाथमहाराजके कदम तख्तनशीनहै,-जबतुमारा इक्का शौरीपुर पहुचे जहां सुभीतादेखो कयाम करलो और एक मीलके फासलेपर जमनाकी वीहडमे ऊंची पहाडीपर जाकर तीर्थ शौरीपुरके जैनश्वेतांवर मंदिरोंकी जियारतकरो, जिसमंदिरमें तीर्थंकर नेमनाथमहाराजके कदम तख्तनशीन है चारोतर्फ इसके चबुतरा बनाहुवा है, पुरानेकदम अबनहीरहे, संवत् (१९०५) के प्रतिष्ठित मौजूदहै इसके दर्शनकरें, चारमंदिर जो खालीपडे है उनकी कारीगिरी और खूबसुरति क्या उमदा बनीहुइहै मगर मूर्त्तिके न होनेसे विरानहोगये, दिवारे देखोतो क्या ! पुख्ता-और-इंटेंबतौरतांबेके चमकरही है, जैनश्वेतांबराचार्य हीरविजयसूरिजी जबकि-यहा-तशरीफलायेथे और जियारतकिइथी बडाजलसाहुवाथा, और तीर्थका जीर्णोद्धार करवाया गयाथा, जिसबातकों आजकरीब साढेतीनसोवर्षके होगये, इनदिनोमे मरम्मत होना दरकार है,—

इस मदिरकी जेरनिगरानी लश्कर ग्वालियरके जैनश्वेतांबर श्रावकलोग रखते है, पूजारीवगेराका-वेही-वंदोवस्तकरते है, शौरीपुरका रहनेवाला एकशख्श जो हमेशां एकमील जंगलमेंजाकर उसमंदिरकी पूजाकर आताहे, और उसकों सालीयाना तनख्वाह जो उनकेंवहांसे मुकररहै देतेहै, जगह निहायतपाकीजा देखकर दिलखुशहोगा, एकदिन वोथा इसमुकामपर वडेवडे राजेरहीश और दौलतमंद यात्री यहांआतेथे, आज वोजगह मानो ! विरान और उजाडपडी है एकजैनश्वेतांबर धर्मशाला यहांपर बननाजरुरी है, कोइखुशनसीब सखी यात्री इसतीर्थमें (२००००) रुपये सर्फकरे इसतीर्थका उमदातौरसे जीर्णोद्धार होसकताहे, पांचहजारमें धर्मशाला कायमकरे पांचहजारमंदिरकी मरम्मतमें लगावेतो अलबते !

फेजुल्लाहपुर--रसूलावाद—टेनी--खागा-कुनवार-सिराथु--और-सुजातपुर होते भरवारी टेशन उतरे, रेलकिराया करीव वारांह आने लगते है, टेशनके पास सराय वनीहुइहै जाकर उसमे कयाम करे, तीर्थ कौशांवी यहांसे खुश्कीरास्ते दसकोसके फासलेपर वाके है, सवारीकेलिये इक्का-वगी तयारमिलती है, इक्केकाकिराया जाते आतेकरीव तीन-या-चाररुपये लगेगे, और तीनसवारी व-खूबी उसमें वेठसकेगी, टेशनभरवारीसे शुभहके चले वाराबजे पपोसागांव पहुचसकोगे, जहांसे कौशांवीनगरी करीव (२) कोशपर रहजाती है भरवारीसे चारकोस पकीसडक-और-आगे कचारास्ताहै. गाव-सडककी आजुवाजु रहजाते है रास्ताकठीन-बहुतसेकेशुकेपेंड और-गंगाकीनहर जो कानपुरसे इलाहावादको गइहै मिलेगी. नहरकी वजहसे जमीन तर-और-अनाजकी पैदाश ज्यादहहोती है भरवारीसे पपोसा गावतक इक्केमेंजाना और वहासे दोकोस आगे पैदल चलनाहोगा, क्यौकि-रास्ता-कठीनहै, इक्का-वगी-जानही सकते. कौशावीतीर्थ यहांसे आगे दोकोसदूरहै, जिसको आजकल कोसवपाली वोलते है,—यात्री वहांजाकर तीर्थकौशावीकी क्षेत्र-फर्सना करे,—

कौशांवीमें जाकर जहांसुभीतादेखे कयामकरे, और पूर्व-या-उत्तरकी तर्फ मुहकरके तीर्थंकर पदमप्रभुकी इवादतकरे, क्यौंकि-तीर्थंकर पदमप्रभुकी जन्मभूमि यही कौशांवी है, आजकल-न-कोइ यहा जैनश्वेतांवर मदिरहै-न-श्रावकहै, सीर्फ ! क्षेत्रस्पर्शना करके तीर्थकी जियारतहुइसमझे, अगर कोइयात्री (२५०००) हजाररुपये खर्चकरके यहां मदिरधर्मशाला वनवादे-तो-तीर्थ कौशावीका फिरसे उद्धार होसकताहै, दुनियाकी नामवरीमें हजाराहरुपये खर्चकरते है मगर तारीफ उनकी है जो तीर्थंकरोकी जन्मभूमिपर

२७

शहर कानपुर इन दिनोंमें व्यापारकी तरकी परहै, नये कानपुरसे (२) मील पर पश्चिमोत्तर गंगाके दाहने कनारे पुराना कानपुर आबादहै, बीच दोनोंके कइ बाग और मेदान नजर आतेहै, हरिद्वारसे गंगाकी नहर (६३५) मील चलकर कानपुरके पासगंगामें आमीलीहै, कानपुरसे एक रैल *लखनउ होकर अयोध्याको गइहै, और एक रैल इलाहाबाद होकरभी अयोध्या गइहै. यात्रीकों कानपुरसे भरवारी टेशनके पास कौशांबी नगरीकी जियारतकों जानाचाहिये, जोकि-कानपुरसे इलाहाबादकों जाते रास्तेमें है,—

[तवारिख-तीर्थ-कौशांबी,]

कानपुरसे रैलमेंसवार होकर-चाकेरी-सारसोल-कारबिगोन विंदगीरोड-कंसपुर गुंगवाली-मालवा-कुरास्टी कल्यान-फतेपुर-

---

* अवध प्रदेशमें जिलेका सदर मुकाम लखनउ एक उमदा शहरहै, सन-(१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त लखनउकी मर्दुमशुमारी मयछावनीके (२७३०२८) मनुष्योंकीथी, मकान यहांके बडे पुख्ता-द्रख्त-बाग-गुंबज-मीनार-और दौलत मंदलोगोके मकानपर सोनेकी कलशीयां दिखपडती है. जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर (५०) और (८) जैनश्वेतांबर मंदिर यहां मौजूदहै, वहोरनटोला-चुडीवालीगली-सोंदीटोला-और-फुलवाली गलीमें मंदिर बनेहुवेंहै यात्री वहांजाकर दर्शनकरे, लखनउका खान पान-बोल चाल-और-पुशाक-उमदा, गोल दरवजेसे अकबरी दरवजे तक बडी रवन्नक देखोगे. हुसेनाबाद-अमीनाबाद-शाहनजफ-बेलीगार्ड-केशरबाग-अजायब घर वगेरा देखनेकी जगहहै.—

नामनिशान अवनहीरहे, उज्जेननगरीके राजाचंडप्रद्योतने कौशांवी-पर चढाइकिइथी, और उसका इरादाथाकि-कौशांवीके राजाशता-निककी रानीमृगावतीकों--लेकर अपनीरानी वनाउं,--मृगावती वडीपाकदामनथी, जवतक शतानिकराजा लडतारहा चडप्रद्योत उसे-न-लेसका, जवशतानिकका इंतकालहुवा रानीमृगावती-तीर्थंकर महावीरस्वामीके चरनोंमेंगइ और दुनियादारीको छोडकर दीक्षाइख्तियारकिइ,--जवकोइशख्श दुनियादारीको छोडकर दीक्षा इख्तियारकरे और धर्मका सहारालेवे तो उसको कोइ क्याकरस-कताहै ? दुनियामेंधर्म उमदाचीजहै, अजहद तकलीफमेंभी धर्मही कामदेताहै,—

शतानिकराजाका वेटा-उदयन-जोकि-गानेकेइल्ममें-आला-दर्जेपर पहुचाहुवाथा चंडप्रद्योतने चाहा, उदयन--उज्जेनमेंआकर मेरी लडकी वासवदत्ताकों इल्मगानेका शिखलावे, चडप्रद्योतने उदयनको वुलानेकी कोशिशकिइ, मगर उदयन राजी-न-हुवा, असलमें इल्मदारलोग अपनेइल्ममें मशगुलरहते है, रुपयेपैसेकी पर-वाह नहीकरते, आखीरकार चंडप्रद्योतने उदयनकों धोखादेकर उज्जेन वुलवाया, और कहा वासवदत्ताकों गाना शिखलाओ, उ-दयननेकहा इल्मसिखलाना-उस्तादकी मरजीके ताल्लुकहै, अगर मुताविक मेरेफरमानके चलेगी, वेशक ! इल्म सिखजायगी. चड-प्रद्योतने कहा तुम तालिमदेना शुरूकरो, उदयनने कुवुलकिया खेर! में उसे तालिमदुगा, चडप्रद्योतने उदयनकों कहा-वासवदत्ता एक आंखसे काणी है-वह-शर्मकरेगी, इसलिये तुमारे दोनोंके वीचमें पर्दा वांधकर तालीमदेना, इधर वासवदत्ताकों कहा उदयनके वद-नमें-कोढकी वीमारी है तुमवीचमें पर्दा लगाकर पढना, ऐसा-न--होकि-उसकी वीमारी तुमकों लगजाय, आखरीश ,

धर्मशाला वनावे, जिनके वडेभाग्यहो ऐसे तीर्थकी जियारतकरे, आजकल कौशांवीनगरीकी आवादी कुल (२००) घरोकी रहगइ, एकदिन वोथा जहां झलाझल रौशनी–और–वेंशुमार दौलतथी. आज वही जमीन वेंरवन्नकहे, चोथेकालमें जहांजहां तीर्थकरोके कल्याणकोंकी भूमिथी पंचमकालमें वहां धर्मकी कमीहोजायगी ऐसा जो तीर्थकरोंका फरमाना था नजरसे देखलो,—

पेस्तर यहां कसुंभकेद्रख्त वहुतपेंदाहोतेथे इसलिये इसकानाम कौशांवीनगरी कहागया, छठेतीर्थकर पदमप्रभु इसीकौशांवीमें पैदा हुवेथे. और वत्सदेशकी राजधानी यहीकौशांवी कहलातीथी, चवन–जन्म–दीक्षा––और––केवलज्ञान––ये––चार कल्याणक तीर्थकर पदमप्रभुके इसी कौशांवीमेंहुवे, श्रीधरराजाकेघर सुसीमारानीकी कुखसे कातिकवदी (१२) चित्रानक्षेत्रकेरौज उनका यहां जन्महुवा, वहुतअर्सेतक उनोने कौशांवी पर अमलदारीकिइ; पेस्तरदीक्षालेनेके एकसालतक वरावर उनोने यहां खेरातकिइ और कातिकवदी (१३) के रौज दुनियाके एशआराम छोडकर उनोने यहां दीक्षा इख्तियार किइ, और चेतसुदी (१५) के रौज उनकों यहाकेवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवता वगेरा उनकी खिदमतमें आतेथे धवलशेठ–जोकि–श्रीपालजीकों–भरूअछ नगरमें मिलाथा इसीकौशांवीका वाशिंदा था, श्रीपालजीकी वाल्दासाहिवा यहांपर हकीमकी तलाश करनेकों इसलिये आइथीकि–मेरेवेटेकी आर्जा–कोढकी कोइरफाकरे, और उसने यहांपर एकज्ञानीमुनिके मुखसें यह अजूवा सुनाथाकि–तुम–उज्जेनकों जाओ! तुमारावेटा अच्छाहो गया, तीर्थकर महावीरस्वामीको चंदनवालाने उनकेतपका पारना यहांकरायाथा, वडेवडे इकवालमद शख्स यहां आवादथे, और वडेकीमती और मशहूर जैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर मौजूदथे जिनके

आने लगते है, गंगा-जमना के सगमपर इलाहाबाद एकपुराना शहर और रैलवेका जंकशनहै, इसका दूसरानाम प्रयागभी कहते है, इलाहावादसे (५६४) मील पूर्वको कलकत्ता, (३९०) मील पश्चिमोत्तर देहली और (८४४) मील पश्चिम दखन वंबइहै, इ-स्वीसनके करीब (३००) वर्ष पेस्तर जब चीना मुसाफिर मेग-स्थनीज हिंदमें आयाथा इलाहाबाद देखाथा. सन (४१४) इ-स्वीमें बौद्धयात्री फाहियानने इसजिलेका हाल लिखाहैकि-यह कोशलराज्यका एक हिस्साथा, उसके (२००) वर्षबाद जब हवांक्तसांग चीना मुसाफिर हिंदमें आयाथा अपने सफरनामेमें लिखाहै उसवख्त यहां (२) बौद्धमठ और बहुतेरे हिंदूमंदिरथे, सन (११९४) इस्वीमें शहाबुद्दीन गहोरीने प्रयागको फतेह किया सन (१५७५) इस्वीमे बादशाह अकबरने इसकी आबादी बढाइ और इलाहाबाद नाम रखा, गगा-यमुनाके बिचलेभागमें यमुनाके बाये कनारे निहायत पुख्ता किलाबनवाया, जोअब मौजूदहै, इसकी दिवार (२०) से (२५) फीट ऊची-और-तीनतर्फ खाइ बनीहुइहै. बडा फाटक गुबजदार और पुख्ता बनाहुवाहै, बादशाह जहागीरने किलेमें रहकर इलाहाबादकी हकुमतकिइ, जमाने हालमें अग्रेज सरकारकी अमलदारी यहापर जारीहै, किलेके भी-तर अपसरोंके मकान--मेगजीन--मैंदानमें तोपोंकी कतार-और तरह तरहके गोलोंके ढेर देखपडताहै, पूरबफाटकसें किलेमें जाया जाताहै, एकतर्फ साढेनव फीटऊचा-एकहीपथरका बनाहुवा अशो-कस्थभ खडाहै, और उसपर इस्वीसनके (२४०) वर्ष पेस्तरके राजा आशोकका हुकमनामा खुदाहुवाहै,

इलाहाबादसे उत्तरतर्फ परतापगढ, पूरबमें जोंनपुर-और-मिर्जापुर-दखनमें रिवांका राज्य-दखनपश्चिममें बादा-और-फते-

गया, और तालीमदेना शुरुकिया, वादचंदरौजके जवएकरौज वासवदत्ताने गानेमें भूलकिइ उदयननेकहा ! अरि ! कांणी !! ऐसा वेताला क्यौं गाती हे ! वासवदत्तानेकहा–यहां कांणी कौनहै ? आपकैसेबोलते है ? उदयननेकहा–में–नहीजानता, तुमारे वालिदने कहाथाकि–वासवदत्ता एकआंखसे कांणी है, वासवदत्ताने खयाल किया–जैसे–मुजकों कांणीवतलायी–मगर–में–कांणीनहीहुं, इसी तरह–येभी–कोढीनहोगें, वासवदत्ता अपने वालिदकी धोखावाजीसे नाराजहुइ, और उदयनकेशाथ कौशांवी–जानेकोतयारहुइ, उदयनने कहा–में–राजकुमारहुं इसतरह छीपीहालतमें–न–ले–जाउगा, तुमारे–वालिदकों इत्तिलाकरके लेजाउगा, एकरौज उदयनने राजा चंडप्रद्योतसे कहा आपने मुजको धोखादेकर वुलवाया–मगर–में–तुमकों–इत्तिलादेकर कौशांवीजाताहुं–तुमारी मरजीहो–सो–तुम करलेना. ऐसाकहकर उदयन–और–वासवदत्ता उज्जेनसें–कौशांवी चलेगये, और चंडप्रद्योत उसका कुछ–न करसका,—

वारीशकेदिनोमें–कौशांवीकी जमीनसें अनमोलचीजे–जवाहिरात जडीहुइ अंगुठीये–हीरेपनेके–टूकडे–औरपुरानी सोनामोहरे निकलआती है, इसलिये लोग इसकों रत्नभूमि कहते है, कैसेकैसे खुशनसीव और–इकवाल मंदलोग यहां होगये, जिनकेघर वेशुमार दौलतथी, किला कौशांवीका पेस्तर वडामजवूतथा–जिसकी निशानी यहहैकि–अवभी उसमेसे देढदेढ फूटलवी–और–एकफूट चोडीइंटे लालसुर्ख–वतौर तांवेके निकलती है, आजकल वैसी इंटे वनना मुश्किलसमझो.—तीर्थकौशांवीकी जियारतकरके वापिस उसीरास्ते भरवारी टेशनआवे,—

भरवारी टेशनसे रैलमें सवार होकर मनोहरगंज–मनवारी–वरावली–होतेहुवे इलाहावाद टेशन उतरे, रैलकिराया तीन

विभागमें जिलेका सदर मुकाम फैजावादभी एक अछा शहरहै, वाजार उमदा और हरेककिसमकीचीजे यहांमिलसकती है, टेशनसे शहरकुछ फासलेपरहै, सवारीकेलिये इक्का-वगी--तयारमिलेगी, शहरमेंजाकर यात्री चौकवाजार त्रिपोलिया दरवजा तलाशकरे, और महोले पालखीखानेमें जो वडाशिखरवंद जैनश्वेतांवरमंदिर वनाहै दर्शनकरे, इसमें मूलनायक तीर्थंकर शांतिनाथमहाराजकी मूर्त्ति करीव सवाफुटवडी तख्तनशीनहै,-फैजावादसें यात्री तीर्थ रत्नपुरीकी जियारतकों जावे, रास्ते दो है,-एकरैलका-दुसरा-खुस्की, रैलरास्तेजानेवाले यात्री फैजावादसे रैलमें सवार होकर सोहावल टेशन जाय, फैजावाद और सोहावल टेशनका कुछवहुत फासलानही है, एकहीटेशन आगे है, सोहावलटेशन उतरकर वजरीये वेलगाडीके तीर्थरत्नपुरी पहुचे जो पोनकोश दुरहै, खुस्की रास्ते जानेवालेयात्री फैजावादसें इक्के-या-वगीमें सवारहोकर रत्नपुरीकोंजावे, सडकपकी वनीहुइहै, रास्ताकरीव (१०) मीलका होगा, फैजावादसे शुभहकेगयेहुवे जियारतकरके शामकों वापिस आसकतेहो, मगर जियारतमें जल्दीकरना मुनासिवनही, एकरौज रत्नपुरीमें ठहरकर दुसरेरौज फैजावाद आना अछाहै,—

☞ [तवारिख तीर्थ रत्नपुरी,]

रत्नपुरी पेस्तर वहुत आवादथी, आजकल छोटीवस्तीरहगइ, इसका दुसरानाम नवराही वोलते है, पनराहमें तीर्थंकर धर्मनाथ महाराज इसीरत्नपुरीमें पैदाहुवे चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये-चारकल्याणक उनके यहांहुवे, भानुराजाकेघर सुव्रतादेवीकी कुखसे माघसुदी (३) पुष्पनक्षत्रकेरौज उनका यहा जन्महुवा वडेहुअेतक उनोने यहां रत्नपुरीपर अमलदारी किइ दीक्षाके वाद उनोने यहां एकसालतक हरहमेशा ध्या

हपुर जिलाहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त इलाहाबादकी मर्दुमशुमारी (१७५२४६) मनुष्योंकीथी, सिविलकचहरी-हाइकोर्ट-पब्लिकलाइब्रेरी-अस्पताल-मेओकोलेज वगेरा खूबसुरत मकानहै, सडके लंबी चौडी-बाजार गुलजार-शामकेवख्त चौक बजारमें बडीरवनक रहतीहै. हरेक किसमकी चीजे-जवाहिरात-सोनाचांदी-ऊनी-और-रेशमी कपडे यहांपर मिलते है, पुरी-कचौरी-और ताजीमिठाइ जबचाहो तयार मिलेगी, चुरन वेचनेवाले दोहे-कवित्तगातेहुवे अपना चुरन वेचरहे है.-

> जैनचैत्यस्तवमें लिखाहै पेस्तर यहां जैन तीर्थथा,
> अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे,
> गौडे चौडे मूरींडे वरतरद्रविडे उद्रियाणेच पौंड्रे,
> आद्रे माद्रे पुलींद्रे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे,
> श्रीमत्तीर्थंकराणं प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे, ९,

इसमें जो सत्प्रयागे उल्लेखहै इसका माइना यहहुवाकि-प्रयागमे पेस्तर जैन तीर्थथा, अवनहीरहा, यात्री यहां क्षेत्रस्पर्शना करे, आजकल यहां जैनश्वेतांबर श्रावकोंका कोइ घरनही. व्यापारके लिये आयेगये रहते है,

गंगा-यमुना-और-सरस्वतीका जहा मिलापहुवाहै-वैश्नव आम्नायवाले उसजगहको त्रिवेणी बोलते है और तीर्थ मानतेहै, हरसाल माघ महीनेमें यहा वैश्नवयात्री बहुत आते है, टेशनके पास धर्मशाला-और-सराय बनीहुइहै, यात्री जहां दिलचाहे ठहरे, और क्षेत्र स्पर्शनकरके इलाहाबादसे परतापगढ लाइनमें सवार होवे और-टेशन फाफामउ-स्वेत-मउएमा-विश्वनाथगज-कुरेभार-खजुरहाट-बिकापुर-और-भरतकुंड होते फैजाबाद जावे, अवध

केवलज्ञानकल्याणककी स्थापना और उनकेकदम वनेहुवे है, मंदिर पुख्ता और चारोंतर्फ चार छोटेछोटे जिनालय-कता वजा समवसरणकी--अतराफ सगीन कोट खीचाहुवा और वीचमें उमदा चौक-जिसमें-(१०००) आदमी वखूवी वेठसकते है, देखकर दिल खुशहोगा,—

अग्निकोंनके जिनालयमें तीर्थंकर धर्मनाथ और महावीर स्वामीके कदम तख्तनशीनहे, नैरूत्यकोनके जिनालयमें तीर्थंकर धर्मनाथजीके चवन कल्याणीककी स्थापना और कदम तख्त नशीनहै, वायव्यकोनकें जिनालयमें जन्म कल्याणककी स्थापना इशानकोंनके जिनालयमें दीक्षाकल्याणककी स्थापना और कदम तख्तनशीनहै,-मंदिर पुराना होनेकी वजहसे मरम्मत दरकारहे, जोकोइ यात्री तीर्थमें दौलत खर्चकरनाचाहे ऐसे तीर्थोमें करे, करीव पाचहजार रूपयेमें इसतीर्थकी मरम्मत होसकतीहै, छोटा मदिर तीर्थंकर रिषभदेव माहाराजका-इसमें तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी मूर्त्तिकरीव पोनेदो हाथवडी तख्त नशीनहै, कुल्लमूर्त्तिये इसमें (८) है, जिनमें (६) मूर्त्ति राजासंप्रतिके वख्तकी-और (२) उनके वादकी वनीहुइहै, धर्मशालामें वगीचा एक-जिसमें -आम-अमरूद--शरीफे-वेल-इमली--कटेर--जामुन-और आवले वगेराके पेंडखडे है, फुलोंमें गुलाव-चमेली-वेलावगेराके फुलभी पैदाहोते है और हमेशाकी पूजनमें चढायेजातेहे, दोनों मदिरके दो-पुजारी-और-दो-नोकर यहापर तैनातहे, दोनों मंदिरके वहीखाते अलग अलग वनेहुवे है, वडेमदिरमें चारखाते है, अवलभंडारका, नियमजीर्णोद्धारका-तीसरा साधारणका-और-चौथा गेहने आपणका, जिसका जीचाहे उसखातेमें रूपया देवे, छोटे मदिरके दो-खाते है, अवल भडारका, दूसरा साधारणका-जिसकी मरजीहो

माघसुदी (१३) के रौज दुनियाके एशआराम छोडकरदीक्षा
खितयारकिइ. दोसालतक उनोने तपकिया, और पोषसुदी (१
के रौज उनको यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवते वगेरा उन
खिदमतमेंआतेथे, पेस्तर वडेवडे वनखंड–उद्यान–और लताव
यहां इसकदर होतीथीकि–जमीन–हमेशां सब्ज–वनीरहतीथी,
वडे गुलजारवाग–और–तरहतरहकेफल--केले-अनार–अमरुद–
मन–और–किसमिसके पेंड यहां मौजूदथे, चावलकीपैदाश य
वहुतहोतीथी. मंदिर तीर्थंकर धर्मनाथमहाराजका यहां हमेशां
जूदरहा, तीर्थोमें यहकदीमीरवाज हमेशांसे होताचलाआयाकि–
मंदिरपुराना होकरगिरगया किसीखुशनसीवने दुसरावनवाकर
यार किया, इसीतरहसे तीर्थ कायम वनारहताहै,—

रत्नपुरीकी आवादी आजकल कुल्लदेढ हजार घरोंकी रहग
धर्मशाला (४) जिनमें (२) धर्मशाला रायवहादूर धनपति
हजी–साकीन–मुर्शिदावादकी–(१) लखनउवाले जहोरी छो
लालजीकी–और (१) पचायतीकी तर्फसे वनीहुइहै. पूरवत
एककोठरी भंडारी–रूगनाथप्रसादजी–साकीन कानपुरकी–एक
मुल्कगुजरात–भावनगरवालोंकी–और–एककोठरी पचायतीकी
र्फसे–वनीहुइहै, मंदिर–धर्मशाला–और–कोठरीयोंके अतराफ ए
पुख्ताकोट खींचाहुवा–करीव–पाचविघेके फासलेमें मानो ! ए
हाताभालूम देताहै, यात्री धर्मशालामें जाकर कयामकरे और तीर्थ
की जियारतकरे, यहापर जैनश्वेतावरमंदिर (२), एकवडा–दूस
राछोटाहै, वडेमंदिरमें तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजकी शामरंग मूर्ति
करीव देढहाथवडी तख्त नशीनहै, दाहनीतर्फ तीर्थंकर अनंतना
जीकी–और–वायी तर्फ–तीर्थंकर धर्मनाथजीकी एकही सिंहास
पर जायेनशीनहै, मंदिरके वीचले भागमें तीर्थंकर धर्मनाथजी

यहां दीक्षा इख्तियारकिइ, बारावर्षतक तपक्रिया और पोषवदी (११) के रौज उनका यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, तीर्थंकरअभिनंदन महाराज सुमतिनाथ और अनतनाथ महाराजभी इसी अयोध्यामें पैदाहुवे, और उनके चारचार कल्याणक यहाहुवे,-

रघुवंशके खानदानमें रामचंद्रजी और लक्ष्मणजी बडेबहादुर शख्शइसी अयोध्यामें हुवे. जिनकानाम दुनियामें मशहूर और मारूफहै, लंकायुद्धमें उन्होंने जोजो बहादुरी किइ, रावणके भाइ बिभीषणकों लंकाका राज्य दिया और सती सीताको अपनी कौवत बाजुसे वापिस लाये जोकि-रावन छलकरके लेगयाथा,

सत्यवादी हरिश्चंद्र इसी अयोध्याका राजाहुवा जिसने अपने सतके उपर राजपाट छोडदिया, और अपना वचन पुराकरनेके लिये अपनी रानी और लडकेको वेचकर खुदभी विकगया, देखिये ! अपने सत्यके पीछे उसने कितनी तकलीफ उठाइ ? हरशख्शकों-लाजिमहै अपने सत्यकों-न-छोडे, और धर्मपर साबीत, कदम-रहे, चंद्रावतसकभी एक धर्मपावंद राजा इसीअयोध्याके तख्तपर हुवा, एक रौजका जिक्रहै उसने अपने महेलमें खडेहोकर शामके छवजेसे परमात्माकी इबादत करना शुरूकिइ, और दिलमें यहशर्तकर लिइकि-जो-चिराग मेरे सामने जलरहाहै जबतक जलतारहेगा-में-खडेखडे इबादत करता रहुगा, चिरागमें तेल उतनाथा-जो-तीन घंटेतक जलसके, इबादत करते जब नववजे एकनोकर जो उसजगह पहरा देताथा सोचा ! कि-मालिककों अंधेरा-न-होजाय ! यहसमझकर चिराग तेलसे भरदिया, जब रातके बारांवजे वोभी तेल खतमहोगया, नोकरने फिर दोवारा तेलभरदिया, जब रातके तीनबजे फिर चिरागगुल होनेलगा. तीसरे मरतवा फिरतेल डाला, नोकरका इरादाथाकि-मालिककों

उसखातेमे देवे, मंदिरकी मरम्मतके बारेमें अगर कोइ यात्री अपने मुनीम-गुमास्तेको भेजकर मरम्मत करादेवेतो बहुतही बहेतरहै, रत्नपुरीकी जियारतकरके यात्री-फ़ैजाबाद वापिसआवे, और फैजाबादसें तीर्थ अयोध्याकों जावे, जो करीब दो-तीन कोशके फासलेपर वाके है. रेलभी जातीहै, और इक्का बग्गीभी जाते है जिसकी जैसी मरजीहो-उस रास्ते जाय,-तवारिख तीर्थ रत्नपुरीकी खतमहुइ,—

☞ (तवारिख-तीर्थ-अयोध्या,)

अयोध्या शहर निहायत पुराना और रैलवेका टेशनहै, विनिता-कौशला-और-साकेतपुर इसीके नामहै. अवल तीर्थंकर रिषभदेवमहाराज इसी अयोध्यामें पैदाहुवे, चवन-जन्म-और दीक्षा-ये तीनकल्याणक-उनकेयहांहुवे, नाभिकुलकरके घर-मरुदेवाजीकी कुखसें चैत वदी (८) मी-पूर्वाषाढा नक्षेत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, बहुतअर्सेतक उनोंने यहांपर अमलदारीकिइ, और दीक्षालेनेके पेस्तर एकसाल मुतवारित बहुत खैरात किइ, चैतवदी(८) मीके रौज दुनयवीकारो बारकों छोडकर उनोने यहां दीक्षा इख्तियार किइ. एकहजार वर्षतक छदमस्थ हाल्तमेरहे और फाल्गुनवदी (११) के रौज उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवता-वगेरा उनकीसेवामें आतेथे,-दुसरे तीर्थंकर अजितनाथ महाराजभी इसीअयोध्यामें पैदाहुवे, चवन-जन्म-दीक्षा-और केवलज्ञान-ये-चारकल्याणक उनके यहांहुवे, जितशत्रुराजाके घर विजयारानीकी कुखसे माघसुदी (८)मी-रोहिणी नक्षत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, बहुत अर्सेतक उनोंने अयोध्यापर अमल्दारी किइ, दीक्षाके पेस्तर एक सालतक उनोने यहां खैरातकिइ और माघवदी (९) मीके रौज दुनियाके एशआराम छोडकर उनोने

मंदिरके बीच जो समवसरणका आकार बनाहुवाहै तीर्थकर अजितनाथ महाराजके केवल ज्ञानकल्याणककी स्थापना और कदम उसमे तख्तनशीनहै, उपरकीतर्फ एककोनेमें अभिनंदनजीके कदम -एकमें सुमतिनाथजीके कदम-एकमें अनतनाथजीके और-एकमें -रिषभदेव महाराजके कदम जायेनशीनहै, नीचेकी तर्फ एककोनेमें पांचभगवानके चवन कल्याणक-एकमें पांचभगवानके जन्मकल्याणक-एकमें चारभगवानके-दीक्षा कल्याणक-और-एकमें चारभगवानके गणधरोंके कदम और पाचभगवानके यक्षयक्षणी बनेहुवे है. अयोध्यामे तीर्थकर रिषभदेवजीके तीनकल्याणक चवन जन्मदीक्षा, अजितनाथजीके चारकल्याणक-चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान, अभिनंदनजीके चारकल्याणक-सुमतिनाथजीके चारकल्याणक-और-अनतनाथजीके चारकल्याणक--कुल (१९) कल्याणक हुवे, तीर्थकर रिषभदेव महाराजका-केवलज्ञान कल्याणकभी यहांही हुवाथा. मगर वह इसजगहसे थोडी दूरपर पुरिमताल नामका शाखानगरथा इसलिये जुदागिनागया.

धर्मशाला यहापर (२) बडीपुख्ता बनीहुइहै-एक रायबहादूर बुधसिहजी-साकीन-मुर्शिदाबादकी और-एक पचायती, यात्री जहां मरजीहो ठहरे, तीर्थ अयोध्याका कारखाना-यहांपर बनाहुवा है, मुनीम-गुमास्ते-नोकर चाकर पूजारी चौकीदार वगेरा मौजूदहै यात्री इसमें जोकुछ देनाचाहे देवे. जिसके वडेभाग्यहो ऐसे तीर्थकी जियारतकरे, कइदफे तुम देहलीसे कलकत्ता-और-कलकत्तेसे देहली आयेगये, मगर अयोध्याकी जियारतसे महरूमरहे. अगर तुमारा खयालहोकि-फिरकभी जियारत करलेयगे तो यह खयाल गलतहै, जिदगीका कोइभरूसा नही. जोकुछ धर्मकाम करलिया वही अपनाहै. वैदिकमजहबवालेभी अयोध्याको तीर्थ मानते है,

अधेरा-न-हो, और राजाकी शर्तथीकि-जबतक-चिराग-न-बुझे इबादतकरतारहु, गरज कि-सवेरतक राजा इबादत करतारहा, और नोकरके उपरबिल्कुल नाराजी नही लाया, बल्कि ! उसकी खिदमत अपनी इबादतमें ब-खूबी समझी.

तीर्थंकर महावीर स्वामीके नवमें गणधर इसीअयोध्याके रहने वालेथे, करीब (४००) वर्ष पेस्तर जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर अयोध्यामें-बहुतथे, आजकल एकभी नहीरहा, फैजाबादसे (६) मील पूर्वोत्तर सरयूके दाहने कनारे अयोध्याकी आबादी फैलीहुइहै जमाने हालमें अयोध्याकी मर्दुमशुमारी करीब (१४०००) मनुष्योंकी-बाजारमें हरेक किसमकी चीजें मिलसकती है; सरयूकनारे सोहावनेघाट बनेहुवे और बडीरवन्नक रहती है;—बगीचा अवध नरेशका-और-महल काबिलदेखनेकेहै, सरयूकी तरीसें ब-नास्पति यहां ज्यादह;-और बंदरोकी तरक्की इसकदर बढीहुईहैकि-जराभी नजर चुकजायतो हरेक चीज उठाजातेहै, कितनाही इंत-जामकरो हाथमेसेभी चीज लेजानेकों मुस्तेज रहते है, अयोध्याके इर्दगीर्द-बहुतसी इमारतोंके निशान दूरदूरतक पायेजातेहै इससे मालूमहोताहै पेस्तर बहुतबडी नगरीथी, जोकोइ जैनश्वेतांबरयात्री अयोध्यामें कदमरखे कटरामहोला तलाशकरे; जैनश्वेतांबर मंदिर धर्मशाला-और-कारखाना बनाहुवाहै; यात्री धर्मशालेमें जाकर कयामकरे. और निहायत खूबसुरत शिखरबंद मंदिर जोकि-तीर्थंकर अजितनाथ महाराजका बनाहुवाहै दर्शनकरे, मूलनायक तीर्थंकर अजितनाथ महाराजकी मूर्त्ति करीब एकहाथ बडी इसमें त-ख्तनशीनहै. अलावा इसके तीन मूर्त्तिये औरभी इसमें जायेन-शीनहै जिनके नाम रिषभदेव-अभिनदन-और-महावीर स्वामी है,

मंदिरके बीच जो समवसरणका आकार वनाहुवाहै तीर्थंकर अजितनाथ महाराजके केवल ज्ञानकल्याणककी स्थापना और कदम उसमे तख्तनशीनहै, उपरकीतर्फ एककोंनेमें अभिनदनजीके कदम —एकमें सुमतिनाथजीके कदम—एकमें अनतनाथजीके और—एक —रिषभदेव महाराजके कदम जायेनशीनहै, नीचेकी तर्फ एककोंने पांचभगवानके चवन कल्याणक—एकमें पांचभगवानके जन्मकल्याणक—एकमें चारभगवानके—दीक्षा कल्याणक—और—एकमें चारभगवानके गणधरोंके कदम और पाचभगवानके यक्षयक्षणी वनेहुवे है अयोध्यामे तीर्थंकर रिषभदेवजीके तीनकल्याणक चवन जन्मदीक्षा अजितनाथजीके चारकल्याणक—चवन—जन्म—दीक्षा—और—केवलज्ञान, अभिनंदनजीके चारकल्याणक—सुमतिनाथजीके चारकल्याणक—ओर—अनंतनाथजीके चारकल्याणक—कुल (१९) कल्याणक हुवे, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका—केवलज्ञान कल्याणकभी यहांही हुवाथा. मगर वह इसजगहसे थोडी दूरपर पुरिमताल नामका शाखानगरथा इसलिये जुदागिनागया.

धर्मशाला-यहापर (२) वडीपुख्ता वनीहुइहै—एक रायवहादूर बुधसिंहजी—साकीन मुर्शिदावादकी और—एक पंचायती, यात्री जहां मरजीहो ठहरे, तीर्थ अयोध्याका कारखाना—यहांपर वनाहुवा है, मुनीम—गुमास्ते—नोकर चाकर पूजारी चौकीदार वगेरा मौजूदहै यात्री इसमें जोकुछ देनाचाहे देवे. जिसके वडेभाग्यहो ऐसे तीर्थकी जियारतकरे, कइदफे तुम देहलीसे कलकत्ता—और—कलकत्तेसे देहली आयेगये, मगर अयोध्याकी जियारतसें मेहरूमरहे. अगर तुमारा खयालहोकि—फिरकभी जियारत करलेयगे तो यह खयाल गलतहै, जिंदगीका कोइभरूसा नही. जोकुछ धर्मकाम करलिया वही अपनाहै. वैदिकमजहववालेभी अयोध्याकों तीर्थ मानते है,

और उनके कइ मंदिर यहांपर वनेहुवेहै, अयोध्याकी जियारत करके यात्री सावथ्थी नगरीकी जियारतकोंजावे. अयोध्यासे सरयूनदी पारहोकर लकडा घाट टेशन जाना. सरयूनदीका पुल बंधाहुवाहै रास्ता करीब सवाकोशका होगा, सवारीमे जानेवालेकों ईका मिलसकताहै, पैदल जानेवाले पैदलभी जासकते है, लकडा घाट टेशनसे रेलमें सवार होकर कटरा-नवावगंज-और टीकरी होतेहुवे मनकापुर जकशन उतरना. रैलकिराया तीनआनें तीनपाइ फिरवहांसे गोंडा लाइनमे सवार होकर विद्यानगर होतेहुवे गोंडा जकशनजाना, रैलकिराया तीनआना, वहांसे रेलमें सवार होकर इंटियाथोक होते हुवे वलरामपुर टेशन उतरना रैल किराया चारआना,—

[तवारिख-तीर्थ-सावथ्थी.]

वलरामपुर टेशनसे खुश्कीरास्ते सातकोशदूर सावथ्थी पुरानातीर्थ है, टेशनसें शहर कुछफासलेपरहै सवारीकेलिये इक्का-वगी तयारमीलेगी यात्री शहरमेंजाकर सरायमें ठहरे, और दूसरेरोज सावथ्थीकों जानेकी तयारीकरे, सावथ्थीकों आजकल सहेटमेटका किला वोलते है, और वलरामपुरसे सहेटमेटतक सडककची वनी हुइहै. सवारीकेलिये इका-वगी-जासकते है, इकेका किराया जाते आते अंदाज तीन-या-चाररुपयेलगेगें,-सुबहके आठवजेके चले बारांवजेतक सहेटमेट पहुंचसकतेहो, रास्तेमें दुतर्फा द्रख्तलगेहुवे है, जब करीब सहेटमेटके पहुचोगे कोशभरके फासलेपर द्रख्तोंकेझुंडमें सडकपर इका ठहरजायगा, क्यौंकि-आगे इकेजानेका रास्तानही है ख्वाह-अमीरहो-या-गरीब पैदल चलनाहोगा, जबकोशभरके फासलेजाओगे तुमकों सावथ्थीनगरी नजरआयगी, पेस्तर बहुतबडी आवादथी जमानेहालमे विरानकरवा रहगया, वडेवडे मकानातऔर

खंढहेरपडे है, एकरोज वहथाकि-यहापर जवाहिरात और सोना-
-चादीके ढेर लगतेथे, आज वहदिनहै चारोतर्फ झाडीझुखड-द्र-
रुतोंकेझुंड-और-जंगलहीजगल नजरआताहै, किला सहेटमेटका
निशान ओर उसमे तीर्थंकर संभवनाथका मंदिर वगेरमूर्तिके खाली
पडाहै. आजकल-न-कोइ यहापर श्रावकहै-न-वो-रवभरहै, शि-
वाय ज्ञानीयोंके कौन कहसकताहैकि-किसकिस जमीनपर क्याक्या
वनावबने और बनेंगें, वारीशके दिनोंमें यहापर अक्सर जवाहिरा-
तके नगीने-मोहर वगेरा-निकलआते है इससे मालुमहोताहै यहांपर
वडेवडे दोलतमदलोग आवादहोगये, इसवख्त यहापर एक चक्रभं-
डार-और-दुसरा कानभारी नामके दो गाव अलग अलग मौजूद
है,-मानलो ! यह सबजमीन पेस्तर वडीरवन्नकपरथी और साव-
थ्थीसे ताल्लुक रखतीथी,—

वडीवडी अजुबा बातें यहां होचुकी और वडेवडे सखी दौल-
तमंद यहापर पैदाहोचुके है,-तीसरे तीर्थंकर संभवनाथ महाराज
इसीसावथ्थीमें पैदा हुवेथे, चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-
-ये चार कल्याणक उनके यहाहुवे, जितारी राजा और सेनारा-
नीकी कुखसे माघसुदी (१४) मृगशिरा नक्षत्रकेरौज उनका यहा
जन्महुवा, वहुत अर्सेतक उन्होंने सावथ्थीपर अमलदारी किइ, और
दीक्षाके पेस्तर एकसालतक उनोने यहा खैरातकिइ, मृगशीर्ष सुदी
(१५)केरौज दुनियाके एशआरम छोडकर उनोनेयहा दीक्षा इख्ति-
यार किइ और कातिकवदी (५) मीकेरौज उनकोंयहा केवलज्ञान
पैदाहुवा, इन्द्रदेवता वगेरा उनकी सेवामेंआतेथे तीर्थंकर महावीरस्वा-
मीने यहा चौमासा किया और कइदफे तशरीफलाये, तीर्थंकर
पार्श्वनाथजीके शासनके आचार्य केशीकुमार महाराजकी और ती-
र्थंकर महावीर स्वामीके वडेचेले गौतमगणधरकी यहापर तंदु-

ती है, किरायेके इक्का-वगीभी-हरजगह तयारमिलेंगे, चूरनवेच-नेवाले दोह-कवित्तोंको बोलकर अपनेमालकी तारीफ कररहे है. चांदनीचौक--जहोरीबाजार-चौखभा-और-नयाचौक-ये-बनारस-के नामीबाजारहै. बनारसकी मशहूरचीजे-जरीके दुपटे-कमख्वाव रेशमी किनारीके धोतीजोडे-तांबे पित्तलके वर्तन-और-सलमेसि-तारेका कामहै. रेशमी कपडोपर कारचोबीका काम यहां आलाद-र्जेका बनताहै.

बनारसमें जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर कुल (२५) और-जैनश्वेतांवर मदिर (८) है, महोले भेलुपुरेमें-जोकि-शहरसे कुछ-फासलेपरहै एकजैनश्वेतांवर मंदिर और धर्मशाला यहांपर बनीहुइहै. मंदिरमें तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति तख्तनशीनहै, यात्री दर्शनकरे, धर्मशाला, वडी गुलजार जैनश्वेतांबर यात्री अकसर इसीमे ठहरा करते है, जोकोइ यात्री बनारस आवे और महोले भेलुपुरेमे जानाचाहे--तो-बनारस कॅंटोन्मेंट टेशनपर उतरे. और शहरमें जानाचाहे राजघाट टेशनपर उतरे. महोला भदैनी-जोकि-बनारससे एककोशके फासलेपर वाकेहै वहापर गंगाकनारे बछराज घाटपर एक जैनश्वेतांवर मंदिर बनाहुवाहै. और इसमें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ महाराजकी मूर्त्ति तख्तनशीनहै,-बछराजघाट ऐसेमोकेपर बनाहैकि-बनारसके कुल घाटोंका-देखाव-यहापर खडेहोकर देखलो मदिरके पास दो-छोटीछोटी जैनश्वेतांबर धर्मशाला बनीहुइहै यात्री इसमे-ठहरनाचाहे तो ठहरसकते है,

शहर बनारसको वैदिक मजहब वालेभी बडातीर्थ मानते है. इसवजहसे वैदिक मजहबके यात्री यहां बहुतआते जाते है, और गंगाकनारे कइघाट बनेहुवे है. राजघाट टेशनपर सवारीकेलिये इका-वगी-तयार मिलती है, टेसनकेपास धर्मशाला मौजूदहै-

हरकोइ मुसाफिर वहाजाकर ठहरसकताहै, कंपनीवाग वनारसमें नामीग्रामी है, और वहाखोरीकेलिये इसमें जानेकों कोइ रोकटोक नही, गगानदीका पुल-लोहेके वडेवडे खभेपर पुख्ता वनाहुवाहै, वनारससें तीनकोशके फासलेपर वौधलोगोका एकस्थूभ-जिनकों वे-अपना पूज्यस्थान मानते है वनाहै,-जोकि-अंदाज (९०) फुट ऊचा-और (३००) फुटके घेरेमें होगा, इस गुंवजके पास थोडीदूरपर वौधमजहवकी मूर्त्तिये निकली हैं जिनमें कइवेठीसुरतमें और कइखडी सुरतमेंहै,—

☞ (तवारिख-तीर्थ-सिंहपुरी,)

तीर्थ वनारसकी जियारत करके यात्री सिंहपुरीकों जावे जोकि तीर्थंकर श्रेयासनाथ महाराजकी जन्मभूमि है. वनारस केन्टोन्मेंट-टेशनसे छोटीलाइनपर अलाइपुर टेशनसें रैलमें सवार होकर सार-नाथ टेशनपर उतरे, सारनाथ टेशनसे सिंहपुरी (१) मीलके फासलेपरहै, सवारी नहीमिलेगी पैदल जानाहोगा, वनारससे अगर इक्का-वगीके जरीये सिहपुरी जानाचाहो-तोभी जासकतेहो, करीव (१) घटेका रास्ताहै, सिंहपुरीकी जगह आजकल हिरा-नपुर गांव आवादहै, ग्यारहमें तीर्थंकर श्रेयासनाथ महाराज इसी सिंहपुरीमें पैदाहुवे, चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये-चार कल्याणक उनके यहाहुवे, विश्नुरानीकी कुखसें श्रवणनक्षेत्रके रौज उनका यहा जन्महुवा, वहुतअर्सेतक उनोने सिंहपुरीके तख्तपर अमलदारीकिइ. दीक्षा लेनेके पेस्तर यहां एकसालतक उनोने दान दिया,-फाल्गुन वदी (१३) के रौज दुनियाके एशआराम छोड कर उनोने यहा दीक्षा इख्तियारकिइ, और माघवदी (३) के रौज उनकों यहा केवलज्ञान पैदाहुवा,-सिंहपुरी पेस्तर वडेवडे दौल-तमंद लोगोकी आवादीसे. सरगर्मथी, जहा रवनक अफजुथी-

कदम और तीर्थंकर शांतिनाथ महाराजकी शामरंगमूर्त्ति करीब (१॥) फूटवडी तख्तनशीनहै, दर्शनकरके दिलखूशहोगा. करीब (४) विघेके घेरेमेंमंदिर और कोट इस खूबसुरतीकेशाथ बने हैकि -मानो! एक देवमजलिस नजरआती है. कोटकी पूर्वतर्फ गंगा नदी वहती है, पहाडकी चोटीपर क्याही! उमदा तीर्थस्थान बना हुवाहैकि-जिसकी तारीफ बेमीशालहै. कोटकेघेरेमें करीब पांचहजारआदमी बखूबीबेठसकते है,-मंदिरकी पश्चिमतर्फकाकोट गिरगयाहै, इसकी मरम्मतहोना दरकारहै, यात्री चंद्रावतीकी जियारत करके वापिस बनारस आवे. रैलरास्तेगयेहो-वे-रैलसे-और-इक्के वगीमें गयेहो-वे-इक्के वगीमें बनारसही आवे,-क्योंकि-आगे-जानेकेलिये रास्ता इधरहीसे है.-बनारससे यात्री गया शहरहोतेहुवे आगे भदीलपुरकी जियारतको जावे.—

बनारससे रैलमें सवारहोकर-मोगलसराय-मझवार-सैयदराज-कर्मनासा-दुर्घटी-भाबुआरोड-पुसौली-कुद्रा--सहसराम-करबंडिया-देहरीआनसोन-सानइष्ट्वंक-पालमेरगंज-फिसार--जखीम-रफीगंज-इस्माइलपुर-और-परैया होतेहुवे गयाशहर जाय, रैलकिराया अंदाज पनराआने नवपाइ, विहारप्रदेशमें गया-एक पुरानाशहरहै, गयाके दो हिस्से है, एकपुरानागया-और-दुसरा-साहबगंज, फल्गुनदीके बायेकनारे दोनोंहिस्से आबादहै, साहबगंजमें सडकेलंबीचौडी-मकानात-दोतीन-मंजिले-और-बाजार रवन्नकपरहै. जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर-या-मंदिर यहांपर नही. तिजारत गयामें ज्यादहहोती है, फल्गुनदीके कनारे कइघाट बनेहुवे है, वैदिक मजहबवाले गयामें अपनातीर्थ मानते है, और पींडदान करते है, गयाशहरसे (६) मीलके फासलेपर बौधगया नामसे एकमशहूर मंदिरहै. और बौधलोग बडीबडीदूरसें यहा आते है.

गयाशहरकी मर्दुमशुमारी साहवगंजको मिलाकर (८०३८३) मनु-ष्योंकी-और-टेशनसें शहर कुछ फासलेपरहै, सवारीकेलिये इक्का वगी तयार मिलती है,—

☞ (तवारिख-तीर्थ-भद्दीलपुर,)

गया शहरसें भद्दीलपुर खुश्की रास्ते करीव (१६) कोशके फासलेपर वाकेहै, और वहांजानेकेलिये (२) रास्ते है, एक शहर घाटी होकर दुसरा डोवीगांव तर्फ, शहरघाटीवाला रास्ताअछाहै, गयासे शहरघाटी (१०) कोश-और-शहरघाटीसे हटरगंज (४) कोश-और हटरगंजसे (२) कोशआगे हटवरीयागांव मिलेगा. गयाशहरसे इक्का-वगी-किराये मिलसकते है. इकेका किराया जातेआते करीव (५) रुपये-और-वगीके दस या-वारा समझो. खानपानके लिये गया शहरसे वंदोवस्त करलेना वहेतरहै, गयासे शुभहकों इकेमे रवाना होकर शामतक हटरगंज पहुच सकोगे, वहां रातको ठहरकर शुभहकों हटवरीया गांव जाना, पहाडकी तराइमें झाडी झुखड--द्रख्तोके झुंड और वीश पचीश घरोंका कस्वा-हटवरीया गांव-आवादहै, पेस्तर यहां भद्दीलपुर शहर आवादथा,—

दशमे तीर्थंकर शीतलनाथ महाराज इसी भद्दीलपुरमें पैदाहुवे, चवन--जन्म--दीक्षा -और--केवलज्ञान--ये—चारकल्याणक उनके यहाहुवे, द्रढरथ राजाके घर नंदारानीकी कुखसें माघवदी (१२) पूर्वाषाढा नक्षत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, वहुत अर्सेतक भद्दीलपुरपर सलतनत किइ, दीक्षाके पेस्तर एक सालतक उनोंने यहां खैरातकिइ, माघवदी (१२) के रौज दुनियाके एशआराम छोडकर उनोंने यहा दीक्षा इख्तियार किइ, और पोषवदी (१४)

के रौज उनकों यहां केवलज्ञान पेदाहुवा, देवकीजीके (६) पु
इसी भद्दीलपुरमे परवरीश हुवे, पेस्तर जोकुछ रवन्नकथी अवन
रही,-आजकल-यहां-न-कोइ श्रावकहै,-न-जैनश्वेतांवर मंदिरहै
पहाडपर वेशक ! एक मंदिरहै मगर वगेर मूर्त्तिके खालीपडाहै.
हटवरीया गांवसे एक आदमीकों शाथलेकर-पहाडपर जानाचा-
हिये, वगेर आदमीके रास्तेका पता-न-लगेगा. पहाडका चढाव
करीव (१) कोशका होगा. जिधर देखो तरह तरहकी वना-
स्पति और हरेक किस्मके द्रख्त खडे है. जब पहाडके सीरेपर
जाओगे वडा मेंदान और वहापर एक आकाश लोचन तालाव
मिलेगा. इसके पास थोडी दूरपर एक खाली जैनश्वेतांवर मंदिर
जो उपर लिखचुके है खडाहै. उस जगहपर जाकर तीर्थंकर शी-
तलनाथ महाराजकी इवादतकरे और अपनी भद्दीलपुर तीर्थकी
जियारत कामयाव हुइ समझे, आकाश लोचन तालावकी पूर्वतर्फ
एक पाताल पानीकुंड वनाहुवाहै,-पहाडसें करीव (६) घंटेमें
दर्शन करके नीचे हटवरीया गांव आसकतेहो, भद्दीलपुरके पहा-
डकों आजकल यहांके लोग कोलुका पहाड वोलतेहै, मगर असली
नाम भद्दीलपुर तीर्थ है, हटवरीया गांवसे टकेमे सवार होकर
वापिस हटरगज होतहुवे शहर घाटी आकर रातकों आराम क-
रना. और दुसरे रौज सवेरे चलकर दिनके दो-वजेतक गया
शहरकों आना, गया सहरसे रैलमे सवार होकर मानपुर-पैमार-
वजीरगंज-तिलैया टेशन होतेहुवे नवादा टेशन उतरे, रैलकि-
राया दो-आने-नवपाइ, यहांसे खुश्की रास्ते पंच तीर्थीकी
जियारतकों जावे,—

नवादेसे पंचतीर्थकों जानेकेलिये सवारी मिलसकती है, खु-
श्की रास्ते अदाज (२०) कोसके घेरेमें पंचतीर्थीकी जियारतकरे

गुणायाजी-पावापुरी-राजगृही--कुडलपुर--और--सूवेविहार-ये-पंचतीर्थीके नामहै, और सूवेविहार-रैलका टेशनहै, जो यात्री सूवेविहार टेशन उतरकर पचतीर्थीकी जियारत करना चाहे-उनको तीनकोसपर अवल कुंडलपुर जानाचाहिये, कुंडलपुरसे (४) कोश राजगृही-राजगृहीसें (५) कोश पावापुरी और पावापुरीसे (६) कोश गुणायाजी-और गुणायाजीसें करीन (१) कोशपर कस्वा नवादाहै. जोकोइ यात्री नवादा टेशन उतरकर पंचतीर्थी करनाचाहे तो अवल गुणायाजीकी जियारतकरे, गुणायाजीसें पावापुरी, पावापुरीसे राजगृही-राजगृहीसे कुडलपुर और कुडलपुरसे सूवेविहार जावे, जिनकी जैसीमरजीहो-वैसाकरै,—

जोकोइ यात्री नवादा टेशन उतरकर पचतीर्थीकी जियारतकरे और वापिस नवादा आवे तोभी वनसकताहै, नवादासे अवल राजगृही जाय,—

[तवारिख तीर्थ राजगृही,]

मुल्क मगधकी राजधानी राजगृही नगरी पेस्तर वडीरवनक परथी, क्षितिप्रतिष्टित नगर-रिषभपुर--कुशाग्रपुर-ये-सवइसीके नामहै. वीसमें तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामी इसी राजगृहीमें पैदाहुवे,- सुमित्रराजाके घर पदमावती रानीकी कुखसें ज्येष्टवदी (८) मी श्रवण नक्षत्रके रोज उनका यहा जन्महुवा. वहुत अर्सेतक उनोने राजगृहीपर अमलदारी किइ. दीक्षा लेनेके पेस्तर एकसालतक उनोने यहां वहुत खैरात किइ, फाल्गुन सुदी (१२) के रोज दुनीयाके एस-आराम-छोडकर उनोने यहां दीक्षा इख्तियार किइ, ग्यारह महीने छदमस्थ हालतमें रहे, यानी तपकिया, और

के रौज उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, देवकीजीके (६) पु
इसी भद्दीलपुरमे परवरीश हुवे, पेस्तर जोकुछ रवन्नकथी अव
रही,-आजकल-यहां-न-कोइ श्रावकहै,-न-जैनश्वेतावर मदिरहै
पहाडपर बेशक ! एक मदिरहै मगर वगेर मूर्त्तिके खालीपडाहै
हटवरीया गांवसे एक आदमीको शाथलेकर-पहाडपर जानाचा
हिये, वगेर आदमीके रास्तेका पता-न-लगेगा. पहाडका चढा
करीव (१) कोशका होगा. जिधर देखो तरह तरहकी वना
स्पति और हरेक किस्मके द्रख्त खडे है. जब पहाडके सीरपर
जाओगे वडा मैदान और वहांपर एक आकाश लोचन तालाव
मिलेगा. इसके पास थोडी दूरपर एक खाली जैनश्वेतावर मंदिर
जो उपर लिखचुके है खडाहै. उस जगहपर जाकर तीर्थंकर शी-
तलनाथ महाराजकी इवादतकरे और अपनी भद्दीलपुर तीर्थकी
जियारत कामयाव हुइ समझे, आकाश लोचन तालावकी पूर्वतर्फ
एक पाताल पानीकुड वनाहुवाहै,-पहाडसें करीव (६) घंटेमे
दर्शन करके नीचे हटवरीया गाव आसकतेहो, भद्दीलपुरके पहा-
डको आजकल यहांके लोग कोलुका पहाड वोलतेहै, मगर असली
नाम भद्दीलपुर तीर्थ है, हटवरीया गांवसे टकेमे सवार होकर
वापिस हंटरगंज होतहुवे शहर घाटी आकर रातकों आराम क-
रना. और दुसरे रौज सवेरे चलकर दिनके दो-वजेतक गया
शहरकों आना, गया सहरसे रैलमे सवार होकर मानपुर-पैमार-
वजीरगंज-तिलैया टेशन होतेहुवे नवादा टेशन उतरे, रैलकि-
राया दो-आने-नवपाइ, यहासे खुश्की रास्ते पच तीर्थोंकी
जियारतकों जावे,—

नवादेसे पंचतीर्थकों जानेकेलिये सवारी मिलसकती है, खु-
श्की रास्ते अदाज (२०) कोसके घेरेमें पंचतीर्थोंकी जियारतकरे

गुणायाजी-पावापुरी-राजगृही--कुंडलपुर--और--सूवेविहार-ये-पचतीर्थीके नामहै, और सूवेविहार-रैलका टेशनहै, जो यात्री सूवेविहार टेशन उतरकर पंचतीर्थीकी जियारत करना चाहे-उनको तीनकोसपर अवल कुडलपुर जानाचाहिये, कुंडलपुरसे (४) कोश राजगृही-राजगृहीसे (५) कोश पावापुरी और पावापुरीसे (६) कोश गुणायाजी-और गुणायाजीसे करीब (१) कोशपर कस्बा नवादाहै. जोकोइ यात्री नवादा टेशन उतरकर पचतीर्थी करनाचाहे तो अवल गुणायाजीकी जियारतकरे, गुणायाजीसें पावापुरी, पावापुरीसे राजगृही-राजगृहीसे कुडलपुर और कुडलपुरसे सूवेविहार जावे, जिनकी जैसीमरजीहो-वैसाकरै,—

जोकोइ यात्री नवादा टेशन उतरकर पचतीर्थीकी जियारतकरे और वापिस नवादा आवे तोभी बनसकताहै, नवादासे अवल राजगृही जाय,—

[तवारिख तीर्थ राजगृही,]

मुल्क मगधकी राजधानी राजगृही नगरी पेस्तर बडीरवनक परथी, क्षितिमतिष्ठित नगर-रिषभपुर--कुशाग्रपुर-ये-सबइसीके नामहै. वीसमें तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामी इसी राजगृहीमें पैदाहुवे,-सुमित्रराजाके घर पद्मावती रानीकी कुखसें ज्येष्टवदी (८) मी श्रवण नक्षत्रके रोज उनका यहां जन्महुवा. वहुत अर्सेतक उनोने राजगृहीपर अमलदारी किइ. दीक्षा लेनेके पेस्तर एकसालतक उनोने यहां वहुत खैरात किइ, फाल्गुन सुदी (१२) के रोज दुनीयाके एस-आराम-छोडकर उनोने यहां दीक्षा इख्तियार किइ, ग्यारह महीने छद्मस्थ हालतमें रहे, यानी तपकिया, और

फाल्गुन वदी (१२) के रोज उनको यहां केवलज्ञान पैदाहुवा. इंद्रदेवते वगेरा उनकी खिदमतमें–आतेथे,—

तीर्थंकर महावीरस्वामीने यहां (१४) चौमासे किये. महाराज प्रसेनजित इसीराजगृहीके राजाथे. जो राजा श्रेणिकके वालिदथे महाराज प्रसेनजितको औरभी कइ लडकेथे, एक वख्तकी वातहै तमाम लडकोंको हुकम दियाकि–तुम–आयुधशालामें जाओ ! और एकएक चीज–जो–तुमारे दिल पसंदहो–उठालाओ, तमाम लडकोंने अपने दिलके मुताविक एकएक चीज उठाइ किसीने हीरा–जवाहिरात–और किसीने मोती वगेरा उठाया, और अपने वालिदके सामनेआये. श्रेणिक लडकेने एक बिंभीसार नामकी भेरीउठाइ और अपने वालिदके सामने लाया, महाराज प्रसेनजितने पुछा यह भेंरी क्यों लाया ! श्रेणिकने वडी होशियारीके शाथ जवाव दियाकि–जहां-मेरे नामकी भेंरीवजेगी वहांही मेरा राज्यहोगा, उसके वालिदने अपने दीलमें ख्यालकीयाकि लाइक तख्तके यही है, मगर जाहिरातमें उसपर नाराजी इस गरजसे वतलातेथेकि-कोइ-रानी–या–नोकर चाकर इसको मार–न–डाले, इधर श्रेणिक अपने वालिदके खयालात देखकर ऐसा समझ गयाकि–मेरे वालिद मुजसे नाराजहै–मुजे– लाजिमहै–में–कहीं दुसरे शहरमें चलाजाउ. 'गरजाके–राजगृही छोडकर चलागया. जव वालिदको अखीर वख्त आया–उसवख्त उनोने श्रेणिकको यादकिया, दिवान वगेरासे कहा इसको ढूंढलाओ ! और राजगृहीके तख्तपर विठाओ ! ! नोकर चाकर लोग इनको तलाश करके लाये और वाद प्रसेनजितके उनको तख्तपर वेठाये, तीर्थंकर महावीर स्वामीके जमानेमें राजगृहीके तख्तपर श्रेणिकराजा राज्य करताथा, पेस्तर दिगर मजहवपर इसका एतकात था मगर, जव तीर्थंकर महावीर स्वामीकी धर्मतालीम पाइ उसका एतकात जैनमजहवपर पावंदहुवा,

तीर्थंकर महावीर स्वामीके ग्यारह गणधरोने यहां मुक्तिपाइ, जम्बुस्वामी-एकवडे कामील शख्श जिनकेघर करोडो रूपेयोंकी दौलतथी-और-जिनके आठऔरतें वडीकमालहुस्न-और-खूबसुरतथी-छोडकर उनोने यहां दीक्षा इख्तियारकिइ, धन्ना-और-शालिभद्रजी-इसी राजगृहीके रहनेवालेथे. जिनकेघर अजहद दौलतथी उनोनेभी यहादीक्षा इख्तियारकिइ, अगर धर्म-प्यारा-न-होतातो अैसा कौनकरता !-शय्यभवसूरि इसी राजगृहीमें जैनाचार्योंकी धर्मतालीमसे जैनहुवे, वडीवडी नायाव--और-अजुवा वातें-यहा होचुकी है. राजा श्रेणिकके कइरानीयां और लडकेथे, जिनमें अभयकुमार एकलायक और अकलमंद शख्शथा. और वेही उनका दिवानथा, जब उसने दुनियाछोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, कौणिक नामका लडका जोकि-वडाजाहिलथा-राज्यकी लालचसे अपने वालिद श्रेणीककों केदकरके आप राजगृहीके तख्त परवेठा, अभयकुमार अगर दुनियादारी हालतमें मौजूदहोतातो कौणकी ताकत न--होतीकि-अपनेजइफ वालिदकों केदकरसकता. राजाश्रेणिक जइफीहालतमें होहीगयेथे, केदमेंही उनका इंतकाल हुवा, राजगृहीके वाशिंदे कौणिकपर वहुतनाराजहुवे, और कहने लगे जिसने अपने वालिदकों केदकिया-वह-हमारेशाथ कयासलुककरेगा ? श्रेणिक जैसे राजा और अभयकुमार जैसे दिवानहोना दुसवारहै, राजाश्रेणिकके मरनेपर कौणिकने राजगृही छोडकर चंपानगरीमें रहना इख्तियार किया, हल्ल-विहल्लकुमार जो कौणिकके छोटेभाइथे, उनकेशाथभी उसनें नेकी नहीकिइ, गरजकि-कौणिकने अपनी तमामउमर झगडेवखेडेमेंही खतमकिइ, आखीरकार तीर्थंकर महावीरस्वामीकी नसीहतसें कुछजैनधर्मपर एतकातलाया था-मगर वसववजइफीके ज्यादह धर्मनही करसका. उसकी वफातकेवाद उसका वेटा उदायि-उसकी जगहपर-तख्तनशीनहुवा.

लेकिन ! उसने अपना तख्त चंपानगरीमें रखना पसंदनही किया, और नयाशहर पटना आवादकरके वहांपर अपना रहना वसना इख्तियार किया,

रोहिणीयाचौर इसी राजगृहीके पास वैभारगिरिकी कंदरामें रहनेवाला था, और किसीसे गिरफतार नहीहोसकताथा, एकरौज इत्तिफाकसे उसने तीर्थंकर महावीरस्वामीकी कुछ धर्मतालीमसुनी, और उसतालीमसे उसको नसीहतहुइकि-मे-ऐसे फेलोंकों छोड-कर परमात्माकी इवादतमें दिललगाउ. गरजकि-उसने चौरीकरना छोडकर धर्मपर दिललगाया, राजगृही आजकल एकछोटासा कस्वाहै, करीव अढाइहजारवर्षके पेस्तर यहां झलाझलरौशनी और दौलतथी, आजयहां न-वह-दौलतहै-न-रवन्नकहै, असलमें-ज-वाल-और-कमाल सवकों लगाहुवाहै, राजगृहीका एकमहोल्ला-नालंदनामका-जो-वहुतमशहूर और मारुफथा, जिसमें जैनलोगोकी वहुतआवादीथी, चीनामुसाफिर हवांत्सांग-और-सीनयन्-अपनेसफरनामेमे वयानकरते हैकि-हमने-राजगृहीकों और नालंद महोल्लेकोंभी देखाथा. वडेवडे पंडित-और-दोलतमंद लोग यहां रहतेथे. इसवख्त राजगृहीमें जैनोकी आवादी नहीरही. जैनश्वेतांवरमंदिर और एक-वडी आलिशान जैनश्वेतांवर धर्मशाला-करीव (४) विघेके घेरेमें पुख्ता वनीहुइ है. इसमें तीनकोठरी-जो-दखनकीतर्फ वनीहुइ है. श्रीमती-हुलासवाइ--साकीन वंवाइ-वनाइहुइ है. अठारांकोठरी पंचोकीतर्फसे-और-वीचमें एकवंगला --शेठ रुपचंद रंगीलदास-साकीन एवला-मुल्क दखनवालोका व-नायाहुवाहै. एकवगीचा वीचइसी धर्मशालाके वनाहुवा जिसमें गुलाव-चमेली-वेला-गुलदाउदी--जुही--निवार-और हारशिंगा-वगेराकेफूल पैदाहोते है और हमशांकी पूजनमें चढायेजाते है यात्री

धर्मशालामें कयामकरे. इक्का-बग्गी वगेराकेलिये पासमें दुसरी धर्मशाला करीब (५) विघेके घैरेमें मौजूदहै, चारोंतर्फ कोट घिरा हुवा-करीब-(२००) गाडीवेल-इसमें ब-खूबीरहसकते है.

जैनश्वेताम्बर मंदिर यहां तीनहै मगरएकही हातेमें बनेहुवे होनेकी वजहसे दूरसें एकही मालूमहोते है, एकपुराना-और-दो-नये है, एकमंदिरमें तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति-दुसरेमें तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी-और-तीसरेमे-तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीकी मूर्त्ति-तख्तनशीनहै. तीर्थ राजगृहीका कारखाना-मुनीम-गुमास्ते -नोकरचाकर-पूजारी वगेरा सबश्वेतांबरोकी तर्फसे है, खानपानकीचीजे आटा-दाल-घी-सकर-वगेरा यहां मिल सकती है.

राजगृहीके पंचपहाड जिनपर जैनश्वेतांबर मंदिरबनेहुवे, काबिलदेखनेके है, राजगृहीसें थोडीदूरपर चलनेसे विपुलगिरि पहाडकी दामनकों जाते रास्तेमें गर्मपानीके भरेहुवे पांचकुंड मिलते है, वहांसें आगे पहाडकारास्ता शुरुहोगा, रास्ता वाकांटेडा-और-चढाव मुश्किलहै. पहाडके सीरेपर अइमता मुनिकी छत्री बनीहुइ और उसमें अइमत्तामुनिकी शामरंग मूर्त्ति-खडेआकार तख्तनशीन है, और उसपर लिखाहै संवत् (१८४८) कातिकसुदी-पुनमके रोज जैनश्वेताम्बर संघने यहां अतिमुक्तकमुनिकी मूर्त्ति तख्तनशीन किइ, और अमृतवाचक महाराजने इसकी प्रतिष्टा किइ, दूसरा मंदिर तीर्थंकर महावीरस्वामीका इसमें उनकेकदम कमलदलपर तख्तनशीनहै. तीसरा मंदिर तीर्थंकर चंद्रप्रभुका इसमें चंद्रप्रभुके कदम तख्तनशीन है. चोथामंदिर तीर्थंकर महावीरस्वामीका-इसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीके कदम-और-एकमूर्त्ति खडीमुद्रतमे तख्तनशीनहै, इसमंदिरकी दूसरी मंजिलपर समवसरणकी शिकलबनी हुइ-तीनकिल्ले-और-बारापरखदाका आकार उमदा बनाहुवा-है

खकर असलीसमवसरण यादआताहै, पांचवामंदिर तीर्थंकर मुनि सुव्रतस्वामीका-इसमें मुनिसुव्रतस्वामीके कदम तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१९२८) में इसकी मरम्मत किइगइ, छठामंदिर तीर्थंकर रिषभदेवस्वामीका-इसमें उनके कदम तख्तनशीनहै और उसपर लिखाहै संवत् (१८१६) ओशवंशगोत्रे--बुलाखीदास-तत्पुत्रमाणिक्यचंद्रेण-राजगृहे--वैभारगिरौ-जीर्णोद्धारःकारापितः-असलमें यहकदम-वैभारगिरिपरथे वहांसे यहां लायेगये है. दुसरेकदम-तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके यहांपर मौजूदहै, और उसपर संवत् (१८७४) में-श्रीजिनहर्षसूरिने इसकी प्रतिष्ठाकिइ लिखाहै, यह कदमभी पेस्तर वैभारगिरिपरथे, वहांसे यहां लायेगये है, तीसरे कदम तीर्थंकर महावीरस्वामीकेभी यहांपर जायेनशीनहै. और उसपर लिखाहै संवत् (१९००) में इसकी प्रतिष्ठा किइगइ-और-ओशवाल वशोद्भव-बाबु खुशालचंद्र पत्नी-प्राणकुमारीवीवीने इनकों वनवाये, विपुलगिरिसे उतरकर रत्नागिरि पहाडपर जाना. विपुलगिरिका चढाव एककोशका-और-उतारभी एककोशका है.—

रत्नागिरि पहाडपर दो-मंदिर वनेहुवे है एकवडा और एक छोटा-वडामंदिर तीर्थंकर शांतिनाथजीका-इसमें शांतिनाथमहाराजके कदम तख्तनशीनहै. और उसपर लिखाहै संवत् (१८१९) में ओशवालगंधीगोत्र-बुलाखीदासके वेटे-मणीक्यचद्रगधीने इसकों तामीरकरवाये, तीनकदम औरभी है उनपरभी यहीलेख लिखाहुवा है, दूसरामदिर तीर्थंकर चिंतामणीपार्श्वनाथजीका-इसमें उनके कदम-तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहै सवत् (१९००) में-सचिंतीगोत्र-बाबु-महताबचंदजीकी औरत-चिरोंजीनीवीने इसकी मरम्मतकरवाइ, ये-कदमभी पेस्तर वैभारगिरीपरथे, वादमें यहां

लायेगये है, रत्नागिरिसे उतरकर उदयगिरिकों आना, पहाडसें उतरकर एक मीलतक साफरास्ता मिलेगा, इसजगह वहुतवडा मेंदान-और-तरहतरहकी जडीवुटीये-खडी है, अनतमूल-गोरखडी-शतावर-सहदेवी-आसगध-वगेरावगेरा, फुलोंमें चमेली-वेला-गुलदाउदी-जुही-निवार वगेरा यहांपर पैदाहोते है. रास्तेमें मीठेजलका कुवा मौजूदहै जिसकेजरीये यात्रीयोंकों आराम मिलताहै,—

उदयगिरिका चढाव-कठिनहै, और इसपर दो-मंदिर-मौजूदहै. एक-शामलियापार्श्वनाथजीका-दुसरा शातिनाथजीका-शामलियापार्श्वनाथजीके मदिरमें—तीर्थंकरपार्श्वनाथजीकी निहायत खूबसुरतमूर्त्ति-करीव (२) हाथवडी तख्तनशीनहै, इसपर लेख नहींहै, और जो तीर्थंकर पार्श्वनाथजीके कदम जायेनशीनहै उसपर लिखाहै सवत् (१८२३) मे-ओशवालगधीगोत्र-बुलाखीदासजीके वेटे माणिक्यचंद्रजीने इसकों तामीरकरवाये,-मदिरकी परकम्माके सामने एकछत्री वनीहुइहै, उसमें तीर्थंकरपार्श्वनाथजीकी शामरगमूर्त्ति-और-तीर्थंकर अभिनदनजीके कदम तख्तनशीन है. उसपरलिखाहै सवत् (१८२३) मे ओशवालगधीगोत्र-बुलाखीदासजीके वेटे माणिक्यचद्रजीने इनकों वनवाये, दाहनीतर्फकी दिवारमें एकछत्री वनीहुइहै और उसमे तीर्थंकर पदमप्रभुकी शामरगमूर्त्ति जायेनशीनहै. पिछाडीतर्फ दिवारमें एकमूर्त्ति और उसकेपास तीर्थंकर सुमतीनाथजीके कदम जायेनशीनहै, और उसपर लिखाहै सवत् (१८२३) में ओशवालगधीगोत्र-माणिक्यचद्रजीने इसकों तामीर करवाये. वायीतर्फकी दिवारमे एकछत्री और उसमें एकमूर्त्ति शामरगकी तख्तनशीनहै, पूर्वतर्फ तीनमदिरगिरेहुवेपडेहै, उदयगिरिपर पेस्तर औरभी कइमदिरथे मगर सनेस्ननाबुद होगये, उदयगिरिसें उतरकर स्वर्णगिरिकी तर्फजाना. रास्ताकोसभरका—

उतार-बीचमें कुछ सिधीसडकभी आतीहै. यहांपर पानीका एकनाला हमेशां वहता रहताहै, यात्रीकों पानीकी तकलीफ नहीहोती.

स्वर्णगिरिपहाडका चढाव और उतार दोंनोंबरावरहै और इसपर (२) मंदिर बनेहुवेहै, वडामंदिर तीर्थंकर रिषभदेवस्वामी-का-इसमे तीर्थंकररिषभदेवमहाराजकी शामरंगमूर्त्ति-और-उनकेक-दम तख्तनशीनहै, मूर्त्ति करीव (३) फुटवडी और इसपरलिखा हुवाहै संवत् (१५०४) फाल्गुनसुदी (९) बीजाहडगोत्र-सं-देवराजपुत्र-सं-खीमराज-सं-शिवराज -भार्यामाणिक्यदेपुत्र--सं-रणमल्लधर्मदासने-यहमूर्त्ति तामीरकरवाइ. दुसरामंदिर छोटाहै, और इसमें तीर्थंकर शांतिनाथजीकी मूर्त्ति करीव पौनफुट वडी त-ख्तनशीनहै, वडेमंदिरकी पश्चिमतर्फ एकमंदिर गिराहुवापडाहै, पेस्तर औरभी कइमंदिरथे-मगर-अवनहीरहे. स्वर्णगिरिसें उतरकर वैभा-रगिरिपहाडकोंजाना, रास्तेमें तरहतरहकेद्रख्त और जडीबुटीयें इत-नीखडीहै जिनका पहिचाननादुसवारहै, वैभारगिरिकीतराइमे-स्व-र्णभंडार-जो-राजाश्रेणिकका मशहूरखजानाथा पहाडकी खोहमेंबना हुवाहै, वडीभारीगुफा-और-उसके भीतरजानेकारास्ता पेस्तर बना हुवाथा आजकलबंदहै. गुफाकेदरवजेकेकरीव तीर्थंकररिषभदेवमहा-राजकी मूर्त्ति खडीसुरतमें कायोत्सर्गध्यानमयमौजूदहै, और कुमा-रनमि-विनमि-उनकीखिदमतमेंखडेहै, दर्शनकरके दिलखुशहोगा, स्वर्णभंडारसे पूरवकीतर्फ निर्माल्यकुट जहांकि-शालिभद्रजीकी औरतें हरहमेश नयेनये गेहने और पुशाकपहेनकर पुराने छोडदेतीथी, वो-जगह मौजूदहै, यात्री वहाभी जाकरदेखे, क्या क्या ! खुशनसीव और इकवालमदोकीजगहथी और अवक्या ! रहगइ ? सीर्फ ! जमीन पडीहै. न-वो-रवनकहै-न-वो-चीजेहै. निर्माल्यकुटसे वापिस स्व-र्णभंडारकी तर्फआकर वैभारगिरिपहाडकों जाना.

वैभारगिरिपहाड करीब कोसभरऊचा-और-बनिस्वतचारों-पहाडोंके इसका चढावउतारआसानीपरहै, इसपरअवलमदिर तीर्थ-करवासुपूज्यस्वामीका-इसमें-तीर्थकरवासुपूज्यस्वामीकीमूर्त्ति करीब (२) हाथवडी परिकरसमेत तख्तनशीनहै, दाहनीतर्फ तीर्थकरने-मनाथजीकेकदम जायेनशीनहै, इसकी मरम्मत संवत् (१७७६) मे हुइ, बायीतर्फ तीर्थकरशातिनाथजीकेकदम मौजूदहै, इसकी मरम्मत सवत् (१९००) में हुइ, दुसरा मदिर तीर्थकरमहावीरस्वामीका इसमें तीर्थकरमहावीरस्वामीकीमूर्त्ति करीब तीनफुटवडी शामरगत-ख्तनशीनहै, और तीर्थकर कुथुनाथमहाराजके कदमभी इसमें मोजूदहै, इसकी मरम्मत संवत् (१९००) में-बाबु मोहनलालजीके बेटे-हकुमतरायजीने करवाइ, तीसरामदिर तीर्थकरमहावीरस्वामीका इसमें उनकेकदम सवत् (१८७४) के प्रतिष्ठित-और-तीर्थकर नेमनाथजीकेकदमभी जायेनशीनहै, एकमूर्त्ति तीर्थकरपार्श्वनाथजीकी करीब (२) हाथवडी शामरग जायेनशीनहै, यहमदिर श्रीयुतबाबु परतापसिंहजी-साकीन मुर्शिदाबादने तामीरकरवाया, जोकि-वडा संगीन-और-पायदारहै, इसके चारोंकोनोंमें चारकदम अलगअलग जायेनशीनहै, इसमदिरकी दोनोंतर्फ और सामने तीनमदिर गिरे हुवे विरानपडेहै, पेस्तर इसवैभारगिरिपर वहुतसेमदिरथे-अवदिन ब-दिन कमहोतेजातेहै, चोथामदिर चौइस तीर्थकरोंका इसमें चौ-इसतीर्थकरोंकी छोटीछोटी (२४) मूर्त्तें एकही परीकरमें तख्तनशी-नहै, पाचवामदिर तीर्थकररिषभदेवस्वामीका इसमें तीर्थकररिषभदेव महाराजकीमूर्त्ती तख्तनशीनहै, यहमदिर-ओशवालगधीगोनमाणे-कचंदजीने तामीरकरवाया, रंगमंडप इसका उमदा और काबिल देखनेकेबनाहै, इसकी उपरकी मंजिलपर नकशा समवसरणका-निहायतउमदाबनाहै-जो-आस्मानसे मशवरा करताहै देखकर अ-सली समवसरण यादआताहै, छठामदिर गौतमगणधरका-जो-

उतार-बीचमें कुछ सिधीसडकभी आतीहै. यहांपर पानीका एकनाला हमेशां वहता रहताहै, यात्रीकों पानीकी तकलीफ नहीहोती.

स्वर्णगिरिपहाडका चढाव और उतार दोंनोंवरावरहै और इसपर (२) मंदिर वनेहुवेहै, वडामंदिर तीर्थंकर रिषभदेवस्वामीका–इसमें तीर्थंकररिषभदेवमहाराजकी शामरंगमूर्त्ति–और–उनकेकदम तख्तनशीनहै, मूर्त्ति करीव (३) फुटवडी और इसपरलिखा हुवाहै सवत् (१५०४) फाल्गुनसुदी (९) वीजाहडगोत्र–सं–देवराजपुत्र–सं–खीमराज–सं–शिवराज –भार्यामाणिक्यदेपुत्र––सं–रणमल्लधर्मदासने–यहमूर्त्ति तामीरकरवाइ. दुसरामंदिर छोटाहै, और इसमे तीर्थंकर शांतिनाथजीकी मूर्त्ति करीव पौनफुट वडी तख्तनशीनहै, वडेमंदिरकी पश्चिमतर्फ एकमंदिर गिराहुवापडाहै, पेस्तर औरभी कइमंदिरथे–मगर–अवनहीरहे. स्वर्णगिरिसे उतरकर वैभारगिरिपहाडकोंजाना, रास्तेमें तरहतरहकेद्रख्त और जडीबुटीयें इतनीखडीहै जिनका पहिचाननादुसवारहै, वैभारगिरिकीतराइमें–स्वर्णभंडार–जो–राजाश्रेणिकका मशहूरखजानाथा पहाडकी खोहमेंवना हुवाहै, वडीभारीगुफा–और–उसके भीतरजानेकारास्ता पेस्तर वना हुवाथा आजकलवंदहै. गुफाकेदरवजेकेकरीव तीर्थंकररिषभदेवमहाराजकी मूर्त्ति खडीसुरतमें कायोत्सर्गध्यानमयमौजूदहै, और कुमारनमि–विनमि–उनकीखिदमतमेंखडेहै, दर्शनकरके दिलखुशहोगा, स्वर्णभंडारसें पूरवकीतर्फ निर्माल्यकुइ जहाकि–शालिभद्रजीकी औरतें हरहमेश नयेनये गेहनें और पुशाकपहेनकर पुराने छोडदेतीथी, वो–जगह मौजूदहै, यात्री वहांभी जाकरदेखे, क्या क्या ! खुशनसीव और इकवालमंदोकीजगहथी और अवक्या ! रहगइ ? सीर्फ ! जमीन पडीहै. न–वो–रत्नकहे–न–वो–चीजेहै. निर्माल्यकुइसे वापिस स्वर्णभंडारकी तर्फआकर वैभारगिरिपहाडकों जाना.

वैभारगिरिपहाड करीब कोसभरऊचा–और–बनिस्बतचारो-पहाडोंके इसका चढावउतारआसानीपरहै, इसपरअवलमदिर तीर्थ-करवासुपूज्यस्वामीका–इसमे–तीर्थकरवासुपूज्यस्वामीकीमूर्त्ति करीब (२) हाथवडी परिकरसमेत तख्तनशीनहै, दाहनीतर्फ तीर्थकरने-मनाथजीकेकदम जायेनशीनहै, इसकी मरम्मत संवत् (१७७६) मे हुइ, वायीतर्फ तीर्थकरशांतिनाथजीकेकदम मौजूदहै, इसकी मरम्मत संवत् (१९००) में हुइ, दुसरा मदिर तीर्थकरमहावीरस्वामीका इसमें तीर्थकरमहावीरस्वामीकीमूर्त्ति करीब तीनफुटवडी शामरगत-ख्तनशीनहै, और तीर्थकर कुंथुनाथमहाराजके कदमभी इसमें मोजू-दहै, इसकी मरम्मत संवत् (१९००) में–वाबु मोहनलालजीके बेटे–हकुमतरायजीने करवाइ, तीसरामदिर तीर्थकरमहावीरस्वामीका इसमें उनकेकदम सवत् (१८७४) के प्रतिष्ठित–और–तीर्थकर नेमनाथजीकेकदमभी जायेनशीनहै, एकमूर्त्ति तीर्थकरपार्श्वनाथजीकी करीब (२) हाथवडी शामरंग जायेनशीनहै, यहमदिर श्रीयुतबाबु परतापसिंहजी–साकीन मुर्शिदाबादने तामीरकरवाया, जोकि–बडा संगीन–और–पायदारहै, इसके चारोकोनोंमें चारकदम अलगअलग जायेनशीनहै, इसमंदिरकी दोनोंतर्फ और सामने तीनमदिर गिरे हुवे विरानपडेहै, पेस्तर इसवैभारगिरिपर बहुतसेमदिरथे–अबदिन ब–दिन कमहोतेजातेहै, चोथामदिर चौइस तीर्थकरोंका इसमें चौ-इसतीर्थकरोंकी छोटीछोटी (२४) मूर्त्ते एकही परीकरमें तख्तनशी-नहै, पाचवामंदिर तीर्थकररिपभदेवस्वामीका इसमें तीर्थकररिपभदेव महाराजकीमूर्त्ती तख्तनशीनहै, यहमंदिर–ओशवालगधीगोनमाणे-कचंद्रजीने तामीरकरवाया, रगमंडप इसका उमदा और काबिल देखनेकेबनाहै, इसकी उपरकी मंजिलपर नकशा समवसरणका–निहायतउमदाबनाहै–जो–आस्मानसें मशवरा करताहै देखकर अ-सली समवसरण ५.२ग. छठामदिर गौतमगणधरका–जो–

पांचवेमंदिरसें आगे आधमीलके फासलेपरहै, इसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीकीमूर्त्ति करीव (४) फुटवडी तख्तनशीनहे,–और एकतर्फ (११) गणधरोंके कदम जायेनशीनहे, और उनपरलिखाहै संवत् (१८३०) माघशुक्लपंचमी शुक्रवारकेरौज ओशवालवश–गहेलडा गोत्र––जगतशेठ––फतेचंदजी–उनके वेटे आनदचदजी–उनके वेटे मेहतावरायजी–उनकी–शेठानी––शिंगारदेवीने–राजगृहीके वैभारगिरि पहाडपर––(११) गणधरोंके कदम तामीर करवाये, सातमामंदिर धन्ना––शालिभद्रजीका––इसमें धन्नाशालिभद्रजीकी मूर्त्ति– कायोत्सर्गध्यानमयखडे आकार करीव (१) फुटवडी तख्तनशीनहे, और उसपरलिखाहै सवत् (१५२४) आपाढ (१३) के रौज श्रीजिनचंद्रसूरिमहाराजके उपदेशसें श्रीकमलसंयमोपाध्यायने यहां धन्ना–शालिभद्रजीकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित किइ, इसके नीचे जिसश्रावकने मंदिरवनवाया उसकानाम वगेरालिखाहै मगर हर्फोंके घीस जानेकी वजहसे उठ सकता नही,—

वैभारगिरि पहाड वडेवडे अजायव और नायाव चीजोंकी जगहहै, वडेवडे आलिम फाजिल जैनमुनियोंने यहांपर ध्यानसमाधि किइ. हरेकयात्रीको ऐसे तीर्थकी जियारत करना चाहिये. वैभारगिरि पहाड सव पहाडोंसें रवन्नकदार है तरहतरहकी किमती जडीबूटीये यहांपर खडी है. पांचो पहाडके तमाम जैनमदिरमें पूजारी–नोकर–चाकर खर्च आमदनी वगेरा श्वेतांवरसंघके मातहेत है, और हरेकमदिरपर मरम्मतहोना दरकार है, वैभारगिरिसे उतरकर राजगृहीकों आना, पहाडकी दामनमें (१३) कुंड पानीके भरेहुवे पके वंधे है, पाचो पहाडोका चढाव–उतार–करीव (१२) कोशके घेरेमें होगा, जोकोइयात्री शुभहके सातवजे राजगृहीसे डोलीमें–या –पावपेदल–जावे–वह–जियारत करके शामको वापिस आसकते है,

गर्मीयोंके दिनोंमें दूफेरकी धूप वैभारगिरिकी तराइमें गुजारनाठीक है, वहा ठहरनेकी जगहवनी हुइ है, चारवजे वैभारगिरिपर जाकर सामकों राजगृही आसकतेहो, ठडके दिनोमे चाहे दिनभर पहाड-की जियारत करतेरहो, धूप विलकुल-न-सतायगी, जो यात्री डोलीमे जानाचाहे उसको दोरुपये नाआने लगेगे, और डोली उ-ठानेवाले (४) आदमी आयगें, उनकों पहाडपर चढनेउतरनेका महावरा वनाहुवा है, तुमकों वखूवी शामकों राजगृही पहुचादेयगें. मगर एकरोज पेस्तर डोलीका इतजाम करलेना चाहिये ताकि--वरवक्त जियारतके देर-न-हो, जो यात्री पावपेदल जियारत करेतो वहुत वहेत्तरहै मगर कमजोर और जइफआदमी अगर इतनी मेहनत-न-उठासके उनकेलिये डोलीमें जानाभी कोइहर्जनही.

☞ (तवारिख-तीर्थ-कुंडलपुर-और-सुवेविहार,)

कुंडलपुरगाव करीव (५००) घरोंकी आवादीका एककस्वा है, इसका दूसरा नाम आजकल वडगाव वोलते है, करीव चौइस-सोवर्ष पेस्तर इसकानाम माहणकुडगांव था, जिसकावयान कल्प-सूत्रमें दर्ज है. जमानेहालमें यहा कोइ जैनश्वेतावर श्रावकनही. एक जैनश्वेतावर मदिर यहांपर वनाहुवाहै, और इसमें मूलनायक तीर्थ-कर रिषभदेव महाराजकी मूर्त्ति करीव (३) फुट वडीतख्तनशीन है. जो-कि सवत् (१५०४) की तामीरकिइहुइ शामरग निहायत खूवसुरत दर्शनकरके दिलखुशहोगा. सवमूर्त्तियें इसमंदिरमें (११) है, और एकतर्फ गणधरगौतमस्वामीके कदम जायेनशीन है, मंदि-रमें फर्स शगेमर्मरपथरका और सभामडप अछा वनाहुवाहै, रंगम-डपके दरवजेपर एकशिलालेख लगाहै, और उसमे लिखाहैकि--संवत् (१९६०) में जैनश्वेतावर श्रावक-शेठ-रुपचद-रंगीलदास साकीन एवला-मुलकदखनने मदिरकी मरम्मतकरवाइ, मंदिरकेपास

धर्मशाला वनीहुइहै, दुसरेमंदिरका और धर्मशालाका एकही हाता मालूम देताहै, यात्री यहां कयामकरे और तीर्थकी जियारतकरे,- वगीचा एक यहां वनाहुवाहै जिसमें गुलाव-चमेली-वेला-कामिनी कुंद-जुही-गुलदाउदी वगेराके फुल उतरते है और पूजनमें चढाये जाते है, खानपानकी चीजोमें शिवाय आटादालके और यहांनही मिलेगी, कुंडलपुरकी गिर्दनवाहीमें चारपांच तालाव इसकदर गहरेजलसे भरेहुवे मौजूद है जिनमें हजारां कमलकेफूल पैदाहोते है, जिसके वडेभाग्यहो-ऐसे तीर्थकी जियारतकरे.

[तवारिख-सुवेविहार.]

जिले पटनेमें सुवेविहार एक रैलवेका टेशनहै, और टेशनसें करीव पौनमीलके फासले वस्ती सुवेविहार शुरुहोती है, सवारी टेशनपर इक्का-वगी वगेरा तयार मिलती है शहरमें जाकर महोले- मेथीआन-जैनधर्मशालामें कयामकरे, यहांसेभी पंचतीर्थी जानेका रास्ताहै. सुवेविहारमें पेस्तर जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी वहुत थी, मगर इसवख्त सीर्फ ! पांच-छ-घररहगये, मंदिर तीर्थकर महावीरस्वामीका-जो-इसीधर्मशालामें वनाहुवाहै इसके दर्शनकरे, मूलनायक तीर्थकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति इसमें तख्तनशीन है, इस मंदिरमें एकशिलालेख जो अलगरखाहुवाहै करीव (२) हाथ लंवा-और-एकविलस्त चौडा है, और इसमें राजगृहीके विपुलाचल पहाडका वयानदर्ज है, तीर्थकर महावीरस्वामी-गणधरसुधर्मास्वामी-राजाश्रेणिक-और अभयकुमार वगेरानामभी मौजूद है. संवत् तिथि वगेराकी जगह टुटीहुइहै, पंक्ति (१६) हर्फ उमदा-मगर घीसजानेकी वजहसें कमपढनेमें आते है, अखीरकी पंक्तिमें जहां गच्छकानाम होता है वहां किसीने तोडदियाहै, वज्र शाखा वगेरा नाम वेशक ! मौजूद है,—

दुसरामदिर वाजारमें तीर्थंकर चंदाप्रभुस्वामीका-इसमें तीर्थंकर चंदाप्रभुकी मूर्त्ति तख्तनशीन है. इसकेपास तीसरामंदिर तीर्थंकर अजितनाथ महाराजका-इसमें तीर्थंकर अजितनाथ महाराजकी मूर्त्ति तख्तनशीन है, चौथामदिर महोलेचोखंडीमें तीर्थंकर रिषभदेवस्वामीका-इसमे तीर्थंकर रिषभदेवस्वामीकी मूर्ति विराजमानहै, इसकेपास एकउपाश्रय जैनमुनिलोगोंके ठहरनेकेवास्ते मौजूदहै, वाजार सुवेविहारका उमदा-और हरेककिसमकी चीजे यहा पर मिलसकती है, तुगीयानगरी जोकि-आजकल तुगीगांवके नामसे मशहूरहै सुवेविहारसे (२) कोस दखनकीतर्फ वाके है, तुगीयानगरीके श्रावकोका वयान जैनशास्त्रोमें जो दर्ज है-वह-यही नगरीथी. पेस्तर वडी आवादथी और यहांके श्रावक वडेधर्मपावंद थे, मगर आजकल-यहांपर-न -कोइश्रावकहै -न-जैनमंदिर है, सीर्फ ! एक छोटासा गाव आवाद है,—

☞ [तवारिख पावापुरी और गुणशिलवन उद्यान,]

तीर्थंकरमहावीरस्वामीकी निर्वाणभूमि पावापुरी एक जैनतीर्थ है, केवलज्ञान होनेकेवाद जव तीर्थंकरमहावीरस्वामी यहा तशरीफ लायेथे देवताओने उनका यहा समवसरण वनायाथा, समवसरण उसजगहको कहतेहै जहा धर्मकेवारेमें तालीम आमलोगोंको दिइजाय इंद्रभूति-अग्निभूति-और-वायुभूतिवगेरा (११) वडेचेले इसीपावापुरीमेंहुवे, वाद पावापुरीसेरवानाहोकर मुल्कोंमेंआमलोगोंको तालीमधर्मकीदिइ, और हरजगह धर्मकीवाज करतेरहे, जवउनकी उमर (७२) वर्षकीहुइ फिर पावापुरीमेंआये, और अखीरका चौमासा यहा किया.-जव उनके निर्वाणहोनेका वख्त-आया दोदिन-

धर्मशाला बनीहुइहै, दुरसेमंदिरका और धर्मशालाका एकही हाता मालूम देताहै, यात्री यहां कयामकरे और तीर्थकी जियारतकरे,- बगीचा एक यहां बनाहुवाहै जिसमें गुलाब-चमेली-वेला-कामिनी कुंद-जुही-गुलदाउदी वगेराके फुल उतरते है और पूजनमें चढाये जाते है, खानपानकी चीजोमें शिवाय आटादालके और यहांनही मिलेगी, कुंडलपुरकी गिर्दनवाहीमें चारपांच तालाव इसकदर गहरेजलसे भरेहुवे मौजूद है जिनमें हजारां कमलकेफूल पैदाहोते है, जिसके वडेभाग्यहो-ऐसे तीर्थकी जियारतकरे.

[तवारिख-सुबेविहार.]

जिले पटनेमें सुबेविहार एक रैलवेका टेशनहै, और टेशनसें करीब पौनमीलके फासले वस्ती सुबेविहार शुरुहोती है, सवारी टेशनपर इक्का-वगी वगेरा तयार मिलती है शहरमें जाकर महोलेमेथीआन-जैनधर्मशालामें कयामकरे, यहांसेभी पंचतीर्थी जानेका रास्ताहै. सुबेविहारमें पेस्तर जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आवादी बहुत थी, मगर इसवख्त सीर्फ ! पांच-छ-घररहगये, मंदिर तीर्थकर महावीरस्वामीका-जो-इसीधर्मशालामें बनाहुवाहै इसके दर्शनकरे, मूलनायक तीर्थकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति इसमें तख्तनशीन है, इस मंदिरमें एकशिलालेख जो अलगरखाहुवाहै करीब (२) हाथ लंबा-और-एकविलस्त चौडा है, और इसमें राजग्रहीके विपुलाचल पहाडका बयानदर्ज है, तीर्थकर महावीरस्वामी-गणधरसुधर्मास्वामी-राजाश्रेणिक-और अभयकुमार वगेरानामभी मौजूद है. संवत् तिथि वगेराकी जगह टुटीहुइहै, पंक्ति (१६) हर्फ उमदा-मगर घीसजानेकी वजहसें कमपढनेमें आते है, अखीरकी पंक्तिमें जहां गच्छकानाम होता है वहां किसीने तोडदियाहै, वज्र शाखा वगेरा नाम बेसक ! मौजूद है,—

तख्तनशीनहै, असलमें यहमूर्त्ति पुरानी है. और उसपर लिखाहैकि संवत् (४४४) मे यह प्रतिष्ठितकिइगइ, प्रतिष्ठा करानेवाले आचार्यका नाम घीसजानेकी वजहसे पढनेमे नहीआता, इसमूर्त्तिके इर्द गीर्द तीर्थंकर रिषभदेव–चंद्रप्रभु–सुविधिनाथ–और–तीर्थंकर नेमनाथमहाराजकी मूर्त्तिये जायेनशीनहै, मूलनायकके सामने तीर्थंकर महावीरस्वामीके चरन–दाहनीतर्फ पुरानेचरन–बायीतर्फ ग्यारहगणधरोंके चरन–और–देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण महाराजकी मूर्त्ति करीब (१) फुटवडी जायेनशीनहै, चारोकोंनोंमे चारछत्री–एकमें तीर्थंकर महावीरस्वामीके चरन–एकमे स्थूलभद्रजीके चरन–एकमें चंदनवालाके–और–एकमे दादाजीके चरन–मौजूदहै, रंगमंडप मंदिरका निहायत पुख्ता–और–निचे फर्स शंगमर्मरपथरका साफबना हुवाहै, मंदिरका शिखरबहुत बुलंदहै, और उसपर बावनकलसीयां लगीहुइ–निहायत खूबसूरति देरही है, मंदिरके बहार बगीचा एक बहुत–तर–व–ताजा–बनाहुवा इसमे गुलाब–चमेली–चंपा–केतकी–बेला–मोघरा–गुलदाउदी–डमरा–मरुआ–जुही–कुंद–वगेराकेफुल पैदाहोते है और हमेशाकी पूजनमें चढाये जाते है,—

धर्मशालाके अंदर (२१) कोठरी और कइदालानहै, सब काम मजबुत और लदावका कियाहुवा–करीब (४००) आदमी इसमें ब–खूबी आराम करसकते है, और दरवजेके फाटकपर नकारखाना जारी है, दुसरी धर्मशाला इसीकी दिवारसे लगीहुइ इसमे वडाभारी कमरा और चारोतर्फ चारदालान बनेहुवे है. चारोंतर्फ कोट खीचाहुवा और एकवगीचा इसमेंभी मौजूदहै, दोंनो धर्मशाला–और–मंदिर करीब (५) विधेकेघेरेमें बनेहुवे–और चारकुवे मीठेजलके यहापर मौजूदहै, धर्मशाला और मंदिरके सामने जो सिढिमडक जाती है वह कमल सरोवरतक पहुची है. जहां

तक उनोने आमलोगोंकों तालीमधर्मकीदिइ, साधु-साधवी-श्राव
श्राविका-उसवख्तके कइराजे-और इंद्रदेवतेवगेरा वहांहाजिर
उसवख्त तीर्थकरमहावीरस्वामीसे-गौतमगणधरनेपुछाकि--महारा
अब-आगे दुनियामें धर्मकामचार कैसारहेगा? तीर्थकरमहावीरस्व
मीने जबावदियाकि-मेरेनिर्वाणकेबाद तीनवर्ष और साढेआठमहि
गुजरेगे जब पांचमाआरा शुरुहोगा. उसरौजसे धर्मकी दिन-ब
दिन घटतीहोतीजायगी और अछीअछीचीजोंका जवालहोताजाय
गा, साधुलोग तकलीफ पायगें और असाधुलोग चैनकरेगें, व
रीश जैसी होनाचाहिये-न-होगी, देवमदिर कमहोतेजायगे, औ
धर्मप्रेमी लोग फरेबकरेगें, पांचवेआरेके एकीसहजारवर्षमें तेइसद
धर्मका उदय और तेइसदफे अस्तहोगा, जंबूअणगारकेबाद मुक्ति
काहोना इसक्षेत्रमें बंदहोजायगा, और अधर्मकीवृद्धिहोगी, इसतर
बयानफरमाकर कार्तिकवदी अमावासकेरौज जब चंद्रमा-स्वातिन
क्षत्रपरथा उनका इसीपावापुरीसे निर्वाणहुवा. (यानी) यहांसे उ
नोने मुक्तिपाइ, देवताओने और मनुष्योंने मिलकर उनकेशरीरक
यहां अग्निसंस्कारकिया,-

क्षत्रीयकुंडगांवकेराजा नदीवर्द्धनने यहां मंदिर तामीरकरवाय
जो कमलसरोवरकेबीच अबतक मौजूदहै, दोकोशदूरसे यहमदिर न-
जरआताहै और इसका दूसरानाम जलमदिरभी बोलतेहै,-पावा-
पुरी पेस्तरबहुत आबादथी मगर दिनपरदिन कमहोतीगइ, आज-
कल एकछोटासा कस्बा रहगया, जैनश्वेतांबर धर्मशाला यहांपर (४)
कायमहै, दो-पचायती, एक रायबहादूरबुधसिंहजी-साकीनमुर्शि-
दाबादकी-और-एक-दुगड-मुन्नीलालबाबु-साकीनमुर्शिदाबादकी-
यात्री इनमें जहामरजीहो-आरामकरे. बडीधर्मशालामें एक जैनश्वे-
तांबरमदिर बनाहुवाहै,-और इसमें तीर्थकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति

(बयान मंदिर कमलसरोवर.)

मंदिरकमलसरोवर जिसकाहाल उपरवतलाचुकेहैकि–यह–मंदिर–क्षत्रीयकुंडगांवके राजानंदिवर्द्धनका तामीरकरायाहुवाहै. इस मंदिरका आसार और दिवार इसकदर पायदारीसे बनाइगइहैकि–जमानेहालमें ऐसाननना दुसवारहै, कमलसरोवरके कनारेसे मंदिर तकजानेकेलिये (५८८) फुटका पुलबनाहुवाहै यात्री इसीपुलपर होकर जलमंदिरको जातेहै, दोनोंतर्फ पुलकेउपर पथरकेकठहरे बने हुवेहै, यात्री जब मंदिरकेपासपहुचतेहै–तो–कोटका–अवलदरवजा मीलताहै, चारोंकोनेपर चारउत्रीये–लोहेका कीमतीकठहरा बहुत बडीकारीगिरीसे सनातकियागयाहै, यात्री जब दूसरीपरकम्मामें पहुचतेहै निहायतउमदाजगह मालूमहोतीहै, वहारआनेकों दिलनही होता तीसरीपरकम्मा जोकि–दर्मियान मंदिर और कमलसरोवरके है मानींद स्वर्गकेदेखलो !

जलमंदिरमें तीर्थंकर महावीरस्वामीकेचरन पुराने बनेहुवे त-[illegible]ख्तनशीनहै, दाहनीतर्फके आलेमें गौतमस्वामीके और बायीतर्फके आलेमें सुधर्मास्वामीके चरन जायेनशीनहै, तीर्थंकर महावीरस्वामी[illegible] चरनोपर हमेशां सोनेचांदीके छत्र बधेरहते है, वेदीमें और दिवा[illegible]पर चांदीकेपत्र लगेहुवे–और–चांदीके खभोपर शमियाना कम-[illegible]ख्वावका बनाहुवा रहताहै. यात्री मंदिरमें जाकर तीर्थंकर महावीर [illegible]स्वामीके चरनोंके दर्शनकरे, इसमंदिरके तीनोंतर्फ तीनदरवजे और [illegible]चारोंतर्फ परकम्मा बनीहइहै, कातिकवदी–अमावासकेरोज तीर्थं[illegible]कर महावीरस्वामीके [illegible] जलसा बडीधूमधामसे य-[illegible]र होताहै. और [illegible]त्री यहांपरजमाहोते है, उस [illegible] [illegible]वापुरीसे निकलकर इसी

तीर्थंकर महावीरस्वामीके चरन मुकीमहै, रास्तेमें-एकमंदिर-मेहता-बकुंवर-साकीन-मुर्शिदाबादका तामीरकरायाहुवा शिखरबंद मौजूदहै, और उसमें मूलनायक तीर्थंकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति करीव (२) हाथवडी तख्तनशीनहै, एकतर्फ तीर्थंकर रिषभदेव--और-एकतर्फ-शांतिनाथ महाराजकी मूर्त्ति जायेनशीनहै, मंदिरके उपर चौमुखाजीकी चारमूर्त्तिये-शिखर निहायत पुख्ता-जिसपर सोनेका कलश लगाहुवा देखकर दिलखूशहोगा. सामने मीठे जलकाकुवा और एकवगीचा लगाहुवाहै, जिसमें गुलाव-चमेली-वेला-गुलदाउदी--कुंद-जुही--जासूस--वगेराके फुल पैदाहोते है, और हमेशांकीपूजनमें चढायेजाते है. मंदिरके पिछाडी धर्मशाला एक रायवहादूर बुधसिहजी-साकीन मूर्शिदावादकी तामीर कराइ हुइ जिसमे चारकोठरी-दोदालान-और-एक-कमरा-वनाहुवाहै, करीव (१००) आदमी इसमेंकयाम करसकते है दुसरी धर्मशाला वाबु मुन्नीलाल दुगडकी इसमें पांचकोठरी-चारदालान-और बीचमे खुलाचौक मौजूदहै इसमें करीव (५०) आदमी ठहरसकते है,

कमलसरोवरकी उत्तरमे एकमंदिर समवसरणका-जिसकीकतावजा निहायत उमदा-आठ मेहरावें-चारोतर्फ लोहेकीजाली,--मेहरावोकेउपर तरहतरहके शीशे लगेहुवे-मंदिरकेठीकवीचमें शंगमर्मरपथरकी वेदी वनीहुइ और इसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीके पुरानेचरन तख्तनशीनहै. इसपर पुराना लेखथा, मगर-व-सबव घीसजानेकी वजहसे खुलनहीसकता, मंदिरकीचारोतर्फ (४८) चश्मोंका कोट-और-लोहेकाकठहरा वनाहुवाहै, जमीन पथरचुनासे गचीकिइहुइ-और-करीव एकविघेके घेरेमें यहमंदिर आवाद है, केवडेकेद्रख्त सामनेलगेहुवे और इसकी खुशबूचारोंतर्फ महेकरहीहै.

यहापा-जैनश्वेतावरसंघके ताल्लुकहै खानपानकीचीजे आटा-दाल -घी-दूध-सकर-वगेरा हरवख्त यहां मिलसकती है,—यात्रीकों कोइतकलीफ नहीहोगी,—

(तवारिख पावापुरीकी खतमहुइ.)

☞ [तवारिख गुणशिलवन उद्यान.]

गुणशिलवन उद्यान-जिसकों-आजकल-गुणायाजीगाव वोलते है, करीब (३००) आवादीका एककस्वा रहगया, यहापर बीचतालावके वडाकीमती पुख्ता और पायदार मंदिर देखकर पावापुरीके हालात मालूमदेते है. पावापुरीका काम वेशक! वडाहै यहांका तालाव-मंदिर वगेरा छोटे है, तालावके कनारेसे मंदिर तकजानेकेलिये पुल पकावधाहुवा जो करीब (१७५) हाथलंबा और (४) हाथचौडा-दोनोतर्फ पुख्ताकठहरा वनाहुवा-यात्री पुलपरहोकर मंदिरको जावे, वारीशकेदिनोमें तालाव पानीसे भरजाताहै मगर गर्मीयोंके दिनोमें वेशक! सुकजाता है, मंदिरमें मूलनायक तीर्थंकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति एकफुटवडी निहायत खूबसुरत तख्तमशीनहै दर्शनकरके दिलखूशहोगा, कदम तीर्थंकर महावीरस्वामीके-सवत् (१६८६) के प्रतिष्ठित-इसीमें जायेनशीन है. बायीतर्फ एकआलेमें कदम गौतमस्वामीके जायेनशीनहै और उसपर लिखाहै संवत् (१६८८) मे-ये-प्रतिष्ठित कियेगये, अग्निकोंनकी छत्रीमें वीशतीर्थंकरोके कदम सवत् (१९२४) के प्रतिष्ठित जायेनशीनहै, वायव्यकोंनकी छत्रीमें सवत् (१९२४) के प्रतिष्ठित तीर्थंकर नेमनाथजीके कदम-नैरुत्यकोंनकी छत्रीमें रिषभदेवस्वामीके कदम-और-इशानकोंनकी छत्रीमें तीर्थंकर वासुपूज्यस्वामीके कदम-इसीसवत् (१९२४) के प्रतिष्ठित जायेनशीनहै, इसमंदि-

कमलसरोवरके मंदिरमे आतीहै, हाथी–घोडे–निशान–धजा–पताका–रथ–म्याना–पालखी–चांदीका समवसरण और–तरहतरहके वाजे शाथचलते है, इसतरह जलमंदिरमे जाकर नामको उसी जलसेकेशाथ सवारी वापीस पावापुरीआती है, उसवख्त मगधदेशके वहुतसे देहातीलोग जमाहोते हैं, और वडाजलसा होताहै, ऐसा नायावजलसा यात्रीकों जरुरदेखना चाहिये, जिसकेवडेभाग्यहो–ऐसे–मोकेपर जियारतकों जावे, जलमंदिरमे तीर्थंकर महावीरस्वामीके चरनपर जो अंगीसोनेकी वनीहुइहै रायवहादूर धनपतसिंहजी साकीन–मुर्शिदावादकी–वनाइहुइहै, पूरवदखनकी कोंनमें जो सोलहसतीयोंके चरनहै उसपर लेख परतापसिंहजी धनपतसिंहजीका है. उत्तरपूरवकीकोनमे जो गणिदीपविजयजीके चरनहै–वे–जैनश्वेतांवरथे, और श्वेतांवरोंकीतर्फसे वनायेगयेहै, वहारकीछत्रीमें जो दादाजीके चरनहै–उसपरलिखाहै संवत् (१७९३) आषाढसुदी पंचमीकेरोज प्रतिष्ठित कियेगये,–

कमलसरोवरमें उतरनेकी सीढियां पूरवतर्फकी वनीहुइहै, उस जगह (३०) हाथ उंडा जल हमेशा भरारहताहै. कमलसरोवर (८४) विघेकेघेरेमें वनाहुवा हमेशां पानीसे भरारहताहै, कभी सुकतानही. वारीशकेदिनोमे वडीरवशकदेखोगे, और हरसाल इसमें हजारां कमलफुल पैदाहोते है. मोर–तोते–चिडिया–मुर्घे इसमेंहमेशां कलोले करतेरहते है. पेस्तर यहसरोवर वहुत वडाथा, पावापुरीसे पूरवकों आधमीलके फासलेपर पुराने समवसरणकी जगह छत्रीमें जो चरनथे–कमलसरोवरके नजदीक केवडोंके पेडोंके पास जो समवसरणका मंदिर उपर वतायाहै उसमे तख्तनशीन कियेगये है, पावापुरीमें तीर्थका खजाना–मुनीम–गुमास्ते–नोकर–चाकर–चपरासी वगेरा सवठाठ वतौर शाहानाके मौजूद है, खर्च–आमदनी–

[भाग दुसरा.]

[तवारिख-तीर्थ-पटना,]

पंचतीर्थीकी जियारतके अगर कोइ यात्री नवादेसे रैलमे सवार होवे और लखीसराय-मधुपुर होते गिरिडी टेशन उतरकर समेतशिखरजी जानाचाहे-तो-जासक्तेहै, नवादेसे वापिस गयाजंकशन आकर गयासे हजारीवागरोड होकर इसरी टेशनसे समेतशिखर जानाचाहे-तोभी-जासकतेहै, गयासे वांकीपुरहोते पटना जानाचाहे तो जासकतेहै, मगर यात्री पंचतीर्थीकी जियारतकरके विहार टेशन आवे और रैलमे सवार होकर-सोह-पचासा-वैना-हरनाट-चेडो-वख्तियारपुर-करौता-खुशरोपुर--फतवाह,-और-वाकाघाट-होते-पटनासीटी जाय, रैलकिराया आठआने लगतेहै,-

जब राजगृहीके राजाश्रेणिकका इंतकालहुवा उसके वेटे कौणिकने अपने वालिदकी फिकसे राजगृही छोडकर चंपानगरीमें रहना इख्तियार किया, कौणिकके तीन नामथे, कौणिक-अशोकचद्र-और-अजातशत्रु, जब कौणिककी उमर खतमहुइ उसके वेटे उदायिने अपने वालिदकी फिकसै चंपा छोडकर दुसरा शहर आवाद करनाचाहा, और अपने नोकरोंकों बुलाकर हुकमदियाकि जाओ ! तुम ऐसी जगह तलाशकरो जहा-मे-दुसरा शहर आवाद करुं, और अपना अमलदरामद रहना वसना वहा कायम करुं, नोकर लोग चपासे रवाना होकर जगह तलाश करने लगे, और फीर घूमते घूमते-जहा-शहर पटना आवाद है आये, और देखा कि गंगाकनारे एक-पाडल नामका दरख्त-वडा गुलजार-और उसपुरासमे एक-पपैया-बेठापाया, गंगाका पानी जोरसे वह-

रकी मरम्मत संवत् (१९२४) में रायबहादूर धनपतसिंहजी-साकीन मुर्शिदाबादने करवाइ, और एकधर्मशालाभी यहा बनवाइ,

मंदिरके रंगमंडपमें फर्स शंगेमर्मरका—और—वेदी-संवत् (१९५९) में-शेठ-रंगीलदास रुपचंद-साकीन एवला-मुल्कदखनने तामीर करवाइ, और धर्मशालामें पांचकोठरी वनवाइ, वगीचा एक-धर्मशालामें-बनाहुवा-जिसमें-गुलाब-चमेली-बेला--गुलदाउदी-जुही-कुंद-वगेराके फुल पैदाहोते है और पूजनमें चढायेजाते है, यात्री धर्मशालामें दिलचाहे जहां कयामकरे और तीर्थकी जियारत हासिल करे, तीर्थ गुणशिलवनउद्यानमें गुमास्ता-पूजारी--सिपाही-और-माली-वगेरा हमेशांके लिये तैनात है, खानपानकी मामुलीचीजे यहां मिलसकेगी, अछीचीज कस्बे नवादेमें-मिलेगी, जो करीब (१॥) कोशके फासलेपर वाकेहै,-तवारिख पंचतीर्थी खतमहुइ,—

[जैनतीर्थगाइडका-प्रथम-भाग-समाप्त,—]

[भाग दुसरा.]

[तवारिख-तीर्थ-पटना,]

पचतीर्थीकी जियारतके अगर कोइ यात्री नवादेसे रैलमे सवार होवे और लखीसराय-मधुपुर होते गिरिडी टेशन उतरकर समेतशिखरजी जानाचाहे-तो-जासक्तेहै, नवादेसे वापिस गयाजंकशन आकर गयासे हजारीबागरोड होकर इसरी टेशनसे समेतशिखर जानाचाहे-तोभी-जासकतेहै, गयासे वांकीपुरहोते पटना जानाचाहे तो जासकतेहै, मगर यात्री पंचतीर्थीकी जियारतकरके विहार टेशन आवे और रैलमे सवार होकर-सोह-पचासा-वेना-हरनाट-चेडो-बख्तियारपुर-करौता-खुशरोपुर--फतवाह,-और-बाकाघाट-होते-पटनासीटी जाय, रैलकिराया आठआने लगतेहै,-

जब राजगृहीके राजाश्रेणिकका इंतकालहुवा उसके बेटे कौणिकने अपने वालिदकी फिक्रसे राजगृही छोडकर चपानगरीमें रहना इख्तियार किया, कौणिकके तीन नामथे, कौणिक-अशोकचंद्र-और-अजातशत्रु, जब कौणिककी उमर खतमहुइ उसके बेटे उदायिने अपने वालिदकी फिक्रसे चंपा छोडकर दुसरा शहर आबाद करनाचाहा, और अपने नोकरोंको बुलाकर हुकमदियाकि जाओ ! तुम ऐसी जगह तलाशकरो जहा-में-दुसरा शहर आबाद करु, और अपना अमलदरामद रहना बसना वहा कायम करुं, नोकर लोग चपासे रवाना होकर जगह तलाश करने लगे, और फीर घूमते घूमते-जहा-शहर पटना आबाद है आये, और देखा तो गगाकनारे एक-पाडल नामका द्रख्त-बडा गुलजार-और उसके शुराखमें एक-पपैया-बैठापाया, गंगाका पानी जोरसे बह-

रकी मरम्मत संवत् (१९२४) में रायवहादूर धनपतसिंहजी-साकीन मुर्शिदावादने करवाइ, और एकधर्मशालाभी यहां वनवाइ,

मंदिरके रंगमंडपमें फर्स शंगेमर्मरका—और—वेदी-संवत् (१९५९) में-शेठ-रंगीलदास रुपचंद-साकीन एवला-मुल्कदखनने तामीर करवाइ, और धर्मशालामें पांचकोठरी वनवाइ, वगीचा एक-धर्मशालामें-वनाहुवा-जिसमें-गुलाव-चमेली-वेंला--गुलदाउदी-जुही-कुंद-वगेराके फुल पैदाहोते है और पूजनमें चढायेजाते है, यात्री धर्मशालामें दिलचाहे जहां कयामकरे और तीर्थकी जियारत हासिल करे, तीर्थ गुणशिलवनउद्यानमें गुमास्ता-पूजारी--सिपाही-और-माली-वगेरा हमेशांके लिये तैनात है, खानपानकी मामुलीचीजे यहां मिलसकेगी, अछीचीज कस्वे नवादेमें-मिलेगी, जो करीव (१॥) कोशके फासलेपर वाकेहै,-तवारिख पंचतीर्थी खतमहुइ,—

[जैनतीर्थगाइडका-प्रथम-भाग-समाप्त,—]

लभद्रजी राजानंदके दरबारमें गये, और पुछाकि-मेरेवालिदका-इतकाल किसतरह हुवा, राजानदने कहा क्या! तुम ख्वावमेथे,जो अपने वालिदका हालभी नही जानते, उनोने एक-सगीन-गुनाह कियाथा जिसकी वजहसे उनकों वेंमोत मरनापडा, अवतुम उसकी दिवानगिरी कुवुलकरो, स्थुलभद्रजीन अपने दिलमें खयाल किया कि-मुजे-अैसी दिवानागिरीसे कोइ जरुरतनही. जिससे कभी-वेंमोत माराजाउ, जाहिरातमे राजा नदसे कहा, में-कल इसका जवाब दुगा, अैसा कहकर राजा नदके दरवारसे-वे-अपने घर-आये, और दुनयवी एशआरामकों छोडकर संभूतिविजय गुरुके पास दीक्षा इख्तियार किइ, दुसरे रौज राजानदके दरवारमें जा-कर कहाकि-मुजे-परमेश्वरके घरकी दिवानगिरी अछी मालूम दे-तीहै, राजानदने इसवातपर तारीफ किइ, और कहा, जो कुछ-किया अछाकिया, मगर इस दिवानगिरीकों उमदा तोरसे निभाना अैसा मतकरना कि-दोंनों-दीनसे जाओ. पेस्तरके लोग कैसे अछे दिलवालेथे-जरा नसीहत-पाइकि-धर्मके पावद होजातेथे, आज तावे उमर नसीहत पातेरहे मगर क्या! मजालहै!! असरहो वल्कि कइलोग दीक्षालेनेवालेकी दिल्लगी करतेहैकि-इनसे कमाया नहीगया, फकीर होगये.

नवमेनदके वाद पटनेके तख्तपर मौर्यवशी राजाचद्रगुप्त वेठा, निदानकि-नवमेनदका और चद्रगुप्तका जव पटनेके मेदानमें जग हुवा नवमेनंदने सिकस्तखाइ, चद्रगुप्त फतेहमद हुवा, चाणाक्य इसी चंद्रगुप्तका दिवानथा, जैनश्वेताबर उमास्वाति वाचक इसी पटनाकें रहनेवालेथे, जैनाचार्य-भद्रबाहु-आर्यमहागिरि-आर्यसुह-स्ति-और-वज्रस्वामि-इसपटनेमें तशरीफलायेथे. और जैनधर्मकी तरक्की किइथी, पेस्तर यहां (८४) वादशाला (यानी) मजहवी

रहाथा और फव्वारे उसके उछलकर पपैयाके मुहमे गिररहेथे, नोकरोने खयाल कियाकि-जैसे परीदके मुहमें गंगाकापानी खुद-ब-खुद गिररहाहै अगर यहांपर शहर आवाद किया जायतो खुद-ब-खुद दौलत आनकर लोगोंको मिलेगी. और तमामलोग अमन-व-आराममें रहेगें. गरजकि-नोकरलोग तलाश करके चंपामें आये, और अपने मालिकसे तमाम हाल सुनाया, राजाउदायिने वहांजाकर शहर आवाद किया. और उसकानाम पाटलीपुत्र रखा, मगर लोगोंने अपनी जवानमे पटना कहा, इन सवुतोसे, मालुम होताहै करीव (२०००) वर्ष हुवे पटना शहर आवाद है, पटनेका दुसरा नाम कुसुमपुरभी कहलाया, क्यौंकि-उनदिनोमें फूलोंकी पैदाश ज्यादह होतीथी. उदायिके वाद पटनेके तख्तपर नंदनामका राजा बेठा, उसके पीछे दुसरानद-फिर तीसरा, फिर चौथा, गरजकि-इसीतरह नवनंद पटनेकी गदीपर राजाहुवे. नवमे नंदका दिवान-शकडाल था, और उसके दो-वेटे-थे, पहलेका नाम स्थुलभद्र-और-दुसरेका नाम सिरियक, उस अर्सेमें कोशानामकी एक कस्वन-इसपटनेमे-रहतीथी, जो वहुत खूवसुरत-और-कमालहुस्नथीं, इत्तिफाकसे स्थूलभद्रजीकी निगाह उसपर पडी, और आशक होगये, यहांतककि-घरकाकाम छोडकर वारावर्प उसीकी मोहव्वत में फसेरहे, जव इनके वालिदका इंतकालहुवा नंदराजाने इनके छोटेभाइ-सिरियकको-वुलाया, और कहाकि-तुम-पटनेकी दिवानगिरि लेलो. उसनेकहा-मे-इसकामके लाइक नहीहु, मेरावड़ा भाइ स्थुलभद्रजी है आप उनको वुलवावे, राजानंदने हुकम दिया कि-तुम-जाओ ? और उसको वुलालाओ, छोटाभाइ अपने वडेभाइके पास गया, और कहा तुमको राजानंद वुलातेहे, चलो, और पटनेकी दिवानगिरी देतेहै लो,-जवाकि-कस्वनके घरसे स्थु-

रात-शालदुशाले-मेवा-मिठाइ--जिसचीजकी दरकारहो तयार मिलती है, पटनेका अफीमगोदाम भारी-और-कइजिलोसें अफीम यहांआताहै. तिजारतके लिये पटनाएक नामीशहरहै, और नीलका व्यापार यहां ज्यादह होताहै, मुल्कनयपालसे मणोवंद वडीइलायची यहांआती है, और मुल्कोंमें भेजीजाती है, पटनेकी चारोतर्फ कइ वाग वनेहुवे और उनमे तरहतरहके फलफुल पैदाहोते है, मेडिकल कालेज-लाइब्रेरी-विहारनेशनेलकालेज-और खेराती अस्पताल-वडीलागतके वनेहुवे है, पटनेके नजदीक गंगाकापाट वारीशके दिनोंमें करिच चारकोशका होजाताहै, पटनेसे पश्चिमकों आठकोश सोन-भद्रनदी-दखनसे-आनकर गगामें मिली, ओर सरयूभी आनकर उसी जगह मिली है. वारीशके दिनोमे उसजगह गगाकापाट सातकोश चोडाहोजाताहै, अतराफ पटनेके-जव-चने-मटर-अरहर-सरसों-तील-और-अलसी-कसरतसे पैदाहोती है. पटनेमें जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर-पाच-सात-और-वाडेकी गलीमे (२) जैनश्वेतावरमदिर वनेहुवे है, दोनोंमें मूलनायक तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकीमूर्त्ति तख्तनशीनहै, और दोनोंमदिरोंकी मरम्तहोना दरकारहै, धर्मशाला एक-वडेमदिरके दरवजेपर वतौरकमरेके वनीहुइहै, दुसरी वगलमें गिरीहुइपडी है, अगरकोइ खुशनसीव इसकों फिरसे वनवावे यात्रीयोकों आराम रहेगा.

पटनेसें पश्चिमकों महोले तुलसीमडीमें स्थूलभद्रजीके चरनोंकी छत्री और सुदर्शनशेठका शूलीसिहासन वननेका स्थान काविल देखनेके है, इस जगहकों कमलद्रहभी वोलते है, क्योंकि-पेस्तर-यहा कमल वहुत पैदा होतेथे, करीव (९) विघेके घेरेमे कमलद्रह तालाव-और-वगीचा वगेरा आवादहै, जो कोइ जैनश्वेतावरयात्री पटनेमें कदमरखे कमद्रहको जरुर देखे, और वहाकी जियारत करे

वहेसकरनेके मकानातथे, जिनमे हमेशां मजहबपर वहेस हुवा तीथी, पट्दर्शनके जाननेवाले पंडित यहापर मौजूदथे. वडेवडे वादी और वहत्तरकलाके जाननेवाले यहाहुवे, रसायनवि अदृष्टविद्या-और इंद्रजालविद्याके वाकिफगार यहां होगये, हा योके सोदागिर-और-तलवारकी धारपर नाचकर अपनाह बतलानेवाले यहारहतेथे, संस्कृत इल्मके जाननेवाले और संगी कलाके माहितगार यहांपर मौजूदथे. कहांतक वयानकरे वडे अजुबात यहांपर होचुके है. पेस्तर-इस्त्रीसनके जव मेगेस्थने चीनामुसाफिर पटनेमे आयाथा अपने सफरनामेमें लिखाहै-मैंने गंगा और सोननदीके संगमपर पटनाशहर देखा उसवख्त करी (२४) मीलकेघेरेमें गुलजारशहरथा. और वडेवडेलंबे वाजार हवांत्सांगचीना मुसाफिर जव हिंदमे आयाथा उसनेभी इसव देखाथा, उसवख्त (११) मीलकेघेरेमें पटनाशहर आवादथा वादशाह अखवरने अपनी हकुमत यहां किइ, औरंगजेबने अजि मको पटनेका सुवेदार वनाया तवसे पटनेकानाम अजिमावादभी कहलाया, पटनेकी आवहवा उमदा और चावलकी पैदाश यह ज्यादहहोती है, जहांपर गंगा और सोननदी मिलीहै पेस्तर वहां तक शहरपटना आवादथा, अव-वो-जगह (१६) मीलके फासलेपर होगइ है.

पटना इसवख्त कलकत्तेसे (३२०) मील वायुकोनको झुकता हुवा बिहारमे अवलदर्जेका शहरहै, गंगाकनारे नवमीलतक लंवा वसताचलागया, पटनेकी मर्दुमशुमारी (१६५१९२) मनुष्योंकी-पुरानाकिला-जो-शहरको घेरेहुवेथा अवनहीरहा, गलियां तग-मकानात इंटचुनेके पकेवनेहुवे जिनकी-छत-खुली, और कवेलु-छायेहुवे मकान वहुतकम देखोगे, वाजारमे-सोनाचांदी-जवाहि-

मरम्मत होना जरुरी है, अगर कोइ यात्री मरम्मत कराना चाहे करीब हजाररुपये लगेगे, शहरपटनेमें जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर पेस्तर बहुतथे, मगर आजकल सिर्फ ! पाचचार रहगये, उपाश्रय चार मौजूदहै मगर सब खाली पडे है, तीर्थंकरोका-जो-फरमाना थाकि-पांचमेकालमें धर्म कमहोजायगा-सो-नजरके सामने देखलो ! पटनेका बाजार रवनकदार-लोग खुशमिजाज-और-पुशाक उमदा है, मकान-यहाके इसकदर खूबसुरत और मजबूतहै कि-जिनकी बनावट देखकर हरकिसीको ताज्जुब आताहै, यात्री पटनेकी जियारत करके आगेको रवाना होवे.

पटनासीटीसे रेलमे सवारहोकर-बकाघाट-फतवाह-खुशरोपुर-करौता--बख्तियारपुर-अथमलगोला--वाढ, बख्तियारपुरसे (११) मील दूर वाढ एक-रैलवे टेशनहै, पटना जिलेमें गंगाके दाहनेकनारे वाढ एक अच्छा कस्वाहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमें वाढकी मर्दुमशुमारी (१२३६३) मनुष्योकीथी. वाढसे-पाडराक-मोर-कल्पसूत्रमें-जो-मोराकसनिवेश लिखाहै जहाकि-तीर्थंकर महावीरस्वामी कदमरजा फरमाचुके है यही है, मोरसे-मुकामा जकशन जाना, रैलकिराया सवासात आने लगते है, मोकामा जंकशनसे सीतामढी टेशनकी टिकीट लेना और रैलमें सवारहोकर मोकामाघाट टेशन उतरना, और वहासे ष्टीमरमे बेठकर गगापार जाना, ष्टीमर तयार रहती है, ष्टीमरका किराया अलग नहि लगता. वही टिकीट कामदेगा-जो मोकामासे सीतामढीतक लियाहै, ष्टीमरमें माल चढाने उतारनेकेलिये कुली मौजूद रहते है. चार पैसे दियेकि-माल-चढादेयगें, गगापार जाते कुछ बहुत देर-न-लगेगी, गगाके सामने कनारे पहुचतेही रैल तयार मिलती है, सेमरियाघाट टेशनसे रेलमे सवारहोकर बरारा ब-

घाडेकी गलीसे-या-चौकवाजारसें इका-वगी किराये मिलसकतेहै, अगर कोइ यात्री पश्चिमसे आयेहो-या-पटनेसे व-जरीये रैलके कमलद्रह जानाचाहे-गुलजारबाग टेशनपर उतरे, कमलद्रहतालाव गुलजारबाग टेशनसें बहुत करीवहै, इक्के-वगीकी वहां कोइ जरुरत नही, कमलद्रहमें छत्री स्थूलभद्रजीकी पुरानी वनीहुइ और उसपर लिखाहै संवत् (१८४८) में इसकी मरम्मत किइगइ, और जैनश्वेतांवराचार्य-अमृतचंद्रसूरिने-इसकी प्रतिष्ठा किइ, छत्री सुदर्शनशेठकी कुछ नीची जमीनपर वनीहुइ है, जगह निहायतपाक-एक-मीठेजलका कुवा-और-दशवारां आमकेपेंड लगेहुवे है, छत्रीके पासकी जमीनमे वडे वडे गढे पडगये है उनमें मीटी भरादिइ जाय और छत्रीकी मरम्मत करादिइ जाय कोइ रोज तीर्थकी हिफाजत वनीरहेगी, करीव (२०००) रुपये सर्फा होगे, ऐसे तीर्थोमें दोलत लगाना हरयात्रीकी फर्ज है. तीर्थोमें यह कदीमीरवाज होताचला-आयाकि-एक मंदिर पुरानाहोकर गिरगया किसी खुश नसीवने फिर नया वनादिया इसीतरह तीर्थकी हिफाजत वनीरहती है.

शहर पटनेसे करीव (१) मीलपर जहा वगीचा दादाजीका और-एक छोटी धर्मशाला वनीहुइ है कोइ यात्री वहां ठहरनाचाहे तो-ठहरसकते है,-वगीचेमें-आम-अमरुद-कटहेर--अंजीर--नीवु वगेरा पेंड-और फुलोंमें-गुलाव-वेला-मोतिया-जुही वगेराके पेंड खडे है, छत्री-दादाजीकी-सवत् (१६८२) की तामीर किइ हुइ और उसके दरवजेपर शिलालेख लगाहुवाहै, शेठ सुदर्शनके कदमोंकी छत्री यहांभी वनीहुइहै, और कदमोंपर लिखा है. अन्वय पदप्राप्तस्य-श्रेष्ठिसुदर्शनस्य-इमेपादुके संप्रतिष्ठिते-सकल संघेन-वगीचेके कोटकी सफील एक तर्फसें गिरीहुइहै, वारीशके दिनोमें भीतर वगीचेके-और-छत्रीतक-पानी आजाता है, इसकी

मरम्मत होना जरूरी है, अगर कोइ यात्री मरम्मत कराना चाहे करीब हजाररुपये लगेगे, शहरपटनेमें जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर पेस्तर बहुतथे, मगर आजकल सिर्फ ! पांचचार रहगये, उपाश्रय चार मौजूदहै मगर सब खाली पडे है, तीर्थंकरोंका-जो-फरमाना थाकि-पांचमेंकालमें धर्म कमहोजायगा-सो-नजरके सामने देखलो ! पटनेका बाजार रवन्नकदार-लोग खुशमिजाज-और-पुशाक उमदा है, मकान-यहाके इसकदर खूबसुरत और मजबूतहै कि-जिनकी बनावट देखकर हरकिसीकों ताज्जुब आताहै, यात्री पटनेकी जियारत करके आगेकों रवाना होवे.

पटनासीटीसे रैलमें सवारहोकर-बकाघाट-फतवाह-खुशरोपुर-करौता--बख्तियारपुर-अथमलगोला--बाढ, बख्तियारपुरसे (११) मील दूर बाढ एक-रैलवे टेशनहै, पटना जिलेमें गगाके दाहनेकनारे बाढ एक अच्छा कस्वाहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमें बाढकी मर्दुमशुमारी (१२३६३) मनुष्योंकीथी. बाढसे-पाडराक-मोर-कल्पसूत्रमें-जो-मोराकसनिवेश लिखाहै जहाकि-तीर्थंकर महावीरस्वामी कदमरंजा फरमाचुके है यही है, मोरसे-मुकामा जकशन जाना, रैलकिराया सवासात आने लगते है, मोकामा जंकशनसे सीतामढी टेशनकी टिकीट लेना और रैलमें सवारहोकर मोकामाघाट टेशन उतरना, और वहासे ष्टीमरमें बेठकर गगापार जाना, ष्टीमर तयार रहती है, ष्टीमरका किराया अलग नहि लगता. वही टिकीट कामदेगा-जो मोकामासे सीतामढीतक लियाहै, ष्टीमरमे माल चढाने उतारनेकेलिये कुली मौजूद रहते है. चार पैसे दियेकि-माल-चढादेयगें, गगापार जाते कुछ बहुत देर-न-लगेगी, गगाके सामने कनारे पहुचतेही रैल तयार मिलती है, सेमरियाघाट टेशनसे रैलमे सवारहोकर बरारा ब-

रानीगंज-तेगरा-बछवारा-दलसिंहसराय-और उजारपुर होते स-मस्तीपुर जंकशन उतरना, रैलकिराया मोकामा जंकशनसे यहांतक आठआने लगते है, सीतामढी टेशन जानेवाले यात्री यहांउतरकर दरभंगा जानेवाली रैलमें सवारहोवे, और किसनपुर-हैयाघाट-और-लहेरियासराय-टेशनहोते दरभंगा जाय, रैलकिराया पोने-चारआने.

बागमती नदीके कनारे जिलेका सदर मुकाम-एक-गुलजार शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त-दरभंगाकी-मर्दुमशुमारी (७३५६१) मनुष्योंकीथी,-सिविलकचहरी-स्कुल-अस्पताल-शिवसागर तालाव-बाग बगीचे-बडेबडे बाजार-और राजमहल काबिल देखनेके है, मकान बनानेकी लकडी यहां उमदा होतीहै, अनाज-निमक-लोहा-वगेरेकी तिजारतभी अछी होतीहै दरभंगाके उत्तरमे नयपाल राज्य-पूरवमें जिला भागलपुर-दखनमें गंगानदी-और-जिला-मुंगेर-और पश्चिममें जिला-मुजफरपुरहै,-दरभंगामें-कोइ जैनश्वेतांबर श्रावक-या-मंदिरनही, यात्री शहर देखना चाहे एक रौजके लिये उतरे और शहर देखे,-दरभंगासे रैलमे सवार होकर-महम्मदपुर-कमतोल-जोगियारा-जनकपुररोड-और-बाजपट्टी-होते सीतामढी टेशन उतरे,-रैलकिराया चारआने लगतेहै,-टेशनसे शहर बहुत दुरनही है सवारीभी मिलती है शहरमे जाकर जहां सुभीता देखे कयामकरे.

[तवारिख-तीर्थ-मिथिला,]

मुल्क-विदेहकी-राजधानी मिथिलानगरी पेस्तर बडी आबा-दथी, उन्नीसमें तीर्थंकर मल्लिनाथ इसीमें पैदाहुवेथे, कुंभराजाके खानदानमें प्रभावती रानीकी कुख्से मृगशीर सुदी (११)-अ-

श्विनी नक्षत्रके रौज उनका-यहां-जन्महुवा, वडीउमर होनेके वाद-उनोने-दुनयवी एशआराम छोडकर मृगशीर सुदी (११) के-रौज-यहां दीक्षा इख्तियार किइ, केवलज्ञानभी उनको यहांही पैदाहुवा, जगह जगह फिरकर उनोने लोगोकों तालीम धर्मकी दिइ, इंद्रदेवते वगेरा उनकी खिदमतमें आतेथे, एकीसमें तीर्थंकर नमिनाथ इसीमिथिलामें पैदाहुवे, विजय राजाके खानदानमें विमा रानीकी कुखसे श्रावणवदी (८) के रौज उनका यहा जन्महुवा, कइ अर्सेतक उनोने मिथिलापर अमल्दारी किइ, और आषाढवदी (९) मीके-रौज दुनिया फानीसरायको छोडकर यहा उनोने दीक्षा इख्तियार किइ. मृगशीरसुदी (११) के-रौज-उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इद्रदेवते वगेरा उनकी खिदमतमे आतेथे,-

राजा-रामचद्रजीकी पटरानी महासती सीता इसीमिथिलामें जनकराजाके घर पैदाहुइ, और यहाही उसका स्वयंवरमडप रचागयाथा, जब रामचद्रजीने धनुष्यचढाया सीताने खुशहोकर उनके गलेमे वरमाला पहनाइ, नमिराज नामकेराजा-इसी-मिथिलाके राजाहुवे, एकमरतवेका जिक्रहैकि-जब-ये-बुखारकी तेजीमें गाफिलहुवे हकिमोने सलाहदिइ आप तमामबदनपर चदनका लेप करावे, इनकी वहुतसी रानियाथी, पासके कमरोमें उनोनेजब वास्ते राजासाहबके चदन घीसना शुरुकिया, चंदनके घीसनेकी वजहसे हाथोमें-जो-ककन पहनेहुवेथे आपसमे अवाज करनेलगे, राजाने सुनाकि-यह-क्या ! माजराहै, ? उनोने जवावदिया-हम लोग-आपकेलिये-जो-चदन घीसते है उससे चुडियाकी अवाज निकलती है, नमिराजाने हुकमदियाकि-सब-चुडिये निकालडालो सिर्फ ! एक एक रहनेदो, उनोने ब-हुकमराजाके वैसाही किया, तब अवाज बद होगइ, इस वातपरसे राजाकों-यह-खयाल

रानीगंज-तेगरा-बछवारा-दलसिंहसराय-और उजारपुर होते समस्तीपुर जंकशन उतरना, रैलकिराया मोकामा जंकशनसे यहांतक आठआने लगते है, सीतामढी टेशन जानेवाले यात्री यहांउतरकर दरभंगा जानेवाली रैलमें सवारहोवे, और किसनपुर-हैयाघाट-और-लहेरियासराय-टेशनहोते दरभंगा जाय, रैलकिराया पोने-चारआने.

वागमती नदीके कनारे जिलेका सदर मुकाम-एक-गुलजार शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त-दरभंगाकी-मर्दुमशुमारी (७३५६१) मनुष्योंकीथी,-सिविलकचहरी-स्कुल-अस्पताल-शिवसागर तालाव-वाग वगीचे-वडेवडे वाजार-और राजमहल काविल देखनेके है, मकान वनानेकी लकडी यहां उमदा होतीहै, अनाज-निमक-लोहा-वगेरेकी तिजारतभी अछी होतीहै दरभंगाके उत्तरमें नयपाल राज्य-पूरवमें जिला भागलपुर-दखनमें गंगानदी-और-जिला-मुंगेर-और पश्चिममें जिला-मुजफरपुरहै,-दरभंगामें-कोइ जैनश्वेतांवर श्रावक-या-मंदिरनही, यात्री शहर देखना चाहे एक रौजके लिये उतरे और शहर देखे,-दरभंगासे रैलमें सवार होकर-महम्मदपुर-कमतोल-जोगियारा-जनकपुररोड-और-वाजपटी-होते सीतामढी टेशन उतरे,-रैलकिराया चारआने लगतेहै,-टेशनसे शहर वहुत दुरनही है सवारीभी मिलती है शहरमें जाकर जहा सुभीता देखे कयामकरे.

[तवारिख-तीर्थ-मिथिला,]

मुल्क-विदेहकी-राजधानी मिथिलानगरी पेस्तर वडी आवादथी, उन्नीसमें तीर्थंकर मल्लिनाथ इसीमें पेदाहुवेथे, कुंभराजाके खानदानमें प्रभावती रानीकी कुखसे मृगशीर सुदी (११)-अ-

श्विनी नक्षत्रके रौज उनका-यहा-जन्महुवा, वडीउमर होनेके वाद-उनोने-दुनयवी एशआराम छोडकर मृगशीर सुदी (११) के-रौज-यहा दीक्षा इख्तियार किइ, केवलज्ञानभी उनको यहांही पैदाहुवा, जगह जगह फिरकर उनोने लोगोकों तालीम धर्मकी दिइ, इंद्रदेवते वगेरा उनकी खिदमतमें आतेथे, एकीसमें तीर्थंकर नमिनाथ इसीमिथिलामें पैदाहुवे, विजय राजाके खानदानमें विप्रा रानीकी कुखसें श्रावणवदी (८) के रौज उनका यहां जन्महुवा, कइ अर्सेतक उनोने मिथिलापर अमल्दारी किइ, और आषाढवदी (९) मीके-रौज दुनिया फानीसरायको छोडकर यहा उनोने दीक्षा इख्तियार किइ. मृगशीरसुदी (११) के-रौज-उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवते वगेरा उनकी खिदमतमे आतेथे,-

राजा-रामचद्रजीकी पटरानी महासती सीता इसीमिथिलामें जनकराजाके घर पैदाहुइ, और यहाही उसका स्वयवरमडप रचागयाथा, जव रामचद्रजीने धनुष्यचढाया सीताने खुशहोकर उनके गलेमे वरमाला पहनाइ, नमिराज नामकेराजा-इसी-मिथिलाके राजाहुवे, एकमरतवेका जिक्रहैकि-जव-ये-वुखारकी तेजीमें गाफिलहुवे हकिमोने सलाहदिइ आप तमामवदनपर चदनका लेप करावे, इनकी वहुतसी रानियाथी, पासके कमरोंमें उनोनेजव वास्ते राजासाहवके चंदन घीसना शुरुकिया, चंदनके घीसनेकी वजहसे हाथोंमे-जो-ककुन पहनेहुवेथे आपसमे अवाज करनेलगे, राजाने सुनाकि-यह-क्या ! माजराहै, ? उनोने जवावदिया-हम लोग-आपकेलिये-जो-चदन घीसते है उससे चुडियाकी अवाज निकलती है, नमिराजाने हुकमदियाकि-सव-चुडिये निकालडालो सिर्फ ! एक एक रहनेदो, उनोने व-हुकमराजाके वैसाही किया, तव अवाज वद होगइ, इस वातपरसे राजाकों-यह-खयाल पैदा

हुवाकि-दुनियामें अकेला रहनाही बहुत बहेत्तर है, जहां बहुत है वहांही झगडाहै, अगर मुजे इसबीमारीसे-आराम मिला फौरन! में-दुनिया छोडकर अकेला जंगलकी राह लुंगा, और दिक्षा इ-ख्तियारकरके जंगलमे तपस्या करुंगा, आखीरकार खुशकिस्मतिसे उनको आराम हुवा और सलतन छोडकर जंगलका रास्ता लिया, तनाहीमेंजाकर तपकरने लगे, एकमरतबा इंद्रने आनकर उनका इम्तिहानलिया, और कहाकि-आपकी रानीयां-और-रियाया आ-पकेवास्ते रोरही है, नमिराजरिषिने कहा-न-मेरा कोइहै-न-में किसीकाहुं. कहांका राजा! कहांकी रानी! मेरा धर्म मेरे शाथ है, जोशख्श परलोकका रास्ता साफकरना चाहे धर्म करे. ए! ना-जरीन!! इन बातोपर जरा गौर करो, कैसे कैसे एश-आराम छोडकर राजाओनेभी दीक्षा इख्तियार किइहै, और तुम अबतक अपने एशआराममें गाफिलहो, मगर यादरहे! जोकुछ धर्म करोगे वही बहेत्तर होगा. आदमीका चोला-बारबार-नहि मिलता, मगर अपशोस इसबातकाहैकि-बहुतसे अनजानलोग धर्मको पहिचानते-भी नही, उनको इसतेहरीरका असर होना मुश्किल है,

तीर्थंकर महावीरस्वामीने यहांपर (६) चौमासे गुजारे. आ-ठमे-गणधर इसी मिथिलाके रहनेवालेथे, चोथे निन्हव-जो-ती-र्थंकर महावीरके निर्वाणबाद (२२०) वर्ष पीछे पैदा हुवेथे-इसी मिथिलाके रहनेवालेथे, मिथिलाके नामसें मुल्कका नामभी मैथिल मशहूरहुवा, पेस्तर-विदेह-मुल्क कहलाताथा, पानीकी बहुतायतमें कुवे-बावडी-और-तालाब-जाबजा मौजूदथे, अबभी किसीकदर-कम नही. जलकी तरीसे बनास्पतिकी तरकी यहा हमेशासे रहती रही, केलेके पेंड इसकदर होतेथेकि-सालभरकी फसल सारा मुल्क नही-खासकताथा, दूध यहा इसकदर होताथाकि-हरशख्श एक

पैसेका दूध लेकर खीर वनाताथा और पेटभरकर खाताथा. अन-भी-ये-चीजे यहां किसीकदर कम नही, वडे वडे दौलतमन्द यहा-पर होचुके जिनके घर हाथी वधतेथे, संस्कृतविद्याकी यहां इतनी तरक्कीथीकि-किसानलोगभी-सस्कृत जवानमे वातचीत करतेथे, आजकल सस्कृत इल्मकी उतनी तरक्की नही रही, मुल्क निहायत उमदा-और-लोग खुशमिजाज है.

पेस्तर यहा तीर्थंकर मल्लिनाथ-और-नमिनाथके मदिर बने हुवेथे, आजकल-न-कोइ जैनश्वेतावर मदिरहै-न-जैनश्वेतावर श्रा-वकहै, मुजफरपुर यहांसे करीव (१५) कोसके फासलेपर वाकेहै. जवतक उसमे जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी रही, इसतीर्थकी देखरेख करतेरहे, वादअजा कुछ नहीरही, और तीर्थ विरान हो-गया, तीर्थंकर मल्लिनाथ-और-नमिनाथजीके चरन-जो-यहा छ-त्रीयोमें कायम रहगयेथे-उठाकर भागलपुरमें लाये है, और सामने टेशनके रायवहादुर धनपतसिहजीकी धर्मशालाके मदिरमें कायम किये है, सीतामढी इसवख्त जनकपुररोडसे (१६) मीलके फासले करीव दसहजार आदमीकी वस्तीका कस्वा रहगया, वाजार-न-वहुतवडा-न-छोटा-मगर सव किसमकी चीजे यहापर मिलसकेगी स्कुल-अस्पताल-कचहरी वगेरा मकानात अछे बनेहुवेहै, चावल-और नयपालकी पैदावारीकी चीजे यहा वीकती है, लखनदेइ न-दीपर लकडीका पुल वनाहुवाहै और चैतकी रामनवमीके रोज य-हांपर मेलाभरताहै. उसमें हाथी-वेल-पितलके वर्तन-और कपडे वगेराकी तिजारत अछी होती है, यात्री-यहां-पूरव-उत्तरकीतर्फ मुहकरके तीर्थकर मल्लिनाथ-और-नमिनाथकी इवादत करे, और दिलमे समझेकि-तीर्थमिथिलाकी जियारतकामयावहुइ. अगर कोइ खुशनसीव-इस तीर्थको फिरसे तरक्की देनाचाहे-मंदिर-धर्मशाला

वनवाकर पूजनका बंदोवस्त करे, और तीर्थको फिरसे कायम करे, निहायत उमदावातहै, वीस-पचीसहजार रुपये खर्च करनेसे तीर्थ कायम होसकताहै, दुनियादारीके कामोमें हजारोंह खर्च होते है धर्ममें अगर उतने खर्च कियेजाय कितना फायदाहो, रामचदजी लक्ष्मणजीका मंदिर और सीताकुंड यहांपर वनाहुवा है इसलिये वैदिकमजहववालेभी इस जगहको तीर्थ मानते है, सीतामढीसे रैलमें सवारहोकर उसीरास्ते वापिस दरभंगा-समस्तीपुर-सेमरियाघाट-मोकामाघाट-होते-मोकामा जंकशन आना, और मोकामा जंकशनसे रैलमें सवारहोकर-डर्मा-वहीं-मंकाथा-होते लखीसराय-उतरना, रैलकिराया साढेतीन आने,

[तवारिख-तीर्थ-काकंदी,]

लखीसरायसे वेलगाडीके रास्ते रवानाहोकर यात्री काकंदी नगरीजाय, जोकरीव (६) कोशके फासलेपर वाके है, और आजकल काकंदगांवके नामसे मशहूरहै, तीर्थंकर सुविधिनाथमहाराज इसीकाकंदीमें पैदाहुवे, चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये-चारकल्याणिक उनके यहांहुवे, सुग्रीवराजाकेघर मृगशीरवदी (५) मूलनक्षत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, कइअर्सेतक उनोने काकंदीके तख्तपर अमलदारी किइ, पेस्तर दीक्षाके एकसालतक उनोने यहांपर खूब-खैरात-किइ, मृगशीरवदी (६) के-रौज-दुनियाके एशआराम छोडकर उनोने यहां दीक्षा इख्तियार किइ, और कातिकसुदी (३) के-रौज-उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवतेवगेरा उनकी खिदमतमें आतेथे, पेस्तर यहनगरी वडी रवनकपरथी. वडेवडे दौलतमंद वाशिंदे यहांपर आवादथे और वडेवडे खुशनसीव राजेमहाराजे यहांपर अमलदारी करचुके है, धन्नाकाकंदी नामके-जैनमुनि-इसीकाकंदीके रहनेवालेथे, जिनोने तप

किया और उमदागति पाइ, जैनश्वेतांबरमंदिर-यहापर-निहायत पुख्ता बनाहुवाहै, और इसमें-तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजकी-मूर्त्ति तख्तनशीनहै, जोकि-संवत् (१५०४) फाल्गुनसुदी सप्तमीकी प्रतिष्ठित निहायत खूबसुरत-और-अतिशययुक्तहै, तीर्थंकर सुविधिनाथमहारारांजके कदमभी इसमें जायेनशीनहै, जो—संवत् (१८??) वैशाखसुदी छठके प्रतिष्ठितहै, करीब मंदिरके धर्मशाला बनी हुइ-यात्री-इसमें कयामकरे, और तीर्थकी जियारतकरे, खानपानकी चीजे यहां अछीनही मिलती, लखीसरायसे बंदोबस्तकरते आनाचाहिये, तीर्थ-काकंदीकी--जियारतकरके यात्री क्षत्रीयकुंडगावकी जियारतकों जावे,

☞ (तवारिख-तीर्थ-क्षत्रीयकुंड गांव)

काकंदीसे (९) कोशके फासलेपर तीर्थंकर महावीरस्वामीकी जन्मभूमि क्षत्रीयकुंड गाव पुराना जैन तीर्थहै, सिद्धार्थ राजाकेघर त्रिशलारानीकी कुखसे चैतसुदी (१३) उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रकेरौज उनका यहा जन्महुवा, उनोने अमल्दारी इख्तियार नहिंकिइ, और धर्मकी राहपर कदमरखा, पेस्तरदीक्षाके एक सालतक उनोने यहा बहुत खैरातकिइ, और मृगसीर सुदी (१०) उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रके रौज दुनियाके ऐश आराम छोडकर उनोने यहां ज्ञात वनखंड उद्यानमें दीक्षा इख्तियारकिइ. साढेबारां वर्षतक तप किया, और वैशाखसुदी (१०) उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रके रौज रिजुवालुका नदीके कनारे उनकों यहां केवल ज्ञानपैदाहुवा. इंद्रदेवता वगेरा उनकी खिदमतमें आतेथे, क्षत्रीयकुंड गांव पेस्तर ज्यादहरवनकपरथा, जोकोइ यात्री मुल्क पूरबकी जियारतकों जावे क्षत्रीयकुंड गांवकी जियारत जरुरकरे, तीर्थकर महावीर स्वामीकी जन्मभूमि होनेसे बडीपाक जगहहै, एकजैनश्वेतांबर मंदिर-और बडी

आलीशान धर्मशाला यहांपर बनीहुइहै, यात्री इसमें कयाम करे, बडे बडे कमरे-दालान-और-हवादार मकान बनेहुवेहै,-तीर्थकी जियारतकरे, क्षत्रीयकुंड गांवको आजकल लछवाड गांव बोलते है इसकेपास एकपहाड जिसका नामभी लछवाड मशहूरहै क्षत्रीयकुंड गांवसे करीब (१॥) कोसके फासलेपर वाके है, ज्ञातवनखंड उ-द्यान जहां-तीर्थंकर महावीर स्वामीने दीक्षा इख्तियार किइथी, रवन्नकदार जगहहै, वडा वसीमेंदान और बडे बडे दरख्त-यहांपर-खडे है, जिसकी छाया देखकर आदमीकी तबीयत खुशहोजाती है, और-यही-जी-चाहताहैकि-यहांही बेठेरहे.

क्षत्रीयकुंड गांवके मंदिरका दर्शन करके यात्री दुसरे रोज पहाडपर जावे, गांवसे पहाडतक जानेके लिये बेलगाडी-डोली-वगेरा सवारी मिलसकती है, जिसको पांवपैदलजाना मंजूरहो-वैसे-जाय, डोलीमें जानाहो-डोलीमें जाय, पहाडकी तराइमे (२) जैनश्वे-तांबर मंदिर बनेहुवेहै, रास्तेमे एकछोटी नदीभी मिलतीहै. क्षत्रीय कुंडगांवसे हरहमेश पुजारी यहां आनकर पुजाकर जाताहै, यात्री इन दोनों मंदिरोके दर्शनकरके पहाडपर जावे, रास्तेमें तरह तरहके दरख्त-और-जगली मेवाजातके पेंडखडे है, चीता-शेर-रींछ वगेरा जानवरभी इस पहाडमे रहतेहै मगर बदौलत तीर्थ भूमिके किसीको तकलीफ नहीदेते, पहाडका चढाव करीब एककोशका-और-जब ठीकसीरेपर पहुचोगे तीर्थंकर महावीर स्वामीका एक-आलिशान-मंदिर मिलेगा, मूर्त्ति इसमें तीर्थंकर महाविर स्वामीकी शामरंग निहायत खूबसुरत तख्तनशीनहै. अगर पूजा करना चाहो-पूजा-भी-करशकतेहो, पानी वगेराका इतजाम सब मौजूदहै, अतराफ मंदिरके कोट खीचाहुवा-बहार-बडीबडी शिला-चट्टाने-चिश्मेंवाद और-तरह तरहके जगलीपेंड खडेहै, यात्री यहा खानपान करना

चाहे–तो–करसकतेहै, मदिरका हाता अलगहै और बहारका हाता अलगहै, यहापर कोइचीज खानपानकी नही मिलसकती. जोकुछ अपनेशाथ लायेहोगे वही कामदेगा. जियारत करके वापिसउसी रास्ते पहाडसे उतरकर क्षत्रीयकुंड गाव आना, पहाडपर रातकेवख्त ठहरनेकी जगह नहीहै, शुभहके गयेहुवे यात्री शामकों–व–खूवी–आसकते है, क्षत्रीयकुंड गावकी जियारत करके वापिस लखीसराय जकशन आना, और रैलमें सवार होकर–कवील–कजरा धरहरा–जमालपुर–वरीयारपुर–सुलतानगंज–अखवरनगर–और–नाथनगर होते भागलपुर–टेशन उतरना, और तीर्थ चपापुरीकी जियारतकों जाना,

☞ [तवारिख–तीर्थ–चंपापुरी.]

तीर्थंकर वासुपूज्य स्वामीकी जन्मभूमि चंपापुरी पुराना जैन–तीर्थहै. वसुपूज्य–राजाकेघर–जयारानीकी कुखसे फाल्गुन वदी (१४) शतभिषा नक्षत्रके रौज उनका यहा जन्महुवा, दीक्षाके पेस्तर उनोने यहापर बहुत खेरात किइ, और फाल्गुनसुदी (१५) के–रौज दुनयवी ऐश आराम छोडकर यहा दीक्षा इख्तियार किइ माघसुदी (२) के–रौज उनकों यहा केवलज्ञान पैदाहुवा, उनकी खिदमतमें इद्रदेवते वगेरा आतेथे. श्रीपालजी–जिनोने–नवपदका आराधन कियाथा–इसीचंपापुरीके–राजाथे, तीर्थंकर महावीर स्वामीने यहा तीनचौमासे किये, कामदेव श्रावक–जिसकावयान–सूत्रउपाशक दशागमे दर्जहै इसीचपाका रहनेवालाथा, कुमारनंदी नामका एक–स्वर्णकार–जिसका वयान–सूत्र आवश्यकमे मौजूदहै इसीचंपाका नामी ग्रामी शख्सथा, जैनाचार्य–शय्यभव सूरिने दशवैकालिकसूत्र इसीचपामें बनाया, सुभद्रासती इसीचपाकी रहेनेवालीथी वडेवडे खुशनसीब लोग इसचपामें पैदाहुवे, कहांतक

आलीशान धर्मशाला यहांपर बनीहुइहे, यात्री इसमें कयाम करें, बडे बडे कमरे-दालान-और-हवादार मकान बनेहुवेहै,-तीर्थकी जियारतकरे, क्षत्रीयकुंड गांवको आजकल लछवाड गांव बोलते है इसकेपास एकपहाड जिसका नामभी लछवाड मशहूरहै क्षत्रीयकुंड गांवसे करीब (१॥) कोसके फासलेपर वाके है, ज्ञातवनखंड उ-द्यान जहां-तीर्थंकर महावीर स्वामीने दीक्षा इख्तियार किइथी, रवन्नकदार जगहहै, वडा वसीमैदान और बडे बडे द्रख्त-यहांपर-खडे है, जिसकी छाया देखकर आदमीकी तबीयत खुशहोजाती है, और-यही-जी-चाहताहैकि-यहाही बेठेरहे.

क्षत्रीयकुंड गांवके मंदिरका दर्शन करके यात्री दुसरे रौज पहाडपर जावे, गांवसे पहाडतक जानेके लिये बेलगाडी-डोली-वगेरा सवारी मिलसकती है, जिसको पांवपैदलजाना मंजूरहो-वैसे-जाय, डोलीमें जानाहो-डोलीमें जाय, पहाडकी तराइमे (२) जैनश्वे-तांबर मंदिर बनेहुवेहै, रास्तेमे एकछोटी नदीभी मिलतीहै. क्षत्रीय कुंडगांवसे हरहमेश पुजारी यहां आनकर पुजाकर जाताहै, यात्री इन दोनों मंदिरोके दर्शनकरके पहाडपर जावे, रास्तेमें तरह तरहके द्रख्त-और-जंगली मेवाजातके पेडखडे है, चीता-शेर-रींछ वगेरा जानवरभी इस पहाडमे रहतेहै मगर बदौलत तीर्थ भूमिके किसीको तकलीफ नहीदेते, पहाडका चढाव करीब एककोशका-और-जब-ठीकसीरेपर पहूचोगे तीर्थंकर महावीर स्वामीका एक-आलिशान-मंदिर मिलेगा, मूर्त्ति इसमें तीर्थंकर महाविर स्वामीकी शामरंग निहायत खूबसुरत तख्तनशीनहै. अगर पूजा करना चाहो-पूजा-भी-करशकतेहो, पानी वगेराका इतजाम सब मौजूदहै, अतराफ मंदिरके कोट खींचाहुवा-वहार-बडीबडी शिला-चट्टाने-चिर्मेवाद और-तरह तरहके जगलीपेड खडेहै, यात्री यहां स्नानपान करना

चाहे-तो-करसकतेहै, मंदिरका हाता अलगहै और बहारका हाता अलगहै, यहांपर कोइचीज खानपानकी नही मिलसकती. जोकुछ अपनेशाथ लायेहोगे वही कामदेगा. जियारत करके वापिसउसी रास्ते पहाडसे उतरकर क्षत्रीयकुंड गाव आना, पहाडपर रातकेवख्त ठहरनेकी जगह नहीहै, शुभहके गयेहुवे यात्री शामको-ब-खूबी-आसकते है, क्षत्रीयकुंड गावकी जियारत करके वापिस लखीसराय जंकशन आना, और रैलमें सवार होकर-कवील-कजरा धरहरा-जमालपुर-वरीयारपुर-सुलतानगंज-अखवरनगर-और-नाथनगर होते भागलपुर-टेशन उतरना, और तीर्थ चंपापुरीकी जियारतको जाना,

[तवारिख-तीर्थ-चंपापुरी.]

तीर्थंकर वासुपूज्य स्वामीकी जन्मभूमि चंपापुरी पुराना जैन-तीर्थहै. वसुपूज्य-राजाकेघर-जयारानीकी कुखसे फाल्गुन वदी (१४) शतभिषा नक्षत्रके रौज उनका यहा जन्महुवा, दीक्षाके पेस्तर उनोने यहांपर वहुत खेरात किइ, और फाल्गुनसुदी (१०) के-रौज दुनयवी ऐश आराम छोडकर यहा दीक्षा इख्तियार किइ माघसुदी (२) के-रौज उनको यहा केवलज्ञान पैदाहुवा, उनकी खिदमतमें इंद्रदेवते वगेरा आतेथे. श्रीपालजी-जिनोने-नवपदका आराधन कियाथा-इसीचंपापुरीके-राजाथे, तीर्थंकर महावीर स्वामीने यहा तीनचौमासे किये, कामदेव श्रावक-जिसकावयान-सूत्रउपाशक दशांगमे दर्जहै इसीचंपाका रहनेवालाथा, कुमारनंदी नामका एक-स्वर्णकार-जिसका बयान-सूत्र आवश्यकमे मौजूदहै इसीचंपाका नामी ग्रामी शखशथा, जैनाचार्य-शय्यंभव सूरिने दशवैकालिकसूत्र इसीचंपामें बनाया, सुभद्रासती इसीचंपाकी रहनेवालीथी बडेबडे खुशनसीब लोग इसचंपामें पैदाहुवे, कहातक बयान

लिखे, चंपापुरी जानेवाले यात्री भागलपुर टेशन उतरकर खुश्की रास्ते जाय, जो-करीब-तीनमीलके फासलेपर वाकेहै,

जिलेका सदरमुकाम-भागलपुर एक गुलजारशहरहै, सुजागंज-नाथनगर-चंपानगर-और-मसूरगंज वगेरा कइहिस्से होकर भागलपुर वसाहै. सन (१८९१) की-मर्दुमशुमारीके वख्त भागलपुरकी मर्दुमशुमारी (६९१०६) मनुष्योकीथी, भागलपुर एक-तिजारकी-जगहहै, रेशमका कारोवार यहां अछाहोताहै, दरी-और-कंवलभी उमदा वनते है, वाजार अछा और हरकिसमकी चीजे यहां मिलसकती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोका एकघर सिर्फ ! नाथनगरमे है, भागलपुर टेशनके सामने जैनश्वेतावर धर्मशाला-रायवहादूर धनपतसिंहजी साकीन मुर्शिदावादकी तामीर करवाइहुइ मौजूदहै, यात्री उसमें जाकर कयामकरे, धर्मशाला वडीआलीशान जिसमे आठकोठरी-चार दालान-अलग अलग वनेहुवे है, दरवजेके सीरेपर एक-कमरा-और-खुलीछत वनीहुई है, जिसपर गर्मीके दिनोमे वडाआराम मिलताहै, एक-वगीचा-और मीठे जलका कुवाभी इसीधर्मशालामें मौजूदहै, वगीचेमें-आम-अमरुद-केले-नीवु-जामन-एरंडककडी--नारियल--कठेर-गुलाव-चमेली--मोतिया-केवडा-जुही-गुलदाउदी -रायचपा-हारसिंगार-कनेर वगेराके पेड खडेहै और इनके फुल, हमेशाकी पुजनमे चढाये जातेहै, एक जैनश्वेतावर मंदिर वडीलागतका और बुलंद शिखरवद वनाहुवाहै, और उसमे तीर्थंकर वासूपूज्य स्वामीकी मूर्त्ति तख्तनशीनहै, दाहनी तर्फके कोनेमे-तीर्थंकर वासुपुज्य स्वामीके गणधरकी मूर्त्ति-वायी तर्फके कोनेमे तीर्थकर मल्लिनाथ और नमिनाथकी मूर्त्ति-और-उनके कदम जाये नशीनहै, और उसपर लिखाहै-संवद् वाणार्षिनागेंदौ-राधशुआदशी

म्गौ-संवत् (१९७९) वैशाखसुदी (१०) शुक्रवारके रौज मिथिलापुरीमे जायेनशीन कियेगये,-असलमें-ये-कदम तीर्थ मिथिलामेथे, जब यहाका मदिर विरानहुवा उसवख्तसे-यहां लायेगये, मंदिरके वहार एकछत्रीमें स्थुलभद्रजीके कदम जायेनशीन है, और उसपर लिखाहै संवत् (१९३६) में-रायवहादूर धनपतसिंहजी शाकीन मुर्शिदावादने जायेनशीन किये, इसमदिरके दर्शन करके यात्री चंपापुरी जानेको तयारीकरे, जो-चंपानालेके नामसे मशहूरहै, भागलपुरसे हरकिसमकी सवारी मिलसकती है, इक्का-बगी-म्याना-पालखी-वगेरा-जोचाहो हाजिरहै, जिसकी मरजी पाव पैदल जानेकी हो शौखसे जाय, सडक पकी वनीहुइहै, रास्ताभूलनेका कोइकाम नही, रास्तेमें-वागवगीचे और तरह तरहके द्रख्त खुशनुमा खडे है, गोया ! किसीवागमे चलरहे है, पानीकी वहुतायतसे वनास्पति ज्यादह-और-जमीन-तर-व-तर है,

जब करीब चपानालेके पहुचजाओगे दुरसे जैनश्वेतावरमदिर और धर्मशाला नजर आयगी, उसमें जाकर कयाम करना, धर्मशाला छोटीवडी यहापर (४) है, मगर सब एकही हातेमें वनीहुइ है इसलिये एकही मालूम देती है, वडीधर्मशाला पचायती जिसमें सात कोठरी मौजूद है, दुसरी छोटी है उसमें कोठरी तीन है, वहारकी धर्मशाला (२) रायवहादूर धनपतसिंहजी साकीन मुर्शिदावादकी तामीर कराइहुइ जिसमें कोठरी चारहै यात्री जिस जगह चाहे कयाम करे, इन चारो धर्मशालामें-यात्री-करीब (४००) के ठहर सकते है, मदिर तीर्थकर वासुपूज्य स्वामीका शिखरवद वेशकिमती पुख्ता वनाहुवा और इसमें तीर्थकर वासुपूज्य स्वामीकी मूर्त्ति करीब देढहाथ वडी राजा समतिकी वनाइहुइ तख्तनशीनहै, वैसेही निशानात वने है जैसे राजा संप्रतिकी वनाइ

हुइ मूर्त्तियोंपर होते है, छत्रीकी मरम्मत और रंगमंडपका फर्स राय-बहादुर धनपतसिंहजी साकीन मुर्शिदावादने करवाया, वेदीपर लिखाहै संवत् (१९२५) मे-पाषाणमय वेदी और मरम्मत करवाइ, एक-छोटे जिनालयमें तीर्थंकर वासुपूज्य स्वामीके पंचकल्याणिक और उनके कदम जायेनशीनहै, उनपर लिखाहै संवत् (१८५६) फाल्गुनवदी एकमके रौज-ये-कदम-प्रतिष्ठित कियेगये,

दुसरामंदिर इसीके करिवमें दाहनीतर्फ तीर्थंकर वासुपूज्य स्वामीका-इसमे-उनकी मूर्त्ति करीव तीनफुटवडी तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१८५६) वैशाखसुदी (३) बुधवारकेरौज चंपापुरीमे देवाधिदेव-वासुपूज्यस्वामीकी-मूर्त्ति-सवसंघने मिलकर तख्तनशीन किइ, वायीतर्फके एक जिनालयमें नवपदजीका यंत्र जायेनशीनहै और उसपर लिखाहै संवत् (१९२९) में रायवहादुर धनपतसिंहजी साकीन मुर्शिदावादने यह तामीर करवाया, इस मंदिरकी उपरकी मंजिलमे चौमुखाजीकी चारमूर्त्तिये-समवसरणका--आकार-तीनकोट--उमदातौरसे वनेहुवे है, संवत् (१८५६) में इसकी प्रतिष्ठा किइगइ, धर्मशालामे दुतर्फा वगीचा वहुतवडा-जिसमें-गुलाव-चमेली-कुंद--जुही-गुलदाउदी-रायचपा नवारवगेरा पैदाहोते है, और हमेशांकी पूजनमें चढायेजाते है, यहांपर-दो-पूजारी एक जमादार और तीन नोकर हमेशां वनेरहते है, तीर्थ चंपापुरीकी जियारतकरके यात्री-उसीरास्ते वापिस भागलपुर आवे,

☞ (तवारिख-तीर्थ-समेतशि[illegible]

भागलपुरसें रवान[illegible]
गंज-वरीयारपुर-जमाल[illegible]

जमुइ-गिधोर-झाझा-सिमुलतुला--वैजनाथ-मधुपुर-जगदीशपुर-और-महेशमुड-टेशनहोतेहुवे-गिरिडीटेशन उतरना, रैलकिरायां देढरुपया लगताहै:

गिरिडीकस्वा इसवख्त तरक्कीपरहै, खानपानकी चीजे यहां उमदा तौरसे मिलसकती है. सामने टेशनके वडीआलिशान जैनश्वे-तांवर धर्मशाला वनीहुइ यात्री इसमे कयामकरे, सवत् (१९३४) मे-यह-धर्मशाला जैनश्वेतांबर श्रावक रायवहादूर धनपतसिंहजी साकीन मुर्शिदावादने तामीरकरवाइ, यात्रीयोंकों आरामकी जगह है, सवत् (१९४२) में-जैनश्वेतांवरमंदिर यहा रायवहादूर वुध-सिंहजी साकीन मुर्शिदावादने तामीरकरवाया, और तीर्थंकर सुपा-र्श्वनाथकी मूर्त्ति तख्तनशीन किइ, पासमे एक वगीचा खूब-तर-व-ताजा-गुलाव-घमेली-वेला-जुही-कुद-गुल्दाउदी वगेराके पेंड इसमें खडे है, और इनके फुल हमेशाकी पूजनमें चढायेजाते है, गि-रिडीटेशनसे मधुवनतक सडक पकीवनीहुइ-वेलगाडी-इक्का-वगी-म्याना-पालखीवगेरा सवारी व-खूवी जासकती है, रास्तेमें किसी तरहका खौफनही. गिरिडीसे शुभहके सातवजे रवानाहोकर शा-मकों पांचवजे मधुवन-पहुचसकतेहो, रास्तेमे पांचकोसपर वराकड-गांव-जहांकि-तीर्थंकर महावीरस्वामीकों केवलज्ञान पैदाहुवाथा एक जैनश्वेतांवरमंदिर और धर्मशाला आरामकी जगह वनीहुइहै, तीर्थंकर महावीरस्वामीके कदमोंसे पाकहोइहुइ रिजुवालुकानदी यहांपर वहरही है. पानी-कभी-वद-नहीहोता, तीर्थंकर महावीर-स्वामी इसनदीके कनारे वहुत अर्सेतक विचेरथे, तपकिया, और श्यामाक कुडुवीके क्षेत्रमें ध्यानसमाधि करतेहुवे उनकों यहां-केव-लज्ञान हासिलहुवाथा, यहापर एक-जैनश्वेतांवरमंदिर वनाहुवाहै, यात्री इसकी जियारतकरे, इसमे तीर्थंकर महावीरस्वामीके समव-

सरणका आकार बनाहुवाहै. और शिलालेखमें लिखाहैकि-रि
वालुकानदीतटे-श्यामाकक्कुटुंबीक्षेत्रे-वैशाखशुक्ल (१
तृतीयप्रहरे-केवलज्ञान कल्याणिकसमवसरणमभूत्,
शिदावादवास्तव्य-प्रतापसिंह-तद्भार्या--मेहतावकुव
तत्पुत्र-लक्ष्मीपतसिंहबहादूर-तत्कनीष्ट—भ्राता-धनप
सिंह बहादूरने संवत् (१९३०) में इसका जीर्णोद्ध
कराया.

पासमें बगीचा एक-जिसमे-आम-कटहेर-केले-अमरुद-
लींब-चमेली-चंपा वगेराके पेडखडेहै, पूजारी और एक-माल
यहांपर हमेशां बने रहते है, और समेतशिखर-जैनश्वेतांबर-को
तर्फसे यहांका सब इंतजाम होताहै, जैनश्वेतांबर धर्मशाला एक
जिसमे (६) कोठरी-और-चारोंतर्फ पका कोट खीचाहुवा
यात्री-यहांपर ठहरनाचाहे-शौखसे-ठहरे,-या-जियारतकरके मधु
वनकों रवानाहो, बराकडगांव बहुत छोटाहै. मगर जरुरतकी ची
सबमिलती है, रिजुवालुका नदी उतरकर आगे (४) कोस-समे
शिखर पहाडकी दामनमे मधुवन जाना, जब मधुवन एक कोसप
रह जायगा. हजारीबागका रास्ता छुटजायगा. रास्तेमें एक-जल
का नाला-आताहै, समेतशिखर पहाडकी दामन-कहो-या-मधु
बनकहो-बात एकहीहै, जैनलोग इसको समेतशिखर तीर्थ-औ
पारसनाथ पहाडभी कहकर बोलते है, समुदरके पानीसे (४४८८
फुट उंचा—और—ठीकसीरेकी चोटीपर—जैनमंदिर—टोक—
और-छत्रीये--जिनमे तीर्थकरोंके चरन जायेनशीन है, तीर्थंक
पारसनाथकी टोंक-उंची जगहपर बनीहुइहे इससबबसे जाहिरमे
पारसनाथका पहाड कहलाया. [जिले हजारीबागमें गिरिडीटेशनसे
करीब [१८] मीलके फासलेपर समेतशिखर पहाडकी दामनमे

मधुवन एक गुलजार जगहहै, सवत् (१७५०) में जैनश्वेतांवर मुनि-सोभाग्यविजयजी महाराजने तीर्थोंकी सफर करके-जो-तीर्थमाला वनाइहै मुर्शिदावादसे समेत शिखरकों जानेके-दो-रास्ते फरमाये, एक-वर्द्धमानगांव होकर-दुसरा-वीरभुमि तर्फ होकर जाया जाताथा, आजकल-शिखरजी पहाडके (४) कोशपर इस री नामका टेशन खुलाहै, और--वो--लाइन--गया लाइनमें जामीली है,

☞ (वयान-मधुवन.)

समेतशिखर पहाडकी तलहटीमें मधुवन द्रख्तोंके झुंडसे घीरा हुवा एक-ऊमदा जगहहै, दुरसे देखतेही दिल वहुततर-व-ताजा होगा, एक-वडीआलिशान जैनश्वेतावर कोठी-जिसमें-मुनीम-गु-मास्ते-नोकरचाकर-चपराशी-घंटा घडियाल-नोवतखाना सवठाठ शाहानातौरसे वना हुवा है, वाग वगीचे द्रख्तोके झुड और तरह तरहके परीदा जानवर-मोर-तोते-मैंना-चीडिया वगेरा यहापर कलोले करते रहते है, ओर उनकी मीठी मीठी अवाजसे दिल निहायतखुश-और-खुरम होता है, आटा-दाल-घी-दुध-मिठाइ वगेरा खानपानकी जरुरी चीजे यहापर मिलसक्ती है, भाडे-वर्त न-वगेरा-जो-चीजे दरकारकी है यहापर मिलसकेगी, जैनश्वेतां• वर धर्मशाले यहांपर चार है, अवल धर्मशाला खुशनसीव श्रावि-का हरकुवरशेठानी-साकीन अहमदावादकी तामीर कराइ हुइ पु-ख्ता है, कोठरी पनरांह-वीचमें चौक और-उपर निहायत उमदा छत-जिसपर गर्मीयोंके दिनोमें वडा आराम मिलता है, दुसरी धर्मशाला-रायवहादूर लक्ष्मीपतसिंहजी-साकीन मुर्शिदावादकी--यहभी वहुत वडी और खुवसुरत वनी हुइ है, यात्रीकों किसी तरहकी तकलीफ-न-होगी, इसमे कोठरी (४०)-वीचमें वडा भारी

चौक-और-हवादार जगहहै, कोइ यात्री डेहरा तंबु लगाकर ठह-रना चाहे-तोभी-जगह बहुत है, चारो तर्फ पका कोट-और-निहायत उमदा छत-जिसपर-गर्मीयोके दिनोमें रातको सोनेका आराम रहेगा, इसमे करीब एकहजार आदमी ब-खूबी-ठहर सकते है, इसमें कइ कोठरी अलायधा अलायधा खख्शोके नामसेभी बनी हुइ है, उत्तर तर्फकी कोठरी शेठ-अमीचंदजी-धनसुखदासजी-साकीन मिर्जापुरने मधुवन धर्मशालामें यात्रीयोंके लिये संवत् (१९२८) मे तामीर करवाइ, इसीतरह दुसरी कोठरी शेठ-भेरुदासजीके बेटे नथमलजी जुहारमलजी गोलेछा साकीन जय-पुरने मधुवन धर्मशालामे संवत् (१९३५) में तामीर करवाइ, औरभी सात कोठरी इसीलाइनमें बनीहुइ है, और उनपर शिलालेख लगे हुवे है, मगर उनपर चुना फेर दीया है जिससे हर्फ वाचे जाते नही, पूरवकी तर्फ एक कोठरीपर शिलालेख लगा हुवा उसमें लिखा है शेठ-हीरालालजी-मोतीलालजी-जवाहिरलालजी भणशाली साकीन कलकत्ताने मधुवन धर्मशालामे संवत् (१९३५) मे-यह-कोठरी-तामीर करवाइ, पश्चिम तर्फ एक-पौषधशाला-बनी हुइ है, इसमे शेठ-उदयचंदजी-लीलाभाइ-साकीन सुरतने कुछ खर्चा दिया है,

एक-धर्मशाला-श्वेतांबर कोठीकी पश्चिम तर्फ सडकके कनारे बनीहुइहै, जिसमे (२००) रुपये-शेठ-परतापचंदजी-छोगमलजी ढाडीवाल-साकीन नागपुरने दियेहै, चौथी धर्मशाला-श्वेतांबर कोठीके सामने बनीहुइ इसमे (१८) कोठरी-दालान-चोतरा-फर्स-और-सबकाम पुख्ता बनाहुवा है, इसकी तामीरातमे-शेठ-परतापचंदजी-छोगमलजी-ढाडीवाल-साकीन नागपुरने (५००) रुपये दिये, शेठ-धर्मचंदजी उदयचंदजी-साकीन सुरतने (५००)

ीर शेठ-नगीनदसजी-कपुरचंदजी-साकीन सुरतने (५००)-शेठ
ऋभजी-हीरजी-साकीन कलकत्ताने (२५०)-वकील-शिवलजी
हलजी और लक्ष्मीचंदजी वाहलजी-साकीन काठियावाडने
७०१)-सुमेरमलजी-लोढा-साकीन अजमेरने (७००)-राय
ादुर-मेघराजजी-कोठारी-साकीन मुर्शिदाबादने (२०००)
ये दियेहै. इन धर्मशालोमे कोइ जैनश्वेतांबर यात्री किसीजगह
े कोइ मनानही, और किसी अमरकी तकलीफभी नही. मु-
फिरोके आरामकेलिये सब जगहहै,

बगीचा एक- निहायत खुशनुमा-दर्मियान इसीधर्मशालाके
हुवा जिसमे गुलाब-चमेली-जुही-गुलदाउदी-कुद-छोटाचंपा
ाके खुशबूदार पेंड लगेहुवे और इनके फुल हमेशां देवपूजनमें
ये जातेहै, यात्री इनधर्मशालाओमें कयामकरे और अपना
असबाब-मुकफल-करके बदोबस्तके शाथ दर्शनको जाय,
ऽ दर्शन शामलिये—पार्श्वनाथजीके मदिरका—दरवजेके
एक शिलालेख लगाहुवा और उसमे लिखाहैकि-जैन-
-और उंची जातके आर्यलोग इसमें जा सकते है,-शिवाय
दुसरा नही जासकता, चौकमें जाकर देखोतो चारोंतर्फ स-
रही मदिर खडे है, शामलिया पार्श्वनाथजीका शिखरबद म-
बहुत लागतका-और-मूर्त्ति-शामलिया पार्श्वनाथजीकी क-
(३) फुटबडी इसमे तख्तनशीनहै, उसके नीचे लिखाहैकि-
((१८७७) राधराकायां श्रीपार्श्व बिंब प्रतिष्ठित-
ानहर्पसुरिणा--कारितं--मिरगांजानिव--सांवतसिह
दार्थमल्लेन—दाहने पासे-जो—सफेद रग मूर्त्ति-
नाथजीकी-करीब (२) फुट बडी मौजूद है उसपर
। हैकि-संवत् (१८८७) वर्षे-फाल्गुनशुक्ल (१३)

श्रीपार्श्वनाथ जिनबिंबं-दुगड-ज्येष्टमल्लभार्या-फत्तीनाम्न्या-वाचकचारित्रनंदनगणि--उपदेशात्-कारितं-प्रतिष्ठितं-च, बायेपासे जो सफेदरंग-मूर्त्ति-शीतलनाथजीकी करीब (२) फुटवडी मौजूदहै उसपर लिखाहै, संवत् (१८८८) माघशुक्लपंचम्यां-सोमवासरे-श्रीशीतलनाथबिंबं -कारितं-ओशवंश-दुगड गोत्रप्रतापसिंहेन-प्रतिष्ठितंच-श्रीजिनचंद्र सूरिभिः-इसमंदिरकोंजगतशेठ-साकीन-मुर्शिदाबादने बनवाया.-तीर्थोमें-यहकदीमी-रवाज होता चला आयाकि-एकमंदिर पुराना होकर गिरगया, उसजगह दूसरा किसीखुशनसीबने फिर तयारकरवाया, इसमंदिरके खासदरवजेकी दोनोंतर्फ दिवारमें-शत्रुंजय-गिरनारके नकशे-शंगमरमरपथरपर उकेरे हुवे निहायत उमदा बनेहै, रंगमंडप बहुतवडा और इसमें बेठकर इबादत तीर्थंकरदेवोकी किइजातीहै, हारमोनियम-सारंगी-तबले-और-सितारवगेरासें गायन होताहै, और अछेअछेगवैये यहांअपनाइल्मबतलातेहै

शामलियापारसनाथजीके मदिरकी बायीतर्फ-दुसरामंदिर पार्श्वनाथजीका इसमे तीर्थंकरपार्श्वनाथजीकी-मूर्त्ति-करीब एकहाथवडी-जायेनशीनहै, और उसपर लिखाहुवाहै कि-संवत् (१८७७) वैशाखशुक्ल पौर्णिमायां-श्रीपार्श्वबिंबं-प्रतीष्टितं-श्रीजिनहर्षसूरिणा-गोलवछा-मेहतावोजानि-मूलचंद्र धर्मचंद्रेण -कारितं.-और यहमदिर-एक-खुशनसीबश्राविका-साकीन-मुर्शिदाबादने तामीरकरवाया,-

तीसरा मदिर चंद्रप्रभुजीका-तामीरकियाहुवा-बाबुजशरूपजी -हरखचंदजी-नवलखा-साकीन [illegible] प्रभुजीकीकरीब एकहाथवडी जायेनशीन [illegible] हुवाहैकि-संवत् (१ [illegible]

चंद्रप्रभजिनबिंबं–कारितं ओशवंशे नवलखागोत्रे मेटाम-
लपुत्रजशरूपेन–प्रतिष्टित च–वृहद्भट्टारक खरतरगछश्री
जिनाक्षयसूरिचरणचचरीक–श्रीजिनचंद्रसूरिभिः—

चौथामदिर तीर्थंकरपार्श्वनाथजीका, तामीरकियाहुवा जहोरी
भेरुदानजी साकीन कलकत्ताका–इसमेंमूर्त्ति पार्श्वनाथजीकी जाये-
नशीनहै, और उसपर लिखाहुवाहैकि—संवत् (१९१०)–शाके
(१७७५) माघशुक्ल द्वितीयायां–श्रीपार्श्वबिंबं–प्रतिष्टितंवृह-
त्खरतरगछे,—

पाचवामदिर पार्श्वनाथजीका–तामीरकियाहुवा भडारी–रुग-
नाथप्रसादजी साकीन कानपुरका–इसमें मूर्ति पार्श्वनाथजीकी सफे-
दरग करीव एकहाथवडी जायेनशीनहै, और उसपरलिखाहुवाहैकि
–संवत् (१८९४) माघकृष्णपंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्वजि-
नबिंबंप्रतिष्टितं,

छठा मदिर गोडीपार्श्वनाथजीका–तामीरकियाहुवा–खुशन-
सीव श्रावक–साकीन–मिर्जापुरका इसमें मूर्त्ति गोडीपार्श्वनाथजीकी
सफेद रग करीव (१) फुट वडी–सवत् (१९००) की प्रति-
ष्टितजायेनशीनहै, दाहनेपासे–शामरंगमूर्त्ति नेमनाथजी-
की सवत् (१८९७) की प्रतिष्टित–और–वायीतर्फ शाम-
रंगमूर्त्ति रिखभदेवभगवान्की उसीसंवत् (१८९७) की–
प्रतिष्टित,–मौजूदहै

सातवा मदिर चिंतामणिपार्श्वनाथजीका–तामीरकियाहुवा–
जहोरीधनसुखदासजी, साकीनमिर्जापुरका–इसमें मूर्त्ति चिंतामणि
पार्श्वनाथजीकी करीव (२॥) हाथ वडी शामरग जायेनशीन है,
और उसपरलिखाहैकि–सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८९७)–ने-

ऋषणगणधरायुतेशके (१७६२)-फाल्गुनांतिमदले-सुनागके (५) भार्गवे सितपटौघपालके वाणारस्यां श्रीमद्भगवत्सहस्त्रफणालंकृत श्रीपार्श्वनाथजिनमूर्त्तिः-क-से-उदयचंद्रधर्मपत्नी-महाकुवराख्यया—मूलचंद्रसुतयुतया-वृहत्खरतरगणेश श्रीजिनहर्षगणि पदालंकृत श्रीजिनमहेंद्रसूरिणा प्रतिष्टिता, यहमूर्त्ति वनारसमें वनाइगइ और मधुवनमें तख्तनशीन किइगइहै,

आठवामंदिर सुपार्श्वनाथजीका-तामीरकियाहुवा पंचायती श्रावक विकानेरवालोका-इसमें मूर्त्ति सुपार्श्वनाथजीकी सफेदरंग करीब एक हाथवडी जायेनशीनहै, और उसपरलिखाहैकि-संवत् (१९००) में यहमूर्त्ति तामीर किइगई,

नवमामंदिर गणधर-शुभस्वामीका-तामीरकियाहुवा-जैनश्वेतांवरसंघ-वालुचर-मुर्शिदावादवालोंका इसमें मूर्त्तिपार्श्वनाथजीके गणधर शुभस्वामीकी करीव (१) हाथ वडी-साधुस्वरुपमें जायेनशीनहै, और उसपरलिखाहैकि-संवत् (१८५५) फाल्गुनशुक्लतृतीयायां-रवौ-श्रीपार्श्वनाथस्य-शुभस्वामी गणधरविंवं-प्रतिष्टितं-जिन हर्षसूरिभिः कारितंच वालुचरवास्तव्य श्री संघेन,—

दसवामदिर गोडीपार्श्वनाथजीका-तामीरकियाहुवा-वावुप्रतापसिंहजी साकीन मुर्शिदावादका-इसमें मूर्त्ति गोडीपार्श्वनाथजीकी सफेद रंग-करीव एकहाथवडी जायेनशीनहै, और उसपर लिखाहैकि-संवत् (१८८८)-माघशुक्लपंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्वनाथ जिनविंवं-कारितं-ओशवंशे-दुगडगोत्रे प्रतापसिंहेन-प्रतिष्टितं खरतरगच्छाधिराज-श्रीजिनचंद्रसूरिभिः-

इनदशमदिरोंके दर्मियान एसाउमदाचौक-और-मैंदानवनाहै जिसमें (४०००) हजारआदमी-व-खूवी बेठसकते है, वाजेलोग इस वातका शुभाकरते है कि-शिखरजीके पहाडमें-हरड-वहेड-आमले-भीलावा-वत्सनागवगेरा ऐसीजहेरीजडीवुटीयेंहै कि-जेठ-वैशाखमें इनकीअसर पानीमेंआजाती है. और यात्रीलोग इसके पानीसें बीमार होजातेंहै, लेकिन! यहख्याल महाल-वेंफायदाहै, कइदफे हम यहां गर्मीयोंकेदिनोमें जाचुकेहै, खास! मधुवनमें कइ कुवे मीठेजलके बने हुवे-किसीतरहकी तकलीफयात्रीकों-नहीहोसकती, पहाडके झरनोंका पानीपीना कोइजरुरतभी नही. अगर यह अमर एसाहीहोताती हर-वख्त यात्री यहाक्योंआयाकरते? फिजहूल लोगोके कहनेपर ख्याल करनाकोइ जरुरतनही, रुइके रौजगारवालोंकों-कातिक-मगसीरमें फुरसतनही. चौमासेमें वारीशका सवव-और गर्मीयोमे कहोग पानी लगजाताहै, वतलाओ! फिर तीर्थयात्रा कवजाओगे? वेटा-वेटीके विवाह और वरातमें जेठ-वैशाखमेंभी जातेहो-कोइ वहाने नहीकरते और तीर्थयात्रामें एसेएसेवहाने सामने आतेहै, मगर यहसवफिजहूल वातेहै, जिसवख्तदिलचाहे तीर्थयात्राकरो और किसीतरहका खोफ मतलाओ,-

☞ [वयान-पहाड-समेतशिखर,]

मुल्क पुरवमें समेतशिखर पहाड जैनका पुराना तीर्थ है. पहाडके सीरेतक एक सडक और कुछदुरतक पगदंडी गइहै, तीर्थंकर अजितनाथमहाराज इसपहाडपर चैतसुदी पुनमके रौज मुक्तिकों पाये, तीर्थंकर सभवनाथ-अभिनदन-सुमतिनाथ-पदमप्रभ-सुपार्श्वनाथ-चद्रप्रभ-सुविधिनाथ--शीतलनाथ-श्रेयासनाथ-विमलनाथ-अनतनाथ-धर्मनाथ-शातिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ-मल्लिनाथ मुनिसुव्रत-नामिनाथ-और-पार्श्वनाथ इसीपहाडपर मुक्तिकों पायेहै,

त्रषणगणधरायुतेशके (१७६२)-फाल्गुनांतिमदले-सुनागके (५) भार्गवे सितपटौघपालके वाणारस्यां श्रीमद्भगवत्सहस्रफणालंकृत श्रीपार्श्वनाथजिनमूर्त्तिः-क-से-उदयचंद्रधर्मपत्नी-महाकुवराख्यया—मूलचंद्रसुतयुतया-बृहत्खरतरगणेश श्रीजिनहर्षगणि पदालंकृत श्रीजिनमहेंद्रसूरिणा प्रतिष्टिता, यहमूर्त्ति बनारसमें बनाइगइ और मधुवनमें तख्तनशीन किइगइहै,

आठवामंदिर सुपार्श्वनाथजीका-तामीरकियाहुवा पंचायती श्रावक विकानेरवालोंका-इसमें मूर्त्ति सुपार्श्वनाथजीकी सफेदरंग करीव एक हाथवडी जायेनशीनहै, और उसपरलिखाहैकि-संवत् (१९००) में यहमूर्त्ति तामीर किइगई,

नवमामंदिर गणधर-शुभस्वामीका-तामीरकियाहुवा-जैनश्वेतांवरसंघ-वालुचर-मुर्शिदावादवालोंका इसमें मूर्त्तिपार्श्वनाथजीके गणधर शुभस्वामीकी करीव् (१) हाथ वडी-साधुस्वरुपमें जायेनशीनहै, और उसपरलिखाहैकि-संवत् (१८५५) फाल्गुनशुक्लतृतीयायां-रवौ-श्रीपार्श्वनाथस्य-शुभस्वामी गणधरविंबंप्रतिष्टितं-जिन हर्षसूरिभिः कारितंच वालुचरवास्तव्यश्री संघेन,—

दसवामंदिर गोडीपार्श्वनाथजीका-तामीरकियाहुवा-वावुप्रतापसिंहजी साकीन मुर्शिदावादका-इसमें मूर्त्ति गोडीपार्श्वनाथजीकी सफेद रंग-करीव एकहाथवडी जायेनशीनहै, और उसपर लिखाहैकि-संवत् (१८८८)-माघशुक्लपंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्वनाथ जिनविंवं-कारितं-ओशवंशे-दुगडगोत्रे प्रतापसिंहेन-प्रतिष्टितं खरतरगच्छाधिराज-श्रीजिनचंद्रसूरिभिः-

ठीमें सवारहोकरभी-जासकते है, डोलीका इतजाम अवलरौजसें
ना होगा. वरवख्त-डोली-नहीमिलीतो जियारतकों धक्का पहुचे
पूजनकेलिये केशर-चदन-धूप-दीप-सोनेचांदीकेवर्क-इत्रदान
वी-वगेराचीजेभी अवलरौजही तयारकरलेनाचाहियेकि-वख्त
देंरी-न-हो, गर्मीयोके दिनोमें पहाडपर जानेकेलिये पांवमें
केमोजेभी पहन लिये जाय कोइहर्जनही, जिससे पहाडके क-
-पथर--और गर्मजमीन पैरोंकों लगकर छाले-न-पडजाय,
र पावकों तकलीफ होगइतो दुसरेरौज जियारतजाना मुश्कि-
गा, तीर्थमें आनकर कमसेकम तीनयात्रातो जरुरकरनाचाहिये
नेक एसेपतले दुवले और नाजुकमिजाज होते हैकि-उनकों ए-
त्राकरनाभी दुसवारहोजाताहै, जहातकवने तीर्थकेखजानेमेंभी-
कम-देनीचाहिये, जिनेंद्रदेव-वीतरागहै उनकों रुपये पैसोसे
तनही, मगर तुमारीफर्जहैकि-तीर्थकी हिफाजतकेलिये-कुछ-
देना, कितनेक ऐसेकजुस होतेहैकि-एकपैसाभी देना उनसे वन
नकता, मगरदलीले ऐसी करतेहैकि-वीतरागोंकों पैसोंसे
रज ! तीर्थोमें खजाना किसलिये ! ! और नोकर चाकर
-घडियाल क्यौ, ? मगर-ये-सब वाते गलत-और नाजाइजहै,
जो-वतौरधर्मकी राहपरदेतेहो-अगलेजन्ममे-तुमारी भलाइके
देतेहो, जिनको अगलेजन्ममें मुक्तिपानाहो-धर्म करे-लाखो-
गों-वल्कि ! अर्व-खर्वतक रुपये पेस्तरके जमानेमें लोगोने दिये
ोर-तीर्थोकी हिफाजतकिइहै. धर्ममे किसीपरजोराजोरी नही-
ाती, जिसकी-मरजीहो धर्म करे,

मधुवनसे आगे पहाडपर जानेका रास्ता शुरु होताहै, और जब
एक कोशके पहुचोंगे रास्तेमें एक चाह वागान मिलेगा,
निहायत उमदाचाहके पेड खडेहै और चाह पहुचानेहे

इंद्रदेवते-और राजेमहाराजे उनकी खिदमतमें हाजिररहतेथे, बडे-बडे जलसे-और मुवारकवादीये इसपहाडर गुजरचुकी है, कइमुनिमहर्षि-इसपहाडपर मोक्षको पाये. वेंशुमारधनदोलत खुशनसीवोने यहां सर्फ किइ. पेस्तर इस पहाडपर हाथीयोंका वनथा, मगर व-सवव यात्रीआनेजानेके हाथीयोंका रहनाकमहोतागया. शेर-गेंडा-सांवरशींगी-भेसाहिरन-रोंझ-रीछ-और-वदरवगेराभी रहाकरतेथे, मगर-वेभी-अवकमहै. कभीकभी-शेर-यहांपर नजर-आताभी है. मोर-तोते-मेंना-वुलवुल-चीडीया-तीतर-कवुतर व-गेरा हरफसलीपरीदा-यहांपर दरख्तोके झुडोमें हमेशां कलोल करतेरहते है, तरहतरहकी मेवाजातवनस्पति-पेस्तरकेजमानेमें-यहांपर होतीथी. आम-खिरनी-केले-चीरांजी-वंशलोचन-कचनार-नालियेर-सुपारी-जंभीर-खजूर-नीवु-हरड-वहेडे-आमले -केतकी-कदंव-ताड-तमाल-मोवरा-गुलाव-चंपा-अशोक-जाइ-जुइ-दमन-मरुआ-सेवती-मालती-मचकुद-चदन-सागुन-खेर-इमली-पलाश-अखरोट-अनार-वगेरा वगेरा. जिनमेंसे कइअव मौजूदहै और कइ नाजुक मिजाज-चीजे व-सवव तवदूलजमानेके कमहोगइ, कामराज-हाथाजोडी-पातालकोला-वनजीरा-कालिलाखन-अनंतमूल-और-रतनजोत-अवभी यहांपर मोजूदहै, कइजडीबुटीऐसीभीहै जिसकेजाननेवाले नहीरहे, सांप और वीछुकेजहेर उतारनेकी जडीभी यहांपर पैदाहोती है, गरजकि-पहाडपर जिधरदेखो जगली मेवाजातचीजें सवजी-फुल-कलि-वाग-वगीचे-खुशवू-और-हरेहरेपेड-दिलखुश-व-ताजाकरनेवालीचीजे-नजरआती है, शिखरजीके पहाड-कीचढाइ करीव तीनकोशकी-वीशटोंकोंकी सफरभी तीनकोश-और-उतराइभी तीनकोशकी-कुल- (९) कोशकी सफरयात्रीकों होगी कपडेपाक-और-वदन साफहोकर जियारतको जानाचाहिये, जो-यात्री पांवपेदलजानाचाहे शोखसें जाय, मगर जिनकीताकातनही है

ढीमें सवारहोकरभी-जासकते है, डोलीका इतजाम अवलरौजसें ना होगा. वरवख्त-डोली-नहीमिलीतो जियारतकों धक्का पहुचे पूजनकेलिये केशर-चदन-धूप-दीप-सोनेचादीकेवर्क-इत्रदान त्री-वगेराचीजेभी अवलरौजही तयारकरलेनाचाहियेकि-वख्त देरी-न-हो, गर्मीयोके दिनोंमें पहाडपर जानेकेलिये पावमें डेकेमौजेभी पहन लिये जाय कोइहर्जनही, जिससे पहाडके क---पथर--और गर्मजमीन पैरोंकों लगकर छाले-न-पडजाय, र पावकों तकलीफ होगइतो दुसरेरौज जियारतजाना मुश्किगा, तीर्थमें आनकर कमसेकम तीनयात्रातो जरुरकरनाचाहिये नेक एसेपतले दुवले और नाजुकमिजाज होते हैकि-उनकों एत्राकरनाभी दुसवारहोजाताहै, जहांतकबने तीर्थकेखजानेमेंभीरकम-देनीचाहिये, जिनेंद्रदेव-वीतरागहै उनकों रुपये पैसोसे रतनही, मगर तुमारीफर्जहैकि-तीर्थकी हिफाजतकेलिये-कुछमदेना, कितनेक ऐसेकजुस होतेहैकि-एकपैसाभी देना उनसे वन सकता, मगरदलीले ऐसी करतेहैकि-वीतरागोंकों पैसोंसे गरज ! तीर्थोंमें खजाना किसलिये ! ! और नोकर चाकर -घडियाल क्यो, ? मगर-ये-सव वाते गलत-और नाजाइजहै, -जो-वतौरधर्मकी राहपरदेतेहो-अगलेजन्ममे-तुमारी भलाइके येदेतेहो, जिनको अगलेजन्ममें मुक्तिपानाहो-धर्म करे-लाखोडों-बल्कि ! अर्व-खर्वतक रुपये पेस्तरके जमानेमें लोगोंने दिये और-तीर्थोंकी हिफाजतकिइहै. धर्ममे किसीपरजोराजोरी नहीइजाती, जिसकी-मरजीहो धर्म करे,

मधुवनसे आगे पहाडपर जानेका रास्ता शुरु होताहै, और जव व एक कोशके पहुचोंगे रास्तेमे एक चाह वागान मिलेगा, यहां निहायत [illegible] खडेहै और चाह [illegible]

आगे आधकोशचढनेसे–एक–गंधर्वनालाआयगा, रास्तेमें दोनोंतर्फ झाडीझुखड–व–कसरतद्रख्तोंकी चकाचक–और–ठंडीठंडीछांव चेत–वैशाखकेदिनोंमेभी हरियाली–मानीदेसब्जफर्स बिछाहुवाहै सडक व–हुतआरामकीवनीहुइ कोइतकलीफ यात्रीकों–न–होगी. गंधर्वनाले पर धर्मशालाएक–जैनश्वेतांबरसंघकीतर्फसे वनीहुइहै–और करीवमें एक चिश्मे आव–मीठेजलका झरनाजारी है, देखकर दिलखुश होगा,

गंधर्वनालेसे आगे एकमीलपरवढेतो एक शीतानालानामका नालामीलेगा. जलकेझरने–तरहतरहके द्रख्त–और–झाडीझुखडसे तमामपहाड छायाहुवा, किसीजगहविनापेंड और सब्जीके कोइहि–स्सा–न–देखोगे, शीतानालेसें आगे एककोश चढनेपर तीर्थंकर कुंथुनाथमहाराजकी टोंक मिलेगी, अवल इसकेदर्शनकरनाचाहिये, इसमें कुंथुनाथस्वामीकेचरण तख्तनशीनहै–और उसपरलिखाहैकि संवत् (१८२५) माघशुक्क (३) गुरौ–विरानीगोत्रीय शा–ह्खुशालचंद्रेण–श्रीकुंथुनाथचरणपादुकारापिता–प्रतिष्टि–ता–च–तपागछे–श्रीरस्तु छत्रीकी मरम्मत संवत् (१९३१) में हुइ, हरेकतीर्थमें यहएककदीमीरवाज होताचला आयाकि–एक–मंदिरपुरानाहोकर गिरगया दुसरेखुशनसीवने फिर उसकों तामीर करवाया. इसीतरह तीर्थकी जड वनी रहतीहै,—

दुसरीटोंक नेमिनाथजीकी, इसमें तीर्थंकरनेमिनाथजीके चरन–तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहैकि–संवत् (१८१६) माघ सुदी तीज गुरुवारकेरोज विरानीगोत्रके शाह–खुशा–लचंदजीने इसकों तामीर करवाये. खुशालचंदजी जैनश्वेतांवरश्रावकथे, टोंकपर जो छत्री वनीहुइहै सं–वत् (१९३१) में उसकी मरम्मतहुइहै,

आगे आधकोशवढनेसें-एक-गंधर्वनालाआयगा, रास्तेमें दोनोंत झाडीझुखड-व-कसरतद्रख्तोंकी चकाचक-और-ठंडीठंडीछांव चेत वैशाखकेदिनोमेंभी हरियाली-मानीदेसब्जफर्स विछाहुवाहै सडक व हुतआरामकीवनीहुइ कोइतकलीफ यात्रीकों-न-होगी. गंधर्वनाले पर धर्मशालाएक-जैनश्वेतावरसंघकीतर्फसे वनीहुइहै-और करीव एक चिश्में आव-मीठेजलका झरनाजारी है, देखकर दिलखुश होगा।

गंधर्वनालेसे आगे एकमीलपरवढेतो एक शीतानालानामक नालामीलेगा. जलकेझरने-तरहतरहके द्रख्त-और-झाडीझुखडसे तमामपहाड छायाहुवा, किसीजगहविनापेंड और सब्जीके कोइहिस्सा-न-देखोगे, शीतानालेसें आगे एककोश चढनेपर तीर्थकर कुंथुनाथमहाराजकी टोंक मिलेगी, अवल इसकेदर्शनकरनाचाहिये, इसमें कुंथुनाथस्वामीकेचरण तख्तनशीनहै--और उसपरलिखाहैकि संवत् (१८२५) माघशुक्ल (३) गुरौ-बिरानीगोत्रीय शाहखुशालचंद्रेण-श्रीकुंथुनाथचरणपादुकारापिता--प्रतिष्ठिता-च-तपागछे-श्रीरस्तु छत्रीकी मरम्मत संवत् (१९३१) में हुइ, हरेकतीर्थमें यहएककदीमीरवाज होताचला आयाकि-एक-मंदिरपुरानाहोकर गिरगया दुसरेखुशनसीवने फिर उसकों तामीर करवाया. इसीतरह तीर्थकी जड वनी रहतीहै,—

दुसरीटोंक नेमिनाथजीकी, इसमें तीर्थकरनेमिनाथजीके चरन-तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहैकि-संवत् (१८१६) माघ सुदी तीज गुरुवारकेरोज बिरानीगोत्रके शाह-खुशालचंदजीने इसकों तामीर करवाये. खुशालचंदजी जैनश्वेतांवरश्रावकथे, टोंकपर जो छत्री बनीहुइहै संवत् (१९३१) मे उसकी मरम्मतहुइहै,

तीसरीटोंक तीर्थंकरअरनाथस्वामीकी इसमें तीर्थंकरअरनाथ महाराजके चरन तख्तनशीनहै, और उपसर वही संवत् (१८२५) माघसुदी तीज गुरुवारके रौज विरानीगौत्रके शाह–खुशालचंदजीने इनकों तामीरकरवाये लिखाहै, छत्री-की मरम्मत संवत् (१९३१) में हुइ. चौथीटोंक तीर्थंकर मल्लिनाथस्वामीकी–इसमें तीर्थंकरमल्लिनाथमहाराजके चरन तख्त-नशीनहै. और उसपर वही संवत् (१८२५) मे–विरानीगोत्र-के खुशालचंदजीने इनको तामीर करवाये लिखाहै.— पाचमीटोंक तीर्थंकरश्रेयासनाथजीकी–इसमें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ-जीके चरन तख्तनशीनहै, और उसपर वही लेखहै जो उपरकी चारटोंकोंमे लिखचुके,—

छठीटोंक तीर्थंकरसुविधिनाथजीकी–इसमें तीर्थंकरसुविधिना-थजीके चरन तख्तनशीनहै, और उसपर वही लेखहै जो उपरकी पाचटोंकोंमे–लिखचुके. छत्रीकी मरम्मत दोवारा किइगइ, और उसपरलिखाहैकि–शेठ–उमाभाइ–हठीसिह–साकीन–अहमदावादने इसकी मरम्मतकरवाई.—

सातवीटोंक तीर्थंकरपद्मप्रभस्वामीकी–इसमें तीर्थंकरपद्मप्रभुके चरन तख्तनशीनहै,–इसकी मरम्मतभी दोवाराहुइहै. और उसपर लिखाहै–संवत् (१९४९) माघशुक्ल (१०) शुक्रवासरेसमे-तशिखर पर्वतेपद्मप्रभजिनचरणपादुका–स्थापिताप्रतिष्ठिता-च–भट्टारकश्रीविजयराजसूरिभिः तपागछे,–

आठवीटोंक तीर्थंकरमुनिसुव्रतस्वामीकी–इसमें तीर्थंकर मुनिसु-व्रतस्वामीके चरन तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहैकि–संवत्–

(१८२५) माघशुक्ल (३) गुरौ-बिरानीगोत्रीय-श
खुशालचंद्रेण-श्रीमुनिसुव्रतजिनचरणपादुका-कारापित
प्रतिष्ठिताच तपागछेश्रीरस्तु—

नवमीटोंक तीर्थंकर चंद्रप्रभुस्वामीकी-इसमे-तीर्थंकरचंद्रप्र
जीकेचरन तख्तनशीनहै. और उसपर लिखाहैकि-संवत् (१८४
माघशुक्लपंचम्यां-बुधवासरे —श्रीचंद्रप्रभजिनचरण न्या
कृत: यहसवटोंके पेस्तर शाह-खुशालचंदजी-विरानीगोत्र-तपग
वालोने संवत् (१८२५) में मरम्मतकरवाइथी, मगर व-सवव-
रजानेके दोवारा-तिवारा-मरम्मतकरारपाइहै,-यहटोंक वहुतऊच
बुलंद-और-उसकाचढाव-वडाकठिनहै, इसपरचढकरदेखोतो-म
लूम होताहै मानो ! आस्मानमे चलेगये. समेतशिखरपहाडकी तमा
रवन्नक-और-केफियत यहांसें व-खूवी-नजरआतीहै, तरहतरहव
मेवाजातवनास्पति-और-खूशवू-चारोंतर्फ-महकरहीहै-तीर्थंकर कुं
थुनाथजीकीटोंकसे-यह-टोंक-करीवएककोशकेफासलेपर और वडी
ऊंची है.-यहांसेंउतरकर तीर्थंकर-रिषभदेवजीकी टोंककों-जाना,-

दसवींटोंक-तीर्थंकर-रिषभदेवभगवानकी--इसमे—तीर्थंकर-
रिषभदेवमहाराजके चरन तख्तनशीनहै,-और-उसपर लिखाहैकि-
संवत् (१९४९) माघशुक्ल दुजकेरोज-समेतशैलपहाडपर-तीर्थंकर
रिषभदेवमहाराजकी चरणपादुकाका जीर्णोद्धार-रायवहादुर धन-
पतसिहजी साकीन मुर्शिदावादनें कराया. तीर्थंकर रिषभदेवमहा-
राज अष्टापद पहाडपर मुक्तहुवेहै, मगर यहा उनकीचरनपादुका
इसलिये तामीरकरवाइ गइकि-यात्रीको यहाभी उनकी जियारत
हासिलहोजावे, थोडे अरसेकी वातहै इस टोंकपर व-सवव-विज-
लीगिरजानेके तिवारामरम्मत किइ गइ, और संवत् (१९५८) में
फिर हमारे हाथसें प्रतिष्टा-हुइ है.

ग्यारवही टोंक तीर्थंकर शीतलनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर-शी-ठनाथजीके चरन तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहैकि—संवत् १८२५) वर्षे माघशुक्ल (३) गुरौ विरानीगोत्रीयशाह [शालचंद्रेण श्रीशीतलनाथजिनचरणपादुका कारापिता प्र ष्ठिताच तपागछे श्रीरस्तु—इसटोंकका चढावभी वहुत ठिन है.

वारहवीटोंक तीर्थंकर अनतनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर अनत-ाथजीके चरण तख्तनशीनहै, और उसपर सवत् (१८२५) में-ाह खुशालचंदजीने इसका तामीरकरवाये लिखा है.-

तेरहमीटोंक तीर्थंकर सभवनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर सभव-ाथजीके चरन तख्तनशीन है, और उसपरभी वही लेख है वत् (१८२५) में शाह खूशालचंदजीने इसकों तामीर करवाये.

चौदहमीटोंक-तीर्थंकर वासुपूज्यस्वामीकी-इसमें-तीर्थंकर वा-पूज्यमहाराजके चरन तख्तनशीन है, और उसपर लिखाहै संवत् १९२४) फाल्गुनवदी पचमी वुधवारकेरौज तीर्थंकर वासुपूज्य-ामीके पचकल्याणिकोंका यहा चरणन्यास कियागया, और शिदावाद वास्तव्य-दुगडगोत्रीय प्रतापसिंह भार्या मेहतावकुंवर येष्ठसुत लक्ष्मीपतिसिंह कनीष्टभ्राता धनपतिसिंहजीने इसका जी-र्णोद्धार कराया. (यानी) मरम्मत करवाइ, तीर्थंकर वासुपुज्य ामीके पाचकल्याणिक चंपापुरीमें हुवे, लेकिन ! यहापर उनके रन और छत्री इसलिये कायम किंगइ, कि-यात्रीलोग-यहाभी नकी जियारत हासिल करे,-

पनराहमीटोंक-तीर्थंकर-अभिनंदनस्वामीकी-इसमें--तीर्थंकर-अभिनदनस्वामीके चरन तख्तनशीन है, ओर उसपर लिखा है

(१८२५) माघशुक्ल (३) गुरौ-बिरानीगोत्रीय-शाह खुशालचंद्रेण-श्रीमुनिसुव्रतजिनचरणपादुका-कारापिता-प्रतिष्ठिताच तपागछेश्रीरस्तु—

नवमीटोंक तीर्थंकर चंदाप्रभुस्वामीकी-इसमे-तीर्थंकरचंदाप्रभुजीकेचरन तख्तनशीनहै. और उसपर लिखाहैकि-संवत् (१८४९) माघशुक्लपंचम्यां-बुधवासरे—श्रीचंद्रप्रभजिनचरण न्यासः कृतः यहसबटोंके पेस्तर शाह-खुशालचंदजी-विरानीगोत्र-तपगछवालोंने संवत् (१८२५) मे मरम्मतकरवाइथी, मगर ब-सबब-गिरजानेके दोबारा-तिबारा-मरम्मतकरारपाइहै,-यहटोंक बहुतऊंची-बुलंद-और-उसकाचढाव-बडाकठिनहै, इसपरचढकरदेखोतो-मालूम होताहै मानो ! आस्मानमे चलेगये. समेतशिखरपहाडकी तमाम रवन्नक-और-केफियत यहांसें ब-खूबी-नजरआतीहै, तरहतरहकी मेवाजातवनास्पति-और-खूशबू-चारोंतर्फ-महकरहीहै-तीर्थंकर कुंथुनाथजीकीटोंकसे-यह-टोंक-करीबएककोशकेफासलेपर और बडी-ऊंची है.-यहांसेउतरकर तीर्थंकर-रिषभदेवजीकी टोंकको-जाना,-

दसवीटोंक-तीर्थंकर-रिषभदेवभगवानकी--इसमे—तीर्थंकर-रिषभदेवमहाराजके चरन तख्तनशीनहै,-और-उसपर लिखाहैकि-संवत् (१९४९) माघशुक्ल दुजकेरोज-समेतशैलपहाडपर-तीर्थंकर रिषभदेवमहाराजकी चरणपादुकाका जीर्णोद्धार-रायबहादूर धनपतसिहजी साकीन मुर्शिदाबादने कराया. तीर्थंकर रिषभदेवमहाराज अष्टापद पहाडपर मुक्तहुवेहै, मगर यहां उनकीचरनपादुका इसलिये तामीरकरवाइ गइकि-यात्रीको यहाभी उनकी जियारत हासिलहोजावे, थोडे अरसेकी बातहै इस टोंकपर ब-सबब-बिजलीगिरजानेके तिबारामरम्मत किइ गइ, और संवत् (१९५८) में फिर हमारे हाथसें प्रतिष्ठा हुइ है.

ग्यारवही टोंक तीर्थंकर शीतलनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर-शीतलनाथजीके चरन तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहैकि-संवत् (१८२५) वर्षे माघशुक्ल (३) गुरौ विरानीगोत्रियशाह खुशालचंद्रेण श्रीशीतलनाथजिनचरणपादुका कारापिता प्रतिष्टिताच तपागछे श्रीरस्तु--इसटोंकका चढावभी वहुत कठिन है

वारहवीटोंक तीर्थंकर अनंतनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर अनतनाथजीके चरण तख्तनशीनहै, और उसपर सवत् (१८२५) में-शाह खुशालचंदजीने इसका तामीरकरवाये लिखा है.-

तेरहमीटोंक तीर्थंकर सभवनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर सभवनाथजीके चरन तख्तनशीन है, और उसपरभी वही लेख है सवत् (१८२५) में शाह खूशालचंदजीने इसको तामीर करवाये.

चौदहमीटोंक-तीर्थंकर वासुपूज्यस्वामीकी-इसमें-तीर्थंकर वासुपूज्यमहाराजके चरन तख्तनशीन है, और उसपर लिखाहै संवत् (१९२४) फाल्गुनवदी पचमी बुधवारकेरौज तीर्थंकर वासुपूज्यस्वामीके पंचकल्याणिकोंका यहा चरणन्यास कियागया, और मुर्शिदावाद वास्तव्य-दुगडगोत्रीय प्रतापसिंह भार्या मेहतानकुवर ज्येष्टसुत लक्ष्मीपतिसिंह कनीष्टभ्राता धनपतिसिंहजीने इसका जीर्णोद्धार कराया. (यानी) मरम्मत करवाइ, तीर्थंकर वासुपुज्य स्वामीके पांचकल्याणिक चपापुरीमें हुवे, लेकिन ! यहापर उनके चरन और छत्री इसलिये कायम किइगइ, कि-यात्रीलोग-यहाभी उनकी जियारत हासिल करें,-

पनराहमीटोंक-तीर्थंकर-अभिनदनस्वामीकी-इसमें--तीर्थंकर-अभिनदनस्वामीके चरन तख्तनशीन है, और उसपर लिखा है

[illegible] सौंदी-औ [illegible]

[illegible] -मंदिर [illegible]

[illegible] मंदिरोंके [illegible]

[illegible] नहींथी.

[illegible] हाथी [illegible]

[illegible] (२३६०००) [illegible]

[illegible] लगाहुआथा, [illegible]

और ० [illegible]

) हुरों

वित् (१८२२) में-सुगालचंद्र-ओशवाल-साणसुखागोत्र-साकीन सिंदावादने यह तामीर करवाइ.

वायीतर्फ शामलीयापार्श्वनाथजीके एकमूर्त्ति-तीर्थंकर आभि-दनस्वामीकी-करीव देढहाथ वडी सफेदरग जायेनशीनहै. और सपर लिखाहै-सवत् (१८२२) में सुगालचंद्र-ओशवाल-साण-खागोत्र-साकीन-मुर्शिदावादने यह तामीरकरवाइ, इसकी वायी र्फ-एक-और-मूर्त्ति-तीर्थंकर शीतलनाथमहाराजकी करीव देढ थ वडी सफेदरग जायेनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् १८२२) में-सुगालचद्र-ओशवाल-साणसुखागोत्र-साकीन मु-र्शिदावादने यह तामीरकरवाइ,-श्रावक खुशालचंदजी-और-उपर रुखेहुवे श्रावक-सुगालचंद्रजी-जैनश्वेतांवर श्रावकथे, मदिरका रं-मंडप और दालान निहायत उमदा वनेहुवे-फर्स-शगमर्मर पथर-ा-खुलाचौक-जिसमें (९००) आदमी व-खूवी वेठसकते है. खुव-रतिदेखकर दिलखुश होगा,-जगह मानींदे स्वर्गविमानके देखलो, ीहरीवनास्पति-और-जडीबुटीयें यहापर खडी है, जिनकों इस तकी माहिती है खजाना जवाहिरात दिखरहाहै,

धर्मशाला यहांपर (२) वनीहुइ, एक पंचायती, दुसरी-रायवहादुर नपतसिहजी-साकीन मुर्शिदावादकी तामीर किइ हुइ. यात्री अगर तकों यहांकयाम करना चाहे, शौखसे करे. चौकी पहरेका वंदोवस्त छाहै. मगर कभीकभी ठडीरातकों पानीपीनेकेलिये-शेरभी यहां जाताहै, इसलिये खुलेमेंदानमें सोना ठीकनाहे भीतरधर्मशालाके-वस्तीसे सोनाचाहिये, आजतक किसीयात्रीकों तकलीफ शेरकी हेहुइ, तीर्थका रवान वडाहै, मगर तोभी इनसानकों जानका वचाना र्जहै, इसल्यि वंदोवस्तकेशाथ सोनाचाहिये, पानीके दो-कुंद-और

संवत् (१९३३) ज्येष्ठशुक्लदशम्यां-शनिवासरे-अभिनंदन जिनेंद्रस्य-चरणपादुका जीर्णोद्धारः-श्रीसंघेन-कारितः-

वेदीकेनीचे एकतर्फकी दिवारमें एक शिलालेख लगाहुवा है और उसमे लिखाहैकि- इसवेदीकी मरम्मत-संवत् (१९४२) में शाह-शामजी-पदमसी-साकीन-कछ-मांडवी-श्रीमालवंशीने करवाइ, इसटोंकसे नीचे उतरकर शामलिया-पार्श्वनाथजीके मंदिरकों-जाना.

शामलियापार्श्वनाथजीका मंदिर-निहायत कीमती-और-शिखरवंद वनाहुवा इसमंदिरका दुसरा नाम-धुरमटका-मंदिर-भी-बोलतेहै, और कोइकोइ जलमंदिरभी कहतेहै, सव मंदिरोंकेवीच-मानोंदे स्वर्ग विमानके देखलो, जवकि-यहमंदिर-जगत्शेठ खुशालचंदजीने तामीरकरवाया जमाने उसवख्तके-रैल-नहीथी. पहाडके नीचेसें उपरतक सव माल-असवाव-इमारतका हाथीयोंपर लदाकर चढायाजाताथा, इसकी तामीरातमे (९३६०००) रुपये सर्फहुवे, पीछाडी मंदिरके एक शिलालेख लगाहुवाथा, मगर इस वख्त नही रहा, इसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजकी मूर्तिकरीव (२) हाथवडी-शामरंग-तख्तनशीनहै, और उसकेनीचे लिखाहै **संवत् (१८२२) वर्षे-वैशाखशुक्ल (१३) गुरौ-शाह खुशालचंद्रेण-श्रीपार्श्वविंबं-कारापितं--प्रतिष्ठितंच-सर्वसूरिभिः**-दाहनीतर्फ तीर्थंकर संभवनाथमहाराजकी मूर्त्ति-करीव देढहाथ वडी सफेदरंग जायेनशीनहै, और उसकेनीचेलिखाहै संवत् (१८२२) मे यहमूर्त्ति प्रतिष्ठित किइगइ, और सुगालचंद्र-ओशवाल-साणसुखागोत्र-साकीन मुर्शिदावादने तामीर करवाइ, इसके दाहनेपासे एक-और-मूर्त्ति-तीर्थंकरपार्श्वनाथजीकी फणसहित-करीव (२) हाथवडी सफेदरंग जायेनशीनहै. और उसपर लिखाहै

संवत् (१८२२) में–सुगालचंद्र–ओशवाल–साणसुखागोत्र–साकीन मुर्शिदावादने यह तामीर करवाइ.

वायीतर्फ शामलीयापार्श्वनाथजीके एकमूर्त्ति–तीर्थंकर अभिनंदनस्वामीकी–करीव देढहाथ वडी सफेदरंग जायेनशीनहै. और उसपर लिखाहै–संवत् (१८२२) में सुगालचद्र–ओशवाल–साणसुखागोत्र–साकीन–मुर्शिदावादने यह तामीरकरवाइ, इसकी वायी तर्फ–एक–और–मूर्त्ति–तीर्थंकर शीतलनाथमहाराजकी करीव देढ हाथ वडी सफेदरग जायेनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१८२२) में–सुगालचद्र–ओशवाल–साणसुखागोत्र–साकीन मुर्शिदावादने यह तामीरकरवाइ,–श्रावक खुशालचंदजी–और–उपर लिखेहुवे श्रावक–सुगालचद्रजी–जैनश्वेतांवर श्रावकथे, मंदिरका रंगमंडप और दालान निहायत उमदा वनेहुवे–फर्स–संगमर्मर पथरका–खुलाचौक–जिसमें (५००) आदमी व–खूवी वेठसकते है. खुवसुरतिदेखकर दिलखुश होगा,–जगह मानींदे स्वर्गविमानके देखलो, हरीहरीवनास्पति–और–जडीवुटीयें यहांपर खडी है, जिनकों इस वातकी माहिती है खजाना जवाहिरात दिखरहाहै,

धर्मशाला यहांपर (२) वनीहुइ, एक पचायती, दुसरी-रायवहादुर धनपतसिहजी–साकीन मुर्शिदावादकी तामीर किइ हुइ. यात्री अगर रातकों यहांकयाम करना चाहे, शौखसे करे. चौकी पहरेका वदोवस्त अछाहै. मगर कभीकभी ठंडीरातकों पानीपीनेकेलिये–शेरभी यहां आजाताहै, इसलिये खुलेमेंदानमें सोना ठीकनाहि भीतरधर्मशालाके–वंदोवस्तीसे सोनाचाहिये, आजतक किसीयात्रीकों तकलीफ शेरकी नहिहुइ, तीर्थका रवाव वडाहै, मगर तोभी इनसानकों
फर्महै, इसलिये वदोवस्तकेशाथ सोनाचाहिये. पानीके

संवत् (१९३३) ज्येष्ठशुक्लदशम्यां–शनिवासरे–अभिनंदन जिनेंद्रस्य–चरणपादुका जीर्णोद्धारः–श्रीसंघेन–कारितः–

वेदीकेनीचे एकतर्फकी दिवारमें एक शिलालेख लगाहुवा है और उसमें लिखाहैकि– इसवेदीकी मरम्मत–संवत् (१९४२) में शाह–शामजी–पदमसी–साकीन–कछ–मांडवी–श्रीमालवंशीने करवाइ, इसटोंकसे नीचे उतरकर शामलिया–पार्श्वनाथजीके मंदिरकों–जाना.

शामलियापार्श्वनाथजीका मंदिर–निहायत कीमती–और–शिखरबंद बनाहुवा इसमंदिरका दुसरा नाम–धुरमटका–मंदिर–भी–बोलतेहै, और कोइकोइ जलमंदिरभी कहतेहै, सब मंदिरोंकेबीच–मानोंदे स्वर्ग विमानके देखलो, जबकि–यहमंदिर–जगत्शेठ खुशालचंदजीने तामीरकरवाया जमाने उसवख्तके–रैल–नहीथी. पहाडके नीचेसें उपरतक सब माल–असबाब–इमारतका हाथीयोपर लदाकर चढायाजाताथा, इसकी तामीरातमे (९३६०००) रुपये सर्फहुवे, पीछाडी मंदिरके एक शिलालेख लगाहुवाथा, मगर इस वख्त नही रहा, इसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजकी मूर्त्तिकरीब (२) हाथवडी–शामरग–तख्तनशीनहै, और उसकेनीचे लिखाहै **संवत् (१८२२) वर्षे–वैशाखशुक्ल (१३) गुरौ–शाह खुशालचंद्रेण–श्रीपार्श्वबिंबं–कारापितं––प्रतिष्ठितंच–सर्वसूरिभिः**–दाहनीतर्फ तीर्थंकर संभवनाथमहाराजकी मूर्त्ति–करीब देढहाथ बडी सफेदरंग जायेनशीनहै, और उसकेनीचेलिखाहै संवत् (१८२२) मे यहमूर्त्ति प्रतिष्ठित किइगइ, और सुगालचंद्र–ओशवाल–साणसुखागोत्र–साकीन मुर्शिदाबादने तामीर करवाइ, इसके दाहनेपासे एक–और–मूर्त्ति–तीर्थंकरपार्श्वनाथजीकी फणसहित–करीब (२) हाथवडी सफेदरंग जायेनशीनहै. और उसपर लिखाहै

संवत् (१८२२) में-सुगालचद्र-ओशवाल-साणसुखागोत्र-साकीन मुर्शिदावादने यह तामीर करवाइ.

वायीतर्फ शामलीयापार्श्वनाथजीके एकमूर्त्ति-तीर्थंकर अभि-नंदनस्वामीकी-करीब देढहाथ वडी सफेदरंग जायेनशीनहै. और उसपर लिखाहै-सवत् (१८२२) में सुगालचंद्र-ओशवाल-साण-सुखागोत्र-साकीन-मुर्शिदाबादने यह तामीरकरवाइ, इसकी बायी तर्फ-एक-और-मूर्त्ति-तीर्थंकर शीतलनाथमहाराजकी करीव देढ हाथ वडी सफेदरग जायेनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१८२२) में-सुगालचंद्र-ओशवाल-साणसुखागोत्र-साकीन मु-र्शिदावादने यह तामीरकरवाइ,-श्रावक खुशालचंदजी-और-उपर लिखेहुवे श्रावक-सुगालचद्रजी-जैनश्वेतांवर श्रावकथे, मदिरका रं-गमंडप और दालान निहायत उमदा बनेहुवे-फर्स-शगमर्मर पथर-का-खुलाचौक-जिसमें (५००) आदमी ब-खूबी वेठसकते है. खुब-सुरतिदेखकर दिलखुश होगा,-जगह मानींदे स्वर्गविमानके देखलो, हरीहरीवनास्पति-और-जडीबुटीयें यहांपर खडी है, जिनकों इस वातकी माहिती है खजाना जवाहिरात दिखरहाहै,

धर्मशाला यहांपर (२) वनीहुइ, एक पचायती, दुसरी-रायवहादुर धनपतसिंहजी-साकीन मुर्शिदाबादकी तामीर किइ हुइ. यात्री अगर रातकों यहाकयाम करना चाहे, शौखसे करे. चौकी पहरेका बंदोवस्त अछाहै. मगर कभीकभी ठडीरातकों पानीपीनेकेलिये-शेरभी यहां आजाताहै, इसलिये खुलेमेंदानमें सोना ठीकनाहि भीतरधर्मशालाके-वदोवस्तीसे सोनाचाहिये, आजतक किसीयात्रीकों तकलीफ शेरकी नहिहुइ, तीर्थका रवाव वडाहै, मगर तोभी इनसानकों जानका बचाना फर्जहै, इसलिये बंदोवस्तकेशाथ सोनाचाहिये, पानीके दो-कुंड-और

पासमें एक वगीचा यहां वनाहुवाहै, गुलाव-चमेली-वेला वगेराके फुलहमेशां उतरते है, और देवपुजनमें चढायेजाते है,-खर्च-आदमनी चढापा-पुजारी और-नोकरचाकर-यहां हमेशांसे जैनश्वेतांवरोंकी तर्फसे है, यात्री-पूजावगेरा करके ग्यारहवजेसे तीन वजेतक तीन घंटेकी धूप यहां वतीतकरे, और वाद दोवजेके नवटोकोंके दर्शन करके नीचे मधुवनमें शामतक पहुचशकते है. हमने चारमरतवे इस तीर्थकी जियारतकिइ, इसीतौरसे शुभहके गयेहुवे शामकों वापिस मधुवनमें आयेथे, हरयात्रीकों लाजिमहै तीर्थोकी जियारतमें जल्दी न करे, धीरजकेशाथ शांतभावसें देवपुजन वगेरा करे, धर्मके कामेंमे जितना अर्सा गुजरे उतनाही अछा है, दुनियाके धंदे कभी खतम नहि होते.

सोलहमीटोंक गौतमस्वामीकी-इसमें-गौतमस्वामीके-और-चौइसतीर्थकरोंके चरन तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१९४१) में इसकी प्रतिष्ठाकिइगइ, और श्रावक-लक्ष्मीचंदजी-साकीन-मांडल-मुल्केगुजरातने इसकों तामीर करवाये,-तीर्थंकर-कुंथुनाथमहाराजकी टोंक-इसीके सामनेहै, पेस्तर जिसकेदर्शनकरके आगेकों गयेथे, तीर्थंकर कुंथुनाथजीकीटोंकसें-चंदाप्रभुकीटोंक खास ! पूरवकीतर्फ, पार्श्वनाथजीटोंक पश्चिमतर्फशामलियापार्श्वनाथजीका मंदिर दखन तर्फ-मधुवन-श्वेतांवरकोठी-और-धर्मशाला वगेरा उत्तरकीतर्फहै,

सतरहमीटोंक तीर्थंकर धर्मनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर-धर्मनाथजीके-चरन तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहै; संवत् (१९१२) में इसकी मरम्मत दोवारा किइगई,-तीसरीदफे संवत् (१९३१) में-शेठ-नरसिंह-केशवजी-साकीन-कछनेभी इसकी मरम्मत करवाइहै.

अठारहमीटोंक-तीर्थकर सुमतिनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर सुमतिनाथमहाराजके चरन तख्तनशीनहै. और उसपरलिखाहै संवत् (१८२५) माघशुक्ल (३) गुरौ बिरानीगोत्रीय शाह खुशालचंद्रेण श्रीसुमतिनाथ जिनचरणपादुका कारापिता प्रतिष्ठिताच सर्वसूरिभिः तपागछेश्रीरस्तु—

उनीसमीटोंक तीर्थकर-शांतिनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर शांतिनाथमहाराजके चरन तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१८२५) में-बिरानी गोत्रीय-शाह-खुशालचंदजीने इनको ता-, मीर करवाये,—

बीसमीटोंक-तीर्थकर-महावीरस्वामीकी-इसमें-तीर्थकर-महावीरस्वामीके—चरन—तख्तनशीनहै. और उसपर लिखाहै संवत् (१९२४) में इसकी मरम्मत रायबहादूर धनपतसिंहजी साकीन मुर्शिदाबादने करवाइ, तीर्थकरमहावीरस्वामी-पावापुरीमें-मुक्तहुवे, मगर यहा उनके चरन इसलियेतामीरकरवायेगयेकि-यात्रीलोक-यहाभी-उनकीजियारत हासीलकरशके.

एकीसमीटोंक-तीर्थकर-सुपार्श्वनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर-सुपार्श्वनाथमहाराजके चरन तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहै संवत् (१८२५) माघशुक्ल (३) गुरौ बिरानीगोत्रीय शाह खूशालचंद्रेण श्रीसुपार्श्वनाथजिनचरणपादूका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्वसूरिभिः तपागछेश्रीरस्तु,

बाइसमीटोंक-तीर्थकर विमलनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर-विमलनाथजीके चरन तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहै संवत् (१८२५) में बिरानीगोत्रीय-शाह-खुशालचंदजीने इनको तामीर करवाये,—

तेइसमी टोंक-तीर्थंकर अजितनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर अजितनाथजीके चरन तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहै संवत् (१८२५) में विरानीगौत्रीय-शाह-खुशालचंदजीने इनकों तामीर करवाये,—

चोइसमीटोंक तीर्थंकर-नेमनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर नेमनाथजी महाराजके चरन तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहै, सवत् (१९२४) में इसकी मरम्मत रायबहादुर धनपतसिंहजी-साकीन मुर्शिदाबादने-करवाइ. तीर्थंकर नेमनाथमहाराज-गिरनारपहाड-पर-मुक्तहुवे, मगर यहां उनके चरन इसलिये तामीरकरवाये गये-कि-यात्रीलोग यहांभी उनकी जियारत हासिल करशके.

पचीसमीटोंक तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी-इसमे-तीर्थंकर पार्श्वनाथ-महाराजके-चरन-तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहै-संवत् (१८४९) माघशुक्लपंचमी बुधवारकेरौज श्रीसंघने तीर्थंकरपार्श्वनाथजीके चरन यहां तामीर करवाये, और बादउसकेसंवत् (१९५८) में इसकी तिवारामरम्मत रायबद्रीदासजीमुकीम साकीन कलकत्ताने करवाइ. शिखरबंद मंदिर मजबूत-बेशकीमती बनवाया औरप्रतिष्ठा करवाइ, फर्स-सफेद और-काले-शंगमर्मरपथरका-वेदी-निहायत उमदा यहटोंक सबटोंकोंसे उची-इसके चढनेकेलिये सीढी बनीये घनीहुइहै,-ठीक इसटोंकके सीरेपरचढकर नजरकरेतो तमाम समेतशिखरका-पहाडदिखपडताहै, हरीहरीवनास्पती-और-जंगलीमेवाजात दरख्तोंसें छायाहुवा-चोगिर्दा खुशबु-महेकरही है देखकर दिलखुशहोगा, मंदिरकी पीछलीपरकम्मामें खडेहोकरदेखो तो-गोया ! आस्मानकेसाथ बातेंहोरहीहै, कहांतकतारीफकरे देखनेवालेही इसकीकदर जानसकतेहै, तीर्थोंमें दौलत खर्चकरना बडेखुशनशीबोंका कामहै, जो लोगधर्मको भुलेहुवेहै क्या,

खर्चकरसकेगें, ? पायवदधर्मकेही अपनीदौलतकों वतौरराहधर्मपर सर्फकरसकतेहै,—

तीर्थ-समेतशिखरपहाडपर-जैनश्वेतांवर मंदिर-टोंक-औरध-र्मशाला-सव-जैनश्वेतांवरोंकी तर्फसेवनेहुवेहै, पहाडकेनीचे मधुवनमे जो जैनश्वेतांवरकोठीहै-उसीकेखजानेसें सवकाइंतजामाकिया जाता है, सीढीयोंके मुकदमेंके फेसलेमें वयान दर्ज है कि.-

The Jains of the Sitamberi sect are in charge and possession of the temples tonks and images and idols therein

(माइना.)—शिखरजी पहाडपरके मंदिर-टोंक-उनमेंकी मूर्त्तियें और पुतलें सव-श्वेतावरमजहवके जैनोके तावेमें है,

☞ [दरवयान-जिला-हजारीवाग,]

समुंदरके पानीसे करीव (२००) फुट ऊचा जिलेका सद-मुकाम हजारीवाग एक वडा कस्वाहै, सन (१८९१) की-मर्दु-मशुमारीके वख्त कस्वे हजारीवागकी मर्दुमशुमारी (१६६७२) मनुष्योंकी-थी, आवहवा निहायतपाक और तदुरस्ती वढानेवाली जिलेकी वडीनदी दामोदर दुरतक वहती चलीगइहै, जिले हजारीवागके-पूरवकों परगना सथाल-और-वीरभूमि-दखनप-श्चिमको लोहारडागा-और-गयाजिला, उत्तरकों गया-और-मुगे-र जिले है, जिलेमें वहुतसी पहाडीयें और अवरखकी खाने मौजूदहै, करीव-आठ-दसलाख रुपयोंका अवरख हरसाल यहासे और मुल्कोंमें भेजाजाताहै, कस्वे-हजारीवागमें सरकारी कचहरी-पुलीसटेशन-अस्पताल-और-स्कुल वडी लागतके मकान वनेहुवे

तेइसमी टोंक-तीर्थंकर अजितनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर अजितनाथजीके चरन तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहै संवत् (१८२५) में विरानीगोत्रीय-शाह-खुशालचंदजीने इनकों तामीर करवाये,—

चोइसमीटोंक तीर्थंकर-नेमनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर नेमनाथजी महाराजके चरन तख्तनशीनहै, और उसपरलिखाहै, संवत् (१९२४) में इसकी मरम्मत रायबहादूर धनपतसिहजी-साकीन मुर्शिदाबादने-करवाइ. तीर्थंकर नेमनाथमहाराज-गिरनारपहाडपर-मुक्तहुवे, मगर यहां उनके चरन इसलिये तामीरकरवाये गये-कि-यात्रीलोग यहांभी उनकी जियारत हासिल करशके.

पचीसमीटोंक तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी-इसमे-तीर्थंकर पार्श्वनाथ-महाराजके-चरन-तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहै-संवत् (१८४९) माघशुक्लपंचमी बुधवारकेरोज श्रीसंघने तीर्थंकरपार्श्वनाथजीके चरन यहां तामीर करवाये, और बादउसकेसंवत् (१९५८) में इसकी तिवारामरम्मत रायबद्रीदासजीमुकीम साकीन कलकत्ताने करवाइ. शिखरबंद मंदिर मजबूत-बेशकीमती बनवाया औरप्रतिष्ठा करवाइ, फर्स-सफेद और-काले-शंगमर्मरपथरका-वेदी-निहायत उमदा यहटोंक सबटोंकोंसें उंची-इसके चढनेकेलिये सीढी बनीये बनीहुइहै,-ठीक इसटोंकके सीरेपरचढकर नजरकरेतो तमाम समेतशिखरका-पहाडदिखपडताहै, हरीहरीबनास्पती-और-जंगलीमेवाजात दरख्तोंसें छायाहुवा-चोगिर्दा खुशबु-महेकरही है देखकर दिलखुशहोगा, मंदिरकी पीछलीपरकम्मामें खडेहोकरदेखो तो-गोया ! आस्मानकेसाथ बातेंहोरहीहै, कहांतकतारीफकरे देखनेवालेही इसकीकदर जानसकतेहै, तीर्थोंमें दौलत खर्चकरना बडेखुशनशीबोंका कामहै, जो लोगधर्मकों भुलेहुवेहै क्या

खर्चकरसकेगें, ? पायवंदधर्मकेही अपनीदौलतकों वतौरराहधर्मपर सर्फकरसकतेहै,—

तीर्थ–समेतशिखरपहाडपर–जैनश्वेतांवर मंदिर–टोंक–औरधर्मशाला–सव–जैनश्वेतांवरोंकी तर्फसेवनेहुवेहै, पहाडकेनीचे मधुवनमे जो जैनश्वेतांवरकोठीहै–उसीकेखजानेसें सवकाइतजामाकिया जाता है, सीढीयोंके मुकदमेंके फेसलेमें वयान दर्ज है कि.–

The Jains of the Sitamberi sect are in charge and possession of the temples tonks and images and idols therein

(माइना.)—शिखरजी पहाडपरके मंदिर–टोंक–उनमेंकी मूर्त्तियें और पुतलें सव–श्वेतावरमजहवके जैनोके तावेमें है,

☞ [दरवयान–जिला–हजारीवाग,]

समुंदरके पानीसे करीव (२००) फुट ऊंचा जिलेका सदमुकाम हजारीवाग एक वडा कस्वाहै, सन (१८९१) की–मर्दुमशुमारीके वख्त कस्वे हजारीवागकी मर्दुमशुमारी (१६६७२) मनुष्योंकी–थी, आवहवा निहायतपाक और तदुरस्ती वढानेवाली जिलेकी वडीनदी दामोदर दुरतक वहती चलीगइहै, जिले हजारीवागके–पूरवकों परगना सथाल–और–वीरभूमि–दखनपश्चिमको लोहारडागा–और–गयाजिला, उत्तरको गया–और–मुंगेरके जिले है, जिलेमें वहुतसी पहाडीयें और अवरखकी खाने मौजूदहै, करीव–आठ–दसलाख रुपयोंका अवरख हरसाल यहासे मुल्कोंमें भेजाजाताहै, [illegible] हजारीवागमें सरकारी कचहरी–पोलीसटेशन–अस्पताल–[illegible] लागतके मकान वने [illegible]

है, बाजार गुलजार और जिसचीजकी दरकारहो यहां मिलसकती है, पूरव दखनकी तर्फ फौजीछावनीमे अंग्रेजीफौज रहाकरती है, जिले हजारीबागमें करीब (७०) मील पूर्वोत्तर गिरिडी टेशनहै, तीर्थ समेतशिखरकी जियारतकरके-यात्री-मधुवनसे रवाना होवे और-इसरीटेशनसे-कलकत्ता जानेकेलिये रैलमे सवार होवे, और नीमियाघाट-गोमाह-मतारी-तेतुलमरी-धानवैद्य-प्रधानखुंता--छोटाअंबोना-कलुबथान-मुगमा-बराकर-कुलती-सीतारामपुर-बोराचक-आसनसोल-रानीगंज-पानागर-और-खानाजंकशन होतेहुवे वर्द्धमान टेशनजाना, रैलकिराया एकरुपया लगताहै,

☞ [तवारिख-तीर्थ-वर्द्धमान,]

कलकत्तेसें (६७) मील पश्चिमोत्तर और खानाजंकशनसे (८) मील दखनको जिलेका सदरमुकाम वर्द्धमान एक-अछाशहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त वर्द्धमानकी मर्दुमशुमारी (३४४७७) मनुष्योंकी थी, बाजार रवन्नकलिये और तरहतरहकी चीजे यहां मिलती है, शहरमें जगहजगह-पानीका नल लगाहुवा-कइ तालाव-बागवगीचे-जिनमें तरहतरहकी वनास्पति और फल-फुलोंके पेड लगेहुवे है, राजमहेल-और-गुलालबाग काबिलदेखनेकीजगहहै, चीडियाखानेमे-बहुतेरेजानवर-शेर-हिरन-बदर वगेरा मौजूदहै, सडके लंबीचोडी-और-मकान इटचुनोंके खूनसुरत बनेहुवे है, आजकल जैनश्वेतांबर श्रावकोंका-घर-यहा-कोइ नही.--न--जैनश्वेतांबर मंदिर है, कल्पसूत्रमे--जहांकि-तीर्थंकर महावीर स्वामीकी अतर्वाचनाका बयान दर्ज है, वहांलिखाहै तीर्थंकर महावीरस्वामी-मोराकसंनिवेशसे यहां तशरीफलाये, और जब कायोत्सर्गकरके ध्यानसमाधिमें मशगुलहुवे शुलपाणि यक्षने उनको परिसहदेना शुरुकिया, हवाचलाइ-गर्जा-

रवकिया और पिशाचकी शिकल दिखाकर डरानेलगा, और तरहतहकी तकलीफदिइ, लेकिन ! तीर्थंकर महावीर अपने ध्यानमें सावीतकदमरहे, शुलपाणियक्षने समझलियाकि--ये-अपने ध्यानसे गिरनेवालेनही, कोइबडे महर्षि दिखलाइदेताहै, इनकी कदमवोसी करना चाहिये, और कियेहुवे गुन्होंकी माफी मागनाचाहिये. अखीरमें माफी मांगी, धर्मपर एतकातलाया, और तीर्थंकर महावीरस्वामीके वदनपर फुलोंकी वारीशकिइ, पेस्तर यहा जैनोकी आवादी और तीर्थथा, आजकल सिर्फ ! क्षेत्रस्पर्शना है, यात्री इस तीर्थकी कदमवोसी करके जियारत कामयावहुइ समझे, वर्द्धमानसे रैलमें सवारहोकर-वडेल-चीनसुरा-चद्रनगर-सेरामपुर-और लीलुआटेशनहोते हवराटेशन उतरे. रैलकिराया नव आने,

☞ (तवारिख-शहर-कलकत्ता,)

इलाहावादसे (६८४) मीलके फासलेपर गगाकनारे मुल्क वंगालका नामीशहर कलकत्ता-जो-आजकल हिंदुस्थानकी राजधानी कहाजाताहै, वडामशहूर-और-मारुफ शहरहै, कलकत्ता ववइके बीचका फासला (१२७८) मीलका-और-रैलकी सडक वनी हुइहै, कलकत्तेकी जगहपर पेस्तर-कालीघाट-और सुतापटी--दो-तीन-छोटेछोटेगाव आवादथे. गगाकनारे कालीदेवीका घाट अलवत्ते ! पुरानाहै, जव अग्रेजोकी आवादी वढनेलगी दिन-व दिन शहरकलकत्ता तरक्कीपर होतागया, ज्युज्यु आवादी वढतीगइ शहरकी तरक्की होतीगइ, वडेवडे मकानात वनतेगये, और तिजारतभी हरेकाकिसमकी होनेलगी, कल-कारखाने वनतेगये, गरजकि-आजकल इतनातरक्कीपरहैकि-मुकाविले इसके शिवाय ववइके दिगर शहर नही, कभी छोटाशहर वडा-और-वडाशहर छोटा होजाता है, दुनियाका यही कारोवार हमेशासे चला आताहै, जिसचीजको

कमाल है उसको जवालहै, और जिसको जवाल है उसको कमालभी है,

रवनक कलकत्तेकी आजकल वढीहुइहै, वडेवडे वाजार-टेली-फोन-तार-पानीकानल-वडेवडे मकानात-और-तरहतरहकी चीजे यहांपर काविल देखनेके है, कलकत्ताके वडेवडे वाजार-हेरीसनरोड-शालदह--वडावाजार-चितपुररोड- धर्मतल्ला--कालिघाट-किलेका मेदान-हाफसाहवका वाजार-वांसतल्ला-अफीमचैारस्ता-मुर्गीहट्टा-चीनावाजार-कोलुटोला-मछुआवाजार-अलसीवागान--वगेराव-गेराहै,-वगी-घोडे-और-ट्रामवगेराके सववसें रास्तेमें हमेशां वडा हुजुम वनारहताहै, शहरकी सडके लंवीचोडी और उनपर रातको लालटेनोकी रौशनीहुवा करती है, समुंदरके कनारे वडेवडे जहाज और-ष्टीमरे-हमेशां तयाररहती है. सन (१८९१) की-मर्दुमशु-मारीके वख्त-कलकत्तेकी-मर्दुमशुमारी (८१०७८६) मनुष्योंकी थी, मकान यहांके निहायत पुख्ता-और-पथरके वनेहुवे-जिनकी छतं उपरसे खुलीहुइ. दुकान दुकानपर साइनवोर्ड-और घरघर-पर नंवरलगे हुवे है, कोइशख्श यहां वेकार नही, हरेक आदमी अपने कारोवारमें मशगूलहै, मकानका किराया इतनातेजहैकि-एकछोटी कोठरीभी सातरुपये महावारसें-कम-नही मिलसकती. वडीवडी कोठियां (२००) रुपये महावारी और वाजे (४००) रुपये महावारीतक मिलसकती है,

फोर्टविलियम-किलेका मेदान-गवर्नमेंट हाउस-वडेलाट साह-वकी कोठी-हाइकोर्ट-वगालवेंक-पोष्टओफिस-टेलीग्राफ ओफिस-टंकशाल-कलकत्ता युनिवरसीटी-जनानाअस्पताल-कस्टमहाउस इष्ट इडियन रैलवे मकान-ष्टेशनरी दफतर-वडे वडे आलिशान और कीमती मकानातहै, यहांपर हरमुल्कका माल मिलसकता है,

इग्लांड–अमरिका–फ्रांस–जर्मनी–रुस–चीन–जापान–आफ्रिका–इटाली–स्वीटझरलेंड–स्पेन–नोर्वे–स्वीडन अरव–काबुल-जजीवार–मोरसस–वगेरा मुल्कोकी वनीहुइ चीजे–यहां मीलसकतीहै, तरहतरहकेबाजे–और–साज यहापर कारिगिरलोग वनातेहै. जहोरीयोकी दुकाने देखो–तो–तरहतरहकी जवाहिरात नजर आती है, कपडेवालोकी दुकाने–तिजारतकी कोठीये घडीसाजोकी दुकाने जिसमे हजार हजार रुपयोकी कीमती घडी मौजूदहै, हरेककिसमके मेवे–वादाम–पिस्ते–अगुर–अनार वगेरा–जो–चाहो–यहा लेलो, पुरी–कचौरी–मिठाइ–वगेरा हरवख्त ताजी मिलसकती है, नाशपाती–आम–अमरुद–सेव–शरीफे–फालसे–वगेरा यहा हमेशां मिलसकते है, अलिपुरके वगीचेमें तरहतरहके जानवर–परीद–तोते चीडिया–शेर–हिरन–गेंडा–वदरवगेरा मौजूदहै, अजायव घरमें तरहतरहकी चीजें–अमरिका–आष्ट्रेलियाके जानवर–हिंदुस्थानकी कारीगिरीके नमुने–समुद्रके जानवरोके कलेवर–आफ्रिकाके वडे वडे शेर–और–व्याघ्रके कलेवर–मसालोसे भरेहुवे रखेहै, आदमीयोंके कलेवरभी मौजूदहै जिसको देखकर- इसतरहकी नसीहतहोती हैकि–वदनका पुतला–इसतरहका वनाहुवाहै, कइमूर्त्तियें–शिलालेख देखकर पिछलाजमाना याद आता है. अजायवघरके अशुवात देखनेसे एकतरहकी–नसीहत मिलती है,

जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर शहरकलत्तेमें करीब (७००) होगे, जहोरी–मारवाडी–गुजराती–सव इसमें आगये, इनमें दुकाने सामीलनहि किइगइ, अफीमचौरास्तेपर–एक–जैनश्वेतावरमदिर उमदा और वेशकीमती वनाहुवाहै, जो–कोइ–जैनश्वेतावरयात्री कलकत्तेकों जाय–हवराटेशनपर उतरे, हवराटेशनसे कलकत्तेकों जातेवख्त रास्तेमें गंगाका पुल वंध गंगाकनारे देखोतो तरहत र

कमाल है उसको जवालहै, और जिसको जवाल है उसको कमालभी है,

रवन्नक कलकत्तेकी आजकल वढीहुइहै, वडेवडे बाजार-टेलीफोन-तार-पानीकानल-वडेवडे मकानात-और-तरहतरहकी चीजे यहांपर काविल देखनेके है, कलकत्ताके वडेवडे बाजार-हेरीसनरोड-शालदह--वडावाजार-चितपुररोड- धर्मतल्ला--कालिघाट-किलेका मेदान-हाफसाहवका वाजार-वांसतल्ला-अफीमचैारस्ता-मुर्गीहट्टा-चीनावाजार-कोलुटोला-मछुआवाजार-अलसीवागान--वगेरावगेराहै,-वगी-घोडे-और-ट्रामवगेराके सववसें रास्तेमें हमेशां वडा हुजुम वनारहताहै, शहरकी सडके लंवीचोडी और उनपर रातको लालटेनोकी रौशनीहुवा करतीहै, समुंदरके कनारे वडेवडे जहाज और-ष्टीमरे-हमेशां तयाररहती है. सन (१८९१) की-मर्दुमशुमारीके वख्त-कलकत्तेकी-मर्दुमशुमारी (८१०७८६) मनुष्योंकी थी, मकान यहाके निहायत पुख्ता-और-पथरके वनेहुवे-जिनकी छतें उपरसे खुलीहुइ. दुकान दुकानपर साइनवोर्ड-और घरघरपर नंवरलगे हुवे है, कोइशख्श यहा वेकार नही, हरेक आदमी अपने कारोवारमे मशगूलहै, मकानका किराया इतनातेजहैकि-एकछोटी कोठरीभी सातरुपये महावारसें-कम-नही मिलसकती. वडीवडी कोठियां (२००) रुपये महावारी और वाजे (४००) रुपये महावारीतक मिलसकती है,

फोर्टविलियम-किलेका मेंदान-गवर्नमेंट हाउस-वडेलाट साहवकी कोठी-हाइकोर्ट-वंगालवेंक-पोष्टओफिस-टेलीग्राफ ओफिस -टंकशाल-कल्कत्ता युनिवरसीटी-जनानाअस्पताल-कस्टमहाउस इष्ट इंडियन रैलवे मकान-ष्टेशनरी दफतर-वडे वडे आलिशान और कीमती मकानातहै, यहापर हरमुल्कका माल मिलसकता है,

कीमती और पायदारहै, इसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति तख्तनशीनहै, तीसरामंदिर-जहोरी-कपुरचदजीका तामीरकिया हुवा इसमें मुलनायक तीर्थंकरचद्रामभुकी मूर्त्ति तख्तनशीनहै, ठीक सडकपर इस तरह वनाहुवा है कि—सडकपर खडेहुवेभी दर्श- न करलो,

हरसाल कातिकसुदी पुनमकेरौज अफीमचौरास्तेके मंदिरसे सवारी तीर्थंकर धर्मनाथजीकी वडेजुलुससे निकलकर दादाजीके वगीचेमे रौनक-अफरोज होती है, सवारी जिसवख्त शहरसे वडे वाजारमें होकर निकसती है—डका-निशान-धजा-पताका-बेंडवा- जा-महेंद्रधजा—चादीसोनेके सिंहासन-छडी-चवर—छत्र-वगेरा लवाजमा शाथ निकलताहै, तीर्थंकर धर्मनाथजीकी मूर्त्तिके सामने जव जहोरीलोग संगीतकलाके जाननेवाले हारमोनियम वगेरा वा- जोकेशाथ तालस्वरसे गाते है. उसवख्तका जलसा काविल देख- नेकेही होताहै. दुफेरके वारावजे सवारी शहरसें निकलकर चार वजे दादाजीके वागमें जाकर दाखिलहोती है, और तीनरौज वहां कयामकरके चोथेरौज उसी जुलुसके शाथ वापिस शहरमें आती है,—यात्री—कलकतेमें कुछरौज कयाम करे और जैनमंदिरोंकी जियारत करे,—

☞(तवारिख मुल्क आसाम-और-ढाका,)

कलकत्तेसे अगर कोइयात्री मुल्क आसाम तर्फ जाना चाहे शौखसे जाय, मुल्कआसाम ब्रह्मपुत्रानदीकी इर्दगिर्द चीनकीहदतक चलागया, उत्तरतर्फ भुटान-पूरवमें वर्मा-और-सलतनत मनीपुरहै, जगल-पहाडिया-हमेश पानीकी वहुतायतसें मुल्कसरगब्ज और चायके-पेड-यहां कसरतसें होते है, आसाममें जिलेकामरुपका

नावें-घुमरही है, और तरहतरहके झंडे फरकरहेहै, पश्चिमसे जाने-वालेकों अवल-हवरादेशन मिलताहै, टेशनपर इक्का-वगी-तयार मिलेगी, वेठकर शहरमेंजाना,-और-शामावाइकी गलीमे-जो जैन श्वेतांवर धर्मशाला वनीहुइहै जाकर ठहरना, जोकोइ यात्री दादा-वाडीमे ठहरनाचाहे-सीधे अलसीवगान पुछते चलेजाय वहांभी ठहरनेकेलिये धर्मशाला मौजूदहै, शहरसें वहां ज्यादह आराम मि-लेगा, मगर शहरमे आनेजानेकी वेशक ! तकलीफ रहेगी,

दादाजीके वगीचेमे छत्री-और-कदम-दादाजीके जायेनशीन है, सामने एकतालाव-और-एक-वारांदरी-निहायत उमदा वनी हुइ जहांकि-तीर्थकर धर्मनाथजीकी सवारी-कार्तिकपुनमके रौज शहरसे आती है और ठहराइजाती है, छत्रीसे पश्चिमकों धर्मशाला वनीहुइ यात्री इसमे आकर ठहरे, कोइ रोकटोक नहि. कुवा-एक मीठे जलका-और-पासमें एक वगीचा जिसमें-गुलाव-चपा व-गेराके फुल पेदा होते है, छत्रीके पश्चिमकों रायवद्रीदासजीका व-गीचा-और-उन्हीका तामीर करवायाहुवा तीर्थंकर शीतलनाथजी का मंदिर वडीलागतकाहै इसकी कतेवजह और मीनाकारी काम अजवकिसमका देखोगे, इसको देखनेकेलिये हरवख्त कइलोग आते जातेहे, इसकी तारीफ तमाम कलकत्तेमें मशहूरहै, कइअग्रेज इसका फोटो उतारकर लेजातेहै, इसमंदिरमें कइ किसमके चित्राम-और आइनेका काम-इसकदर उमदा वनाहै जिसको देखकर आदमी ताज्जुव करताहै, मंदिरकी दखनतर्फ-श्रीकल्याणसूरिजीकी छत्री-उत्तरतर्फ धर्मशालाएक-वारादरी--तीनकमरे--चारचमन--जलके फव्वारे-सामने तालाव-और फाटककेउपर नोवतखाना-जिसमें हमेशा-शुभह-शाम-नोवत वजती है, दादाजीके वगीचेसे इशान-कोनकों जहोरी-मुरनलालजीका-तामीरकरवायाहुवा मंदिर वेश

लोगोका हुजुम वहुत रहताहै, चायकी पैदाश–ज्यादह–पहाडियोमें कइगुफा–और उची उंची पहाडीयोमें तेंदुए-भालु–और–वडे हिरनभी रहाकरते है, आवहवा यहांकी उमदा और गर्मीकेदिनोमें शरीफलोग यहा आनकर सकुनत इख्तियार करते है, मुल्कआसाममे–ढाकेमें– –दार्जिलिंगमे--और--कुचविहारमे–जैनोकी आवादीभी है, मगर थोडी, कलकत्तेसे अगर कोइ यात्री रंगुन जानाचाहे ष्टीमरमें जा-सकते है, किराया थर्डकलास पासेजरका रुपये (१०) लगते है, रंगुनमें जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी और मंदिर वनाहुवा है, चावलकी पैदाश ज्यादह–और तिजारतकी जगहहै.

कलकत्तेसे यात्री इष्टरन वंगाल स्टेटरेलमें सवारहोकर–स्यालदा–डमडम–वेलगुरिया–अगरपारा–सोदेपुर–खरडाहा तीताघर–वराकपुर–पालता–इछापुर–सामनगर--कनकीनरा--नयहाटी–हाली शहर–कचरापारा–मदनपुर–सीमुराली–चकदा–प्यारांडग–रानाघाट–वीरनगर–वदकुला–कृष्ननगर--धुवुलिया–मुरागचा--वेधुआधरी–डेवाग्राम–प्लासी–राजीनगर–वेलदगा–भापता–सेरागची –वरहाम-पुर–और कासिम वजार टेशन होते–मुर्शिदावाद उतरे, रैलकिराया एकरुपया पोनेदसआने लगते है,—

☞ [तवारिख–शहर–मुर्शिदावाद,–]

मुल्क वंगालमे–मुर्शिदावाद एक उमदा शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमें मुर्शिदावादकी मर्दुमशुमारी (३९५७८) मनुष्यांकीथी, मुर्शिदावाद पेस्तर वडाशहरथा, मकान वडेआलिशान रंगदार और खुवसुरत वनेहुवे, निझामतकालेज वडीलागतका मकान– और–मोतीझील-एक–कावि्ल देखनेकी जगहह, रेशमीकपडे–रुमाल

सदरमुकाम गोहाटी एक छोटासा कस्वाहै, जो ब्रह्मपुत्रानदीके दखन कनारेपरवाके है, आवादी इसकी (१०८१७) मनुष्योंकी-और इसके आगे (२) मीलकेफासले कामाख्या पहाडीपर एक-कामाक्षा-देवीका मकानहै, जिलेकामरूपकी शुमालतर्फके हिस्सोंमें-हाथी--चीता-भालु-और-वडे हिरनवगेरा ज्यादह होते है,-हरजगह जंगलोंमे मोर-तोते-वगेरापरीदे द्रख्तोंपर कलोले करतेरहते है, और उनकी मीठीमीठी अवाजोसे आदमीयोंकी तवीयत खुशहुवा करती है, मुल्कआसाममें ब्रह्मपुत्रा नदीके दखनकनारे ग्वालपाडा एक छोटाकस्वाहै, लखीमपुर-डिब्रुगढ-तेजपुर वगेरा औरभी कस्वे इसमें आवादहै, तेजपुरसे डिब्रुगढतक रास्तेमें वहुतसेचायके वाग फैलेहुवे है,

सुवेवंगालमें नारायणगंजसे (१०) मील पश्चिमोत्तर जिलेका सदरमुकाम-ढाका-एकअछा शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवख्त ढाकेकी मर्दुमशुमारी (८२३२१) मनुष्योंकीथी, मलमल ढाक्केकी हरेकमुल्कमें मशहूर सोनेचांदीका काम यहांका लाइकतारीफके-और-कसीदेकाकाम-दोरियाजामदानी यहां उमदावनाइजाती है, वगालमें तोरसानदीके नजदीक कुचविहार एक अछा शहरहै, आवादी इसकी सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त (११४९१) मनुष्योंकीथी, एक सडक रगपुरसे-कुचविहारहोकर जल्पाइगोडीकों गइहै, सुवे वंगालके राजशाही विभागमें सिलीगोडी-टेशनसे (५१) पश्चिमोत्तर दार्जिलिग एक-खुशनुमाशहर और रैलका टेशनहै, सिलीगोडीटेशनसे दार्जिलिंग-हिमालयकी छोटी-लाइन-पहाडके एक छोटे शिखरकी अतराफ घुमती हुइगइ है, भोटीया-तिव्वती-नयपाली-कावुली कश्मीरी-पहाडी--और--हिंदुस्थानीलोग यहां वसते है, वाजार गुलजार-और-इतवारकेरोज

ाका हुकुम वहुत रहताहै, चायकी पैदाश–ज्यादह–पहाडियोमें
फा–और उची उची पहाडीयोमें तेंदुए-भालु–और–वडे हिरनभी
रते है, आवहवा यहाकी उमदा और गर्मीकेदिनोमें शरीफलोग
आनकर सकुनत इख्तियार करते है, मुल्कआसाममें–ढाकेमें–
र्जेलिंगमें--और--कुचविहारमें–जैनोकी आवादीभी है, मगर
, कलकत्तेसें अगर कोइ यात्री रंगुन जानाचाहे ष्टीमरमें जा-
है, किराया थर्डकलास पासेजरका रुपये (१०) लगते है,
ं जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी और मंदिर वनाहुवा है,
ल्की पैदाश ज्यादह–और तिजारतकी जगहहै.

कलकत्तेसे यात्री इष्टरन वगाल स्टेटरेलमें सवारहोकर–स्या-
-डमडम–वेलगुरिया–अगरपारा–सोदेपुर–खरडाहा तीताघर–
पुर–पालता–इछापुर–सामनगर--कनकीनरा--नयहाटी–हाली
-कत्रपारा–मदनपुर–सीमुराली–चकदा–प्याराडंग–रानाघाट–
ार–वदकुला–कृष्ननगर--धुवुलिया–मुरागचा--वेथुआधरी–
म–प्लासी–राजीनगर–वेलदगा–भापता–सेरागची–वरहाम-
ौर कासिम वजार टेशन होते–मुर्शिदावाद उतरे, रेलकिराया
या पोनेदसआने लगते है,—

☞ [तवारिख–शहर–मूर्शिदावाद,–]

ुल्क वगालमें–मुर्शिदावाद एक उमदा शहरहै, सन (१८९१)
ुमशुमारीमें मुर्शिदावादकी मर्दुमशुमारी (३९५७६) मनुष्यों-
मुर्शिदावाद पेस्तर वडाशहरथा, मकान वडेआलिशान रग-
ौर खुवसुरत वनेहुवे, निझामतकालेज वडीलागतका मकान–
ोतीझील-एक–काविल देखनेकी जगहहै, रेशमीकपडे–रुमाल

सदरमुकाम गोहाटी एक छोटासा कस्वाहै, जो ब्रह्मपुत्रानदीके दखन कनारेपरवाके है, आवादी इसकी (१०८१७) मनुष्योंकी-और इसके आगे (२) मीलकेफासले कामाख्या पहाडीपर एक-कामाक्षा-देवीका मकानहै, जिलेकामरुपकी शुमालतर्फके हिस्सोंमे-हाथी--चीता-भालु-और-वडे हिरनवगेरा ज्यादह होते है,-हरजगह जंगलोमे मोर-तोते-वगेरापरींदे द्रख्तोपर कलोले करतेरहते है, और उनकी मीठीमीठी अवाजोसे आदमीयोकी तवीयत खुशहुवा करती है, मुल्कआसाममें ब्रह्मपुत्रा नदीके दखनकनारे ग्वालपाडा एक छोटाकस्वाहै, लखीमपुर-डिब्रुगढ-तेजपुर वगेरा औरभी कस्वे इसमें आवादहै, तेजपुरसे डिब्रुगढतक रास्तेमें वहुतसेचायके वाग फैलेहुवे है,

सुवेवंगालमे नारायणगंजसे (१०) मील पश्चिमोत्तर जिलेका सदरमुकाम-ढाका-एकअछा शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवख्त ढाकेकी मर्दुमशुमारी (८२३२१) मनुष्योंकीथी, मलमल ढाक्केकी हरेकमुल्कमे मशहूर सोनेचांदीका काम यहांका लाइकतारीफके-और-कसीदेकाकाम-ढोरियाजामदानी यहां उमदावनाइजाती है, वंगालमें तोरसानदीके नजदीक कुचविहार एक अछा शहरहै, आवादी इसकी सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त (११४९१) मनुष्योकीथी, एक सडक रगपुरसे-कुचविहारहोकर जलपाइगोडीकों गइहै, सुवे वंगालके राजशाही विभागमें सिलीगोडी-टेशनसे (५१) पश्चिमोत्तर दार्जिलिंग एक-खुशनुमाशहर और रैलका टेशनहै, सिलीगोडीटेशनसे दार्जिलिंग-हिमालयकी छोटी-लाइन-पहाडके एक छोटे शिखरकी अतराफ घुमती हुइगइ है, भोटीया-तिव्वती-नयपाली-कावुली कश्मीरी-पहाडी--और--हिंदुस्थानीलोग यहा वसते है, वाजार गुलजार-और-इतवारकेरोज

स्वामीके कानोमेंसे कीले खरकनामके हकीमने यहापर निकालेथे, जोलोग कहतेहै-यह-माजरा-करीब तीर्थ वंभणवाड मुल्क मारवाडमें-गुजराथा यहबात बिल्कुल गलतहै, तीर्थंकर महावीर स्वामीने अपनी छदमस्थ हालतमें मुल्क मारवाड तर्फ सफर कभी नहीकिइ.

☞ (पाठ कल्पसूत्रमें सबुत इसका इस तरह लिखाहै,)

ततःषण्मानिग्रामे स्वामिनः बहिः प्रतिमास्थस्य पार्श्वे गोपो वृषान् मुक्त्वा ग्रामप्रविष्टः आगतश्च पृच्छति देवार्य ! क्वगता वृषभाः भगवताच मौनेकृते रुष्टेनतेन स्वामिकर्णयोः कटशिलाके तथाक्षिप्ते यथापरस्परलग्नाग्रे-अग्रछेदनाच अदृश्याग्रेजाते,-एतचकर्म शय्यापालकस्य कर्णयो स्त्रपूप्रक्षेपेण त्रिपृष्टभवेउपार्जितं अभूत्-उदितंच वीरभवे, शय्यापालको भवंभ्रांत्वा अयमेव गोपःसंजातः-ततःप्रभुर्मध्यमा पापायांगतः तत्र प्रभु सिद्धार्थवणिग्गेहे भिक्षार्थं आगतंनिरीक्ष्य खरक वैद्यः स्वामिनः सशल्यं ज्ञातवान्-पश्चात्-स-वणिक् तेन वैद्येन सहोद्यानं गत्वा सडासकाभ्यां ते-शिलाके निर्गमतिस्म, तदाकर्षणेन वीरेण आराटिस्तथामुक्ता यथा सकलमपि उद्यानं महाभैरवं बभूव, तत्रदेवकुलमपि कारित लोकैः प्रभुश्च संरोहिण्या औषिध्या निरोगो-बभूव,-वैद्यवणिजौ स्वर्गं जग्मतु-गोपः सप्तमंनरकं,

जब तीर्थंकर महावीरस्वामी षणमानी गावके नजदीक ध्यानकरतेथे एक गोवालिया वहांआया, और कहनेलगाकि-इनबेलोके निगाहवान आपरहिये, में-एक-जरुरी कामके लिये गावमें जाताहु तीर्थंकर महावीरस्वामी अपने ध्यानमे मशगुलथे उनोने उसकाकुछ जवाब-नही-दिया. और गोवालिया अपने बेलोको इनके पास छोडकर चलागया, बादजब चढअर्सेके वापिस आया और देखातो

कारचोवीका काम–और–हाथीदांतका काम यहां अछा वनताहै, महल नवावसाहवका वेशकीमती और खुशनुमा वनाहुवा निहायत संगीनहै, दरमियान अजिमगंज और मुर्शिदावादके गंगानदी वहती है और वजरीये नावके पार जानाआना होताहै जैनश्वेतांवर श्राव-कोके घर करीव (१५०) और–मंदिर–अजीमगंजमे (७) राम वागमें (२) कुल्ल नवहुवे. वालुचरमे मंदिर (४) कीर्तिवागमें (१) महिमापुरमें (१) कठगोलेमें (१) और–कासीम वाजा-रमेभी (१) वना हुवाहै, उपाश्रय अजीमगंजमे (६) और–वालुचरमें (४) है, ठहरनेकेलिये अजीमगंजमे करीव टेशनके धर्म-शाला वनीहुइहै, यात्री उसमे कयाम करे, और जैनमंदिरोंकी जि-यारतकरे,–रवानगीके वख्त अजीमगंज–टेशनसे–रैलमें सवारहोकर वराला–सागरडीघी–वोखरा–लोहापुर–ताकीपुर–नलहटी–रामपुर-हाट–मोलारपुर–सेंथिया–कोरी–सूरि–चीपाइ–डुवराज–पंचरा–पां-डवेश्वर–उखारा–ओंडल–रानीगंज–और–काली पहाडी होते आस-नसोलजंकशन आना. रैलकिराया एकरुपया–सातआने,–सुवे वं-गालके–जिले वर्द्धमानमें आसनसोल एक गुलजार वस्ती है, वाजा-रमे हरेकाकिसमकी चीजे मिलसकेगी,–इंझीनका वडा कारखाना और अतराफ आसनसोलके कोयलेकी खानेभी मौजुदहै,

☞ परिसह तीर्थंकर महावीरस्वामीके,

संवत (१७५०) की सालमे जैनश्वेतांवरमुनि सौभाग्यविजय जीने–जो–तीर्थोंकी सफर करके तीर्थमालानामकी पुस्तक वनाइ है उसमे यहलिखाहैकि हमने–तीर्थ भदीलपुरकी जियारत किइ और पुनायागाव गये, जहाकि–तीर्थंकर महावीरस्वामीके कदमोंकी छत्री वनीहुइथी और उसमे उनके कदम तख्तनशीनथे, तीर्थंकर महावीर

कदम–और–छत्री जेरेजमीन होगइ, कदमभी नहीरहे और तीर्थ वीछेद होगगा, ए ! नाजरीन " एसीजगहपर तीर्थकी तरक्की जानोमालसे करनाचाहिये, चुनाचे वाजेलोगोने वडेवडे तीर्थोंमे रुपया खर्चकर वडेआलिशान मदिर वनवाये मगर ऐसे तीर्थोंमे तरक्की करना लायक तारीफके है,

तीर्थंकर महावीर स्वामीके पावकों जिसजगह चडकोसिया–सांप–डसाथा–यह–माजराभी मुल्क पुरवमे हुवाथा, जोलोग कहते मुल्क मारवाडमें करीव नादिया गावके यह माजरा गुजराथा बिल्कुल गलत है, वल्कि ! कनखल कस्बेके पास तीर्थंकर महावीर स्वामीके पावकों चडकौशिये सांपने काटाथा, कल्पसूत्रमें पाठहैकि–

☞ " ततो विहरन् श्वेतव्यां गछन्–जनैर्वार्यमाणोपि कनकखलतापसाश्रमे चंडकौशिक प्रतिवोधाय गतः " –सचप्रभुं दृष्ट्वा दृष्ट्वा दृष्टिज्वालां मुमोच–मुक्त्वाच मापतन्नयं–मां–आक्रामतु इत्यपसरति ततोभृश क्रुद्धो भगवंतं ददंश,

तीर्थंकर महावीरस्वामी सफर करते हुवे जव श्वेतावी नगरी तर्फ जातेथे लोगोने कहा आप इधर तशरीफ–न–लेजाइये, उधर एक वडा जहरीला साप रहता है, मुआदा ऐसा–न–होकि–आपकों डस जाय, तीर्थंकर महावीर स्वामीने इसवातका कुछ खयाल नहीं किया और उसी तर्फकी राह लिइ, जहा उससापका हुदथा, उसजगह जाकर कयाम किया और ध्यान करने लगे, इस असनामे साप आपने हुदसे वहार निकल आया और देखाकि–कोइ महात्मा खडेहै, गुस्सा होकर उनकी तर्फ आया, उसके दिलमे यहभी खयाल आया रहताथा–कहीं–ये–महात्मा मुजपर–न–गिर पडे, जिससे–मैं–दव जाउ, इसवजहसे कुछ पीछेभी हटता जाताथा, तीर्थंकरमहावीर अपने ध्यानमें निहायत सावीत कदमथे, सापने आखीरकार न ?

बेलोकों-न-पाया. क्योंकि-वे-जंगलको चलेगयेथे, तीर्थंकर महावीरसे दर्याफ्त करने लगाकि-मेने-बेलोको आपके जेरेजिम्मा कियाथा-कहांगये ? तीर्थंकर महावीरने उसवख्तभी कुछजबाव नहीं-दिया, तब उसने गुस्साखाकर लकडेकी-दो-मेखे--उनकेकानमें लगादिइ. तीर्थंकर महावीर स्वामीके जीवने-जो-त्रिपृष्ठवासुदेवके जन्ममें शय्यापालके कानोंमें गर्म कथीर डलवादियाथा-वह-कर्म इन्नजन्ममें उनके पेशआया, गोंवालिया बेलोकी तलाश करताहुवा अपने वतनको गया. और तीर्थंकर महावीर स्वामी वहांसे रवाना होकर मध्यम अपापानगरीको गये, वहां एक-सिद्धार्थनामके-साहुकारका घरथा उसकेघर जबभिक्षाको जातेथे एक-खरकनामके-हकीमने देखाकि-इनके कानोंमें कुछ तकलीफसी मालूम देती है, जब खुबगोरसे देखातो मालूमहुवा किसीने इनके कानोंमें-मेखे-लगादिइहै, हकीम-खरक-और-साहुकार सिद्धार्थने सलाह किइकि किसीसुरत मेखे उनके कानोंसे निकालदेना चाहिये, तीर्थंकर महावीरस्वामी भिक्षालेकर जब जंगलकीतर्फ रवानाहुवे-हकीम और साहुकार चंदनोकरोंको अपने हमरालेकर उनके पीछे गये,-और मेखे निकालनेकी तजवीज किइ, बडी कोशिशकेसाथ संडासीयोसे-खीचकर मेखे बहार निकाली,-उसवख्त तीर्थंकर महावीर स्वामीकों अजहद तकलीफ हुइ. हकीम खरकने उसीवख्त संरोहिणी जडीका लेपलगाकर जखमकों चगाकरदिया. इस उमदाकार रवाइ से हकीम और साहुकारने बहिस्त पाइ, और गोवालियेने अपने कियेकी सजा दोजक पाया, उसवख्तसे-यह-जगह तीर्थगाहबनी और मंदिर बनायागया, तीर्थमालाके बनानेवाले महाराज सौभाग्यविजयजी फरमाते हैं जबकि-हमने-जियारतकिइथी तीर्थंकर महावीरस्वामीके कदमोकी छत्री यहांपर कायमथी, और पुनायगामसे राजग्रही नगरी (११) कोशके फासलेपर वाकेथी, आजकल वह

पुरतक एक रुपया छआने लगते है, चक्रधरपुरसे-लोटापहाड-सो-नुआ-गोइलकेरा-पोसोइटा-मनहरपुर-जरायकेला-विसरा-रोवर-केला-पनपोश-कालुगा-राजगगपुर-सोनखा-गारपोश-बामरा-धरुआडीही-बागडेही-धुतरा-झाड सोगरा-चक्रधरपुरसे झाडसोगरेतक रैल किराया एक रुपया पोनेपाच आने-लगेगे, झाडसोगरासे-बेलप-हाड-कानीका-जमगा-रायगढ-नाहारपाली-खरसिया-शक्ति-बा-राडोर-चंपा-नेला-अकलतरा-और-पाराघाट होते बिलासपुर जाना, झाडसोगरासे यहांतक रैल किराया एक रुपया सवापाच आने लगते है,

आसनसोलसे (३११) मील पश्चिम दखन तर्फ जिलेका सदर मुकाम बिलासपुर एक-रैलवेका जंकशन है, सन (१८९१)की मर्दुमशु-मारीके वख्त बिलासपुरकी मर्दुमशुमारी (११११२) मनुष्योंकीथी, बिलासपुरसें (१९८) मीलकी रैलवे लाइन पहाडी जिले और उमरि-याके कोयलेके मैदान होकर कटनी जकशनको गइहै. बिलासपुरसे (६३) मील उत्तरकी तर्फ पेंड्रारोड-और-पेंड्रारोडसे (१३९) मील पश्चिमोत्तर रुखपर कटनी है,-पेंड्रारोडसे (७) मीलपर अमरकंटकके शिखरोका सिलसिला जहासे नर्मदा नदी निकलीथी मौजूद है. जिले बिलासपुरके पूरव पश्चिम-और-उत्तरकी तर्फ पहाडी और बहुतेरे जंगलहै, अनाज-ऊख-और-रुइकी पैदाश यहां अछी होती है,-बिलासपुरसे रैलमें सवार होकर-बिल्हा-निपानिया-भाटपाडा-ह-टवध-तीलदा सिलियारी-मढर-होते-रायपुरजकशन आना, बि-लासपुरसे रायपुरतक रैलकिराया सवाग्यारह आने लगेगे यात्रीकों अगर रायपुरमें जाना मजूर हो [illegible] आगेकों बढे,

आनकर उनके पांवकों डसा, मगर उनके वदनमें जहर नही चढा, वल्कि ! उनोंने सांपको हिदायतकिःकि-हे ! चंडकोसिया सांप ! जव-तुं-पीछले जन्म साधुकी हालतमे था तेने वहुत क्रोध कियाथा अव-तुं-सांप वना है, अव तेरी गुस्सेकी हालत दरगुजर कर और धर्मपर निगाह वांध, इसवातको सुनकर चडकोसिये सांपने अपना होश संभाला, और उसकों जातिस्मर्णज्ञान हासिल हुवा, यह-माजराभी-मुल्कपूरवमें गुजराथा, मारवाडमें नही, कनखलनामका कस्वा इसवख्त हरिद्वारसे (३) मीलके फासलेपर गंगाके दाहनेकनारे आवाद है, आजकल वहा इसवातका-कोइ निशान वाकी नही रहा.

पूरवके तीर्थोका वयान खतमहुवा-इसमुल्कमें पानीकी वहुतायत रहनेकी वजहसे-अनाजकी फसले अछी होती है, खानपान वोलचाल और पुशाक उमदा-तीर्थकरोकी निर्वाणभूमिहोनेसे पेस्तर यहां जैनधर्मकी वडी तरकीथी, वडेवडे जैनश्वेतांवर मदिर-मूर्त्ते-और-जैनमजहवकी किताबे यहांपर मौजुदथी, चक्रवर्तीराजे जिनके पास वेशुमार दौलत-और-जवाहिरातथा यहाहुवे, धन्ना-शालिभद्र और जंबुस्वामी जैसे धर्मपावंद शख्श इसी मुल्कके वाशिंदेथे; आनंद-कामदेव-वगेरा व्रतधारी श्रावक इसी मुल्कमें पैदाहुवे. तीर्थकरोंकी निरवाण भूमिहोनेसे जैन तीर्थभी इस मुल्कमें ज्यादह है,-

☞ [वयान-शहर-विलासपुर,]

आसनसोलसे रैलमे सवार होकर-दामोदर-मुरुलिया-मुराडी -रामकनली-खजुरा-चीनपीना-आडरा-अनारा--कुस्टार-पुरुलि-या-कंदाडीह-गारभोम-नीमडीह-चांडिल--कांडरा-*सीनीजंकशन-अमदा-वाराबंवो-चक्रधरपुर, रैलकिराया आसन सोलसे चक्रधर-

* यहांसे एक रैलवेलाइन खडगपुर होकर कलकत्तेकों गइ है,

ादा हो-तो-वहां उतरना, वरना ! आगेको बढना, सन (१८९१)-
 मर्दुमशुमारीके वख्त कामठीकी मर्दुमशुमारी मयफौजी छावनीके
३१५९) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी और
दिर यहा मौजूद है, सडके लवी चोडी-बाजार उमदा-और-जो
चीज दरकारहो वखूबी मिलसकती है, कामठीसें रैलमें सवार हो-
र-मेंदीवाग-होते नागपुर टेशन उतरना, रायपुरसे नागपुरतक
 किराया एक रुपया पनराआने लगते है,-

☞ [दरवयान-शहर-नागपुर,-]

अक्लीमें हिंदमें मध्यप्रदेशका सिरोताज नागपुर-एक उमदा
रहै. करीब इसके नागनामकी एकनदी वहती है जिसकी वजहसे
रका नाम-नागपुर-कहलाया, सन (१८९१) की मर्दुमशु-
रीके वख्त नागपुरकी मर्दुमशुमारी मय फौजी छावनीके (११-
०१४) मनुष्योंकीथी, इतवार पेठमें जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी
जादी और मदिर वनेहुवे है, करीव टेशनके धर्मशालाभी तामीरहै
त्री उसमे कयामकरे, और शहरमे जाकर मदिरोकी जियारतकरे,
जार लंवाचोडे-और-हरकिसमकी चीजे यहापर मिलसकेगी,
नीका नल-हरजगह-जारी, और रातको सडकोंपर लालटेनोकी
शनी हुवाकरती है, इक्का-वगी-हरजगह तयारमिलेगी, वागवगी-
में महाराजवाग एक काबिल देखनेके है, जिसमें कइत
के जानवर चुनाचे-वाघ-भाल्लु-वदर-हिरन-और-कइ किसमके
ोटेभी रखेहुवे है, कचहरिया-स्कुल-और-कइ कल कारखाने
ा मौजूदहै, नागपुरकी-नरगी निहायत मीठी-रगदार-
ती है और कइमुल्कोमें भेजी जाती है. अनाज और
गिरी ज्यादह-नागपुरी धोतीजोडे
-पैदलसडक-जवलपुरको और एक

☞ (बयान-शहर-रायपुर,)

बिलासपुरसे (६८) मील-पश्चिमदखन-मध्यप्रदेशके छत्तीस-गढ विभागमे जिलेका सदरमुकाम-रायपुर-एक रैलवेका टेशनहै, टेशनसे करीब (१) मीलके फासलेपर आबादी शुरुहोगी, एक-सडक-नागपुरसे रायपुर-संभलपुर-और मेदनीपुरहोकर कलकत्तेकों गइहै. सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवख्त-रायपुरकी मर्दुमशुमारी मयफौजी छावनीके (२३७५९) मनुष्योंकीथी जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और मंदिर यहांपर बनाहुवा है, गोलचोकसे दखनकी तर्फ (२) मीललंबी पकी-सडक-जिसके बगलोंमें मकान-और कपडे-वर्तन वगेराकी दुकाने मौजुदहै-पानीकानल हरजगह लगाहुवा और बडी सडकोंपर लालटेनोंकी रौशनी हुवा करती है. दिवानी फौजदारी कचहरिया-और-अस्पताल वगेरा यहांपर अछे मकानात है. और जिले रायपुरकी बडी बडी फसिले अनाजकी है, रायपुरसे रैलमे सवार होकर-कुंभहरी-भिलाय-डुग-मुरीपुर-होते राजनांदगाव आना. अगर मरजी होतो शहरमेजाना और देखना, न-जाना होतो आगेको रवाना होना, रायपुरसें (४२) मील पश्चिम तर्फ राजनांदगाव-एक-रेलवे टेशन है. सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त राजनांदगांवकी मर्दुमशुमारी (८८५०) मनुष्योंकीथी,-जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और मंदिरभी यहांपर मौजूद है. दरमियान शहर-और-टेशनके सडक बनी हुइ है, राजमहल--कचहरियां--और-स्कुल--वगेरा मकानात कींमती बने हुवे है, राजनांदगावसे रैलमे सवार होकर-मुसरा--डोंगरगढ-बोरतालाव -दरेकासा--सलेकासा-आमगाव-गुडमा-गोंदिया-गंगाझीरी-तीरोरा-तुमसररोड-कोका-भडारारोड-खट--परसा-और-सलवा होते कामठी जाना. अगर कामठी देखनेका

-पुर-कोटेपुरना--बोरगाव--और--पावलखेड टेशनहोते आकोला टेशन उतरे,-नागपुरसे आकोलेतक रैलकिराया दोरुपये सातआने लगते है,—

(बयान आकोला-और-बालापुर,)

मुल्केबराडमें जिलेका सदरमुकाम आकोला एक रैलवेका टेश नहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त आकोलेकी मर्दुमशुमारी (२१४७०) मनुष्योंकीथी. दरमियान शहर और पेठके मोरना नामकी एकनदी बहती है. और उसपर जानेआनेके लिये पुल बधाहुवाहै, बाजारमें हरकिसमकी चीजे मिलसकेगी. हफतेमें एक दफे बाजारभी भराकरताहै. जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और मंदिर ताजना पेंठमें मोजुदहै, यात्री वहाजाकर मदिरकी जियारत करे, सरकारी कचहरियां टाउनहोल-और-खेराती अस्पताल वगेरा मकानात बनेहुवेहै, आकोलेसे तीर्थ अंतरिक्षजी जानेवाले यात्री बजरीये बेलगाडीके जासकतेहै, जो करीब (२२) कोसके फासलेपर वाकेहै, रास्तेमें सडकपकी बनीहुइ पांच रोजमें तीर्थकी जियारतकरके वापिस आसकोगे.—

अगर कोइ यात्री आकोलेसे आगे-डाबकीटेशन होत-पारस टेशन उतरकर बालापुरसे तीर्थ अतरिक्षजीको जाना चाहे-तोभी-जासकते है, पारस टेशनसे करीब (३) कोशके फासलेपर बालापुर एकपुराना शहरहै, दरमियान-पारस-और-बालापुरके पकी सडक बनी हुइ-और-दो-नदीये रास्तेमें आती है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त-बालापुरकी मर्दुमशुमारी (१०२५०) मनुष्यांकीथी, तिजारत रुइकी यहा अच्छी होती है, और शनिवारके रोज बाजारभी जमा होता है, हरकिसमकी चीजें उसरोज मिल सकेगी,

कलकत्तेकोभी गइहै, नागपुरकी उत्तरी सरहदपर-और-दखनपश्चिमकी रुखपरभी पहाडोका सिलसिला जारी है, एक सिलसिला उत्तरसे दखनकोंभी चलगया, ये-तीनो-सिलसिले सतपुडे पहाडके हिस्से कहलाते है, यात्री नागपुरके जैनमंदिरोकी जियारत करके आगेको रैलमें सवारहोकर--खपरी--वोरी-वोरखेडी--सिंदी--तुलजापुर-और-पौनार टेशन होते-वरधा टेशन जाय, नागपुरसे (४९) मील पश्चिम मील दखनकी रुखपर जिलेका सदरमुकाम वरधा एक छोटासा कस्वा है, इसकी आवादी अंदाज (६) हजार मनुष्योंकी होगी, रुइकी तिजारत यहां कसरतसे हुवाकरती है, कस्बेकी पूर्वरुखपर सरकारी-कचहरियां-और-पब्लिकवाग वनाहुवा है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मंदिरभी यहांपर तामीरहै, यात्री दर्शनकरे, वरधेसें रैलमें सवारहोकर-दहेगांव-पुलगाव-तालनी-धामनगांव-ढिपोर-चांदुर-मालखेड-और-अंजनगावहोते वडनेरा जकशन जाय,

☞ (दरवयान-शहर-उमरावती)

वडनेरासे उत्तरतर्फ (६) मीलके फासलेपर-जो-एक रैलवे लाइन गइहै उसजगह शहर उमरावती वाके है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त उमरावतीकी मर्दुमशुमारी मय फौजीछावनीके (३३६५५) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदीर यहांपर वना हुवा है. यात्री शहरमे जाकर दर्शनकरे, उमरावती एक-पुराना शहर है, और इसके दो-हिस्से-मशहूरहै, एक कस्वा-दुसरा पेंठ-वाजार गुलजार और जिसचीजकी दरकारहो यहांमिलसकेगी, रुइकी तिजारत यहा ज्यादह होती है. अतराफ शहरके मजवुत पथरोकी दिवारवनी हुइ-जिसमें-(५) फाटक-और (४) खीडकीयें लगीहुइहै.-यात्री-उमरावतीसे वापिस वडनेरा जंकशनआवे, और वडनेरासे-तकली-कुरम-मान-मूर्त्तिजा-

सबब्न यहां उनोने वालुरेत इकठी करके मत्रबलसे पाककिइ और विंतीर्थकर पार्श्वनाथ महाराजकी एक मूर्त्ति बनाइ; और उसकी ताकरके खानाखाया, चलतेवख्त उस मूर्त्तिको तालावके कनारे यिनशीनकिइ और अगाडी वढे, वहुतअर्सेतक वह मूर्त्ति वहांपर यमरही, जब विंगलनगरका-श्रीपालनामका राजा-किसीमोके-से-वहांआया, और उसके वदनमें-जो-कोढकी वीमारीथी उसता-वमें स्नानकरनेसे रफाहुइ निहायत खुशहुवा. और जब-अपने तनको गया रानीभी उसकी वहुत खुशहुइ, और तारीफ करने गीकि-क्याही ! उमदावातहुइ आपकी कोढवीमारी एकदम चली-इ, वादजब खापीइकर सोगये- अधिष्ठायक देवने रानीके ख्वावमें-नकरका तुमारे खाविंदकी वीमारी वदोलत उसमूर्त्तिके रफाहुइ, उसमूर्त्तिको अपने वतनपर लाना चाहोतो एक रथ वनाकर-सको सातरोजके वेलुलगाना और कचे सूतकी लगाम- तयार-कर-के-उस मूर्त्तिको रथमें वेठाना, और अपने वतनको लाना मगर-दरहे रास्तेमें कभी पीछामुडकर देखनानही, अगर देखोगेतो मूर्त्ति-हीं ठहर जायगी, और फिर उसका आना-न-होसकेगा, शुभह-ते रानीने यह सब माजरा राजासे कह सुनाया और राजाने उ-मुआफिक किया, (यानी) मूर्त्तिको रथमे वेठाकर लेचले, व थोडीदूरपहुचे राजाने मुहफेरकर देखातो मूर्त्ति रथसे अलग स्मानमे विना आधार आसरेके ठहरीहुइ देखी, उसवख्त वडाता-ज्जुबकिया और दिलमें सोचाकि-इसी-जगह-मूर्त्तिको कायमकरना नासिवहै,-आस्मानको सस्कृत जवानमें अतरिक्ष कहते है इसलिये ना-आसरेके ठहरने वाली मूर्त्तिको लोगोने अंतरिक्षनामसे मशहूर-किया; राजाने वहांपर शहरआबाद किया और उसकानाम-श्रीपुर-ता; वडाखुबसुरत मंदिर बनाकर मूर्त्तिको उसमे तख्तनशीनकिइ.

गालिचे-शतरंज-और-पघडी यहां अछी वनाइ जाती है, टेलीग्राफ औफिस-स्कुल-अस्पताल और पोस्टऑफिसभी यहां मौजूद है, जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर अंदाजन (७५)-और-(२) जैनश्वेतांवर मंदिर जिसमे एक मंदिर-जो-तपगछवालोकी तर्फसे नयातामीर किया गया है काविल देखनेके है, मुतस्सिल उसके तपगछवालोंकी धर्मशालाभी वनी हुइ है, जहांकि-आये गये यात्री और मुनिलोग ठहरा करते है, वालापुरसे तीर्थ अंतरिक्षजी करीव (१८) कोसके फासलेपरवाके है, जैसे आकोलेसे पकी सडक गइ है वालापुरसेभी उसीतरह गइ है, जोकि-नजदीक कस्बे पातुरके जाकर मिल जाती है, यात्रीको मरजी हो वालापुरके रास्ते तीर्थ अंतरिक्षजी जाय-या आकोलेसे-इख्तियारपर मौकुफ है,-जितना खर्चा-आकोलेसे प-डेगा वालापुरसेभी उतनाही पडेगा.

☞ (तवारिख-तीर्थ-अंतरिक्षजी.)

मुल्कवराडमें आकोला टेशनसे (२२) कोसके फासलेपर कस्बे श्रीपुरमें-अंतरिक्षजी-एक पुराना जैन तीर्थ है, आकोलेसे-इका-वेलगाडी वगेरा सवारी मिलसकती है, तवारिख इसतीर्थकी इसत-रह वयान किइजाती हैकि-एकवख्त लंकाके रहनेवाले-दो-विद्याध र-माली-सुमालीनामके लकासे उत्तराखंड जानेकेलिये रवानाहुवे, विद्याधरलोग वजरीये विमानोंके सफरकियाकरतेथे, यह वात पेस्त रके धर्मशास्त्रोंमें लिखीहुइहै, जव उनके खाना खानेका वख्त करीव आपहुचा सोचाकि-जमीपर उतरकर- स्नानकरे और खानाखावे. गरजकि-वे-जमीनपर उतरे जहांकि-एक-तालाव मौजुदथा, माली सुमाली-हाथमुह धोकर साफहुवे और अपनी देवपूजाकेलिये तज-वीजकिइ-तो-मालूमहुवा अपने देवकी मूर्तिका करडिया घर भुले आये है,और यहांकोइ जिममदिरभी मौजुदनही जिसके दर्शनकरे,

पुरसे (२४४) मील पश्चिमकी रुखपर भुसावल रैलवेका एक जंक्शन है, सन (१८९१) की मर्दुम शुमारीके वख्त भुसावलकी मर्दुमशुमारी (१३१६९) मनुष्योंकीथी, मुतस्सिल टेशनके एक धर्मशाला बनी हुइ है यात्री उसमे जाकर ठहरे, कोइ गुमानियत नही, बाजार भुसावलका अछा है और हरेकिसमकी चीजे यहां मिल सकती है, भुसावलसे (२७६) मील दखन पश्चिमकी तर्फ बबइ–और –(३४०) मील पूर्वोत्तर जबलपुर है, भुसावल टेशन बडा है और कइ–कल–कारखाने यहांपर बने हुवे है,–

भुसावलसे रैलमें सवार होकर–दसखेडा–सावदा–नीभोरा–रावेर–और–वाघोडा होते हुवे बुर्हानपुर टेशन जाना, रैलकिराया नवआने लगते है, टेशनसे (३) मीलके फासलेपर बुर्हानपुर–एक–पुरानाशहर है, सडक पकी बनी हुइ और जाने आनेके लिये सवारी टेशनपर तयार मिलती है, यात्रीकी मरजी हो शहरमें जाय और जैन मदिरोकी जियारत करे, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त बुर्हानपुरकी मर्दुमशुमारी (३२२५२) मनुष्योकीथी. बाजार यहांका उमदा–और–हरेक किसमकी चीजें यहां मिलसकती है, बुर्हानपुरसे रैलमें सवार होकर–चुलखान–चांदनी–मांडवा–डोंगरगाव–और–बागमारटेशन होते खडवा जकशनपर उतरना, बुर्हानपुरसें खंडवेतकका रैलकिराया दशआने लगते है, मध्य प्रदेशमें –खंडवा–एकपुराना शहर है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमें खंडवेकी मर्दुमशुमारी (१५५८९) मनुष्योकीथी, करीब टेशनके धर्मशाला बनी हुइ है यात्री उसमें कयाम करे और मरजी हो–तो–शहर देखे, बाजार उमदा और हरेकचीज यहांपर मिलसकती है, जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी यहांपर मौजूदहै, खडवेसे रैलमे सवार होकर–अजटी–अटार–निमारखेडी–सनावद–मोरटाका–बर

उसरोजसे इसकानाम-अंतरिक्षपार्श्वनाथतीर्थ कहलाया-जो-अबतक जारी है, पेस्तरके जमानेमें मुर्त्तियोंमें ऐसे अजुवात होतेथे-जो-आजकल नहीरहे, बल्कि! बहुतकम होगये, क्योंकि-अब-वह-जमाना नहीरहा जो पेस्तरथा,

तीर्थोंमें यह कदीमीरवाज होताचला आयाकि-एक-मंदिर पुराना होकर गिरगया किसी खुशनशीवने उसजगह दुसरा बनवाकर तयार किया, इसी तरहसे तीर्थका नामबनारहताहै, अगर ऐसा-न-कियाजायतो तीर्थका नामनिशानतक बाकी-न-रहे, मंदिर अंतरिक्षजी-का-जो-इसवख्त मोजुदहै निहायत पुख्ता और बेशकिमती है. तीर्थंकर अंतरिक्षपार्श्वनाथकी शामरंगमूर्त्ति तलघरमें मयफणके करीब अढाइ हाथबडी तख्तनशीनहै, तीर्थअंतरिक्षजीका कारखाना-मुनीम-गुमास्ते-नोकरचाकर-सब मोजुदहै, जैसा रवाब बडेबडे तीर्थोंमें होताहै यहांपर बनाहुवाहै, श्रीपुरकस्बा करीब पांचहजार आदमीयोंकी आबादीका इसवख्त मोजुदहै पेस्तर बडाथा, धर्मशाला-दो-एकबडी और एक छोटी यात्री इसमें कयामकरे, कोइतकलीफ-न-होगी. पुराना मंदिर जो गांवके बहार पश्चिमकी तर्फ वाकेहै, वहकाबील देखनेकेहै यात्री तीर्थअंतरिक्षजीकी जियारतकरके वापिस उसीरास्ते आकोला आवे.

☞ [बयान-भुसावल-बुर्हानपुर-और-खंडवा,-]

आकोला टेशनसे रेलमें सवार होकर-डावकी-गंगांव-पारस-नागझीरी-सेगांव-जेलम-नांदुरा-बिसवा-मल्कापुर-खांमखेड-बोदवड-और-वारंगाम होते भुसावल जंकशन उतरना, रेलकिराया आकोलेसें-भुसावल तक एकरुपया छ आने लगतेहै, अगर सहरमें जाना मंजुरहो शोखसे जाय, वरना! आगेको रवाना होवे, नाम-

[बयान-शहर-इंदोर,]

मुल्क मालवेमे इंदोर एक उमदा शहर है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त इदोरकी मर्दुमशुमारी (९२३२९) मनुष्योकीथी जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर यहांपर वने हुवे है, बाजार रौनकदार और तरह तरहकी चीजे सोनाचादी जवाहिरात -शालदुशाले और मेवा मीठाइ वगेरा यहांपर मिलसकती है, पानीका नल हरजगह लगा हुवा और सडकोंपर लालटेनोकी रोशनी हुवा करती है, राजमहेल उमदा वने हुवे-और-लालवाग यहांका काविल देखनेके है. जिले इदोरकी जमीनमें अनाज-पोस्त-रुइ-ऊख-और-तमाखू-ज्यादह पैदा हुवा करती है. यात्री शहरमें जाना चाहे शौखसे जाय और जैनमदिरोकी जियारत करे, इंदोरसे रैलमे सवार होकर-पालिया-अजनोड-और-फतेहावाद होते शहर उज्जेन जाय, रैलकिरायां साढे छ आने लगेंगे.—

[तवारिख-तीर्थ-उज्जेन.]

मुल्क मालवेमें फतेहावाद जकशनसे (१४) मील-उत्तरकी-तर्फपर क्षिप्रानदीके दाहनेकनारे उज्जेन एकपुराना शहर है, श्रीपाल-राजा-इसी-उज्जेनके राजा प्रजापालकीलडकी-मयणा सुंदरीसे विवाहेथे, और वदौलत नवपदजीके उनकी कोढनीमारी यहा रफा हुइथी, राजा मानतुग इसी उज्जेनके तख्तपर हुवे-जो-वडे खुशनसीव और धर्मपावदथे, तीर्थकर महावीरस्वामीके जमानेमें राजा चंडप्रद्योत इसी उज्जेनके तख्तपर अमलदारी करताथा, सूत्र आवश्यककी टीकामे वयान हैकि-जव-चंडप्रद्योतकी-और-मुल्क पांचालके वीतभयपतननगरका राजा-उदयनकी-एक मूर्ति और दासीके लिये नाइत्तिफाकी हुइथी उन दोनोका जग इसी उ[illegible]

वाड़ा-मुख्तियारा-चोरल-कालाकुंड-और-पातालपानी टेशन होते हुवे छावनीमहु टेशनपर उतरना, रैलकिराया तेरांआने लगेगे,

[तवारिख-तीर्थ-मांडवगढ,]

छावनीमहु-एक गुलजार वस्ती है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त छावनीमउकी मर्दुमशुमारी (३१७७३) मनुष्योंकीथी. बाजार रौनकदार और हरकिसमकी चीजे यहांपर मिलसकती है. धर्मशाला यहांपर एक वनी हुइ है, यात्री इसमे कयाम करे, और तीर्थ मांडवगढ जानेकी तयारी करे, सवारीके लिये इक्का-वगी-तयार मिलेगी, शुभहके गये हुवे शामकों माडवगढ पहुच सकोगे, सडक पकी वनी हुइ है, रास्तेमें पहाड-नदी-नाले और तरह तरहके द्रख्त नजर आयगें, जव करीव तीन कोसके फासलेपर मांडवगढ रहजायगा एक-नालछा-नामकांगाव राहमे मिलेगा, इसमें आठ दश घर जैनश्वेतावर श्रावकोंके आवाद है,—

छावनीमउसे करीव (३०) मील दखन पश्चिमकी रुखपर मांडवगढ एक पुराना शहर है, पेस्तर वडाथा आजकल छोटासा कस्वा रह गया, पुरानेखंढहेर और मकानात देखकर दिलकों ताज्जुव होता हैकि-खुशनसीवोंने क्या क्या उमदा मकान तामीर करवायेथे-और अव किसकदर विरानपडे हुवे है, हिंडोलामहल-चंपावावडी-वोराजगह-काविल-देखनेके है, अतराफ मांडवगढके तरह तरहकी जडीवुटीयें खडी है मगर उसके पहिचाननेवाले कम निकलेंगे, एक-जैनश्वेतांवर मंदिर और एक धर्मशाला यहांपर मोजूदहै, यात्री इसमे ठहरे, और तीर्थ मांडवगढकी जियारत करे, खानपानकी जरुरी चीजे यहांपर मिलसकेगी. तीर्थ मांडवगढकी जियारत करके यात्री छावनीमउको वापिस आवे ओर रैलमे सवार होकर-रोहटेशन होते शहर-इंदोर जाय, मउसे इंदोरतक रैलकिराया सवादोआने लगेगें,

था-जो-कुस्ती लडनेमें वहुत वहादूर था, चंडरुद्राचार्य-जिनका बयान-सूत्र उतराध्ययनमें दर्ज है एकदफे उज्जेनमे तशरीफ लायेथे, तीर्थंकर महावीरस्वामीके वाद (२९०) वर्ष पीछे राजा संप्रति इसी उज्जेनमें हुवा, जिसने वहुत जैनमंदिर-और-मूर्त्तिये वनवाइ, अवंतिसुकुमाल-इसी उज्जेनके वाशिदेथे. जिनोने आर्यसुहस्ती जैनाचार्यके पास दीक्षा इख्तियार किइथी,

राजा विक्रमादित्यके वख्त यहां वडी रवन्नकथी, और सस्कृत विद्याका यहा वहुत जोर शोरथा. वडे वडे नजुमी लोग यहा हुवे. इसका दुसरा नाम अवतीकापुरीभी वोलते है, जमीनके खोदनेसे पुरानी आवादीके निशान दुरदूरतक पाये जाते है इससे मालूम होता है पेस्तर यह वहुत वडा शहर था. सन (१८९१) में उज्जेनकी मर्दुमशुमारी (३४६९१) मनुष्योकीथी. हरेक किसमकी चीजे यहा मिलसकती है, वाजार लंबे चोडे और अफीमकी तिजारत यहा कसरतसे होती है, मालवेकी अफीम मुल्कोमें मशहूर है, चदनका—तेल यहाका नामी-और अगरवत्ती यहा उमदा वनती है, कइ तालाव-और-वागवगीचे यहा काविल देखनेके है और क्षिप्रा नदीके कनारे वहुतसे सोहावने घाट वने हुवे है, जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी और पुराने जैनश्वेताम्बर मदिरभी यहापर मौजूद ह सराफे वाजारमें—डेहरा खडकीमें—और—नयेपुरेमें जाकर यात्री देवदर्शन करे, ठहरनेके लिये अवती पार्श्वनाथजीके मदिरपास धर्मशाला वनी हुइ है, उसमे कयाम करे, और तीर्थ उज्जेनकी जियारत हासिल करे, शहरसे चार मीलके फासलेपर कालियाद्रहगावके पास क्षिप्राके कनारे एक-वादशाही वख्तका वना हुवा मकान है. नदीका पानी उसमें-होज-और-म-जरीये झरनोके आता है, गर्मीयोके दिनोमे वडी आरामकी ..

मेंदानपर हुवाथा, वीतभय पतन नगरसे-उदयन-बडी फौज लेकर मुल्क मारवाडके रास्ते उज्जेन आया, और चंडप्रद्योतने उसका मुकाबिला किया, मगर आखरीशमें सिकस्तखाइ, और उदयनकी फतेह हुइ, चंडप्रद्योतको गिरफतार करके अपने वतनको लेचला, जब उज्जेनसे थोडी दूर पहुचा मोसिम बारीशका करीब आगया-था बारीशहोना शुरु हुइ. उदयने वहां मुकाम किया और बारीशके दिन गुजारे, दस राजे जो उनकी मातहतीमेथे उनको रहते जब चौमासा गुजरा-तो-वहांपर एक मौजा वस गया जिसका नाम दशपुर कहलाया, चौमासेमें जब पर्यूषण पर्वके दिन आये अखीर-के रोज उदयनने चंडप्रद्योतसे कहा आज हमारे उपवास व्रत है-तुम-जो-चाहो-सो-बनवालो. हम आज नही खायगे. चंडप्रद्यो-तने कहा आज-मेंभी-उपवास व्रत करुंगा, शामके वख्त जब प्रति-क्रमण करनेका वख्त करीब आया उदयनने चंडप्रद्योतसे कहा आज पर्यूषणपर्वका अखीरदिन है धर्मशास्त्रकी रुसे वैरविरोध दुर करके राजीखुशी होना चाहिये, चंडप्रद्योतने कहा-में-तुमसे राजी कैसे होसकुं, तुमने मेरी सलतनत लेली और गिरफतार किया, उदयनने कहा, अछा! अब क्या चाहते हो? चंडप्रद्योत बोला अगर मुजे राजी करना चाहो-तो-उज्जेनकी सलतनत वापिस देदो उदयनने उसी वख्त उज्जेनकी सलतनत उसको वापिस देदी, और उसकी खताको दर गुजर किइ, चंडप्रद्योत उज्जेन आया और उदयन अपने वतन वीतभयपतनको गया,

रोहानामकाशख्श इसीउज्जनकेपास एक-नटग्रामका-रहने-वालाथा, जिसकी अकलमदीका बयान सूत्रआवश्यककीटीकामें दर्ज है, कोकासनामका कारिगिर-जो-सोपारकपतनका रहनेवाला था इसउज्जेनमें आयाथा, और अपने इल्मसे बहुतसी दौलत यहां हासिल किइथी, अटनमल्ल नामका पहलवान इसीउज्जेनका बाशिंदा

जिसमे तरहतरहके द्रख्त-और-गूलाव-केवडा-चपा-जाइ-जुइ-गु-ल्दाउदी वगेराके फुल हमेशां उतरते है और पूजनमे चढाये जाते है, एक वडा तालाव यहा मौजूद है मगर-ऊडा-कमहोनेकी वजहसे गर्मीयोके दिनोमें पानी सुक जाताहै, मौजे मकसीजीमें यात्रीयोंका आनाजाना हरवख्त वनारहता है, मकसीकी जियारत करके वा-पिस उज्जेन होते हुवे फतेहावाद आना. और फतेहावादसे-चांवल -वरनगर-रुणेजा-नोंगनवान-होते रतलाम जकशन उतरना, रै-लकिराया फतेहावादसे रतलामतक छआने लगेगे,-

[वयान-शहर-रतलाम,-]

मुल्क मालवेमें रतलाम एक अछा शहर है, रतलामसे (७१) मील दोहद, (११६) मील गोधरा, (१५०) डाकोर और (१६९) मील आनदजकशन है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त र-तलामकी मर्दुमशुमारी (२९८२२) मनुष्योकीथी, राजमहल यहांके उमदा मजवूत और मुस्तहकुम वनेहुवे है, चादनीचौक-मानकचौक और वजाजखाना-ये-नामी वाजार है, जिसमें तरहतरहके माल असवाव मिलसकते है, चांदनीचौकमे-जहोरी-और-सराफलोगो-की दुकाने लगी हुइ है, वहार त्रिपोलिया दरवजेके एक अमृतसा-गर तालावजोकि-वारीशके अय्याममें-भराहुवा रहताहै काविल देखनेके है, कचहरियां-अस्पताल-स्कुल-वगेरा मकानात लागतके वनेहुवे है, अफीम और अनाजकी तिजारत यहां अछी होती है, जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर अदाज (७००) और वडे घडे आलि-शान जैनश्वेतांबर मदिर यहांपर मौजूद है, यात्री [illegible] जाकर जियारत करे, रतलामसे दखनकी तर्फ एक [illegible]
रमडी नामका एक कस्वा है, ज[illegible]तीर्थंकर [illegible]
वडा [illegible]

उज्जेनसे रैलमें सवारहोकर–ताजपुर–और–तारनारोड, होते, हुवे तीर्थमकसीजीको–जाय, रैलकिराया पांचआने लगेगे,–

☞ [तवारिख–तीर्थ–मकसीजी,]

मुल्क मालवेमें मकसीजी एक मशहूर जैनतीर्थ है, टेशनसे करीब आधमीलके फासलेपर मकसी एक छोटासा गांववाके है, जिसकी वजहसे तीर्थकानामभी मकसीजी कहलाया, खानपानकी चीजे–आटा–दालवगेरा यहापर मिलसकती है, तीर्थकर पार्श्वनाथजीका बुलंदशिखरबंदमदिर मानींद स्वर्गविमानके यहांपर बना हुवा है, परकम्मा इसकी तीन एक छोटी–एक वडी–और–एक उससे वडी जोकि–कोटके बाहारसे दिइ जाती है, मंदिरकी चारोतर्फ (४२) जिनालय बने हुवे और इनमें वहुत करके सवत् (१५४८) के अर्सेकी प्रतिष्ठित मूर्त्तियें जायेनशीन है, मूलनायक तीर्थकरमकसी पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति शामरंग करीब सवादोहाथ बडी तख्तनशीन है, पेस्तर इसके नीचे एक गुफाथी जिसमेसे तीर्थकर मकसी पार्श्वनाथकी मूर्त्ति निकलीथी, वाद अजां उसपर शंगेमरमरका चोतरा बनादिया गया, एकतर्फ चितामणि पार्श्वनाथ–और–एकतर्फ–नेमनाथजीकी शामरंग मूर्त्तिभी जायेनशीन है, रंगमंडप निहायत खुशनुमा–यात्री–इसमे बेठकर तीर्थकर मकसी पार्श्वनाथकी इबादत करते है,

तीर्थ मकसीजीका कारखाना उमदा तौरसे बना हुवा है, और पासमे धर्मशालाभी मौजूदहै, यात्री उसमे कयाम करे, जब मकसीजीतक रैल–नहीथी–यात्री–वजरीये वेलगाडीके जातेआतेथे, मगर अब रैलके होनेसे बहुत आराम होगया, जिसके बडे भाग्य हो असे तीर्थकी जियारत करे, पिछाडी मंदिरके एक उमदा बाग

जिसमे तरहतरहके द्रख्त-और-गूलाव-केवडा-चपा-जाइ-जुइ-गु-ल्दाउदी वगेराके फुल हमेशां उतरते है और पूजनमे चढाये जाते है, एक वडा तालाव यहा मौजूद है मगर-ऊंडा-कमहोनेकी वजहसे गर्मीयोके दिनोमें पानी सुक जाताहै, मौजे मकसीजीमें यात्रीयोंका आनाजाना हरवख्त वनारहता है, मकसीकी जियारत करके वा-पिस उज्जेन होते हुवे फतेहावाद आना. और फतेहावादसे-चावल -नरनगर-रुणेजा-नोंगनवान-होते रतलाम जकशन उतरना, रै-लकिराया फतेहावादसे रतलामतक छआने लगेगे,-

☞ [वयान-शहर-रतलाम,-]

मुल्क मालवेमें रतलाम एक अछा शहर है, रतलामसे (७१) मील दोहद, (११६) मील गोधरा, (१५०) डाकोर और (१६९) मील आनंदजंकशन है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त र-तलामकी मर्दुमशुमारी (२९८२२) मनुष्योकीथी, राजमहल यहांके उमदा मजवूत और मुस्तहकुम वनेहुवे है, चादनीचौक-मानकचौक और वजाजखाना-ये-नामी वाजार है, जिसमें तरहतरहके माल असवाव मिलसकते है, चादनीचौकमे-जहोरी-और-सराफलोगो-की दुकाने लगी हुइ है, वहार त्रिपोलिया दरवजेके एक अमृतसा-गर तालावजोकि-वारीशके अय्याममें-भराहुवा रहताहै कालिल देखनेके है, कचहरियां-अस्पताल-स्कुल-वगेरा मकानात लागतके वनेहुवे है, अफीम और अनाजकी तिजारत यहां अछी होती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर अदाज (७००) और वडे वडे आलि-शान जैनश्वेतांवर मदिर यहांपर मौजूद है, यात्री शहरमें जाकर जियारत करे, रतलामसे दखनकी तर्फ एक कोसके फासलेपर क-रमदी नामका एक कस्वा है, जहांकि-तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका वडा आलिशान मदिर-धर्मशाला-और-दो-कुंडपानीके वने हुवेहै,

यात्री वहांकी जियारतकरे, रतलामसे पश्चिमकी रुखपर एक-सागोद नामकागांव वसाहुवा जहांकि-मंदिर-धर्मशाला-और नजदीकमेंएक पानीका-नालाभी वहता है, यात्री वहांकीभी जियारत करे, सागोद गावसे आगे डेढकोसके फासलेपर विवडोद नामका एक कस्वा -जहांकि-तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका वडा आलिशान मदिर कावीलेदीद है, और मूर्त्ति निहायतपुरानी है. अतराफमें कोट पका खीचाहुवा जिसमेकियात्री-वखूवी कयामकरे, और तीर्थकीजियारत करे. रतलामसे करीव चार कोसके फासलेपर शेमलिया गांवभी एक जैनतीर्थ है, यात्रीको जिसतरह फुरसतहो-मुकाम करे और तीर्थयात्राका फायदा हासिल करे, रतलामसे आगे रैलमें सवार होकर-नांमली-जावरा-ढोढर-ओर-दरावदा टेशन होते हुवे मंदसौर टेशन उतरे, रैलकिराया आठआने लगेग.

☞ [वयान-शहर-मंदसौर,-]

मुल्क मालवेमें मंदसौर एक अछा शहर है और इसका दुसरा नाम दशपुरभी कहते है, इसकेपास एक नदी हमेशां वहती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मदिर यहांपर वनेहुवे है, यात्री शहरमे जाकर जियारत करे. वाजार यहांका वहुतअछा और हरकिसमकी चीजे यहां मयस्सर आसकती है, दसपुरे यहां अलग अलग आवादहै इससववसे इसकानाम दशपुरनगर कहलाया, जवकि -वीतभयपत्तनका राजा-उदयन-उज्जेनके राजा चडप्रद्योतको सिकस्त देकर अपने वतनको जाताथा यहां उसने मोसमेवारीश गुजाराथा, उसवख्त यह दशपुरनगर आवाद हुवाथा, जो आजकल मदसौरके नामसे मशहूर है, तिजारत अफीमकी यहा कसरतसे हुवा करती है, मंदसौरसे करीव पांच कोशके फासलेपर-एक -वहीपार्श्वनाथका तीर्थ मशहूर और मारुफ है, और एक-पुराना

मंदिर वहापर मौजूद है, यात्रीकों फुरसतहो वहाकी जियारतको जाय, पोषदशमीके रौज हरसाल वहा-यात्रीयोका मेला भराताहै, मंदसौरसे रैलमें सवारहोकर-थारोद-पीपलिया-मल्हारगढ-हरकियाखाल-नीमच-केशरपुरा-निभाडा-और-शभुपुरा होते चितोडगढ-टेशन जाय, रैलकिराया ग्यारह आने लगेगे,-तवारिख चितोडगढ और उसके आगेका वयान पेस्तर लिख चुके है,—

☞ [वयान-जलगांव-पाचोरा-और-मनमाड,-]

अव भुसावलसे मुल्के दखनकी तर्फ जानेका रास्ता वतलातेहै, देखिये ! भुसावलसें रैलमे सवार होकर-भडली टेशन होते हुवे जलगांव टेशनपर उतरना और अगर शहरमे जानेका इरादा हो-तो जाना, वरना, आगेको रवानाहोना, जलगाव अगरचे एकछोटासा शहर है, मगर रौनकदारहै. जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मदिरभी यहापर वना हुवा है, वाजार गुलजार और खुशनुमा-हरेक किसमकी चीजे यहापर मिलसकेगी, तिजारत रुइकी यहा अछी होती है और-यहासे एक-रैलवे लाइन सुरतको गइ है, जलगावसे रैलमे सवार होकर-सीरसोली-महसावद-माडजी-होते पाचोरा टेशन जाना, पाचोरा एक छोटासा कस्वा है लेकिन ! काविल देखनेके है, रुइके कलकारखाने यहापर वनेहुवे है, और अकसर रुइकीतिजारत ज्यादहहोती है, जैनश्वेतावर श्रावकोकेघर करीव (५०) और एक जैनश्वेतावर मदिर यहापर वना हुवा है, वाजारमे हरेक किसमकी चीजे मिल सकेगी, आवहवा यहांकी अछी-और-नजदीकमें एक-नदी-वहती है जिससे वागवगीचे-वनास्पतिकी सरशव्जी वनी रहती है, पाचोरेसे रैल्मे सवार होकर-गलना-कजगांव-वागली होते चालिसगाव टेशनपर उतरना, चालिसगाव एक छोटासा कस्वा है, मगर व सवव रैलका जकशन होनेके ७५,

यात्री वहांकी जियारतकरे, रतलामसे पश्चिमकी रुखपर एक-सागोद नामकागांव वसाहुवा जहांकि-मंदिर-धर्मशाला-और नजदीकमेंएक पानीका-नालाभी वहता है, यात्री वहांकीभी जियारत करे, सागोद गांवसे आगे देढकोसके फासलेपर विवडोद नामका एक कस्वा -जहांकि-तीर्थकर रिषभदेव महाराजका वडा आलिशान मंदिर कावीलेदीद है, और मूर्त्ति निहायतपुरानी हैं. अतराफमें कोट पका खीचाहुवा जिसमेकियात्री-वखूवी कयामकरे, और तीर्थकीजियारत करे. रतलामसे करीव चार कोसके फासलेपर शेमलिया गांवभी एक जैनतीर्थ है, यात्रीको जिसतरह फुरसतहो-मुकाम करे और तीर्थयात्राका फायदा हासिल करे, रतलामसे आगे रैलमें सवार होकर-नामली-जावरा-ढोढर-और-दरावदा टेशन होते हुवे मंदसौर टेशन उतरे, रैलकिराया आठआने लगेग.

☞ [वयान-शहर-मंदसौर,-]

मुल्क मालवेमें मंदसौर एक अछा शहर है और इसका दुसरा नाम दशपुरभी कहते है, इसकेपास एक नदी हमेशां वहती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर यहांपर वनेहुवे है, यात्री शहरमे जाकर जियारत करे वाजार यहांका वहुतअछा और हरकिसमकी चीजे यहां मयस्सर आसकती है, दसपुरे यहां अलग अलग आवादहै इससववसे इसकानाम दशपुरनगर कहलाया, जवकि -वीतभयपत्तनका राजा-उदयन-उज्जेनके राजा चडप्रद्योतको सिकस्त देकर अपने वतनको जाताथा यहां उसने मोसमेवारीश गुजाराथा, उसवख्त यह दशपुरनगर आवाद हुवाथा, जो आजकल मंदसौरके नामसे मशहूर है, तिजारत अफीमकी यहां कसरतसे हुवा करती है, मदसौरसे करीव पाच कोशके फासलेपर-एक -वहीपार्श्वनाथका तीर्थ मशहूर और मारुफ है, और एक-पुराना

मदिर वहांपर मौजूद है, यात्रीकों फुरसतहो वहाकी जियारतकों जाय, पोषदशमीके रौज हरसाल वहा-यात्रीयोंका मेला भराताहै, मदसौरसे रैलमे सवारहोकर-थारोड़-पीपलिया-मल्हारगढ-हरकियाखाल-नीमच-केशरपुरा-निभाडा-और-शंभुपुरा होते चितोडगढ-टेशन जाय, रैलकिराया ग्यारह आने लगेंगे,-तवारिख चितोडगढ और उसके आगेका वयान पेस्तर लिख चुके है,—

☞ [वयान-जलगांव-पाचोरा-और-मनमाड,-]

अव भुसावलसे मुल्के दखनकी तर्फ जानेका रास्ता वतलातेहै, देखिये ! भुसावलसें रैलमे सवार होकर-भडली टेशन होते हुवे जलगांव टेशनपर उतरना और अगर शहरमे जानेका इरादा हो-तो जाना, वरना, आगेको रवानाहोना, जलगाव अगरचे एकछोटासा शहर है, मगर रौनकदारहै, जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी और मदिरभी यहापर वना हुवा है, वाजार गुलजार और खुशनुमा-हरेक किसमकी चीजे यहापर मिलसकेगी, तिजारत रुइकी यहा अछी होती है और-यहासे एक-रैलवे लाइन सुरतकों गइ है, जलगांवसे रैलमे सवार होकर-सीरसोली-महसावद-माइजी-होते पाचोरा टेशन जाना, पाचोरा एक छोटासा कस्वा है लेकिन ! काविल देखनेके है, रुइके कलकारखाने यहापर वनेहुवे है, और अकसर रुइकीतिजारत ज्यादहहोती है, जैनश्वेतावर श्रावकोकेघर करीव (५०) और एक जैनश्वेतांवर मदिर यहापर वना हुवा है, वाजारमे हरेक किसमकी चीजे मिल सकेगी, आवहवा यहांकी अछी-और-नजदीकमें एक-नदी-वहती है जिससे वागवगीचे-वनास्पतिकी सरशब्जी वनी रहती है, पाचोरेसे रैलमे सवार होकर-गलना-कजगांव-वागली होते चालिसगाव टेशनपर उतरना, चालिसगाव एक छोटासा कस्वा है, मगर व सवव रैलका जकशन होनेके ज्यादह

मशहूर है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी-और-एक मदिरभी यहां उमदा वना हुवा है, यात्री अगर फुरसतहो-शहरमें-जाय और देखे, रुइके कल कारखाने यहांपर मौजूद है और तिजारत रुइकी अछी होती है, यहासे एक रैलवे लाइन शहर धुलियेकों गइ -जो-(३०) मीलके फासलेपर वाके है, चालिसगांवसे रैलमे सवार होकर--हीरापुर-रोहनी--नयीडुंगरी-पीपारखेड--नंदगांव-पंजान-हिसवाल होते मनमाडजंकशन जाना. भुसावलसे मनमाड तक किराया मेलट्रेनका एकरुपया वाराआना लगते है, मनमाड एक-रैलवेका वडा जंकशनहै, और खानपानकी चीजे-पुरी-कचौरी-मिठाइ वगेरा-जो चाहो यहां मिलसकती है, यात्री टेशनपर ठहरे और-जो-लाइन शहर हैदरावाद दखनको गइ है उसमें सवार होकर-अंकाइ-नागरसोल-तारुर-रोटागाव (विजापुर)-परसोदा-लासुर-इलोरारोड-और दौलतावाद होते औरगावाद जाय, रैलकिराया ग्यारहआने लगेगे,-

☞[बयान-शहर-औरंगावाद-और-जालना,-]

सलतनत हैदरावाद दखनमें औरंगावाद-एकपुराना शहर है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त औरंगावादकी मर्दुमशुमारी मयछावनीक (३३८८७) मनुष्योकीथी, करीव शहरके एक छोटीसी नदीवहतीहै, और गेहु-कपास वगेरा चीजोकी तिजारत यहां अछीहोती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी-और-दो-पुराने मदिर यहा वनेहुवे मौजूदहै, यात्री शहरमेजाय और दर्शनकरे करीव मदिरके धर्मशाला वनीहुइ है इसमें कयामकरे, और अगर इलोराके गुफामदिर देखनेका इरादा होतो यहांसे शौखसे जाय, दौलतावादसे-या-इलोरारोडसेभी-जासकते हो--और-यहांसेभी जासकते हो,—

औरंगावादसे करीव (१५) मीलके फासलेपर इलोरागांव जहा आवाद है पहाडमें उकेरे हुवे गुफामंदिरोंकी वजहसे ज्यादह मशहुर है, सडक पकी वनी हुइ और वहां जानेके लिये सवारी औरंगावादसे-इका-वगी-मिलसकेगी और शुभहके गये हुवे शामको वापिस आसकोगे, इलोरेकी गुफामें कइ जगह वुधदेवकी और कइ जगह वैदिक मजहवके देवोकी मूर्त्तिए वनी हुइ है, सवसे दूर जो गुफा है उसमें एकसाथ पाच मदिर जो पहाडमे उकेरे हुवे मौजूद है, उनमें जैनमूर्तियेभी वनी हुइ है, जिसकी मरजी हो-जाय-और-देखे, जगह काविल देखनेके है.—

औरंगावादसे (३०) मील-और-अहमदनगरसे करीव (६०) मील पूर्वोत्तर गोदावरी नदीके कनारेपर-पैठन-एकपुराना शहर है, जो पेस्तर शकजातिके राजा शालिवाहनकी राजधानी प्रतिष्ठानपुरके नामसे मशहूर था, यात्री औरगावादसे रैलमें सवार होकर-चिकलठाना-करमाला-और वदनापुर होते जालनाटेशन जाय, रैलकिराया सातआने लगेंगे,—

जालना एकपुराना शहर है, पेस्तरके दिनोंमे वहुत आवादथा, जमाने हालमेंभी कदरे वहेत्तर है, वाजार उमदा और हरेक किसमकी चीजे यहा मिल सकेगी, रुइके कइ कल कारखाने यहांपर मौजूदहै और तिजारतभी यहा अछी होती है, जैनश्वेतावर श्रावकोंकी आवादी और मदिर यहा वने हुवे है, यात्री शहरमें जाय और मदिरोकी जियारत करे, जालनेसे रैलमें सवार होकर-कोडी-रजनी-पार्तुर-सलोना-सेलु-मनवायरोड-पैदगाव-परभनी-पींगली-पुरना-लींवगाव-नानेड-मुगत-मदखेड-सीवनगाव-उमरी-करग्वेली-धर्मावाद-वसर-नयीपेंठ-निझामावाद-दिचपली-उडलवाट-सिरनापली-उपलवाट-कामरेडी-निकनुर-अकनापेंट-मिर्जापली-वडीयारम-म-

सइपेठ-मनोहरावाद-मेडचल-वलारम-अलवाल-और-सिकंदरावाद होते-हैदरावाद जाना, रैलकिराया तीनरुपये पांचआने लगेंगे,—

[दरवयान-शहरे-हैदरावाद-दखन,]

मुल्के दखनमें मुसा नदीके दाहनेकनारे हैदरावाद एक-अजनवीशहर है. हैदरावाद राज्यकी उत्तरतर्फ-वरार-पूर्वोत्तर और पूर्व-मध्यप्रदेश-दक्षिण पूर्व-और दक्षिणतर्फ मद्रासहाता-और-पश्चिम तथा-पश्चिमोत्तर ववइहाता है, हैदरावादसे एक पैदलसडक मद्रासतर्फ गइ है, जिसकेशाथ कटकसे आइ हुइ समुंदरके पासकी सडक आमीलती है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त हैदरावादकी मर्दुमशुमारी (४१५०३९) मनुष्योकीथी, वडे वडे आलिशानमकानात-रगरौशनसे सजेसजाये-यहापर देखोगे, सडके लंबीचोडी और सवारीके लिये इका वगी-तयार मिलेगी, रेसीडेन्सी-अफजलगंज-महाराजगंज--वेगमवाजार-चारकवाजार-वगेरामे वडी रवन्नक देखोगे, अफलगंजसे चारकवानकों जाते रास्तेमें मुसानदी मिलेगी, जिसपर पुल वंधा हुवा है और इका वगी वगेरा सवारी जासकती है, वाजार निहायत उमदा-और-शानदार जिसमे लाखो रुपयोकी-जिन्स और-माल-व-असवाव-जो चाहो मिलसकेगा. पानीका नल हरजगह लगा हुवा और रातको सडकोंपर लालटेनोकी रोशनी हुवा करती है, करीव टेशनके पब्लिकवाग जिसकों मेहवुववागभी वोलते है वडा गुलजार और इसमे तरहतरहके जानवर चुनाचे-शेर-चीते-हिरन-भालु-और कइकिसमके परींदे तोता -मेना-चिडिया वगेरा रखे हुवे है, शहरकी पूरवतर्फ घुडदोडका वडा वसी मेदान जिसमे घुडदोड हुवा करती है काविल देखनेके है, महलात निझाम सरकार आलीके कीमती और खूवसुरत वने हुवेहै, हैदरावादके राज्यमें सवतरहके अनाज-नील-उख-और कपास

वगेरा चीजें वहुतायतसे पैदा होती है, आम-अमरुद-खरबुजा-ककडी-शरीफे वगेरा किसम किसमकी फलफलारी यहां कसरतसे हुवा करती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी-चारकवान-इशवचोक-पथरघटी-बेंगमवजार-रमूलगंज-और-रेसीडेन्सीमें फैली हुइ है, जैनश्वेतांवर मंदिर वेंगमवजार-कारवान-चारकवान-और-रेसीडेन्सीमेंवडी लागतके वने हुवे है, यात्री शहरमें जाय और मंदिरोंकी जियारत करे,-

मुतस्सिल शहर हैदरावादके सिकंदरावाद एक गुलजार वस्ती और अगरेजी फौजी छावनी है, वाजार उमदा और हरेक तरहकी चीजे यहां मिलसकती है, जैनश्वेतावर श्रावकोंकी आवादी और एकमंदिर यहापर वना हुवा मौजूद है, यात्री यहाके मंदिरकेभी दर्शन करे, सिकंदरावादसें (६) मील और-हैदरावादसे (११) मील उत्तरकी तर्फ वलारम एक अच्छा कस्वा है और यहांपर जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मंदिरभी वना हुवा है,-

हैदरावादसे रैलमें सवार होकर-सिकंदरावाद-मौलाअली-घटकेशर-वीडीनगर-भोंगर--रायगिर-और-वंगापाली होत आलेर टेशन उतरना, रैलकिराया मेलट्रेन दसआने लगेंगे,—

[☞ तवारिख-तीर्थ-कुल्पाकजी,-]

मुल्के-तैलगमें आलेर टेशनसे दोकोसके फासलेपर कुल्पाकजी एकपुराना जैनतीर्थ है, पेस्तर कुल्पाकशहर वहुत आवादथा, जमाने हालमें कम होगया, और शहरके नामसे तीर्थका नामभी कुल्पाक मशहुर हुवा, पेस्तर यहा वहुतसे वागवगीचे और गुलजारवन खड़थे, और-शहरभी-वडीरवन्नकपरथा, आम-अमरुद-नारंगी-केले-खिरनी-नारियल-सुपारी-लोंग-और-नागरवेलके पान यहा

सइपेठ-मनोहराबाद-मेडचल-बलारम-अलवाल-और-सिकदराबाद होते-हैदराबाद जाना, रैलकिराया तीनरुपये पांचआने लगेंगे,—

☞ [दरबयान-शहरे-हैदराबाद-दखन,]

मुल्के दखनमें मुसा नदीके दाहनेकनारे हैदराबाद एक-अजनबीशहर है. हैदराबाद राज्यकी उत्तरतर्फ-बरार-पूर्वोत्तर और पूर्व-मध्यप्रदेश-दक्षिण पूर्व-और दक्षिणतर्फ मद्रासहाता-और-पश्चिम तथा-पश्चिमोत्तर बंबइहाता है, हैदराबादसे एक पैदलसडक मद्रासतर्फ गइ है, जिसकेशाथ कटकसे आइ हुइ समुंदरके पासकी सडक आमीलती है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त हैदराबादकी मर्दुमशुमारी (४१५०३९) मनुष्योंकीथी, बडे बडे आलिशानमकानात-रगरौशनसे सजेसजाये-यहांपर देखोगे, सडके लबीचोडी और सवारीके लिये इका बगी-तयार मिलेगी, रेसीडेन्सी-अफजलगंज-महाराजगंज--बेगमबाजार-चारकबाजार-वगेरामे बडी रवनक देखोगे, अफलगंजसे चारकबानकों जाते रास्तेमे मुसानदी मिलेगी, जिसपर पुल बंधा हुवा है और इका बगी वगेरा सवारी जासकती है, बाजार निहायत उमदा-और-शानदार जिसमे लाखो रुपयोंकी-जिन्स और-माल-व-असबाव-जो चाहो मिलसकेगा. पानीका नल हरजगह लगा हुवा और रातको सडकोपर लालटेनोकी रौशनी हुवा करती है, करीब टेशनके पब्लिकबाग जिसकों मेहबुवबागभी बोलते है. बडा गुलजार और इसमे तरहतरहके जानवर चुनाचे-शेर-चीते-हिरन-भालु-और कइकिसमके परींदे तोता -मेंना-चिडिया वगेरा रखे हुवे है, शहरकी पूरवतर्फ घुडदोडका बडा वसी मेंदान जिसमे घुडदोड हुवा करती है काबिल देखनेके है, महल्लात निझाम सरकार आलीके कीमती और खूबसुरत बने हुवेहै, हैदराबादके राज्यमें सबतरहके अनाज-नील-उख-और कपास

वगेरा चीजें बहुतायतसे पैदा होती है, आम-अमरुद-खरबुजा-ककडी-शरीफे वगेरा किसम किसमकी फलफलारी यहां कसरतसे हुवा करती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी-चारकवान-इशरचोक-पथरघटी-बेंगमवजार-रसूलगंज-और-रेसीडेन्सीमे फैली हुइ है, जैनश्वेतांवर मंदिर वेगमवजार-कारवान-चारकवान-और-रेसीडेन्सीमेवडी लागतके वने हुवे है, यात्री शहरमें जाय और मंदिरोकी जियारत करे,-

मुतस्सिल शहर हैदरावादके सिकंदरावाद एक गुलजार वस्ती और अगरेजी फौजी छावनी है, वाजार उमदा और हरेक तरहकी चीजे यहां मिलसकती है, जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी और एकमंदिर यहापर वना हुवा मौजूद है, यात्री यहाके मदिरकेभी दर्शन करे, सिकदरावादसें (६) मील और-हैदरावादसे (११) मील उत्तरकी तर्फ वलारम एक अछा कस्वा है और यहांपर जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मदिरभी वना हुवा है,-

हैदरावादसे रैलमें सवार होकर-सिकंदरावाद-मौलाअली-घटकेशर-वीडीनगर-भोंगर--रायगिर-और-वगापाली होत आलेर टेशन उतरना, रैलकिराया मेलट्रेन दसआने लगेगे,—

[☞ तवारिख-तीर्थ-कुल्पाकजी,-]

मुल्के-तैलगमे आलेर टेशनसे दोकोसके फासलेपर कुल्पाकजी एकपुराना जैनतीर्थ है, पेस्तर कुल्पाकशहर वहुत आवादथा, जमाने हालमें कम होगया, और शहरके नामसे तीर्थका नामभी कुल्पाक मशहुर हुवा, पेस्तर यहा वहुतसे वागवगीचे और गुलजारवन खंड़थे, और-शहरभी-वडीरवनकपरथा, आम-अमरुद-नारगी-केले-खिरनी-नारिय[illegible]पारी-लोंग-और-नागरवेलके पान ५[illegible]

वहुत हुवा करतेथे, और मुल्क वडा सरसब्जथा, दरमियान आलेरटेशन और कुल्पाकके सडक पकी वनी हुइ है और वीचमें एक नदी मीलती है जोकि-वारीशके अय्याममें भरपुर होजाती है, मंदिर यहांका निहायत आलिशान और बुलंदशिखरबंद मानींद देवलोकके वना हुवा है, जिसके देखनेसे मालूम होता हैकि-पेस्तरके दिनोंमें जैनोकी यहां कामील आवादीथी, जैनश्वेतांवर आम्नायके विविध तीर्थकल्प शास्त्रमे तेहरीरहैकि-यह-मंदिर विक्रम संवत् (६८०) की सालमे तामीर किया गया, इसमे तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी शामरंग मूर्त्ति करीव अढाइ हाथ वडी तख्तनशीन है, और इसका दुसरा नाम माणिक्यदेवभी वोलते है, रंगमंडपके एक खंभेपर शिलालेख लगा हुवा है उसमे अवल तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी तारीफ लिखी हुइ है, और वादमे यहभी लिखा हुवा है कि- संवत् (१६६५) में इसमंदिरका जीर्णोद्धार हुवा, विजयसेनसूरिका नामभी इसलेखमे दर्ज है,-हर्फोंके घीसजानेकी वजहसें तमाम लेख वखूवी नही पढा जाता मगर जो कुछ पढा जाता है उसका मतलव उपर लिख दिया है,—

कोटके अंदर अवल दरवजे के भीतर और दोयम दरवजेके सीरेपर एक-और-शिलालेख लगा हुवा है जिसमे संस्कृत जवानसें यह मजमून लिखा हैकि,—

स्वस्तिश्रीयत्पदांभोज-भेजुषा सन्मुखी सदा,
तस्मैदेवाधिदेवाय-श्री आदिप्रभवेनमः ॥ १

संवत् (१७६७) वर्षे-चैत्रशुद्ध दशम्यां पुष्यार्कदिने-विजयमूहूर्त्ते-श्रीमाणिक्यस्वामिनःस्नः आदीश्वरभगवतो-विंवरत्नंप्रतिष्टितं—दीह्लीश्वरवादशाह औरगजेव—

डोरनाल जंकशन--पापतापल्ली-खामामेथ--चिंताकनी-बोनाकल्लु-मदीरा-येरुपालियम-गांगीनीनी--और कोंडापल्ली-होते बेजवाडा जंक्शन जाय, रैलकिराया थर्डक्लासपासेजर एकरुपया तेरांआने और मेलट्रेनके दोरुपये चारआने लगेगे.

☞[बयान-शहर-बेजवाडा,]

कृश्नानदीके बायेकनारे बेजवाडा एक मशहूर तिजारती कस्बा है, बेजवाडेसे मद्रास-मछलीपटन-राजमहेंद्री-और-काकनाडेको-नेहेर गइहै. बेजवाडेमे सन (१७६०) इस्वीका बनाहुवा एकपुराना किला-और-पासउसके पहाडके चट्टानोमे बौध और हिंदुओके पुरानेगुफामदिरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके, वख्त बेजवाडेकी मर्दुमशुमारी (२०७४१) मनुष्योंकी थी, बाजार अछा और हरकिसमकी चीजे यहां मिलसकेगी. स्कुल-अस्पताल-सरकारी कचहरीयां-और-लाइब्रेरी वगेरा मकानात उमदा बनेहुवे है यात्रीशहरमे जानाचाहे-तो-जाय और देखे, बेजवाडेसे रैलमें सवारहोकर-किस्नाकेनाल--कोलंकोंडा कवायरी-पेडावडलापुडी-डुगीराला-कोलाकलुर-तेनाली-टुंडुरु--नीदुबरुलु--आपीकाटला-बापटला-चीराला-वेटापालियम--चीनागंजाम-उपुग्वाडुर-अमानाब्रोलु-कारावडी-अंगोल--सुरारेडीपालम-तांगुटुरु-सिंगारियाकोंडा उलवापाडु-तेट्टु-कावली-बिट्टागुंटा-आलुरुरोड-तालामंची-कोडावलुरु-पडुगुपाडु-नेलोर-वेंकटाचलम-मनुबोलु-गुडुर जकशन-पेंदापेरिया-नायडुपेटा-थोरावरीछतरम-पोलीरडीपाल-सोलुरपेटा-टाडा-औरबाकम-एलउर-गुमीडीपुदी-कावरा‍इपेटे-पुजोरी-मिंजुर-एनुर-एरानाडर-तिरुवतुर-तोडायरपेटे--कोरुक्कुपेटे--और-बेसीनब्रीड्ज-होने मद्रासटेशन उतरना, रैलकिराया मेलट्रेन साढेतीनरुपये लगेगे.

[दरवयान-शहर-मद्रास,]

बम्बइसे (७९४) मील दखनपश्चिमकी रुखपर मद्रास एक निहायत उमदा शहरहै. मद्राससे एक-रैलवेलाइन-वेजवाडा-और-कटकहोतीहुइ-और एकलाइन-रायचूर-मनमाड-भुसावल-नागपुर और आसनसोल होतीहुइ-कलकत्तेकों गइहै. मद्राससे समुदरके रास्तेभी कलकत्तेकों जासकते है, मद्राससे पूर्वोत्तर एकपैदल सडक-अंगोल-वेजवाडा-राजमहेंद्री-विजयानगर-ब्रह्मपुर-गजाम कटक-भद्रक वलेश्वर-और-मेदनीपुरहोते कलकत्तेकों गइहै, एक-पेदलसडक-दखनपश्चिम-विलीपुर-त्रिचनापल्ली-मदुरा-और-मनीयाचीं होकर-कन्याकुमारीको गइहै, एकसडक-पश्चिमतर्फ-कटपदी-और-जोलारपेंठके पासहोकर-बेंगलोरकों गइहै, मद्रासकों द्रविडिनलोग चीनापट्टन बोलते है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त मद्रासकी मर्दुमशुमारी (४५२५१८) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर करीव (३००) और साहुकारपेठमे-दो-जैनश्वेतांवर मदिर वनेहुवे है, एकमदिर शुलेवाजारमेंभी मौजूदहै, यात्री शहरमें जाय और मंदिरोंकी जियारतकरे, मद्रासमें वडीवडी आलिशान इमारते और लवेचौडे वाजारहै, साहुकारपेंठ-चीनावाजार-तिरुमलखेडी-माउंटरोड-जामवाजार-गुजरी-इविनिंगवाजार-कोमटीगली-गडगगली और-शुलावाजार वगेरा नामीवाजारहै, शहरमें शुभहशाम-ट्रामकार चला करती है, इक्का-बगीभी हरजगह तयार मिलेगी, सडकोपर पानीकेनल लगेहुवे और रातको लालटेनोकी रौशनी हुवाकरती है, दरयावकनारे कस्टमहाउस-टेलीग्राफ औफीस-मद्रासबेंक-पोर्ट औफिस-जनरल पोस्टऔफीस-हाइकोर्ट-और-लाइटहाउस-वगेरा वडीलागतके मकानात बनेहुवे है, समुदर कनारे निहायत उमदा देखाव-और-सड [illegible] लोग शामकों उधर हवाखोरीके [illegible]

भायाकरते है, मद्रासका अजायबघर काबिल देखनेके है, तरहतरहकी चीजे पुरानी और नयी कारीगिरी देखकर दिलको ताज्जुब होगा, हाइकोर्टके पास–फोर्ट सेंटजर्ज नामका किला निहायत संगीन और उमदा बनाहुवाहे, अतराफ मद्रासके नारियल और केलेकेपेड बहुतायतसे देखोगे, इलायची–काफी—सकर—सोडा--गुलाबजल–कालीमीर्च–कापुर—किसमीस—छुहारे—बादाम–पिस्ते–चिरोंजी––अखरोट—और केशर–कस्तूरी वगेराचीजे गेरमुल्कोसे यहां आती है और विकती है, कइतरहका माल असवाव–इग्लांड–चीन–जापान–रंगुनवगेरासे यहांआताहे, सोनाचांदीके गेहने यहां उमदा बनते है, मद्रासके दौलतमंद वाशिंदे जवाहिरात और सोनेके गेहनोसे हमेशां सजे सजाये रहते है, औरतेभी उमदा लिवास पहनी हुइ रहती है, हरजगह गानेवजानेको मजलीसमें नामीगवैये अपने इल्मका जहोर दिखलारहे है.

सेंट्रल रेलवे टेशनके पास रानीवाग काविल देखनेके है, जिसमे–शेर–भालु–चीता–गेंडा–कबूतर–तोता –मेंना–चिडिया वगेरा रखेहुवे है, मद्रासमें--तैलंगी–अर्वी–कनडी अग्रेजी--और–उर्दूवगेरा जबान बोलीजाती है, मुल्क गर्महोनेकी वजहसे लोग रुइदार कपडे कम पहनते है, और खानपानमें दालचावलका इस्तिमाल ज्यादह रखते है; मद्रास हातेमें काफी–तमाखू–और–चायकी पैदाश कसरतसे–होती है, नमकभी यहा बनाया जाताहै, मुंगफलीभी यहा बहुतायतसे पैदाहोती है, केतकीके पेंड हरजगह देखोगे, समुंदरके कनारे हवा बहुत जोरसे चलती है और पानीकी लहरे दिलकों फरहत बक्षती रहती है, पेस्तरके शास्त्रोमें इसमुल्कका नाम द्राविड लिखा है, मद्रास हातेके मुताल्लिक–पिनाकिनी–पनार–वैगा–वैलर–ताम्रपर्णी–और–तुंगभद्रा वगेरा नदियां बहती है, मद्राससे रेलमें सवारहोकर–

सेंदापेंठ–सेंट थामस माउट–(फरमकुंडा)–पलावरम–वंडलूर–गुडा चेरी–सिंगापेरमाल कोइल–चिंगलपेठ–कोलेतुरनोर्थ–पडलम–करन- गुंजी–मदुरांतकम–अचरपाकम–परेमवेर–ओलकुर–दिंडीवनम–मेल- म–पेंरानी–विक्रावंडी–वेलुपुरम जकशन–सरडानुर–पानरुटी–मेलप- टमवाकम–नेलीकुपम–कडलूर––अलेपाकम––पुदुछतरम–पोर्टोनोवो– किले–चिदंवरम–कोलेरुन–अरसुर–सियाली–वेथीस वरीनकोइल– आतंडवपुरम–मायावरम जकशन–कटलाम-नरासिगनपेंठ-अदुतुराइ– तिरुवडामारुडु–कुंभकर्ण–दरसुरम–सुंदरा पेरमालकोइल–पापनाशम पंडरावडाइ–एयमपेंठ–और–तिट्टी–टेशन होतेहुवे तंजुर जंकशन उत रना,–अगर शहर देखना मजुरहोतो देखना, वरना ! आगेकों रवा- नाहोकर अलाकुडी–वुडलुर–सोलागमपेटे–और–तिरुवेरमवुर होते– शहर–त्रिचनापल्ली जाना,

☞ [वीच बयान शहर–त्रिचनापल्ली और मदुरा,]

शहर मद्राससे (२४९) मील दखन पश्चिमकी रुखपर कावे- री नदीसे एकमीलके फासलेपर त्रिचनापली एक पुराना शहरहै, टेशनसे थोडीदुर आगे वढनेसे शहरकी आवादी शुरुहोगी, मद्रासस जो–पैदल सडक कन्याकुमारीको गइहै त्रिचनापल्ली होकर गइहै. सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमे त्रिचनापलीकी मर्दुमशुमारी (९०६०९) मनुष्योंकी थी, वाजार खुशनुमा–जिसमे तरह तरहकी चीजे रेशमी कपडे–और–माल असवाव मिलता है, चित्रकारीका काम यहां लाइक तारीफके होताहै, और सोना चादीके गेहने उमदा वनते है, तमाखुकी पैदाश यहा ज्यादह–और–खानपानकी चीजे अछी मिलती है,–जैनश्वेतावर श्रावकोकी आठ दश दुकाने यहा मौ- जूदहै, यात्रीको अगर शहरमें जाना मंजूरहो–तोजाय, वरना ! आगेको रैलमें सवार होकर–कोलातुरसाउथ–समुदरम–मनापराइ–

ययामपट्टी-नंदुपटी-अय्यालुर-वडामदुरा-दिंडीगल-अंबातुराइ-कोडेकनालरोड-अमायानायकनुर-वाडीपटी-सोलावंडन--और-समायनाल्लूर-होतेहुवे मदुराटेशन जाय,-

मद्राससे (३४५) मील दखन पश्चिमकी रुखपर वैगानदीके दाहने कनारे मदुरा एक पुराना शहरहै, आवश्यक सूत्रवृत्तिमे-जो-दखन मथुरा लिखी है-वो यहीहै, पेस्तर यहां पांडववंशके राजा राज्य करतेथे सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त मदुराकी मर्दुमशुमारी (८७४२८) मनुष्योंकी थी, करीब टेशनके धर्मशाला बनीहुइहै बाजार अछा-और-हरेकाकिसमकी चीजे यहांमिलसकती है, सुनहरी किनारीदार-पघडी-दुपटे-और-साडी-यहां अछीबनती है, एकदो-दुकाने-मारवाडी श्रावकोकी यहांपर मौजूदहै, जिलेमदुराके उत्तरतर्फ कोयंबतुर-त्रिचनापली-और-जिला तंजोरहै, पूरव और-पूरव दखनकी रुखपर समुंदरकी खाडी-दखन और दखन पश्चिम- तिरुनलवेली जिला. और पश्चिम-त्रिरुवांकुरका (यानी) त्रावनकोरका राज्यहै, मदुरासे एकरैलवे लाइन रामेश्वरको-और-एक लाइन-तुतीकोरिनको गइहै, यात्री लंकातर्फ जानेकेलिये तुतीकोरिनकों जाय, मदुरासें रैलमें सवारहोकर-पसुमलाइ-तिरुपरानकुंडरम-कापलुर-तिरुमंगलम-सिवराकोट--कालिगुडी--विरुदुपटी-सुलाकरे-तुलुकापटी-वेपीयालीपटी छतरम-सेतुर-नली-कोयलपटी नलटीनपुतुर-कुमारपुरम-कदंबुर-देवलंगल--मनीयाचीं जकशन-तातापराइ-मिलावितन-और-तुतीमेलुर होते तुतीकोरिन टेशनजाय मद्राससे तुतीकोरिनतक-रैलकिराया-मेलटेनका चाररुपये पनराह आने लगते है,—

☞ [तुतीकोरिन,]

मदुरा टेशनसे (८१) मील दखन मनीयार्ची जक्शन–और–मनीयार्चीसे (१८) मील दखनपूरबकी रुखपर–तुतीकोरीन नामका रेलवे टेशनहै, द्रविडिनलोग उसको–तुतुगुडी–कहते है, और अंग्रेजी जबानमें तुतीकोरिनके नामसे मशहूरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त तुतीकोरीनकी मर्दुमशुमारी (२५१०७) मनुष्योंकी थी, पेस्तर तुतीकोरीन वडाशहरथा, वाजार यहांका खुशनुमा–और–हरेककिसमकी चीजे यहापर मिलसकती है, जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी यहा नही,–न–कोइ–जैनश्वेतावर मदिरहै यहापर समुंदरमेंसे–मोतीकीसीपें–और शख निकालेजाते है. और समुदर कनारे वडेवडेजहाज-और ष्टीमरे आतीजाती है, अगर यहासे कोइशख्स लकाटापुके कोलवो शहरकों जानाचाहे–तो–ष्टीमरमें सवार होकर समुदरके रास्ते जासकते है, किराया थर्डक्लास पासेंजरके लिये तीनरुपये–छपाइ लगताहै,—

☞ [तवारिख–लका,]

लका टापुकों पेस्तरके शास्त्रोंमें सिहलद्वीप लिखाहै, जैन रामायनमें लकाकी तवारिख इसतरह वयान किइहैकि–तीर्थंकर अजितनाथ महाराजके जमानेमें एक– घनवाहन नामका विद्याधर राजा लकाके तख्तपर अमलदारी करताथा, जोकि–निहायत दिलेर और तमामदर्था, उसकी सलतनत और अदल इन्साफ लाइके तारीफथा, जब उसका इतकालहुवा लकाके तख्तपर उसका वेटा तख्तनशीन हुवा, और अमलदारी करनेलगा, इसतरह कइराजे एकपीछे एक लकाके तख्तपर होतेरहे, वयान उसका वहुतहै यहा कहातक लिखे जब तीर्थंकर मु[illegible] [illegible]का जमाना दरपेश हुवा लकाके

तख्तपर उस विद्याधर वंशका रत्नाश्रव नामका राजाहुवा, जिसकी रानीका नाम–केकसी–था, उसके शिकमसे–रावन–नामका लडका पैदाहुवा एकरोजकी वातहै नवहीरोका–हार–जोकि–रावनके वडेरोकों देवताकी तर्फसे मिलाथा रावनने अपने गलेमें पहना, तव उस हारके हीरोकी रौशनीसें रावनके दस मुख नजर आनेलगे, असलमें मुखतो एकहीथा मगर हीरोंकी परछाइसे दशमुख दिखलाइ देतेथे, इसी सववसे रावनका नाम दसमुख कहलाया, जवजव–वह–हार–पहनाकरताथा उसके दसमुख दिखलाइ दियाकरतेथे–और–जव–नही–पहनताथा एकही–मुह–नजर आताथा,

जव–राजा रत्नाश्रवने वफात पाइ रावन लंकाके तख्तपर वेठा, और उसकी सलतनत वढतीगइ, वडेवडे राजे महाराजे उसके फरमावरदार हुवे, लका–निहायत खूवसुरत और झलाझल रौशनी लियेथी वडवडे आलीशान मकानात उद्यान–वनखड–और–वाग वगीचे यहांथे, मकान मकानपर सोनेके कलस–और–धजा पताका लगीरहतीथी, सुनहरी चित्रकारी और नक्शका काम निहायत उमदा वनाहुवाथा, वडेवडे वाजार और वेंशुमार दौलतथी, विद्याधर वंशकी आवादी होनेसे उसवख्तके लोग विद्या वलसे आस्मानमे सफर करतेथे,

रामचंद्रजी और लछमनजीका रावनके शाथ यहा वहुत भारी जंग हुवाथा, वजह उसकी यहहैकि–जव–रामचंद्रजी–लछमनजी–और–सीताजी–अयोध्यासे वनवासके लिये रवाना होकर दडकारन्यमें आयेथे रावनने सीताजीके रुपकी तारीफ सुनी, और उसको लेनेके लिये आमादा होकर लंकासे आस्मानके रास्ते दडकारन्यमें आया, और जव रामचंद्रजीकी गेरहाजरीका मौका पाया सीताजीको उठाकर लेगया रामचद्रजी और लछमनजी जव अपने डहरेपर

आये और तलाशकिइ–तो–सीताजीको–नही पाया, वहुत उदासहुवे और तलाश करते करते किष्कधानगरी पहुचे, वहां सुग्रीवसे मुलाकातहुइ, और दरयाफ्त करनेसे मालूमहुवा कि–सीताजीकों–रावन–लंकामें लेगयाहै, रामचंद्रजी–लछमनजी–वडी तयारीके शाथ लंका पहुचे, उनके शाथ-वरविराध-सुग्रीव-हनुमान–भामंडल-अगदनलनील वगेरा वडेवहादूर और जमामर्द योद्धेथे, इधर विभीषण–जोकि–रावनका छोटाभाइथा सीताजीके वारेमे रावनकी वेइन्साफीसे रुठकर रामचद्रजीकेशाथ आमिला, रावन अपनीवडी फौज हमरा लेकर जिसमें–कुभकर्ण–इद्रजित–हस्त–प्रहस्त–वगेरा वडेवडे वहादूर योद्धे मौजुदथे–रामचद्रजीके सामने आया, और वडाभारीजंग शुरु हुवा वडेवडे योद्धे अपनी जानपर खेलगये मगर पीछाकदम नही किया, एक रौज क्या–महिनोतक जगहोतारहा, मगर शर्त यहथी कि–वाद–आफताव–गुरुव होनेके लडाइ मौकुफ होजाय और शुभह होनेपर फिर शुरुहो, एकरौज अैसाभी मौका आयाथाकि–रावनकी अमोघ शक्तिकी जरवसे लछमनजी वेहोश होकर गिरपडेथे, मगर दुसरेरौज फिर होशियार होकर सग्राममें आयेथे, और घोरसंग्राम कियाथा, कहातक उसकाजिक्र वयानकरे जितना लिखो थोडाहै, आखीरकार रामचंद्रजीकी फतेहहुइ और रावनने सिकस्त खाइ, रामचंद्रजी और लछमनजी वडे जुलुसकेशाथ लंकामें गये और अपनी सीताजीकों वापिसलिइ, लकाका राज्य विभीषणको दिया, रामचद्रजी और लछमनजी जैसे वहादूर और जमामर्द शख्श वहुत कम निकलेगे. उसजमानेमे किसी दुसरेकी ताकात नहीथीकि–रावनपर–फतेहपावे.

लंकामें उसवख्त जैनधर्मका वहुत प्रचार था, और तीर्थकर शांतिनाथ महाराजका वुलंदशिखरवंद आलिशानमदिरभी वनाहुवा

था, यहबात जैनशास्त्रोसे सावीत है,-गौतमबुद्धके जमानेमे वौधधर्मका प्रचार लंकामे था यहबात वौध मजहबके शास्त्रोसे सावीत है, जमाने हालमे तुतीकोरिन बंदरगाहसे दखनपूरवकी रुखपर लंकाटापुका सदरमुकाम कोलंबो एक मशहूर शहर है, और तुतीकोरिनसे कोलंबोतक ष्टीमर आताजाता है, इसटापुके लंका होनेमें किसीतरहका शक-वा-शुभहा-नही, क्यौंकि-उधर दुसरा कोइ ऐसाटापु नहीकि-जिसको-लंका समझे, अलबते! रावनके जमानेमे ज्यादह तरकीपर था, यहबात पेस्तर जमानेके शास्त्रोसें सावीत है, मुसलमानलोग इसकानाम-सरंद्वीप-कहतेहै, प्राचीन युनानी ग्रंथोमे-टोपरोवेन-(यानी)-रावनका टापु लिखा है, और अंग्रेजी जवानमें सिलोन कहते है, आजकल इसटापुमे-कोलंवो-निंगपू-जाफना-कलतूरा-चिकामली-कांडी-और-अनिरुद्ध-ये-मशहूर शहर है, लंकाटापुमें इसवख्त वडी नदी-महावली गगा है, जो-करीव (२००) मील लंवी और उसमे-नाव-वेडे-चलते है, नवारा एलिया नामका एक पहाड-जो-समुदरके पानीसे (६२००) फीट ऊचा-और-वहांकी आवहवा उमदा है, कोलंवोसे वहातक रैलजारी है-जो-नवघटेमें जाकर पहुचा देती है, लका टापुमें-दारचीनी-काली मीर्च-काफीचाय-औ-इलायची इफरातसे पैदा होती है, और-अकीक-पुखराज-शगेयशव-तुरमेलीन-निलम-लसनिया-गोमेदक-और-विल्लोर-यहांकी खानोसे निकलते है, हाथीयोंकी पैदाश यहा कसरतसे देखोगे-जिनकी-मजवूती-और-चालाकीकों-दुसरे जगलोके हाथी -न-पासकेगे, शंखभी यहांके समुंदरमेसे वहुत निकला करते है, नारीयल-और-सुपारी यहा कसरतसे हुवा करती है, लोहा-और-फिटकरीकी खानेभी इसटापुमे मौजूद है, आवहवा-यहांकी-उमदा, और यहाके वाशिदोंको अकसर सिंहली कहा करते है, पेस्तर यहां

जवान संस्कृत वोली जातीथी, इसटापुमें कोलंवो शहर वडानामी है,-चीन-जापान-ववइ-कलकत्ता वगेराकों यहांसे ष्टीमरे जाती है क्योंकि-वंदरगाह वडा है, लंकाटापुमें जमाने हालमें अंग्रेजसरकारकी अमलदारी जारी है, और लोग अमनचेन कररहेहै,-

तुतीकोरिनसे वापिस रेलमे सवार होकर-त्रिचनापल्ली जंकशन आना, रास्तेके टेशन पेस्तर लिख चुके है, किराया-दोरुपये-दोआने मेलट्रेनके लगेगे, वयान त्रिचनापल्लीकाभी-अवल देचुके है, त्रिचनापल्लीसे रेलमें सवार होकर-त्रिचीपलाकरे-त्रिचनापल्लीफोर्ट-श्रीरंगमरोड-मुरगापेटे-तिरुचचंदरे-एलामनुर-पेरुगामनी-पेटाइवायातालाइ-मरुडुर-कुलीतलाइ-तिमाचीपुरम-लालापेट-महादनपुरम-कतलाइ-पुलीयुर-सनप्पीरटी-कारुर-पुगलुर-नायल-कुडीमुडी-उंजलुर-कालानली-पामुर-और-चवाडी पालियम होते इरोड जंकशन आना, रेलकिराया पनराआने लगेगे —

☞ [वयान-इरोड-कोचीन-और-कलिकोट,]

त्रिचनापल्लीसे (८८) मील पश्चिमोत्तर मुतस्सिल कावेरीनदीके इरोड एक उमदा कस्वा है, कस्वेसे मीलसवामीलके फासले पूरवकी तर्फ कावेरीनदीपर (१५३५) फुटलवा-जिसमे-(२१) मेहरावें लगी है एक-पुल-वधा है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त इरोडकी मर्दुमशुमारी-(१७३३०) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतावर श्रावकोंकी दुकाने तीनचार यहापर मौजूद है, कस्वाइरोड खुशनुमा और-रुइ-चावल-हलदी वगेरा चीजोंकी तिजारत यहा अछी होती है, इरोडसे एक पैदल सडक-करुर होती हुइ महीसुरकों गइ है, इरोडसें एक रैलवे लाइन-कोचीन-कलिकोट-और-मगलोरतर्फ गइ है, और एक लाइन-सेलम-जालारपेठ-होती हुइ-वेंगलोरतर्फ आइ है,

था, यहबात जैनशास्त्रोसे साबीत है,-गौतमबुद्धके जमानेमें बौधधर्मका प्रचार लंकामे था यहबात बौध मजहबके शास्त्रोसे साबीत है, जमाने हालमे तुतीकोरिन बंदरगाहसे दखनपूरबकी रुखपर लंकाटापुका सदरमुकाम कोलंबो एक मशहूर शहर है, और तुतीकोरिनसे कोलबोतक ष्टीमर आताजाता है, इसटापुके लंका होनेमें किसीतरहका शक-वा-शुभहा-नही, क्योंकि-उधर दुसरा कोइ अैसाटापु नहीकि-जिसको-लंका समझे, अलबत्ते! रावनके जमानेमे ज्यादह तरकीपर था, यहबात पेस्तर जमानेके शास्त्रोसे साबीत है, मुसलमानलोग इसकानाम-सरद्वीप-कहतेहै, प्राचीन युनानी ग्रंथोमे-टोपरोबेन-(यानी)-रावनका टापु लिखा है, और अंग्रेजी जबानमें सिलोन कहते है, आजकल इसटापुमे-कोलंबो-निंगपू-जाफना-कलतूरा-चिकापली-कांडी-और-अनिरुद्ध-ये-मशहूर शहर है, लंकाटापुमे इसवख्त बडी नदी-महावली गंगा है, जो-करीब (२००) मील लंबी और उसमे-नाव-बेडे-चलते है, नवारा एलिया नामका एक पहाड-जो-समुदरके पानीसे (६२००) फीट ऊचा-और-वहांकी आवहवा उमदा है, कोलंबोसे वहातक रेलजारी है-जो-नवघटेमें जाकर पहुचा देती है, लंका टापुमे-दारचीनी-काली मीर्च-काफीचाय-और-इलायची इफरातसे पैदा होती है, और-अकीक-पुखराज-शगेयशब-तुरमेलीन-निलम-लसनिया-गोमेदक-और-बिल्लोर-यहाकी खानोसे निकलते है, हाथीयोंकी पैदाश यहां कसरतसे देखोगे-जिनकी-मजबूती-और-चालाकीको-दुसरे जगलोके हाथी-न-पासकेगे, शखभी यहाके समुंदरमेसे बहुत निकला करते है, नारीयल-और-सुपारी यहा कसरतसे हुवा करती है, लोहा-और-फिटकरीकी खानेभी इसटापुमें मौजुद है, आवहवा-यहांकी-उमदा, और यहांके बाशिंदोको अकसर सिंहली कहा करते है, पेस्तर यहां

जवान संस्कृत वोली जातीथी, इसटापुमें कोलवो शहर वडानामी है,-चीन-जापान-ववइ-कलकत्ता वगेराकों यहांसे ष्टीमरे जाती है क्योंकि-वंदरगाह वडा है, लकाटापुमें जमाने हालमें अंग्रेजसरकारकी अमलदारी जारी है, और लोग अमनचैन कररहेहै,-

तुतीकोरिनसे वापिस रेलमे सवार होकर-त्रिचनापल्ली जकशन आना, रास्तेके टेशन पेस्तर लिख चुके है, किराया-दोरुपये-दोआने मेलट्रेनके लगेंगे, वयान त्रिचनातल्लीकाभी-अवल देचुके है, त्रिचनापल्लीसे रैलमें सवार होकर-त्रिचीपलाकरे-त्रिचनापल्लीफोर्ट-श्रीरंगमरोड-मुरगापेटे-तिरुचचदरे-एलामनुर-पेरुगामनी-पेटाइवायातालाइ-मरुडुर-कुलीतलाइ-तिमाचीपुरम-लालापेट-महादनपुरम-कतलाइ-पुलीयुर-सनप्पीरटी-कारुर-पुगलुर-नायल-कुडीमुडीउजलुर-कालानली-पासुर-और-चवाडी पालियम होते इरोड जकशन आना, रैलकिराया पनरांआने लगेंगे —

☞ [वयान-इरोड-कोचीन-और-कलिकोट,]

त्रिचनापल्लीसे (८८) मील पश्चिमोत्तर मुतस्सिल कावेरीनदीके इरोड एक उमदा कस्वा है, कस्वेसे मीलसवामीलके फासले पूरवकी तर्फ कावेरीनदीपर (१९३५) फुटलवा-जिसमे-(३२) मेहरावें लगी है एक-पुल-वधा है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त इरोडकी मर्दुमशुमारी-(१२३३०) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी दुकाने तीनचार यहापर मौजूद है, कस्वाइरोड खुशनुमा और-रुइ-चावल-हलदी वगेरा चीजोकी तिजारत यहां अछी होती है, इरोडसे एक पैदल सडक-करुर होती हुइ महीसुरकों गइ है, इरोडसें एक रैलवे लाइन-कोचीन-कलिकोट-और-मगलोरतर्फ गइ है, और एक लाइन-सेलम-जालारपेठ-होती हुइ-वेगलोरतर्फ आइ है,

जिनकों-कोचीन-कलिकोट तर्फ जाना हो-उधरको जावे, और जिनकों-बेंगलोर तर्फ आना हो-बेंगलोर तर्फ आवे,—

इरोडसे-कोचीन जानेके लिये-पोदनुर-उल्लाकोट-और-शौरनुर होती हुइ-जो-रैलवे लाइन गइ है उसमे सवार होकर कोचीन-जाय, टेशनसे करीब आध मीलतक ष्टीमरमे बेठकर सामने कनारे जाया जाता है, किराया देढआना लगेगा. इरोडसे कोचीन तकका रैलकिराया, दो-रुपये-छ-आने लगेगे.

☞ [कोचीन]

मद्रास हातेके जिले मलेबारमें कोचीन-एक अछा कस्बा है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त-कोचीनकी-मर्दुमशुमारी (१७६०१) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी-और-मंदिर यहांपर बना हुवा है, बाजार खुशनुमा-जिसमें-हरेक किसमकी चीजे मिलसकती है, समुदरके कनारे एक-लाइटहाउसभी मौजूदहै, कोचीनको मलबारी लोग-कोची-बोलतेहै, इर्दगिर्द कोचीनके-नारियल-केले-कालीमीर्च-कपुरकाचली-पान-साग-कटहल-सोठ और-सुपारी वगेरा चीजे ज्यादह पैदा होती है, जगह सोहावनी-बडे बडे द्रख्तोके झुंड-और-जंगल पडे है, कोचीनसे अलपाइ करीब (३०) कोसके फासलेपर वाके है, और छोटी ष्टीमरमें बेठकर समुंदरके रास्ते जाया जाता है. किराया ष्टीमरका आठआने लगेगे, जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर दसबारां और एक मदिर यहांपर तामीरहै, धर्मशाला-एक-समुदर कनारे मौजूद है, यात्री उसमे कयाम करे, और जैनमंदिरकी जियारत करे, अलपाइमें-नारियलकी रसी बहुत बनाइ जाती है. कोचीनसे एक ष्टीमर सिलोनकों जाती है, तुतीकोरिनसे ष्टीमरमें सवार होकरकेभी-कोचीन-आसकते है, अगर क-

लिकोटसेंभी वजरीये ष्टीमरके कोइ-कोचीन-आनाचाहे-तो-अ
कते है, समुदरका रास्ता दोनों तर्फसे है, कोचीनके पास समु
कनारे करीब (१॥) कोसके फासलेपर जहाजकी-लगर-ड
जाती है, कोचीनसे शौरनूरआकर कलिकोट जाना, रैलकिर
शौरनूरसें कलिकोटतक ग्यारहआने,

☞ [कलिकोट,]

मद्रास हातेके पश्चिमघाटपर जिले मलवारके कनारे-कलिक
एक पुराना शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त क
लिकोटकी मर्दुमशुमारी (६६०७८) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतावर श्रा
कोकी आबादी और एक मदिरभी यहापर बनाहुवाहै, बाजा
उमदा और हरेक किसमकी चीजे यहा मिलसकती है, आसपा
कलिकोटके-नारियल-कालीमीर्च-केले-और-सोंठ वगेरा चीजे क
सरतसे हुवा करती है, जगह खुशनुमा-कटहेल-और-नारियलके
दरख्तोके झुड-खडे है, समुदरके कनारे लाइटहाउस बनाहुवाहै, स
रकारी कचहरिया-अस्पताल-बैंक-और-स्कुल वगेरा पुख्ता इमा-
रते बनीहुइ मौजूदहै, आबहवा यहाकी अछी और तदुरस्ती बढा-
नेवाली है,—

जोशख्श इरोडसे रैलमें सवार होकर-कोचीन-कलिकोट जा-
ना-न-चाहे-वह-जोलारपेठ होते बेंगलोर तर्फ आवे, इरोडसे रे-
लमे सवार होकर-कावेरी-अनगुर-सकारीदुग-मेकडोनाल-चोल-
टरी-अरियेलुर-सेलम-तिन्नापटी—काडीमपटी-लोकुर--मलापरम-
तुडीरेडीपटी-मोरापुर--काल्लवी-समलपटी-कगनकरे-और-तिरुपा-
तुरहोते जोलारपेठ-जकशन आवे रैलकिराया मेलट्रेन एकरुपया सात
आने लगेगे,-जोलारपेंठ एक छोटासा कसबाहै, मगर रैलेका
जकशन होनेसे मशहूरहै,—

जोलारपेठसे रैलमें सवारहोकर-पत्तुर-मलनुर-कुपम-गुडु-पल्ली-विसानथम-कामसमुंदरम-वोरिंगपेठ-टेकल--माल्लुर-देवनकुंडी वाहिटफिल्ड-कृश्नराजपुरम-और-बेंगलोर छावनी होते-बेंगलोर सीटीटेशन उतरना, रैलकिराया मेलट्रेन एकरुपया दोआने लगेगे,

☞ [वयान-शहर-बेंगलोर,]

जोलारपेठसे (८७) मील-और-मद्राससें (२९१) मील पश्चिमकी रुखपर बेंगलोर एक वडा शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त बेंगलोरकी मर्दुमशुमारी मयफौजी छावनीके (१८०३६६) मनुष्योंकी थी, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मंदिर यहां वनाहुवाहै, बेंगलोरशहर-दो-हिस्सोंमे तकसीमहै, एक-पेठ-और-दुसराछावनी (यानी) लशकर कहलाताहै, लशकरके मुत्तस्सिल महीसुरमहाराजका एक-आलिशान महलवना हुवा-जोकि-काविल देखनेकेहै, और यहा एक पुराना किलाभी मौजूदहै, दरमियान पेठ-और-लशकरके कुछ दुरपर घुडदोडका मैदान-वडालंवाचौडाहै-वाजार वहुत उमदा-और-रवन्नकदार जिसमे हरेककिसमका-रेशमी-सूती-कपडा-मालअसवाव-जोचाहो-वखूवी मिलसकता है, वनिस्वत दुसरे शहरोंके यहा तरहतरहकी वनास्पति-और-फलफलारी इफरातसे मिलसकती है, लशकरमे आलिशान मकानात-और-सडके लंवीचोडी देखोगे, अनाज-और-रुइकी तिजारत यहा कसरतसे हुवाकरती है, यहां-अलसुर-और-मिल्लर-नामके दो-तालाव नामी है, इनदोनोंके दरमियानकी जमीनमें लशकरका वाजार और- मकानात वनेहुवे है, यहाका रेशम वहुत मजवूत-और-उमदा होताहै,-रेशमी किनारीके सूतीकपडे यहा अछे वनाये जाते है, बेंगलोरके गालीचे नामी-और-सोनाचादीके लैस यहा लाइक तारीफके वनते है, लालवाग यहा एक काविल देख-

नेकी जगहहै, जिसमें तरहतरहकी चीजे-और-नमुने-रखेहुवे-
नाचे-गहने-पुशाक-सिके-हथियार-वगेरा-तरहतरहकी चीजे
हिफाजतसे-रखीहुइहै, लालबाग यहाका एक मशहूर जगहहै जिस
तरहतरहके फल और फुलकेद्रख्त-लगेहुवे-और-चारपाये जानव
रोमे-शेर-हाथी-चीते-रीछ-बदर-हिरनवगेरा मौजूदहै, परीदोमें
तोते-मना-कबूतर-और-रकमरकमकी चीडिया वगेरा रखीहुइहै
बेंगलोरसे एक पैदलसडक-जोलारपेठ होतीहुइ मद्रासकों गइहै
एक-पश्चिम-और कुछदखन श्रीरंगपट्टन होकर-कनेनुरकों-गइहै,-
एकसडक पश्चिमतर्फ-मेंगलूरको-गइ, और-एकसडक-टुमकुर-हरि
हर-हुबली-बेलगांव होतीहुइ-कोलापुर-और-पुनाकों गइहै,—

बेंगलोरसेरेलमे सवारहोकर-यशवंतपुर-यलहका-रासनकुटी-
डुडबालापुर-मकलीगड्ग-ठंडीभावी-गोरीबीदनुर-डडकुल्गाड-
हिंदुपुर-मल्लुगर-चाकरलापल्ली-पेनुकुंडा-मकाजीपद-नागसमुदरम-
धरमावरम-कडुकुर-अनंतपुर-गरलाडीनी-कुलुरु-पामीडी-खाद-
रपेठ-और-गुलापलीयामु-होते-गुटकलजंकशनआना, रैलकिराया
-दो-रुपैयाचार आने नवपाइ, गुटकल एकछोटासा कस्बाहै मगर
रैलकाजंकशन-होनेकीवजहसे मशहूरहै, गुटकलसे रैलमेंसवारहोकर-
वंटनाहाल-बेंवाहाल-विरापुर-और-हगरी-होतेहुवे-बल्लारीजंकशन
आना रैलकिराया सातआने नवपाइ,

☞ (दरवयान-शहर-बल्लारी-और-किष्कधा,)

गुंटकजंकशनसे (३०) मील पश्चिमकी रुखपर जिलेकासदर
मुकाम-बल्लारी-एकरैलवेका टेशनहै, सन (१८९१) की-मर्दुम-
शुमारीकेवख्त बल्लारीकी मर्दुमशुमारी मयछावनीके (५९४६७)
मनुष्योंकी थी, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी-आबादी और मंदिरभी
यहांपर मौजूदहै, कस्बा बल्लारी दामनमें बसाहुवा बाजार रव-

न्नकदार-और-हरकिसमकीचीजे यहांपर मिलसकेगी, आबहवा, यहांकी उमदा-और-जिले बल्लारीमें-नमक-सौरा-ज्यादहपैदाहोताहै, यात्री बल्लारीमे जानाचाहे शोखसे जाय और देखे, वरना ! आगेकों रवानाहोवे, बल्लारीसे रैलमें सवारहोकर बल्लारीकंटोन्मेंट-कुडाटीनी-दाराजी-टोरंगल्लु-गदीगनुरु-पापीनायकनहल्ली--होतेहुवे होस्पेट-जकशनउतरना, रैलकिराया चारआने,

बल्लारीसे (४१) मीलके फासले पश्चिमउत्तरकी रुखपर होस्पेट एकरैलवेका टेशनहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवख्त होस्पेटकी मर्दुमशुमारी (१२८७८) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी चारपांच दुकाने-यहापर मौजूदहै,-मजीष्ट्रेकी कचहरी-स्कुल-अस्पताल-वगेरा यहांपर बनेहुवे है, होस्पेटसे करीव (७) मीलके फासलेपर-किष्कंधा-एकपुरानाशहरहै, रामचंद्रजीके जमानेमें यहां सुग्रीवनामका राजा सलतनत करताथा, और रामचंद्रजी-लछमनजीभी-जबकि-लंकायुद्धको--गयेथे-यहातशरीफ लायेथे-जैनरामायणमें लिखाहैकि-जमानेसुग्रीवके किष्कंधा-वडीरवन्नकपर थी, बागवगीचे-उद्यान-वनखंड-राजमहेल-और-आलिशान मकानात यहा वनेहुवेथे, और वडेवडे दोलतमंद वाशिंदोसे सरगर्मथी. जबकि-साहसगति विद्याधर और सुग्रीवका यहा-ताराराानीकेलिये जगहुवाथा-रामचंद्रजी और लक्ष्मणजी यहा सुग्रीवकीमददकों-आयेथे और उनकी फतेहहुइथी, पेस्तरयहा तीर्थंकर शातिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थथा, जमानेहालमें वरबादहोगया, आजकल किष्कंधाभी छोटासा कस्बारहगयाहै यात्री अगर किष्कंधानगरी देखना चाहे-तो-जाय और देखे, वरना ! होस्पेटटेशनसे रैलमें सवारहोकर-मुनीराबाद-जिनीगिरा-कुप्पल-भानापुर-बन्नीकुप्पा-हरलापुर कगीनहाल-होते-गदकजकशन जाय रैलकिराया नवआने लगतेहै.

☞ [वीचवयान–गदक–और–हुवली धारवाड,–]

गुंटकनजंकशनसे–(१२३) मील पश्चिम कुछ उत्तर जिलेधारवाडमे–गदक–एक अछाशहरहे, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त–गदककी मर्दुमशुमारी (२३८९९) मनुष्योंकीथी. जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मदिर यहापर मौजूदहे, बाजार खुशनुमा–और–हरेककिसमकी चीजे यहां मिलसकतीहै, रुइ–और रेशमकी तिजारत यहा अछीहोती है, गदकसे–यात्री–रैलमें सवारहोकर–हालकोटी–अन्नीगिरि–डंडुर–और–कुसुगलहोते––हुवलीजंकशन–जाना, रैलकिराया–छ–आनेलगेगा,

जिलेधारवाडमें–हुवली–एक अछाशहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारी (५२५९५) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतावर श्रावको की आवादी और मदिर यहांपर मौजूदहै, यात्री शहरमेंजाय और जियारतकरे, सरकारी कचहरिया–अस्पताल–और––स्कुलवगेरा मकान यहा पुख्ता वनेहुवेहै, वाजार रवनकदार–और हरेककिसमकीचीजे यहापर मअस्सर आसकतीहै, अनाज–नमक–रेशम–औररुइकी तीजारत यहां अछीहोती है, हुवलीसे रैलमें सवारहोकर अमरगोल होते धारवाड जकशन जाना, रैलकिराया अढाइआने लगेगा,

☞ [धारवाड,]

हुवलीजकशनसे (१२) मील पश्चिमोत्तर जिलेका सदरमुकाम धारवाड एक–रैलवेका जकशनहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त धारवाडकी मर्दुमशुमारी (३२८४१) मनुष्योकी थी. जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मदिर यहापर मौजूदहे, किला धारवाडका लाइकतारिफके वनाहुवा, अदर दिवारके और वहारवारभी ७. ।‍ल ।हुइ२‍९, वाजार यहाका अछा औ–

हरेकचीज यहांपर मिलसकेगी, यात्री शहरमे जानाचाहे शौखसे जाय और जैनश्वेतांबर मदिरकी जियारतकरे, धारवाडसे रैलमें सवारहोकर-मुगद-कावरगंवी-अलनावर--तवरगटी-नगरगल्ली-देवराइ-लोंडा-गुंजी-खानापुर-देसुर-होतेहुवे वेलगांव-आना, रैलकिराया एकरुपया,

(वेलगांव.)

जिलेका सदरमुकाम वेलगाव एकअच्छा शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमें वेलगांवकी मर्दुमशुमारी मयफौजी छावनीके (४०७३७) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर यहापर वनाहुवाहै, इर्दगिर्द वेलगांवके द्रख्तोकी वहुतायत और एककिलाभी यहांपर मौजूदहै; वाजार उमदा हरेककिसमकी चीजे यहांपर मिलसकेगी, यात्री शहरमें जानाचाहे-तो-जाय और देखे, सरकारी कचहरियां-अस्पताल-और-स्कुल वगेरा मकानात, किंमती वनेहुवेहै, नमक-और-नारियलकी तिजारत यहांअछी हुवाकरती है और शहर काविल देखनेकेहै, वेलगांवसे रैलमें सवार होकर-सुलेभवी-सुलधवल-पछापुर--और-धुपडलहोते-गोकाक-रोडटेशन आना, रैलकिराया साढेसात आने,

[गोकाक,]

गोकाकरोडटेशनसे करीव (४) मीलके फासलेपर-गोकाक-एक-छोटासा कस्वाहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त गोकाककी मर्दुमशुमारी (१२७०६) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर यहापर मोजूदहै, गतपर्वनदीकी धारा (१७९) फीट उपरसे वतौरचादरके गिरतीहै, गोकाक कस्वेके नजदीकहोनेकी वजहसे उसकानाम गोकाकका जलमपात मश-

हुवेहै, बाजार गोकाकका अछा और हरेककिसमकी चीजे यहा मिलसकेगी, गोकाकरोडटेशनसे रैलमें सवारहोकर-चीकोडीरोड-रायबाग-चीचली-कुडछी-सेडवाल-मीरज-बुधगांव--तासगांवरोड कुंडलरोड-तकारी-शेनोली--करड--मसुर-आरवीरोड-रहमतपुर-और-कोरेगांवहोतेहुवे-सितारारोडटेशन आवे रैलकिराया एकरुपया सवाग्यारहआने लगेगा,—

☞ [सितारा,]

सितारारोडटेशनसे (१०) मीलकेफासले पश्चिमकी रुखपर जिलेकासदरमुकाम-सितारा-एकपुराना शहरहै, दरमियान टेशन और सितारेके पक्कीसडक वनीहुइ, और सवारीके लिये इक्कावगी मिलसकती है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त-सितारेकी-मर्दुमशुमारी मयफौजी छावनीके (२९६०१) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मदिर यहापर मौजूदहै, सडके लंबीचोडी और मकानात पुरानी वजहकेहै, सरकारी कचहरियां-अस्पताल-हाइस्कुल वगेरा मकान पुख्ता वनेहुवे है, और किलाभी सितारेका एक पहाडीपर वनाहुवाहै, यात्री सितारा जानाचाहे-तो-जाय और देखे, वरना ! सितारारोडसे रैलमें सवारहोकर-वथर-(यहांसे महावलेश्वर जानेकारास्ताहै,)-अडारकी-सलपा-लोनंद-नीरा-वाल्हे-जेजुरी-राजेवाडी-अलंदी-फुरसंगी-ससवद-रोड-और-घोरपुरीहोते पुनाजंक्शन आना, रैलकिराया सवासोलह आने लगते है,

☞ [तवारिख-शहर-पुना,]

सितारारोड टेशनसे (७८) मील उत्तर-और-रंनइसे (११९) मील दखनपूरवकी रुखपर-पुना-एक-गुलजार शहर है,-टेशनसे

थोडीदुरपर शहरकी आवादी शुरुहोती है और-सवारीके लिये-इक्का-वगी-तयार मिलतीहै, करीब टेशनके एक धर्मशाला वनीहुइहै मगर जैनश्वेतांवर यात्रीकों शहरमें जाना मुफीदहै, शुक्रवार पेंठमें जैनधर्मशाला जहां मौजूदहै, उसमे कयामकरे, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त पुनाकी मर्दुमशुमारी मयछावनीके (१६१३९०) मनुष्योकीथी, दरमियान छावनी और शहरके सरकारी ओफिसे वगेरा मकानात वनेहुवे है सवारीके लिये इक्का-वगी-हरजगह तयारमिलती है, आदितवारपेठ-वुधवारपेठ-शुक्रवार और शनिवारपेठ वगेरामे जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी फैलीहुइ, और वेतालपेठमे वडेवडे जैनश्वेतांवर मंदिर वनेहुवे है यात्री जियारतकरे, पुनाके वाजार वडेखुशनुमा और रवन्नकदार जिनमें तरहतरहकी चीजे मिलसकती है, सडके लंबीचोडी-मकान रगरौशन कियेहुवे और हरजगह पानीकानल लगाहुवाहै, पुनेमें सातादिनोके नामसे सातमहल्ले मशहूरहै और शनिवार महल्लेमें पेशवोका महल जिसकों आजकल जुनावाडा कहते है मौजूदहै,

वागवगीचे-सरकारी कचहरीयां-हाइस्कुल-लाइब्रेरी--और अस्पताल वगेरा मकानात यहां पुख्ता वनेहुवेहै, यतीमखाना-चित्रशाला--और--पीजरापोल--यहांपर कायमहै, रेशमीसुती कपडे-तांबापीतल---और---मीटीके वर्तन यहां अछेवनते है, हरेककिसमकी वनस्पति-और-फलफलारी यहां कसरतसे हुवाकरती है, चांदी सोनेके गेहने यहां उमदा वनते है, हाथीदांतकी कंघी-और मोरपंखलगेहुवे खसके पंखे-यहां लाइकतारीफके देखोगे,-जिले पुनाके उत्तरपूरवकी रुखपर शहर अहमदनगर-पूरवकीतर्फ सोलापुर-दखनकी रुखपर नीरानदी और वाद जिलासितारा-और-पश्चिमतर्फ थानाजिला है, जमीन उंचीनीची और पश्चिमकी तर्फ

सिंह्याद्रिपहाडकी चोटियां शुरुहै, सिंह्याद्रिसे वहुतसीधाराये निकलकर भीमानदीमें गिरती है, जिलेपुनेकी खानोसें मकानवनानेके पथर निकलाकरते है,

पुनासे कल्यानीहोकर ववइ जायाजाताहै रैलकिराया करीव चौदहआने लगेगे, मगर उसमें तीर्थनाशिक वाजुपर रहजायगा, इसलिये पुनासे-डोड-अहमदनगर-एवला-मनमाडहोते यात्री तीर्थ नाशिककी जियारतकरके वंवइ आवे, पुनासे रैलमें सवारहोकर-हडपसर-लोंनी-उरली-येवत-खेडगाव-और पटास टेशनपर होते डोंड जक्शन उतरे, रैलकिराया दसआने लगेगा, डोंड-जंकशन रवन्नकदार और खानपानकी चीजे यहा मिलसकती है यहासें ग्रेट-इंडियन-पेनिनसुला रेलवेकी लाइन तीनतर्फ गइहै, चुनाचे-पूरव दखनकीतर्फ वाडी-रायचूरको-दुसरी लाइन पश्चिम उत्तरकी रुख-पर-पुना-और-कल्याणीको-और-तीसरीलाइन उत्तरतरफ अहमदनगर-और-मनमाडकों गइहै, डोंडसे यात्री रैलमें सवारहोकर-पीपरी-वेलवाडी-विसापुर-सरोला-और-अकोलनेर टेशन होते अहमदनगर टेशन उतरे, रैलकिराया आठआने लगेगा.

☞ [वयान-शहर अहमदनगर-और-एवला,]

जिलेकासदर मुकाम अहमदनगर एक-रैलवेका टेशनहै, सन (१८९१) की-मर्दुमशुमारीके वरत अहमदनगरकी मर्दुमशुमारी मयछावनीके (४१६८९) मनुष्योंकीथी, टेशनसे करीव (१) मीलके फासलेपरसे शहरकी आवादी शुरु होती है और सवारीके-लिये टेशनपर इक्का-वगी-तैयार मिल्ती है, यात्री शहरमें जाय और जैनश्वेतावर धर्मशाला-जोकि-खिस्तीगलीमें वनीहुइ है उसमें कयामकरे, जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी और दो-मदिर-५०

वनेहुवे है, यात्री जियारत करे, कापडवाजार और गंजबाजार यहां नामी है. हरेक किसमकी चीजे यहां मिलसकेगी तांबे-पीतलके बर्तन-और-गालिचे यहां लाइकतारीफके वनते है, सरकारी कचहरियां-स्कुल-अस्पताल-वगेरा मजबुत इमारते यहां वनीहुइ है, शहर अहमदनगरसे करीव (१२) मीलके फासलेपर शिवानदी इब्तिदा है, रैलवेटेशनसे (२।।) मील और शहरसे (१।।) मील पूरवकी रुखपर देढमीलके हिसारमें पथरका एक मजबूत किला यहांपर वनाहुवा है और इर्दगीर्द चोडी खाइभी तामीरकिइ हुइहै, जिले अहमदनगरकी पूर्वोत्तर रुखपर गोदावरीनदी-पूरवमे कुछ दूरतक हैदरावादराज्य-दखनपूरव-और-पूर्वपश्चिमतर्फ सोलापुर-और पुनाजिला, और पश्चिमोत्तरकी रुखपर जिला नाशिक है,-पश्चिम सरहदके एक हिस्सेके पास पूरवतर्फ फैलीहुइ सिंह्याद्रिकी पहाडियोंका सिलसिला जारी है,-अहमदनगरसे रैलमें सवारहोकर यात्री-विलाड-वावोरी-राहोरी-लाख-वेलापुर-चिताली-पुंतुंवा-संवत्सर-और-कोपरगाव रोडटेशन होते एवला टेशनपर उतरे, रैलकिराया सवावारां आना लगेगा.

☞ [वयान-शहर-एवला,]

मुताल्लिक दखनके एवला एक अछाशहरहै, दरमियान टेशन और शहरके पकीसडक वनीहुइ और सवारीकेलिये-इक्का-वगी-तयारमिलतीहै, मकानात एवलेके पुरानेतरीकेके वनेहुवे और वाजार रौनकदारहै, हरहफतेमें मगलकेरौज एकमामुली वाजार भरताहै, जिसमेंतरहतरहकी जीजे और माल असवाव-मिलसकताहै, जैनश्वेतांवर श्रावकोकीआवादी और एकमदिर यहांपर तामीरहै, यात्री शहरमें जाय और जियारतकरे, ठहरनेकेलिये मदिरकेपास एकधर्मशाला वनीहुइहै, शहरएवलेमें जरीकेदुपटे-रेशमीकपडे-और

कमख्वाब उमदा बनताहै, सोने-चांदीके गेहने यहां अछेतयारहोते है, सरकारी कचहरिया--स्कुल और अस्पताल वगेरा मकानातयहां पुख्ता बनेहुवे है, लकडीकी नकाशी यहा लाइकतारीफके देखोगे, एवलेसे रैलमें सवारहोकर-अंकाइ-मनमाड-समीट-लासलगांव-उगांव-निफाड-खेरगांव-खेरवाडी-और ओघा टेशन होते-यात्री नाशिकरोड टेशन उतरे, रैलकिराया पोनेसोलहआने लगेगा,—

☞ [तवारिख-तीर्थनाशिक-और-थाना,]

बंबइहातेके दरमियान-मनमाड जंकशनसे (४६) मील दखन पश्चिमकी रुखपर नाशिकरोड नामका एक रैलवे टेशनहै, और टेशनसे करीब (५) मीलके फासलेपर गोदावरीनदीके दोनों कनारेपर जिलेका सदरमुकाम नाशिक एक पुरानाशहरहै, पेस्तरके जमानेमें इसकानाम पदमपुरथा, और यहांपर एक-त्रिभुवनतिलक-चंद्रप्रभस्वामीका निहायत उमदा आलिशान मदिर बनाहुवाथा, पेस्तर यहा जेनोंकी आबादी ज्यादहथी जमाने हालमें कमहोगइ, सन (१८९१) की-मर्दुमशुमारीके वख्त नाशिककी मर्दुमशुमारी (२४४२९) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर करीब (२५) मंदिरभी यहापर बनेहुवे है, यहाके मकानोपर नकाशीदार लकडीका काम ज्यादह देखोगे, जगहजगह गलियोंमें फाटक बनेहुवे है, बाजार रवन्नकदार और हरेककिसमकी चीजे यहापर मिलसकती है, तांबेपीतलके बर्तनोकी-दस्तकारी-यहां लाइकतारीफके होती है, और यहाके बनेहुवे बर्तन मुल्कोंमें मशहूरहै, सरकारी कचरियां-स्कुल-अस्पताल वगेरा मकानात यहां पुख्ता बनेहुवे और सडकोंपर रातकेवख्त लालटेनोकी रौशनी लगती है, नाशिकशहरको वैदिक मजहबवालेभी-तीर्थ-मानते है, और गोदावरी नदीके बायेकनारेके हिस्सेमें पचवटी मौजूदहै, जिलेनाशिकके उत्तरकी रुख-

बनेहुवे है, यात्री जियारत करे, कापडबाजार और गंजबाजार यहां नामी है. हरेक किसमकी चीजे यहां मिलसकेगी तांबे-पीतलके बर्तन-और-गालिचे यहां लाइकतारीफके बनते है,-सरकारी-कचहरियां-स्कुल-अस्पताल-वगेरा मजबुत इमारते यहां बनीहुइ है, शहर अहमदनगरसे करीब (१२) मीलके फासलेपर शिवानदी इब्तिदा है, रैलवेटेशनसे (२॥) मील और शहरसे (१॥) मील पूरवकी रुखपर देढमीलके हिसारमें पथरका एक मजबूत किला यहांपर बनाहुवा है और इर्देगीर्द चोडी खाइभी तामीरकिइ हुइहै, जिले अहमदनगरकी पूर्वोत्तर रुखपर गोदावरीनदी-पूरबमे कुछ दूरतक हैदराबादराज्य-दखनपूरब-और-पूर्वपश्चिमतर्फ सोलापुर-और पुनाजिला, और पश्चिमोत्तरकी रुखपर जिला नाशिक है,-पश्चिम सरहदके एक हिस्सेके पास पूरबतर्फ फैलीहुइ सिंह्यादिकी पहाडियोंका सिलसिला जारी है,-अहमदनगरसे रैलमें सवारहोकर यात्री-विलाड-वांबोरी-राहोरी-लाख-बेलापुर-चिताली-पुंतुंबा-संवत्सर-और-कोपरगाव रोडटेशन होते एवला टेशनपर उतरे, रैलकिराया सवाबारां आना लगेगा.

☞ [बयान-शहर-एवला,]

मुताल्लिक दखनके एवला एक अछाशहरहे, दरमियान टेशन और शहरके पकीसडक बनीहुइ और सवारीकेलिये-इका-बगी-तयारमिलतीहे, मकानात एवलेके पुरानेतरीकेके बनेहुवे और बाजार रौनकदारहे, हरहफतेमें मगलकेरोज एकमामुली बाजार भरताहे, जिसमेंतरहतरहकी जीजे और माल असबाब-मिलसकताहे, जैनश्वेतांबर श्रावकोकीआबादी और एकमंदिर यहांपर तामीरहे, यात्री शहरमें जाय और जियारतकरे, ठहरनेकेलिये मंदिरकेपास एकधर्मशाला बनीहुइहे, शहरएवलेमें जरीकेदुपट्टे-रेशमीकपडे-और

होतेहुवे-विकटोरियाटर्मिनस (बोरीबंदर) टेशन आवे, रैलकि-
राया पांचआने लगेगा,

बंबइकी तवारिख पेस्तर इसकितावमें दर्जकिइहुइहै, चुनाचे,
इसकितावकी इब्तिदा-और-इतिहा-बंबइशहरहै, हमने बंबइसे स-
फरका लेख लिखना शुरुकियाथा, असनाये राहमें जोजोशहर
और जैनतीर्थ आतेगये उनकावयान लिखतेहुवे यहांतक आगये-
जहांतक बना जैनशास्त्रोसे-इतिहासिक कितावोसे-और-अपनीन-
जरसे देखाभाला इसमे दर्जकियाहै,—

एडनमें जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर बनाहुवाहै,
हिंदुस्थानके कइ जैनश्वेतांवर श्रावक वास्ते रोजगारके वहांजाकर
वसेहुवे है, मुल्क आफ्रिकाके पूरवकनारेपर जंगवारटापुमें जैनश्वेतांवर
श्रावकोके घर करीब (४०) और एक जैनश्वेतांवरमंदिर मौजूदहै,
दालगोवावंदरमें जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर करीब (१५) और
एक छोटासा चैत्यालय बनाहुवाहै, लींडीबंदरमें-और-मुंबासाबं-
दरमेंभी इसीतरह छोटासा चैत्यालय और करीब पनरावीस श्राव-
कोके घर आवादहै, अगर कोइ जानाचाहेतो-बंबइसें-बजरीये
ष्टीमरके जासकते है,—

[अब उनउन जैनतीर्थोंका वयान वतलायाजाता है
जोजमाने हालमे विरान-या-नामांतर होगये है,]

१-चुनाचे-नजदीक अयोध्याके पुरीमताल-शासानगरमें-ती-
र्थंकर आदिनाथमहाराजके नामका एक जैन तीर्थथा, जमानेहालमें
नेस्तनाबुद होगया, २-तक्षशिलानगरी-जोकि-हिंदुस्थानके वहार-
वारथी बाहुबल विनिर्मित धर्मचक्रनामका वहां एक जैन तीर्थ था

पर जिलाखानदेश-पूरबकीतर्फ-सलतनत हैदराबाद-दखनकी रुखः पर जिलाअहमदनगर-और-पश्चिमतर्फ थाना जिलाआके है, जिले नाशिकमे पहाडियां और जंगल कसरतसे देखोगे,

नाशिकरोड टेशनसें रैलमेसवार होकर-देवलाली-असवाली-घोटी-इगतपुरी-कसारा-खरदी-अटगांव-असनगांव-वासिद-खादोली-तीतवला-कल्याणीजंकशन -डोमविवली--डीवा-मंब्रा-और-पारसिकटेशन होतेहुवे-थानाटेशन उतरना, रैलकिराया देढरुपया लगेगा,—

☞ [थाना,]

नाशिकरोड टेशनसे (९९) मील पश्चिम दखनकी रुखपर-और-बंबइ विकटोरिया टर्मिनससे (२१) मील पूर्वोत्तर-थाना-एकपुराना शहरहै, तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीके जमानेमें-राजाश्रीपालजी जबकि-उज्जेनसे रवानाहोकर मुल्कोकी सफरको गयेथे यहांभी उनका आना हुवाथा, और यहा जैनमंदिर मौजुदथे, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त थानेकी मर्दुमशुमारी (१७४९८) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतावर श्रावकोकी आवादी और मदिर अवभी यहां मौजूदहै, सरकारी कचहरिया-किला-अस्पताल-और-कइजलाशय यहांपर बनेहुवेहै, कइसरकारी ओफिसर थानेमे रहते है और हरहमेश वजरीये रैल बंबइपहुचकर अपनाकाम-कियाकरते है, पेस्तर थानेमें रेशमकाकाम ज्यादह होताथा जिलेथानेकी जमीन अकसर पहाडियोके सिलसिलेसे घीरीहुइ और यहांके जगलोमें लकडीकी पैदाश बहुतायतसेहै, थानेसे रैलमे सवारहोकर यात्री-मुलंद-भाडुप--विकरोली-घाटकोपर--कुरला--सिओन-माटुंगा- दादर-परेल-करीरोड-चिंचपोखली--भाइखल्ला-मझगांव—आर-मशजिदटेशन

होतेहुवे-विकटोरियाटर्मिनस (वोरीबंदर) टेशन आवे, रैलकिराया पांचआने लगेगा,

बंबइकी तवारिख पेस्तर इसकिताबमें दर्जकिइहुइहै, चुनाचे इसकितावकी इब्तिदा-और-इतिहा-बंबइशहरहै, हमने बंबइसे सफरका लेख लिखना शुरुकियाथा, असनाये राहमें जोजोशहर और जैनतीर्थ आतेगये उनकावयान लिखतेहुवे यहांतक आगये-जहांतक वना जैनशास्त्रोंसे-इतिहासिक कितावोंसे-और-अपनीनजरसे देखाभाला इसमें दर्जकियाहै,—

एडनमें जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मंदिर वनाहुवाहै, हिंदुस्थानके कइ जैनश्वेतांवर श्रावक वास्ते रोजगारके वहांजाकर वसेहुवे है, मुल्क आफ्रिकाके पूरवकनारेपर जंगवारटापुमे जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर करीव (४०) और एक जैनश्वेतांवरमंदिर मौजूदहै, दालगोवाबंदरमें जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर करीव (१५) और एक छोटासा चैत्यालय वनाहुवाहै, लींडीबंदरमें-और-मुंबासाबंदरमेंभी इसीतरह छोटासा चैत्यालय और करीव पनरावीस श्रावकोंके घर आवादहै, अगर कोइ जानाचाहेतो-बंबइसे-बजरीये ष्टीमरके जासकते है,—

[अव उनउन जैनतीर्थोंका वयान वतलायाजाता है जोजमाने हालमें विरान-या-नामांतर होगये है,]

१-चुनाचे-नजदीक अयोध्याके पुरीमताल-शाखानगरमें-तीर्थंकर आदिनाथमहाराजके नामका एक जैन तीर्थथा, जमानेहालमें नेस्तनावुद होगया, २-तक्षशिलानगरी-जोकि-हिंदुस्थानके वहारवारथी वाहुवल [illegible] धर्मचक्रनामका था। एक जैन तीर्थ था

वोभी अब जेरेजमीन होगयाहै, ३-प्रयागतीर्थमें तीर्थंकर शीतलनाथ महाराजके नामका एक जैन तीर्थथा वोभी अब विरान होगया, ४-प्रभासमें शशिभुषण चंद्रप्रभ-ज्वालामालिनी देवतावसरनामका गौतमस्वामिप्रतिष्ठित एक जैनतीर्थ था मगर वोभी अब नजर नहि आता, ५-प्रतिष्टानपुर-जोकि-मुल्कदखनमें पेंठनके नामसे मशहुर है, पेस्तर वहां तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीके नामका जैनतीर्थथा, ६-हेमसरोवर-और-मानसरोवरके कनारेपर जैनतीर्थथे अब नजरनहि आते, ७-कोटिशिलाके पास एक जैनतीर्थथा उसकाभी कुछ पता नहि लगता, ८-कादंबरीअटवीमें कलिकुंड पार्श्वनाथमहाराजके नामका एक जैनतीर्थथा, ९-हिमालयकी उत्तरमें जहां पृष्ट चंपानगरी थी शालनामका राजा अमल्दारी करताथा, और महाशाल उसका छोटाभाइथा, जैनआगम-आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनमें बयान है कि-तीर्थंकर महावीरस्वामी वहां तशरीफ लेगयेथे और-शाल-महाशालकों दीक्षा दिइथी,

१०-दडकारन्यजहांकि-रामचद्रजी-लछमनजी और-सीताजी वनवासके वख्त रौनकअफ रौजहुवेथे. मध्यहिंदमें शुमारकियाजाता है, ११-विराटमें जहां पांचपांडव वनवासके वख्त ठहरेथे पेस्तर वहां जैनतीर्थथा, १२-तारातंबोलमें जैनतीर्थथा अबभी स्यातहोगा मगर पता नहिलगता, १३-ताम्रलिप्ती नगरीमें जैन तीर्थथा, १४-गंगा यमुनाकी वेणीसंगमके पास-जो-आदिकमडल नामका और तीर्थंकर कुंथुनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा फिलहाल उसकाभी कुछ नामनिशान माल्म नहिहोता, १५-माहेंद्रपर्वतमें पदमप्रभुके नामका-और-छाया पार्श्वनाथके नामका जैनतीर्थथा वोभी अब नाश होगया, १६-गंगानदीके पास विमलनाथमहाराजके नामका एक जैनतीर्थथा वोभी अब-न-रहा, १७-त्रिकुटगिरि पर्वतमें तीर्थं-

कर शांतिनाथमहाराजके नामका एक जैन तीर्थथा-वोभी-अव जमीनदोस्त है, १८-श्रीपर्वतमें तीर्थकर मल्लिनाथमहाराजके नामका एक जैनतीर्थथा वोभी वरवादहोगया, १९-माणिक्यदंडकमें तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीके नामका एक जैन तीर्थथा वोभी अव जेरेजमीन होगया, २०-शंखजिनालयमें-और-२१-स्थभतीर्थमें-पाताल गंगाभिधान-और-तीर्थकर नेमिनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा जमाने हालमें विरानहोगया, २२-दंडखातमें भव्यपुष्करावर्त-पार्श्वनाथमहाराजकेनामका जैनतीर्थथा वोभी अव-न-रहा, २३-भायल स्वामीगढमें देवाधिदेवके नामका एक जैनतीर्थथा वोभी अव नेस्तनाबुदहै, २४-रामशयनमें मर्योतकारि-श्रीवर्धमानस्वामिके नामका एक जैनतीर्थथा-वोभी अव जमीनदोस्तहै, २५-सिंह्याद्रिपर्वतमेंपेस्तर जैनतीर्थथा वोभी अव जेरेजमीन होगया, २६-मुल्कद्राविडमें पेस्तर जैनतीर्थथा, २७-कान्यकुब्जमें पहेले जैनतीर्थथा, २८-खेंगारगढमें उग्रसेनपूजित-मेदिनीमुकुट-आदिनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा, जमानेहालमें उसकाभी सुराग नहीलगता, २९-नगरमहास्थानमें युगादिदेवके नामका एक जैनतीर्थथा अव-वोभी-नजर नाहिआता, ३०-महानगरीमें-और-३१-उदंडविहारमें तीर्थकर आदिनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा-वोभी-अव जेरेजमीन होगया,

३२-काशहृदमें त्रिभुवनमंगलकलश-आदिनाथ महाराजके मामका जैनतीर्थका अव उसकाभी पतानहीलगता, ३३-सोपारक पत्तनमें जहांकि-राजाश्रीपालजी तशरीफ लायेथे तीर्थकर रिषभदेवमहाराजका जैनतीर्थथा जमानेहालमें वरवादहोगया, ३४-मोक्षतीर्थमें तीर्थकर नमिनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा, अव-वोभी-नही-रहा, ३५-वदरीमे-३६-तारणमे-और-३७-विश्वकोटि शिलापर तीर्थंकर अजितनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थथा इसवख्त उस-

कोभी नामनिशान नहीमिलता, ३८-अगंढिका नगरीमें-अजितनाथ और-शांतिनाथमहाराजकेब्रह्मेंद्रदेवतावसरनामका जैनतीर्थथा अव सरेदस्त—वोभी—मिटगया, ३९-नर्मदानदीकी जहां--वुनियादहै सेगमतीग्रामके करीव तीर्थंकर अभिनंदनमहाराजके नामका जैनतीर्थथा जमानेहालमें-वोभी-विरान होगया, ४०-कोंचद्वीपमें-और-४१-हंसद्वीपमें-तीर्थंकर सुमतिनाथ महाराजकी-देवपादुकाके नामका जैनतीर्थथा अव वोभी नहीरहा, ४२-आंबुरी गाममे-श्रीमतीदेवके नामका जैनतीर्थथा वोभी अव उजडहोगया, ४३-कोयाद्वारमें सुविधिनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा अव उसकाभी कुछपतानही ४४-विंध्याचलमें जहांकि-हाथीयोंकी पैदाश ज्यादहथी-कदलीवन वडी रवन्नकदार जगहथी-गुप्तपार्श्वनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थथा-वरवाद होगया, ४५-मलयागिरिपहाडमें-तीर्थंकर-श्रेयांसनाथमहाराजके और पार्श्वनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा जमानेहालमें वोभी-नेस्तनाबुद होगया, ४६-द्वारवतीमें-४७-देसमुद्रमें-और-४८--शाकपाणिमें-तीर्थंकर अनंतनाथमहाराजके-जैनतीर्थथे-जमानेहालमें-वेभी-जेरेजमीन होगये, ४९-अजागृहमें-और-५०-स्थंभनतीर्थमें नवनिधिपार्श्वनाथके महाराजके नामके जैनतीर्थथे-अव-वेभी-नाशहोगये, ५१-करहेटकमें- उपसर्गहरपार्श्वनाथ महाराजके नामका एकजैनतीर्थथा वोभी अव विरानहै, ५२-अहिछत्रानगरीमे त्रिभुवनभानुके नामसे जैनतीर्थथा--अव-वोभी-नजरनही-आता, ५३-कलिकुंडमें-और-५४-नागहृद तीर्थंकर पार्श्वनाथ महा राजके नामका तीर्थंकरथा, वोभी अव-वरवादहोगया. ५५-कुर्कटेश्वरमें-विश्वगजपार्श्वनाथ -और-५६-त्रंकारपर्वतमें-महस्त्रफणीपार्श्वनाथके नामका तीर्थथा, ५७-महाकालांतरस्थानमें-पातालचक्रवर्ती पार्श्वनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा, ५८-डाकुलीभीमेश्वरस्थानमें तीर्थंकरपार्श्वनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थथा उसकीभी कुछखवर

मालूमनहीहोती. ५९-रोहणाद्रिपहाडमे-तीर्थंकर महावीरस्वामीका तीर्थथा-वोभी-अवनहीरहा, ६०-माढेरमें, ६१-वायडमें, ६२-मेतुंडकमें-६३-मुडस्थलमें, और-श्रीमालपत्तनमे एकएक जैनतीर्थथे मगर- वेभी-नेस्त-व-नाबुदहोगये, ६५-कुडग्राममें-६६-टंकास्थानमे, ६७-गंगाझीलमे,-६८-सरस्थानमें, पुंड्रपर्वतमें, और-७०-नंदीवर्द्धनकोटिभूमिमेभी-एकएक जैनतीर्थथे मगर उनकाभी कुछपत्ता नहीलगता.

७१-तिमालमें, ७२-मुरीडमे, ७३-श्वेतंविकानगरीमें-७४-चर्मणवतीनदीकेकनारे-ढींपुरीनगरीमें-पेस्तर जैनतीर्थथे वेभी अवनहीरहे, ७५-राजाश्रीपालजीके जमानेमें मुत्तस्सिल रत्नसंचया नगरीके तीर्थकर आदिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थथा, ७६-मुल्कमारवाड-कस्बे-साचोरमें तीर्थकर महावीरस्वामीका तीर्थइसवख्त मौजुदहै, मुल्कवर्मामें जो-आवानामका शहरहै, चंदराजाकेचरितसें मालूमहोताहे सायत! वही पेस्तर आभापुरीहो,

[☞ तीर्थअष्टापद,]

अष्टापदतीर्थ-जोकि-मुताबिक जैनशास्त्रके फरमानसे-वैताढ्य पर्वतके दखनमें वाकेहै आजकल यहासेकोई-वहा-जा-नहीसकता,

☞ [जैनचैत्य-स्तवः,]

(स्रग्धरा-वृत्तम्,-)

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणा निवासे ग्रहगणपटले तारकाणा विमाने,
पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्राधकारे,
श्रीमत्तीर्थंकराणा प्रतिदिवसमह तत्रचैत्यानिवंदे, १

वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडलेहस्तिदंते,
वक्षारेकूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधेनीलवंते,
चित्रेशैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, २

श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदेपावकेवा,
सम्मेते तारकेवा कुलगिरिशिखरेष्टापदे स्वर्णशैले,
संह्याद्रौ चोज्जयंते विपुलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, ३

आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे,
लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे देवकूटे विराटे,
कर्णाटे हेमकूटे विकटतरुकटे चक्रकोटे च भोटे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, ४

श्रीमाले मालवे वा मलयजनिखिले मेखले पीच्छले वा,
नेपाले नाहलेवा कुवलयतिलके सिंहले मैथले वा,
डाहाले कौशले वा विगलितसलिले जंगले वा तिमाले,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानिवंदे, ५

अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे,
गोडे चौडे मुरीडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे,
आर्द्रे माद्रे पुलींद्रे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, ६

चंपायां चंद्रमुख्या गजपुरमथुरापत्तने चौजयिन्यां,
कौशम्ब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यांच काश्यां,
नाशिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दीले ताम्रलिप्त्यां,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, ७

स्वर्गे मर्त्येंतरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे,

शैलाग्रे नागलोगे जलनिधिपुलिने दुर्गमध्येत्रिसध्यं,
ग्रामेरन्ये वने वा स्थलजलविषमें भूरुहाणां निकुंजे,
श्रीमत्तीर्थंकराणा प्रतिदिवसमह तत्र चैत्यानिवंदे, ८

श्रीमन्मेरुकुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,
चौजन्य चैत्यनदे रतिकररुचके कुंडलेमानुषागे,
इक्षुकारेजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके,
श्रीमत्तीर्थंकराणा प्रतिदिवसमह तत्रचैत्यानि वंदे, ९

इथ्थं श्रीजैनचैत्य स्तवनमनुदिन ये पठति प्रवीणाः
प्रोद्यत्कल्पाणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजास्त्रिसंध्यं,
तेषांश्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायतेमानवानां;
कार्योणांसिद्धिरुचैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि. १०

(जैनतीर्थगाइडका-दुसरा-भाग-पूर्णहुवा,-)

[अनुष्टुप्-वृत्तम्.]

अनर्घाण्यपि रत्नानि-लभ्यंते विभवैःसुख,
दुर्लभो रत्नकोट्यापि-क्षणोपि मनुजायुषः १

आर्यदेशश्च तत्रापि-सुकुल निर्मलामतिः
विशिष्ट गुरुसंपर्को-भूरिभाग्यैरवाप्यते, २

या देवे दवता बुद्धिः-गुरौ च गुरुता मतिः
धर्मे च धर्मधी श्रद्धा-सम्यक्त मिदमुच्यते, ३

☞ [नसीहत–उल–आम,]

१–नरदेह वारवार नहीमिलता, इसकों पाकर जोकुछ वनपडे नेंकीकरो हरशुभह चारवडी रातरहते नीद छोडदो, आफताव तुलु होयेतक सोतेरहना अछानही, जव विस्तरसे उठो पेस्तर अपना सांस देखलो, चंद्रस्वर चलताहै–या–सूर्यस्वर ? अगर चंद्रस्वर चलताहै तो वायापांव–और–सूर्यस्वर चलताहै तो दाहनापांव जमीन पर रखो, वाद अपनी जरुरी हाजतोसे फारिग होकर तीर्थंकरदेवोकी इवादत करो, जवकोइ मर्द–या–औरत मंदिरमें देवदर्शनको जाय अपने वदन और लिवासकों साफकरके जाय, यह नहीकि–नापाक वदन और लिवाससे मंदिरमें चलेजाय, शुभहके वख्त जंगलकी हवामें घुमना निहायत मुफीदहै, मगर रास्तेमें कीडेमकोडोकों वचाकर घुमना चाहिये, ताकि–उनपरभी कुछ तकलीफ–न–गुजरे,साफ हवा इस्तिमाल करनेसे वदनकी वीमारी रफा होतीहै, और ताकातवढतीहै, जोलोग हमेशां गादीतकीयेके सहारेवेठे रहतेहै और अपने जिस्मको तकलीफ नहींदेते, यादरहे ! वीमारी उनके लिये हमेशां हाजिररहतीहै, क्योंकि–उनके जिस्मसे पसीनावहार नहीहोसकता,

२–शास्त्रमें सुनतेहो राजेमहाराजे लोग जव शुभहको उठतेथे अपने वदनकी शुस्ति रफा करनेकेलिये पहलवानोसे कुस्ती कियाकरतेथे, कल्पसूत्रके मूलपाठमें देखलो सिद्धार्थराजाकेलिये क्या वयान लिखाहै, ? अलवतां ! जइफोंकों कसरत करनेकी कोइ अैसी चंदा जरुरतनही, जोलोग दडपेलते है उठवेठ करतेहै अैसी कसरत नादानीकी करसतहै, जव किसीके वदनमें कसरत करनेसे कुछपसीना आजाय तो उसवख्त गर्दीहवासे अपने जिस्मको जरुरवचानाचाहिये, हरेकशख्शको मुनासिवहै अपनी हाजत रवाइको दुरज-

गहपर जावे, मशानमे जहांकि-मुर्दे जलायेजातेहो वहांपर-न-जावे, गुप्तमोरियां जोकि-हमेशा गर्दीरहाकरतीहै उसमे पेशाव-न-करे, मुताविक धर्मशास्त्रके देखाजायतो गुप्तमोरीमें पेशावकरना सवव पापकाहै, क्यौंकि-उसमें अकसर जीवोंकी पैदाश हुवाकरती है, सांप-या-चूहोके विलमें पेशावकरना विल्कुल नामुनासिवहै, एक वख्तका जिक्रहै किसीशख्शने सापके विलमे पेशाव करना शुरुकिया, उसकीधार जब विलकेभीतर गइ फोरन ! उसमेंसे एक साप निकलआया, इधर पेशावकरनेवाला मारेखोफके ऐसा भागनिकला कि-जससे उसके कपडे सव नापाक होगये, कहो ! इससे क्या ! फायदा हुवा ? इसीसे अछे लोगोंने कहाहैकि-ऐसी वातोंसे परहेज करो,

३-हरेक आदमीकों चाहियेकि-विना-दातूनकिये कोइचीज अपने मुहमें-न-डाले, जो शख्श दातुन नहीकरते उनके मुहसे वद वू आती है, जिसके मुहमें छालेपडगयेहो-या-जलनहोतीहो उसरौज दातुन-न-कियाजाय कोइहर्जकी वातनही, जिसका गला वेठगया-हो-या-होठ फटगयेहो-वह घीके कुरलेकरे, या दूधका इस्तिमाल रखे, जरुरफायदा होगा, जिसको तैरना-न-आताहो गहरेजलमें-न-कुदे, नहाते वख्त-ख्वाह मर्दहो-या-औरत हर्गिज ! नगे-न-नहावे, एकदुपट्टा-या-साडी-वदनपर जरुररखे, वाद स्नानके देव-पूजनमे मशगुलरहे, दुनियादारोकेलिये देवपूजन करना निहायत फायदेमदहै, जवकोइ देवमदिरमें जावे हथियार शाथ-न-लेजावे, जूते-लकडी वगेरा चीजभी वहार छोडकर अदवकेशाथ जावे. जव देवमूर्त्तिके सामने पहुचे तीनमरतबे सीरझुकाकर ताजिमकरे. और तीनवख्त अतराफ परकम्मादेवे, पूजाकरनेका हुकम जैसे मर्दकोहै वैसे औरतकोंभी है, पूजाकरतेवख्त लिवास और जिस्मको पाकरखे

☞ [नसीहत-उल-आम,]

१-नरदेह वारवार नहीमिलता, इसको पाकर जोकुछ वनपडे नेंकीकरो हरशुभह चारघडी रातरहते नीद छोडदो, आफताव तुलु होयेतक सोतेरहना अछानही, जव विस्तरसे उठो पेस्तर अपना सांस देखलो, चंद्रस्वर चलताहै-या-सूर्यस्वर ? अगर चंद्रस्वर चलताहै तो वायापांव-और-सूर्यस्वर चलताहै तो दाहनापांव जमीन पर रखो, वाद अपनी जरुरी हाजतोसे फारिग होकर तीर्थंकरदेवोकी इवादत करो, जवकोइ मर्द-या-औरत मंदिरमें देवदर्शनको जाय अपने वदन और लिवासको साफकरके जाय, यह नहीकि-नापाक वदन और लिवाससे मंदिरमें चलेजाय, शुभहके वख्त जंगलकी हवामें घुमना निहायत मुफीदहै, मगर रास्तेमें कीडेमकोडोको वचाकर घुमना चाहिये, ताकि-उनपरभी कुछ तकलीफ-न-गुजरे, साफ हवा इस्तिमाल करनेसे वदनकी वीमारी रफा होतीहै, और ताकातवढतीहै, जोलोग हमेशां गादीतकीयेके सहारेवेठे रहतेहै और अपने जिस्मको तकलीफ नहीदेते, यादरहे ! वीमारी उनके लिये हमेशा हाजिररहतीहै, क्योंकि-उनके जिस्मसे पसीनावहार नहीहोसकता,

२-शास्त्रमें सुनतेहो राजेमहाराजे लोग जव शुभहको उठतेथे अपने वदनकी शुस्ति रफा करनेकेलिये पहलवानोसे कुस्ती कियाकरतेथे, कल्पसूत्रके मूलपाठमें देखलो सिद्धार्थराजाकेलिये क्या वयान लिखाहै, ? अलवता ! जइफोंको कसरत करनेकी कोइ असी चंदा जरुरतनही, जोलोग दंडपेलते है उठवेठ करतेहै असी कसरत नादानीकी करसतहै, जव किसीके वदनमे कसरत करनेसे कुछपसीना आजाय तो उसवख्त गदीहवासे अपने जिस्मको जरुरवचानाचाहिये, हरेकशख्शको मुनासिवहै अपनी हाजत रफाइको दुरज-

गहपर जावे, मशानमें जहांकि-मुर्दे जलायेजातेहो वहांपर-न-जावे, गुप्तमोरियां जोकि-हमेशा गदीरहाकरतीहै उसमे पेशाव-न-करे, मुताबिक धर्मशास्त्रके देखाजायतो गुप्तमोरीमें पेशावकरना सवव पापकाहै, क्यौंकि-उसमें अकसर जीवोंकी पैदाश हुवाकरती है, सांप-या-चूहोके बिलमें पेशावकरना बिल्कुल नामुनासिवहै, एक वख्तका जिक्रहै किसीशख्शने सापके बिलमे पेशाव करना शुरुकिया, उसकीधार जब बिलकेभीतर गइ फोरन ! उसमेंसे एक साप निकलआया, इधर पेशावकरनेवाला मारेखोफके ऐसा भागानिकला कि-जससे उसके कपडे सव नापाक होगये, कहो ! इससे क्या ! फायदा हुवा ? इसीसे अछे लोगोंनें कहाहैकि-ऐसी वातोंसे परहेज करो,

२-हरेक आदमीकों चाहियेकि-विना-दातूनकिये कोइचीज अपने मुहमें-न-डाले, जो शख्श दातुन नहीकरते उनके मुहसे वद वू आती है, जिसके मुहमें छालेपडगयेहो-या-जलनहोतीहो उसरोज दातुन-न-कियाजाय कोइहर्जकी वातनही, जिसका गला वेठगया-हो-या-होठ फटगयेहो-वह घीके कुरलेकरे, या दूधका इस्तिमाल रखे, जरुरफायदा होगा, जिसको तैरना-न-आताहो गहरेजलमें-न-कुदे, नहाते वख्त-ख्वाह मर्दहो-या-औरत हर्गिज ! नंगे-न-नहावे, एकदुपट्टा-या-साडी-वदनपर जरुररखे, वाद स्नानके देवपूजनमे मशगुलरहे, दुनियादारोकेलिये देवपूजन करना निहायत फायदेमदहै, जवकोइ देवमदिरमें जावे हथियार शाथ-न-लेजावे, जूते-लकडी वगेरा चीजभी वहार छोडकर अदवकेशाथ जावे. जव देवमूर्तिके सामने पहुचे तीनमरतवे सीरझुकाकर ताजिमकरे, और तीनवख्त अतराफ परकम्मादेवे, पूजाकरनेका हुकम जैसे मर्दकोंहै वैसे औरतकोंभी है,

-प लिवास और जिस्मको ५

अगर कोइ साज-और-संगीतकलाका जाननेवालाहो-तो-वाजेके शाथ उमदातौरसे गायनकरे और तीर्थंकरोकी इवादतकरे, पूजनमें इरादा पाकहोनेके सबब भावहिंसा नही. और विनाभावहिंसाके पापनही, पाकइरादेसे तीर्थंकर देवोकी मूर्त्तिकी पूजाकरनेसे अशुभकर्मकी निर्जरा और पुन्यानुबंधिपुन्य हासिलहोताहै, धर्म और प्रीत जोरावरीसे नहीहोती, जिसकेघर देवद्रव्यका पैसाहो फोरन ! देदियाकरे, जो लोग नहीदेते गोया ! अपना विगाडकरतेहै, धर्मकेकाममें दगावाजी करना अछानही,

४-अगर शहरमें अपने मजहवी गुरु आयेहो तो व्याख्यान सुननेकों जरुरजाना चाहिये, जिसशख्शने देवपूजन-न-कियाहो और शास्त्रसुननेका वख्त करीब आजाय तो पहलेशास्त्र सुने और पीछेदेवपुजनकरे , क्योंकि-वगेर शास्त्रसुने देवपुजनकी पहिचानठीक नहीहोती, मुनिलोगोको चाहियेकि-कोइ अमीर हो-या-गरीब दोनोकों एकसागिने, अैसा-न-करेकि-कहीं दोलतमंदकी तर्फ ज्यादह तवज्जोकरे और गरीवकों-न-पुछे, पेस्तरके मुनिलोग शहरके वहार उद्यान-या-वनखंडमें रहाकरतेथे जवकोइ जैनमुनि शास्त्रका व्याख्यान वाचरहेहो, और उसहालतमें कोइश्रावक व्याख्यानमें आनकर वंदनाकरे मुनि उसको धर्मलाभ-न-देवे, क्योंकि-व्याख्यानमें खलल होगा, चलते व्याख्यानमें श्रावक स्फेटावंदना करे, स्थोभ-वंदना-न करे, जवतक शास्त्रकी वाज खतम-न-हो-वीचमें कोइ उठेनही. और अगर कोइ किसीकों बुलानेआवे-तो-मुहसे कुछ-न-वोले, इसारेसे उसकाजवाव देवे, अगर किसीकेघर कोइ मोत होगइहो-या-किसी किसमका सोगहो-तोभी-शास्त्रसुननेमें सोग-न-रखे, एकश्रावकका नवजुवान लडका रातकेवख्त गुजरगया, और शुभहके वख्त उसके देहका अग्निसंस्कार करके कुछदे-

रकेबाद शास्त्रकी वाज सुननेको हाजिरहुवा, गुरुजीने व्याख्यान खतमहोनेपर पुछाकि-आजदेर क्यों हुइ?-उसने जवाबदिया एक-मेहमान-आयाथा उसको विदाकरने जानापडा जिससे देरीहुइ, गुरुजीको मालूमनहींथा एक दुसरे श्रावकने कहा, गुरुजी! इसका नवजुवान लडका मरगया-तोभी-यह अपनी हुस्नेएतकात शास्त्रकी वाजसुननेको आयाहै, गुरुजीने कहा तारीफहै इसकी-और धर्मका पावंद होवो ऐसाहो.

९-शास्त्रका बयान सुनतेवख्त अगर किसीको कोइ सवालकरना मंजूरहो विनयसे करे, किसी किसमकी वांकीटेडी वात-न-करे और अगर अपनी भूलपर गुरुजी कुछ सख्त बातकहे-तो-उसका बुरा-न-माने, और हक वातको समझे, जिसकादिल साफहोगा शास्त्रकी वातपर उसको फौरन! असर होगा, जिसका दिल साफ न-होगा उसको किसी तरहका असर-न-पहुचेगा, चुनाचे! जिस घडेमें लहसन और प्याज डालागया होगा उसमे दूधडालेतो दूधका असर न होगा, क्योंकि उसमे लहसन और प्याजकी असर पेस्तर मौजूदहै. एक वख्तका जिक्रहै गुरुजीने अपने चेलेको कहा-तुं! पापकेकाम मतकियाकर जिससे दोजकमें जापडे, चेलेने जवाबदिया गुरुजी! में-दोजकका रास्ता कब जानताहु, रास्ता बतलानेको तो आपही आओगे, गुरुजीने कहा ऐसीऐसी वातोंसेंहीतो तेरे दिलकी सफाइ जाहिरहै, चेलेने कहा गुरुजी! बेशक!! मेरादिल साफनही, आप कोइ ऐसी तरकीब बतादेवेकि-जिससे-मेरादिल साफहोजाय, गुरुजीने कहा जाओ! किसी हकीमसाहबका घर तलाशकरो, और एक-दस्त-या-उल्टीकी दवा लेलो, दिलसाफ होजायगा, चेला इसमाकुल जवाब सुनकर शर्मींदा हुवा, और चुप होगया ऐसे गुस्ताख चेलेको ऐसाही जवाब काफीहोताहै,-

६-हरेक शख्शकों चाहिये बदनपर कपडा साफ पहने, चाहे कमकीमतका क्यौं-न-हो ? मगर साफहोना चाहिये, जोलोग दौलतमंदहै मगर वसवव कंजुसीके अछेकपडे नही पहनते उनकी कदर नहीहोती, अछेकपडे पहननेसे खजाना खाली नहीहोता, खजाना उसवख्त खालीहोगा जव तकदीरका सितारा जोफखायगा. अगर तुमको रोजगारमे पैदाश अछीहै-तो-गुलाब केवडा वगेराहके इतरोसें अपने कपडे और लिवासकोभी खुशबूमें बसायाकरो, मगर यादरहे ! अकेले अपने वदनकोंही सिगारना वहेतरनही, देवमूर्त्तिकोंभी इतर वगेरासे तवजो-व-मुदारातकरो, हरेक शख्शकों चाहियेकि-अपने हाथमें एक अंगूठी पहनेरहे, ताकि-वख्त जरुरतपर काम आसके, अगर वनसकेतो एक जेंवघडीभी पासरखो, ताकि-वख्तभी-मालूमरहे, हरशख्शको लाजिमहै जव घरसेवहार जावे कुछ रुपये पैसेभी अपने हमराहरखे, वजह उसकी यहहैकि-तुमकों-अगर किसीने अमीर समझकर कुछ सवालकिया तो जरुर उसको न-कुछदेना होगा, या-कोइ-दिलपसदचीज नजरपडी तो उसकों मोल लेनेकाभी खयालहोगा, सौचो ? अगर उसवख्त रुपये पैसे पास-न-होंगेतो क्यौ कर मोललेसकोगे, ? सोहागन औरतकोलिये नथ-कगन-और-नेवर पहनना जरुरीयातसेहै, ताकि-मालूमहोसके यह औरत सोहागनहै,

७-खानपानकेलिये--गेहु-चावल-घी-सकर-दूध--बादाम-पिस्ते-किस्मीस-ये-ताकतवर चीजेंहै, अगर अपना खजाना तरहो-तो-इनचीजोंका इस्तिमाल रखना वहेत्तरहै, ताकि-वदनकीताकात और कौवत वनीरहे, जिस्ममें-ताकात-न-होगीतो धर्मभी-न-होसकेगा, हरेकशख्श-जोकि-दौलतमंदहै रौजमर्रा पांचतोले वजन तक-घी-खायाकरे, ताकि-जिस्मके आजा और हाडियोमें ताकात

बनीरहे, जोलोग रोटियोंके मोहताजहै उनकेलिये यह अमर दुसवार है, मगर दौलतमंदोकेलिये कोइ मुश्किल बात नही, जवार-बाजरीकी रोटीभी अगर दुरुस्तगीके शाथबनाइगइहो-तो-खानेमें कुछ हर्जनही, गरीबलोग इसीसे अपनागुजर कियाकरतेहै, चाहेजितनी मिठाइ खाओ मगर मुकाबिले रोटीदालके कोइचीज नही, लाखदवाकी एक दवा दूधहै, जोलोग हमेशा दूधका इस्तिमालरखतेहै ताकतवर बनेरहतेहै, मगर दुध असा होनाचाहिये जिसमें पानी-न-मिलाहो, खानाहजम होनेकेलिये दहीभी एक फायदेमद चीजहै, गर्मीकी मौसिममें जीरा-और-नमक मिलाकर दही खानेसे दिमाग तररहताहै, हरेक शख्शको चाहिये शुभहके वख्त कुछचीज खायाकरे एकदम बारांबजेतक भुखारहना अछानही, जिससे शरीरमें हरारतपैदाहोजाय, अष्टमी चतुर्दशी वगेराह पर्वकेरोज व्रत-उपवासकरनाभी लाजिमहै, धर्मको भुलजाना और दुनयवीकारोबारमें मशगूलहो जाना ठीकनही, दुनियामें धर्म-एक-आलादर्जेकी चीजहै, गर्मीके दिनोमे शुभहके वख्त-तरचीज-खाना वहेत्तरहै मगर इतना याद रखनाकि जिसरौज बदहजमी हुइहो-फाका-रखे, ज्यादहखानाखानेसे आदमीकी जानको तकलीफ पहुचती है,

[दोहा,]

दाहनेस्वर भोजनकरे-बाये पीवे नीर,
बायी करवट सोवतां-होय निरोग शरीर.

सूर्यस्वरमें खाना और चद्रस्वरमें पानी पीना तदुरस्तीकी अलामतहै, एक शहरमे-चारभाइ रहतेथे, उनमें तीनभाइ अछीतरह रौजगारकरके पैदाशकरतेथे और एक भाइ बेरोजगार रहताथा, मगर खानेकेलिये सबसे पहले मुस्तेज होजाताथा, एकरौज तीनभाइयोने मिलकर उसको कहाकि-कुछ धदेरोजगारमे लगो, बेठेबेठे

कहांतक खाओगे, मगर यहवात उसको अछीनहीलगी, दुसरेरोज उसने खानेकी जगह एकदिवारमें आलावनाकर खानेकी थाली उसमेंरखी और खडेखडे खानेलगा, जब तीनोभाइयोंने देखा और पुछाकि-क्यौ ! आज क्याढग निकालाहै, ? जो-खडेखडे खारहेहो उसने जवावदिया जिनकों हमारा वेठेवेठे खाना नागवार गुजरताहो उनके सामने हम वेठेवेठे क्यौं खावे ? खडेखडेही खालियाकरेगें, तव तीनोभाइयोंने कहाखूवसमझा ! अकलमंदोका यहीकामहै जोकहे कुछ और समझेकुछ, हमनेकहाथाकुछ धंदारौजगारकरो, तुमने यह ढंग निकाला इस मिशालका मतलव यहहैकि-जोकोइ-अपनेकों नसीहतदे उनसे गुस्ताखी करना महेज नादानी है, जैसे खानपानसे, औरहवासे वदनकी हिफाजत किइजातीहै वैसे मकानसेभी करनाचाहिये, जिसमकामें हवाकी आमदरफत वनीरहतीहो-वदवू-न-आती हो, और अंधेराभी-न-रहताहो ऐसेमकानमें निवास करना चाहिये, जिसमकानमें वारीशकेदिनोमें पानी गिरताहो उसमें रहनावसना ठीकनही, मकानवनानेकी तरकीव मुल्कमुल्कमें अलग अलगहै, मकानके दरवजे और वारीये ऊंचीरखना चाहिये, ताकि-आदमीके सीरकों चोट-न-लगे, चुनाचे ! एकशख्शने मकान नया वनाया, मगर दरवजे उसके वहुत छोटेरखे, हरवख्त जाते आते सीरमें चोटलगनेका खतराथा, एकदफे उसीकेसीरमें इसकदर चोटलगीकि-वेहोशहोकर गिरपडा, और खुनभी निकलआया, कहिये ! ऐसेछोटे दरवजे रखनेसे क्या फायदा, ?

९-एकसो-आठहाथ-लंवाघर-चारोतर्फ हवादार कमरे वीचमे चौक-और जिसतर्फ देखो चादनाहो ऐसे घरमें रहना निहायतउमदावातहै, मकानकी सीढी चौडीवनाना चाहिये, जो-न-वहुत उंची और-न नीचीहो, जिसपर वुढा और लडका व-खुवीचढसके,

घरकी दिवारपर चित्राम करानातो–लडाइका देखाव–साप–कौआ–विनागर्दनके आदमीका चित्र–नही–खीचवाना चाहिये, देवविमान–नाचतीहुइ परी–बागबगीचे–फलफुल–और–मजालिशका चित्रामबनाना अछाहै, छोटेघरोमें रहना जहाकि–हवाकी–आमदरफत न–हो–बिल्कुल ठीकनही, आजकल कइजगह देखतेहै–तो–छटीछोटी कोठरीयोमें लोग–अपनी औकातबसर करतेहै, जिनकेपास दौलत नही है पूर्वजन्ममें पुन्य कम कियाहै उनकेलिये अमरलाचारी है,दुनियामें चक्रवर्ती जैसे बडेबडेराजे होगये जिनकेघर–नवनिधान–चौदहरत्न–हाथीघोडे–जवाहिरात–सोना–चादी–नोकर–चाकर–म्याने–पालखी और छडी चवर मौजुदथे–वेभी पुन्यसे सबचीज पायेथे,–

१०–सचबोलना और धर्मपर कामील एतकात रखना हरेककेलिये फायदेमदहै, आजकरनेका काम कलपर मतरखो, आदमी जैसे दुश्मनसें डरताहै अगर पापसे डरे तो क्याही ! उमदा बातहै, दो–आदमी–बातकररहेहो विनाबुलाये जाना मुनासिब नही, गुनहगारकी माफी उसवख्त होसकती है जब–वह–अपनी–खताका कायलहो, जहा नादानोकी मजलिश मिलीहो वहा नसीहतकरना कारआमद नही. नादानदोस्तसे दानादुश्मन बहेत्तर, सबदिन एकसरखे किसीके नहीरहते. रामचद्रजी लछमनजी–और–पाचपाडव जैसे इकबालमंद और खुशनसीबोंकोंभी बनवास करनापडाथा, कहातक बयानलिखे बहुतेरीमिशाले मौजूदहै, तदबीरकरतेहुवेभी काम उल्टा होजाताहै तो समझनाचाहिये तकदीर अपनीअछीनही, तकदीर उल्टीहो और काम बिगडजाय–तो–उसका रंजकरनाभी लाहासिलहै, जहा बहुतसे बेइल्मलोग बेठेहो–वहा–इल्मी तकरीर करना फायदेमंद नही,—

(अनुष्टुप्-वृत्तम्)

कः कालः कानि मित्राणि-कोदेशः कौ व्ययागमौ,
कश्चाहं काच मे शक्ति-इतिचिंत्यं मुहुर्मुहुः, १,

हरेकशख्शकों लाजिमहे कोइबात मुहसे निकाले तो इतनीची-जोका खयाल अवलसे करलेव, जमाना कैसाहै ? मेरेदोस्त कौन-कौनसेहै ? किसमुल्कमें-में-बेठाहुं ? कितनाखर्च और कितनीआमदहै ? मे-कोनहुं और मेरी ताकात कितनी है ? इनबातोंको पहले सोचलेवे, दोस्ती उसकेशाथ रखनाचाहिये-जो-आलीहिंमतहो, जिसकादिल साफहै-वो-हमेशापाकहै, बखील आदमी खर्चनहीकरसकता, अखबारवाले हमेशां कलमसे जंगकियाकरतेहै, जो सभा जिसकामकेलिये मुकरर किगइहो-और-वह-उसकामको-न-करसकेतो उसकों नाममात्र सभा कहना चाहिये,—

११-जोलोग कहतेहै औरतकों इल्मपढाना नहीचाहिये यह उनकी भुलहै, मौसिमे जवानोमें अैसा कौनमर्द-या-औरतहै जो-दामे इश्कमें-न-फसाहो, लेकिन ! तारीफ उसकी है,-जो-फंदेइश्कसें बचारहे, अगले जन्मकी नेककिस्मतसे आदमी खूबसुरत रुप पाताहै, ख्वाह ! मर्दहो-या-औरत ! मुबारकचहेरा-और-हुस्नोजमालभी एकतरहका जादु समझना चाहिये-कइलोग दुसरेकामोमे बहादुरी करसकतेहै लेकिन ! आलीदर्जेका बहादुर-वो-है-इश्कसे फतेहपावे, हरेकशख्शको मुनासिबहै माबापकी फरमाबरदारी करे और यहभी यादरहे ! औरतकी तर्फदारीकरके मातपिताको तकलीफ न-देवे,-जीव अनादिहै इसका बनानेवाला कोइनही, आराम और तकलीफ अपने कियेहुवे-कर्मोका फलहै,-धर्मप्रवर्तक तीर्थंकर सर्वज्ञ होतेहै, नेककामसे बहिस्त मिलताहै, और बदकामोंसें दौजक, दौ-

लतपर घमडकरना ठीकनही, गोस्तखाना–और–शराबपीना मुताबिकधर्मशास्त्रके फरमानसे पापहै,–जोशख्श अपने मावापकों गाली देताहै पुरानादानहै, जोशख्श अपनी पैदाशमेंसे आधा हिस्सा धर्मके काममें खर्चकरे उसकी तारीफहै, जो–रुपयेमें चारआने खर्चे–वह–दोयमदर्जे–और–जो–एकरुपयेमें एकआनाभी धर्ममें खर्चकरे–वो–तीसरे दर्जेपरहै, जोलोग बिल्कुलखर्च–धर्मकाममें–नहीकरते वडीभुलहै, पेस्तरके लोग जब बुढापेकेदिन आजातेथे दुनयवीकारोवार छोडकर दीक्षा इख्तियार करतेथे–या–तीर्थ भुमिमेंजाकर धर्मकरतेथे, वहुतसेलोग आजकल इसकामको भुलगये है,

१२–पृथवी स्थालीके आकार गोलहै, और घुमतीनही बल्कि! कायमहै, चांद सूर्य बेशक ! घुमते है. अगर पृथवी घुमतीहो–तो–एकशहर जो दुसरे शहरसे–उत्तरतर्फहै कभी दखनतर्फ होजाना चाहिये, और जो दखनमेंहै उत्तरमें होजाना चाहिये, दुसरी दलील यहहैकि–किसीशहरमें समझो दोघंटेतक वारीशहोतीरही इधर जमीन फिरनेवालोके फरमानसे फिरतीहुइ जमीन कोसोतकदूर चलीगइ, फिर वहांके तालाव पानीसे–न–भरनाचाहिये. और भरजाते है यह आमलोग अपनी आखोसे देखते है इसकी क्यावजह, ? तीसरीदलील यहहैकि–एक–परींदा अपने मालेसे आस्मानतर्फ उडा और कुछदेरतक सफरकरता रहा, इसअर्सेमें जमीन फिरनीमाननेवालोके खयालसे जमीन कोसोतक दुरचलीगइ, फिर वह परींदा अपने मालेकों कैसे पासकेगा ? और सब देखतेहै पासकताहै, इसका क्यासबब, ? इल्मनजुम एक उमदा चीजहै मगर जाननेवाला कामीलहोनाचाहिये, कवि होना यहभी एकइल्म और अकलके ताल्लुकहै, हरकोइ कहे–मैं–कवि–बनजाउ तो यह होनही सकता,—

१२-जबकिसीके घर गमीहोजाती है चाहे-वो-अपना दुश्मनभी क्यौ-न-हो ! उसवख्त उसके घर जरुरजाना चाहिये, जिंदगीका कोइभरुसा नही-जो-कामधर्मका करलिया वही बेहत्तरहै. जोलोग कहते है हम दीक्षा लेनेका इरादा-तो-करते है मगर क्याकरे ! पढे लिखेनही, कोइकहेते है हम तीर्थोकी जियारतजाना बेशक ! चाहतेहै मगर फुरसत नही, ये-सब-उनके बहानेहै, सच्चेदिलसे जोशख्श दीक्षा इख्तियारकरना-या-तीर्थोको जानाचाहे उसको कौनरोक सकताहै, ? दुनियामें तकदीर सबसेआलाहै तदबीर मुकाबिले उसकेकोइचीज नही, तदबीर चुकजासकती, तकदीर नही चुकती, समझोकि बगेरतदबीरकेभी राज्य मिलसकताहै जब तकदीर सीधी हो,-आमलोग फायदेहीकेलिये तिजारतकरते है मगर जबतक तकदीर यावर-न-हो-शिवायनुकशानके कोइबात हासिल नहीहोती,

[शेयर]

यावरी ताले करे-तो-किमिया क्या मालहै, ?
शंगरेजा हाथमें-लोगे तो जर होजायगा, १,

एकशख्श पेस्तर गरीबी हालतमेंथा, बाद चंदरोजके किसीएकआला दर्जेके ओहदेपर पहुचा, और दौलतमंद होगया, अगली हालत जाननेवाला एक दोस्त उसका इसइरादेसे उसके पासगया कि-में-कुछ-इससे फायदाहासिल करुं, इधर-वह-दौलतमंद अपने ओहदेके घमंडमें इसकदर चकचूरथा कि-अपने दोस्तको जानताहुवाभी भुलगया, और पुछनेलगा-तुं ! कोनहै !! और क्यों ! आया ! ! कदीम दोस्तने कहा, ठीकहै वह-दिन-भुलगया,जो मुजसे उधारलेकर अपनागुजर करताथा, आज बडीबातें बनाताहै, इसबातको सुनकर ओहदेदार शर्मींदा होगया और घमंड उसका उतर-

गया, हरेकआदमी दौलत और ओहदेके घमडमें-न आवे, और अपने दोस्तोंकी यादीरखे,

[दोहा]

चलत कलम सुकत अखर-यही नेहका मूल,
नेह छांड नीलो रहे-ताके मुखपर धूल, १,

[गुलदस्ते-जराफत,]

[एक-कंजुस-शेठ-और शेठानीका लतिफा,]

१-किसीदिन एकशेठ अपनी शेठानीसे कहनेलगे इसवख्त हमारेपास इतनाधनमाल जमाहै, अगर हमारी सातपीढीतक लडके वाले खावे और मौजकरे तोभी कुछ अन्देशानही, लेकिन ! आठमीपीढीकी औलाद क्याखायगी इसबातकेलिये फिक्रमेंहुं. शेठानी बोली खूबकहा ! फिक्रमदहो-तो-आप जैसेहीहो, क्या ! जोजो औलाद होतीरहेगी अपनी अपनी तकदीर शाथ-न-लायगी ? और यहभी-खयालकरोकि-बाद अपने मरनेके दूसरी पीढीकी औलादही अगर सबधनमाल खोबेठेगी तो तिसरी पीढीकी औलाद क्याखायगी ? नाहक ! फिक्र करतेहो. जोकुछ धनमाल अपनेपासहै चैनसे खाओपीओ और धर्ममें खर्चकरो,—

[दोहा.]

पानी बाढ्यो नावमे-घरमे बाढ्यो दाम,
दोनो हाथ उलेचिये-यही सयानो काम, १,

देखो ! अपनी बिरादरीमे कइ ऐसेभी लोगहै जिनकेपास एक दिनकाभी खाना मौअसरनही तोभी-वे-अपनी तकदीरपर बेफिक्र रहा करतेहै और आप आठमी पीढीकी फिक्र लारहेहो, इस मिसा लका मतलब यहहैकि-कलकीभी-फिक्र-नहीकरना तकदीरका

हमेशां फिरतारहताहै कोइदिन अछा-कोइदिन बुरा, मगर-हां ! जो कंजुसहोतेहै-वे-अैसे फिक्रमेंही गिरफतार रहाकरतेहै, धर्ममें खर्चकरना नही और अैसेही वहाने पेंशकियाकरतेहै, मुताबिक धर्मशास्त्रके देखाजाय तो लाजिमहै जोकुछ वनपडे धर्मकाममें खर्चकरना और खाने पीनेमें कंजुसाइ नहीकरना, पुर्वजन्ममें धर्मकियाथा तो यहां-धनपाया, अगर यहां-न-करोगे आगे क्यापाओगे ? वहत्तरहै इस वातकी फिक्रकरना, एक कजुससे एक शख्शने पुछाकि-कपडे-कैसे पहनना चाहिये, उसनेकहा कपडे ऐसे पहनना चाहिये जो निकम्मे हो, जिसको दुसरा कोइ उठालेजानेका खयाल-न-करे, क्याकहना ! खूब सलाहदिइ, ! सलाह देने वालेहो-तो-ऐसेहो,

[एक मालिक-और-नोकरका किस्सा,]

२-एकशख्शके वहां एकनौकरथा, एकरौज मालिककी तवीयत कुछ नादुरुस्त हुइ नौकरको वुलाकरकहा, जाओ ! हकीमके पाससे दवा लाओ ! नोकर वोला अगर हकीमसाहव घर-न-मिलेगेंतो ? मालिकने कहाजाता क्यौनहीं ? वहानेवाजी कररहाहै, नौकरनेकहा अगर उनकेपास दवा-न-होगीतो ? मालिकनेकहा तुजको क्यामालूम दवा-न-होगी, नोकरने कहा, अछा ! जाताहु मगर दवा फायदा-न-करेगीतो, ? मालिक वोले अवे ! नादान ! फायदाहोने-न-होनेसे तुजे क्यागरज ? तू ! जा, और दवा ला, ! नौकर वोला फर्जकरो दवाने फायदाभी किया मगर आखीर एकरौजतो मरनाही है, फिरदवाकी क्या जरुरत, ?

[दोहा]

चलनाहै रहनानही-चलना विस्वा वीस,
थोडे जीवन कारने-कौन गुथावे सीस, १,

मालिकनेकहा यहबात तेरेपरभीतो गुजरेगी फिर नौकरी करने क्यौं आयाहै ? दुसरे नौकरकों हुकम-दिया इसको कानपकडकर घरसे निकालदो ऐसा नौकर किसकामका जो मालिकका हुकम-न-माने और गुस्ताखी करे,

[एक कमअकल लडकेका लतिफा]

३-एक कमअकल लडका अपनी अम्माका हुकम लेकर नौकरीकरनेकेलिये गेरमुल्ककों चला, अम्माने कहा हरेकके शाथ नर्मीरखना और झुककर चलना, लडका जव घरसेचला, और दोचार कोसके फासलेपर पहुचा, रास्तेमें एक-तालावके-कनारे धोवी कपडे धोरहेथे, सुकायेहुवे कपडे अकसर कभीकभी चौरलोग लेजायाकरतेथे, और धोवीलोगभी हमेशा उसकी ताकमें लगेरहतेथे, पस ! इससुरतमें वह लडका उसरास्तेसे गजरा, जो झुकाहुवा चलाजाताथा, धोवीयोंने समझा, सायत ! यहीचौर होगा, इसगुमानसे उसकों पकडा और मारपीट करनेलगे, लडकेनेकहा मुजे क्यौ मारतेहो ? मैंतो नौकरीकेलिये जारहाहु. धोवीयोंने कहा ऐसा झुककर छीपेहुवे क्यौ जाताहै ? सिधाहोकर चलाजा, और साफ होजा लडका जव आगेको वढा-तो-क्यादेखताहै खेतोंमें किसानलोग वीज डालरहेथे, देखकर इसनेकहा सव साफ होजाओ ! किसानलोग इसवातसे वडेनाराजहुवे और कहनेलगे अरे ! क्याकह रहाहै सव साफ होजाओ, यू-क्यौ नहीकहताकि-ऐसा वहुतहो, इसवातकों सुनकर लडका अगाडीवढा-तो-एकगावके वहार कइलोग मुर्दालिये आरहेथे, लडकेनेकहा, एसावहुतहो-ऐसावहुतकहो.-इसवातको सुनकर लोग नाखुशहुवे, और कहनेलगे, अरे ! एसामतकहो, युं-कहोकि-ऐसाकभी-न-हो, लडका इसवातकों खयालमें

रखकर आगे वढातो एक दुलहादुल्हन-सादीकरके वरातकेसाथ आ-
रहेथे, देखकर वोला ऐसाकभी-न-हो, इसवातकों सुनकर वराती-
लोगवहुत गुस्सेहुवे और कहनेलगे ऐसाक्यों कहताहै, ? यूं कहोकि-
ऐसा वारवारहो, फिरआगे वढा-तो-राहमें राजाके नौकर-दोचार
इज्जतदार महाजनोकों किसीखताहपर गिरफतार करके लेजारहेथे
लडकेने उनको देखकर कहा ऐसाकाम वारवारहो, तव उनकेशाथी
लडकेपर नाराजहुवे, और कहनेलगेकि-ऐसा क्यौं नहीकहताकि-
जल्दीछुटजाय, इसवातकों यादकरके आगेजाताहै-तो-एक वागमें
दो-जमातवाले-इकठेहोकर दावतकर रहेथे और कहतेथेकि-क्या !
मुवारक रौजहै-जो-आजहम इकठे होगये, लडका वहां पहुचा
और कहनेलगा जल्दी छुटजाय, तव उनलोगोंने खयालकिया, यह
कौन कमअकल लडकाहै-जो-एसावुरा सकुन निकालताहै, गरजकि
लडका-वहांसे आगेको वढा और एकगांवमे गया, वहां एकचौध-
रीकेपास नौकररहा, जव चंद्रौज गुजरे और एकरौज चोधरी
पांचदश आदमीयोंकी मजलिशमें किसी वातका निवेडा कररहेथे
चौधरानने नौकरसे कहा, जाओ ! चौधरीजीको वुलालाओं, जवा-
रकीरोटी तयारहै ठंडी होजायगी, नौकरने मजलिसमें आनकरकहा
चौधरीजी ! चलिये ! जवारकी रोटी डडी होजायगी, चौधरीजी
इसवातसे शर्मींदा हुवे और घर आनकर नौकरसे कहने लगे ऐसी
कोडवातहोतो मजलिसमे नहीकहना, जव मजलिस वरखास्तहो
धीरेसे कहना, एकरौजकी वातहै, चौधरीजीके घर अंगार लगगइ
चौधरानने नौकरकों दोडाया, और कहा, जाओ ! चौधरीजीकों
जल्दी वुलालाओ, चौधरीजी मजलिसमें वेठेथे, नौकर वहाजाकर
वेठगया, और दोघटेवाद जव मजलिस वरखास्तहुइ धीरेसे जाकर
कहा चलिये ! मकानको आग लगीहै, चौधरीजी घर आये और

देखातो वहुतसा नुकसान होगयाहै, पस नौकरको कमअकल जान कर उसीवख्त घरसे वहार निकलवा दिया, ऐसानौकर किसकाम-का-जो-कहोकुछ और समझे कुछ,

☞ [ऐक शुस्त आदमीका जिक्र,]

४-किसी जंगलमें एक शुस्तआदमी वेंरके दरख्तकेनीचे लवा होकर सोरहाथा, इत्तिफाकन ! एकवेंर दरख्तसे टुटकर उसकी छातीपर गिरा इस अर्सेमें एक आदमी थोडीदुरपर चलाजारहाथा शुस्त आदमीने उसकों पुकाराकि-भाइसाहव ! जरा इधरहोतेजाना, उसने समझा सायत ! कोइ जरुरीकाम होगा इस खयालसे उस शुस्तकेपास आया, तव शुस्तने कहा-मेरीछातीपर जो-वेर-गिराहै उठाकर मेरेमुहमें डालदो, इसवातको सुनकर वह आयाहुवा आद-मी वोला, अवे ! गवार ! क्या ! तेरेहाथसे उठाकर मुहमे नहीडा-लाजाता ? जो मुजकों वुलाया, उसनेकहा माफकरना-में-जन्मका शुस्तआदमीहुं-यही-वजहहैकि-आपकों तकलीफदिइ, तव आया-हुवा आदमी कहताहै-में-तुजे तकलीफ देताहु, तु ! अपने हाथसेही उठाकर वेंर खाले, एसा कहकर रास्तालिया और कहता जाताहै कि-क्या ! खूवआदमीहै-जो-छातीपर गिराहुवा-वेंरभी-उठा नही-सकता, वगर्तेकि-हाथपेर-दुरुस्तहै फिरभी यह हालतहै,

[एक कंजूसका किस्सा.]

५-एक कंजूस अपने घरमें रातकों अकेला सोरहाथा, इत्ति-फाकन ! एक चूहा-उसके-पेटपर होकर इधरसे उधर चला गया, फौरन ! कजूस नीदसे चौक उठा. और कहनेलगा, हाय ! प्रान गये, हाय ! प्रान गये, इसतरह गाफिल होकर वेइख्तियार रोने

लगा, पडोसके लोग सुनकर आगये और कहने लगे क्यौं ! भाइ!! किसलिये रोते हो, ? उसने कहा देखिये ! चूहा–मेरे पेटपर होकर चला गया, लोगोने कहा चला गया तो चला गया, ! इसमें रोनेकी–क्या ! वात है, ? कंजूस वोला–मे–चूहेके चले जानेपर नही रोता हुं, में–जो–रोताहु सो इसखयालसेकि–यह–पंथा वूरी निकली, आज चूहा पेटपर होकर चला गया, कल–सांप–चला जायगा, फिर मेरा जिना कैसे होगा ? लोगोने कहा जमीनपर क्यौ सोतेहो ? एक चार पाइ मोंललाकर उसपर सोया करो, फिर अैसी आफत क्यौं आयगी, ? कंजूसने कहा मेरी कजूसाइ तो आप लोग जानतेही हो इतना खर्च मुजसे कैसे होसकेगा, ? लोगोने कहा–न–होसके तो हमकों क्या ? हम आज पडोसका हक अदा करनेकों आये है, कल हम क्यौं ! आयगे, ? तुम जानो और तुमारा काम, ऐसा कहकर चले गये, ठीक कहा हैकि–कंजूसोसे–न–खर्च किया जाय, न–खाया जाय,—

[एक साहूकार और धोवीकी तकरीर.]

६–किसी साहूकारने अपने धोवीसे कहा–तूं–वडा गाफिल है और कपडेकों अैसा धोता हैकि–एकएकके दस दस वना देता है, धोवीने जवाव दिया स्यात आपका कहना सच होगा, मगर आप धुलाइ तो एक कपडेके हिसावसेही देते है, साहूकारने कहा अवे ! गुस्ताखी क्यौ करता है ? कपडे फाडकर वरवाद करना और फिर जवावमे चालाकी ! जा चलाजा ! ! आजसे कपडे दुसरेसे धुलवाये जायगे, तव धोवीकी अकल ठिकानेआइ और कहनेलगा–कसुर माफकिजिये, आइंदा ऐसा–न–करुगा, साहूकारने उसकी आजीजी पर मामूल मुताविक कपडे उसको दिये और–वहभी–कपडे अछी-तरह धोकर लानेलगा,

[बेटेकेलिये वापकी हिदायत,]

७-एक साहूकारने मरतेदम अपने बेटेकों हिदायत किइकि-कभी धुपमे नहीचलना, शुभह शाम मीठा खाना खायाकरना, और किसीको उधारदेना फिर उसे मागनानही, ऐसा कहकर साहुकार फोतहुवे, इधर बेटेने वाद अपने वालिदके उसी मुताविक वर्तावकर-ना शुरुकिया, अवलतो अपने घरसे दुकानतक रास्तेमें रेशमी और जरीके कपडोसे-चांदनीयां-लगवा दिइ ताकि-घरसे दुकान जाते आते धुप-न-लगे, क्योंकि-वालिदका फरमानाथा धुपमे-नही चलना, दुसरा फरमाना-जो-मीठाखाना खानेकाथा उसका वर्ताव इसतरह करनेलगाकि-नामी-हलवाइयोंको घरपर नौकर रखलिये. और उनसे कहदियाकि-रौजमर्रा-तरहतरहकी मिठाइ वनायेकरो, गरजकि-वह-हमेशा मिठाइ खायाकरताथा, तीसराफरमाना वालि-दका यहथाकि-उधारदेकर मागना नही सो जिसको उधारदेताथा मागता नहीथा, इसतरह फिजहुल खर्चकरते करते दोलत उसकी फनाहोगइ, और जब मुफलिसी हालतमें आनपडा, अपने वालिदके दोस्तसें जाकर मिला, और कहने लगा क्या सववहै-जो-हम-अपने वालिदके फरमानपर चले और फिरभी नुकशान उठाया ? क्या ! हमारे वालिद बुजर्गवार दुश्मनथे-जो-ऐसी हिदायत करगये तव वालिदके दोस्तने कहा, अवे ! नादान ! ! क्या कहरहाहै, ? तेरे वालिदने तो ठीकही कहाथा, तु ! उल्टा समझगया इसका कोइ क्या करे ! सुन ! ! तेरे वालिदने जो कहाथा धूपमे नहीचलना-सो-वात यहथीकि-दुपहरसे पहले घरसे दुकानपर चलेजाना और शामको वापिस आना, ताकि-धूपसे-वचावरहे, तेंने उल्टी समझसे रास्तेमें रेशमी चांदनियां लगवादिइ, दुसरीवात यहथीकि-भूख-लगे उसवख्त खायाकरना विनाभूखके खाना-न-खाना, क्योंकि-भूख-

लगा, पडोसके लोग सुनकर आगये और कहने लगे क्यौं ! भाइ!! किसलिये रोते हो, ? उसने कहा देखिये ! चूहा-मेरे पेटपर होकर चला गया, लोगोने कहा चला गया तो चला गया, ! इसमें रोनेकी-क्या ! वात है, ? कंजूस वोला-में-चूहेके चले जानेपर नही रोता हुं, में-जो-रोताहु सो इसखयालसेकि-यह-पंथा बूरी निकली, आज चूहा पेटपर होकर चला गया, कल-सांप-चला जायगा, फिर मेरा जिना कैसे होगा ? लोगोने कहा जमीनपर क्यौं सोतेहो ? एक चार, पाइ मोललाकर उसपर सोया करो, फिर अैसी आफत क्यौ आयगी, ? कंजूसने कहा मेरी कंजूसाइ तो आप लोग जानतेही हो इतना खर्च मुजसे कैसे होसकेगा, ? लोगोने कहा-न-होसके तो हमको क्या ? हम आज पडोसका हक अदा करनेकों आये है, कल हम क्यौं ! आयगे, ? तुम जानो और तुमारा काम, ऐसा कहकर चले गये, ठीक कहा हैकि-कंजूसोसे-न-खर्च किया जाय, न-खाया जाय,—

[एक साहूकार और धोवीकी तकरीर.]

६-किसी साहूकारने अपने धोवीसे कहा-तूं-वडा गाफिल है और कपडेकों अैसा धोता हैकि-एकएकके दस दस वना देता है, धोवीने जवाव दिया स्यात आपका कहना सच होगा, मगर आप धुलाइ तो एक कपडेके हिसावसेही देते है, साहूकारने कहा अवे ! गुस्ताखी क्यौं करता है ? कपडे फाडकर वरवाद करना और फिर जवावमें चालाकी ! जा चलाजा ! ! आजसे कपडे दुसरेसे धुलवाये जायगे, तव धोवीकी अकल ठिकानेआइ और कहनेलगा-कसुर माफकिजिये, आइंदा ऐसा-न-करुगा, साहूकारने उसकी आजीजी पर मामूल मुताविक कपडे उसको दिये और-वहभी-कपडे अछी-तरह धोकर लानेलगा,

है, ? जवावमें विद्यार्थीने कहा लाडु-पेंडा-और-वर्फी, राजाजी इन बातोंकों सुनकर समझगये लडका नादानहै, फौरन! उसकों वापिस जानेका हुकम दिया, और कहला भेजाकि-तुमारे-पडितजीकों भेजो विद्यार्थी पडितजीके पास आया, और कहा आपकों राजाजीने बुलवाये है, पंडीतजीने कहा-ठीकहै, मगर तुजसे क्या क्या! बातें हुइ वतला, विद्यार्थीने कहा, मुताविक आपके फरमानके मुलाइम और मीठी वातेही किइहै, मुलाइम चीजोंमें-रुइ-रेशम-मखमल कह सुनाया, और मीठी चीजोंमें लाडु-पेंडे-वर्फी-वगेरा कहाहै, पंडितजीने कहा, अवे! नादान!! मेने तुजसे क्या कहाथा, और तुं! क्या समझा!! मूर्खताके जवाव देआया, विद्यार्थी वोला, नाराज क्यों होतेहो, ? जैसा आपने फरमाया मेने उसमुजव किया, इसका मतलव यह हैकि-नादान-विद्यार्थी ऐसेहीहुवाकरते है, हरेकको, चाहिये अपने मालिकके कहनेकों समझे और उसपर अमल करे -इसनादान विद्यार्थीकी तरह-उल्टा-खयाल-न-करे,

[वालिद और लडकेकी गुफ्तगु,]

९-किसीएक साहूकारका लडका जलमें तैरनेकेलिये नदीपर जानेलगा, वालिदने उसकों मना किया, मगर उसने हरचंद-न-माना, तव वालिद गुस्सेहोकर कहनेलगे, भला! वच्चा! तु-जा!! अगर पानीमें डूवगया तो ऐसा पिटुंगाकि-तुंभी-याद करेगा, लडकेने कहा क्या खूब वातहै, जव-में-पानीमें डुवजाउंगा, तो आप किसकों पिटोगे? वालिदने कहा जवसे-तु-पैदाहुवा है तेरा यही हालहै, और आजतक-में-तेरी गुस्ताखीया जानचुकाहुं

[हिकायत एक गुरुजी और श्रावककी,]

१०-एक श्रावक अपने गुरुमहाराजकी खिदमतमें हमेशां हा-

केवरूत-जो-चीज खाओ मीठीलगेगी, तेने उसकी एवजमें मिठाइ खाना शुरुकिइ, तीसरीबात यहथीकि-जिसकों माल उधारदेना तो ज्यादह रकम अपनेपास रखकर देना, ताकि-वह-अपनाघर ढुंढता चलाआवे, अपनेको उसकेघर जानेकी कोइ जरुरत -न-पडे, तेने उसका माइना उल्टा समझाकि-उधार देकर मांगने-न-गया, अब गौरकर ! इसमे भुल किसकीहै तेरी-या-तेरे वालिदकी ? इस बातकों सुनकर लडकेने अपना होंस संभाला, और अगले वर्तावकों छोडकर वालिदकी हिदायतपर कायम होगया, हरेक शख्शकों लाजिमहै अपना भला चाहनेवाले बुजुर्गोंकी हिदायतकों अछीतरह समझे उसपर अमलकर,-कभी नुकशान-न-होगा,

[एक पंडित और वेंसमज विद्यार्थी,-]

८-एक राजासाहवने अपने शहरसे एक बात पुछनेके लिये बुलवाये, और नौकरसे कहदियाकि-अगर-पंडितजीको फुरसत-न-होतो उनके किसी विद्यार्थीकों लेआना, नोकर पंडितजीके पास गया और कहा आपकों राजासाहव यादकरते है, उनकों फुरसत नहीथी एक विद्यार्थीकों जानेके लिये तयारकिया, और चलतेवख्त उसको समझा दियाकि-देख ! तुं ! राजाजीके रुवरु जाताहै, जो कुछ राजाजी पुछे नर्मी और मुलायमीसे जवाबदेना, सख्त बात-चीत मत करना, और जोकुछ पुछे उसका मीठी जवानसे उत्तर देना, विद्यार्थी इसबातकों खयालमें रखकर राजाजीकी खिदमतमें पहुचा, राजाजीने पुछाकि-अछा ! तुमआये हो ! ठीक है, खेर ! यह बतलाओ ! आजकल तुम पंडितजीसे कौनकौनसी किताबे पढते हो ? विद्यार्थीने सौचाकि-पंडितजीका फरमानहै नर्म और मुलाइम बातें बोलना, जवाब दियाकि-राजाजी ! रुइ-रेशम-और-मखमल वगेरा, फिर राजाजीने पुछा तुमारे खानेपीनेका क्या ढंग

है, ? जवावमे विद्यार्थीने कहा लाडु-पेंडा-और-वर्फी, राजाजी इन बातोंकों सुनकर समझगये लडका नादानहै, फौरन! उसकों वापिस जानेका हुकम दिया, और कहला भेजाकि-तुमारे-पंडितजीकों भेजो विद्यार्थी पंडितजीके पास आया, और कहा आपकों राजाजीने बुलवाये है, पडीतजीने कहा-ठीकहै, मगर तुजसे क्या क्या! वातें हुइ वतला, विद्यार्थीने कहा, मुताविक आपके फरमानके मुलाइम और मीठी वातेही किइहै, मुलाइम चीजोमें-रुइ-रेशम-मखमल कह सुनाया, और मीठी चीजोमें लाडु-पेंडे-वर्फी-वगेरा कहाहै, पडितजीने कहा, अवे ! नादान ! ! मेने तुजसे क्या कहाथा, और तु ! क्या समझा ! ! मूर्खताके जवाव देआया, विद्यार्थी बोला, नाराज क्यों होतेहो, ? जैसा आपने फरमाया मेने उसमुजव किया, इसका मतलव यह हैकि-नादान-विद्यार्थी अैसेहीहुवाकरते है, हरेकको, चाहिये अपने मालिकके कहनेकों समझे और उसपर अमल करे इसनादान विद्यार्थीकी तरह-उल्टा-खयाल-न-करे,

[वालिद और लडकेकी गुफ्तगु,]

९-किसीएक साहूकारका लडका जलमें तैरनेकेलिये नदीपर जानेलगा, वालिदने उसकों मना किया, मगर उसने हरचंद-न-माना, तव वालिद गुस्सेहोकर कहनेलगे, भला! वच्चा! तुं-जा!! अगर पानीमें डुवगया तो अैसा पिटुंगाकि-तुभी-याद करेगा, लडकेने कहा क्या खूव वातहै, जव-में-पानीमें डूवजाउगा. तो आप किसकों पिटोगे ? वालिदने कहा जवसे-तु-पैदाहुवा है तेरा यही हालहै, और आजतक-में-तेरी गुंस्ताखीया जानचुकाहुं

[हिकायत एक गुरुजी और श्रावककी,]

१०-एक श्रावक अपने गुरमहाराजकी खिदमतमें हमेशां हा-

जेर रहा करताथा, चौमासेके चार महिने तक उसने इसकदर खिदमत किइकि–जैसी–किसीने–न–किइ होगी, चंदरौजमें ऐसा मौका आगयाकि–उसकी दुकानमे रुपये पैसेकी तंगी आगइ, खाने पीनेसेभी तंग होगया, एकरौज गुरुजीने उसको पुछाकि–आजकल –तुम–उदास क्यौ रहा करते हो? उसने कहा में–रुपये पैसेसे निहायत तंग होगया हुं, लोगभी कहते हैकि–तुमने–अछा धर्म किया जो खाने पीनेसेभी दरगुजरे, धर्मका फल अछा होनेकी एवजमें क्या सवब हैकि–मेरा काम–बिगड गया, गुरुजीने कहा धर्मका फल तो हमेशां अछाही होता है, मगर तुमारे कोइ पूरवजन्मके कर्मोंकानतीजा था–जो–इसहालतमे आगये हो, फिक्र मत करो, तकदीरका चक्र फिरता रहता है. चंदरौजमें जव अछी तकदीर आ जायगी फिर सबकाम सुधर जायगा, वाद चंदरौजके ऐसाही हुवा, और उसके अछे दिन आगये, इस लेखका मतलब यह हैकि–किसी शख्शने–धर्म कीया और उस अर्सेमें उसका काम बिगडगया तो–यह–न समजनाकि–धर्म करनेसे बुरा हुवा, धर्मका फल हमेशां अछाही हुवा करता है, मुनासिब है पूरवजन्मके किये हुवे कर्मोंके फलपर कायम रहे,–

[नवजवान और एक बुढेकी गप्प,]

११–एकजगह पांचदस जवान आदमी वेठे हुवे अपनी वडाइ कर रहेथे, कोइ कहताथा–मैंने–पांच घाव लडाइमें तलवारके खाये, कोइ कहता है मेने सात घाव खाये, लेकिन! मरा नही. इतनेमें एक बुढाभी वहां वेठाथा कहने लगा अवे! जवानो!! क्या खयाली खीचडी वना रहे हो? तुम पांच सात घाव लगनेकी वात कररहे हो, मेने जवानीमें कइ लडाइ लडी और इतनेघाव वदनपर खायेथेकि–तीलधरनेकी जगह वाकी नही रहीथी, इसवातको सुनकर एक नव जवान लडका वोल उठा, अछा! आप जरा

कपडे उतारिये, हम देखेतो सही आपने कितने घाव खाये है, बुढा हंसकर बोला, न–वह–जमाना रहा, न–जवानी रही, सब जखम मिट मिटा गये, क्या ! देखोगे, ? जाओ ! अपने घरका रास्ता लो, कोरीवातें क्यौं वना रहे हो, ?

[एक हकीम और मरीजकी तकरीर,]

१२–एक हकीमसाहव अपने जाहिल मरीजसे पुछने लगेकि–कहो ! वनिस्वत औरदिनोंके कल तुमारी तवीयत कैसी रही ? और खाना खुशीकेशाथ खाया–या–नही, ? मरीजने जवाव दिया तवीयत तो अछीरही. खानाभी कुछ खायागया, मगर खुशीकेशाथ नही, पुदिनेकी चटनीकेशाथ खायाहै, हकीमसाहवने सोचा ! क्या खूव ! मरीजहै जो हालते वीमारीमेंभी गुस्ताखीकी वातें नही छोडता, जाहिरमे कहनेलगे खुशीकेशाथ नहीखाया तो क्या हर्ज है, पुदिनेकी चटनीकेशाथभी खायातो सही, देखलो ! हमारीदवाने किसकदर फायदा पहुचाया–जो–विल्कुल नहीखातेथे अव खाने तो लगे, अवकहो–तो–ऐसीदवा दु–जो–तुमारा खानापीना वतौर आगेके छुटजाय, मरीजने कहा माफकिजिये, मेरा तो यहीहालहैकि वातवातमें घरकेलोगोसेभी दिल्लगी किया करताहु,

[एक कजुसका जवाव,–]

१३–एक शहरमें एक दौलतमंद शख्श अपनी दुकानपर वेठा–हुवा रुपए पैसे गिनरहाथा और अपना हिसाव मिलारहाथा, मगर कुछ गलतीसे हिसाव मिलता नहीथा, इस असेंमें एक फकीर उसकी दुकानपर आया, और सवालकिया, वावा ! कुछ दिलवा–इये, जो आगेको मिलेगा, दौलतमदने जवावदिया फकीरसाहव ! जोकुछ पर्वजन्ममें दियाथा यहा मिलाहै, जिसको गिनते गिनते

थक गयाहुं, और नाकमें दम आगयाहै, अब हर्गिज !-न-दुंगा जो आइंदे मिले, और मुसीबत उठाना पडे, आप आगेको बढिये, और किसी दुसरेके पास सवाल किजिये, सायत ! कुछ मिल जायगा,—

[एक हकीम और मरीजका बयान]

१४-एक मरीजने ऐक हकीमसे अपनी बीमारीका हाल सुनाया, और दवाके लिये अर्ज गुजारीश किइ आप मुजे दवा दिजिये, जो कुछ कीमत होगी खिदमतमें हाजिर करुंगा, हकीमने उमदा दवा उसको दिइ और-वह-चदरौजमें अछा होगया, हकीमने कहा अब आपकी बीमारी रफा होगइ, दवाकी कीमत भेजवा दिजिये, मरीजने कहा, आपने क्या अैसी भारी दवा दिइथी ? पांच चार पुडिये जो दिइथी उसकी कीमत लेलिजये, हकीम इसबातकों सुनकर अपनी भूलपर नादीम दुवे, और आइंदाकेलिये अैसा अहदकरलियाकि-दवाकेदाम पेस्तर लेलेना चाहिए, क्यौंकि-आदमी अपना काम निकले बाद अनजान होजाता है, और कुछ देता नही, बहेत्तर है पेस्तरसे होशियार होकर चले,

[औरत मर्दका मलाइकेलिये झगडा]

१५-एक शख्शने अपनी औरतसे कहा कल-में-एक भेंस खरीदकर लाउगा, औरतने कहा अछीबात है, मलाइ-मेंही-खाउगी, मर्दने कहा नही ! मलाइतो-में-खाउगा, और तुजे कोरी छांछ दुगा, इसबातपर दोनोंकी तकरीर होनेगी यहातककि-नतीजा-मार पीटका आगया, पडोसी शोरगुलसुनकर दरयाफतकों आये और पुछने लगे क्यौं लडते हो, ? दोनोंने अपना माजरा कहसुनाया, पडोस कहने लगे क्या खूब बात है ! अबतक भेंस आइ नही और

मलाइके लिये लडाइ, इसमिशालका मतलब यह हैकि-विना-चीज -लडाइ लडना फिजहूल है,—

[एक नौकरकी फिजहुल वडाइ]

१६-एक दौलतमंदके मकानपर पनरासोलह आदमी बेठे बातचित कर रहेथे, जब मालिकने चाहा अब आरामपानेका वख्त करीब आया है, वत्ती बुझाइ जाय इसखयालसे अपने नौकरकों बुलनेके लिये घंटी बजाइ, तब मोहना नामका नौकर भीतर दोडा और थोडी देरके बाद हसता हुवा बहार आया, दुसरे नौकरोने पुछा क्यों बे! हसता क्यों है? मोहने नौकरने कहा, भाइ! सोलह हट्टेकट्टे जवान बेठे हुवेथे, उनसबोसे एक बत्तीभी-न-बुझी, जब हम गये तब बुझी, देखिये! नौकरने फिजहूल बडाइ मारी, जोकि उसका-खास काम था किया और फिर बडाइकी वडाइ,—

[एक दिवानेका किस्सा,]

१७-एक बादशाह किसी दिवानेके सामने गया और कहाकि -तु कुछ मुजसे माग, जो तु मागेगा-में-दुगा, तब दिवानेने कहा हुजुर! मख्खीयां मुजे बहुत सताती है, इनकों हुकम दिजिये, मुजे-न-सतावे, बादशाहने कहा. अरे! जो कुछ मेरें हुकममें है ऐसी चीज मांग, यह क्या! वाहियात मागता है, दिवाने शख्शने कहा जब मख्खीयेंभी आपका हुकम नही मानती है-तो-और क्या चीज मांगुं? जो आप देसकोगे,

[एक मुसाफिरका लतिफा]

१८-एक मुसाफिर किसी दुसरे गाव जानेके लिये टेशनपर चला जा रहाथा, और दिलमें समझ रहाथा बारा अभी नही बजेहै, बारा

वजे जानेवाली रैल मिल जायगी, रास्तेमें जो लोग मिले उनसे पुछने लगा, क्यौ भाइ ! वारांसे ज्यादह-तो-नही वजे, रैल मिल जायगी, ? उनोने कहा हमारे यहां वारांसे ज्यादह कभी नही वजते, रैलको गये आधा घंटा होगया है, जल्दी जाइये सायत ! मिल जायगी,-

[फुलकीवडाई]

१९-एकरौज अखवर वादशाहने सरेदरवार अपने मुसाहिवोंसें पुछाकि वतलाओ ! फुलोंमें कौनसा फुल वडाहै, इसवातपर कइ मुसाहिवोने कहा फुल गुलावका वडाहै, कइयोने चंपाका और किसीकिसीने जाइका फुल वडा कहा, आखिरकार जव वीरवल तक नौवत पहुंची-तो-उनोनेकहा जहांपनाह ! सवसे वडाफुल कपासकाहै जिससे तमाम आलमका लिवास वनताहै और उनके वदनकी हिफाजत होतीहै, वादशाह इसवातकों सुनकर निहायत खुशहुवे और वीरवलकों इनाम दिया,—

[एकवुढेकी चालाकी]

२०-एक वापवेटा वाजारसे सौदा लिये आरहेथे. वापके सीरपर तेलसे भराहुवा घडाथा, और वेटा दुसरी चीजेलेकर पचीस कदम के फासले चलाआरहाथा, रास्तेमें वुढेने एक सोनामहोर कचरेमें पडीहुइ देखी, मगर दुकानदार लोग देखरहेथे, इसलिये उठालेनेकी सुरत-न-वनी, तव अपने सीरपर जो तेलका घडाथा जमीनपर गेर दिया और तेलजमीनपर वहनेलगा, तव वुढेने तेलके वहाने महोर अपने हाथ करलिइ दुकानदारोने वेटेसे कहा तेरे वालिदने तेलका घडा जमीनपर गिरादियाहै, तुं ! जल्दी जा वेटेने कहा इसवातकी कोइ परवाह नहीं, में-खूव-जानताहु-मेरे वालिद ऐसे अनजान नही जो वगेरफायदेके घडा नुकशान करे फायदा देखकरही यहकाम किया होगा,

गरजकि-वापवेटे-अपना मतलव करके आगे वढे पीछेसे लोगोको माल्डम हुवा किसीकी सोना महोर पडीहुइ देखकर बुढेने यहकाम कियाथा,—

[दोस्तोंकी वातचित,]

२१-किसी शख्शके पांचलडकेथे और-वे-अपने वालिदके पास खेलरहेथे, इतनेमें एक दोस्त उसका वहां आन पहुचा, और वातें होनेलगी, पांचलडकोंका वाप कहनेलगा आजकल एकरुपयाभी-में-पैदा-नही करसकता, दोस्तने कहा वजाहै, मगर यहतो वतलाइये फिर पांच लडके कैसे पैदा किये, ? पांचलडकोंका वाप वोला, खुवकहा, में-क्या कहताहु और आप जवाव क्यादेरहेहो जैसा किसीने कहाहै, "पुछी जमीनकी-तो-कही आस्मानकी, "

[एक घोडे सवारका मजाक,-]

२२-एक शख्श घोडपर सवार होकर जंगलकी तर्फ घास लानेके लिये गया, और घासकी गठरी वाधकर अपने सीरपर रखी, और घोडेपर सवार हुवा, जव-वह-गांवके करीव आया एक शख्शने पुछाकि-आपने-घासकी गठरी सीरपर क्यौं रखी है, ? सवारने जवाव दिया घोडेको ज्यादह वौज-न-लगे इसलिये सीरपर रखी है, मुलाकाती आदमी वोला, तारीफ है आपकी उमदा अकलपर, अकलमद होतो अैसे हो,

[दुनियाकी हिर्सका किस्सा,]

कश्चित् काननकुंजरस्य भयतो नष्टः कुवेरालय
शाखासु ग्रहणं चकार फणिन कूपे त्वधो दृष्टवान्
वृक्षो वारणकंपितोपि मधुनो विंदू नितो लेढी सः
तल्लुब्धोमरशब्दितोपि-न-ययौ संसारसक्तो यथा,

वजे जानेवाली रेल मिल जायगी, रास्तेमें जो लोग मिले उनसे पुछने लगा, क्यौं भाइ! वारांसे ज्यादह-तो-नही वजे, रेल मिल जायगी, ? उनोने कहा हमारे यहां वारांसे ज्यादह कभी नही वजते, रेलको गये आधा घंटा होगया है, जल्दी जाइये सायत! मिल जायगी,-

[फुलकीवडाई]

१९-एकरौज अखवर वादशाहने सरेदरवार अपने मुसाहिवोंसें पुछाकि वतलाओ! फुलोंमें कौनसा फुल वडाहै, इसवातपर कइ मुसाहिवोने कहा फुल गुलावका वडाहै, कइयोने चंपाका और किसीकिसीने जाइका फुल वडा कहा, आखिरकार जव वीरवल तक नौवत पहुंची-तो-उनोनेकहा जहांपनाह! सवसे वडाफुल कपासकाहै जिससे तमाम आलमका लिवास वनताहै और उनके वदनकी हिफाजत होतीहै, वादशाह इसवातकों सुनकर निहायत खुशहुवे और वीरवलकों इनाम दिया,—

[एकवुढेकी चालाकी]

२०-एक वापवेटा वाजारसे सौदा लिये आरहेथे. वापके सीरपर तेलसे भराहुवा घडाथा, और वेटा दुसरी चीजेलेकर पचीस कदम के फासले चलाआरहाथा, रास्तेमें वुढेने एक सोनामहोर कचरेमें पडीहुइ देखी, मगर दुकानदार लोग देखरहेथे, इसलिये उठालेनेकी सुरत-न-वनी, तव अपने सीरपर जो तेलका घडाथा जमीनपर गेर दिया और तेलजमीनपर वहनेलगा, तव वुढेने तेलके वहाने महोर अपने हाथ करलिइ दुकानदारोने वेटेसे कहा तेरे वालिदने तेलका घडा जमीनपर गिरादियाहै, तुं! जल्दी जा वेटेने कहा इसवातकी कोइ परवाह नहीं, में-खूब-जानताहुं-मेरे वालिद ऐसे अनजान नही जो वगेरफायदेके घडा नुकशान करे फायदा देखकरही यहकाम किया होगा,

दोस्तने आनकर पुछाकि-क्यौं भाइ! किसलिये रोतेहो! उसने जवावदिया, आज मेरी भेंस मरगइ, जो सारे कुनवेकों परवरीश करतीथी, दोस्त वोला! भाइ! खातिरजमा रखो, हमें तुमें काले रंगकी चीज रास्त नही, क्यौंकि-आज मेरीभी एककाली हंडिया फुट गइ है, इसवातकों सुनकर वह वोला! ठीक है, जखमपर नमक लगाना इसीका नाम है, कहा दोपैसेकी हंडिया और कहां सोरुपयेकी भेंस,!

[जरवुल-अमसाल,]

२७-१-नयीवात नवदिन तानी खेंची तेरहदिन, २-अनहोनी होनी नही होनी होयसो होय, ३-अपने अपने कामकों गरजी है सबकोय, ४-आप मरे विनस्वर्ग-न-पहुचे, ५-जैसे कंथा घररहे तैसे रहे विदेश, ६-अधेरनगरी चोपट चौपट्टराजा टकेसेर भाजी टकेसेरखाजा, ७-सवकी सुनना अपनी करना यहभी एक तमाशा है, ८-एक घरमें तीनमता कुशल कहासे होय, ९-कर्मरेख नामिटे करो कोइ लाखो चतराइ, १०-काजलकी कोठरीमें कैसाही सयाना जाय एक रेख लागेही लागे, ११-ओछेकी मीत वाळुकी भीत, १२-वाहरके खाजाय घरके गीतगाय, १३-वीछूका मतर-न-जाने सापके विलमें हाथ डाले, १४-वेदिल नौकर दुश्मन वरावर, १५-हलकसे निकली खलकमें पडी, १६-दरियावमें रहना और मगरमछसे वैर, १७-जैसी करनी वैसी भरनी, १८-पथ्थरकों जोंक नही लगती, १९-धोबीका कुत्ता घरका-न-घाटका, २०-दियेकेतले अधेरा, २१-साचकों आच नही, २२-घरका भेदी लंका ढावे, २३-हाथकगनकों आरसी क्या? २४-अब पस्ताये क्या करे चिडिया चुइ गइ खेत,

२५-किसी जंगलमें एक सूअर चला आरहाथा, राहमें उसकों एक शैर मिला, सूअरने कहा-तुं! वाद मुदतके आज मिला है, अव-में-चाहता हुं-आज तेरा और मेरा मुकाविला होजाय, वरना! तुजको-में-यहांसे जाने-न-दुंगा, अगर-तुं! लडना-नही चाहता तो कहदे-में-हार गया, शेरने कहा अवे! सूअर। तुं मेरे सामने एक थप्पडका साथी है, क्या! वकवाद कररहाहै. में-जंगलका वादशाह होकर तेरे जैसेके शाथ मुकाविला करके क्या करुं! तुं! मेरे मुकाविलेके लाइक नही, फरजकरकि-मेने-तुजकों मारभी दिया तो मेरी इसमें कुछ तारीफभी नही, लोग कहेगे शैरने सूअरकों मारातो क्या वहादूरी किइ? इसलिये-मे-तुजसे लडना नही चाहता, वेशक! तुं! शहरमें जाकर कहदे, लोग इसवातको वखूवी जानतेहै कि-शैर-हरहालमे सूअरसें कभी-न-हारेगा, तुं-अगर-लाख वातभी वनावे मेरा क्या! विगडेगा, अैसा कहकर शैरने अपना रास्ता लिया,

गछ सूकर! भद्रं ते-वद सिंहो मयाजितः
पंडिता एव जानंति-सिंहसूकरयो र्वलं, १

[दोस्तोंकि वातचित,]

२६-एक वख्तका जिक्र है रास्तेमें चलते वख्त-दो-दोस्त मिले, एकने पुछा क्यौं भाइ! खेरियततो है, ? दुसरेने कहा आपकी महरवानीसे-में-दोरौज हुवे वुखारसे घिरा हुं, दोस्तने कहा इसमें मेरी महेरवानी कैसी ? यूंक्यौं नही कहतेकि-मेने-वहुत कुछ खाना खालियाथा जिससे वुखारने घेरा है, तव चालाक दोस्त शर्मींदा हुवा और कहने लगा सायत! ऐसाही होगा, एक शख्शकी भेंस मरगइ, जिसकेलिये वह रौने लगा, तव उसके एक

गिरनेकी आवाज हुइ तीन अफीमचीको खयालआयाकि-अपना शाथी-कुवेमें गिरगया तीनो पुकारकरके पुछनेलगे, क्यौंभाइ! चोट तो-नही लगी, खुश-तो-है, ? उसनेकहा-मे-वहुत खुशहु, पस! ये तीनो कहनेलगे अछी वातहै जहाग्हो खुशरहो, ऐसा कहकर चलेगये, और वह कुवेमेही रहगया, देखिये! नशेवाजोकी हालत, जो अपने शाथीको कुवेमे छोडकर चलनिकले, आखीरकार जव दुसरे मुसाफिर वहाआये तो उनोने उसको निकाला,—

(एक अकलमंद मुसाफिर और भालुका लतिफा)

कस्याग्रे पथिकस्य सत्रमिलितो भालुस्तदा तच्छ्वौ,
द्वौ गृन्हाति तदवरं गतमतस्तस्यापतत्राणकं,
तत्रागत्या जडः किमस्त्यय मतोस्याहास्य वक्रादिदं,
सोवक् मह्यमिम मदेहि सुमते तेनाशुदत्तः करे,

२९—एक मुसाफिर जंगलमें चला जारहाथा, उधरसे एक रीछ उसके सामनेआया, मुसाफिरने सोचा यह रीछ मुजको खाजायगा, वहेत्तरहै-में-इसकेकान पहलेसे पकडलु, पीछे जोकुछहोगा, देखाजायगा फौरन! पासगया और रीछके कान पकडलिये, दोनोमें कसाकसी होनेलगी, मुसाफिर खुद जोरावरथा, एकघटे तक दोनोंका कस्माल होतारहा, मुसाफिर के किस्सेमें-जो-सोना महोरेथी, कसाकसीकी हालतमें नीचेगिरपडी, इतनेमें एक दुसरा मुसाफिर रास्तेचलता वहां आगया, और देखता क्याहै? रीछ और मुसाफिर आपसमें लडरहे है और सोना महोर नीचे पडीहै, अगले मुसाफिरसे पुछनेलगा भाइ! तुम क्या कररहेहो, ? उसनेकहा देख! इस रीछकेकान मसलमसलकर उसके मुहमेंसे सोना महोरे निकाल रहाहु, इस वातको सुनकर पिछले मुसाफिरको हिर्स दामनगीरहुइ और कहनेलगा थोडी देरके

(दोहा.)

सज्जन समय-न-चुकिये-कहत गुनिजन कूक,
चतुरनको खटकतहिये-समय चुककी हूक, १
होनहार हिरदे वसे-विसर जाय सव शुद्ध,
जाकी जैसी होनहार-ताकी तैसी वुद्ध, २
जा तनमें विरहा वसै-सो तन कैसा मांस,
यही गनीमत जानिये-हाड चाम अरु सांस, ३

(अफीमचीका-किस्सा)

२८-एक अफीमची अफीमके नशेमें वेठेहुवे अपने मकानकी छतसे नीचे गिरपडे, लेकिन ? यह मालूम नही हुवाकि-कौन गिरा, नौकरसे पुछनेलगेकि-देख ! तो कौनगिरा, ? नौकरने देखकर जवाव दिया, हुजुर ! आपही तो गिरेहै, अफीमचीने कहा, खेर ! कुछ हर्जनही, मुजको तो तलाश करनीथी सो करलिइ, फिर वाद थोडीदेरके आप घोडे पर सवार होकर हवाखोरीको चले, एक सहिस शाथमेथा, आप पुछतेहै अवे ! सहिस ! ! घोडा किधरहै ? सहिसने जवावदिया आपही तो उसपर सवारहै, अफीमचीने कहा फिरभी खयाल रखना ठीकहै, ताकि-कोइ-ले-न-जाय, सहिस अपने मालिककी चतराइपर हसा और कहनेलगा किसकदर नशेमें मतवाले वनेहै, जिनको आपकी और घोडेकीभी मालुमनही, किसी शहरसे चार अफीमची दुसरे शहरकों जानेकेलिये निकले, राहमें एककुवा मिला, उसके कनारे वेठकर चारों अफीमचीने अफीमका कसुंवा वनाकर पिया, और नशेमे चकचूरवने, कुवा छोटासाथा इस सवव उसपर कठेरा वनाहुवा नहीथा, उनचारोमेंसे एककों एसा नसा चढाकि-उसकी घुमरसे कुवेमें गिरपडा, जव

गिरनेकी आवाज हुइ तीन अफीमचीकों खयालआयाकि-अपना शाथी-कुवेमें गिरगया तीनो पुकारकरके पुछनेलगे, क्यौंभाइ ! चोट तो-नही लगी, खुश-तो-है, ? उसनेकहा-में-बहुत खुशहुं, पस ! ये तीनो कहनेलगे अछी वातहै जहारहो खुशरहो, ऐसा कहकर चलेगये, और वह कुवेमेही रहगया, देखिये ! नशेबाजोकी हालत, जो अपने शाथीकों कुवेमे छोडकर चलनिकले, आखीरकार जब दुसरे मुसाफिर वहाआये तो उनोने उसको निकाला,—

(एक अकलमंद मुसाफिर और भालुका लतिफा)

कस्याग्रे पथिकस्य सत्रमिलितो भाल्लुस्तदा तच्छवौ,
द्वौ गृन्हाति तद्वरं गतमतस्तस्यापतन्नाणकं,
तत्रागत्या जडः किमस्त्यय मतोस्याहास्य वक्रादिद,
सोवक् मह्यमिम मदेहि सुमते तेनाशुदत्तः करे,

२९-एक मुसाफिर जगलमें चला जारहाथा, उधरसे एक रींछ उसके सामनेआया, मुसाफिरने सोचा यह रींछ मुजकों खाजायगा, वहेत्तरहै-में-इसकेकान पहलेसे पकडलु, पीछे जोकुछहोगा, देखाजायगा फौरन ! पासगया और रीछके कान पकडलिये, दोनोमें कसाकसी होनेलगी, मुसाफिर खुद जोरावरथा, एकघटे तक दोनोंका कस्माल होतारहा, मुसाफिर के किस्सेमें-जो-सोना महोरेंथी, कसाकसीकी हालतमे नीचेगिरपडी, इतनेमें एक दुसरा मुसाफिर रास्तेचलता वहां आगया, और देखता क्याहै ? रींछ और मुसाफिर आपसमें लडरहेहै और सोना महोर नीचे पडीहै, अगले मुसाफिरसे पुछनेलगा भाइ ! तुम क्या कररहेहो, ? उसनेकहा देख ! इस रींछकेकान मसलमसलकर उसके मुहमेंसे सोना महोरे निकाल रहाहु, इस वातकों सुनकर पिछले मुसाफिरकों हिर्स दामनगीरहुइ और कहनेलगा थोडी देरके

(दोहा.)

सज्जन समय-न-चुकिये-कहत गुनिजन कूक,
चतुरनको खटकतहिये-समय चुककी हूक, १
होनहार हिरदे वसे-विसर जाय सव शुद्ध,
जाकी जैसी होनहार-ताकी तैसी वुद्ध, २
जा तनमें विरहा वसे-सो तन कैसा मांस,
यही गनीमत जानिये-हाड चाम अरु सांस, ३

(अफीमचीका-किस्सा)

२८-एक अफीमची अफीमके नशेमे बेठेहुवे अपने मकानकी छतसे नीचे गिरपडे, लेकिन ? यह मालूम नही हुवाकि-कौन गिरा, नौकरसे पुछनेलगेकि-देख ! तो कौनगिरा, ? नौकरने देखकर जवाव दिया, हुजुर ! आपही तो गिरेहै, अफीमचीने कहा, खेर ! कुछ हर्जनही, मुजको तो तलाश करनीथी सो करलिइ, फिर वाद थोडीदेरके आप घोडे पर सवार होकर हवाखोरीको चले, एक सहिस शाथमेंथा, आप पुछतेहै अवे ! सहिस ! ! घोडा किधरहै ? सहिसने जवावदिया आपही तो उसपर सवारहै, अफीमचीने कहा फिरभी खयाल रखना ठीकहै, ताकि-कोइ-ले-न-जाय, सहिस अपने मालिककी चतराइपर हसा और कहनेलगा किसकदर नशेमें मतवाले वनेहै, जिनको आपकी और घोडेकीभी मालुमनही, किसी शहरसे चार अफीमची दुसरे शहरकों जानेकेलिये निकले, राहमें एककुवा मिला, उसके कनारे वेठकर चारों अफीमचीने अफीमका कसुंवा वनाकर पिया, और नशेमें चकचूरवने, कुवा छोटासाथा इस सवव उसपर कटेरा वनाहुवा नहीथा, उनचारोमेंसे एककों एसा नसा चढाकि-उसकी घुमरसे कुवेमें गिरपडा, जव

परमेश्वर तो देखताही होगा, इसवातकों सुनकर वाप दिलमें शा-र्मींदा हुवा और उसदिनसे चोरी करनेकी आदत छोडदिइ,

[एक चोरकी रहमदिली,]

चौरो निःस्वगृहे गतो हिमनिशि भाहभिय स्वावला,
त्वत्पार्श्वेवरखडकं ददतुवा शिघ्रं ग्रहीष्वार्भकं,
नोगृन्हाति शिशुं ददाति-न-तदा द्वद्वंच जातं तयोः
तच्छ्रुत्वावरकं शिशूपरि हरो क्षिप्त्वागतोन्यालये, १

३२-किसीगांवमें एक गरीव आदमी रहताथा जिसकों एक औरत और एक लडकाभी था, खानेपीके लिये निहायत तग थे, यहांतककि-मौसिमे जाडेमे वदनपर औढनेकेलिये कपडाभी नहीथा, एकरौज रातकेवख्त उसकेघर चौर चौरी करने लिये आया और छीप कर खडा हो गया, इससुरतमें औरतने अपने खाविंदसें कहा, लडका ठंडसे निहायत सुकड गया है. आपके पास कोइ कपडा होतो फेंक दो, ताकि-इसकों ओढादुं, खाविंदनेकहा, मैं-खुद-मारेठडके तगहोगयाहुं, तुजे लडकेकी सुझीहै, औरत मजबूरहोकर रहगइ, चौर इसबातकों सुनकर रहमदिलहुवा और अपने वदनका कपडा उसलडके कों ओढाकर चलागया, देखिये ! चौरकोभी किसकदर रहमआया, दरअसल रहम आनाथा लडकेके वापकों-मगर-उसका वरअक्स-हुवा, (यानी) चौरकों रहम आगया, दुनियामें मिशालहैकि-नादान दोस्तसे दाना दुश्मन वहेत्तर,

[हिदायत गुरुजीकी चेलेकों,]

३३-एकगुरुजी अपने चेलेसे हमेशां कहाकरतेथे पात्रे हरदम देखलियाकर ताकि- उसमे कोइ जीवजंतु-या-कीडेमकोडे-न-जमा

लिये मुजकोंभी देदिजिये ताकि-मेंभी-कुछ सोना महोर पैदाकरलुं अगले मुसाफिरने कहा अछीबातहै मगर पेस्तर नीचे गिरीहुइ सोनाहमोर उठाकर मेरेकिस्सेमें डालदे, क्योंकि-ये-मेरी महेनतसे निकाली हुइहै, फिर-तुं-इसके कानपडलेना-जो-कुछ तेरे हिस्सेमें होगा तुजेमिलजायगा, इसबातकों सुनकर कमअकल मुसाफिरने उसीतरह किया, और पहले वाले मुसाफिरने रीछके कान इसको पकडादिये और आप अपना रास्ता लिया, थोडी देरभी-न-गुजरी होगीकि-कमअकल मुसाफिर कमताकत होनेकी वजहसे सोना महोरोंकी हिर्समें मारागया, और अगला मुसाफिर अपनी जान बचाकर चलागया,

(एक बाबु साहबकी मुलाकात,)

३०-किसी बाबुसाहबकी-कोठीपर निगाहकेलिये एक डयोढीवान मुकररथा, किसीने आनकर पुछाकि-क्योंभाइ ? बाबुसाहब मकानपरहै, ? डयोडीवान जल्दीसे भीतरगया और फिर आनकर कहनेलगाकि-बाबुसाहब कहतेहै घरमें नहीहै, मुलाकातकों आयेहुवे महाशय ! समझगयेकि-बाबुसाहब मकानपरतोहै मगर हमसे मिलना नही चाहते, ऐसाजानकर वापिसचलेगये,

[चोरीका नतीजा,]

३१-एकवख्तका जिक्र है एक गांवसे बापबेटा दोनों किसीके खेतमें चोरी करनेकेलिये गये, बापने बेटेसे कहाकि-देखले ! चारो तर्फ कोइ आतातो नही, ऐसा कहकर चारोतर्फ देखने लगे और खेतमें चोरी करनेके लिये दस्तअंदाजी किइ, इतनेमें बेटा बोला, चारों तर्फतो देखलिया, मगर एकतर्फ देखना भूलही गये, बापने कहा किधर भूल गये, बेटेने कहा उपर देखनातो भूलही गये,

परमेश्वर तो देखताही होगा, इसवातकों सुनकर वाप दिलमें शार्मींदा हुवा और उसदिनसे चोरी करनेकी आदत छोडदिइ,

[एक चोरकी रहमदिली,]

चौरो निःस्वगृहे गतो हिमनिशि प्राहप्रियं स्वावला,
त्वत्पार्श्वेंवरखंडकं ददतुवा शिघ्रं ग्रहीप्वार्भकं,
नोगृन्हाति शिशुं ददाति–न–तदा द्वद्वच जातं तयोः
तच्छ्रुत्वांवरकं शिशूपरि हरो क्षिप्त्वागतोन्यालये, १

३२–किसीगांवमें एक गरीव आदमी रहताथा जिसकों एक औरत और एक लडकाभी था, खानेपीके लिये निहायत तग थे, यहांतककि–मौसिमे जाडेमे वदनपर औढनेकेलिये कपडाभी नहीथा, एकरौज रातकेवख्त उसकेघर चौर चौरी करने लिये आया और छीप कर खडा हो गया, इससुरतमे औरतने अपने खाविंदसें कहा, लडका ठंडसे निहायत सुकड गया है. आपके पास कोइ कपडा होतो फेंक दो, ताकि–इसकों ओढादुं, खाविंदनेकहा, में–खुद–मारेठडके तगहोगयाहुं, तुजे लडकेकी सुझीहै, औरत मजबूरहोकर रहगइ, चौर इसवातकों सुनकर रहमदिलहुवा और अपने वदनका कपडा उसलडकेकों ओढाकर चलागया, देखिये ! चौरकोभी किसकदर रहमआया, दरअसल रहम आनाथा लडकेके वापकों–मगर–उसका वरअक्स–हुवा, (यानी) चौरकों रहम आगया, दुनियामें मिशालहैकि–नादान दोस्तसे दाना दुश्मन वहेत्तर,

[हिदायत गुरुजीकी चेलेकों,]

३३–एकगुरुजी अपने चेलेसे हमेशां कहाकरतेथे पात्रे हरदम देखलियाकर ताकि– उसमे कोइ जीवजंतु–या–कीडेमकोडे–न–नमा

लिये मुजकोंभी देदिजिये ताकि—मैंभी—कुछ सोना महोर पैदाकरलुं अगले मुसाफिरने कहा अछीवातहै मगर पेस्तर नीचे गिरीहुइ सोनाहमोर उठाकर मेरेकिस्सेमें डालदे, क्योंकि—ये—मेरी महेनतसे निकाली हुइहै, फिर—तुं—इसके कानपडलेना—जो—कुछ तेरे हिस्सेमें होगा तुजेमिलजायगा, इसवातकों सुनकर कमअकल मुसाफिरने उसीतरह किया, और पहले वाले मुसाफिरने रीछके कान इसको पकडादिये और आप अपना रास्ता लिया, थोडी देरभी—न—गुजरी होगीकि—कमअकल मुसाफिर कमताकत होनेकी वजहसे सोना महोरोंकी हिर्समें मारागया, और अगला मुसाफिर अपनी जान बचाकर चलागया,

(एक बाबु साहबकी मुलाकात,)

३०—किसी बाबुसाहबकी—कोठीपर निगाहकेलिये एक डयोढीवान मुकररथा, किसीने आनकर पुछाकि—क्योंभाइ ? बाबुसाहब मकानपरहै, ? डयोडीवान जल्दीसे भीतरगया और फिर आनकर कहनेलगाकि—बाबुसाहब कहतेहै घरमें नहीहै, मुलाकातकों आयेहुवे महाशय ! समझगयेकि—बाबुसाहब मकानपरतोहै मगर हमसे मिलना नही चाहते, ऐसाजानकर वापिसचलेगये,

[चोरीका नतीजा,]

३१—एकवख्तका जिक्र है एक गावसे बापबेटा दोनों किसीके खेतमें चोरी करनेकेलिये गये, बापने बेटेसे कहाकि—देखले ! चारो तर्फ कोइ आतातो नही, ऐसा कहकर चारोतर्फ देखने लगे और खेतमें चोरी करनेके लिये दस्तअंदाजी किइ, इतनेमें बेटा बोला, चारों तर्फतों देखलिया, मगर एकतर्फ देखना भूलही गये, बापने कहा किधर भूल गये, बेटेने कहा उपर देखनातो भुलही गये,

र वापने कहा मेरा बेठना दुनियाको नागवार गुजरताहै, ले! ! घोडेपर बेठजा, मे-पैदल-चलताहु, इसतरह चलतेहुवे जब सरे गावतक पहुचे वहाकेलोगोने इसको देखकर कहा, देखो! सा नादान लडकाहै-जो-आप घोडेपर बेठाहै, और बुढेको चलाताहै, सवातको सुनकर दोंनोंने खयालकिया, अब घोडेको खाली चलाना कहै, इसतरह चलते जब तीसरे गांवके करीब पहुचे वहांकेलोगोने हा, देखो ! ये-कैसे-कमअकलहै-जो-घोडा होतेहुवेभी पैदल लतेहै, इसबातकों सुनकर दोनोंने सोचाकि-अब-क्या! करना ाहिये, कुछ देरकेबाद सलाह हुइकि-हम-दोनों मीलकर घोडेपर ठजाय, इसतरह कहकर दोंनों घोडेपर सवार होगये, और आगे-ां चले, जब चोथे गावकेकरीब पहुचे, वहाके लोगोने देखा, और हा, क्याखुब आदमी है, जो घोडेकी जान माररहेहै, घोडेको मार-हि-तो-यूही मारदो, नाहक! क्यौतकलीफ देतेहो, ? मतलबकि सुरतमेंभी-लोगोने इनको बुरेकहे, आगेजाकर बाप बेटोंने सलाह ड़ दुनियां दुरगी है, इसके कहनेपर कहातक खयाल कियाजाय, ह-तो-यूंही कहती रहेगी, आपन अपना फायदा देखलो. और सा मुनासिब समझो वैसा करो, इस मिशालका मतलब यहहैकि-निया-ख्वाह! भलाकामहो-या-बुरा, जो चाहे-सो-कहे, अक-ंदोकों चाहिये जो अच्छाकामहो कियेजाय, दुनियाके कहनेपर याल-न-करे,

[एक मालिक-और-नौकरका किस्सा]

३५-किसीगावमें एक किसान रहताथा, और वह गांवके ार रोजमररा अपने खेतको जाया करताथा, एकरोज उसको नौकरकी जरुरतपडी, और तलाश करनेसे एक आदमी मिला, सानने पुछा क्यो! तु!! मेरेपास नौकर रहेगा, ? उसने कहा,

होजाय, चेला, निहायत शुस्तथा, पात्रे देखता नहीथा, मुहसे जवाब दे दियाकरताथा, देखलिया सबठीकहै, गुरुजीने दुसरेरोज फिरकहा पात्रे जरुरदेख लियाकर ताकि-आइंदा-तकलीफ-न-उठानापडे, चेलेने कहा आप वहेमी मालुम देतेहै, क्या! कही!! पात्रेमें सांप आबेठते है,? गुरुजी कहनेलगे तु! कभी पस्तायगा, चुनाचे! एकरोज एसाही हुवाकि-कहीसें-साप आनकर पात्रेमें बेठगया, इधर जब चेला पात्रेको लेनेगया तो उसमें सांप बेठादेखा, जो फुंकार माररहाथा, चेला गुरुजीकेपास भागआया, और कहनेलगा, सचमुच आजतो पात्रेमे सांप आनकर बैठाहै, जो मुजे काटनेपरभी आमादा था, गुरुजीने कहा मेंने पेस्तर नही बोलाथाकि-कभी-पस्तायगा, तुं! पात्रे देखता नही, उसीका यह नतीजाहै, अछा! चल!! अब-में तेरी हमराहचलताहु और उसकों हठाताहुं मतलब इसका यहहैकि-हरेक शख्शको चाहिये गुरुजीके फरमाने पर कामील एतकात रखे और उनकेशाथ गुस्ताखी-न-करे,

[एक बापबेटेपर दुनियाकी जबान,-]

अश्वस्थं जनकं सुतस्य गमनं मोक्तुर्विशोधो व्रजा,
श्वारुढ कुरु पुत्रकं कृत मितः पश्चाच्चपुत्रं तथा. ।
द्वारुढौ पथिगछतौ जडधियौ तार्क्ष्यहि गतुमना,
पश्चां कार्यमितोश्वकस्य भवतो मध्येन किं तिष्ठतु; ॥ १ ॥

३४-किसी शहरसे एक बापबेटा एकघोडा लेकर दुसरे शहरकों जानेकेलिये निकले, राहमें बाप घोडेपर सवारहै, बेटा पीछे पैदल चलरहाहै, जातेजाते दोचार कोसके फासलेपर जब एकगांवकेकरीब पहुचे गांवके लोग सामने मिले, उनोनकहा अपशोसहै इसबुढेपर-जो-आप घोडेपर बेठाहै, और बेटेकों चलारहाहै, इसबातकों सुन-

कर वापने कहा मेरा वेठना दुनियाको नागवार गुजरताहे, ले ! तुं ! घोडेपर वेठजा, में–पैदल–चलताहु, इसतरह चलतेहुवे जब दुसरे गावतक पहुचे वहाकेलोगोने इसकों देखकर कहा, देखो ! कैसा नादान लडकाहे–जो-आप घोडेपर वेठाहै, और वुढेको चलाताहै, इसवातको सुनकर दोंनोंने खयालकिया, अब घोडेको खाली चलाना ठीकहे, इसतरह चलते जब तीसरे गावके करीब पहुचे वहांकेलोगोने कहा, देखो ! ये–कैसे–कमअकलहै–जो–घोडा होतेहुवेभी पैदल चलतेहै, इसवातकों सुनकर दोनोंने सोचाकि–अब–क्या ! करना चाहिये, कुछ देरकेवाद सलाह हुइकि–हम–दोनों मीलकर घोडेपर वेठजाय, इसतरह कहकर दोनों घोडेपर सवार होगये, और आगेकों चले, जब चोथे गावकेकरीब पहुचे, वहाके लोगोने देखा, और कहा, क्याखुब आदमी है, जो घोडेकी जान माररहेहै, घोडेको मारनाहे–तो–यूही मारदो, नाहक ! क्यौंतकलीफ देतेहो, ? मतलबकि इससुरतमेंभी–लोगोने इनको बुरेकहे, आगेजाकर वाप वेटोने सलाह किइ दुनिया दुरंगी है, इसके कहनेपर कहातक खयाल कियाजाय, यह–तो–यूंही कहती रहेगी, आपन अपना फायदा देखलो. और जैसा मुनासिव समझो वैसा करो, इस मिशालका मतलब यहहैकि–दुनिया–ख्वाह ! भलाकामहो–या–बुरा, जो चाहे–सो–कहे, अकलमंदोको चाहिये जो अछाकामहो कियेजाय, दुनियाके कहनेपर खयाल–न–करे,

[एक मालिक–और–नौकरका किस्सा]

३८–किसीगांवमें एक किसान रहताथा, और वह गांवके वहार रोजमररा अपने खेतको जाया करताथा, एकरौज उसकों एक नौकरकी जरुरतपडी, और तलाश करनेसे एक आदमी मिला, किसानने पुछा क्यौं ! ! मेरेपास नौकर रहेगा, ? उसने कहा,

वेशक ! रहुंगा, मगर काम क्या करना–सो–वतलाना चाहिये, किसानने कहा, वतलाना क्याथा, जोकुछ काम मालिककरे उस मुजव करतेरहना, तव उसने नौकर रहना कुवुलकिया, और दुसरेरौज दोंनोंमिलकर जव खेतकों जानेलगे मालिकने मीटीसे भरा हुवा एक टोकरा अपने सीरपर उठालिया और नौकरसे कहा तुं ! पानीका भराघडा अपने सीरपर उठाले, गरजकि–दोंनों अपना अपना वौज लेकर खेतमें पहुचे, मालिकने सीरपरसें मीटीका टोकरा जमीनपर पटकदिया, इधर नौकरने पानीका घडा जमीनपर दे पटका, घडा तुर्तफुटगया, और पानी वहगया, मालिक खफाहोकर कहनेलगा, अवे ! मुर्ख ! यह क्याकाम किया ? नोकर वोला आपनेही कहाथाकि–मालिककरे सो करना, मालिकने एक दरख्तकी टेंनी इसे मारनेकेलिये उठाइ, गरजकि–आपसमें–दोनोंकी हाथापाइ होनेलगी, नोकर मोटा ताजाथा आखीरकार मालिककों भागना पडा; जव मालिक घर वापिस आया, नौकरभी पीछेआया, लोगोने पुछा यह क्या ! किस्साहै, ? मालिकने कहा यह मुर्खहै, नौकरने कहा यह मुर्खहै, लोगोने नौकरकों हठादिया और झगडा तयकिया, ऐसा नौकर किसकामका–जो–वातकों समझे नही, और मालिककी हमसीरी करे,—

[तकदीरका–तखाजा]

३६–किसी शहरमें एकशेठ रहताथा, एकरौजकी वातहै, जंगलकीतर्फ शेरकरनेके लिये गया, राहमें एक आदमीकी खोपरीजमीनपर पडी हुइ नजर आइ, और उसपर एसालिखाहुवाथा,

जम्मो कलिंगदेसे–आगमणं अंग देसमझंमि , ।
मरणं समुदतीरे–अज्जावि किं किं भविस्सइ ॥ १ ॥

इसवातकों पढकर शेठने उस खोपरीकों उठालिइ, और एक रुमालमें बांधकर अपनेघर लाया, शेठानीने पुछाकि–यहक्या ! लायेहो ?-शेठनेकहा तुजकों इसवातसें क्या ! सरोकारहै ? अपने काममें मशगूल रहो, शेठानीको इसवातसे शक पैदाहोगया कि–सायत ! यहकोइचीज–मेरेदिलकों अपनी तर्फ फिरालेनेकेलिये लायेहो वादचदरौजके शेठकी गेरहाजरीमें शेठानीने रुमालकों खोलकरदेखा तो दरमियान उसके एक खोपरी पाइ, और खयाल आयाकि–जरुर यहचीज मेरेलियेही लायेहै, मैंही इसकों कुटकाटकर वडिया बनादुं और शेठजीको खिलादु, दुसरेरोज उसीतरह किया और जब शेठजी जिमनेकों आये शेठानीने वही वडियां उनकों परोसदिई शेठजी ! खातेहुवे तारीफ करनेलगे, क्या ! उमदा वडियां बनी है? शेठानीने कहा क्यौ–न–हो ? यहतो आपहीकी ख्वाहेसकी चीजथी. इसवातको सुनकर शेठजी समजगये यह उसी खौपरीकी वडिया है, शेठने शेठानीसें कहा, जैसा उस खौपरीपर लिखाहुवाथा, वैसाही हुवा, मैं किस इरादेसे लायाथा और तेने उसका मतलब किसतर्फ उतारा, आदमी चाहेसो करे–जो–काम–होनहार होताहै वगेरहोनेके नही रहता, एकगजलका वदभी हस्वहालहै,

तकदीरके लिखेहुवे तदवीर क्याकरे ?
थाभा गिरेतो थांभलें–पर्वत गिरेतो क्याकरे, ?

[गुरुजीसे चेलेका सवाल]

पृष्टः केन गुरुर्हि खिद्यतिमनो नेत्रे रतस्तत्कथ,
प्रोचे त च गुरुर्मनो नयनयो र्नो व्यजनावग्रहः
वेदाक्षे मकर पृथक भवतितद्वर्ग मनो नेत्रयोः
मंत्र्यां वेकगृहेस्थितौ समसुख लग्नाति तुल्य तयोः,

कौनवना, ?-मशकरा सुनकर शर्मींदा हुवा, साधुमहाराजसे माफी मांगने लगा, साधुमहाराजने कहा यहभी तेरी तकदीरमें लिखाथा-कि-पहले गुनाह-करना और फिर माफी मांगना,—

४१-[वापके साथ वेटेकी वेंअदवी]

एकशेठने अपनेलडकेकों नसीहत दिइकि-वापके सामने वोल-नानही, जव तुजकों नसीहत दिजाती है,-तुं-सौचतानही, और वेंअदवीका जवाव दियाकरताहै, वडीभूलहै, दुसरेरौज शेठ कही जरुरी कामकेलिये वहारगयेथे, और जव वापिस घरआये मकानमें लडका अकेला किवाडवंदकरके वेठाहुवाथा, शेठने उसकों वहुत पुकारा मगर लडकेने जवाव नहीदिया, आजुवाजुके लोग इकठे होगये और इस माजरेकों देखकर कहनेलगे लडकातो भीतर वेठा-हुवाहै, आप छतपरसे होकर अंदर जाइये, गरजकि-शेठने-वैसाही किया, भीतर आनकर देखातो लडका वेठाहै, वापनेकहा क्यौं ! रे ! ! तेने इतनीअवाजे सुनकरभी जवाव नहीदिया, सवव क्याहै,? लडकेने कहा, कलही-तो-आपने फरमायाथाकि-वालिदके सामने वोलना नही. सो-मेने-ऐसाही किया, वालिदने खफाहोकर कहा, क्या ! तुं ! ! नीरा मूर्खहै ? जो कहे कुछ और समझता है कुछ, ? इसका मतलव यहहुवाकि-वडोके सामने गुस्ताखी करना महेज नादानी है,—

४२-[एक वजीरकी उमदा तकरीर]

एक राजासाहव जंगलकी तर्फ नगेपांव शैरकरनेके लिये गये, रास्तेमें एककांटा उनके पावमें चुवगया, उनोने सौचा ! मेरेपावमें कांटा चुवा दुसरोके पावमेंभी चुवता होगा, इसलिये लाजिमहै अपनी सरहदमें जितनी जमीनहै चमडेसे मढादेना चाहिये ताकि-

किसीके पांवमें काटा-न-चुने, जब वापिस महेलमें आये वजीरकों बुलाकर कहने लगे जाओ! जितना चमडा शहरमेंमिले खरीदलो, वजीरने मुताविक हुकम राजासाहबके दोचारलाख रुपयोका चमडा उसीवख्त खरीदलिया, और दोतीनदिन उसीतरह चमडा खरीदते रहे, चोथेरोज राजासाहबसे पुछाकि-अब-क्या! हुकमहै? और इसचमडेकों क्या करना चाहिये, राजासाहबने कहा, देखो! मेरेपावमें किसकदर काटा चुबाहै, ?-मे-जानताहु इसतरह दुसरों कोंभी चुबताहोगा, मेरीरायहै तमाम जमीन अपनी सरहदकी-चमडेसें मढादेना, ताकि-किसीके पांवमे काटा-न-लगे, वजीरने कहा खता माफहो-मे-अर्जकरताहुं, व-मुताबिक हुकम हुजुरके चमडा मढाभी दिया, फिर गाडीघोडे चलनेकी वजहसे फटजायगा और फिर सिलाना होगा, बेहत्तरहै आप अपने पांवकी हिफाजत किजिये, थोडे चमडेसें काम होजासकता है, सारी आलमकी फिक्र कहातक करेगें, ? राजासाहबने कहा, बेशक! ठीकहै, अपने पावकी हिफाजत करनाही मुनासिवहै, दुनियाकी फिक्र कहातक किइजाय, !!

४३-[एक हकीम और मरीजकी मजाख,]

एक मरीज हकीमके पासगया और कहनेलगा मुजकों बुखार आताहै, हकीमने पुछा रौजका आताहै. ?-या-वारीका, ? मरीजने कहा हजरत! रौजका-या-वारीका-तो-में-नहीजानता, हा! इतना मालूमहैकि-आज आयाहै, कल-न-आयगा, फिर परसों आयगा, हकीमसाहब बोले, इसीकों वारी कहतेहै, मरीजने कहा, मैं-वारी-उसकों समझताथाकि-आज-मुजकों आयाहै, कल-हकीम साहबको आयगा, परसों उनके कुनवेमेंसें किसीकों, हकीमसाहब बोले खूब कहा, क्या!, आप दवालेनेकों आयेहै, ! या दिल्लगी करनेकों, ? मरीजने कहा माफ किजिये, मेरीतो आदतही दिल्लगी करनेकी है,

४४–[मुताबिक धर्मशास्त्रके चार चिजोंकी तलाश,]

किसी गुरुने अपने चेलेकों कहा अगर तुजकों कोइ पुछेकि-हमकों–चारचिजें अैसी बतला जिनमें एकचिज ऐसीहो–जिसकं यहा सबकुछहो परलोकमें कुछनही, दुसरी चिज ऐसीहो जिसकं परलोकमें सबकुछहो–यहां–कुछनही, तीसरी चिज ऐसीहो जिसकों यहां–और–वहां दोनोजगह कुछभी नही, और चोथीचिज ऐसीहो जिसको यहां और वहां दोनोजगह सबकुछहो, चेलेने कहा मेरीअ-कल्ल नही चलती, आप बतलाइये ! बडी महरबानी होगी, गुरुजीने कहा, सुन ! पहेली चीज वेश्याहै, जिसकों यहां रुपयापैसा–शिगार सबकुछहै, परलोकमें नही, दुसरीचीज साधुमहाराजहै जिनकों यहां कुछभी सुखनही, परलोकमें बहुतकुछहै, क्यौंकि–धर्मकरनेसें परलोकमें फायदाहै, तीसरीचीज हिंसाकरनेवाला शख्श जिसकों यहां और वहां दोनोजगह सुखनही, चौथीचीज धर्मात्मा शख्श–जिसने पूर्वजन्ममें धर्मकियाथा इससे यहां सुखीहै, और यहांभी धर्म करताहै, इस लिये आगे परलोकमेंभी सुखीहोगा,–

४५–[दो मुसाफिरको एक किसानका माकुल जवाब,]

दो–मुसाफिर–दुसरे शहरको जानेके लिये अपने घरसें चले, चारकोशके फासले जानेपर दो–सडके–नजरपडी, दोनोंने खयाल कियाकि–अब–किधरकों जानाचाहिये, ? थोडीदेर वहाखडे होगये और चारोतर्फ देखरहेथे तो एक किसान नजरपडा, दोनोने पास-जाकर पुछाकि–क्यों ! भाइ ! ! यह सडक कियरकों जातीहै, ? किसानने कहा तुमबडे पागलहो, सडकभी कहींजातीहै, ? जानेवाले ही जायगें, सडकतो यहांही पडीरहेगी, दोनों मुसाफिर शर्मींदेहुवे और कहने लगे, बेशक ! तेरा कहना ठीकहै, मगर यहतो बतला-

हमको फलांगांव जानाहै, किससडक होकर जावे, ? किसानने कहा ऐसा कहोतो बतलाताहु, देखो ! इससडक होकर चले जाओ,–

४६–[मौसिमं कौनसा अछा ?]

एकदिन बादशाह अखबरने सरेदरबार अपने मुसाहिबोंसें पुछाकि बतलाओ ! मौसिम कौनसा अछाहै ? किसीने कहा मौसिम गर्मीका अछा है, किसीने कहा सर्दीका, और किसीने कहा मोसिमे बारीश सबसे बहेत्तर है, लेकिन ! किसीकी बात बादशाह अखबरकों पसंद–न–आइ, जब बीरबलके कहनेका मौका आया, झटसें कहा–मौसिम–वो–अछा है जिसमें अपनी तबीयत बहाल रहे, और खाना अछा मिले, बादशाह खुश होकर कहने लगे जबाब हो–तो–ऐसा हो, जिसपर कोइ उजर नही कर सकता, अछा ! अब एक और बात पुछता हु बतलाओ ! जब रातकों सब कोइ आराम करता है उस बख्तभी कोइ चलता है–या–नही ? बीरबलने जबाब दियाकि–हुजुर ! उस बख्तभी साहूकारका व्याज चलता है, जो कभी नीदभी नही लेता,

४७–[जैन धर्मकी चद बाते,]

जैन मजहब निहायतपुराना और इसमें रिषभदेव वगेरा चौइस तीर्थंकर सर्वज्ञ हुवे, बडेबडे चक्रवर्ती–वासुदेव–प्रतिवासुदेव–वगेरा राजे इस मजहबमें हो चुके है, आजकल जैनोंकी मर्दुमशुमारी कम है पेस्तर बहुतथी, जैनके अखीरके तीर्थंकर महावीर और बौध मजहबके गौतम बुध एक समयमें मौजूद थे, जैन और बौधके उसूल जुदे जुदे है जो लोग एक समझते है ठीक नही, दुसरे मजहबवाले इश्वरकों जगतका कर्त्ता कहते है, जैन इस बातसे खिलाफ है, जो कुछ भले बुरे कर्म जीव करता है, उसका फल

वह खुद पाता है,–दुनिया अनादि है, जमीन–आव–हवा–आतीश–और–वनास्पतिमेंभी जीवोंका होना जैन मानते है, मुक्तिके लिये ज्ञान–और–क्रिया अपनी अपनी जगहपर काविल मंजुर करनेके है, शराव–गोस्त–सहेत–और–जमीकंद खाना जैनमें मना है, पानीकों कपडेसें छानकर पीना चाहिये. रातको खाना जैनमें कताइ मना है, शिकार खेलना–या–जीवोंका काटना–मारना जैन लोग अछा नही समझते, वल्कि ! लुले–लंगडे जानवर जो करीव उलमोत होते है हिफाजतसे रखते है, हिंदमे कइ जगह इनके लिए मकानातभी वने हुवे है, जैनोमे (१६) संस्कार और उनके मंत्र अलग अलग मौजूद है, ख्वाह मर्द–या–औरत कोईहो इल्म पढना सवके लिये जाइज है, जो जो दुनियादार जैन मजहवपर एतकात रखते है अपनी पैदाशमेंसे रुपये आठ आने–चार आने–या–दोआने धर्ममें खर्च करे, और हरसाल एक जैन तीर्थकी जियारतकों जाय, दुनियामें धर्म एक आलादर्जेकी चीज है,–

४८–[दोस्तके साथ दोस्तकी चालाकी.]

किसी शहरमे दो–दोस्त–रहते थे, एक रोज–वे–जंगलकी तर्फ सैर करनेके लिये गये, और कुछ दुर जाकर एक दरख्तके नीचे वेठे, इधर उधर देखते है तो इत्तिफाकन ! जमीनमे गडा हुवा एक वडे वर्तनका मुह दिखाइ दिया, नजदीक जाकर देखते है तो वहवर्तन मीटीमे दवा हुवा है, मीटीकों हठाकर उसका ढकन खोला तो भीतर सोनामहोर लवालव भरी हुइ नजर आइ, दोनों आपसमें खुश हुवे और कहने लगे क्याही ! अछी वात है ! आज खजाना मिल गया, मगर दोनोमें एक चालाक था, कहने लगा भाइ! आज इसकों यही रख छोडे, क्योंकि–दिन–अछा नही है, अछा

नक्षत्र देखकर उठा ले जायगें, ऐसा कहकर उसपर मीटी दाब दिइ, और घर चले आये, दुसरे रौज चालाक दोस्तने खुद अकेले जाकर सब सोनामहोरें अपने हाथ कर लिइ, और उस वर्तनमें कोयले भर दिये, वाद दोचार रौजके अछा नक्षत्र देखकर दोनों वहा गये, और मीटी निकालकर उसवर्तनको देखते है-तो-महोरोकी एवजमें कोयलोसे भरा हुवा है, चालाक दोस्त कहने लगा, क्या करे! भाइ!! अपनी तकदीरही बुरी है, जो सोनामहोरे कोयले हो गइ, पस! दोनों नाउमीद होकर वापिस चले आये, मगर नर्द दगाकी हर्गिज! छीपती नही, आखीरकार चालाक दोस्तकी चालाकी मालूम हो गइ, और दुसरे दोस्तने सोचाकि-अब आपनभी चालाकी करना चाहिये, गरज! वह चालाक दोस्तके घर गया और कहने लगा आज आपके लडकेकों मेरे घर खाना खिलानेकों ले जाता हु, ऐसा कहकर उसके लडकेकों अपने घर ले गया, और खाना खिलाकर तलघरमें उसकों छीपा रखा, और एक-बदर-मौल लाकर घरमें बाध दिया, दुसरे रौज चालाक दोस्त उसके घर आया और पुछाकि-भैया! लडका कहा है? जो कल तुमारे घर दावतके लिये आयाथा, दोस्तने जवाब दिया, क्या कहुं! अपशोपकी वात है, आपका लडका वाद खाना खा चुकनेके बदर वन गया, देख लो! यह वधा हुवा मौजूद है, चालाक दोस्त हेरान हुवा और कहने लगा क्या! लडकाभी बदर वन जाता है? दोस्तने कहा, कभी सोनामहोरेभी कोयले हो जाती है,? तव चालाक दोस्त समझ गया, और कहने लगा, सोनामहोरे मौजूद है, क्यौं फिकर करते हो? उसने कहा लडकाभी मौजूद है, तुम क्यौं फिक्र करते हो? गरजकि-उसने-सोनामहोरे दे दिइ और इसने लडका दे दिया,

४९-[सवाल बादशाह अखबरका दरबारी मुसाहिबोंसें,]

बादशाह अखबरने अपने सरेदरबार मुसाहिबोसें पुछाकि-बतलाओ ! सबपत्तोंमें कौनसा पत्ता बडाहै, ? चुनाचे ! किसीने कहा केलेका पत्तावडाहै, किसीने कहा अरइका-और किसीने कहा सागवानका बडाहै, इसीतरह पेंदरपे जवाब देनेलगे, मगर किसी का जवाब बादशाको पशंदे खातिर-न-हुवा, जिसवरुत बीरबलसे पुछागया उसने जवाबदिया, हुजुर ! नागरवेलका पत्ता सबसें बडाहै, जो आपके मुंहतक पहुचताहै, बादशाह यह सुनकर निहायत खुशहुवे,

५०-[एक अकलमंद मुन्शी,]

एक अकलमंद मुन्शी-अपने शहरमे-कोइ कम अकल पनेका काम करता दिखाइदे फौरन ! उसकानाम अपनी किताबमे लिखलियाकरताथा, एक रौज बादशाहके दरबारे खासमेभी आपहुचा, एक सोदागिर घोडे बेचनेवाला बादशाहके सामने खडाथा और कुछबातचीत कररहाथा, बादशाहने कहा ! कोइ उमदा घोडा लायेहो, ? उसने कहा सरेदस्त कोइहाजिर नही, मगर बहुकम हुजुरके उमदा घोडा खिदमतमें हाजिर करसकताहुं, बादशाहने पुछा उसकी कीमत क्या होगी ? सोदागिरने जवाबदिया दशहजारसे कम-न-होगी, बादशाहने खजानचीकों हुकमदिया अभी इसको दशहजार रुपये देदो, व मुजब हुकम बादशाहके खजानचीने रुपये देदिया, मुन्शीने यहमाजरा देखकर अपनी किताबमे लिखदियाकि-बादशाह-कमअकलहै, किसीने इसबातकों देखा और बादशाहसे अर्ज किदकि-आपको इसमुन्शीने कमअकलके नामसे लिखलिये है, बादशाहने उसको बुलाकर पुछा और उसने जवाब दियाकि-हुजूर !

बुजुर्गोका फरमानहैकि-वगेर चीज देखेभाले-या-कब्जेमेलिये मी
देदेना अक्लमदीकी बात नही, बादशाह बोले, अगर सोदागि
घोडा लाकर हाजिर करेगा तो, ? मुन्शीने कहा अगर-न-करेग
तो ? बशर्तेकि-उसकी पहिचानतक आपको नहीहै, बादशाह तु
उस बातको समझगये और उस सोदागिरसे रुपये पीछे लेली
इसलेखका मतलब यहहैकि वगेरचीज देखेभाले और कब्जेकि
पेस्तर दामदेदेना मुनासिबनही,

५१-[एक अनपढ राजेका जिक्र,]

एक रोज एक भाटने एक राजासाहबके पास जाकर कुछक-
वित्त सुनाये, राजासाहबने खुशहोकर खजानचीको हुकम दियाकि-
इसे-सवारुपया इनाम दियाजाय, खजानचीने उसहुकमकी तामीलकिइ,
भाट जब इनामपाकर राजासाहबके सामने आया, राजासाहबने
पुछाकि-क्यो ! तुजे सवारुपया मिलगया, भाटने जवाबदिया,
हुजुर ! बीसआने मिलगये, राजासाहब गुस्से होगये और खजान-
चीको बुलाकर कहा, मेने सवारुपया देनेका कहाथा तेने इसको
बीसआने क्योदिये ? इसमाजरेको सुनकर भाटसे बिनाजवाब दिये
के-न-रहागया, बोलउठा, हुजुर सवारुपया और बीसआने एकही
बातहै, राजासाहब भाटपर खफाहुवे, और कहनेलगे तेने मुजेपेस्त-
रसे क्यो-न-जचायाकि-सवारुपया और बीसआने एकही बातहै,
देखिये ! अनपढ महाशयोकी खूबी, गरज ! इसमिशालकी यहहैकि-
हरशख्शको इल्महासिल करना चाहिये,

५२-[एक जजसाहब और मुजरीम,]

एक जजसाहबके इजलासमें एक शख्शका मुकदमा चलताथा,
जजसाहबने पुछाकि-तुमारीमाटी हुइहै-या-नही ? मुजरीमने जबा-

४९-[सवाल बादशाह अखबरका दरबारी मुसाहिबोंसें,]

बादशाह अखबरने अपने सरेदरबार मुसाहिबोंसें पुछाकि-बतलाओ ! सबपत्तोंमें कौनसा पत्ता बडाहै, ? चुनाचे ! किसीने कहा केलेका पत्तावडाहै, किसीने कहा अरइका-और किसीने कहा सागवानका बडाहै, इसीतरह पेदरपे जवाब देनेलगे, मगर किसी का जवाब बादशाको पशंदे खातिर-न-हुवा, जिसवख्त बीरबलसे पुछागया उसने जवाबदिया, हुजुर ! नागरबेलका पत्ता सबसे बडाहै, जो आपके मुहतक पहुचताहै, बादशाह यह सुनकर निहायत खुशहुवे,

५०-[एक अकलमंद मुन्शी,]

एक अकलमंद मुन्शी-अपने शहरमे-कोइ कम अकल पनेका काम करता दिखाइदे फौरन ! उसकानाम अपनी किताबमे लिखलियाकरताथा, एक रौज बादशाहके दरबारे खासमेंभी आपहुचा, एक सोदागिर घोडे बेचनेवाला बादशाहके सामने खडाथा और कुछबातचीत कररहाथा, बादशाहने कहा ! कोइ उमदा घोडा लाये-हो, ? उसने कहा सरेदस्त कोइहाजिर नही, मगर बहुकम हुजुरके उमदा घोडा खिदमतमें हाजिर करसकताहुं, बादशाहने पुछा उसकी कीमत क्या होगी ? सोदागिरने जवाबदिया दशहजारसे कम-न-होगी, बादशाहने खजानचीको हुकमदिया अभी इसको दशहजार रुपये देदो, व मुजब हुकम बादशाहके खजानचीने रुपये देदिया, मुन्शीने यहमाजरा देखकर अपनी किताबमे लिखादियाकि-बादशाह-कमअकलहै, किसीने इसबातको देखा और बादशाहसे अर्ज किइकि-आपको इसमुन्शीने कमअकलके नामसे लिखलिये है, बादशाहने उसको बुलाकर पुछा और उसने जवाब दियाकि-हुजूर !

बुजुर्गोंका फरमानहैकि-वगेर चीज देखेभाले-या-कवजेमेंलिये मौल देदेना अकलमदीकी बात नही, बादशाह बोले, अगर सोदागिर घोडा लाकर हाजिर करेगा तो, ? मुन्शीने कहा अगर-न-करेगा तो ? बशर्तेकि-उसकी पहिचानतक आपको नहीहै, बादशाह तुर्त उस बातकों समझगये और उस सोदागिरसे रुपये पीछे लेलीये इसलेखका मतलब यहहैकि वगेरचीज देखेभाले और कब्जेकिये पेस्तर दामदेदेना मुनासिबनही,

५१-[एक अनपढ राजेका जिक्र,]

एक रोज एक भाटने एक राजासाहबके पास जाकर कुछक-वित्त सुनाये, राजासाहबने खुशहोकर खजानचीको हुकम दियाकि-इसे-सवारुपया इनाम दियाजाय, खजानचीने उसहुकमकी तामीलकिइ, भाट जब इनामपाकर राजासाहबके सामने आया, राजासाहबने पुछाकि-क्यौं ! तुजे सवारुपया मिलगया, भाटने जवावदिया, हुजुर ! वीसआने मिलगये, राजासाहब गुस्से होगये और खजान-चीकों बुलाकर कहा, मेने सवारुपया देनेका कहाथा तेने इसकों वीसआने क्यौंदिये ? इसमाजरेको सुनकर भाटसे विनाजवाब दिये के-न-रहागया, बोलउठा, हुजुर सवारुपया और वीसआने एकही बातहै, राजासाहब भाटपर खफाहुवे, और कहनेलगे तेने मुजेपेस्त-रसे क्यौ-न-जचायाकि-सवारुपया और वीसआने एकही बातहै, देखिये ! अनपढ महाशयोकी खूबी, गरज ! इसमिशालकी यहहैकि-हरशख्शको इल्महासिल करना चाहिये,

५२-[एक जजसाहब और मुजरीम,]

एक जजसाहबके इजलासमें एक शख्शका मुकदमा चलताथा, जजसाहबने पुछाकि-तुमारीशादी हुइहै-या-नही ? मुजरीमने जवा-

वदिया, हुजुर ! मेरी सादीनहीहुइ मेरीऔरतकी सादीहुइहै, जजसा-हव बोले क्या ! अदालतमेभी दिल्लगी करते हो ? उसनेकहा, नही हुजुर ! मेरी क्याताकातहै-जो-अदालतमें दिल्लगी करुं, ? दरअसल मेरी औरतने मुजकों छोडकर दुसरेसे सादी करलिइहै, इसबातकों सुनकर सबलोग हसने लगे,

५३-[एक हाजिरजवाब लडका,]

किसी वादशाहने अपने शहरमें हुकम जारी कियाकि-रातके वख्त कोइ आदमी घरसे वाहर कदम-न-रखे, तमाम लोगोने वा-दशाहके हुकमकी तामील किइ, मगर एक लडका हुकम अदुली करके मकानके वाहर निकला, और रास्तेमें सिपाइयोंकों मिला, उनोंने पुछाकि-क्या ! तेंने शाहि हुकम नही सुना, ? लडकेने कहा वेशक ! सुना है, सिपाइयोने कहा फिर हुकम अदुली किस लिये किइ ? लडकेने जवाव दिया-में-किसका लडका हुं-कुछ मालूमभी है ? जिसके सामने तमाम वादशाह-शाहजादे-और-दिवान वगेरा सिर झुकाते है, सिपाइयोने समझा कोइ शाहजादा होगा, जाने दो, असलमे वह नाइका लडका था, देखिये ! हाजिर जवाव लड-का किस कदर कामयाव हुवा,

५४-[संस्कृत इल्मकी तरक्की,]

किसी शहरमे एक पडितजीका जाना हुवा, रास्तेमें एक भी-स्तीकी लडकी मिली, पडितजीने पुछा तु ! किसकी लडकी है ? उसने जवाव दिया,

चतुर्मुखी नतो ब्रह्मा-वृषभारुढो न शंकरः
तोय धारा नतो मेघः-तस्य कुलेह बालिका, १

यह सुनकर पंडितजी समझ गये, यह भिस्तीकी लडकी है, फिर कुछ आगे वढे तो एक दरजीकी लडकी मिली, उसको पुछा तुं! किसकी लडकी है, ? उसने जवाव दिया,

ग्रीवाशीर्षे न विद्येते-हस्तपाद विवर्जितः
स जीवं पुरुषं अत्ति-तस्य कुलेह वालिका, २

यह सुनकर पंडितजी समझ गये कि-लडकी-दरजीकी है, फिर कुछ आगे वढे तो एक और लडकी मिली, उसकों पुछा तो-जवावमें उसने कहा,

यंत्र तंत्र विधिं नित्यं-करोति खडखडतां,
राजा मजा न जानाति-तस्य कुलेहं वालिका, ३

पंडितजी इस वातकों सुनकर समझ गये यह सूथारकी लडकी है, फिर कुछ आगे वढे तो एक लोहारकी लडकी मिली उससेभी पुछा तो जवाव दिया कि—

स्वासोत्स्वास च ग्रन्हाति-जीवतं इव सर्वदा,
कुटुंवे कलहो यत्रं-तस्य कुलेहं वालिका, ४

फिर कुछ आगे वढे तो एक और लडकी मिली, उससेभी यही सवाल किया, और उसने जवाव दिया कि,—

पर्वताग्रे रथो याति-भूमौ तिष्टति सारथी,
चलते वायु वेगेन-तस्य कुलेहं वालिका, ५

यह सूनकर पडितजी जान गये यह कुंभारकी लडकी है, फिर आगे वढे तो एक और लडकी सामने मिली, उससेभी पुछा कि-तुं! किसकी लडकी है ? उसने कहा,

कृष्नमुखी न मार्जारी-द्विजीव्हा न सर्पिणी,
पंच भर्त्ता न पांचाली-तस्य कुलेहं वालिका, ६

इस वातकों सूनकर पंडितजी समझ गये, यह मोहरिरकी यानी लेख लिखने वालेकी लडकी है –

६९–[एक कंजूसका मजाख,]

एक कंजूसका वाप वीमारपडा तो उसके वेटेने अपने वापसें कहाकि–चादर अभीसे उतार दिजिये तो अछा है, जो धोकर रख लिइ जाय ताकि–आपके मुर्देपर ओढानेके लिये काम दे, वापनें कहा घवडाता क्यौ है? मेरी अगुलीमें जो अंगुठी सोनेकी पहनी हुइ है वेचकर नया कपडा मोललाना,–वेटेनें कहा–मे–अपनी अंम्माजानसे पेस्तरसे इकरार कर चूका हुं कि–आपके दम निकल जानेपर अगुठी तुजे लादुगा, वलकि! वह आपके मरनेका इंतजार कर रही है, वापने कहा अवे! कमवख्त! क्या लडकपनकी बातें कर रहा है, रात पडनेकी तयारी है, चिराग तो जला, वेटेनें कहा, तीन रौजसे आपका दम निकलनेकी हालत वीत रही है, अवतक निकला नही, नाहक! तेल क्यौ खराव करना? वापने कहा अब में–किसी दमका मेहमान हुं, और–जी–घवडाता है, चिराग जला दे, वेटेने कहा, अछा! जलाता हुं, मगर मुजे नीद आ जाय तो मरनेके पहेले आप चिरागको वुझाकर मरना, ताकि–तेलका वचाव हो, देखिये! दुनियामें ऐसेभी कंजुस लडके होते है, जो अपने वापके लियेभी पेसेका तेल खर्चना नही चाहते,

७०–[एक जाहिल नौकरका लतिफा,]

एक मालिकने अपने नोकर पाइ
फक्त तकिया रख दे, नौकरने च दिइ

तकियाभी रख दिया, मगर फक्तको ढुंढने लगा, देर होनेपर मालिकने पुकारा अबे! क्या करता है? वह कहने लगा, हुजुर! चार पाइतो बीछा दिइ, और तकियाभी उसपर रख दिया, लेकिन! फक्तके लिये ढुंढ रहा हुंकि-फक्त क्या चिज है,? मालिकने कहा, अबे! नादान!! क्या बकवाद कर रहा है? मेंने फिकरेमें-जो-फक्तका लब्ज कहाथा क्या! वोभी कोइ चीज है? जो ढुंढ रहा है, बेइल्म नौकरका नतीजा ऐसोही हुवा करता है,-

५७-[चार दामादोका लतिफा,]

किसी शहरमें एक पुरोहित ब्राह्मण रहताथा, और उसकी राजाके दरबारमें बहुत बडी इज्जत थी, यहा तककि-उसकों राजाजीने दो गावकी जहांगिरीभी दे दिइथी, उसके घर चार लडकी और एक लडका था, चारो लडकीयोकी सादी कर दिइ गइथी-और-वे-अपने सुसरालमें रहा करतीथी, जब लडकेकी सादीके दिन करीब आये पुरोहितजीने लिख भेजाकि-आप लोग मय कबीलेके मेरे घर तशरीफ लावे, और लडकेकी सादीकों रौनक अफरौज करे, बमुजब तेहरीरके-वे-चारों दामाद सुसरालके घर आये, और सादीका जलसा शुरु हुवा, औरभी कइ रिस्तेदार पुरोहितजीके घर आये हुवेथे, बडीशान-व-सौकतसें बरात चढी, और बाद चंद रोजके सादी करके वापिस आये बराती लोग अपने अपने घर गये, और करीबके रिस्तेदारोनेभी रुकसत मांगी, मगर चारों दामाद जो पेस्तरसे आये हुवेथे जिनके नाम-विजयराम-माधवराव-मणिराम-और-केशवलाल-थे, मुद्दत गुजर गइ रुकसत नही मागते, चैनसे पुरोहितजीके रसोडेमें जाकर जीम आते थे, और दुफेरकों शतरंज खेला करतेथे, धू-कइ रोज गुजरे बाद पुरोहितजीने सोचाकि-इतो-ये-जानेवाले नजर नही आते, नदे-

त्तर है इनके लिये जानेकी कोइ तद्वीर निकाले, गरजकि-पुरोहि· तजीने अपनी औरतसें पुछाकि-इनके रवानगीकी क्या सुरत है,? उसने कहा आप फिक्र मत किजिये, में-कलही इनकी तजवीज करती हुं, ऐसा कहकर दुसरे रौज गेहुकी रोटी वनाना मौकुफ कर दिइ और वाजरेकी रोटीयां वनाकर चारों दामादके साम्रने रखी, चारोन उन रोटियोंको खाइ, और दुफेरकों जव शतरंज खेलने वेठे विजयरामने कहा, देखो! आज वाजरेकी रोटी मिलने लगी, अव अपनी इज्जत नही जो यहां फिर चंदरौज ठहरे, मुनासिव है, अव अपने घरकों जाय, इस वातकों सुनकर तीनोने कहा, आप जाना हो जाइये, हमतो यहांही ठहरेंगे, गरजकि-विजयराम अपने सुसरालसे रुकसत पाकर अपने घरकों गया,

वाद चंद रौजके पुरोहितजीने फिर अपनी औरतसे कहा-ये तीनोतो हिलतेभी नही, इनके जानेकी कोइ तद्वीर वनाओ, औरतने दुसरे रौज घीकी एवज वाजरेकी रोटीयोंपर तिल्लीका तेल दामोदोंके सामने रखा, इस वातसे माधवराम समझ गया, और दोनो शाथियोसे कहने लगा, अवतो पुरी वेइज्जती होने लगी है, वेहत्तर है जल्दीसे चल निकले, दोनोने कहा, आप जाइये, हम वाजरेकी रोटी और तेलही खाया करेंगें, मगर यहांसें नही जायगें, यह सुनकर माधवराव मय अपने कवीलेके वतन चला गया, वाद चंदरौजके पुरोहितजीने फिर अपनी औरतसे कहाकि-ये-दोनोंतो खूव जमे वेठे है, इनकाभी कोइ रास्ता निकालो, दुसरे रौज औरतने चार पाइयां विखेर डाली, और दामादोसें कहने [illegible] चार पाइयोंमें खटमल हो गये है, [illegible]
किजिये, इस वातकों [illegible] होश [illegible]
लगा, भाइ! अवतो [illegible]

रामभी अपनी औरतकों लेकर चला गया, अब रहा केशवलाल-सो-उसने बारां महिने तक जानेका नाम नही लिया, तब पुरोहितजीने सलाह किइ अब इसकी तजवीज क्या करे ? औरतने कहा, मेने तीनोंकी तजवीज तो कर दिखाइ, अब इनकी तजवीज आप किजिये,-गरजकि-बापबेटेने सलाह किइ कल जीमते वख्त-में-तुजपर खफा होउगा, उस वख्त तुंभी मेरे सामने गुस्ताखी करना, यहां तककि-हाथा पाइ करके लडाइ लडना, और जब वह अपनोकों छुडानेके लिये आवे दोनो मिलकर उसीकों खूब सीधा करना, पस ! दुसरे रौज उसी तरह बापबेटोमें लडाइ शुरु हुइ, केशवलाल उस वख्त रसोइ जिमनेको आयाही था, उसने देखा बापबेटे लड रहे है, चलो ! इनको छुडा देवे, इस ख्यालसे दोनोके दरमियान आया, और छुडाने लगा, पस! इनोने काबु पाकर उसकों इस कदर सीधा कियाकि-वोभी-याद करे, बर्स दिनका खायापिया दो घंटेमें वसूल कर लिया, गरजकि-सब-भुखे प्यासे रसोइकी जगहसे बाहर चले गये, केशवलालभी विना खाये पीये अलग जाकर सौचने लगाकि-अब यहा रहना बिल्कुल ठीक नही, अगर रहेगे तो फिर यही नौबत होगी, गरजकि-दुसरे रौज विना पुछे अपने सुसरालके घरसे विदा हो गया, इस किस्सेपर एक श्लोकभी बना हुवा है, पढलो,-

वज्रकूटाद् विजेरामः-तिल तैलेन मा त्रः
भूमिशय्या मणिरामः-धक्का धूमेन केशवः,

५८-[एक मालिक और गुस्ताख नौकर,]

एक मालिकने अपने नौकरसे कहाकि-हवा खोरीकों जायगें, गाडी लाओ, नौकर गुस्ताख था तबेलेमें बिनां घोडे जोते गाडी

त्तर है इनके लिये जानेकी कोइ तद्बीर निकाले, गरजकि–पुरोहि· तजीने अपनी औरतसें पुछाकि–इनके रवानगीकी क्या सुरत है,? उसने कहा आप फिक्र मत किजिये, मैं–कलही इनकी तजवीज करती हुं, ऐसा कहकर दुसरे रौज गेहुकी रोटी वनाना मौकुफ कर दिइ और वाजरेकी रोटीयां वनाकर चारों दामादके सामने रखी, चारोंन उन रोटियोंको खाइ, और दुफेरकों जव शतरंज खेलने वेठे विजयरामने कहा, देखो ! आज वाजरेकी रोटी मिलने लगी, अव अपनी इज्जत नही जो यहा फिर चंदरौज ठहरे, मुनासिव है, अव अपने घरकों जाय, इस वातकों सुनकर तीनोने कहा, आप जाना हो जाइये, हमतो यहांही ठहरेंगें, गरजकि–विजयराम अपने सुसरालसे रुकसत पाकर अपने घरकों गया,

वाद चंद रौजके पुरोहितजीने फिर अपनी औरतसे कहा–ये तीनोतो हिलतेभी नही, इनके जानेकी कोइ तदवीर वनाओ, औरतने दुसरे रौज घीकी एवज वाजरेकी रोटीयोंपर तिल्लीका तेल दामोदोके सामने रखा, इस वातसे माधवराम समझ गया, और दोनो शाथियोसे कहने लगा, अवतो पुरी वेंइज्जती होने लगी है, वेहत्तर है जल्दीसें चल निकले, दोनोने कहा, आप जाइये, हम वाजरेकी रोटी और तेलही खाया करेंगें, मगर यहांसें नही जायगें, यह सुनकर माधवराव मय अपने कवीलेके वतन चला गया, वाद चंदरौजके पुरोहितजीने फिर अपनी औरतसे कहाकिं–ये–दोंनोंतो खूव जमे वेठे है, इनकाभी कोइ रास्ता निकालो, दुसरे रौज औरतने चार पाइयां विखेर डाली, और दामादोसें कहने लगी, चार पाइयोंमें खटमल हो गये है, आजसे आपलोग जमीनपर सोया किजिये, इस वातकों सुनकर मणिरामकों होश आया, और कहने लगा, भाइ ! अवतो यहांका रहना ठीक नही, ऐसा कहकर मणि-

रामभी अपनी औरतकों लेकर चला गया, अब रहा केशवलाल-सो-उसने बारां महिने तक जानेका नाम नही लिया, तब पुरोहितजीने सलाह किइ अब इसकी तजवीज क्या करे? औरतने कहा, मेने तीनोंकी तजवीज तो कर दिखाइ, अब इनकी तजवीज आप किजिये,-गरजकि-बापबेटेने सलाह किइ कल जीमते वख्त-में-तुजपर खफा होउगा, उस वख्त तुभी मेरे सामने गुस्ताखी करना, यहा तककि-हाथा पाइ करके लडाइ लडना, और जब वह अपनोकों छुडानेके लिये आवे दोनो मिलकर उसीको खूब सीधा करना, पस! दुसरे रौज उसी तरह बापबेटोमें लडाइ शुरु हुइ, केशवलाल उस वख्त रसोई जिमनेको आयाही था, उसने देखा बापबेटे लड रहे है, चलो! इनकों छुडा देवे, इस ख्यालसे दोनोके दरमियान आया, और छुडाने लगा, पस! इनोंने काबु पाकर उसकों इस कदर सीधा कियाकि-वोभी-याद करे, वर्स दिनका खायापिया दो घटेमें वसूल कर लिया, गरजकि-सब-भुखे प्यासे रसोइकी जगहसे बाहर चले गये, केशवलालभी विना खाये पीये अलग जाकर सौचने लगाकि-अब यहा रहना बिल्कुल ठीक नही, अगर रहेगे तो फिर यही नौबत होगी, गरजकि-दुसरे रौज विना पुछे अपने सुसरालके घरसे विदा हो गया, इस किस्सेपर एक श्लोकभी बना हुवा है, पढलो,-

वज्रकूटाद् विजेरामः-तिल तैलेन मानवः
भूमिशय्या मणिरामः-धक्का धूमेन केशवः,

५८-[एक मालिक और गुस्ताख नौकर.]

एक मालिकने अपने नौकरसे कहाकि-हवा खोरीकों जायगे, गाडी लाओ, नौकर गुस्ताख था तबेलेमें विनां घोडे जोते गाडी

लाकर खडी कर दिइ, मालिकने देखा विना घोडेकी गाडी सामने रखी हुइ है, नौकरसे कहने लगे इसमे घोडे क्यों नही लगाये, नौकरने जवाव दिया हुजुरने सिर्फ ! गाडी लानेके हुकम दियाथा, घोडोंके लिये तो कुछ नही कहाथा, मालिकने कहा अछा तुंही खींच और लेचल, नौकर शर्मिदा हुवा, और घोडे लाकर गाडीमें जोत दिये, मालिकने कहा, अब घोडे क्यौ लगाये, ? क्या ! तुजे खेंचनी पडतीथी इस लिये, ? नौकरीके दाम लेता है खोटे रुपयेतो हर्गिज ! नही लेता,

५९-[दरियावकी सफर,]

किसी आदमीने एक-शख्शको पुछाकि-आपने दरियावकी सफरतो वहुत किइ है, वतलाइये ! आपने उसमे नादीर चीज क्या देखी ? उसने जवाव दिया नादीर चीज दरियावमे वही देखीकि-में-सहीसलामत कनारे आ पहुचा, अगर वीच दरियावके गर्क हो जाता तो वहा मुजे कौन वचा सकता था ?

६०-[वादशाहका सवाल और अकलमंदका जवाव,]

एक वख्तका जिक्र है वादशाहने अपने शहरमें मशहूर कर दियाकि-में-एक सवाल पुछुगा, जो कोइ माकुल जवाव देगा, वहुत कुछ इनाम पायगा, इस वातको सुनकर एक हाजिर जवाव आदमी वादशाहके सामने गया, और अर्ज किइकि-हुजुर ! सवाल करे, में-उसका माकुल जवाव दुंगा, वादशाहने पुछा, वतला ! मेरे हाथपर वाल क्यौं नही, ? उसने जवाव दिया, आप आपने हाथोंसें खूव खेरात करते है, इस लिये वाल नही, फिर वादशाहने पुछा तेरे हाथपर वाल क्यों नही, ? उसने जवाव दिया, रुपये पैसे लेते लेते मेरे हाथके वाल घीस गये, वादशाहने कहा, वताओ !

दुसरे लोगोके हाथपर वाल क्यों नही ? उसने जवाव दिया, आप देते है, और-में-लेता हुं इस वातको देखकर-वे-लोग हाथ मसला करते है, इस लिये उनके हाथपरभी वाल नही, वादशाह इसकी हाजिर जवानीसें खुश हुवे, और वहुतसा इनाम दिया,-

६१-[एक उस्ताद और वेंअदव लडका,]

उस्तादकी हमेशां इज्जत करना चाहिये, एक उस्ताद मदर्सेमें लडकेकों पढा रहेथे, उसमें एक लडका वडा गुस्ताख था, और हरेक वातपर वेंअदवीका जवाव दिया करताथा, एक दफे उस्ताद उस लडकेके सामने वेंतकों सिधा करके कहने लगे हमारे वेंतके कोनेके सामने एक गधा वेठा है, लडका फौरन! वोल उठा वेतके दो तर्फके कोने होते है आप किस तर्फके कोनेका जिक्र करते है ? उस्तादने उसका कान पकडकर तुरत मदर्सेसें निकाल दिया,

६२-[एक-वेवफा-लडका,]

एक लडका जुआरीयोंके शाथ जुआ खेल रहाथा, घरपर उसका वालिद इंतकाल हो गया, किसी रिस्तेदारने आनकर उस लडकेकों कहा, तेरे वालिदका इतकाल हो गया है, घर चल, ! लडकेने कहा, आप चलकर तयारी करे, मे-आता हु, थोडी देरके वाद फिर उस शख्शने आनकर कहा, भैया ! तयारी हो चुकी है, सिर्फ ! तेरे आनेकी देरी है, लडकेने कहा, अछी वात है, ले जानेका रास्तातो इधरहीसें है, आप ले आइये ! मेंभी यहासे शाथ हो लुगा, देखिये ! यह किस किसमकी गुस्ताखी है, ऐसे नामाकुल लडकोंके-होनेसे-न-होना वहेत्तर, एक मिसराभी इसपर वना हुवा है. नाखलफ ओलादके होनेसे-ना-होना भला,

लाकर खडी कर दिइ, मालिकने देखा विना घोडेकी गाडी सामने रखी हुइ है, नौकरसे कहने लगे इसमें घोडे क्यौं नही लगाये, नौं-करने जवाब दिया हुजुरने सिर्फ ! गाडी लानेके हुकम दियाथा, घोडोंके लिये तो कुछ नही कहाथा, मालिकने कहा अछा तुंही खींच और लेचल, नौकर शर्मिदा हुवा, और घोडे लाकर गाडीमें जोत दिये, मालिकने कहा, अब घोडे क्यौ लगाये, ? क्या ! तुजे खेंचनी पडतीथी इस लिये, ? नौकरीके दाम लेता है खोटे रुपयेतो हर्गिज ! नही लेता,

५९-[दरियावकी सफर,]

किसी आदमीने एक-शख्शको पुछांकि-आपने दरियावकी सफरतो बहुत किइ है, बतलाइये ! आपने उसमे नादीर चीज क्या देखी ? उसने जवाब दिया नादीर चीज दरियावमें वही देखीकि-में-सहीसलामत कनारे आ पहुचा, अगर बीच दरियावके गर्क हो जाता तो वहां मुजे कौन बचा सकता था ?

६०-[बादशाहका सवाल और अकलमंदका जवाब,]

एक वख्तका जिक्र है बादशाहने अपने शहरमें मशहूर कर दियाकि-में-एक सवाल पुछुगा, जो कोइ माकुल जवाब देगा, ब-हुत कुछ इनाम पायगा, इस बातको सुनकर एक हाजिर जवाब आदमी बादशाहके सामने गया, और अर्ज किइकि-हुजुर ! सवाल करे, में-उसका माकुल जवाब दुगा, बादशाहने पुछा, बतला ! मेरे हाथपर बाल क्यौ नही, ? उसने जवाब दिया, आप आपने हाथोंसें खूब खेरात करते है, इस लिये बाल नही, फिर बादशाहने पुछा तेरे हाथपर बाल क्यौं नही, ? उसने जवाब दिया, रुपये पैसे लेते लेते मेरे हाथके बाल घीस गये, बादशाहने कहा, बताओ !

देखो! चौर लोग घरसे बाहर निकले, शेठने कहा-मे-सब जानता हुं. शेठानीने मजबूर होकर एक दोहा कहा कि-जानुं जानु क्या करो-धन तो-ले गये दूर, शेठानी कहे शेठने-इस जानपनेमें धूर?

६५-[गुरुजीकी नसीहतपर चेलोंकी गुस्ताखी.]

एक-गुरु महाराज-पांच दस चेलोंकों हमरा लेकर मुल्कोंकी सफर करते हुवे एक शहरमें पहूचे. और चंदरौज वहा कयाम किया. चेले भिक्षा लेनेकों शहरमें जाया करतेथे. एक रौज रास्तेमें नट लोग तमाशा कर रहेथे. देखनेके लिये खडे हो गये. और बाद वडी देरके भिक्षा लेकर गुरुजीके पास आये. गुरुजीने पुछा इतनी देर कहां लगाइ? जवाबमें चेलोने पेस्तर तो-कइ-बहाने पेश किये मगर जब गुरुजीने बहुत तग-किये कहने लगे. नटोंका तमाशा देखनेके लिये ठहर गयेथे. गुरुजीने कहा. आइंदा खयाल रखो. नटोंका तमाशा कभी नही देखना. जब दुनयवीकारोबार छोडकर साधु हो गये फिर तमाशा क्यौं देखना? चेलोने कूबुल किया आइंदेपर-न-देखेगें. मगर जब दुसरे रौज फिर भिक्षाकों गये, नटनीका तमाशा देखनेकों खडे हो गये. और बाद वडी देरके गुरुजीके पास आये. गुरुजीने पुछा आज फिर इतनी देर कहा लगाइ. ? जवाबमें कहा. आज नटनीका तमाशा हो रहाथा देखनेको ठहर गयेथे. गुरुजीने कहा. कल तुमकों मना कियाथा. ? चेलोने कहा. आपने-नटोंका तमाशा मना कियाथा. नटनीका-तो-मना नही किया. गुरुजीने कहा जब नटोका-तमाशा मना किया तो नटनीका तो आपही मना हो गया. चेलोने कहा आपने खोलकर बात नही कही. दर असल आपहीकी भूल है.-देखिये! चेलोंकी किस कदर गुस्ताखी है-जो- अपनी भूल-गुरुजीपर डालते है.—

६३-[सांप और चूहेकी नकल,]

क्षिप्तः केन करंडकेपि भुजगः क्षुत्पीडितोनासकत्;
रात्रौ खादिम कांक्षयाशु विवरं कृत्वोंदुर स्तन्मुखे;
भाग्यादेव तदास्यं निपतितस्तन्मांस तृप्तो भव
द्यातस्तेन पथा नरः स्थिरतरो भोगीव भाग्ये भवेत्. १

किसी शख्शने एक सापकों एक लकडेके डब्बेमें बंद करके रखाथा. तीन रौज तक साप उसमेसें निकल-न-सका, भुखा और प्यासा उसीमें तकलीफ पाता रहा. इत्तिफाकन! एक चूहा रातके वख्त डब्बेके पास आया, और उस डब्बेकों काटने लगा. दो-इंचका-छेद वनाकर जब भीतर घुसा उधर सांप छेदके पास मुंह लगाये तयार बेठाथा. एकदम चूहेकों खा गया. और उसी रास्तेसें वहारभी निकल आया. देखिये! तदबीर किसने किइ और काम किसका हुवा.? इसीलिये कहा जाता हैकि-तदबीरसें तकदीर मुकद्दम है. वशर्त्ते कि-सांपने कुछ तदबीर नही किइ तोभी तकदीरसे उसको भक्ष्य आन मिला. सबुत हुवा तदबीरसे तकदीर वडी है,—

६४-[एक शेठके घर चौरोका आना,]

किसी शेठके घर चौर लोग रातके वख्त चोरी करनेके लिये आये, शेठानीने देखकर शेठकों कहा चौर आ रहे है, शेठने कहा में-जानता हूं. आने दो, कुछ देर वाद फिर शेठानीने कहा, देखो! घरमेंभी आगये, तबभी शेठने यही जवाब दिया जानता हु. तीसरी दफे फिर शेठानीने कहा देखो! अब खजानेके कमरेमें आ गयें, और धन मालकी गठरीयांभी वांध लिइ, शेठने कहा जानता हुं, जब धन माल लेकर चौर घरसे वाहर निकले, शेठानीने कहा

देखो! चौर लोग घरसे बाहर निकले, शेठने कहा-मे-सव जानता हुं. शेठानीने मजबूर होकर एक दोहा कहा कि-जानु जानु क्या करो-धन तो-ले गये दूर, शेठानी कहे शेठने-इस जानपनेमें धूर?

६९-[गुरुजीकी नसीहतपर चेलोंकी गुस्ताखी.]

एक-गुरु महाराज-पांच दस चेलोंकों हमरा लेकर मुल्कोकी सफर करते हुवे एक शहरमें पहूचे. और चदरौज वहां कयाम किया चेले भिक्षा लेनेकों शहरमें जाया करतेथे. एक रौज रास्तेमें नट लोग तमाशा कर रहेथे. देखनेके लिये खडे हो गये. और बाद वडी देरके भिक्षा लेकर गुरुजीके पास आये. गुरुजीने पुछा इतनी देर कहा लगाइ? जवावमें चेलोने पेस्तर तो-कइ-वहाने पेश किये मगर जव गुरुजीने वहुत तग किये कहने लगे. नटोंका तमाशा देखनेके लिये ठहर गयेथे. गुरुजीने कहा. आइंदा खयाल रखो. नटोंका तमाशा कभी नही देखना. जव दुनयवीकारोबार छोडकर साधु हो गये फिर तमाशा क्यौ देखना? चेलोने कूवुल किया आइंदेपर-न-देखेगें. मगर जव दुसरे रौज फिर भिक्षाकों गये, नटनीका तमाशा देखनेकों खडे हो गये. और बाद वडी देरके गुरुजीके पास आये. गुरुजीने पुछा आज फिर इतनी देर कहा लगाइ. ? जवावमें कहा. आज नटनीका तमाशा हो रहाथा देखनेको ठहर गयेथे. गुरुजीने कहा. कल तुमकों मना कियाथा. ? चेलोने कहा. आपने-नटोंका तमाशा मना कियाथा. नटनीका-तो-मना नही किया. गुरुजीने कहा जव नटोका-तमाशा मना किया तो नटनीका तो आपही मना हो गया. चेलोने कहा आपने खोलकर वात नही कही. दर असल आपहीकी भूल है.-देखिये! चेलोकी किस कदर गुस्ता... है-जो अपनी भूल-गुरुजीपर डालते है.—

६६-[भाइ और वहेनका किस्सा.]

किसी शहरमें एक शख्श निहायत गरीबी हालतमें आ गया था उसने खयाल किया मेरी वहेनके घर वहुतकुछ धनमालहै, वहेत्तरहै उसके घर चले, वहां अछी तरह गुजरहोगा. गरज ! वो-अपनी वहेनकेघर पहुचा, वहेनने जब इसको फटे पुराने कपडोसें गरीबी हालतमें देखा, तो-अनजान-वनगइ, पडोसीयोंने पुछा यह कौन आयाहै,? तो-कहने लगी-मेरे वापके घरका रसोइयाहै, भाइ इस वातको सुनकर दिलगिर हुवा और दिलमें कहनेलगा, देखो गरीबी हालतमें वहनभी मुजे रसोइया वतलाती है, खेर ! यहांभी रहना मुनासिव नही, वहां-न-ठहरा, और दुसरे मुल्कमें गया, जब उसकी तकदीरका सितारा तेजहुवा रोजगारमें वडीदौलत हासिल हुइ, एकरोज फिर उसकों यहवात यादआइकि-अब-अपनी वहनकेघर चलनाचाहिये, देखे ! किसतरह सुलुक करती है, ? गरजकि उमदा कपडे और जवाहिरातके गहने पहनेहुवे अपनी वहेनकेघर गया, वहेन अपने भाइकों अमीरी हालतमें देखकर खुशहुइ, और कहनेलगी आओ ! भाइ ! ! वहुतादिनके वाद आयेहो, उमदा खान पानसे उसकी तवज्जों मुदारात किइ, भाइ अपने गहने कपडों कों कहनेलगा यह खाना तुमारेलियेहै, मेरेलिये नही, क्योंकि-जब-में-गरीबी हालतमें आयाथा, इसीवहेनने मुजे रसोइया कहाथा, और अब यह खातिर-व-तवज्जो होरहीहै,

६७-[एक उस्तादके साथ शागिर्दकी गुस्ताखी]

एकउस्ताद अपने शागिर्दको हिदायत कियाकरतेथेकि-वात-चीत-दुरुस्तगीके शाथ करनाचाहिये एकरोज चिलमसें आगकी चिनगारी उडकर पघडीपर जागिरी, शागिर्द व-मुताविक हुकम

उस्तादके कहनेलगा, जनाब! उस्तादना-मुस्तदना-किब्ला-व-कावाअम-हुजुरकी दस्तार अस्मतआसारपर-एक-अखगरना हीन-जार-शररबार-आतीशकदये-चिलमसें परवाजकरके-शौला-अफगनहै. इसलवे चोडे फिकरेके कहनेतक-पघडी-आधी जलकर खाखहोगइ, बल्कि! आग सिरकीभी खबर लेनेलगी, उस्ताद दोनोंहाथोसें सिरमलतेहुवे बोले, ए! नाबकार! क्या! यही मौका तेरी फसाहतबयानी और तुलकलामीकाथा, ? साफ नहीकहा गयाकि- आपकी पघडीमें आग लगीहै,-हरेक बातपर मौका देखना-या-लंबीचोडी बाते बनाना,-? शागिर्दने कहा आपका फरमानाथा-बातचीत-लियाकत और दुरुस्तगीके शाथ करना,

६८ [एक हकीमसाहबका-नाडीदेखनेजाना,]

एकहकीमसाहब अपनेलडकेकों शाथलेकर बीमारकी नाडीदेखनेकों गये, जब बीमारके घरपहुचे बीमारकी चारपाइके पास एक छिलका नरगीका दिखलाइदिया, बीमारकी नाडीदेखकर हकीमसाहब बोले, आज नाडीमें मालूमहोताहै, आपने कोइ खटीचीज खाइहै, बीमारने कहा, हा! साहब! आज मेने दो-फांके नरगीकी खाइथी, हकीमसाहबने कहा, इसतरह बदपरहेजी मतकिजिये! दवाका असर बिगडजायगा, बीमारने कहा आइदा ऐसा-न-करुंगा, दुसरेरौज जबफिर हकीमसाहब नाडीदेखनेकों गयेतो बीमारके घरके पास भीडीके दो-चार-टुकडेपडे हुवेदेखे, भीतर जाकर बीमारकी नाडी देखी और कहनेलगे आज कोइ आपने सकीलचीज खाइ है, बीमारने कहा, बेशक! आज मेने भीडीका साग खायाथा, हकीमसाहब बोले, ऐसी बदपरहेजी तो-न-किजिये! दवा कार आमद-न- होगी. हकीमसाहब जब घरपहुचे लडकेनेपुछा, आप नाडीदेखकर कैसे जानजातेहोकि-नरंगी-या-भींडी-खाइहै, ? हकीमसाहबने

कहा, क्या ! इतनाभी तुजे खयालनहीकि-कुछ अंदाजसेंभी बात कहीजाती है, वीमारके घर-या-इर्दगिर्द किसीचीजका छिलका-या टुकडा पडाहो-तो-जानना यहचीज वीमारनेभी खाइहोगी, लडकेने कहा अछा ! कल-मे-नाडीदेखनेजाऊंगा, और जैसा आपकहते है मेंभी-कहुंगा, गरजकि-दुसरेरौज वीमारकेघर नाडीदेखनेकेलिये लडका गया, वीमारके घरकेपास एक-चूहा-मराहुवापडाथा, भीतरजाकर नाडीदेखी और कहनेलमाकि-आपने आज चूहेका गोस्त खायाहै, वीमार सुनकर हसा, और कहनेलगा अछी हकीमीपढेहो, क्या ! आदमीभी कहीं चूहा खाताहै, आप तशरीफ लेजाइयें और अपने वालिदकों भेजिये, लडका घरआया और सब केफियत वालिदकों कहसुनाइ, वालिदने कहा, अबे ! नामाकुल ! ! तुजे इतनाभी मालूमनहींकि-कोइवातकहना तो सोचसमझकर कहना, तेंने वीमारके घरपर माराचूहा देखातो क्या ! आदमीभी कही चूहा खाते है, हकीमसाहब फिर वीमारके घरगये, और कहनेलगे लडका अभी-वेंइल्मद्दे, इसीसे ऐसाआपकों कहगया, लाइये ! मे-नाडीदेखताहुं, ऐसाकहकर नाडीदेखी और कहनेलगे, आजआपकी नाडी दुरुस्तहै, थोडेरौजमें आप अछेहोजाओगे,

६९-[चार पंडितोंका-लतिफा,]

किसी शहरमें चारपंडित रहतेथे, एक हकीम-दुसरा नजुमी-तीसरा व्याकरण पाठी-और-चोथा-तर्कवादी-ये-चारों आलादर्जेके पंडितथे, मगर तजरुबाकार विल्कुल नहीथे, इत्तिफाकन ! ये चारों कहींदुसरे शहरजानेपर आमादा हुवे, किसीसे गाडी अमानतमांगली, और किसीसे दो-वेंलभी-मांगलाये, गाडी बाधबंधाकर तीनों उसपर वेठगये, और एक हाकनेवाला बना, गरज शुभहके चले हुवे चारों बजेतक मंजिल तयकिइ और एक जंगलमें छायादार

दरख्तके निचे जाकर मुकाम किया, गाडीके बेंल खोलदिये, और चारोंने आपसमें तजवीज किइकि-हरेक आदमी एक एक काम वांटलो, नजुमीने कहा-में-बेंलोंकों जंगलमें चराकर लाता हुं, ऐसा कहकर बेंलोंकों जंगलकी तर्फ लेचला, हकीमने कहा-मे-साकपात फलफलारी लाता हु. ऐसाकहकर शहरकीतर्फ चला, तीसरा व्याकरणपाठी बोला में-शहरमें जाकर किसीसे खीचडीका सामान पैदाकर लाताहुं, और चौथा तर्कवादी बोला-में-घी लेकर आताहु, ऐसा कहकर चारों वहांसे रवाना होगये, नजुमीने जंगलकी तर्फ बेंल लेजाकर छोडदिये और आप एक दरख्तके नीचे सोगया, बाद तीन घटेके जब नींद खुली और देखातो बेंलोंका पता नही, उसीवख्त जमीनपर एक लग्नकुडली खींची, और उसमें देखातो मालूम हुवा बेंल गुम्म होगये है,-अब मिलनेवाले नही, ऐसा समझकर बेंलोंकी तलाशीकों-न-जाकर वापिस ठिकानेपर आया, उधरसें व्याकरपाठी खीचडीका सामान लेकर आया, और चुलेपर चढादिइ, जब पकनेपर आइ उसमेसें खचपचकी अवाज होने लगी, व्याकरपाठी सामने बेठा हुवाथा, बोला! अशुद्धकिं जल्पसि, ? व्याकरणके कायदेसें खिलाफ खचपचकी-अवाज कयौं करती है, ? चुपकर! वह चुप कयौंकर होसकतीथी, ? व्याकरणपाठीने सौचाकि-जुठेके मुंहपर धूल डालना चाहिये, ऐसा कहकर खीचडीपर धूल डाल दिइ, जब अवाज बंदहुइ तो कहने लगा, जुठोंका यहीउपावहै, अब कयौं चुप होगइ, इतनेमें हकीमसाहब नींबके पत्ते लेकर ठिकानेपर आये, और बेठ गये, इधर तर्कवादी जो-घी-लेने गयेथे, सेरभर घी लेकर वापिस आते रास्तेमें सौचने लगेकि-(पात्राधारघृतं-घृताधारं पात्रं वा,,) बर्तनने घीकों सभालाहै-या-घीने बर्तनकों, इसखयालसे बर्तनकों उल्टा कर देखातो, सब-घी-जमी

कहा, क्या ! इतनाभी तुजे खयालनहीकि-कुछ अंदाजसेंभी वात कहीजाती है, वीमारके घर-या-इर्दगिर्द किसीचीजका छिलका-या टुकडा पडाहो-तो-जानना यहचीज वीमारनेभी खाइहोगी, लडकेने कहा अछा ! कल-मे-नाडीदेखनेजाऊंगा, और जैसा आपकहते है मेंभी-कहुंगा, गरजकि-दुसरेरौज वीमारकेघर नाडीदेखनेकेलिये लडका गया, वीमारके घरकेपास एक-चूहा-मराहुवापडाथा, भीतरजाकर नाडीदेखी और कहनेलमाकि-आपने आज चूहेका गोस्त खायाहै, वीमार सुनकर हसा, और कहनेलगा अछी हकीमीपढेहो, क्या ! आदमीभी कहीं चूहा खाताहै, आप तशरीफ लेजाइयें और अपने वालिदकों भेजिये, लडका घरआया और सब केफियत वालिदकों कहसुनाइ, वालिदने कहा, अवे ! नामाकुल ! ! तुजे इतनाभी मालूमनहीकि-कोइवातकहना तो सोचसमझकर कहना, तेने वीमारके घरपर मराचूहा देखातो क्या ! आदमीभी कही चूहा खाते है, हकीमसाहव फिर वीमारके घरगये, और कहनेलगे लडका अभी-वेइल्महै, इसीसे ऐसाआपकों कहगया, लाइये ! मे-नाडीदेखताहुं, ऐसाकहकर नाडीदेखी और कहनेलगे, आजआपकी नाडी दुरुस्तहै, थोडेरौजमें आप अछेहोजाओगे,

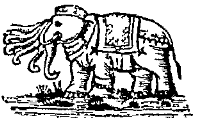
६९-[चार पंडितोंका-लतिफा,]

किसी शहरमें चारपंडित रहतेथे, एक हकीम-दुसरा नजुमी-तीसरा व्याकरण पाठी-और-चोथा-तर्कवादी-ये-चारों आलादर्जेके पडितथे, मगर तजरुबाकार विल्कुल नहीथे, इत्तिफाकन ! ये चारों कहीदुसरे शहरजानेपर आमादा हुवे, किसीसे गाडी अमानतमांगली, और किसीसे दो-वेलभी-मांगलाये, गाडी वांधवंधाकर तीनों उसपर वेठगये, और एक हांकनेवाला वना, गरज शुभहके चले हुवे चारां वजेतक मजिल तयकिइ और एक जंगलमें छायादार

नपर गिर पडा, जब चारों पंडित इकठे हुवे सबने अपना अपना माजरा कहसुनाया, उसवख्त एक मुसाफिरभी वहां-आया हुवाथा इसमाजरेकों सुना, और कहनेलगा लानतहै तुमारे इल्म पढनेपर तुम पुरेकम अकल हो, क्यौंकि-एकने बैलोकों गमाया, दुसरेने खीचडीमे धूल डाली, तीसरेने शागभाजीके लिये नीमका पत्ता लाया, और चौथेने-घी-ऊधा करदिआ, क्या! इल्म पढे हुवे पंडितोंका यही तरीका होता है. ? तुमसेतो हमही बहेत्तर जो हरेककामकों सौचकर किया करते है, मुनासिब है अब आगे मतबढो, और अपने वतनकों वापिस हो जाओ, अगर आगे बढोगेतो क्या क्या करदिखाओगे, ऐसा कहकर मुसाफिरने अपना रास्ता लिया, और पंडितभी अपने वतनकों विनाबेलकी गाडी खीचते हुवे वापिस चले आये, इसकिस्सेका मतलब यह हैकि-इल्म पठकर तजरुवा हासिल करना चाहिये,—

७०-[उंटके कानपर मछरकी अवाज.]

एक-मछर-ऊटकेकानपर बेठकर जोरसे अवाज करनेलगा, इसइरादेसेकि-मेरी-अवाजसे ऊंठ डरे, इधर ऊंठने इसअवाजको सुनकर मछरसे कहा, तुं! तेरीअवाज किसकों सुनारहाहै, ? मछरने कहा तेरेको डरानेकेलिये, ऊंठनेकहा, मेरीपीठपर बडेबडे नकारे और डंके बजचुके इसवख्तभी-में-न-डरातो तेरीछोटीसी अवाजसे क्याडरुंगा, ? जा! अपनारास्ता ले-



[वयान छ—राग—और—छतीस रागिनी,]

(एक कविके वनायेहुवे दोहे—कवित्त और—छप्पय,)

(दुहा,)

१—भैरव २ मालवकोसको—३ दीपराग ४ हिंडोल,
५—मेघराग ६ श्रीरागफुन—ये खटराग कलोल, १

(कवित्त,)

मोरहुकी वानीसे सुधारकर खर्ज वांधी—
चातककी वोलहुसे रिषभ स्वर धरीहै,
अजाहुकी वोलसे गधारकी विचार लेत—
क्रुजकी कलापहुते मध्यम स्वर वरी है,
कोकीलाकी कुंकहुते पचम वनाय वाधी—
धैवतको थार सुरदादुरकी हरी है,
माते गजराजहुकी गुंजसें निषादलीन—
एते नर वार वार सप्त स्वर धरी है, १

[छप्पय,]

भैरव १ घटिका चार रात रहियांसे होवे,
ललित २ द्वेघडी रह्या प्रात विभासही ३ मोहे,
सुरउग्रोत विलाउल ४ गुजरी ५ दोयघडी दिन,
देवगिरि ६ फुन चार घडी गावे नीके मन,
द्वेहे मलार ७ वर्षासमें रामगिरि ८ द्वेपहरहै,
टोडी ९ आस १० धनासिरि ११ जैतसिरि १२ द्वेअष्टहै,
रुतुवसंत १३ हिंडोल, १४ प्रहर दो सारग १५ गावे,
तापिछे नट १६ वेंद्रघडी सोहे सुख पावे,

नपर गिर पडा, जब चारो पंडित इकठे हुवे सबने अपना अपना माजरा कहसुनाया, उसवख्त एक मुसाफिरभी वहां-आया हुवाथा इसमाजरेकों सुना, और कहनेलगा लानतहै तुमारे इल्म पढनेपर तुम पुरेकम अकल हो, कयौंकि-एकने बेलोकों गमाया, दुसरेने खीचडीमे धूल डाली, तीसरेने शागभाजीके लिये नीमका पत्ता लाया, ओर चौथेने-घी-ऊंधा करदिआ, क्या! इल्म पढे हुवे पंडितोंका यही तरीका होता है. ? तुमसेतो हमही वहेत्तर जो हरेककामकों सौचकर किया करते है, मुनासिव है अब आगे मतवढो, और अपने वतनकों वापिस हो जाओ, अगर आगे वढोगेतो क्या क्या करदिखाओगे, ऐसा कहकर मुसाफिरने अपना रास्ता लिया, और पंडितभी अपने वतनको विनाबैलकी गाडी खीचते हुवे वापिस चले आये, इसकिस्सेका मतलव यह हैकि-इल्म पढकर तजरुवा हासिल करना चाहिये,—

७०-[उंटके कानपर मछरकी अवाज.]

एक-मछर-ऊंटकेकानपर वेठकर जोरसें अवाज करनेलगा, इसइरादेसेकि-मेरी-अवाजसे ऊंठ डरे, इधर ऊंठने इसअवाजको सुनकर मछरसे कहा, तुं! तेरीअवाज किसकों सुनारहाहै, ? मछरने कहा तेरेको डरानेकेलिये, ऊठनेकहा, मेरीपीठपर वडेवडे नकारे और डके वजचुके इसवख्तभी-में-न-डरातो तेरीछोटीसी अवाजसे क्याडरुंगा, ? जा! अपनारास्ता ले—



[बयान छ–राग–और–छतीस रागिनी.]

(एक कविके बनायेहुवे दोहे–कवित्त और–छप्पय.)

(दुहा,)

१–भैरव २ मालकोसको–३ दीपराग ४ हिंडोल,
५–मेघराग ६ श्रीरागफुन–ये खटराग कलोल, १

(कवित्त,)

मोरहुकी वानीसे सुधारकर खर्ज वांनी–
चातककी बोलहुसे रिषभ स्वर धरी है,
अजाहुकी बोलसे गधारकी विचार लेत–
कुजकी कलापहुते मध्यम स्वर धरी है.
कोकीलाकी कुकहुते पचम बनाय वांनी–
धैवतको धार सुरदादुरकी हरी है,
माते गजराजहुकी गुंजमें निषाद लेत–
एते नर वार वार सप्त स्वर धरी है. २

[छप्पय,]

भैरव १ घटिका चार रात रहियामें रंते
ललित २ द्वेघडी रह्या मात विभासं ३ कंते.
सुरउगोत विलाउल ४ गुजरी ५ टोडिसं दिन.
देवगिरि ६ फुन चार घडी गावे [illegible]
द्वेहे मलार ७ वर्षासमें रामगिरि ८ [illegible]
टोडी ९ आस १० धनोगिरि ११ [illegible] १२
रुतुवसत १३ हिंडोल, १४ [illegible] १५
तापिछे नट १६ वेद्र[illegible] [illegible] राति,

सिंधु १७ फुन संग्राम मारवो १८ द्वेद्वे जानो,
गौडी १९ द्वेघडी रह्यां युगलमील श्रीह २० वखानो,
सांजसमय दीपक २१ सुखद दोयघडी कल्यानहे,
सुवो २३ चार कनडो २४ वसुमहर केदारो २५ गानहे, २
पंचम २६ महरसवाह दोढ अडाणो २७ कहिये,
तेरे घडी विहाग २८ अर्द्ध खमायच २९ लहिये,
दोयमहर दोयघडी सोरठी ३० मारु ३१ चारही,
काफी ३२ फुन एरोड ३३ मालकोसी ३४ वसुधारही,
कालिंगडो ३५ दसघडी रहे तापीछे जंगलो ३६ गीनो,
आठ महर खट तीस स्वर लेइवख्त मभुगुन तनो, ३

तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका स्तवन,

(कालिंगडा,)

पूजुमें आज रिषभचरनं, अरचुमें, एटेर.
नवन ममार्जनमज्जन करके-विमलशिशभर आभरनं, पूजुमें, १
फलजल विविधकुसुमवरभेदे-करधरथालकनकवरनं, पूजुमें, २
द्रव्यभाव पूजन करी विधसे-करनकहेशिवसुखवरन, पूजुमें, ३

तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजका स्तवन,

(कालिंगडा)

मगलमूरत पारसकी-जियामंगल, एटेर,
सेवत इंद्रचंद्र मुनिसुरवर-चाहतहें निजजासकी, जिआमगल, १
धारन पंक सकल दुखहारी-दायकहै सुखरासकी, जियामंगल, २
निरखत नेनसफलभइआशा-करनचरनके दासकी, जियामंगल, ३

[जिनगुण स्तवन–कालिंगडा.]

प्रभुतेरे चरनोकी सरन ग्रहुं, जिनतेरे, एटेर,
हृदयकमलमें ध्यानधरु नित–सिरपर आनवहु. प्रभुतेरे, १
तुजसम खोल्यो देव खलकमें–पायो नाही कहुं, प्रभुतेरे, २
मनकी वाता तुं सबजाने–क्यामुख वहुत कहु, प्रभुतेरे, ३
कविजश कहे हे ! साहब–ज्युभव दुखनासहुं, प्रभुतेरे, ४

[उपदेशिकपद–कालिंगडा,–]

सुनमन होनहार–न–टरे, सुनमन ! एटेर,
चितकछु औरविचारतहैं नर–औरही औरबने, सुनमन. १
उपरबाज पारधिनीचे–चीडिया कैसे बचे, सुनमन. २
होनहार वस डस्यो पारधि–शरसिंचाणो मरे, सुनमन. ३
होतपदारथ भविभैया !–क्यौं ! जगसौच करे, सुनमन. ४
उदयकर्मगत देख जगतकी–जिनवर क्यौं न भजे, सुनमन. ५

[जिनगुण स्तवन–रागिनी भैरवी तीनताल,]

(दरवजवा ठाडीरहुं, पियाके आवनकी भइबीरियां,—ए चाल.)
नवरीया मेरी कौन उतारे पार,–नवरीया मेरी, एटेर,
या संसारसमुद्र गभीरा,–किसविध उतरुं–में–पार, नवरीयांमेरी. १
रागद्वेप दोनुं नदीयां वहतहै– भमरपडतगतिचार, नवरीयांमेरी. २
रिखवदासकों तार्यो चाहिये–ये विनतिअवधार, नवरीयांमेरी. ३

[तीर्थंकर महावीरस्वामीका स्तवन–रागिनी भैरवी.]

माइमेरो मनतेरो नंदहरे, माइमेरो, एटेर,
कचन वरन कमलदललोचन–देखत नयन ठरे, माइ मेरो, १
धन त्रिशलादे भाग्य तिहारो–तु तिहुअवनसिरे, माइ मेरो, २

तीनलोकके स्वामी तेरे-अंगनमें विचरे, माइ मेरो, ३
श्रीवर्द्धमान जिनंदकी मूरत-देखे चित्त ना सरे, माइ मेरो, ४
दासचुनी प्रभु चरन सरन ग्रही-भवभ्रम व्याध टरे, माइ मेरो, ५

[उपदेशिक पद-भैरवी-या-कालिंगडा,]

कौन किसीका मित्त-जगतमे-कौन किसीका मित, ए टेर,
माततात तिरिया सुत बंधव-कोइ-न-रहत निचिंत, जगतमे १
सबही अपने स्वारथके है-परमारथ नही प्रीत,
स्वारथ विनसे सगो नही होवे-मिता मनमे चित, जगतमे, २
उठ चलेगो आप अकेलो-तुंही-तुं सुविहित,
को-नही तेरा-तुं-नही किसका-येही अनादि रीत, जगतमे, ३
ताते एक भगवान भजनकी-राखो मनमें नीत,
ज्ञानसार प्रभु राग भैरवी-गायो आतम गीत, जगतमें, ४

[जिनगुण स्तवन-रागिनी भैरवी,]

मिथ्या नींद-में-खोइ, आज प्रभु तेरे चरने लागा, मिथ्या, ए टेर,
दर्शन कर परसन मन मेरो,-आनंद चित अब होइ, आज प्रभु, १
तुम विना और-न-कोइ मेरा-देखा त्रिभुवन जोइ, आज प्रभु, २
दास तुमारो करत विनती-तुम प्रभु भवभव होइ, आज प्रभु, ३

[उपदेशिक पद-रागिनी भैरवी,]

समझ मन ! कोइ नही अपना, समजमन, ए टेर.
दौलत दुनिया माल खजाना-सुखसंपत सुप[illegible] समजमन. १
मातपिता सुत कुडुंब कबिला- [illegible] सु[illegible] .. २
डोलत क्यों जगदेख दि[illegible] सु[illegible] . ३

[उपदेशिकपद-झींझोटीकी ठुमरी, तीनताल.]

जलभरन जात जमुनाके घाट-बडे ठाठसे आवत कामनियां, इसचाल
कुमतप्रीतके सताये हुवेहै-विषयभोग धोखेमें आये हुवेहै, कुमत, एटेर.
शुद्धहै-न-तनकी-न-मतनकीखवरहै,-फिरेजाओ तनकोंउठायेहुवेहै,
कुमत. १
कभी नर्कमें-हम कभी स्वर्गमें हम-अरहटकी तरहसे घुमाये हुवे है,
कुमत. २
यही हालत होगइ मगर दिल-वा-दिलकी-दोवारा विषयको वढा-
ये हुवेहै, कुमत. ३
कभीतो कभी हम मिलेगे सुमतसे-यही-लों-प्रभुसें लगाये हुवे है,
कुमत. ४
पिता पुत्र भाइसे जाहिर जुदे है-हजारों दफे अजमाये हुवे है,
कुमत. ५
अब-तु-सौच करे मत कुदन-किसी दिन मतलव वनाये हुवे है,
कुमत. ६

[उपदेशिक पद-झिंझोटीकी ठुमरी, तीनताल.]

गफलतमें सारी उमर गइ-कारजकी सिद्धि कछुनाजो भइ, गफलतमें
ए टेर.
काल अनादि सुख दुखमें खोया-मोह निद्रामें शुद्ध ना जो रही,
गफलतमें. १
ज्ञान दयासिंधुने अपने-कारन हितकी वात कही, गफलतमें. २
गइ सो गइ अब हाथ न आवे-अवसर देख विचारोसही, गफ. ३
तज प्रमाद अप्रमत होय के-मुगतपुरीकी राह ग्रही, गफलतमें. ४
दास चुनी सद्गुरु सचेकी-आज्ञा सिरपर धारलही, गफलतमें. ५

तीनलोकके स्वामी तेरे-अंगनमें विचरे, माइ मेरो, ३
श्रीवर्द्धमान जिनंदकी मूरत-देखे चित्त ना सरे, माइ मेरो, ४
दासचुनी प्रभु चरन सरन ग्रही-भवभ्रम व्याध टरे, माइ मेरो, ५

[उपदेशिक पद-भैरवी-या-कालिंगडा,]

कौन किसीका मित-जगतमें-कौन किसीका मित, ए टेर,
माततात तिरिया सुत बंधव-कोइ-न-रहत निचिंत, जगतमे १
सबही अपने स्वारथके है-परमारथ नही मीत,
स्वारथ विनसे सगो नही होवे-मिता मनमे चिंत, जगतमे, २
उठ चलेगो आप अकेलो-तुंही-तुं सुविहित,
को-नही तेरा-तुं-नही किसका-येही अनादि रीत, जगतमे, ३
ताते एक भगवान भजनकी-राखो मनमें नीत,
ज्ञानसार प्रभु राग भैरवी-गायो आतम गीत, जगतमें, ४

[जिनगुण स्तवन-रागिनी भैरवी,]

मिथ्या नीद-में-खोइ, आज प्रभु तेरे चरने लागा, मिथ्या, ए टेर,
दर्शन कर परसन मन मेरो,-आनंद चित अब होइ, आज प्रभु, १
तुम विना और-न-कोइ मेरा-देखा त्रिभुवन जोइ, आज प्रभु, २
दास तुमारो करत विनती-तुम प्रभु भवभव होइ, आज प्रभु, ३

[उपदेशिक पद-रागिनी भैरवी,]

समझ मन ! कोइ नही अपना, समजमन, ए टेर.
दौलत दुनिया माल खजाना-सुखसंपत सुपना, समजमन. १
मातपिता सुत कुटुंब काबिला-सुखसंपत सुपना, समजमन. २
डोलत क्यों जगदेख दिवाने-सुखसपत सुपना, समजमन. ३

[उपदेशिकपद-झींझोंटीकी ठुमरी, तीनताल.]

जलभरन जात जमुनाके घाट-वडे ठाठसे आवत कामनिया, इसचाल.

कुमतप्रीतके सताये हुवेहै-विषयभोग धोखेमें आये हुवेहै, कुमत, एटेर.

शुद्धहै-न-तनकी-न-रतनकीखवरहै,-फिरेजाओ तनकोंउठायेहुवेहै, कुमत. १

कभी नर्कमें हुए कभी स्वर्गमें हम-अरहटकी तरहसे घुमाये हुवे है, कुमत. २

यही हालत होगइ मगर दिल-वा-दिलकी-दोवारा विषयको वढाये हुवेहै, कुमत. ३

कभीतो कभी हम मिलेंगे सुमतसे-यही-लौं-प्रभुसें लगाये हुवे है, कुमत. ४

पिता पुत्र भाइसे जाहिर जुदे है-हजारों दफे अजमाये हुवे है, कुमत. ५

अव-तुं-सौच करे मत कुंदन-किसी दिन मतलव वनाये हुवे है, कुमत. ६

[उपदेशिक पद-झिंझोटीकी ठुमरी, तीनताल.]

गफलतमें सारी उमर गइ-कारजकी सिद्धि कछुनाजो भइ, गफलतमें ए टेर.

काल अनादि सुख दुखमें खोया-मोह निद्रामें शुद्ध ना जो रही, गफलतमें. १

ज्ञान दयासिंधुने अपने-कारन हितकी बात कही, गफलतमें. २

गइ सो गइ अव हाथ न आवे-अवसर देख विचारोसही, गफ. ३

तज प्रमाद अप्रमत [illegible] के-मुगतपुरीकी राह ग्रही, गफलतमें. ४

दास चुनी सद्गुरु [illegible] सिरपर धारलही, गफलतमें

[गजल,–]

ध्यानमें जिनके सदा लयलीन होना चाहिये, ए टेर,
ज्ञानगुन ज्ञानीसें ले परवीन होना चाहिये, ध्यानमें. १
राह संयमकी पकर–कल्यानकी सुरत मिले,
कालगफलतमें हे सजन–नाहक ! न खोना चाहिये, ध्यानमे, २
धर्म खेती कियां चहे–तो जमीको साफ रख,
वीज समकीतका हृदयमें–सुखसे वोना चाहिये, ध्यानमें, ३
कामना मनकी सफल–आनंदसे पूरन भइ,
अवतो सुमता सेज उपर–सुखसे सोना चाहिये, ध्यानमें, ४
दास चुनी अपने घर–आंगनमें फुलेगा कल्प,
भवस्थिति पकनेसे–मुक्ति फल सलोना चाहिये, ध्यानमे, ५

[उपदेशिक पद–दादरा,]

उठरे मुसाफिर प्यारे, मुसाफिर प्यारे,
तुजे जाना वडी दूर–उठरे मुसाफिर प्यारे, ए टेर;
तुजे छाइ अनादि निंदियां–अनादि निंदियां,
छाया आंखोंमे सरुर–उठरे, १
तुजे पांचो ठगोने घेरा–ठगोने घेरा,
कैसा हुवा बेशहूर,–उठरे, २
यहां नही है संघाती तेरा–संघाती तेरा,
किसपर करत गरुर, उठरे, ३
कहे छज्जु सफर है तेरा–सफर है तेरा,
तुजे जाना वडी दूर, उठरे, ४

(तीर्थंकर नेमनाथजीका स्तवन,)

[ठुमरी,]

डोलेरे योवन मदमाती गुजरीयां, डोलेरे, इस चालपर,-

निठुर नेम पिया गये गिरनारीरे. निठुर, ए टेर,
अष्टभवंतर प्रीतपुरानी-नवमें भव पिया तुमने निवारीरे, निठुर, १
मुज अवलाकों दूर करीने-पशुवनपर तुम करुना विचारीरे, नि. २
सहसा वन जइ संयम लीनो-पच महाव्रत भये तपधारीरे, निठुर. ३
नेम राजुल दोय मोक्ष सिधारे-पहेली नेमपिया निज तारीरे, नि.४
नेम राजुल दोय मुक्ति महलमे-पदमोदयको हरख हजारीरे, नि. ५

[उपदेशिक पद-कमाच.]

दिननीके वीते जाते है, दिन, ए टेर,
समरन करलो प्रभुके नामका-और विषयका तजो काम,
तेरे संग-न-चलेगा एक दाम-जो देते है सो पाते है, दिननीके, १
कौन किसीका पुत्र भवारा-तुम किसके ओर कौन तुमारा,
किसके वल ये नाम विसारा-सव देखतहीके नाते है, दिननीके २
लाखचौरासी करके आया-वडे भाग्य मानव भव पाया,
तापरभी कुछ करी-न-कमाइ-फिर पीछे पस्ताते है, दिननीके, ३
जैसे पानी वीच पतासा-मूरख फसा मौजकी आशा,
क्या देखे श्वासोकी आशा-गये हाथ नही आते है, दिननीके, ४

[उपदेशिक पद-सोरठ,]

नही ऐसो जनम वारवार, ए टेर,
आरज देश उदार नरभव-उतम कुल अवतार,
दीर्घआयु शरीर सुदर-सुखसपत दातार, नही ऐसो, १
वीतरागसो देव पायो-गुरु मिल्यो अनगार,

[गजल,–]

ध्यानमें जिनके सदा लयलीन होना चाहियें, ए टेर,
ज्ञानगुन ज्ञानीसें ले परवीन होना चाहिये, ध्यानमें. १
राह संयमकी पकर–कल्यानकी सुरत मिले,
कालगफलतमें हे सजन–नाहक ! न खोना चाहिये, ध्यानमे, २
धर्म खेती किया चहे–तो जमीको साफ रख,
वीज समकीतका हृदयमें–सुखसे वोना चाहिये, ध्यानमें, ३
कामना मनकी सफल–आनंदसे पूरन भइ,
अवतो सुमता सेज उपर–सुखसे सोना चाहिये, ध्यानमें, ४
दास चुनी अपने घर–आंगनमें फुलेगा कल्प,
भवस्थिति पकनेसे–मुक्ति फल सलोना चाहिये, ध्यानमे, ५

[उपदेशिक पद–दादरा,]

उठरे मुसाफिर प्यारे, मुसाफिर प्यारे,
तुजे जाना वडी दूर–उठरे मुसाफिर प्यारे, ए टेर;
तुजे छाइ अनादि निंदियां–अनादि निंदियां,
छाया आंखोमें सरुर–उठरे, १
तुजे पांचो ठगोने घेरा–ठगोने घेरा,
कैसा हुवा बेशहुर,–उठरे, २
यहां नही है संघाती तेरा–संघाती तेरा,
किसपर करत गरुर, उठरे, ३
कहे छज्जु सफर है तेरा–सफर है तेरा,
तुजे जाना वडी दूर, उठरे, ४

इनसेती जीते नरदेही-भये मुक्तिका मीता,
वार वार विनंत कर जोडी-नवल प्रेमरस पीतारे, कोइ.

[तीर्थंकर नेमिनाथजीका स्तवन-ठुमरी.]

सुरत निरखी शामरी-नींद उचटगइ सबरी मोहकी, सुरत. ए
नेमीश्वरके पदफरसतही-पायो-मे विसरामरी, नींद उचट गइ.
ध्यानारूढ निहार छवीकों-छुटत भव दुख धामरी, नींद उचटगइ.
मुनिजन याकों ध्यान धरत नित-पावत आतमरामरी, नींद.

[उपदेशिक पद-ठुमरी,]

समज परी मोहे समज परी-जग माया अब जुठी मोहे समज परी,-
कालकाल-तुं-क्या करे मुरख-नाही भरुसा पल एक घरी, जगमाया १
गाफिल छिनभर नाही रहो तुम-शिरपर घूमे तेरे काल अरि, जगमाया २
चिदानद यह बात हमारी-जानो तुम चितमाही खरी, जगमाया, ३

[उपदेशिक पद-भैरवी,]

मूढ मन मानत नाहीरे,-भयो परम धरमसे बेमुख बेशरम, मन,
परद्रव्यनकों डोले रोता,-फिरे गाठकी सपत खोता,
द्व रसातल मारे गोता-सुख चाहे और करे कुकर्म, मन, १
चीर अभ्यास कियो जिनशासन बेठो मारमारके आसन,
तदपि न भयो ज्ञानप्रकाशन-मूढ भयो लखतनको चरम, मन. २
अरे नेनसुख ! हियेके अधे-अबतो त्याग जगतके धदे,
मतकर नामयतिनके गदे-तजके जतनकर यतन धरम, मन. ३

[उपदेशिक पद-भैरवीकी ठुमरी-कहरवा,]

अब हम लीनो आतमज्ञान-भेद विज्ञान जग्यो घटमांही,

जैनधर्म सुसाधु संगत-महामंत्र नवकार, नही ऐसो, २
सदा सूत्र सिद्धांत सुनवो-करो तत्व विचार,
तप जप संयम दान पुजा-जीवदया उपकार, नही ऐसो. ३
कहां ऐसो ज्ञान निर्मल-कहां ऐसो आचार,
कहां ऐसी धर्म करनी-अवर जन्म मझार, नही ऐसो. ४
फेर ऐसो कहां अवसर-पायवो संसार,
हर्षचंद कहे चेत चेतन-जिम पामो भवपार, नही ऐसो. ५

[सद्गुरुस्तुतिपद-सोरठ,]

वरसत वचन झरी-सुगुरु मेरे वरसत वचन झरी,
श्रीश्रुत ज्ञान गगन ते उलटी-ज्ञानघटा गहरी, सुगुरु मेरे. १
स्याद्वादनय विजरी चमकत-देखत कुमति डरी,
अरथ विचार गुहर ध्वनि गरजत-रहत-न-एक घरी; सुगुरु मेरे. २
सरधा नदी चढी अति जोरे-शुद्ध स्वभाव धरी,
सुभर भर्यों समतारस सागर-समकीतभूमि हरी, सुगुरु मेरे. ३
प्रकटे पुन्य अंकुरे चिहु दिश-पापजवास जरी,
चातक मोर पपैया भविजन-बोलत भक्तिभरी, सुगुरु मेरे. ४
दान दया व्रत सयम खेती-भविक किसान करी,
हरखचंद सुरनर शिव सुखकी-सहज स्वभाव खरी, सुगुरु मेरे. ५

[उपदेशिकपद-काफी, ताल दीपचंदी.]

कोइ काल-न-जीता-काले सकल जग जीता,
अकस्मात यम आन फिरेगो-जैसे मृगपर चीतारे, कोइ. १
शूरवीरभर महाबल योद्धा-ते-सव वश करलिता,
ताको डर राखत नही कबही-या देखी विपरीता रे, कोइ. २
जूठी मायासे लोभाया-मान रहा अपनीता,
देड चपेट घर छांड चलेगो,-हाथ झुलावत रीतारे, कोइ. ३

इनसेती जीते नरदेही-भये मुक्तिका मीता,
वार वार विनवे कर जोडी-नवल प्रेमरस पीतारे, कोइ. ४

[तीर्थंकर नेमिनाथजीका स्तवन-टुमरी.]

सूरत निरखी शामरी-नींद उचटगइ सघरी मोहकी, सुरत. ए टेर
नेमीश्वरके पदफरसतही-पायो-मे विसरामरी, नींद उचट गइ. १
ध्यानारूढ निहार छबीको-छुटत भव दुखधामरी, नींद उचटगइ. २
मुनिजन याकों ध्यान धरत नित-पावत आतमरामरी, नींद. ४

[उपदेशिक पद-टुमरी,]

समज परी मोहे समज परी-जग माया अब जुठी मोहे समज परी,-
कालकाल-तु-क्या करे मूरख-नाही भरुसा पल एक घरी, जगमाया१
गाफिल छिनभर नाही रहो तुम-शिरपर घूमे तेरे काल अरि, जगमाया२
चिदानद यह बात हमारी-जानो तुम चितमाही खरी, जगमाया, ३

[उपदेशिक पद-भैरवी,]

मूढ मन मानत नाहीरे,-भयो परम धरमसे वेमुख उंगरम, मन,
परद्रव्यनकों डोले रोता,-फिरे गाठकी सपत खोता,
डुब रसातल मारे गोता-सुख चाहे और करे कुकर्म, मन, १
चीर अभ्यास कियो जिनशासन-बैठो मारमारके आसन,
तदपि न भयो ज्ञानप्रकाशन-मूढ भयो लखतनको चरम, मन. २
अरे नेनसुख ! हियेके अधे-अवतो त्याग जगतके धदे,
मतकर नामयतिनके गदे-तजके जतनकर यतन धरम, मन. ३

[उपदेशिक पद-भैरवीकी टुमरी-कहरवा,]

अब हम लीनो आतमज्ञान-भेद विज्ञान जग्यो घटमाही, अब. १

एकतो यह जड अथीर विनाशी-दुजे रुपमरुपी जान, अब हम.
तीजे शुद्ध अशुद्ध प्रदेशी-मे हुं शुद्ध बोध परमान, अब हम. २
अमल अनादि अरुपी अखंडित-मे हुं निराबाध परमान, अबहम. ३
चिदानंद चेतन निज आतम-मेरो पदहै सिद्ध समान, अब हम. ४

[गुरुभक्तिपर पद-भैरवी,]

श्री विजयदेवसूरींदा-परमगुरु-श्री विजयदेव, ए टेर.
तपगछमही अधिक विराजे-गुरु सेवे होत आनंदा, परमगुरु. १
गुरु उपदेशी गुरु विद्याधर-गुरु दर्शनथी आनंदा, परमगुरु. २
रामविजय कहे तहांलग प्रतिपा-सायरसागर रविचंदा, परमगुरु. ३

[उपदेशिक पद-गजल,]

(इश्कके जखम लगे-उसका सिलाना मुश्किल,) इस चालपर,
अष्ट कर्म संग लगे-उनका छोडना मुश्किल,
लाखचौरासीमे नर-देहका पाना मुश्किल, अष्टकर्म. १
मोह ममताकी जडी-बेडीयां पगके अंदर,
सीख सद्गुरुकी विना-उनका तोडाना मुश्किल, अष्टकर्म. २
गुरुका उपदेस नसीबेसें हाथ आता है,
धर्ममें प्रीतलगा-ध्यान जमाना मुश्किल, अष्टकर्म. ३
कहे मुनि शांतिविजय-धर्मका बगिचा देखो,
ऐसा फिर तुमको यहां-दुसरा पाना मुश्किल, अष्टकर्म. ४

[जो जो महाशय जैनतीर्थगाइडके अवलसे ग्राहक हुवेहै उनके नाम,]

(शहर पुना–मुल्क दखन.)

किताव, नाम,

५१ शाह, हाथीभाइ झवेरचद सदाशिव पेठ,
२१ शेठ, अमरचंदजी तलकचदजी ववडवाले,
१९ शेठ, मोतीचदजी भगवानदासजी जहोरी,
११ शाह नेमचंद हाथीभाइ
 शाह छगनलाल नानचद
 शाह वालुभाइ हरिचद,
९ शाह मलुकचदजी दौलतरामजी,
९ शाह गणपतजी अमोलकचदजी,
९ श्रीमती गजरांवाइ, शाह जीवराजजी किशोरदासजीकी औरत,
३ श्रीयुत रायसिहजी प्रेमाजी गोटीवाला,
२ श्रीयुत पनाजी मोतीजी,
२ श्रीयुत मोतीजी जेताजी दोडा,
२ शाह मणिलालजी चुनीलालजी,
२ शाह झवेरमलजी रतनजी,
२ दोसी छगनलाल वखतचद,
२ शाह किशनदास प्रेमचद,
२ शाह ककुचद रायचद,
२ श्रीयुत जीवाजी आनदाजी,
२ शाह हाथीभाइ वहेचरदास, सिरदारपुरवाले,
२ श्रीयुत कृश्नाजी वेलाजी,
१ शाह दीपचदजी हुकमचदजी,

१ शाह सखारामजी निहालचंदजी,
१ शाह मोतीचंदजी छगनलालजी,
१ शाह जयचंदजी कस्तुरचंदजी,
१ श्रीयुत भगवानजी खुमाजी,
१ श्रीयुत सुताजी लखमाजी,
१ शाह छगनलाल पुजीरामजी,
१ श्रीयुत गोमाजी प्रेमाजी
१ श्रीयुत वालाजी भगवानजी,
१ श्रीयुत खुबाजी गोलिबजी,
१ श्रीयुत हिंमतमलजी परतापमलजी, छावनी पुना,
१ श्रीयुत गमनाजी जेसाजी,
१ श्रीयुत दौलतरामजी मोतीजी,
१ श्रीमती गंगाबाइ, वैतालपेठ,
१ श्रीमती हेमकुंवरबाइ, शाह पीतांबरदास रामचंदजीकी--औरत, लोहगाम, डिस्ट्रीक्ट पुना.
१ श्रीमती जीवीबाइ, कस्बापेठ,
१ शाह नानचंदजी मानचंदजी, गाव कलबुरगा, डिस्ट्रीकट सोलापुर,
२ श्रीयुत पाचाजी नवलाजी,
२ शेठ वीरचंदजी कृश्नाजी,
२ मोदी पानाचंदजी दलछारामजी,
२ शेठ मोतीचंदजी हेमचंदजी,
१ शेठ वेहचरदासजी सीरचंदजी,
१ शेठ लखमीचंदजी नेमचंदजी जुन्नेरवाले,
१ शेठ मगनलालजी लखमीचंदजी,

१ शेठ उत्तमचंदजी रामचंदजी,
१ शेठ मोहनलालजी सोभागचंदजी,
१ शेठ मानचंदजी नगाजी,
१ हुकमाजी हीराजी,
१ शेठ कृश्नाजी वालाजी,

[गांव माढा,-डिस्ट्रीकट-सोलापुर,]

२ शाह तुलजारामजी हरीचंदजी,
२ शाह रामचंदजी पुरुषोतमजी,
१ शाह खुशालचंदजी पुरुषोतमजी,
१ शाह चंद्रभानजी खेमराजजी गांव करमाला, डिस्ट्रीकट सोलापुर

(शहर मद्रास-मुल्क दखन,)

२१ शेठ मोतीचंदजी गुलाबचंदजी, गाव वलदुटवाले-मुकाम शिवगज जिला शिरोही मुल्क मारवाड,
२१ शेठ अमीचंदजी गुलाबचंदजी, मुकाम पालडी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,
१५ शेठ गोमराजजी फतेचंदजी वलदुटवाले, मुकाम शिवगज-जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड
१५ शेठ मलुकचंदजी कस्तुरचंदजी मुकाम दातराड, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,
११ शेठ साकलचंदजी तिलोकचंदजी, मुकाम सुरत, मुल्क गुजरात,
११ शेठ हिंदुजी नथमलजी, मुकाम पाडीं, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,
११ शेठ कपुरचंदजी लालचंदजी मुकाम जालोर मुल्क मारवाड,
११ शेठ महासिंहजी हुकमीचंदजी मुकाम जालोल, मुल्क मारवाड,

१ शाह सखारामजी निहालचंदजी,
१ शाह मोतीचंदजी छगनलालजी,
१ शाह जयचंदजी कस्तुरचंदजी,
१ श्रीयुत भगवानजी खुमाजी,
१ श्रीयुत मुताजी लखमाजी,
१ शाह छगनलाल पुंजीरामजी,
१ श्रीयुत गोमाजी भेसाजी
१ श्रीयुत वालाजी भगवानजी,
१ श्रीयुत खुबाजी गोलिबजी,
१ श्रीयुत हिमतमलजी परतापमलजी, छावनी पुना,
१ श्रीयुत रामनाजी जेसाजी.
१ श्रीयुत दौलतरामजी मोतीजी.
१ श्रीमती गंगाबाइ, वैतालपेठ,
१ श्रीमती हेमकुवरबाइ, शाह पीताम्बरदास रामचंदजीकी औरत, लोहगांम, डिस्ट्रीक्ट पुना.
१ श्रीमती जीवीबाइ, कस्बापेठ,
१ शाह नानचंदजी मानचंदजी, गांव कलबुरगा, डिस्ट्रीक्ट सोलापुर,
२ श्रीयुत पांचाजी नवलाजी,
२ शेठ वीरचंदजी कृष्नाजी,
२ मोदी पानाचंदजी दलछारामजी,
२ शेठ मोतीचंदजी हेमचंदजी,
१ शेठ वेहचरदासजी सीरचंदजी,
१ शेठ लखमीचंदजी नेमचंदजी जुन्नरवाले,
१ शेठ मगनलालजी लखमीचंदजी.

१ शेठ उत्तमचंदजी रामचंदजी,
१ शेठ मोहनलालजी सोभागचंदजी,
१ शेठ मानचंदजी नगाजी,
१ हुकमाजी हीराजी,
१ शेठ कृश्नाजी वालाजी,

[गांव माढा,-डिस्ट्रीक्ट-सोलापुर,]

२ शाह तुलजारामजी हरीचंदजी,
२ शाह रामचंदजी पुरुषोतमजी,
१ शाह खुशालचंदजी पुरुषोतमजी,
१ शाह चंद्रभानजी खेमराजजी गाव करमाला, डिस्ट्रीक्ट सोलापुर
(शहर मद्रास-मुल्क दखन,)
२१ शेठ मोतीचंदजी गुलाबचंदजी, गाव वलदुटवाले-मुकाम शिवगंज जिला शिरोही मुल्क मारवाड,
२१ शेठ अमीचंदजी गुलाबचंदजी, मुकाम पालडी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,
१५ शेठ गोमराजजी फतेचंदजी वलदुटवाले, मुकाम शिवगंज-जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड
१५ शेठ मलुकचंदजी कस्तुरचंदजी मुकाम दातराइ, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,
११ शेठ साकलचंदजी तिलोकचंदजी, मुकाम सुरत, मुल्क गुजरात,
११ शेठ हिंदुजी नथमलजी, मुकाम पाडी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,
११ शेठ कपुरचंदजी लालचंदजी मुकाम जावाल मुल्क मारवाड,
११ शेठ महासिंहजी " मुकाम जावाल, मुल्क मार

७ शेठ हिदुमलजी देवीचंदजी मुकाम कालिदरी जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

७ शेठ किस्नाजी भगवानजी, गांव वेडावाले, जिला शिरोही–मुल्क मारवाड.

६ शेठ उमाजी अमीचदजी, मुकाम भेव, जिला शिरोही मुल्क मारवाड,

५ शेठ रायचंदजी ताराचंदजी, मुकाम जावाल मुल्क मारवाड,

५ शेठ वनाजी ताराचंदजी, मुकाम वराडा जिला शिरोही मुल्क मारवाड.

५ शेठ भगवानजी फौजमलजी, मुकाम जावाल तथा शिवगंजवाले मुल्क मारवाड.

५ शेठ हरजीजी कस्तुरचंदजी, मुकाम जावाल, मुल्क मारवाड,

५ शेठ खुमाजी वालाजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही मुल्क मारवाड.

५ शेठ रुगनाथजी हिमतमलजी, मुकाम पाडी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

५ शेठ मोतीजी साकलचदजी, मुकाम पाडी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

५ शेठ हजारीमलजी रुपचंदजी मुकाम विकानेर, मुल्क मारवाड.

५ शेठ नगराजजी कानमलजी, मुकाम किसनगढ, राजपुताना.

५ शेठ भुताजी देवराजजी, गांव देलंदर, जिला शिरोही मुल्क मारवाड.

५ शेठ हीराजी वनेचंदजी, मुकाम सांवडेरी मुल्क मारवाड.

५ शेठ तागचंदजी भुरमलजी, मुकाम जावाल मुल्क मारवाड.

५ शेठ रासाजी भगवानजी, मुकाम पाडी जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,

१ शेठ मोतीजी जीवाजी मुकाम जावाल, जिला शिरोही मुल्क मारवाड.

१ शेठ जशाजी अभयचंदजी मुकाम जावाल तथा पाडी, मुल्क मारवाड.

१ शेठ हिंदुजी सेनाजी, मुकाम कालिंदरी-जिला शिरोही मुल्क मारवाड

१ शेठ साकलचदजी ताराचंदजी, मुकाम पाडो, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,

१ शेठ खुशालजी झवेरचंदजी, मुकाम डोडुआ, तथा जावाल मुल्क मारवाड,

१ शेठ वनेचंदजी दलीचंदजी मुकाम खीवानदी, मुल्क मारवाड

१ शेठ वीराजी केरींगजी, मुकाम पाडी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,

१ शेठ जगरुपजी रतनचंदजी, मुकाम मडवारीया, जिला शिरोही मुल्क मारवाड,

१ शेठ केशरीमलजी भुरमलजी, मुकाम जावाल तथा डोडुआ, मुल्क मारवाड,

१ शेठ चंद्रभाणजी खुशालचंदजी, मुकाम जावाल तथा सतापुरा, मुल्क मारवाड,

१ शेठ भानाजी ताराचंदजी, मुकाम माडवला, मुल्क मारवाड,

१ शेठ मोहनलालजी कनैयालालजी, मुकाम वलुदा, मुल्क मारवाड,

१ शेठ लखाजी लोपचंदजी, मुकाम पाडी जिला शिरोही मुल्क मारवाड,

१ शेठ मनरुपजी मंछाजी, मुकाम पालडी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,

३ शेठ डाह्याजी नथमलजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,
३ शेठ सुरतिगजी ननलमलजी–मुकाम जावाल, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,
२ शेठ त्रिकमजी मोतीजी, मुकाम लास, जिला शिरोही,
२ शेठ कपुरचंदजी नवलमलजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही,-मुल्क मारवाड.
२ शेठ मानाजी असलाजी, मुकाम पाल्डी, जिला शिरोही मुल्क मारवाड.
२ शेठ नथुजी प्रेमचंदजी, मुकाम शिवगंज, जिला शिरोही. मुल्क मारवाड.
२ शेठ गुमनाजी नाराणजी, मुकाम माडोली, मुल्क मारवाड,
२ शेठ कपुरचंदजी मनरुपजी, मुकाम जावाल, मुल्क मारवाड,
२ मूलचंदजी उमेदमलजी, मुकाम जावाल, मुल्क मारवाड,
२ शेठ रासाजी साकलचंदजी, मुकाम कानंदर, मुल्क मारवाड,
२ शेठ धुराजी किस्नाजी, मुकाम कानदर, मुल्क मारवाड,
२ शेठ शिवदानमलजी अगरचंदजी, कानुगा, मुकाम पोकरन फलौदी, मारवाड,
१ शेठ नवलमलजी चुनीलालजी मुकाम मद्रास,
१ शेठ मोतीचंदजी उत्तमचंदजी, मुकाम शिरोही, मुल्क मारवाड,
१ शेठ असलाजी कपुरचंदजी. मुकाम पाडी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,
१ शेठ गुलाबचंदजी जेताजी, मुकाम भानपुर, जिला उदयपुर, मुल्क मेवाड,
१ शेठ पुनमचंदजी उदयराजजी कानुगा, मुकाम पोकरन फलौदी. मुल्क मारवाड, हाल मुकाम फरंकुडा,

१ मुनीमजी मोतीचंद्रजी, मुकाम बलुदा, मुल्क मारवाड,
१ शेठ नेमीचदजी प्रेमचदजी, मुकाम पोकरन फलौदी, मुल्क मारवाड,
१ शेठ हीराचदजी खजानची, मुकाम नागोर, मुल्क मारवाड,
१ शेठ वजेलालजी मोहनलालजी, मुकाम पोकरन फलोदी मुल्क मारवाड,
१ शेठ रेखचदजी लक्ष्मीचदजी कोचर, मुकाम पोकरन फलौदी, मुल्क मारवाड,
१ शेठ पानाचदजी भगुभाई, मुकाम मद्रास,
१ शेठ सतीदानजी लुणिया, मुकाम लोहावट, मुल्क मारवाड,
१ शेठ बख्तावरमलजी लक्ष्मीचदजी, मुकाम लोहावट, मुल्क मारवाड,
१ शेठ सुखलालजी झाबक, मुकाम पोकरन फलोदी, मुल्कमारवाड

[बेगलोर सीटी-मुल्क महीसुर]

१ शेठ लखमीचदजी अखयराजजी पोरवाल, मुकाम गुडाबालोतरा, मुल्क मारवाड,
१ शेठ फतेचंदजी सालमचदजी, गोलेछा. मुकाम विकानेर, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम बेगलोर कंटोन्मेंट,
शेठ हीरालालजी रिखबचदजी बाफणा, मुकाम मंदपुर, मुल्क मालवा, हाल मुकाम गवर्टसन पेठ, टेशन उरगम,

[शहर उदयपुर-मुल्क मेवाड]

श्रीयुत यतिजी-गुलाबचदजी कसाराकी ओल.
श्रीयुत महेता दीपचदजी अर्जुनलालजी कसाराकी ओल.
श्रीयुत महेता माणलालजी, कसाराकी ओल,

[मुकाम महुआ, मुल्क गुजरात.]

१ श्रीयुत हेमचंदजी फुलचंदजी,

[मुकाम जालना-मुल्क दखन, जिला औरंगाबाद

१ श्रीयुत जवारमलजी चंपालालजी मुता,

[मुकाम बांबे,—]

५ श्रीयुत भगुभाइ फतेचंद कारभारी. एडिटर जैन, कोट, बेकस्ट्रीट, बांबे,-